अर्थशास्त्र शब्द कोश

Dictionary of Economics

सी. एस. बरला

अर्थशास्त्र शब्दकोश
(Dictionary of Economics)

सी. एस. बरला
पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
अर्थशास्त्र विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर

प्रकाशक :
दौलतचंद जैन
जैन प्रकाशन मन्दिर
1024, सिंघी जी का रास्ता,
चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003
दूरभाष : 0141 - 319515 (O)
652639, 653758 (R)

ISBN : 81-87449-07-1

प्रथम संस्करण : 2002

मूल्य : 190/–

कम्प्यूटर सैटिंग एवं कम्पोजिंग :
शुभम् ग्राफिक्स
2100, बोराज हाउस,
रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार, जयपुर

मुद्रक : **ग्राफिक ऑफसेट, जयपुर**

प्राक्कथन

प्रस्तुत अर्थशास्त्र-शब्दकोश की एक लम्बे समय से आवश्यकता महसूस की जा रही थी। हिन्दी भाषी राज्यों में अर्थशास्त्र विषय के शिक्षकों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों के लिए अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक पक्षों को अंग्रेजी भाषा में समझना कठिन रहा है। हिन्दी में जो भी पुस्तकें इस विषय पर लिखी गई हैं, उनमें अंग्रेजी में व्यक्त एक ही अवधारणा अथवा सिद्धान्त को अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किए जाने से भ्रम उत्पन्न होता रहा है। यह सही है कि अर्थशास्त्र एक सरल विषय नहीं है, परन्तु यह भी उतना ही सही है कि हिन्दी में लिखे गए लेख तथा पुस्तकों में जिस प्रकार की भाषा प्रयुक्त की गई है वह प्रायः दुरूह एवं क्लिष्ट होने के कारण पाठक को ऐसा लगने लगता है कि उससे तो अंग्रेजी में प्रस्तुत शब्दों का प्रयोग करना ही बेहतर है।

भारत सरकार द्वारा काफी समय पूर्व अर्थशास्त्र से सम्बद्ध एक हिन्दी-शब्दावलि का प्रकाशन किया गया था। प्रथम तो उसमें हिन्दी के अत्यन्त क्लिष्ट शब्दों का समावेश किया गया था; और द्वितीय, उसमें अधिकांश अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी तत्सम शब्दों का कोई उल्लेख नहीं था।

इन्हीं बातों को अनुभव करने के पश्चात् मैंने यह अनुभव किया कि अर्थशास्त्र विषय में प्रचलित अंग्रेजी के शब्दों को बोधगम्य तथा सार्थक रूप से हिन्दी में रूपान्तरित किया जाना चाहिए। जहां आवश्यक था, समीकरणों तथा रेखाचित्रों के माध्यम से अर्थशास्त्र से सम्बद्ध अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों को समझाया गया है। इस शब्द कोश में यथासम्भव सभी महत्वपूर्ण आर्थिक अवधारणाओं तथा शब्दों का हिन्दी रूपान्तरण किया गया है, तथापि गणित तथा सांख्यिकी से सम्बद्ध केवल उन्हीं शब्दों को शामिल किया गया है जिनकी आर्थिक सिद्धान्तों को समझने हेतु उपादेयता है।

इसके उपरान्त भी सम्भव है, पाठकों को कुछ अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद बोधगम्य न लगे, अथवा उन्हें ऐसा लग सकता है कि कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को प्रस्तुत शब्द कोश में सम्मिलित नहीं किया गया है। मैं ऐसा समझता हूँ कि किसी भी शब्द कोश में सम्मिलित शब्दों की संख्या स्थायी नहीं हो सकती, तथा समय के साथ-साथ इनमें संशोधन तथा परिवर्द्धन होना ही चाहिए। मैं अर्थशास्त्र के प्रस्तुत शब्द कोश के पाठकों (शिक्षकों तथा छात्रों) से यही अनुरोध करना चाहूंगा कि इसे और भी अधिक समृद्ध तथा सार्थक बनाने हेतु अपने सुझावों से मुझे अनुग्रहीत करें।

सी. एस. बरला

Ability to pay principle (एबीलिटी टू पे प्रिंसिपल)

चुकाने की योग्यता का सिद्धान्त

इसके अनुसार करों की वसूली व्यक्ति की वित्तीय सामर्थ्य के अनुसार की जानी चाहिए। जिन व्यक्तियों की आय (या सम्पत्ति) अपेक्षाकृत अधिक है, उनकी आयकर (या सम्पत्ति कर) चुकाने की सामर्थ्य भी अधिक मानी जाती है और इस कारण उन्हें *ऊँची दर* से कर चुकाना होता है। इस सिद्धान्त के आधार पर कर लेना प्रगतिशील कर प्रणाली का रूप है।

Above normal profit or excess profit

(एबॉव नार्मल प्रॉफिट ऑर एक्सेस प्रॉफिट) **असामान्य लाभ**

जब कोई फर्म अपने उत्पाद को ऐसी कीमत पर बेचती है जो उसे व्यवसाय में बनाए रखने की तुलना में अधिक है। प्रायः प्रतियोगी बाज़ार में (दीर्घकाल में) फर्म वस्तु की उतनी कीमत प्राप्त करती है, जो उत्पादन की औसत लागत के समान है, और इसे *सामान्य लाभ* की स्थिति कहा जाता है। लाभ का अतिरेक तब माना जाता है जब (दीर्घकाल में भी) औसत लागत की अपेक्षा वस्तु की कीमत अधिक हो।

Above the line promotion (एबॉव दी लाइन प्रोमोशन)

सीमा से अधिक प्रचार

अपनी वस्तु की बिक्री बढ़ाने हेतु जब फर्म टेलीविजन और अन्य प्रचार माध्यमों (रेडियो, समाचार पत्र आदि) पर बहुत अधिक व्यय करती है तो इसे *सीमा से अधिक प्रचार* कहा जाता है। यह विधि *सीमा के भीतर वाली नीति* से भिन्न है जिसके अन्तर्गत फर्म ग्राहकों को आकर्षित करने हेतु प्रदर्शनी लगाती है अथवा शोरूम में ही वस्तु रखते हुए बिक्री करती है।

Absenteeism (एब्सेन्टीज्म) **अनुपस्थित रहने की आदत**

जब कर्मचारी जानबूझ कर अपने कार्य से प्रायः अनुपस्थित रहें तो यह *आदत* एब्सेन्टीज्म कहलाती है।

Absolute advantage (एब्सोल्यूट एडवान्टेज)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रयुक्त निरपेक्ष लाभ का सिद्धान्त

जब दो देशों में से एक देश निर्दिष्ट साधनों की मात्रा से दूसरे देश की तुलना में अधिक उत्पादन करने में सक्षम हो तो प्रथम देश को लागत का निरपेक्ष लाभ प्राप्त है, ऐसा माना जाता है। मान लीजिए, अ तथा ब दो देशों के पास श्रम तथा पूँजी ये दो साधन हों, और इनकी समान मात्राओं से X तथा Y के उत्पादन निम्न प्रकार प्राप्त होते हैं :

देश	X	Y
अ	100	100
ब	80	70

ऐसी स्थिति में स्पष्ट है, अ को दोनों ही वस्तुओं के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ प्राप्त हो रहा है।

ACAS (Advisory, Conciliation and Arbitration Service) (ए.सी.ए.एस.)

इंगलैंड में 1975 में औद्योगिक विवादों के संदर्भ में यह परामर्शदात्री सेवा प्रारम्भ की गई। औद्योगिक क्षेत्रों में मालिकों तथा श्रमिकों के सम्बन्ध बेहतर बनाने हेतु परामर्श, निपटारे तथा मध्यस्थता जैसे उपायों को प्रयुक्त किया जाता है।

Accelerator (एक्सीलरेटर) **त्वरक**

शुद्ध अथवा त्वरित निवेश तथा *राष्ट्रीय आय में परिवर्तन* की दर में सम्बन्ध दर्शाने वाला घटक। जब आय में तीव्र गति के साथ वृद्धि होती है तो इससे विद्यमान क्षमता पर दबाव पड़ता है जिसके कारण व्यापार व उद्योग जगत द्वारा न केवल वर्तमान पूँजी को प्रतिस्थापित करने हेतु निवेश किया जाता है, अपितु बढ़ती हुई माँग को पूरा करने हेतु नया निवेश भी किया जाता है। यह प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती रहती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, 10 क्रियाशील मशीनों में से एक को प्रतिस्थापित किया जाना अपेक्षित है। यदि प्रतिवर्ष माँग में 30 प्रतिशत की वृद्धि हो रही हो तो तीन नई मशीनों में निवेश करना होगा जिसमें से प्रतिस्थापन के लिए आवश्यक मशीन के साथ दो अतिरिक्त मशीनों में भी निवेश किया जाएगा।

इस प्रकार निवेश के ऊँचे स्तर के कारण सकल माँग बढ़ेगी तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) का भी स्तर और अधिक हो जाएगा। इसी के अनुरूप फिर माँग बढ़ेगी तथा निवेश की राशि भी बढ़ेगी।

Acceptance (एक्सेप्टेंस) **दायित्व को स्वीकार करने की प्रक्रिया**

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विनिमय बिल के रूप में किसी ऋण की अदायगी की गारंटी दी जाती है, भले ही मूल रूप से ऋण लेने वाला उसे अदा न कर पाए। ऐसा प्रायः किसी व्यावसायिक संस्था द्वारा किया जाता है, तथा वह संस्था इस प्रकार के दायित्व हेतु लिखित रूप में ऋणदाता को आश्वस्त करती है। इस प्रकार की संस्था को *स्वीकार करने वाली या दायित्व वहन करने वाली संस्था* कहा जाता है।

Accommodatory monetary policy (एकोमोडेटरी मॉनीटरी पॉलिसी)

समायोजन शील मौद्रिक नीति

ऐसी नीति जिसके अन्तर्गत मुद्रा की पूर्ति को इसकी माँग के अनुरूप ही बढ़ने दिया जाता है। यदि मुद्रा की माँग में पर्याप्त वृद्धि होने की स्थिति में इसकी पूर्ति को उसी अनुपात में नहीं बढ़ाया जाए तो आर्थिक संवृद्धि की दर अवरुद्ध हो जाएगी। परन्तु यदि माँग की तुलना में मुद्रा की पूर्ति ऊँची दर से बढ़ने दी जाए तो मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

Account (s) (एकाउन्ट) **लेखे**

निर्दिष्ट अवधि में हुई गतिविधियों का विवरण।

Account bank (बैंक एकाउन्ट) **बैंक खाता**

एक व्यक्ति, फर्म या सरकार के लिए बैंक द्वारा तैयार खाता या विवरण।

Account period (एकाउन्ट पीरियड) **खाते की अवधि**

वित्तीय प्रतिभूतियों को स्टॉक एक्सचेंज में खरीदने तथा बेचने हेतु निर्धारित अवधि। उदाहरण के लिए, इंगलैंड में सभी प्रकार के शेयरों के कारोबार की अन्तिम सीमा–अवधि एक पखवाड़ा होता है।

Action lag (एक्शन लैग) **नीति क्रियान्वयन अन्तराल**

किसी भी नीति (मौद्रिक, राजकोषीय अथवा व्यापार नीति) की घोषणा तथा उसकी क्रियान्विति के बीच की अवधि। नीति की सफलता प्रायः इसी बात पर निर्भर करती है कि यह अन्तराल कम से कम हो।

Accounting profit (एकाउन्टिंग प्रॉफिट) **खातों में व्यक्त लाभ**

एक लेखापाल द्वारा फर्म के खातों में दर्शाई गई वह राशि जो लाभ के रूप में व्यक्त की जाती है। बिक्री से प्राप्त राशि में से साधनों के लिए चुकाई गई राशि घटाने पर लेखा–लाभ की राशि ज्ञात की जाती है।

Activity, productive (एक्टीविटी प्रोडक्टिव) **उत्पादक गतिविधि**

किसी व्यक्ति अथवा आर्थिक इकाई (व्यक्तियों का समूह, कम्पनी आदि) द्वारा किया गया वह कार्य जिसमें मूल्य का सृजन होता है। इसका सम्बन्ध किसी वस्तु के उत्पादन अथवा सेवा से हो सकता है।

Activity rate (एक्टीविटी रेट) **जनसंख्या में श्रम का अनुपात**

मान लीजिए, भारत की 101 करोड़ की कुल जनसंख्या में श्रमिकों की संख्या 40 करोड़ है, तो यह अनुपात 39.6 प्रतिशत होगा। प्रायः यह दर जनसंख्या की संरचना, सेवानिवृति की आयु, युवाओं के उच्च अध्ययन के उपक्रम, सामाजिक परम्पराओं तथा सरकारी नीतियों पर भी निर्भर करती है।

Actual gross national product (एक्चुअल ग्रॉस नेशनल प्रॉडक्ट)

वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद

किसी अर्थव्यवस्था में *वस्तुतः उत्पादित वस्तुओं का वर्तमान मूल्य* । यह मूल्य उस स्तर से कम हो सकता है जिसे अर्थव्यवस्था प्राप्त करने में सक्षम है। प्रायः सकल राष्ट्रीय उत्पाद के वास्तविक स्तर का निर्धारण *सकल माँग तथा सम्भावित सकल राष्ट्रीय उत्पाद वक्रों के प्रतिच्छेदन के* आधार पर होता है। यदि सम्भावित सकल राष्ट्रीय उत्पाद की अपेक्षा सकल माँग का स्तर कम हो तो उस समय *वास्तविक* सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा सकल माँग के स्तर समान होंगे, तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद के वास्तविक तथा संभावित स्तरों के बीच अवस्थैतिक अन्तर (उत्पादन सम्बन्धी अन्तर) रहता है।

देश	X	Y
अ	100	100
ब	80	70

ऐसी स्थिति में स्पष्ट है, अ को दोनों ही वस्तुओं के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ प्राप्त हो रहा है।

ACAS (Advisory, Conciliation and Arbitration Service) (ए.सी.ए.एस.)

इंगलैंड में 1975 में औद्योगिक विवादों के संदर्भ में यह परामर्शदात्री सेवा प्रारम्भ की गई। औद्योगिक क्षेत्रों में मालिकों तथा श्रमिकों के सम्बन्ध बेहतर बनाने हेतु परामर्श, निपटारे तथा मध्यस्थता जैसे उपायों को प्रयुक्त किया जाता है।

Accelerator (एक्सीलरेटर) **त्वरक**

शुद्ध अथवा त्वरित निवेश तथा *राष्ट्रीय आय में परिवर्तन* की दर में सम्बन्ध दर्शाने वाला घटक। जब आय में तीव्र गति के साथ वृद्धि होती है तो इससे विद्यमान क्षमता पर दबाव पड़ता है जिसके कारण व्यापार व उद्योग जगत द्वारा न केवल वर्तमान पूँजी को प्रतिस्थापित करने हेतु निवेश किया जाता है, अपितु बढ़ती हुई माँग को पूरा करने हेतु नया निवेश भी किया जाता है। यह प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती रहती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, 10 क्रियाशील मशीनों में से एक को प्रतिस्थापित किया जाना अपेक्षित है। यदि प्रतिवर्ष माँग में 30 प्रतिशत की वृद्धि हो रही हो तो तीन नई मशीनों में निवेश करना होगा जिसमें से प्रतिस्थापन के लिए आवश्यक मशीन के साथ दो अतिरिक्त मशीनों में भी निवेश किया जाएगा।

इस प्रकार निवेश के ऊँचे स्तर के कारण सकल माँग बढ़ेगी तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) का भी स्तर और अधिक हो जाएगा। इसी के अनुरूप फिर माँग बढ़ेगी तथा निवेश की राशि भी बढ़ेगी।

Acceptance (एक्सेप्टेंस) **दायित्व को स्वीकार करने की प्रक्रिया**

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विनिमय बिल के रूप में किसी ऋण की अदायगी की गारंटी दी जाती है, भले ही मूल रूप से ऋण लेने वाला उसे अदा न कर पाए। ऐसा प्रायः किसी व्यावसायिक संस्था द्वारा किया जाता है, तथा वह संस्था इस प्रकार के दायित्व हेतु लिखित रूप में ऋणदाता को आश्वस्त करती है। इस प्रकार की संस्था को *स्वीकार करने वाली या दायित्व वहन करने वाली संस्था* कहा जाता है।

Accommodatory monetary policy (एकोमोडेटरी मॉनीटरी पॉलिसी)

समायोजन शील मौद्रिक नीति

ऐसी नीति जिसके अन्तर्गत मुद्रा की पूर्ति को इसकी माँग के अनुरूप ही बढ़ने दिया जाता है। यदि मुद्रा की माँग में पर्याप्त वृद्धि होने की स्थिति में इसकी पूर्ति को उसी अनुपात में नहीं बढ़ाया जाए तो आर्थिक संवृद्धि की दर अवरूद्ध हो जाएगी। परन्तु यदि माँग की तुलना में मुद्रा की पूर्ति ऊँची दर से बढ़ने दी जाए तो मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

Account (s) (एकाउन्ट) **लेखे**

निर्दिष्ट अवधि में हुई गतिविधियों का विवरण।

Account bank (बैंक एकाउन्ट) **बैंक खाता**

एक व्यक्ति, फर्म या सरकार के लिए बैंक द्वारा तैयार खाता या विवरण।

Account period (एकाउन्ट पीरियड) **खाते की अवधि**

वित्तीय प्रतिभूतियों को स्टॉक एक्सचेंज में खरीदने तथा बेचने हेतु निर्धारित अवधि। उदाहरण के लिए, इंगलैंड में सभी प्रकार के शेयरों के कारोबार की अन्तिम सीमा–अवधि एक पखवाड़ा होता है।

Action lag (एक्शन लैग) **नीति क्रियान्वयन अन्तराल**

किसी भी नीति (मौद्रिक, राजकोषीय अथवा व्यापार नीति) की घोषणा तथा उसकी क्रियान्विति के बीच की अवधि। नीति की सफलता प्रायः इसी बात पर निर्भर करती है कि यह अन्तराल कम से कम हो।

Accounting profit (एकाउन्टिंग प्रॉफिट) **खातों में व्यक्त लाभ**

एक लेखापाल द्वारा फर्म के खातों में दर्शाई गई वह राशि जो लाभ के रूप में व्यक्त की जाती है। बिक्री से प्राप्त राशि में से साधनों के लिए चुकाई गई राशि घटाने पर लेखा–लाभ की राशि ज्ञात की जाती है।

Activity, productive (एक्टीविटी प्रोडक्टिव) **उत्पादक गतिविधि**

किसी व्यक्ति अथवा आर्थिक इकाई (व्यक्तियों का समूह, कम्पनी आदि) द्वारा किया गया वह कार्य जिसमें मूल्य का सृजन होता है। इसका सम्बन्ध किसी वस्तु के उत्पादन अथवा सेवा से हो सकता है।

Activity rate (एक्टीविटी रेट) **जनसंख्या में श्रम का अनुपात**

मान लीजिए, भारत की 101 करोड़ की कुल जनसंख्या में श्रमिकों की संख्या 40 करोड़ है, तो यह अनुपात 39.6 प्रतिशत होगा। प्रायः यह दर जनसंख्या की संरचना, सेवानिवृति की आयु, युवाओं के उच्च अध्ययन के उपक्रम, सामाजिक परम्पराओं तथा सरकारी नीतियों पर भी निर्भर करती है।

Actual gross national product (एक्चुअल ग्रॉस नेशनल प्रॉडक्ट)

वास्तविक सकल राट्रीय उत्पाद

किसी अर्थव्यवस्था में *वस्तुतः उत्पादित वस्तुओं का वर्तमान मूल्य* । यह मूल्य उस स्तर से कम हो सकता है जिसे अर्थव्यवस्था प्राप्त करने में सक्षम है। प्रायः सकल राष्ट्रीय उत्पाद के वास्तविक स्तर का निर्धारण *सकल माँग तथा सम्भावित सकल राष्ट्रीय उत्पाद वक्रों के प्रतिच्छेदन के* आधार पर होता है। यदि सम्भावित सकल राष्ट्रीय उत्पाद की अपेक्षा सकल माँग का स्तर कम हो तो उस समय *वास्तविक* सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा सकल माँग के स्तर समान होंगे, तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद के वास्तविक तथा संभावित स्तरों के बीच अवस्थैतिक अन्तर (उत्पादन सम्बन्धी अन्तर) रहता है।

Adaptive expectations (एडेप्टिव एक्सपेक्टेशंस)

मुद्रा स्फीति की धारणीय अपेक्षाएं

हाल ही के वर्षों में मुद्रा स्फीति जन्य अनुभवों के आधार पर भविष्य के लिए अपेक्षित स्फीति दर, जिसके कारण लोगों का व्यवहार बदलता है और स्फीति को प्रोत्साहन मिलता है। प्रायः श्रमिक संघ मजदूरी की दरों में वृद्धि पर जोर देते हैं, और इससे कीमतों में और अधिक वृद्धि हो जाती है।

Adjustment mechanism (एडजस्टमेंट मेकेनिज्म) **समायोजन तंत्र**

भुगतान शेष की प्रतिकूल स्थिति को ठीक करने की व्यवस्था

इसके अन्तर्गत तीन प्रकार के उपाय किए जाते हैः (अ) बाह्य कीमतों का समायोजन, (ब) आन्तरिक कीमतों का समायोजन, तथा (स) व्यापार तथा विदेशी विनिमय सम्बन्धी प्रतिबन्ध।

Administered price (एडमिनिस्टर्ड प्राइस)

एक फर्म फर्मो के समूह, या सरकार द्वारा निर्धारित कीमत

प्रायः अल्पाधिकार या एकाधिकार वाले बाज़ार में विक्रेता के पास पर्याप्त शक्ति केन्द्रित होती है, तथा उपभोक्ताओं को उसके द्वारा निर्धारित कीमत पर ही वस्तु को खरीदना पड़ता है।

Ad valorem tax (एड वेलारम टैक्स) **मूल्यानुसार कर**

किसी वस्तु की प्रत्येक इकाई पर रोपित कर

यह कीमत के अनुपात के रूप में होता है।

Advertisement (एडवरटाइज़मेंट) **विज्ञापन**

एक लिखित अथवा दृश्य प्रस्तुतीकरण जिसके द्वारा कोई फर्म अपने द्वारा निर्मित वस्तु के ब्रांड को प्रचारित करके ग्प्रहकों को आकर्षित करने का प्रयास करती है। प्रो. चैम्बरलिन ने कहा था कि आधुनिक व्यावसायिक जगत में विभिन्न उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं में प्रायः ब्रांड, रंग, डिजाइन आदि की भिन्नता पाई जाती है तथा उन्हें अलग–अलग ब्रांड अथवा ट्रेड मार्क के अन्तर्गत बेचने हेतु विज्ञापन का आश्रय लेना होता है। अस्तु, विज्ञापन का प्रयोजन वस्तु की माँग में वृद्धि करना है।

Advertising standard authority (एडवरटाइजिंग स्टैन्डर्ड ऑथोरिटी)

विज्ञापन मानक प्राधिकरण

यह संस्था इंग्लैंड में है तथा यह सुनिश्चित करती है कि किसी भी वस्तु का विज्ञापन प्रपंचपूर्ण तथा भ्रामक न हो।

After-sales service (आफ्टर सेल्स सर्विस)

बिक्री के पश्चात् दी जाने वाली सेवा

वस्तुएं समरूपी होने पर भी अनेक बार विक्रेता ग्राहकों को आश्वस्त करता है कि उन्हें एक निर्दिष्ट अवधि तक उसके रख रखाव की लागत विक्रेता ही वहन करेगा,

तथा यदि कोई कलपुर्जा दोष पूर्ण पाया गया तो निर्दिष्ट अवधि में उसे निःशुल्क बदला जाएगा।

Agent (एजेंट) **अभिकर्ता**

ऐसा व्यक्ति, जो किसी कम्पनी अथवा व्यक्ति/फर्म की ओर से किसी तीसरे व्यक्ति या फर्म के बीच संविदा हेतु मध्यस्थ का कार्य करता है। वस्तु के क्रेताओं व विक्रेता के बीच यह अभिकर्त्ता एक कड़ी के रूप में कार्य करता है, तथा अपनी सेवाओं के लिए किसी एक पक्ष या दोनों पक्षों से कमीशन लेता है। प्रायः अभिकर्ता को नियुक्त करने वाला पक्ष उसे अधिकृत करता है तथा अभिकर्ता के द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य का पूर्ण दायित्व नियुक्त करने वाले (नियोजक) का होता है।

Aggregated consumption (एग्रीगेटेड कन्जम्पशन) **सकल उपभोग**

एक निर्दिष्ट अवधि में उपभोक्ताओं द्वारा व्यय की जाने वाली कुल राशि का योग। सकल उपभोग की राशि में पूँजी निवेश तथा राजकीय व्यय को जोड़ने पर सकल माँग के अनुमान किए जाते हैं।

Aggregate demand; Aggregate expenditure
(एग्रीगेट डीमान्ड, एग्रीगेट एक्सपेन्डीचर) **सकल माँग अथवा सकल व्यय**

सकल माँग में कुल उपभोग व्यय (C), निवेश व्यय (I), सरकारी व्यय (G) तथा शुद्ध निर्यात (निर्यात का आयात से आधिक्य) (E) को शामिल किया जाता है। यदि सकल माँग में वृद्धि होती है तो अनिवार्य रूप से वास्तविक उत्पादन, यानी सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में भी वृद्धि होगी। जहां *सकल माँग* तथा *सकल पूर्ति* में समानता होती है वहां राष्ट्रीय आय का साम्य–स्तर प्राप्त होता है।

Aggregate supply (एग्रीगेट सप्लाई) **सकल पूर्ति**

कीमतों के निर्दिष्ट अनुपात पर अर्थव्यवस्था में कार्यरत उद्यमी (उत्पादक) वास्तविक वस्तुओं तथा सेवाओं की कितनी मात्रा प्रदान करने हेतु तत्पर हैं, उसी को सकल पूर्ति कहा जाता है। सकल पूर्ति को बढ़ाने हेतु उत्पादन में प्रयोज्य उपकरणों की मात्रा को बढ़ाकर उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। इसी लक्ष्य को श्रमिकों की दक्षता में वृद्धि करके भी प्राप्त किया जा सकता है। वास्तविक उत्पादन तथा वास्तविक सकल पूर्ति समान हैं या नहीं यह निम्न घटकों पर निर्भर करता है, (i) पूर्ति के अनुरूप पर्याप्त सकल माँग होनी चाहिए। (ii) फर्मों की आवश्यकता के अनुरूप श्रम की पर्याप्त पूर्ति होनी चाहिए। यदि मज़दूरी का वास्तविक स्तर नीचा है तो इस स्तर पर श्रम की जितनी पूर्ति है उससे कहीं अधिक इसकी माँग होगी, और उत्पादकों को श्रम की कमी महसूस होगी जिससे उत्पादन भी कम होगा।

Aggregation (एग्रीगेशन) **अंशों का योग**

किसी भी प्राचल से सम्बन्धित छोटे–छोटे अंशों के मूल्यों का योग। यदि एक उपभोक्ता का उपयोग फलन $c_i = a_i + bY_i$ हो तो देश के सभी उपभोक्ताओं के उपमोग फलनों का योग लेने पर समूची अर्थव्यवस्था का उपभोग फलन ज्ञात किया जा सकता है।

Agricultural Adjustment Act (एग्रीकल्चरल एडजस्टमेंट एक्ट)
कृषि समायोजन कानून

संयुक्त राज्य अमेरिका में 1933 में पारित एक कानून, जिसके अन्तर्गत कृषकों की आय में स्थिरता बनाए रखने हेतु कृषि जिंसों के लिए समर्थन कीमतें घोषित की गईं। यह नीति अभी भी प्रचलित है तथा वस्तु साख निगम (Commodity Credit Corporation) के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही है।

Agricultural protection (एग्रीकल्चरल प्रोटेक्शन) **कृषि को संरक्षण**

किसी देश की सरकार द्वारा कृषि वस्तुओं के आयात पर तटकर अथवा प्रतिबन्ध रोपित करके देश के कृषकों की आय में वृद्धि करने की नीति। प्रायः इस नीति का उद्देश्य कुल आय तथा रोज़गार में विद्यमान कृषि के योगदान को कम करना होता है। चूंकि विकसित देशों में कृषि को संरक्षण देने की नीति व्यापक रूप से विद्यमान है, विकासशील देशों को इससे काफी नुकसान हो रहा है।

Aid (एड) **सहायता**

एक देश द्वारा दूसरे देश को दी जाने वाली आर्थिक सहायता। प्रायः यह सहायता धनी देशों द्वारा विकासशील देशों के आर्थिक विकास हेतु अथवा राहत (भूकम्प, अकाल या बाढ़) के रूप में यह सहायता दी जाती है। बहुधा सहायता देने वाला देश मुद्रा के रूप में यह सहायता प्रदान करता है, परन्तु कभी–कभी यह शर्त लगा देता है कि सहायता राशि का उपयोग देने वाले देश से वस्तुएँ आयात करने में ही किया जाएगा। इसे बन्धनयुक्त (tied) सहायता भी कहते हैं तथा बन्धनहीन सहायता की अपेक्षा इसका वास्तविक मूल्य कम होता है।

Allocative efficiency (एलोकेटिव एफीशिएन्सी) **दक्षतापूर्ण आवंटन**

बाजार के निष्पादन का एक पक्ष, जिसके अन्तर्गत दुर्लभ साधनों का विभिन्न प्रयोगों में इष्टतम आवंटन किया जाता है। यह आवंटन उत्पादन प्रक्रिया में हो सकता है अथवा उपभोग प्रक्रिया में भी सम्भव है। उपभोक्ता की आय का इष्टतम आवंटन तब माना जाता है जब वस्तुओं की कीमतों का अनुपात सीमान्त उपयोगिताओं के अनुपात के समान हो। उत्पादन प्रक्रिया में साधनों का इष्टतम आवंटन तब माना जाएगा जब विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में साधनों की सीमान्त उत्पादकता का अनुपात साधनों की कीमतों के अनुपात के समान हो। समूची अर्थव्यवस्था में उपलब्ध साधनों का इष्टतम आवंटन तब होगा जबकि वस्तुओं की कीमतों, सीमान्त उपयोगिताओं तथा उत्पादन की सीमान्त लागतों के अनुपात (सभी वस्तुओं के संदर्भ में) समान हों। यह शर्त केवल पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत पूरी होती है, और इसे *परेटो की इष्टतम शर्त* कहा जाता है।

Amortization (एमोर्टाइजेशन) **ऋण का भुगतान**

किसी परिसम्पत्ति को इसके जीवनकाल की समाप्ति पर प्रतिस्थापित करने की

व्यवस्था। ऋण के संदर्भ में भुगतान की राशि, ब्याज़ की दर तथा अदायगी की अवधि पर निर्भर करेगी। परिसम्पत्ति के प्रतिस्थापन हेतु वांछनीय राशि ब्याज़ की राशि, परिसम्पत्ति की अपेक्षित आयु तथा मुद्रा–स्फीति की संभावित दर पर निर्भर करेगी।

Annuity (एन्यूटी) **वार्षिक भुगतान, वार्षिक अदायगी**

एक मुश्त निवेश को निश्चित् अन्तराल के साथ समान किश्तों में भुगतान करना। यदि इस निवेश के साथ ब्याज़ भी जुड़ा हो तो मूलधन तथा ब्याज की अदायगी समान किश्तों में इस प्रकार सुनिश्चित की जाती है कि निर्दिष्ट अवधि के अन्त तक समूची राशि की अदायगी हो जाए। यही नीति बीमा कम्पनी द्वारा भी मृतक व्यक्ति की पत्नी (या पति) अथवा आश्रितों को पॉलिसी धारक की मृत्यु होने पर लागू की जा सकती है।

Anticipated inflation (एन्टीसिपेटेड इन्फ्लेशन) **अपेक्षित मुद्रा स्फीति**

व्यावसायिक इकाइयों, श्रमिक संघों के पदाधिकारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा भविष्य में घटित होने वाली मुद्रा स्फीति की दर। इसी के अनुरूप श्रमिक संघ मजदूरी की दरों के बारे में सौदेबाजी करेंगे, व्यावसायिक फर्में कीमतों का निर्धारण करेंगी एवं उपभोक्ता अपनी बचत अथवा उपभोग के विषय में निर्णय करेंगे।

Anti-dumping action (एन्टी–डंपिंग एक्शन) **राशिपातन विरोधी क्रिया**

सरकार को जब राशिपातन सम्बन्धी शिकायतें मिलती हैं तो उनसे निपटने के लिए आयातकर्ता देश इसकी पूरी जांच करते हैं। सरकार इस बात का पूरा विश्लेषण करती है कि राशिपातन के फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव होंगे। इसके बाद ही राशि पातन के विरुद्ध आयात कर रोपित करने जैसी नीति लागू की जाती है।

Anti-dumping duty (एन्टी डंपिंग ड्यूटी)

घरेलू उद्योगों को अन्य देश की आक्रामक व्यापार नीति (डंपिंग या राशिपातन) से बचाने हेतु आयातित वस्तुओं पर डंपिंग विरोधी कर रोपित किए जाते हैं।

Anti-monopoly policy (एन्टी–मोनोपाली पॉलिसी)

एकाधिकार विरोधी अथवा प्रतियोगिता वर्द्धक नीति

उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सरकार बाज़ार में एक विक्रेता के वर्चस्व तोड़ने हेतु ऐसी नीतियां बनाती है। इसमें निम्न उपाय शामिल हो सकते हैं : (अ) बाज़ार में एक विक्रेता के हिस्से की अधिकतम सीमा (25 से 30 प्रतिशत) निर्धारित करके, (ब) कार्टेल अथवा विक्रेताओं के गठबन्धन पर प्रतिबन्ध लगाकर, तथा (स) विक्रेता की ग्राहकों को परेशान करने– जैसे माल बेचने से इन्कार करना, मनमानी आपूर्ति करना भेदभावपूर्ण कीमत वसूलना–आदि पर प्रतिबन्ध लगाकर।

Anti trust policy (एन्अी ट्रस्ट पॉलिसी) **गठबन्धन या विलय विरोधी नीति**

संयुक्त राज्य अमरीका में व्यवसायों के अन्तर्गत बड़ी फर्मों द्वारा छोटी–छोटी फर्मों

Agricultural Adjustment Act (एग्रीकल्चरल एडजस्टमेंट एक्ट) **कृषि समायोजन कानून**

संयुक्त राज्य अमेरिका में 1933 में पारित एक कानून, जिसके अन्तर्गत कृषकों की आय में स्थिरता बनाए रखने हेतु कृषि जिंसों के लिए समर्थन कीमतें घोषित की गईं। यह नीति अभी भी प्रचलित है तथा वस्तु साख निगम (Commodity Credit Corporation) के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही है।

Agricultural protection (एग्रीकल्चरल प्रोटेक्शन) **कृषि को संरक्षण**

किसी देश की सरकार द्वारा कृषि वस्तुओं के आयात पर तटकर अथवा प्रतिबन्ध रोपित करके देश के कृषकों की आय में वृद्धि करने की नीति। प्रायः इस नीति का उद्देश्य कुल आय तथा रोज़गार में विद्यमान कृषि के योगदान को कम करना होता है। चूंकि विकसित देशों में कृषि को संरक्षण देने की नीति व्यापक रूप से विद्यमान है, विकासशील देशों को इससे काफी नुकसान हो रहा है।

Aid (एड) **सहायता**

एक देश द्वारा दूसरे देश को दी जाने वाली आर्थिक सहायता। प्रायः यह सहायता धनी देशों द्वारा विकासशील देशों के आर्थिक विकास हेतु अथवा राहत (भूकम्प, अकाल या बाढ़) के रूप में यह सहायता दी जाती है। बहुधा सहायता देने वाला देश मुद्रा के रूप में यह सहायता प्रदान करता है, परन्तु कभी–कभी यह शर्त लगा देता है कि सहायता राशि का उपयोग देने वाले देश से वस्तुएँ आयात करने में ही किया जाएगा। इसे बन्धनयुक्त (tied) सहायता भी कहते हैं तथा बन्धनहीन सहायता की अपेक्षा इसका वास्तविक मूल्य कम होता है।

Allocative efficiency (एलोकेटिव एफीशिएन्सी) **दक्षतापूर्ण आवंटन**

बाजार के निष्पादन का एक पक्ष, जिसके अन्तर्गत दुर्लभ साधनों का विभिन्न प्रयोगों में इष्टतम आवंटन किया जाता है। यह आवंटन उत्पादन प्रक्रिया में हो सकता है अथवा उपभोग प्रक्रिया में भी सम्भव है। उपभोक्ता की आय का इष्टतम आवंटन तब माना जाता है जब वस्तुओं की कीमतों का अनुपात सीमान्त उपयोगिताओं के अनुपात के समान हो। उत्पादन प्रक्रिया में साधनों का इष्टतम आवंटन तब माना जाएगा जब विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में साधनों की सीमान्त उत्पादकता का अनुपात साधनों की कीमतों के अनुपात के समान हो। समूची अर्थव्यवस्था में उपलब्ध साधनों का इष्टतम आवंटन तब होगा जबकि वस्तुओं की कीमतों, सीमान्त उपयोगिताओं तथा उत्पादन की सीमान्त लागतों के अनुपात (सभी वस्तुओं के संदर्भ में) समान हों। यह शर्त केवल पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत पूरी होती है, और इसे *परेटो की इष्टतम शर्त* कहा जाता है।

Amortization (एमोर्टाइजेशन) **ऋण का भुगतान**

किसी परिसम्पत्ति को इसके जीवनकाल की समाप्ति पर प्रतिस्थापित करने की

व्यवस्था। ऋण के संदर्भ में भुगतान की राशि, ब्याज़ की दर तथा अदायगी की अवधि पर निर्भर करेगी। परिसम्पत्ति के प्रतिस्थापन हेतु वांछनीय राशि ब्याज़ की राशि, परिसम्पत्ति की अपेक्षित आयु तथा मुद्रा–स्फीति की संभावित दर पर निर्भर करेगी।

Annuity (एन्यूटी) **वार्षिक भुगतान, वार्षिक अदायगी**

एक मुश्त निवेश को निश्चित् अन्तराल के साथ समान किश्तों में भुगतान करना। यदि इस निवेश के साथ ब्याज़ भी जुड़ा हो तो मूलधन तथा ब्याज की अदायगी समान किश्तों में इस प्रकार सुनिश्चित की जाती है कि निर्दिष्ट अवधि के अन्त तक समूची राशि की अदायगी हो जाए। यही नीति बीमा कम्पनी द्वारा भी मृतक व्यक्ति की पत्नी (या पति) अथवा आश्रितों को पॉलिसी धारक की मृत्यु होने पर लागू की जा सकती है।

Anticipated inflation (एन्टीसिपेटेड इन्फ्लेशन) **अपेक्षित मुद्रा स्फीति**

व्यावसायिक इकाइयों, श्रमिक संघों के पदाधिकारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा भविष्य में घटित होने वाली मुद्रा स्फीति की दर। इसी के अनुरूप श्रमिक संघ मजदूरी की दरों के बारे में सौदेबाजी करेंगे, व्यावसायिक फर्में कीमतों का निर्धारण करेंगी एवं उपभोक्ता अपनी बचत अथवा उपभोग के विषय में निर्णय करेंगे।

Anti-dumping action (एन्टी–डंपिंग एक्शन) **राशिपातन विरोधी क्रिया**

सरकार को जब राशिपातन सम्बन्धी शिकायतें मिलती हैं तो उनसे निपटने के लिए आयातकर्ता देश इसकी पूरी जांच करते हैं। सरकार इस बात का पूरा विश्लेषण करती है कि राशिपातन के फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव होंगे। इसके बाद ही राशि पातन के विरुद्ध आयात कर रोपित करने जैसी नीति लागू की जाती है।

Anti-dumping duty (एन्टी डंपिंग ड्यूटी)

घरेलू उद्योगों को अन्य देश की आक्रामक व्यापार नीति (डंपिंग या राशिपातन) से बचाने हेतु आयातित वस्तुओं पर डंपिंग विरोधी कर रोपित किए जाते हैं।

Anti-monopoly policy (एन्टी–मोनोपाली पॉलिसी)

एकाधिकार विरोधी अथवा प्रतियोगिता वर्द्धक नीति

उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सरकार बाज़ार में एक विक्रेता के वर्चस्व तोड़ने हेतु ऐसी नीतियां बनाती है। इसमें निम्न उपाय शामिल हो सकते हैं : (अ) बाज़ार में एक विक्रेता के हिस्से की अधिकतम सीमा (25 से 30 प्रतिशत) निर्धारित करके, (ब) कार्टेल अथवा विक्रेताओं के गठबन्धन पर प्रतिबन्ध लगाकर, तथा (स) विक्रेता की ग्राहकों को परेशान करने– जैसे माल बेचने से इन्कार करना, मनमानी आपूर्ति करना भेदभावपूर्ण कीमत वसूलना–आदि पर प्रतिबन्ध लगाकर।

Anti trust policy (एन्ओी ट्रस्ट पॉलिसी) **गठबन्धन या विलय विरोधी नीति**

संयुक्त राज्य अमरीका में व्यवसायों के अन्तर्गत बड़ी फर्मों द्वारा छोटी–छोटी फर्मों

पर आधिपत्य करने (साम्राज्यवाद) या क्षैतिज व शीर्ष सम्मिश्रण (विलय) के माध्यम से एकाधिकारिक शक्ति को बढ़ाने, व्यवसाय में अन्यायपूर्ण ढंग से वस्तु बेचने, आदि प्रतियोगिता विरोधी नीतियों का पोषण करने वाली नीतियों पर अंकुश लगाने हेतु कानून बनाए गए हैं। इन सभी का उद्देश्य उपभोक्ता के हितों की रक्षा करना है।

Applied economics (एप्लाइड़ इकॉनोमिक्स) **व्यावहारिक अर्थशास्त्र**

आर्थिक विश्लेषण को वास्तविक जगत की आर्थिक दशाओं पर लागू करना। इसके अन्तर्गत अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों का वास्तविक आर्थिक स्थितियों के लिए परीक्षण करते हुए आर्थिक नीतियों का निरूपण करने में सहायता की जाती है।

Appreciation (एप्रीसिएशन) **मूल्य में वृद्धि**

यदि किसी फर्म के पास विद्यमान भूमि, भवन अथवा परिसम्पति की कीमतें बढ़ जाएं हालांकि इससे अर्थव्यवस्था की सभी परिसम्पतियों का *वास्तविक मूल्य नहीं बढ़ता।* मूल्य में वृद्धि का दूसरा उदाहरण मुद्रा से सम्बन्धित है। यदि डालर या स्टर्लिंग पाउन्ड की तुलना में पूर्वापेक्षा कम रुपए देने पड़ें तो यह भारतीय रुपए में मूल्य वृद्धि का एक उदाहरण होगा। इसके फलस्वरूप देश में आयातों के मूल्य कम होंगे, जबकि निर्यातों के मूल्य डालर रूप में बढ़ जाने से निर्यातों में कमी होगी। मुद्रा के मूल्य में वृद्धि होने से भुगतान शेष का आधिक्य कम या नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार शेयरों के मूल्यों में भी वृद्धि के उदाहरण प्रायः मिल जाते हैं।

Arbitrage (आर्बीट्रेज) **कीमतों के अंतर का लाभ उठाना**

दो या अधिक बाज़ारों के बीच वस्तुओं, वित्तीय प्रतिभूतियों या विदेशी मुद्राओं की खरीद व बिक्री, जिसका उद्देश्य बाजारों में उद्धृत कीमतों के अन्तर का लाभ उठाना होता है। जिस बाज़ार में कीमत कम है वहां प्रतिभूति या वस्तु को खरीदने तथा *उसी समय* ऊँची कीमत वाले बाज़ार में उसे बेचने का सौदा किया जाता है। इसके फलस्वरूप कम कीमत वाले बाजार में माँग बढ़ेगी तथा अधिक कीमत वाले बाज़ार में कीमत कम होगी, और इससे कीमतों का अन्तर भी कम होगा।

Arbitration (आर्बीट्रेशन) **विवादों को सुलझाने की एक प्रक्रिया**

प्रायः यह प्रक्रिया औद्योगिक विवादों को सुलझाने हेतु अपनाई जाती है जहां मालिकों व मजदूरों के अलावा एक निष्पक्ष तीसरा व्यक्ति होता है जिसका निर्णय दोनों पक्षों को मान्य होता है।

Arc elasticity (आर्क इलास्टिसिटी) **माँग या पूर्ति की चापलोच**

कीमत में परिवर्तन होने पर माँग या पूर्ति में होने वाले परिवर्तन का माप। इसमें कीमत में होने वाला परिवर्तन पर्याप्त होता है। इसका सूत्र निम्न हैं :

$$e = \frac{Q_1 - Q_0}{P_1 - P_0} x \frac{P_1 + P_0}{Q_1 + Q_0}$$

इस सूत्र में e तो माँग की कीमत लोच है, P_0, P_1 क्रमशः मूल तथा परिवर्तित कीमतें हैं तथा Q_1 एवं Q_0 परिवर्तित एवं मूल माँग के द्योतक है। प्रायः किसी माँग वक्र के दो बिन्दुओं के मध्य ही चाप लोच का माप लिया जाता है।

Asset (ऐसेट) **परिसम्पत्ति अथवा सम्पत्ति**

जिसका स्वामित्व किसी व्यक्ति, परिवार अथवा व्यावसायिक फर्म में निहित होता है। ऐसी परिसम्पत्तियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है: (अ) भौतिक परिसम्पत्तियां जैसे भूमि, भवन, मशीनें व उपकरण, स्थायी उपभोग की वस्तुएँ जैसे कार, फर्नीचर, वाशिंग मशीन आदि, (ब) वित्तीय परिसंपत्तियां जैसे नगद राशि, बैंक निक्षेप या जमाएं, शेयर, ऋण पत्र, बाँड आदि, तथा (स) अभौतिक परिसम्पत्तियां, जैसे ब्रांड नेम, पेटेंट, तकनीकी ज्ञान, गुडविल (ख्याति) आदि।

Asset-growth maximization (एसेट ग्रोथ मैक्सीमाइजेशन) **परिसम्पत्ति की अधिकतम संवृद्धि**

परम्परागत रूप में एक फर्म का उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना था। परन्तु आधुनिक संदर्भ में एक फर्म का प्रबन्धक परिसम्पत्ति की वृद्धि दर अधिकतम करना चाहता है। वह जानता है कि इसके माध्यम से उसकी पगार तथा भत्तों में वृद्धि सम्भव होगी। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कम्पनी के शेयर में सम्पत्ति के मूल्य के साथ–साथ वृद्धि होती है। परन्तु एक स्तर पर शेयर का मूल्य अधिकतम स्तर पर पहुँच कर फिर गिरने लगता है।

Asset prices (एसेट प्राइसेज) **परिसम्पत्ति का मूल्य**

जिनमें भूमि, भवन, मशीनों, उपभोग की वस्तुओं, शेयरों, ऋण–पत्रों आदि की कीमतें शामिल हैं। चूंकि परिसम्पत्तियों को पुनः बेचा जा सकता है, इनकी वर्तमान कीमतों पर इनकी प्रत्याशित कीमतों का प्रभाव होता है। प्रायः किसी परिसंपत्ति की कीमत उसकी उत्पादन लागत पर निर्भर नहीं करती। फिर भी अत्यंत अल्पकाल में परिसम्पत्ति की कीमतों में व्यापक परिवर्तन होता है।

Assets liquid (एसेट्स लिक्विड) **तरल परिसम्पत्ति**

मुद्रा सर्वाधिक तरल सम्पत्ति है क्योंकि उसे तत्काल किसी भी अन्य रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। प्रतिभूतियां, बैंक जमाएं, सोना, चांदी आदि में भी अत्यधिक तरलता निहित है परन्तु दीर्घकालीन बाँड में तरलता कम होती है। इसी प्रकार भूमि, भवन, मशीनों, कार, फर्नीचर को तत्काल अन्य सम्पत्ति में रूपान्तरित करना संभव नहीं होने के कारण इनमें भी तरलता का अभाव होता है।

Asset stripper (एसैट स्ट्रिपर) **सम्पत्ति को छीनने वाला**

एक फर्म जो किसी अन्य फर्म की सम्पत्ति को बेचने के उद्देश्य से उसको अपने नियंत्रण में ले लेती है। इसका एक विलक्षण उदाहरण तब दिखाई देता है जब लक्षित फर्म की सम्पत्तियों का मूल्य उस स्तर से कम होता है जिसे आधिपत्य करने

वाली फर्म अपने अधिकार में लेना चाहती है। यदि लक्षित फर्म के चिट्ठे में सम्पत्तियों का मूल्य कम दर्शाया जाता है तो उसके शेयर की कीमत भी कम रहेगी।

Assets, tangible (टेंजिबल एसेट्स) **भौतिक परिसम्पत्तियां**

ऐसी परिसम्पत्तियां जिन्हें स्पर्श करना तथा जिनका माप लेना संभव हो। इनमें भूमि, भवन, शेयर, मशीनें आदि शामिल हैं। ये अभौतिक परिसम्पत्तियों (गुडविल, ट्रेडमार्क, पेटेंट आदि) ये सर्वथा भिन्न होती हैं। परन्तु प्रायः इनका मूल्यांकन किया जा सकता है।

Asset value theory (एसेट वेल्यू थ्योरी)

विदेशी विनिमय दर निर्धारण में परिसम्पत्ति मूल्य सिद्धान्त

जब परिवर्तनशील विनिमय प्रणाली के अन्तर्गत विदेशी विनिमय दर में काफी अधिक उतार चढ़ाव हो रहे हों तब इस सिद्धान्त के द्वारा यह दर्शाया जाता है कि सट्टे के द्वारा भुगतान शेष को ठीक नहीं किया जा सकता। इस सिद्धान्त के अनुसार विदेशी विनिमय दर को परिसम्पत्ति की कीमत माना जाता है जो एक ऐसी सापेक्ष कीमत है जिस पर स्वदेशी तथा विदेशी शेयरधारी किसी देश की मुद्रा, प्रतिभूतियों एवं अन्य वित्तीय परिसम्पत्तियों को अपने पास रखना चाहते हैं।

Atomistic competition (एटोमिस्टिक कम्पीटीशन) **पूर्ण प्रतियोगिता**

एक ऐसा बाजार जिसमें निम्न विशेषताएँ विद्यमान होती हैं:– (अ) क्रेताओं तथा विक्रेताओं की बाहुल्यता जिसके कारण एक विक्रेता या क्रेता का आकार समूचे बाज़ार की माँग या पूर्ति की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म होती है। (ब) बस्तुओं में समरूपता के कारण पूर्ण स्थानापन्नता। (स) नए क्रेताओं तथा विक्रेताओं का बाजार में निर्बाध प्रवेश अथव पुराने क्रेताओं/विक्रेताओं का निर्बाध बहिगर्मन। (द) बाज़ार की स्थिति के विषय में पूर्ण ज्ञान। (य) उत्पादन के साधनों की पूर्ण गतिशीलता। चूंकि इस प्रकार के बाज़ार में सभी विक्रेताओं के बीच कड़ी स्पर्द्धा होती है, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकाल में प्रत्येक फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

Audit (ऑडिट) **अंकेक्षण**

प्रत्येक पंजीकृत कम्पनी या निगम के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी अधिकृत अंकेक्षक द्वारा अपनी आय तथा व्यय से सम्बन्धित सभी दस्तावेजों व खातों की जांच करवाए तथा उसके द्वारा आय–व्यय की प्रामाणिकता के आंकलन हेतु लाभ–हानि खाते तथा तलपट्ट तैयार करे।

Austrian school (ऑस्ट्रियन स्कूल)

ऑस्ट्रिया के विएना विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्रियों के एक समूह को यह नाम दिया गया था। इन अर्थशास्त्रियों के प्रमुख (19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में) कार्ल मेंजर ने संस्थापक अर्थशास्त्रियों की आलोचना करते हुए स्पष्ट किया कि किसी वस्तु का मूल्य उसकी श्रम–लागत पर नहीं, अपितु उससे प्राप्त होने वाली संतुष्टि पर निर्भर करता है। इसी तर्क के आधार पर आगे चलकर अर्थशास्त्रियों ने सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का निरूपण किया।

Auto-correlation (ऑटो-कोरीलेशन) **स्व-सहसम्बन्ध**

यदि समय या स्थान के आधार पर क्रमबद्ध की गई संख्याओं (प्रेक्षणों) में एक समय-बिन्दु वाली संख्या का सम्बन्ध दूसरे समय बिन्दु वाली संख्या से परिलक्षित हो, तो इसे स्व–सहसम्बन्ध कहा जाता है। उदाहरण के लिए, एक माह में होने वाला उत्पादन इससे पूर्व वाले महीने में प्राप्त उत्पादन से प्रभावित हो सकता है, तथा यह क्रम इसी प्रकार आगे के महिनों में प्राप्त उत्पादन के सन्दर्भ में भी दिखाई दे सकता है। इसे सामान्यतया **श्रेणीकृत सह-सम्बन्ध** (Serial correlation) भी कहा जाता है।

Automatic stabilizers (ऑटोमेटिक स्टेबिलाइज़र्स) **स्वचालित स्थिरीकारक**

किसी भी देश की राजकोषीय नीति में ऐसे तत्व हो सकते हैं जिनके आधार पर अर्थव्यवस्था में होने वाले उतार चढ़ावों के प्रभावों को न्यूनतम करना सम्भव है। उदाहरण के तौर पर, राष्ट्रीय आय तथा उत्पादन में कमी होने पर सरकार के कर राजस्व में कमी होती है, और साथ ही एक ओर बेरोज़गारी बढ़ती है, तो दूसरी ओर सामाजिक सुरक्षा भुगतान (बेरोज़गारी भत्ते) में वृद्धि हो जाती है। कर राजस्व में कमी तथा सामाजिक सुरक्षा भुगतानों में वृद्धि के कारण सरकार का बजट घाटा बढ़ता है। इसके फलस्वरूप आय में हुई कमी के एक भाग की क्षतिपूर्ति हो जाती है।

Automation (ऑटोमेशन) **स्वचालन**

जब मानव श्रम द्वारा किए जा रहे कार्यों को यंत्रों द्वारा सम्पादित किया जाए तो इसे स्व–चालन कहा जाता है। इस प्रक्रिया में मानवीय श्रम का प्रयोग केवल मशीनों के संचालन हेतु किया जाता है। प्रायः स्वचालन की इस प्रक्रिया में काफी अधिक प्रारम्भिक पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। कम्प्यूटर का बढ़ता हुआ प्रयोग तथा उत्पादन में समरूपता लाने हेतु मशीनों का प्रयोग आदि स्व–चालन के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

Autonomous consumption (ऑटोनोमस कन्सम्पशन) **स्वायत्त उपभोग**

उपभोग व्यय का वह भाग जिसका वर्तमान आय से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि उपभोग फलन का समीकरण $C = a + bY_0$ हो तो इसमें आय का स्तर शून्य होने पर भी उपभोग व्यय की राशि a के समान होगी। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि भले ही किसी व्यक्ति की आय शून्य हो, उसे जीवित रहने के लिए कुछ न कुछ तो उपभोग पर व्यय करना ही होगा।

Autonomous investment (ऑटोनोमस इन्वेस्टमैंट) **स्वायत्त निवेश**

निवेश की राशि का वह भाग जिसका उत्पादन के स्तर या इसमें होने वाले परिवर्तनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। प्रायः इस प्रकार के निवेश में सरकार द्वारा सार्वजनिक सेवाओं पर किया गया व्यय, नई तकनीक की खोज हेतु किया गया व्यय तथा शोध आदि पर किए गए व्यय को शामिल करते हैं।

Average (एवरेज) **औसत**

सांख्यिकी के अन्तर्गत विभिन्न संख्याओं का योग लेकर उनका औसत मूल्य ज्ञात किया जाता है। यह औसत मूल्य भारित हो सकता है अथवा अभारित भी। अभारित औसत में सभी संख्याओं को समान भार (महत्व) दिया जाता है तथा उनके कुल मूल्य में संख्या (N) का भाग दिया जाता है। भारित औसत में प्रत्येक संख्या को उसके महत्त्वानुसार भार देकर उसके मूल्य को प्रदत्त भार से गुणा करके कुल भार से भाग दिया जाता है।

Average cost (एवरेज कॉस्ट) **औसत लागत**

उत्पादन की कुल लागत में उत्पादित इकाइयों से भाग देने पर औसत लागत प्राप्त होती है– (i) यदि कुल लागत वर्द्धमान गति से बढ़ती है तो औसत लागत की प्रवृत्ति भी वर्द्धमान होती है। (ii) यदि कुल लागत में ह्रासमान गति से वृद्धि होती है तो औसत लागत में कमी होगी। (iii) यदि कुल लागत की वृद्धि स्थिर गति से होती है तो औसत लागत स्थिर बनी रहती है।

इन स्थितियों को नीचे प्रस्तुत चित्रों से समझा जा सकता है :
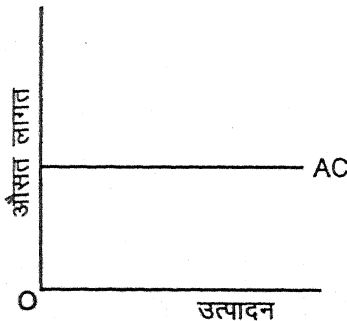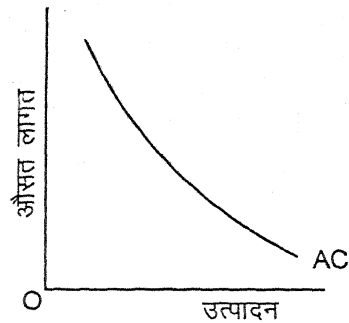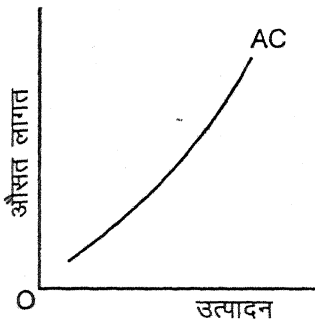
Average cost pricing (एवरेज कॉस्ट प्राइसिंग)

औसत लागत ऊपर कीमत निर्धारण

प्रायः अल्पाधिकार वाले बाजार में एक फर्म औसत लागत के ऊपर एक पूर्व निर्धारित प्रतिशत के हिसाब से लाभ जोड़कर कीमत का निर्धारण करती है। यदि फर्म का उद्देश्य केवल सामान्य लाभ कमाना ही हो तो कीमत तथा औसत लागत में समानता होगी।

Average propensity to consume (APC)

(एवरेज प्रोपेन्सिटी टू कन्ज्यूम) **औसत उपभोग प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह अंश जो उपभोग हेतु प्रयुक्त किया जाता है। इसका सूत्र निम्न हैं :

$$APC = \frac{\text{Consumption}}{\text{National Income}}$$

प्रायः सकल स्तर पर औसत उपभोग प्रवृति इकाई से कम ($APC<1$) होती है, यानि देश के सभी लोगों का कुल उपभोग व्यय राष्ट्रीय आय से कम होता है।

Average propensity to import (APM)

(एवरेज प्रोपेन्सिटी टू इम्पोर्ट) **औसत आयात प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जो आयातों पर व्यय किया जाता है। इसे निम्न सूत्र से समझा जा सकता है :

$$APM = \frac{\text{Imports}}{\text{National Income}}$$

Average propensity to save (APS)

(एवरेज प्रोपेन्सिटी टू सेव) **औसत बचत प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह अंश जो निर्दिष्ट अवधि में बचत के रूप में प्रयुक्त होता है।

$$APS = \frac{\text{Savings}}{\text{National Income}}$$

यदि APC तथा APS का योग लिया जाए तो यह इकाई के समान होगा।

$$APC + APS = 1$$

यानी, राष्ट्रीय आय को या तो उपभोग के रूप में प्रयुक्त किया जाता है अथवा बचत के रूप में।

Average propensity to tax (APT)

(एवरेज प्रोपेन्सिटी टू टैक्स) **औसत कर प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसे सरकार करों के रूप में ले लेती है :

$$APT = \frac{\text{Taxation}}{\text{National Income}}$$

Average rate of taxation

(एवरेज रेट ऑफ टैक्सेशन) **कराधान की औसत दर**

एक व्यक्ति द्वारा अपनी आय का कितना भाग कर के रूप में देता है। यदि एक लाख रूपए की आय में से 20,000 रूपए कर के रूप में चुकाए जाएं तो कर की औसत दर 20 प्रतिशत होगी। इसके विपरीत यदि उसी व्यक्ति की आय बढ़कर 1,25,000 रूपए हो तथा अतिरिक्त आय (25,000 रू.) में से 10 हजार रूपए कर के रूप में लिए जाएं तो सीमान्त कराधान (marginal taxation)की दर इस प्रकार होगी :

$$\frac{10,000}{25,0000} \times 100$$ यानी 40 प्रतिशत

Average revenue (एवरेज रेवेन्यू) **औसत आगम**

वस्तुओं को बेचने पर प्राप्त कुल आगम में वस्तु की इकाइयों से भाग देने पर जो दर प्राप्त होती है वह वस्तु की कीमत अथवा औसत आगम कहलाता है।

Average revenue product (ARP)

(एवरेज रेवेन्यू प्रोडक्ट) **औसत उत्पाद मूल्य**

किसी परिवर्तनशील साधन की मात्रा प्रयुक्त करने पर जो औसत उत्पादन प्राप्त होता है उसका मूल्य। अन्य शब्दों में उत्पादन के कुल मूल्य में परिवर्तनशील इकाइयों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त औसत मूल्य। सूत्र के अनुसार

$$ARP = \frac{TP \times Price}{No.\ of\ variable\ units}$$

इस प्रकार कुल आगम में परिवर्तनशील इकाइयों से भाग देने पर औसत उत्पाद मूल्य प्राप्त होता है।

□□□

B

Back door (बैक डोर) **पिछले दरवाजे की नीति**

देश में तरलता की अल्पकालीन कमी होती है तो बैंक ऑफ इंगलैंड पूर्व में निर्गमित सरकारी प्रतिभूतियों को प्रचलित बाज़ार मूल्यों पर खरीदकर समाशोधन गृहों की सहायता करता है। ये कोष व्यापारी बैंकों तथा समाशोधन गृहों की सहायतार्थ उपलब्ध रहते हैं। इसके विपरीत व्यापारिक बैंक यदि बैंक ऑफ इंगलैंड से सहायता लेने हेतु समाशोधन गृह से आवेदन करते हैं तो बैंक ऑफ इंगलैंड उन्हें साख प्रदान करता है। यह नीति अगले दरवाजे की नीति कहलाती है।

Back to back loan (बैक टू बैक लोन) **समानान्तर ऋण व्यवस्था**

मान लीजिए मुंबई में एक कम्पनी 'अ' है जिसकी सहायक कम्पनी 'ब' लन्दन में स्थित है। एक अन्य कम्पनी "स" लन्दन में है जिसकी सहायक कम्पनी "द" मुम्बई में स्थित है। यह सम्भव है कि कम्पनी "अ" के पास पाउंड स्टर्लिंग की कमी हो जबकि कम्पनी "स" के पास रूपए की कमी है। ऐसी स्थिति में "अ" अपनी सहायक कम्पनी "ब" को रुपया उधार दे तथा कम्पनी "स" अपनी सहायक कम्पनी को पाउंड स्टर्लिंग उधार दे। ये दोनों सहायक कम्पनियां रुपए तथा पाउन्ड स्टर्लिंग का विनिमय करके परस्पर किसी आगामी तिथि को इस सौदे का निपटारा कर सकती है। इस व्यवस्था के फलस्वरूप दोनों कम्पनियां विदेशी विनिमय दर के उतार–चढ़ाव से होने वाली हानि से बच सकती है।

Backward integration (बैकवर्ड इन्टीग्रेशन)

शीर्ष, अथवा पीछे की ओर का एकीकरण

प्रत्येक उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन तथा वितरण का एक पूर्व निर्धारित क्रम होता है। कच्चे माल की प्राप्ति, इसकी ढुलाई, परिवहन आदि एक श्रृंखलाबद्ध प्रक्रिया के भाग हैं। यदि कोई कम्पनी इन सभी को एकीकृत करके अपने नियन्त्रण में रखे तो इसे शीर्ष अथवा पीछे की ओर का एकीकरण कहते हैं।

उत्पादन की प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद तैयार वस्तुओं के परिवहन एवं बिक्री केन्द्रों में बिक्री की प्रक्रिया का सुनिश्चित् करना भी शीर्ष एकीकरण का ही एक अंग है। यदि कम्पनी उत्पादन के पश्चात् बिक्री तक की व्यवस्था पर अपना नियंत्रण रखती है तो इसे आगे की ओर का एकीकरण कहा जाएगा। यदि कोई कम्पनी सम्पूर्ण श्रृंखला पर अपना नियंत्रण कर ले तो उसे तो लागतों में कमी का लाभ मिलेगा परन्तु इससे समाज में आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण होने से काफी हानि होगी।

Bad debt (बैड डेट) **समापित ऋण, डूबा हुआ ऋण**

एक ऐसा ऋण, जिसकी अदायगी सम्भव नहीं है क्योंकि या तो ऋणी व्यक्ति (या फर्म) दिवालिया हो गया है, अथवा वह अदायगी करने की स्थिति में नहीं है। प्रायः लेनदार ऐसे ऋणों की राशि को उस वर्ष के लाभ में से घटा देता है। ऋण तथा ब्याज की राशि को इस प्रकार समापित मान लिया जाता है।

Bad debt provision (बैड डेट प्रोविजन) **डूबे हुए ऋण हेतु प्रावधान करना**

लेनदार के खातों में संदेहास्पद ऋणों के लिए अलग से कोई राशि आवंटित कर दी जाती है, और अन्ततः ऋण के समापित होने पर पृथक् से इसे बट्टे खाते नहीं माना जाता। यदि संयोगवश सम्भावित डूबे हुए ऋण का एक भाग अदा हो जाए, तो इसे लेनदार अपने खातों में लाभ के रूप में अंकित कर सकता है।

Balanced budget (बैलेंस्ड बजट) **संतुलित बजट**

एक ऐसी स्थिति, जिसमें सरकार का कुल व्यय इसे प्राप्त होने वाले करों तथा अन्य प्राप्तियों के समान होता है परन्तु व्यवहार में सरकार का कुल व्यय प्रायः इसकी कुल प्राप्तियों से अधिक होता है, तथा इस आधिक्य को बजट घाटा कहा जाता है। कभी–कभी ही जब सभी प्राप्तियाँ सरकार के कुल व्यय से अधिक होती हैं तो यह बचत वाला बजट कहलाता है।

Balanced budget multiplier (बैलेंस्ड बजट मल्टीप्लायर) **संतुलित बजट गुणक**

जब कभी सरकार द्वारा रोपित कर तथा अतिरिक्त सरकारी व्यय में समानता होती है तो सकल माँग में भी कराधान की राशि के समान ही वृद्धि हो जाती है। ऐसी दशा में बजट का घाटा या अतिरेक अपरिवर्तित रहता है। उदाहरण के लिए, सरकार 5000 रुपए के अतिरिक्त कर (T) लगाकर इतनी ही राशि अतिरिक्त रूप में व्यय (G) कर देती है, तो सरकार द्वारा 5000 रुपए की वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीदने के कारण सकल माँग में 5000 रुपए की वृद्धि हो जाती है जबकि बजट का संतुलन भी बना रहता है (G=T)।

Balanced growth (बैलेंस्ड ग्रोथ) **संतुलित संवृद्धि**

जब किसी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों तथा भौगोलिक खंडों में एक ही अनुपात से आय में वृद्धि हो तो इसे संतुलित संवृद्धि कहा जाता है। प्रायः कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्रों में संवृद्धि की दरें भिन्न–भिन्न होती हैं और इसी प्रकार भौगोलिक क्षेत्रों में भी ये दरें समान नहीं होतीं। इसी कारण से व्यवहार में संतुलित संवृद्धि का कोई औचित्य नहीं होता।

Balance of payments (बैलेंस ऑफ पेमेंट्स) **भुगतान शेष**

एक निर्दिष्ट अवधि में किसी देश का शेष विश्व के साथ हुए व्यापार तथा वित्तीय प्रवाहों का विवरण। भुगतान शेष की सारणी में एक ओर शेष विश्व से प्राप्त समस्त राशियाँ अंकित की जाती हैं, जबकि दूसरी ओर अन्य देशों को किए गए सभी भुगतानों

का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।
भुगतान शेष के दो भाग किए जा सकते हैं। एक भाग में चालू खाते की प्रविष्टियां होती हैं जिनमें दृश्य तथा अदृश्य सौदों के शेष दर्शाये जाते हैं। इसके विपरीत दूसरे भाग में पूँजीगत सौदों का विवरण दिया जाता है। भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण 2000–2001 के अनुसार भारत के भुगतान शेष का विवरण निम्न प्रकार से था :

तालिका 1: भारत का भुगतान शेष (1999–2000) – करोड़ डालर में

1.	आयात	5538	
2.	निर्यात	3828	
	व्यापार शेष		– 1710
3.	अदृश्य		
	(अ) प्राप्तियां		3032
	(ब) भुगतान		1739
	(स) शुद्ध राशि		1293
	चालू खाते का शेष (शुद्ध)		– 417
4.	पूंजीगत खाता		
	I. विदेशी निवेश		
	(अ) प्राप्तियां	1224	
	(ब) भुगतान	712	
	(स) शुद्ध राशि	512	
	II. ऋण		
	(i) विदेशी सहायता		
	(अ) प्राप्तियां	307	
	(ब) भुगतान	218	
	(स) शुद्ध राशि	89	
	(ii) व्यापारिक ऋण		
	(अ) प्राप्तियां	999	
	(ब) भुगतान	928	
	(स) शुद्ध राशि	71	

	III. बैंकिंग	
	(अ) प्राप्तियां	1126
	(ब) भुगतान	853
	(स) शुद्ध राशि	273
	IV. रूपए में प्राप्त ऋण की अदायगी	– 71
	V. अन्य पूंजीगत सौदे	
	(अ) प्राप्तियां	402
	(ब) भुगतान	251
	(स) शुद्ध राशि	151
	VI. अशुद्धियां	32
5.	कुल पूंजीगत सौदों का शेष (I से VI)	1056
6.	चालू व पूंजीगत खातों का शेष	640
7.	(I) मौद्रिक प्रवाह	– 26
	(II) रिज़र्व कोषों में परिवर्तन	– 614
8.	योग (I) + (II)	– 640

स्त्रोत : आर्थिक सर्वेक्षण 2000–2001 तालिका 6.2

Balance of payments crises

(बैलेंस ऑफ पेमेंट क्राइसिस) **भुगतान शेष का संकट**

एक ऐसी स्थिति, जिसमें देश के विदेशी मुद्राओं के कोष तीव्र गति से तथा लगातार कम हो रहे हों। ऐसा तब होता है जब चालू तथा पूंजीगत खातों का प्रतिकूल शेष लम्बे समय तक बना रहे। इस संकट से उबरने हेतु प्रायः प्रभावित देश द्वारा अपनी मुद्रा का अवमूल्यन किया जाता है जिससे इसके निर्यात डालर रूप में सस्ते, तथा आयात का डालर मूल्य अधिक हो जाने के फलस्वरूप आयात में कमी होती है जबकि निर्यात बढ़ते हैं। इसी प्रकार अदृश्य प्राप्तियां भी अदृश्य भुगतानों से कम हो जाती हैं, तथा कुल मिलाकर चालू खाते का शेष पर्याप्त रूप में अनुकूल हो जाता है।

Balance of trade (बैलेंस ऑफ ट्रेड) **व्यापार शेष**

आयातों तथा निर्यातों का अन्तर व्यापार शेष कहलाता है। यदि आयातों का मूल्य निर्यातों से अधिक हो तो व्यापार शेष प्रतिकूल होता है। तालिका 1 में यह अन्तर (–) 1710 करोड़ डालर अनुमानित किया गया है क्योंकि 1999–2000 में भारत के आयातों का मूल्य निर्यातों के मूल्य से अधिक था। इस प्रकार उस वर्ष में व्यापार शेष प्रतिकूल रहा। यदि किसी देश के निर्यात आयातों की तुलना में अधिक हों तो उस देश का व्यापार शेष अनुकूल होगा।

Balance sheet (बैलेन्स शीट) **चिट्ठा**

किसी भी फर्म अथवा संगठन की सम्पत्तियों तथा देनदारियों के मौद्रिक मूल्यों का विवरण। सम्पत्तियों में मुद्रा, बैंक खाते, प्रतिभूतियां, भूमि, भवन, मशीनें व उपकरण, लेनदारियां आदि शामिल की जाती हैं। इस प्रकार इनमें स्थायी सम्पत्तियों तथा चालू सम्पत्तियों की गणना की जाती है। इसके विपरीत देनदारियों में सभी प्रकार के ऋण, शेयर पूंजी आदि को सम्मिलित किया जाता है। सम्पत्तियों का देनदारियों पर जो भी आधिक्य है उसे फर्म की शुद्ध सम्पत्ति (Net Worth) माना जाता है जो वस्तुतः अंशधारियों के प्रति इसकी देनदारी है। यदि इसके विपरीत देनदारियों की राशि सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक हो तो ऐसी फर्म की शुद्ध सम्पत्ति ऋणात्मक होगी, तथा उसे दिवालिया माना जाएगा। सामान्य तौर पर चिट्ठे में वर्णित सम्पत्तियों तथा देनदारियों के मूल्य समान होते हैं।

Bank (बैंक) **अधिकोष, बैंक**

एक ऐसी संस्था जो अधिकृत रूप से निक्षेप (जमाएं) स्वीकार करे, जमाकर्ताओं को अपनी राशि निकालने की सुविधा प्रदान करे, व्यापार, उद्योग, कृषि आदि के लिए साख प्रदान करे तथा अपने ग्राहकों की ओर से मुद्रा का लेन देन करे। बैंक अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे वाणिज्यिक बैंक, मर्चेन्ट बैंक, निवेश बैंक, कृषि बैंक, औद्योगिक बैंक आदि।

Bank deposit (बैंक डिपोजिट) **बैंक जमा या बैंक निक्षेप**

किसी वाणिज्यिक बैंक द्वारा चालू खाता, बचत खाता आदि के रूप में ग्राहकों की राशि जमा की जा सकती है। बचत खाता, सावधि खाते या आवृत्त खाते के रूप में हो सकता है। खालू खाते के अन्तर्गत धन राशि को जमा करने या निकालने की कार्यवाही तात्कालिक रूप में की जा सकती है।

Banker's draft (बैंकर्स ड्राफ्ट) **किसी बैंक द्वारा किसी अन्य बैंक अथवा अपनी ही किसी शाखा के नाम पर जारी किया गया चैक**

कभी–कभी कोई फर्म किसी अन्य फर्म या व्यक्ति से चैक नहीं लेना चाहती परन्तु बैंक द्वारा निर्गमित ड्राफ्ट को स्वीकार कर लेती है। बैंक ड्राफ्ट की राशि प्रस्तुतकर्ता अपने खाते में जमा करवा सकता है अथवा बैंक के काउंटर से मुद्रा प्राप्त कर सकता है।

Bank deposit creation or credit creation
(बैंक डिपोजिट क्रिएशन ऑर क्रेडिट क्रिएशन)

बैंक द्वारा जमाओं अथवा साख का सृजन

किसी प्रारम्भिक जमा के बदले काई बैंक नए निक्षेपों का सृजन कर सकता है और इससे कुल मुद्रा की आपूर्ति बढ़ जाती है। मान लीजिए, कोई व्यक्ति 1000 रुपए बैंक खाते में जमा करता है, तथा बैंक इस जमा में 10 प्रतिशत तरल रूप में रखता है। इसका यह अर्थ हुआ कि 100 रुपए तरल रूप में रखकर 900 रुपए किसी अन्य

व्यक्ति को साख/उधार के रूप में देकर उसका खाता खोला जा सकता है। इस नए खाते का भी 10 प्रतिशत (90 रुपए) तरल रूप में रखकर शेष 810 रुपए तीसरे व्यक्ति को उधार देकर उसका एक नया खावा खोला जा सकता है। यह प्रक्रिया इसी प्रकार अनवरत रूप से चलती रहती है। इस प्रकार प्रारम्भिक 1000 रुपए की जमा से अन्ततः 10,000 रुपए की जमाएं सृजित हो जाती हैं। जमाओं के सृजन की यह प्रक्रिया प्रारम्भिक जमा की राशि तथा तरलता के अनुपात पर निर्भर करती है। यह अनुपात जितना कम है उतनी ही द्वितीयक जमाओं की राशि अधिक होगी।

Bank for International Settlements (BIS) (बैंक फोर इन्टरनेशनल सैटलमेंट्स)

1930 में बेसल में स्थापित एक अन्तर्राष्ट्रीय बैंक, जिसे जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, बेल्जियम आदि देशों के केन्द्रीय बैंकों की सहायतार्थ स्थापित किया गया था। इसका प्रमुख उद्देश्य विभिन्न प्रकार की केंद्रीय बैंकों से सम्बद्ध गतिविधियों में तालमेल स्थापित करना था। इस बैंक का एक प्रमुख उद्देश्य सम्बद्ध देशों के भुगतान शेष से सम्बद्ध समस्याओं का निराकरण करना भी था।

Banking (बैंकिंग) **अधिकोषण**

व्यक्तियों, व्यावसायिक इकाइयों तथा सरकार के लिए भुगतान, साख तथा पूंजी की व्यवस्था करना। यह व्यवस्था छोटी–छोटी राशियों के रूप में हो सकती है। (खुदरा बैंकिंग) अथवा बड़े–बड़े प्रतिष्ठानों के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी–निवेश के रूप में (थोक बैंकिंग) भी की जा सकती है। अमरीका तथा इंगलैंड में प्रायः बैंक दोनों ही प्रकार की व्यवस्थाएं करते हैं, और उसे यूनिवर्सल या सार्वभौमिक बैंकिंग कहा जाता है।

Banking system (बैंकिंग सिस्टम) **बैंकिंग प्रणाली**

जब विविध प्रकार की बैंकिंग सेवाओं के लिए बैंकों का एक नेटवर्क कार्य करता है तो इसे बैंकिंग प्रणाली कहते हैं। इनमें विशिष्ट प्रकार की बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने वाली संस्थाएँ हो सकती है जिनका प्रयोजन बहुसंख्यक छोटे–छोटे ग्राहकों की सेवा करना हो सकता है। इसके विपरीत विदेशी व्यापार या वित्तीय पूँजी बाजारों में कार्यरत मर्चेंट बैंक हो सकते हैं। इसके अलावा बैंकिंग प्रणाली में ऐसा बैंक भी शामिल हो सकता है, जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आम जनता से न होकर केवल बैंकों के माध्यम से कार्य करना होता है। यह केन्द्रीय बैंक कहलाता है।

Bank loan (बैंक लोन) **बैंक ऋण**

प्रायः बैंक द्वारा किसी व्यक्ति या व्यापारिक प्रतिष्ठान को किसी उद्योग या व्यापार या कृषि कार्य हेतु साख सुविधा दी जाती है। बहुधा ये ऋण किसी सिक्योरिटी अथवा जमानत (भवन, भूमि, तैयार माल, मशीनें आदि) के आधार पर ही दिए जाते हैं। कभी-कभी बैंक व्यक्तिगत जमानत पर ऋण दे सकता है या किसी प्रतिष्ठान को ओवरड्राफ्ट की सुविधा दे सकता है। ये ऋण प्रायः सुरक्षित ऋणों की अपेक्षा जोखिमपूर्ण होते हैं।

आधुनिक संदर्भ में बैंकों द्वारा भवन निर्माण या विस्तार अथवा फर्नीचर, घरेलू विद्युत उपकरणों, मोटरकार आदि की खरीद हेतु भी ऋण दिए जाने लगे हैं। ऐसी स्थिति में इन ऋणों का स्वरूप बंधक ऋणों या "मॉर्गेज लोन" का हो जाता है, क्योंकि ऋण तथा ब्याज की सम्पूर्ण राशि का भुगतान होने तक ऐसी सम्पत्ति बैंक के पास बंधक या गिरवी रहती है।

Bank rate (बैंक रेट) **बैंक दर**

वह दर जिस पर केन्द्रीय बैंक (रिज़र्व बैंक ऑफ इन्डिया, बैंक ऑफ इंगलैंड, बैंक ऑफ फ्रांस आदि) अपने ग्राहकों (बैंकों) की प्रतिभूतियों का बट्टाकरण करता है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि बैंक दर जितनी कम होगी, उतने ही कम खर्च पर व्यावसायिक बैंक रिज़र्व बैंक से प्रतिभूतियों के बदले मुद्रा प्राप्त कर सकते हैं तथा इस प्रकार देश में मुद्रा का विस्तार होने की सम्भावना बढ जाती है। इसके विपरीत, यदि बैंक दर ऊँची हो तो बैंकों द्वारा केंद्रीय बैंक से ऊँची बट्टा दर पर प्रतिभूतियों के बदले मुद्रा प्राप्त की जाएगी तथा देश के उद्योगों तथा व्यापार के विकास हेतु अपेक्षाकृत कम मुद्रा प्राप्त होगी। मार्च 2001 में भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंक दर को घटाकर 7.0 प्रतिशत कर दिया क्योंकि केंद्र सरकार देश में अधिक मुद्रा का प्रसार चाहती है।

Bank regulation (बैंक रेगूलेशन) **बैंकों का नियमन**

केन्द्रीय बैंक द्वारा बैंकों की कार्य प्रणली पर अंकुश लगाना। प्रायः इस प्रकार की नीति का उद्देश्य बैंकों की कार्यप्रणाली को सुदृढ़ रखना है ताकि कोई भी बैंक अपनी सीमा से बढ़कर साख का विस्तार न कर पाए।

Bankruptcy (बैंकरप्सी) **दिवालियापन**

जब कोई भी अदालत किसी व्यक्ति या व्यावसायिक प्रतिष्ठान (फर्म) को दिवालिया घोषित कर दे, तथा यह सिद्ध कर दे कि सम्बद्ध व्यक्ति या फर्म निर्दिष्ट तिथि को अपने ऋणों की अदायगी करने में असमर्थ है। दिवालिएपन के लिए या तो सम्बद्ध व्यक्ति/फर्म अदालत में आवेदन कर सकता है, अथवा उसके लेनदारों में से कोई भी इस प्रकार की याचिका प्रस्तुत कर सकता है। प्रायः अदालत द्वारा सम्बद्ध व्यक्ति अथवा फर्म की अपने ऋणों को चुकाने की असमर्थता की पुष्टि करने हेतु सभी तथ्यों की जांच करने के बाद ही दिवालियापन की घोषण की जाती है।

Bank statement (बैंक स्टेटमैंट) **बैंक द्वारा जारी विवरण**

जब कभी कोइ बैंक किसी व्यक्ति या फर्म द्वारा बैंक के साथ निर्दिष्ट अवधि में हुए लेन देन के विषय में कोई रिकार्ड जारी करता है तो उसे बैंक द्वारा जारी विवरण या बैंक स्टेटमैंट कहते हैं।

Bar chart (बार चार्ट) **दंड चित्र**

प्रायः किसी भी व्यक्ति या संस्था द्वारा समंकों को चित्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनमें दंड चित्र या बार चार्ट इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण की एक सामान्य विधि

है। प्रत्येक दंड या बार की दूरी अन्य दंड से समान रखते हुए दंड की लम्बाई को उपलब्ध समंकों के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।

Barrier to entry (बैरियर्स टू एन्ट्री) **नई फर्मों के बाजार में प्रवेश में अवरोध**

बहुधा अनेक कारणों से बाज़ार में नई फर्में प्रवेश नहीं कर पातीं, और इसके फलस्वरूप पहले से मौजूद फर्मों का वर्चस्व बना रहता है। ये कारण इस प्रकार के हो सकते हैं :

(i) पूर्व में विद्यमान फर्मों का बड़ा आकार तथा उन्हें प्राप्त मितव्ययताओं के कारण नीची उत्पादन लागतें;

(ii) पूर्व में विद्यमान फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के प्रति उपभोक्ताओं का दृढ़ रूझान;

(iii) पूर्व में विद्यमान फर्मों का कच्चेमाल की आपूर्ति, उत्पादन की तकनीक तथा बाज़ार पर नियंत्रण;

(iv) नए विक्रेताओं को बाजार में प्रविष्ट होने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता, जो उनमें से अधिकांश के वश की बात नहीं है, तथा

(v) नए विक्रेताओं के लिए अपना उपक्रम शुरू करने हेतु उपस्थित कठिनाइयां जिनमें लाइसेंस, भूमि, विद्युत् आदि से सम्बन्धित व्यवधान शामिल हैं।

कभी–कभी पूर्व में विद्यमान विक्रेता वस्तु की कीमत को इतना कम रखते हैं कि नई फर्म बाज़ार में प्रवेश करने का साहस भी नहीं कर सकती। प्रायः नए विक्रेताओं के बाज़ार में प्रवेश की सम्भावनाएँ अत्यंत कम होने के कारण पूर्व में विद्यमान फर्में अपने उत्पादों पर असामान्य लाभ अर्जित करते रहते हैं।

Barriers to exit (बैरियर्स टू एक्ज़िट) **बाजार से बहिगर्मन में अवरोध**

कभी–कभी बाज़ार की स्थिति ऐसी होती है जिसमें कोई फर्म बाज़ार छोड़कर जाना चाहे तब भी नहीं जा पाती। फर्म की बिक्री तथा लाभ में लगातार कमी होने पर भी सम्पत्तियों की विशालता तथा विशिष्ट प्रकृति के कारण उन्हें बेच पाना कठिन होता है, और इस लिए उत्पादन प्रक्रिया बन्द करना सम्भव नहीं हो पाता। कभी–कभी सरकारी कानूनों की वजह से भी फर्म को बंद करना सम्भव नहीं होता।

Barter (बार्टर) **वस्तु विनिमय**

किसी वस्तु या सेवा के बदले वस्तु या सेवा का आदान प्रदान करना। इस प्रक्रिया में विनिमय की जानी वाली वस्तु या सेवा की कीमत मुद्रा के रूप में व्यक्त नहीं की जाती, अपितु किसी अन्य वस्तु या सेवा के रूप में व्यक्त की जाती है। उदाहरण के लिए एक गाय के बदले में चार बकरियों का विनिमय हो सकता है, या नाई की सेवा के बदले में दो किलो गेहूँ दिए जा सकते हैं। परन्तु वस्तु विनिमय प्रणाली कष्टप्रद हैं। इसमें निम्न दोष हो सकते हैं :

(i) दोहरे संयोग का अभाव – प्रायः जिसके पास गाय है, जरूरी नहीं कि उसे बकरियों की जरूरत हो।

(ii) विनिमय की दर पर दोनों पक्षों की सहमति हो जाए यह जरूरी नहीं है।

(iii) असुविधाजनक – प्रायः वस्तु के बदले मुद्रा का विनिमय सुविधापूर्ण रहता है परन्तु वस्तु के बदले सेवा या वस्तु का लेन देन असुविधापूर्ण रहता है। वर्तमान संदर्भ में विकसित समाज में वस्तु विनिमय का अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया है।

Base line (बेस लाइन) **आधार वर्ष के समंक**

किसी भी नीति या कार्यक्रम को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रायः यह देखा जाता है कि आधार वर्ष में क्या स्थिति है। कीमतों के संदर्भ में सूचकांक बनाते समय आधार वर्ष की कीमतों की तुलना वर्तमान वर्ष से की जाती है।

Base line survey (बेस लाइन सर्वे) **आधार वर्ष से सम्बद्ध सर्वेक्षण**

प्रायः आधार वर्ष से सम्बद्ध आंकड़े उपलब्ध न होने पर सर्वेक्षण के माध्यम से ये समंक या आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इन संमकों के अभाव में यह ज्ञात करना कठिन होता है कि निर्दिष्ट नीति का कार्यक्रम के फलस्वरूप निर्दिष्ट अवधि में कितना सुधार हुआ या होने की सम्भावना है।

Baye's theorem (बेज़ थ्योरम) **बेज़ प्रमेय**

प्रायिकता के सिद्धान्त में प्रयुक्त एक सूत्र, जिसके आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि किसी बाद की घटना के घटित होने पर प्रथम घटना के घटित होने की प्रायिकता (सम्भाव्यता) कितनी है। मान लीजिए, हम यह जानना चाहते हैं कि किसी चिकित्सक ने रोगी को सही दवा दी है या नहीं। इस घटना से पूर्व हम यह मानकर चले थे कि चिकित्सक द्वारा सही दवा देने की सम्भावना 50 प्रतिशत है। हम रोगी को स्वस्थ होने पर ही वास्तविक स्थिति को ज्ञात कर सकते हैं, हालांकि यह आंकलन भी शत प्रतिशत सही होना जरूरी नहीं है। रोगी सही दवा के बिना भी स्वस्थ हो सकता है अथवा सही दवा लेने पर भी स्वस्थ नहीं हो सकता। बेज़ प्रमेय के आधार पर हम रोगी की स्थिति को देखकर इस बात की प्रायिकता ज्ञात कर सकते हैं कि रोगी को चिकित्सक ने सही दवा दी थी या नहीं। यदि सही दवा न मिलने पर भी दस में से एक रोगी स्वस्थ हो जाता है, तथा सही दवा मिलने पर दो में से एक रोगी स्वस्थ हो तो यह निष्कर्ष दिया जा सकता है कि सही दवा मिलने तथा स्वस्थ होने में प्रापिकता उस स्थिति से पांच गुनी अधिक है जिसमें सही दवा न मिलने पर भी रोगी स्वस्थ हो सकता है।

Bear (बीयर) **मंदड़िया**

एक ऐसा व्यापारी जो शेयरों अथवा वस्तुओं की कीमतों में कमी की आशा से अग्रिम सौदों के माध्यम से उनकी बिक्री करता है। उसे यह आशा रहती है कि कीमतें बहुत कम होने पर वह सम्बद्ध शेयरों या वस्तुओं की पुनः खरीद कर लेगा।

Bear market (बीयर मार्केट) **मंदड़िया बाज़ार**

बाज़ार की वह स्थिति जिसमें व्यापारियों का बिक्री पर दबाव बढ़ने से शेयरों या

वस्तुओं की कीमतों में ह्रासमान प्रवृत्ति बन जाती है। ऐसे बाज़ार में शेंयरों या वस्तुओं को खरीदने के सौदे बहुत कम होते हैं तथा विक्रय हेतु दबाव बना रहता है।

Bearer bonds (बॉड्स) **धारक ऋण पत्र**

ऐसी वित्तीय प्रतिभूतियां जिन पर किसी व्यक्ति या फर्म का नाम अंकित नहीं होता, तथा धारक ही इस प्रकार के ऋण पत्र या प्रतिभूति का स्वामी माना जाता है।

Bearer cheques (बीयरर चैक्स) **धारक को देय चैक**

यदि किसी चैक पर पाने वाले व्यक्ति या प्रतिष्ठान का नाम अंकित न हो, तो इसका धारक ही बैंक में इसे प्रस्तुत करके चैक पर अंकित राशि प्राप्त कर सकता है।

Before tax income (बीफोर टैक्स इन्कम) **कर-पूर्व की आय**

कर चुकाने से पूर्व व्यक्ति अथवा कम्पनी को प्राप्त आय।

Beggar-my neighbour policy

(बैगर माई नेबर पालिसी) **स्वहित पोषण की नीति**

जब एक देश केवल अपने ही हित का पोषण करने वाली नीति अपनाता है, तथा किसी अन्य देश को इससे होने वाली हानि की परवाह नहीं करता, तो ऐसी नीति को स्व–हित पोषण की नीति माना जाता है। मान लीजिए, कोई देश मंदी तथा बेरोज़गारी की समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु आयातों पर अंकुश लगा देता है तथा संरक्षण की ऊँची दीवारें निर्मित कर देता है तो **इससे उस देश को तो लाभ होगा** लेकिन अनेक छोटे–छोटे देशों की अर्थव्यवस्था पर इससे काफी प्रतिकूल प्रभाव होगा। ये वस्तुतः उस बड़े देश को निर्यात करके ही गुज़ारा करने वाले देश हो सकते हैं। हाल के वर्षों में कुछ देश कृत्रिम रूप से अपनी मुद्राओं का अधिमूल्यन करने लगे हैं क्योंकि इस प्रकार की नीति से उनकी व्यापार शर्तें अनुकूल बनी रहती हैं।

Behavioural theory of the firm

(बीहेवियरल थ्योरी ऑफ दी फर्म) **फर्म का व्यावहारिकता सिद्धान्त**

परम्परागत रूप में ऐसी मान्यता थी कि बाज़ार में कार्यरत प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ अर्जित करने का प्रयास करती है। कोहेन, सायर्ट, डी.सी.हेग, हॉल व हिच आदि ने हाल के दशकों में बतलाया है कि बाज़ार की पारस्परिक संघर्षपूर्ण स्थिति के संदर्भ में *अधिकतम लाभ प्राप्ति का लक्ष्य आज महत्त्वहीन हो गया है।* सायर्ट तथा मार्श ने व्यावहारिकता सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए वस्तु की बिक्री से सम्बद्ध पांच उद्देश्यों की विवेचना की : (i) उत्पादन सम्बन्धी लक्ष्य, (ii) बिक्री सम्बन्धी लक्ष्य, (iii) स्टॉक सम्बन्धी लक्ष्य, (iv) बाज़ार में अपने हिस्से सम्बन्धी लक्ष्य, तथा (v) लाभ का लक्ष्य। प्रत्येक फर्म का मैनेजर *परिस्थिति* के अनुसार निर्दिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। यदा कदा एक से अधिक लक्ष्य की प्राप्ति से ही किसी मैनेजर को संतोष प्राप्त होता है।

व्यावहारिकता सिद्धान्त के अनुसार फर्म के उद्देश्य सम्बद्ध मैनेजर की आकांक्षा के

स्तर पर निर्भर करते हैं, तथा यह आवश्यक नहीं है कि ये आकांक्षाएँ संख्याओं (लाभ, उत्पादन आदि) पर ही आधारित हों।

Benefit (बेनीफिट) **लाभ**

किसी आर्थिक गतिविधि से प्राप्त होने वाला लाभ। उत्पादक को यह लाभ उत्पादन के रूप में या लाभ के रूप में प्राप्त होता है। इसके विपरीत उपभोक्ता को प्राप्त होने वाला लाभ उसके संतुष्टि स्तर में वृद्धि का सूचक होता है। प्रायः लाभ के विश्लेषण में किसी भी परियोजना से समाज को प्राप्त होने वाले लाभ को शामिल किया जाता है।

Benefit-cost analysis (बेनीफिट–कॉस्ट एनलिसिस) **लाभ-लागत विश्लेषण**

किसी भी आर्थिक गतिविधि पर कितनी राशि व्यय होगी, तथा उसके फलस्वरूप समाज को कितना लाभ मिलेगा, इसकी तुलना करना लाभ–लागत विश्लेषण कहलाता है। प्रायः किसी परियोजना का आर्थिक आकलन करते समय लाभ–लागत अनुपात को देखा जाता है, तथा यदि यह अनुपात इकाई से अधिक हो (B-C Ratio > 1) तो परियोजना को स्वीकार्य मान लिया जाता है।

Benefit Principle (बेनीफिट प्रिंसिपल) **लाभ का सिद्धान्त**

इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी सरकारी व्यय का भार उन व्यक्तियों को उठाना चाहिए जो इससे लाभ उठाते है। प्रायः यह माना जाता है कि परियोजना की लागत को उन्हीं लोगों में आनुपातिक रूप में आंवटित किया जाना चाहिए जो इससे लाभ प्राप्त करने वाले हैं। परन्तु यह सिद्धान्त अत्यंत गरीब लोगों पर लागू नहीं होता जो अल्प आय या बेरोज़गारी के कारण लागत को वहन करने में समर्थ नहीं हैं। प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य, पेयजल आपूर्ति, स्वच्छता आदि कार्यक्रमों की लागत को गरीब लाभार्थियों से वसूल करना उपयुक्त नही है।

Benelux(बेनेलक्स) **बेल्जियम, नीदरलैंड्स तथा लक्ज़मबर्ग देशों का समूह**

यूरोप के इन देशों के बीच आन्तरिक तटकर को समाप्त किया गया है, तथा ये सभी देश यूरोपीय समुदाय के सदस्य हैं। इन देशों के बीच वस्तुओं का स्वतंत्र आवागमन होता है तथा एक सामान्य मुद्रा (यूरो) का प्रचलन किया गया है। 1948 में पहले बेनेलक्स के देशों ने आन्तरिक तटकरों को समाप्त किया तथा 1958 से ये देश यूरोपीयन समुदाय में शामिल हो गए।

Benthem, Jeremy (1748-1832) (जेरेमी बेन्थम) **उपयोगितावाद के जनक**

बेन्थम के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपने हित को सर्वोपरि मानता है। सरकारी नीतियों का लक्ष्य भी अधिकतम व्यक्तियों को आर्थिक लाभ पहुंचाना ही होना चाहिए।

Bernoulli hypothesis (बर्नोली हायपोथिसिस) **बर्नोली परिकल्पना**

अठारहवीं शताब्दी में डेनियल बर्नोली ने बतालाया कि जोखिम उठाने का निर्णय केवल खर्च की जाने वाली राशि पर ही नहीं, अपितु सम्भावित उपयोगिता या लाभ पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, कोई भी शर्त लगाना तब लाभप्रद है जब

एक सिक्का उछालने पर प्रत्येक "चित्त" पर आपको 10 रुपए प्राप्त हों तथा प्रत्येक "पट" पर 5 रुपए का घाटा हो। यह सिक्का निरपेक्ष है, तथा चित्त व पट दोनों आने की प्रायिकता (सम्भाव्यता) समान है। परन्तु यदि आपके पास केवल पांच ही रुपए हों, तो शर्त लगाना आपके लिए लाभप्रद नहीं होगा।

Bertrand competition (बर्ट्रेन्ड कम्पीटीशन) **बर्टेन्ड प्रतियोगिता**

अल्पाधिकार के अन्तर्गत यदि बाज़ार में दो या तीन ही विक्रेता हों, तथा उनमें से प्रत्येक यह मान ले कि वह चाहे कीमत में परिवर्तन कर दे, उसके प्रतियोगी अपनी अपनी कीमतों को यथावत् रखेंगे। यदि सभी विक्रेता एक जैसी वस्तुएं बेचते हों तो बर्ट्रेन्ड प्रतियोगिता के अन्तर्गत विभिन्न विक्रेता कीमतों में परिवर्तन करके परस्पर नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे।

Bid price (बिड प्राइस) **वांछित कीमत**

वह कीमत जिस पर वित्तीय प्रतिभूति, शेयर, विदेशी मुद्रा या वस्तु को खरीदने हेतु बोली लगाई जाती है। बहुधा ग्राहकों के लिए दो कीमतें प्रस्तुत की जाती हैं : एक तो नीची कीमत (वांछित कीमत) और दूसरी विक्रय कीमत जो ऊँची होती है जिस पर प्रतिभूति या वस्तु को बेचना है। इन दोनों कीमतों का अन्तर विक्रेता का लाभ मार्जिन होता है।

Big bang (बिग बैंग) **व्यापक धमाकेदार परिवर्तन**

जब कभी किसी देश में आर्थिक सुधारों को *एकीकृत रूप में तथा शीघ्रातिशीघ्र* लागू किया जाता है, तो इसे बिग बैंग या धमाकेदार परिवर्तन कहा जता है। यदि विश्व के बड़े शेयर बाज़ार परस्पर जुड़ जाएं, और विश्वस्तर पर शेयरों की खरीद व बिक्री होने लगे तो इसे भी बिग–बैंग कहा जा सकता है।

Big push (बिग पुश) **प्रबल समर्थन, प्रबल संवृद्धि**

यदि अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों (कृषि, उद्योग, संरचनाएँ, संचार, सामाजिक सेवाएँ आदि) के संतुलित विकास हेतु एक साथ निवेश किया जाए तो इससे ये क्षेत्र परस्पर समर्थन देंगे जिससे आर्थिक संवृद्धि की दर भी काफी अधिक हो जाएगी।

Bilateralism (बायलेटरिज़्म) **द्विपक्षीय व्यापार**

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में दो देशों के बीच हुआ समझौता, जिसके अन्तर्गत वे परस्पर लाभ देने वाली ऐसी शर्तों पर व्यापार करते हैं जिनका दूसरे देशों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। द्वयवाद के अन्तर्गत परस्पर लाभप्रद आयात अभ्यंश (कोटा) तथा अनुकूल आयात कर नीतियों को लागू किया जा सकता है। यदि यह समझौता अनेक देशों के बीच हो तो उसे बहुपक्षीय व्यापार माना जाएगा।

Bilateral flows (बायलेटरल फ्लोज) **द्विपक्षीय प्रवाह**

वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह के बदले अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य मुद्रा का प्रवाह। उदाहरण के लिए, उत्पादन में प्रयुक्त साधनों के लिए मौद्रिक भुगतान

करना, तथा वस्तुओं व सेवाओं के उपभोग के बदले उनका भुगतान करना, द्विपक्षीय प्रवाह ही है।

Bilateral monopoly (बायलेटरल मॉनोपोली) **द्वयाधिकार**

बाज़ार की वह स्थिति, जिसमें वस्तु का केवल एक ही क्रेता हो तथा एक ही विक्रेता हो। यदि एक श्रमिक संघ तथा एक ही नियोक्ता से उसे सौदेबाजी करनी हो तो यह द्वयाधिकार की स्थिति होगी। यदि प्रतिरक्षा की सामग्री बनाने वाली एक ही कम्पनी हो तथा इसकी क्रेता केवल सरकार का प्रतिरक्षा विभाग हो, तो भी यह द्वयाधिकार की स्थिति होगी।

Bill (बिल) **एक वित्तीय प्रपत्र**

भुगतान हेतु प्रस्तुत प्रपत्र, संसद या विधानसभा की स्वीकृति हेतु प्रस्तुत अधिनियम का प्रारूप। इस प्रकार बिल शब्द का अर्थ अलग अलग संदर्भ में अलग–अलग है।

Bill of exchange (बिल ऑफ एक्सचेंज) **विनिमय प्रपत्र**

एक फर्म द्वारा अल्पकाल (प्रायः 3 माह) के लिए दूसरी फर्म को उधार देने हेतु निर्गमित वित्तीय प्रतिभूति। निर्दिष्ट राशि के लिए ऋणदाता एक विनिमय प्रपत्र जारी करता है तथा ऋण लेने वाला नियत तिथि पर ब्याज़ सहित उक्त राशि को अदा करने हेतु अपनी लिखित सहमति देता है। ऋणी अपनी सुविधानुसार इस प्रपत्र का बट्टाकरण करवाकर प्रपत्र में उद्धृत राशि से कुछ कम राशि प्राप्त कर लेता है। प्रतिष्ठित फर्मों द्वारा जारी किए गए विनिमय प्रपत्रों को प्रायः बैंक खरीद लेते हैं।

Bimodal distribution (बायमॉडल डिस्ट्रीब्यूशन)

जहां समंकों का वितरण इस प्रकार हो कि दो आवृत्तियां सर्वाधिक बार व्यक्त होती हों। इनके बीच में प्रस्तुत आवृत्तियों के मूल्य बहुत कम होंगे। उदाहरण के लिए प्रति हजार जनसंख्या में शिशुओं की मृत्युदर अपेक्षाकृत अधिक हो, तथा वृद्धावस्था में भी यह दर काफी अधिक हो सकती है तो इसके बीच के आयु वर्ग में मृत्युदर कम होगी।

Binomial distribution (बायनोमियल डिस्ट्रीब्यूशन) **द्विपद वितरण**

समंकों का वह वितरण जिसमें किसी दैव घटना के घटित होने की प्रत्याशित संख्या दी गई हो तथा प्रत्येक बार की घटना की निश्चित् प्रायिकता का पूर्व ज्ञान हो। यदि घटना घटित होने की प्रायिकता P तथा न घटित होने की प्रायिकता (1-P) हो तो द्विपद वितरण के द्वारा n बार प्रयास करने पर r कितनी बार घटित होगा इसका पता लगाया जा सकता है (जहां $0 \leq r \leq n$ है)।

Birth rate (बर्थ रेट) **जन्मदर**

प्रति हजार जनसंख्या के पीछे कितने बच्चों का जन्म हुआ, उसे जन्म दर कहते हैं। भारत में जन्मदर लगभग 26 प्रति हजार है जबकि यूरोप के देशों में 12 प्रतिहजार से भी कम है। जन्मदर तथा मृत्युदर का अन्तर हमें जनसंख्या की वृद्धि दर का बोध कराता है।

Black economy (ब्लैक इकॉनोमी) **काली या अनाधिकृत अर्थव्यवस्था**

ऐसी आर्थिक गतिविधियां जिनके बारे में कर अधिकारियों तथा अन्य सरकारी एजेन्सियों को कोई विवरण नहीं दिया जाता। तस्करी, जुआ तथा काले बाजार में की गई बिक्री या खरीद को अनाधिकृत अर्थव्यवस्था का ही भाग माना जाता है, तथा इनमें सलंग्न व्यक्ति कर वंचना भी करते हैं। इन गतिविधियों को राष्ट्रीय आय की गणना करते समय छोड़ दिया जाता है। ऐसी गतिविधियों को अवैधानिक या गैर कानूनी गतिविधियाँ माना जाता है।

Black market (ब्लैक मार्केट) **काला बाजार**

जब सरकारी हस्तक्षेप के फलस्वरूप किसी वस्तु की कीमत इसके साम्य स्तर से काफी नीचे तय कर दी जाती है तथा विक्रेताओं को निर्धारित कीमत पर ही बेचने के लिए विवश किया जाता है, तो पूर्ति की अपेक्षा माँग के आधिक्य के कारण अनधिकृत रूप में काले बाजार में वह वस्तु काफी ऊँची कीमत पर बिकनी प्रारम्भ हो जाती है। ऐसी दशा में विक्रेता अधिकृत मूल्य पर वस्तु न बेचकर काले बाजार में बेचकर भारी लाभ कमाते हैं।

Black money (ब्लैक मनी) **कालाधन**

ऐसा धन जिसकी उत्पत्ति अवैधानिक गतिविधियों के कारण हुई हो। तस्करी, करों की चोरी, काला–बाजारी आदि ऐसी गतिविधियां हैं जिनको ग़ैर कानूनी माना जाता है। इनसे प्राप्त आय पर कोई कर भी नहीं चुकाया जाता। कालेधन से की गई खरीद व बिक्री से प्राप्त मुनाफे पर कोई आय कर नहीं चुकाया जाता, और इस कारण उत्तरोत्तर इसमें वृद्धि होती जाती है।

भारत में कालेधन को बाहर लाने हेतु अनेक बार स्वैच्छिक घोषणा की व्यवस्था की गई तथा एक मुश्त क़र लगाकर कालेधन की घोषणा करवाई गई है।

Blue chips (ब्लू चिप्स)

बम्बई शेयर बाजार में सूचीबद्ध सर्वाधिक प्रतिष्ठित कम्पनियों के शेयर। इन्हीं के आधार पर बी.एस.ई. सूचकांक बनाया जाता है।

Board of directors (बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स) **संचालक मंडल**

किसी भी संयुक्त कम्पनी या संस्थान का शीर्ष संचालक समूह, जिन्हें निदेशक या संचालक मंडल भी कहा जाता है। अधिकांश निदेशकों का चुनाव कम्पनी के अंशधारियों (शेयर होल्डर्स) द्वारा किया जाता है। कहीं–कहीं सरकार द्वारा मनोनीत निदेशक भी संचालक मंडल में शामिल होते हैं। इनमें बैंक, स्टॉक एक्सचेंज आदि हैं जहां सरकार द्वारा मनोनीत निदेशक भी होते हैं। इनमें से एक व्यक्ति प्रबन्ध संचालक होता है (जो पूर्णकालिक होता है) जबकि शेष अंशकालीन निदेशक या संचालक होते हैं।

Bohm-Bawerk, Eugen Von (बॉम बावर्क, यूजेन वॉ)

19 वीं शताब्दी का आस्ट्रियन अर्थशास्त्री जिसने ब्याज़ तथा पूंजी के विषय में

महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। इनमें समय अधिमान का ब्याज़ सिद्धान्त, ब्याज का उत्पादकता सिद्धान्त, आदा–प्रदा विश्लेषण, मज़दूरी कोष सिद्धान्त आदि प्रमुख हैं। बॉम बावर्क को सर्वाधिक पहचान ब्याज़ के समय–अधिमान सिद्धान्त के कारण प्राप्त हुई।

Bond (बॉंड) **प्रतिभूति; बॉंड**

एक प्रकार की स्थिर ब्याज़ वाली प्रतिभूति जिसे केंद्र या राज्य सरकार, सरकारी निगम, कम्पनी अथवा अन्य संस्थाएँ निर्गमित करती हैं। बॉंड पर अंकित ब्याज़ तथा मूल राशि का भुगतान निर्गम करने वाली संस्था निर्दिष्ट अवधि पूरी होने पर करती है, लेकिन बॉंड धारक, यदि चाहे, तो उस अवधि के पूरा होने से पूर्व भी इसे बेच सकता है।

B.O.T. (बी.ओ.टी.) **निर्माण करो, काम में लो तथा हस्तांतरित कर दो**

भारत में सड़कों तथ पुलों के निर्माण हेतु निजी क्षेत्र की पूँजी निवेश को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से यह व्यवस्था की गई है। इसका पूरा नाम Build, Operate and Transfer है। जो भी निजी क्षेत्र की कम्पनी सड़क (राजमार्ग) या पुल का निर्माण करती है, वह टोल टैक्स लगाकर वाहनों के स्वामियों से निर्माण लागत तथा अपना वांछित लाभ वसूल करती है। कुछ वर्षों के बाद पूरी लागत (लाभ सहित) वसूल करने के पश्चात् वह सड़क या पुल सरकार को हस्तांतरित कर दिया जाता है।

Bonus shares (बोनस शेयर) **बोनस अंश**

किसी कम्पनी द्वारा अपने अंशधारियों को बिना भुगतान लिए प्रत्येक शेयर (अंश) के बदले एक या अधिक अंश बोनस के रूप में दिए जा सकते हैं। यह नीति राइट्स इशू से भिन्न है जिसके अन्तर्गत पुराने अंशधारियों को प्राथमिकता वाले मूल्य पर नए शेयर देने का प्रस्ताव होता है। जो अंशधारी प्रस्तावित कीमत पर शेयर लेने को तैयार हैं, राइट्स इशू के अंतर्गत उन्हें निर्धारित शेयर दे दिए जाते हैं। परन्तु बोनस शेयर के आवंटन से कम्पनी को कोई भी मुद्रा प्राप्त नहीं होती।

Boom (बूम) **उत्कर्ष का चरण**

व्यापार चक्र का वह भाग जिसमें पूर्ण रोज़गार के स्तर का उत्पादन प्राप्त होता है, कीमत स्तर बढ़ता है, सकल माँग का स्तर ऊँचा होता है तथा आम जनता की अपेक्षाओं का स्तर काफी ऊँचा रहता है।

Borrower (बोरोअर) **ऋण लेने वाला**

उपभोग अथवा उत्पादन में निवेश हेतु जो व्यक्ति या फर्म ऋण प्राप्त करता है उसे ऋण लेने वाला कहा जाता है। प्रायः ऋण लेने हेतु ऋण दाता को भूमि, भवन, मशीनों, जेवर या व्यक्तिगत गारंटी की जमानत देनी होती है। ऋण की अदायगी न होने पर इस जमानत को ही वसूली के लिए प्रयोग में ले लिया जाता है।

Bottom line (बॉटम लाइन) **लाभ की अन्तिम सीमा**

सभी लागतों के भुगतान के पश्चात् अर्जित लाभ। परन्तु इस लाभ में निर्दिष्ट

अवधि में देय करों का भी समायोजन किया जाता है, लेकिन लाभांश अथवा रिज़र्व कोष के प्रावधान से पूर्व इस लाभ का विवरण दिया जाता है।

Bounded rationality (बाउन्डेड रैशनेलिटी) **सीमाबद्ध विवेकशीलता**

आर्थिक इकाइयों का लक्ष्य इष्टतम व्यवहार दर्शाना होता है लेकिन प्रायः वे व्यवहार में ऐसा नहीं कर पातीं। इन सीमाओं के कारण सभी आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने हेतु अनुबन्ध नहीं किए जा सकते। प्रायः किसी व्यक्ति या संस्था के पास पर्याप्त सूचनाएँ एकत्रित हो जाती हैं, फिर भी इन उपलब्ध सूचनाओं के पूर्ण उपयोग की एक सीमा होती है। सभी विकल्पों को समझने के बावजूद वह व्यक्ति या फर्म इष्टतम विकल्प को नहीं चुन पाती तथा इष्टतम से नीचे वाले स्तर पर ही रुक जाती हैं।

Box diagram (बॉक्स डायग्राम) **आयताकार चित्र**

कल्याण अर्थशास्त्र में प्रयुक्त इसको एजवर्थवाउली आयताकार चित्र भी कहा जाता है। यदि एक फर्म या व्यक्ति के पास दो साधन– श्रम (L) तथा पूंजी (K) हैं, जिनका उपयोग दो वस्तुओं (X) तथा (Y) के उत्पादन हेतु किया जा सकता है तो आयताकार चित्र के माध्यम से बतलाया जा सकता है कि श्रम व पूँजी की निर्दिष्ट मात्राओं तथा दी हुई तकनीक के अनुरूप X तथा Y की कितनी मात्राएँ उत्पादित की जा सकेगी।

उपरोक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि जैसें जैसे O से O' की ओर बढ़ते हैं, श्रम व पूँजी की उपलब्ध मात्राओं को X के उत्पादन में अधिक प्रयुक्त किया जाता है। स्वाभाविक है इससे Y के उत्पादन हेतु उत्पादन के साधनों का प्रयोग कम होगा। इसके विपरीत बिन्दु O' से O की ओर आने पर दोनों साधनों को उत्तरोत्तर Y के लिए अधिक प्रयुक्त किया जाएगा।

इस आयताकार चित्र में यह भी दर्शाया गया है कि O तथा O' के बीच श्रम तथा पूंजी की मात्राओं को X तथा Y दोनों के उत्पादन हेतु प्रयुक्त किया जाता है, हालांकि साधनों का इष्टतम आवंटन उस स्तर पर होता है कि जहां X तथा Y के समोत्पाद वक्र परस्पर स्पर्श

करते हैं। तद्नुसार A, B, C, व D साधनों के इष्टतम आवंटन की स्थितियाँ हैं।

X तथा Y की निर्दिष्ट मात्राओं को दो व्यक्तियों (M व N) के बीच किस प्रकार आवंटित किया जाएगा इसे दर्शाने हेतु भी आयताकार चित्र का प्रयोग किया जा सकता है।

Brain drain (ब्रेन ड्रेन) **प्रतिभा का पलायन**

प्रायः पिछड़े हुए देशों के प्रतिभाशाली युवक–युवतियां विकसित देशों में जाकर बेहतर रोज़गार प्राप्त करते हैं। इनमें सॉफ्टवेयर इन्जीनियर, सिविल इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर (गणित, अर्थमिती या सांख्यिकी) शामिल हैं जो अपने देश में शिक्षा ग्रहण करके ऊँची पगार पर विकसित देशों में नौकरी कर लेते हैं। इस प्रकार विकासशील देशों से प्रतिभाओं का पलायन हो रहा है।

Branch banking (ब्रांच बैंकिंग) **शाखा बैंकिंग**

एक ऐसी बैंकिंग व्यवस्था, जिसमें किसी बैंक को विभिन्न स्थानों पर अपनी शाखाएँ खोलने की अनुमति होती है। जहाँ इससे ग्राहकों को सुविधा प्राप्त होती है, वहीं बैंक को भी प्रशासनिक दृष्टि से बचत होती है। भारत में स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया, इसके सहयोगी बैंकों, सेंट्रल बैंक, यूको बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि में प्रत्येक की देश भर में सैंकड़ों शाखाएँ कार्यरत हैं।

Brand name (ब्रांड नेम) **किसी वस्तु का ब्रांड**

कोई बड़ी फर्म अपनी वस्तु को ब्रांड नाम देकर उसी प्रकार के अन्य उत्पादों से भिन्नता का आभास करा सकता है। वे उत्पादक भी अपनी–अपनी वस्तुओं को ब्रांड नाम दे सकते हैं।

इस प्रकार ब्रांड नाम के माध्यमों से वस्तु विभेद करना सुगम हो जाता है।

Break-even (ब्रेक ईवन) **लाभ-अलाभ की स्थिति**

अल्पकाल में उत्पादन तथा बिक्री का वह स्तर जिस पर फर्म को केवल स्थिर तथा परिवर्तनशील लागत की भरपाई करने योग्य आगम प्राप्त होता है। अन्य शब्दों में, यह स्थिति न तो फर्म के लिए लाभ की स्थिति है, और न ही हानि की।

अवधि में देय करों का भी समायोजन किया जाता है, लेकिन लाभांश अथवा रिज़र्व कोष के प्रावधान से पूर्व इस लाभ का विवरण दिया जाता है।

Bounded rationality (बाउन्डेड रैशनेलिटी) **सीमाबद्ध विवेकशीलता**

आर्थिक इकाइयों का लक्ष्य इष्टतम व्यवहार दर्शाना होता है लेकिन प्रायः वे व्यवहार में ऐसा नहीं कर पातीं। इन सीमाओं के कारण सभी आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने हेतु अनुबन्ध नहीं किए जा सकते। प्रायः किसी व्यक्ति या संस्था के पास पर्याप्त सूचनाएँ एकत्रित हो जाती हैं, फिर भी इन उपलब्ध सूचनाओं के पूर्ण उपयोग की एक सीमा होती है। सभी विकल्पों को समझने के बावजूद वह व्यक्ति या फर्म इष्टतम विकल्प को नहीं चुन पाती तथा इष्टतम से नीचे वाले स्तर पर ही रुक जाती हैं।

Box diagram (बॉक्स डायग्राम) **आयताकार चित्र**

कल्याण अर्थशास्त्र में प्रयुक्त इसको एजवर्थवाउली आयताकार चित्र भी कहा जाता है। यदि एक फर्म या व्यक्ति के पास दो साधन– श्रम (L) तथा पूंजी (K) हैं, जिनका उपयोग दो वस्तुओं (X) तथा (Y) के उत्पादन हेतु किया जा सकता है तो आयताकार चित्र के माध्यम से बतलाया जा सकता है कि श्रम व पूँजी की निर्दिष्ट मात्राओं तथा दी हुई तकनीक के अनुरूप X तथा Y की कितनी मात्राएँ उत्पादित की जा सकेगी।

उपरोक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि जैसें जैसे O से O' की ओर बढ़ते हैं, श्रम व पूँजी की उपलब्ध मात्राओं को X के उत्पादन में अधिक प्रयुक्त किया जाता है। स्वाभाविक है इससे Y के उत्पादन हेतु उत्पादन के साधनों का प्रयोग कम होगा। इसके विपरीत बिन्दु O' से O की ओर आने पर दोनों साधनों को उत्तरोत्तर Y के लिए अधिक प्रयुक्त किया जाएगा।

इस आयताकार चित्र में यह भी दर्शाया गया है कि O तथा O' के बीच श्रम तथा पूंजी की मात्राओं को X तथा Y दोनों के उत्पादन हेतु प्रयुक्त किया जाता है, हालांकि साधनों का इष्टतम आवंटन उस स्तर पर होता है कि जहां X तथा Y के समोत्पाद वक्र परस्पर स्पर्श

करते हैं। तद्नुसार A, B, C, व D साधनों के इष्टतम आवंटन की स्थितियाँ हैं।

X तथा Y की निर्दिष्ट मात्राओं को दो व्यक्तियों (M व N) के बीच किस प्रकार आवंटित किया जाएगा इसे दर्शाने हेतु भी आयताकार चित्र का प्रयोग किया जा सकता है।

Brain drain (ब्रेन ड्रेन) **प्रतिभा का पलायन**

प्रायः पिछड़े हुए देशों के प्रतिभाशाली युवक—युवतियां विकसित देशों में जाकर बेहतर रोज़गार प्राप्त करते हैं। इनमें सॉफ्टवेयर इन्जीनियर, सिविल इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर (गणित, अर्थमिती या सांख्यिकी) शामिल हैं जो अपने देश में शिक्षा ग्रहण करके ऊँची पगार पर विकसित देशों में नौकरी कर लेते हैं। इस प्रकार विकासशील देशों से प्रतिभाओं का पलायन हो रहा है।

Branch banking (ब्रांच बैंकिंग) **शाखा बैंकिंग**

एक ऐसी बैंकिंग व्यवस्था, जिसमें किसी बैंक को विभिन्न स्थानों पर अपनी शाखाएँ खोलने की अनुमति होती है। जहाँ इससे ग्राहकों को सुविधा प्राप्त होती है, वहीं बैंक को भी प्रशासनिक दृष्टि से बचत होती है। भारत में स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया, इसके सहयोगी बैंकों, सेंट्रल बैंक, यूको बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि में प्रत्येक की देश भर में सैंकड़ों शाखाएँ कार्यरत हैं।

Brand name (ब्रांड नेम) **किसी वस्तु का ब्रांड**

कोई बड़ी फर्म अपनी वस्तु को ब्रांड नाम देकर उसी प्रकार के अन्य उत्पादों से भिन्नता का आभास करा सकता है। वे उत्पादक भी अपनी—अपनी वस्तुओं को ब्रांड नाम दे सकते हैं।

इस प्रकार ब्रांड नाम के माध्यमों से वस्तु विभेद करना सुगम हो जाता है।

Break-even (ब्रेक ईवन) **लाभ-अलाभ की स्थिति**

अल्पकाल में उत्पादन तथा बिक्री का वह स्तर जिस पर फर्म को केवल स्थिर तथा परिवर्तनशील लागत की भरपाई करने योग्य आगम प्राप्त होता है। अन्य शब्दों में, यह स्थिति न तो फर्म के लिए लाभ की स्थिति है, और न ही हानि की।

उत्पादन / बिक्री की मात्रा

उत्पादन / बिक्री की मात्रा

TR = Total Revenue या कुल आगम

TC = Total Costs या कुल लागत

FC = Fixed Costs या स्थिर लागत

VC = Variable Costs या परिवर्तनशील लागत

उपरोक्त चित्र में C बिन्दु पर TR=TC यानी लाभ–अलाभ की स्थिति है जबकि इससे कम उत्पादन होने पर कुल आगम से लागत अधिक होने के कारण फर्म को हानि होगी। C से आगे चलने पर जो भी उत्पादन (Q_2, Q_3 आदि) होगा, उस पर फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त होगा।

Break-up value (ब्रेक अप वैल्यू) **समापन पर प्राप्त मूल्य**

उत्पादन बन्द करने पर सम्पत्ति को बेचने से प्राप्त होने वाला मूल्य

अधिकांशतः क्रियाशील रहते हुए फर्म की सम्पत्ति का मूल्य उस मूल्य से अधिक होता है जो उत्पादन बन्द करने पर उस सम्पत्ति को बेचने पर प्राप्त होना सम्भव है। यदि उत्पादन प्रक्रिया बंद करने पर सम्पत्ति को बेचने से अधिक मूल्य मिलने की आशा हो तो उत्पादन प्रक्रिया बन्द करना बेहतर है। परन्तु प्रायः अनेक प्रकार की सम्पत्ति (मशीनें, भवन आदि) का मूल्यांकन उत्पादन प्रक्रिया के बंद करने पर असम्भव हो जाता है, और इस कारण कुल मूल्य उस स्थिति की तुलना में कम होता है जिसके अन्तर्गत उत्पादन प्रक्रिया जारी रहती है।

Bretton woods (ब्रेटन वुड्स)

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति पर 1944 में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमें विश्वस्तर पर एक नई मौद्रिक व्यवस्था लागू करने पर विचार किया गया। इसी के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF) तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (IBRD) या विश्व बैंक जैसी संस्थाओं का जन्म हुआ। ब्रेटन वुड्स अधिवेशन का एक मुख्य उद्देश्य विदेशी विनिमय दरों में स्थिरता लाना भी था। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ारों में तरलता बनाए रखने के भी प्रयास किए जा रहे हैं।

Broker (ब्रोकर) **मध्यस्थ, दलाल**

एक संगठित बाज़ार में क्रेता तथा विक्रेता के बीच कार्यरत एक मध्यस्थ। यह मध्यस्थ शेयरों, वस्तुओं, ऋण–पत्रों आदि के क्रेताओं तथा विक्रेताओं के बीच एक कड़ी का कार्य करता है, तथा अपनी सेवाओं के बदले एक पक्ष अथवा दोनों पक्षों से कमीशन प्राप्त करता है।

Buchanan, James Mc Gill (जेम्स मैक्गिल बुकेनन)

20वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जिन्होंने सार्वजनिक चयन प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की और इसी कारण उन्हें 1986 में नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।

Budget (बजट) **बजट**

सरकार द्वारा निरूपित प्राप्तियों तथा खर्चों का विवरण, जिस पर संसद अथवा कार्यपालिका की मुहर लगाई जाती है। विगत वर्ष की वास्तविक प्राप्तियों तथा वास्तविक खर्चों के विवरण के साथ आगामी वर्ष की *संभावित* प्राप्तियों व खर्चों के अनुमान प्रस्तुत किए जाते हैं। ये प्राप्तियां करों व कर–इतर स्रोतों से सम्बद्ध हो सकती हैं, जबकि खर्चों में चालू खर्चे (प्रतिरक्षा, प्रशासन, ब्याज, सामाजिक सेवाएँ आदि) और पूँजीगत खर्चे शामिल होते हैं। यदि सभी खर्चों की कुल राशि प्राप्तियों से अधिक हो तो इसे घाटे का बजट कहा जाता है। इसके विपरीत यदि प्राप्तियां कुल व्यय से अधिक होने का अनुमान हो तो इसे बचत वाला बजट कहा जाता है।

Budget line (बजट लाइन) **बजट रेखा**

यह रेखा किसी उपभोक्ता की उस मौद्रिक सीमा को व्यक्त करती है जिसके अनुरूप दी हुई कीमतों पर उपभोक्ता अपनी आय को दो या अधिक वस्तुओं के मध्य इस प्रकार आवंटित करता है कि अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति हो सके। दो वस्तुओं के संदर्भ में बजट रेखा X तथा Y अक्षों को मिलाती है तथा अधिकतम मात्राओं की सीमा निर्धारित करती है।
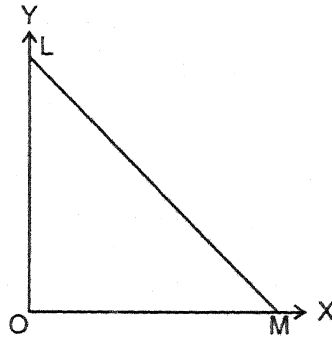
उक्त चित्र में LM बजट रेखा है तथा निर्दिष्ट आय के अन्तर्गत उपभोक्ता या तो OM इकाइयां X की, या OL इकाइयां Y की, अथवा LM के बीच दोनों की इकाइयां खरीद सकता है। LM का ढलान X तथा Y की कीमतों के अनुपात (Px/Py) को व्यक्त करता है। किसी भी दशा में उपभोक्ता LM रेखा के बाहर उपभोग नहीं कर सकता क्योंकि यही उसकी आय की सीमा है।

Buffer stock (बफर स्टॉक) **अनाज या अन्य वस्तु का भण्डार**

किसी व्यापारिक संस्थान या सरकार द्वारा किसी भी वस्तु की कीमत में होने वाले उतार–चढ़ाव को सीमित करने हेतु वस्तु का भंडारण किया जाता है। इससे पूर्व वस्तु की अधिकृत (न्यूनतम) कीमत की घोषणा की जाती है। यदि उत्पादन काफी होने के कारण वस्तु की कीमत बाज़ार में गिरने लगती है तो वह संस्था या सरकार

न्यूनतम कीमत पर वस्तु को खरीद कर भंडार में जमा कर देती है। जब कीमतें बढ़ने लगती हैं तो इस भंडार में से वस्तु की मात्रा बाज़ार में पहुंचा कर कीमतों के प्रसार को रोका जाता है। इस प्रकार बफर स्टॉक के माध्यम से निर्दिष्ट वस्तु की कीमतों में होने वाले परिवर्तनों पर अंकुश लगाया जाता है।

Built-in-stabilizers (बिल्ट इन स्टेबिलाइज़र्स) **स्वचालित स्थिरीकारक घटक**

राष्ट्रीय आय तथा रोज़गार के स्तरों में उतार–चढ़ाव होने पर भी अर्थव्यवस्था में ऐसे घटक विद्यमान होते हैं जो सरकारी हस्तक्षेप के बिना भी स्वमेव स्थिरता ला सकते हैं। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं : (i) बेरोज़गारी भत्ते तथा कल्याणकारी भुगतान जिनके परिमाण में बेरोज़गारी के साथ वृद्धि तथा रोज़गार बढ़ने पर कमी हो जाती है। इस प्रकार मंदी के दौरान जब सकल माँग व रोज़गार में कमी होती है तो इन भुगतानों के माध्यम से सकल माँग में वृद्धि की जा सकती है। (ii) सरकारी करारोपण, जिसके अनुसार सकल माँग में परिवर्तन होने पर अपने आप तदनुरूपी परिवर्तन करों में हो जाता हैं। आयकर तथा बिक्रीकर की राशि में राष्ट्रीय आय के अनुरूप कमी या वृद्धि हो जाती है।

करों में वृद्धि से अपने आप व्यय में कमी हो जाती है, जबकि करों में कमी से यह व्यय बढ़ता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय आय बढ़ने पर बजट घाटे में अपने आप कमी हो जाती है। परन्तु इन स्व–चालित स्थिरीकारक घटकों का प्रभाव आंशिक होता है, तथा अर्थव्यवस्था में व्यापक उतार–चढ़ाव होने पर सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है।

Bull (बुल) **तेजड़िया**

ऐसा व्यापारी जो कीमतों में वृद्धि की आशंका से शेयरों अथवा वस्तुओं को अग्रिम सौदों के अन्तर्गत खरीदता है। उसे यह अपेक्षा रहती है कि इनकी कीमतें आगे चलकर और भी बढ़ेंगी तथा उस समय वह शेयरों या वस्तुओं को ऊँची कीमत पर बेचकर भारी मुनाफा कमा सकेगा। बाज़ार में जब तेजड़िया का वर्चस्व हो तो इसे तेजड़िया बाज़ार कहते हैं।

Burden of debt (बर्डन ऑफ डैट) **ऋण का भार**

व्यक्ति, फर्म या सरकार जब ऋण लेती है तो उस पर देय ब्याज़ एवं मूलधन की किश्त को ऋण का भार कहा जाता है। सरकारी ऋण के संदर्भ में नागरिकों का एक वर्ग जो भार वहन करता है, वह नागरिकों के दूसरे वर्ग की प्राप्ति बन जाती है। परन्तु विदेशी ऋण पर देय ब्याज वस्तुतः देश के नागरिकों पर एक भार है। प्रायः करारोपण के द्वारा सरकार ऋण (ब्याज़ एवं किश्त) का भुगतान करने का प्रयास करती है, परन्तु इससे करदाताओं की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

परन्तु यदि ऋण की राशि का उपयोग अधिक उत्पादन या आय के सृजन हेतु किया जाए तो इसका भार अपेक्षाकृत शून्य अथवा बहुत कम होगा।

Burden of dependency (बर्डन ऑफ डिपेन्डेंसी) **निर्भरता का भार**

जनसंख्या में दो ऐसे वर्ग प्रत्येक देश में होते हैं जो आर्थिक दृष्टि से क्रियाशील नहीं होते। छोटे बालक–बालिकाएँ (आयु वर्ग 0–6 वर्ष तथा 6–15 वर्ष) तथा बुजुर्ग (60 वर्ष से अधिक आयु वाले) प्रायः किसी भी आर्थिक गतिविधि में सक्रिय नहीं हो पाते और इसलिए अन्य आयु-वर्ग के लोगों पर निर्भर होते हैं। जिस देश में बच्चों तथा बुजुर्गों की संख्या अधिक होती है वहाँ निर्भरता का भार या अनुपात भी ऊँचा होता है।

Burden of taxation (बर्डन ऑफ टैक्सेशन) **करारोपण का भार**

देश के नागरिकों द्वारा चुकाए गए प्रत्यक्ष तथा परोक्ष करों का राष्ट्रीय आय में अनुपात। यह अनुपात करारोपण के भार का एक संकेतक है।

Business (बिज़नेस) **व्यवसाय अथवा फर्म**

अर्थशास्त्र में एक व्यावसायिक इकाई दो प्रकार के कार्य करती है : एक ओर वह वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करती है– जिसे खरीदकर परिवार अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इसका द्वितीय कार्य परिवारों के पास उपलब्ध संसाधनों को खरीदकर उत्पादन प्रक्रिया को संचालित करना है। इस खरीद के बदले फर्म द्वारा परिवारों को पारिश्रमिक दिया जाता है, जिसका उपयोग उत्पादित वस्तुओं को खरीदने हेतु किया जाता है।

Business cycle (बिज़नेस साइकल) **व्यापार चक्र**

सकल उत्पादन (राष्ट्रीय आय) तथा रोज़गार के स्तरों में होने वाले उतार व चढ़ाव जो दीर्घकाल तक चलते रहते हैं। व्यापार चक्रों की आवृत्ति एवं आकार भिन्न होना संभव है, लेकिन इनकी प्रकृति (उच्चावचन से सम्बद्ध) प्रायः अनवरत रहती है।
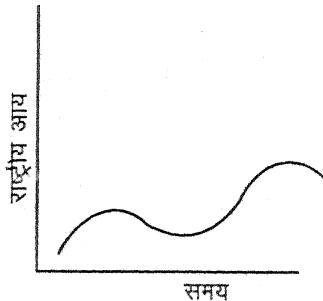
उपरोक्त चित्र में दीर्घकाल में राष्ट्रीय आय (व रोजगार) के स्तर में होने वाले उतार–चढाव को दर्शाया गया है, जो व्यापार चक्र की प्रवृतियों को प्रस्तुत करता है।

Business strategy (बिज़नेस स्ट्रेटजी) **व्यावसायिक रणनीति**

किसी भी व्यावसायिक प्रतिष्ठान द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु दीर्घकाल के लिए निरूपित कार्य योजना तथा नीतियां। इनमें इस फर्म की उत्पादन तथा विपणन सम्बन्धी रणनीतियाँ निहित होती हैं।

Buyer (बायर) **क्रेता**

वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने वाला व्यक्ति या फर्म। उपभोक्ता को प्रायः एक क्रेता के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। फर्म जो वस्तु बनाती है उसे खरीदने हेतु क्रेताओं की उपस्थिति भी अनिवार्य है। ये क्रेता समूची मात्रा को खरीद सकें यह एक वांछनीय शर्त है अन्यथा अगले चक्र में उत्पाद की मात्रा कम हो जाएगी।

एक फर्म भी क्रेता की भूमिका अदा करती है तथा उत्पादन प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु इन्पुट्स (कच्चा माल, श्रम, परिवहन सेवा आदि) का क्रय करती है।

Buyer concentration (बायर कन्सन्ट्रेशन) **क्रेताओं का संकेद्रण**

बाज़ार की वह स्थिति जिसमें क्रेताओं की संख्या तथा आकार की दृष्टि से उनका वितरण दिखाया जाता है। प्रायः प्रत्येक क्रेता कुल आपूर्ति का एक सूक्ष्म अंश ही खरीदता है, हालांकि कभी–कभी बाज़ार पर कुछ क्रेताओं का वर्चस्व भी हो सकता है।

By-product (बाइ प्रॉडक्ट) **सहायक उत्पाद**

किसी वस्तु के उत्पादन के साथ–साथ संयोग से दूसरी वस्तु का भी उत्पादन हो सकता है। शकर के साथ–साथ मोलेसिस या गेहूँ के साथ–साथ भूसे का उत्पादन एक सहायक उत्पाद के रूप में ही होता है। यदि सहायक उत्पाद को बेचने पर आय प्राप्त होती हो तो इससे फर्म के लाभ में वृद्धि हो जाएगी। इसी प्रकार क्रूड ऑइल के शोधन की प्रक्रिया में जहां मुख्य उत्पादन पैट्रोल व डीज़ल का होता है वहीं डामर, नैप्था आदि के रूप में महत्त्वपूर्ण सहायक उत्पाद भी प्राप्त हो जाते हैं।

□□□

C

Cabotage (केबोटेज) **आन्तरिक परिवहन**

यात्रियों तथा माल का विदेशी स्वामित्व वाले केवल वाहनों, नावों या वायुयानों द्वारा केवल देश के भीतर परिवहन। परन्तु आधुनिक युग में सं.रा. अमरीका तथा अनेक यूरोपीय देशों ने विदेशी वाहनों द्वारा परिवहन पर रोग लगा दी है।

Call (कॉल) **माँग**

किसी शेयर के मूल्य का वह भाग जिसका भुगतान होना शेष है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब नए शेयरों के आवेदन के साथ आंशिक भुगतान किया जाता है, तथा शेष का भुगतान आवंटन होने पर, या बाद में कभी लिया जाता है।

Call money or money-at- call and short notice

(कॉल मनी ऑर मनी एट कॉल एँड शॉर्ट नोटिस)

मुद्रा की तात्कालिक माँग अथवा अल्प नोटिस पर ऋण उपलब्ध करना

व्यापारी बैंकों द्वारा बट्टे पर ऋण देने वाले प्रतिष्ठानों को ऋण सुविधा प्रदान करना। ऐसे ऋण एक दिन या एक सप्ताह की अवधि के लिए होते हैं।

Capacity (कैपेसिटी) **अधिकतम क्षमता**

किसी फर्म या उद्योग की अधिकतम उत्पादन क्षमता, जिसे मौजूदा प्लांट के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। किसी फर्म द्वारा उत्पादन की अधिकतम क्षमता वह है जिसे वह न्यूनतम औसत लागत पर प्राप्त कर सकती है। इसी प्रकार उद्योग की अधिकतम क्षमता ज्ञात करने हेतु सभी फर्मों की न्यूनतम लागत वाले उत्पादन स्तरों का योग लिया जाता है।

Capital (केपिटल) **पूँजी**

सम्पत्ति का वह भाग जिसे आय सृजन हेतु प्रयुक्त किया जाता है। उत्पादन के चार प्रमुख साधनों (श्रम, पूँजी, भूमि तथा प्रबन्ध) में से पूँजी एक महत्वपूर्ण साधन है। पूँजी दो प्रकार की हो सकती है। (अ) भौतिक पूँजी, जिसमें मशीनें, कार्यशील पूँजी आदि की गणना की जाती है तथा (ब) अभौतिक पूँजी जिसमें व्यक्ति का अनुभव, ज्ञान व कौशल को शामिल किया जाता है।

Capital asset pricing Model

(केपीटल एसेट प्राइसिंग मॉडल) **पूँजी-सम्पत्ति कीमत मॉडल**

यह मॉडल बतलाता है कि किस प्रकार निवेशकर्ता विविध प्रकार के शेयर खरीदकर अपनी पोर्टफोलियो जोखिम को न्यूनतम बनाए रखता है।

Capital allowances (केपीटल एलाउन्सेज़) **पूँजीगत व्यय में छूट**

अधिकांश देशों में नई पूँजी के निवेश पर घिसावट को उत्पादन व्यय का एक हिस्सा मानकर फर्म को करों में छूट दी जाती है।

Capital accumulation or Capital formation

(केपीटल एक्यूमूलेशन ऑर केपीटल फॉर्मेशन) **पूँजी निर्माण**

स्थिर सम्पत्तियों में किया गया शुद्ध निवेश। इसके विपरीत सकल निवेश में पूँजी की घिसावट भी शामिल रहती है।

Capital account (केपीटल एकाउंट) **पूँजी खाता**

इस खाते में आय अथवा व्यय को नहीं दर्शाया जाता, तथा केवल सम्पत्ति के मूल्य में हुए परिवर्तनों को दिखाया जाता है। प्राप्त किए गए ऋणों या पुराने ऋणों की अदायगी पूँजी खाते में दर्ज की जाती है। देश के भुगतान शेष खाते के अन्तर्गत पूँजीगत खातों में सम्पत्ति तथा देनदारियों के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाहों को दर्शाया जाता है।

Capial adequacy (केपीटल एडीक्वेसी) **पूँजी की पर्याप्तता**

प्रत्येक फर्म या बैंक को यह सुनिश्चित् करना होता है कि इसके व्यवसाय के अनुरूप इसके पास पर्याप्त पूँजी है या नहीं। यदि फर्म या बैंक के पास पर्याप्त पूँजी नहीं है तो परिस्थितियों में थोड़ा भी परिवर्तन इसे दिवालिया बना सकता है। प्रायः फर्म के लेनदार भी यह सुनिश्चित् करना चाहते हैं कि इसके पास पूँजी की पर्याप्तता है या नहीं।

Capital appreciation (केपीटल एप्रीसिएशन) **पूँजी के मूल्य में संवर्द्धन**

जब किसी फर्म के पास विद्यमान सम्पत्ति (शेयर, भूमि, भवन, मशीनें आदि) की कीमतें बढ़ती हैं तो सम्पत्ति का वास्तविक मूल्य यथावत् रहते हुए भी इसके मौद्रिक या बाज़ार मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

Capital consumption (केपीटल कन्सप्शन) **पूँजी का क्षरण**

पूँजीगत साधनों (मशीनों, उपकरण आदि) के उपयोग के फलस्वरूप अथवा इनके अत्यंत पुराने होने के कारण हुई मूल्य–क्षति। इसके फलस्वरूप उत्तरोत्तर इन साधनों की उपादेयता में कमी होती जाती है। यही कारण है कि उपादेयता में कमी का अनुमान करके इस क्षति को सकल लाभ में से कम किया जाता है।

Capital deepening (केपीटल डीपनिंग) **पूँजी की गहनता**

उत्पादन की मात्रा यथावत् रखते हुए उत्पादन लागत कम करने के उद्देश्य से अतिरिक्त पूँजी का निवेश करना। पूँजी की गहनता वस्तुतः पूँजी की व्यापकता से सर्वथा भिन्न है जिसके अंतर्गत अतिरिक्त पूँजी निवेश के माध्यम से श्रम, ईंधन तथा अन्य इन्पुट्स में वृद्धि करके उत्पादन को बढ़ाया जाता है।

Capital gain (केपीटल गेन) **पूँजीगत लाभ**

जब कभी किसी सम्पत्ति को उसकी मूल कीमत से अधिक कीमत पर बेचा जाता

है, तो यह आधिक्य पूँजीगत लाभ कहलाता है। यह पूँजीगत लाभ मुद्रा स्फीति का परिणाम हो सकता है। परन्तु यदि मूल्य स्तर यथावत रहे तो वास्तविक एवं मौद्रिक पूँजीगत लाभ समान होंगे।

Capital gains tax (केपीटल गेन्स टैक्स) **पूँजीगत लाभ पर कर**

जब किसी सम्पत्ति को इसकी मूल कीमत से अधिक कीमत पर बेचने से पूँजीगत लाभ प्राप्त होता है तो सरकार इस पर कर रोपित कर सकती है।

Capital gearing (केपीटल गीयरिंग)

ब्याज़ युक्त ऋण पूँजी एवं शेयर पूँजी का अनुपात

यदि किसी कम्पनी की शेयर पूँजी काफी अधिक हो तथा ब्याज़ युक्त ऋण पूँजी काफी कम हो तो इससे अंशधारियों को राहत मिलती है, क्योंकि ऋण पूँजी पर देय ब्याज़ स्थिर है।

Capital goods (केपीटल गुड्स) **पूँजीगत वस्तुएँ**

मशीनों व उपकरणों के रूप में प्रयुक्त पूँजी, जिसे लम्बे समय तक प्रयोग में लिया जा सकता है।

Capital inflow (केपीटल इन्फ्लो) **पूँजी की प्राप्ति**

किसी स्वदेशी कम्पनी में विदेशी पूँजी का निवेश। यह निवेश वित्तीय संसाधनों के रूप में हो सकता है, अथवा विदेशी कम्पनियों द्वारा भेजी गई मशीनों आदि के रूप में। विदेशी पूँजी की प्राप्ति के अनेक रूप हो सकते हैं, जैसे

(अ) बहुदेशीय कम्पनियों द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश,
(ब) विदेशी कम्पनियों द्वारा स्वदेशी कम्पनी के शेयर खरीदना,
(स) देश की सरकार द्वारा बाहर की सरकार से ऋण लेना, तथा
(द) देश की किसी कम्पनी द्वारा विदेशी कम्पनियों से ऋण लेना। (बाहरी व्यापारिक ऋण)

इसके विपरीत पूँजी के बहिर्गमन के अन्तर्गत किसी देश से पूँजी का निवेश किसी अन्य देश में किया जाता है।

Capital intensity (केपीटल इन्टेन्सिटी) **पूँजी की गहनता**

किसी फर्म द्वारा उत्पादन प्रक्रिया में निवेशित पूँजी का अनुपात। प्रायः फर्म यह सुनिश्चित् करना चाहती है कि श्रम या पूँजी की लागत के आधार पर श्रम व पूँजी की मात्राओं का उपयोग हो। जिस देश में ब्याज़ की दर मज़दूरी की दर की तुलना में कम है, वहां अपेक्षाकृत अधिक पूंजी प्रयुक्त की जाएगी, तथा पूंजी की गहनता अधिक होगी। प्रायः विशाल पैमाने पर कार्य करने वाली कम्पनी में भी पूँजी की गहनता अधिक होती है।

Capital-labour-ratio (केपीटल लेबर रेशियो) **पूँजी श्रम का अनुपात**

किसी फर्म अथवा अर्थव्यवस्था में श्रम की निर्दिष्ट मात्रा के विरुद्ध प्रयुक्त पूँजी (K/L)।

यदि उत्पादन में वृद्धि हेतु श्रम के अनुपात में ही पूँजी की मात्रा बढ़ाई जाए तो पूँजी–श्रम का अनुपात (K/L) स्थिर रहता है। परन्तु यदि श्रम की अपेक्षा अधिक पूँजी प्रयुक्त की जाती है तो पूँजी–श्रम अनुपात बढ़ जाएगा।

Capital loss (केपीटल लॉस) **पूँजी की कीमत में ह्रास**

जब किसी सम्पत्ति की वर्तमान कीमत मूल खरीद मूल्य से कम हो जाए तो इसे पूँजी का ह्रास कहा जाता है। ऐसी सम्पत्ति को बेचने पर फर्म को घाटा होता है। यदि मुद्रा स्फीति की दर की तुलना में सम्पत्ति के मूल्य में कम वृद्धि होती है तब भी फर्म को पूँजी ह्रास का सामना करना पड़ता है।

Capital market (केपीटल मार्केट) **पूँजी बाजार**

स्टॉक एक्सचेंज तथा अन्य संस्थाएँ, जहां शेयरों तथा अन्य प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय किया जाता है। पूँजी बाज़ार में व्यक्ति, संस्थाएँ तथा सरकारें देश की बचतों को उन क्षेत्रों में प्रयुक्त करती हैं, जिनका प्रयोग लाभप्रद रूप में अन्यत्र नहीं हो सकता। पूँजी बाज़ार में शेयरों, ऋण पत्रों तथा अन्य प्रकार की वित्तीय प्रतिभूतियों का कारोबार किया जाता है, तथा इसमें व्यक्तियों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के अतिरिक्त विदेशी निवेशकों तथा बैंकों की सहभागिता होती है। नए शेयरों का निर्गम भी प्रायः मर्चेंट बैंकरों द्वारा पूँजी बाज़ार के माध्यम से ही किया जाता है।

Capital movements (केपीटल मूवमेंट्स)

पूँजी का विभिन्न देशों के बीच प्रवाह

यदि यह प्रवाह बाह्य मुखी है तो देश से पूँजी का प्रवाह अन्य देशों के उद्योगों व व्यापार हेतु हो रहा है। इसके विपरीत आन्तरिक प्रवाह के अन्तर्गत विदेशों से स्वदेशी उद्योगों व व्यापार के लिए पूँजी लाई जा रही है। ये सभी प्रवाह किसी भी देश के भुगतान शेष खातों में प्रविष्ट किए जाते हैं।

Capital stock (केपीटल स्टॉक) **पूँजी का स्टॉक**

किसी फर्म, उद्योग या देश में विद्यमान भौतिक पूँजी की कुल मात्रा। यदि पूँजी स्टॉक में वृद्धि होती है तो इसका यह अर्थ है कि देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि में पूँजी ह्रास शामिल नहीं किया जाता। अन्य शब्दों में, पूँजी स्टॉक में वृद्धि का अर्थ यह है कि पूँजी की घिसावट को समायोजित करके भी नया पूँजी निवेश किया गया है।

Capital theory (केपीटल थ्योरी) **पूँजी सिद्धान्त**

आर्थिक सिद्धान्त का वह भाग जिसके अन्तर्गत उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त इनपुट्स की उत्पत्ति के प्रभावों की समीक्षा की जाती है। जब उत्पादन के साधनों के उत्पादन की चर्चा होती है तो यह स्वाभाविक है कि भावी उपभोग को दृष्टिगत रखकर वर्तमान उपभोग में कटौती की जाए। इस सिद्धान्त में इस बात का भी विश्लेषण किया जाता है कि अन्य साधनों की तुलना में पूँजीगत साधनों के स्वामियों को कितनी आय प्राप्त हो रही है।

Capitalism (केपीटलिज़्म) **पूँजीवाद**

एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति को उत्पादन के साधनों का स्वामित्व ग्रहण करने तथा अधिकतम लाभ अर्जित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। सम्पत्ति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण करने की भी छूट पूँजीवाद के अन्तर्गत रहती है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन, उपभोग तथा प्रबन्ध से सम्बद्ध अधिकांश निर्णय व्यक्ति अथवा निजी संस्थानों द्वारा लिए जाते हैं।

Cardinal utility (कार्डीनल यूटीलिटी)

गणना वाचक या संख्या सूचक उपयोगिता

किसी व्यक्ति को उपभोग में प्राप्त होने वाली संतुष्टि का मुद्रा के रूप में माप। मार्शल के मतानुसार किसी वस्तु की निर्दिष्ट इकाई से वंचित रहने पर उपभोक्ता उसके लिए जो कीमत देने को तैयार है वही उस इकाई की (गणनावाचक) उपयोगिता है। यदि किसी वस्तु की सभी इकाइयों की उपयोगिता, अथवा उपभोग में शामिल सभी वस्तुओं से प्राप्त होने वाली उपयोगिताओं को मापनीय माना जाए तो फिर उपभोक्ता को प्राप्य कुल उपयोगिता का योग भी लिया जा सकता है।

Cartel (कार्टेल) **विक्रेताओं का गठबन्धन**

इस गठबंधन का उद्देश्य सम्बद्ध वस्तु के बाज़ार में एकाधिकार स्थापित करके तदनुसार एकाधिकारिक कीमत वसूल करना रहता है। ये विक्रेता परस्पर कीमत युद्ध में सलंग्न रहकर एक–दूसरे को क्षति पहुंचाने की अपेक्षा गठबन्धन के द्वारा लाभ कमाते है, हालांकि व्यवहार में विक्रेताओं के ये गठबन्धन प्रायः अधिक समय तक कार्यशील नहीं रह पाते। फिर भी सफल गठबन्धनों में पैट्रोल उत्पादक देशों के संगठन (OPEC) का उदाहरण हमारे समक्ष है।

Cash (कैश) **सरकार द्वारा केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित रोकड़ या मुद्रा**

इस मुद्रा में अधिकतम तरलता होती है तथा बाज़ार में वस्तुओं अथवा सम्पत्ति के क्रय विक्रय में इससे सर्वाधिक सुविधा प्राप्त होती है।

Cash and Carry (कैश एण्ड केरी) **नकद दो और ले जाओ**

विनिमय की ऐसी व्यवस्था जिसमें क्रेता मुद्रा चुकाता है तथा वस्तु या सम्पत्ति का स्वामित्व ग्रहण कर लेता है।

Cash discount (कैश डिस्काउंट) **नकद भुगतान पर छूट**

प्रायः विक्रेता उन ग्राहकों को मुद्रित कीमत में छूट देते हैं जो उधार लेने, अथवा चैक आदि के द्वारा भुगतान करने की अपेक्षा नकद भुगतान करना चाहते है।

Cash flow (कैश फ्लो) **रोकड़ प्रवाह**

किसी परियोजना के जीवन–काल में उससे प्राप्त होने वाली मौद्रिक आय तथा उत्पादन प्रक्रिया एवं निर्माण कार्य पर होने वाले मौद्रिक खर्चों का विवरण।

Cash Reserve Ratio (कैश रिज़र्व रेशियो) **(CRR)** **नकद रिज़र्व अनुपात**

व्यापारी बैंकों द्वारा अपनी जमाओं व देनदारियों का वह भाग जिसे उन्हें नकद रूप में रखना होता है। इस रोकड़ का उपयोग ग्राहकों की नियमित माँग को पूरा करने हेतु किया जाता है। बैंक के पास विद्यमान मुद्रा तथा केन्द्रीय बैंक के पास जमा इसकी राशि को नकद रिज़र्व में शामिल किया जाता है। यदि नकद रिज़र्व अपर्याप्त हो तथा बैंक के जमाकर्ता अपनी राशि निकालने हेतु चैक प्रस्तुत कर दें तो बैंक संकट में पड़ सकता है।

Caveat emptor (केविएट ऍम्प्टर) **क्रेता को सावधान रहने दो**

लेटिन का यह कथन स्पष्ट करता है कि किसी वस्तु या सम्पत्ति के विक्रेता का यह दायित्व नहीं है कि वह क्रेता को वस्तु या सम्पत्ति के गुण–दोषों के विषय में बताए। इसके अनुसार गुणवत्ता की जानकारी लेने का दायित्व क्रेता का ही है।

Ceiling (सीलिंग) **सीमा**

इसके अर्थ अलग–अलग संदर्भों में अलग–अलग हैं। भूमि के संदर्भ में प्रायः सरकार कृषि भूमि अथवा नगरीय भूमि पर सीमा लागू करती है, तथा सीमा से अधिक भूमि रखने वाले व्यक्ति अथवा प्रतिष्ठान को अतिरिक्त भूमि सरकार को सौंपनी पड़ती है, जो वैधानिक प्रावधानों के तहत भू–स्वामी को क्षतिपूर्ति प्रदान करती है।

व्यापार चक्रों के संदर्भ में सीमा का आशय उस अधिकतम सकल वास्तविक उत्पादन से है जिसे अर्थव्यवस्था तैयार करने में समर्थ है। यह सीमा श्रम, पूँजी या मुद्रा की आपूर्ति पर निर्भर कर सकती है। परन्तु कालान्तर में तकनीकी प्रगति, बढ़ती हुई जनसंख्या तथा निवेश के बढ़ने पर इस सीमा का भी विवर्तन हो सकता है।

कीमत के संदर्भ में किसी वस्तु या सेवा की अधिकतम कीमत क्या हो सकती है, इसका सरकार की किसी एजेन्सी द्वारा निर्धारण किया जा सकता है। सरकार विविध प्रकार के उपायों द्वारा कीमत को सीमा से अधिक बढ़ने से रोक सकती है।

Census (सेन्सस) **सम्पूर्ण गणना या संगणना**

अधिकांशतः सरकार द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ों के संकलन एवं प्रकाशन का दायित्व लिया जा सकता है। भारत में प्रत्येक 10 वर्ष की अवधि बीतने पर जनगणना की जाती है। अन्तिम जनगणना फरवरी, 2001 में की गई थी।

इसी प्रकार किसी भी क्षेत्र में यदि सभी सम्बद्ध इकाइयों से निर्दिष्ट सूचनाएँ एकत्रित की जाएँ तो उसे संगणना कहा जाता है। यह प्रतिदर्श विधि से भिन्न विधि है जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण समग्र में से कुछ चुनी हुई इकाइयों से ही समंक या आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं।

Census of production (सेन्सस ऑफ प्रोडक्शन) **उत्पादन की संगणना**

सभी उत्पादक इकाइयों से निर्दिष्ट वस्तु के उत्पादन सम्बन्धी समंक एकत्रित करना। ये सूचनाएँ उत्पादक इकाइयों से पूर्व निर्धारित्र विषयों पर एकत्रित की जाती

हैं जैसे उत्पादित वस्तुओं की प्रकृति, मात्रा, इन्पुट्स की प्रकृति एवं उनकी मात्राएँ, श्रमिकों व कर्मचारियों की संख्या आदि।

Central Bank (सेन्ट्रल बैंक) **केन्द्रीय बैंक**

किसी भी देश का वह बैंक जो देश में मुद्रा की आपूर्ति को नियंत्रित करता है, विदेशी विनिमय कोषों का प्रबन्धन करता है तथा देश की मौद्रिक नीतियों को क्रियान्वित करता है। केन्द्रीय बैंक के अन्य कार्यों में सरकार को आवश्यकतानुसार मुद्रा उपलब्ध कराना, बैंकों पर अंकुश रखना, साख की मात्रा को नियंत्रित करना तथा समय–समय पर सरकार की आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके सरकार को परामर्श देना शामिल हैं। विश्व के प्रमुख देशों के केन्द्रीय बैंकों के नाम इस प्रकार है : इंगलैंड– बैंक ऑफ इंगलैंड, सं.रा. अमरीका– फेडरल रिज़र्व बैंक; फ्रांस– बैंक ऑफ फ्रांस; भारत– रिज़र्व बैंक ऑफ इन्डिया।

Centralization (सेंट्रलाइज़ेशन) **केन्द्रीयकरण**

अनेक एजेन्सियों की अपेक्षा एक ही एजेन्सी के पास समस्त आर्थिक निर्णय लेने की शक्ति केंद्रित करना। यदि देश में सत्ता का इतना अधिक संकेद्रण हो जाए तो ऐसी स्थिति को केन्द्रीय नियोजित स्थिति कहा जाता है, जहां साधनों का आवंटन केन्द्रीय एजेन्सी द्वारा ही किया जाता है। कीमतों का निर्धारण भी बाज़ार की शक्तियों द्वारा न होकर केन्द्रीय एजेन्सी ही करती है।

Centrally planned economy
(सेन्ट्रली प्लान्ड इकोनॉमी) **केन्द्रीयकृत नियोजित अर्थव्यवस्था**

इसे कमान्ड इकोनॉमी भी कहा जाता है। ऐसी अर्थव्यवस्था में सम्पत्ति का नेतृत्व सामूहिक होता है न कि व्यक्तिगत। ऐसी अर्थव्यवस्था में किन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन किया जाए, उत्पादन की तकनीक क्या हो, साधनों का पारिश्रमिक कितना हो, वस्तुओं का उपभोग किस प्रकार किया जाए, पूँजी निवेश किन क्षेत्रों में किया जाए, ये सभी निर्णय केन्द्रीय सत्ता द्वारा किए जाते हैं। आधुनिक युग में किसी भी देश में पूर्णरूप से केन्द्रीयकृत नियोजित अर्थव्यवस्था नहीं है।

Certificate of deposit (सर्टीफिकेट ऑफ डिपोज़िट) **जमा का प्रमाण पत्र**

सावधि जमा के बदले बैंक द्वारा जमाकर्ता को दिया गया प्रमाण पत्र। इसके अनुसार बैंक जमाकर्ता को अवधि पूर्ण होने पर ब्याज़ सहित मूलधन लौटाने का वायदा करता है। यदि जमाकर्ता को अवधि से पूर्व मुद्रा की आवश्यकता हो तो वह उसी बैंक को या अन्य किसी वित्तीय संस्था को इस प्रमाण पत्र को बेच सकता है, परन्तु उसे ऐसी स्थिति में उस पर अंकित समूची राशि प्राप्त नहीं हो पाएगी।

Certificate of incorporation
(सर्टीफिकेट ऑफ इन्कोर्पोरेशन) **निर्गमित होने का प्रमाण पत्र**

कम्पनियों के पंजीयक (रजिस्ट्रार) द्वारा जारी किया प्रमाण पत्र जिसमें सम्बद्ध कम्पनी को एक वैधानिक नाम तथा पहचान प्रदान की जाती है।

Certificate of origin
(सर्टीफिकेट ऑफ ओरीजिन) **मूलस्थान का प्रमाण पत्र**
ऐसा प्रमाण पत्र जो आयात व निर्यात के उद्गम देश को दर्शाता है। प्रायः कस्टम अधिकारियों को इस प्रकार के प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है, और वे इसी के आधार पर आयात पर तटकर की प्राथमिकता–आधारित दरों का निर्धारण करते है। जिन देशों के नाम व्यापार शर्तों में उल्लिखित हैं उनसे आयातित–वस्तु पर उन्हीं के अनुरूप तटकर लिया जाता है।

Ceteris paribus (सेटेरिस पैरीबस) **अन्य बातें यथावत् रहने की शर्त**
एक लेटिन कथन, जिसके अनुसार कोई भी आर्थिक नियम तभी लागू हो सकता है, जब नियम के साथ जुड़ी हुई कुछ बातों में कोई परिवर्तन न हो। उदाहरण के लिए, माँग के नियम के अनुसार, "कीमत में कमी होने पर वस्तु की माँग बढ़ती है", परन्तु यह नियम तभी लागू होता है जब उपभोक्ता की आय, उसकी मानसिक दशा, रुचि, अन्य वस्तुओं की कीमत आदि में कोई परिवर्तन न हो। इसी प्रकार अन्य आर्थिक नियमों के साथ भी "अन्य बातें यथावत् रहने" की शर्त जुड़ी रहती है।

Chain store (चेन स्टोर) **दूकानों की श्रृंखला**
एक खुदरा फर्म की अनेक शाखाएँ उसी नगर में तथा अलग– अलग नगरों में हो सकती है। प्रायः डिपार्टमेन्टल स्टोर्स इस प्रकार की श्रृंखला की स्थापना करते हैं ताकि उन्हें बड़े पैमाने पर बिक्री करने के लाभ मिल सकें। ये स्टोर्स बहुत बड़े पैमाने पर उपभोग वस्तुओं की खरीद करते हैं और इसलिए इन्हें बाह्य बचतें प्राप्त होती हैं।

Chamerlin, Edward H. (एडवर्ड एच. चैम्बरलिन)
एक अमरीकी अर्थशास्त्री, जिन्होंने दी थ्योरी ऑफ मोनोपोलिस्टिक कम्पीटीशन (1933) नामक पुस्तक लिखकर यह सिद्ध किया कि वास्तविक बाज़ार में न तो पूर्ण प्रतियोगिता होती है और न ही एकाधिकार की स्थिति विद्यमान होती है। उन्होंने कहा कि बाज़ार में प्रत्येक विक्रेता द्वारा अन्य विक्रेताओं से भिन्न प्रकार की वस्तु बेची जाती है और यह अन्तर ट्रेडमार्क, रंग या डिजाइन से सम्बद्ध होता है न कि गुणवत्ता से। इसी "वस्तु विभेद" के कारण प्रत्येक विक्रेता **किसी सीमा तक** एकाधिकारी के रूप में व्यवहार करता है। इसी प्रकार प्रत्येक विक्रेता अपनी वस्तु की डिजाइन से सम्बद्ध विशिष्टताओं के कारण विज्ञापन पर पर्याप्त राशि व्यय करता है। विज्ञापन की पूर्ण प्रतियोगिता अथवा एकाधिकार वाले बाजार में कोई जरूरत नहीं होती।

Change in demand (चेन्ज इन डिमान्ड) **माँग में परिवर्तन**
अधिकांश माँग वक्र ऋणात्मक ढलानयुक्त होते हैं, तथा यह दर्शाते हैं कि कीमत कम होने पर माँग अधिक होती है। परन्तु प्रायः यह देखने में आता है कि *कीमत यथावत् रहते हुए भी* उपभोक्ताओं की आय तथा/अथवा उनकी संख्या बढ़ जाने के

फलस्वरूप माँग बढ़ जाती है और उस स्थिति में माँग वक्र में विवर्तन हो जाता है जैसा कि चित्र में नीचे दिखाई देता है।
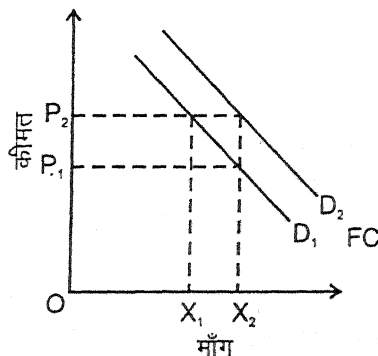
यदि माँग केवल कीमत पर निर्भर हो तो कीमत OP_2 से घटकर OP_1 होने पर इसकी मात्रा OX_1 से बढ़कर OX_2 होगी। परन्तु माँग का परिवर्तन यह दिखाता है कि OP_1 पर भी उपभोक्ताओं की आय तथा/अथवा संख्या बढ़ने पर माँग बढ़कर OX_2 हो सकती है।

Chaos theory (केओस थ्योरी) **विषाद सिद्धान्त**

गणित का एक सिद्धान्त, जिसका सम्बन्ध अ–रेखीय समीकरणों से सम्बद्ध आश्रित चरों से होता है। इसकी विलक्षण बात यह है कि यद्यपि आश्रित चर पूर्ण रूपेण सरल समीकरण से प्रभावित होने के कारण दैव (random) नहीं है, फिर भी यह विषादपूर्ण तथा भ्रामक दिखाई देता है, क्योंकि थोड़ा-सा परिवर्तन स्वतंत्र चर में होने पर भी आश्रित चर में व्यापक परिवर्तन हो जाते हैं।

Cheap money (चीप मनी) **सुलभ मुद्रा**

कभी–कभी सरकारी नीति के कारण देश का केन्द्रीय बैंक खुले बाज़ार में प्रतिभूतियों तथा ऋण पत्रों की खरीद करके मुद्रा की आपूर्ति को बढ़ा देता है। मुद्रा की आपूर्ति बढ़ने से ब्याज़ की दर में कमी होती है, क्योंकि अब तक जिन क्षेत्रों में लाभ प्रदता कम थी वे भी अधिक लाभप्रद हो जाते है।

Cheque (चैक) **चैक**

ग्राहक द्वारा अपने बैंक को दिया गया एक लिखित आदेश जिसके अनुसार चैक धारक, या जिसे वह चाहे नकद भुगतान या बैंक खाते में मुद्रा जमा करने का आदेश दिया जाता है।

Chicago School (शिकागो स्कूल) **शिकागो विचारधारा**

अमरीका के शिकागो विश्वविद्यालय के शिक्षकों का एक समूह जिनके मतानुसार सभी आर्थिक गतिविधियों का संचालन "स्व हित" से अनुप्रेरित होता है। स्वतंत्र बाज़ार व्यवस्था से ही अधिकतम आर्थिक कल्याण की प्राप्ति होती है ; सरकारी

हस्तक्षेप से अर्थव्यवस्था को काफी हानि होती है, तथा आर्थिक कठिनाइयों का समाधान मुद्रा की आपूर्ति में परिवर्तन करके ही सम्भव है। इस विचारधारा के जनक प्रोफेसर मिल्टन फ्रीडमैन थे।

Choice (चॉइस) **चुनाव, चयन**

प्रत्येक अर्थव्यवस्था में आर्थिक निर्णय की प्रक्रिया के केंद्र में यह तथ्य निहित है कि दुर्लभ आर्थिक संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए किन वस्तुओं तथा सेवाओं का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए तथा उत्पादन की लागत न्यूनतम करने हेतु उत्पादन की तकनीक क्या हो। यदि आर्थिक संसाधन दुर्लभ न हों तो आर्थिक चुनाव की कोई समस्या नहीं रहेगी।

C.I.F. (सी.आई.एफ.) **लागत, बीमा तथा भाड़ा**

एक देश से दूसरे देश को वस्तु भेजते समय वस्तु की कीमत, बीमा तथा परिवहन लागत का योग लिया जाता है। देश से कितनी विदेशी मुद्रा बाहर गई यह जानने हेतु आयातित वस्तु की लागत, बीमा तथा भाड़े को देखकर ही भुगतान शेष का खाता तैयार किया जाता है।

Circular flow of income

(सकूर्लर फ्लो ऑफ इनकम) **आय का वृत्ताकार प्रवाह**

अर्थव्यवस्था में भौतिक संसाधनों तथा मौद्रिक साधनों का प्रवाह उत्पादक फर्मों तथा परिवारों के बीच किस प्रकार होता है, इसे दर्शाने वाला सरलीकृत मॉडल।
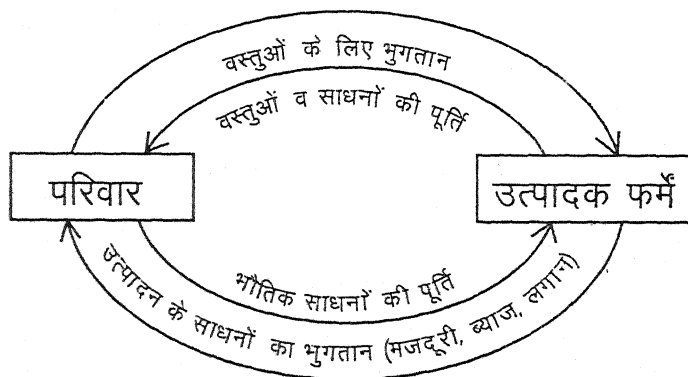
यह सरलीकृत मॉडल विदेशी व्यापार तथा सरकार की भूमिका को नहीं दर्शाता।

Classical Model (क्लासिकल मॉडल) **संस्थापक मॉडल**

अर्थव्यवस्था का वह रूप जिसमें कीमतों, मज़दूरी की दरों तथा ब्याज़ की दरों को लचीला माना जाता है, तथा यह कहा जाता है कि इस लचीलेपन के कारण वस्तुओं, श्रम तथा पूँजी की माँग तथा पूर्ति में अन्ततः समानता स्थापित हो जाती है। इस

मॉडल के अनुसार सभी साधनों का पूर्ण उपयोग होता है। सोलो का संवृद्धि मॉडल इसी संस्थापक मॉडल का एक उदाहरण है।

परन्तु व्यवहार में कीमतें, मज़दूरी की दरें तथा ब्याज़ की दरों में अनम्यता होती है और इस कारण माँग तथा पूर्ति में प्रायः समानता स्थापित नहीं हो पाती।

Classical School (क्लासिकल स्कूल) **संस्थापक विचारधारा**

इसे संस्थापक अर्थशास्त्र भी कहा जाता है। इसके जनक एडमस्मिथ थे, तथा डेविड रिकार्डो, जॉन स्टुअर्ट मिल, जे.बी. से आदि ने स्मिथ की विचारधारा को आगे बढ़ाया। 19वीं शताब्दी के मध्य तक समूचे यूरोप में इसी विचारधारा का वर्चस्व रहा। संस्थापक विचारधारा के अनुसार श्रम ही सभी प्रकार के मूल्य का सृजनकर्ता है। वे यह भी मानते थे कि बाज़ार प्रणाली ही समस्त प्रकार के आर्थिक निर्णयों को प्रभावी बनाती है। सभी संस्थापक विचारक सरकारी हस्तक्षेप को अनुचित मानते थे, तथा यह तर्क देते थे कि कीमतों के उच्चावचन, उत्पादन एवं रोज़गार के स्तर स्वमेय माँग व पूर्ति की शक्तियों के समायोजन के फलस्वरूप ठीक हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप न तो दीर्घकाल में देश में बेरोज़गारी रहती है, न ही मंदी या मुद्रा–स्फीति की दशा जारी रह पाती है। मंदी के समय ब्याज़ की दरों में कमी हो जाती है और इसके फलस्वरूप निवेश पूँजी की माँग बढती है। दूसरी ओर, बेरोज़गारी बढने पर मज़दूरी की दर में कमी होती है तथा इससे श्रम की माँग बढ जाती है। अन्ततः अर्थव्यवस्था में दीर्घकाल में न तो बेरोज़गारी की स्थिति रह पाती है और न ही उत्पादन के आधिक्य की।

Classical unemployment (क्लासिकल अनऍप्लायमेंट) **संस्थापक बेरोजगारी**

संस्थापक विचारधारा के अनुसार यदि उत्पादकता की तुलना में मज़दूरी की दरें अधिक हों, तो अर्थव्यवस्था में बेरोज़गारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसे दूर करने का एक ही उपाय है कि वस्तुओं की कीमतों की अपेक्षा मज़दूरी की दर में अधिक कमी की जाए। संस्थापक बेरोज़गारी आधारभूत बेरोज़गारी से इस अर्थ में भिन्न है कि आधारभूत बेरोज़गारी के अन्तर्गत मज़दूरी की दर इतनी कम हो जाती है कि श्रमिकों का एक वर्ग काम करना ही नहीं चाहता। कीन्स ने यह बतलाया था कि मज़दूरी की दरों में श्रमिक संघों के दबाव के कारण कमी करना संभव नहीं होता, और इस कारण बेरोज़गारी बनी रहती है। इस अर्थ में संस्थापक बेरोज़गारी की अवधारणा कीन्सीय अवधारणा से भी भिन्न है।

Clearing house (क्लीयरिंग हाउस) **समाशोधन गृह**

एक ऐसी संस्था (बैंक) जो विभिन्न संगठनों (बैंकों) के पारस्परिक लेनदेन या भुगतानों का निपटारा करती है। प्रायः बैंक द्वारा समाशोधन करने पर विभिन्न बैंकों से एक–दूसरे को कोष हस्तांतरित करने की आवश्यकता नहीं होती, तथा केवल शुद्ध राशि ही सम्बद्ध बैंक लेनदार बैंक को हस्तांतरित करता है।

Closed economy (क्लोज़्ड एकॉनोमी) **बन्द अर्थव्यवस्था**

एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो किसी भी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अथवा भुगतानों से प्रभावित नहीं होती। राष्ट्रीय आय का सृजन देश के साधनों के आधार पर ही किया जाकर इसका उपयोग, उपभोग, निवेश तथा सरकारी व्यय पूर्ति हेतु कर लिया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों पर वैधानिक रूप से रोक लगाई जाती है अथवा इतने ऊँचे आयात कर रोपित किए जाते हैं कि देश का कोई भी व्यापारी आयात करने की आवश्यकता नहीं समझता।

Coase theorem (कोसे थ्योरम) **कोसे प्रमेय**

यह प्रमेय बतलाता है कि जब तक सम्पत्ति के अधिकारों का पूर्णरूपेण आवंटन होता है, तथा सभी प्रकार की सम्पत्ति का हस्तांतरण निर्बाध रहता है, देश में साधनों का आवंटन पूर्ण दक्षता के साथ होना सम्भव है। इस प्रमेय का इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि सम्पत्ति का स्वामित्व किसके पास है, क्योंकि इसके निर्बाध व्यापार के कारण उच्चतम प्रतिफल देने वाले उपयोग में सम्पत्ति का उपयोग होगा।

Cobb-Douglas function (कॉब डग्लस फंक्शन) **कॉब डग्लस फलन**

उत्पादन या उपयोगिता के क्षेत्र में प्रयुक्त फलन जिसका प्रतिपादन के. विक्सैल ने किया था लेकिन जिसका आंकड़ों के आधार पर परीक्षण सी.डब्लू कॉब तथा पी.एच. डग्लस ने किया। उत्पादन में इस फलन को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है : $Y = A.L^{\alpha}C^{\beta}$

जहां Y उत्पादन की मात्रा है, L तथा C क्रमशः श्रम व पूँजी की मात्राएँ हैं जबकि A, α तथा β क्रमशः दक्षता तथा साधनों के प्रतिफल को व्यक्त करते हैं। यदि $\alpha + \beta = 1$ हो तो यह पैमाने के समतामान प्रतिफल को व्यक्त करता है, जबकि $\alpha + \beta > 1$ एवं $\alpha + \beta < 1$ क्रमशः पैमाने के वर्द्धमान प्रतिफल एवं ह्रासमान फलन को दर्शाते हैं। उपयोगिता के क्षेत्र में कॉब–डग्लस फलन को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है :

$$U = X^{\alpha}_{1} X_{2}^{\beta}$$

इस फलन में U उपयोगिता का माप है, X_1 तथा X_2 दो वस्तुएँ है जिनकी मात्राएँ कुल उपयोगिता के स्तर (U) को व्यक्त करती हैं, जबकि α तथा β दोनों वस्तुओं की मात्रा बढ़ने पर U में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन को दर्शाती हैं। यदि $\alpha+\beta=1$ हो तो X_1 तथा X_2 की मात्रा में वृद्धि होने पर उसी अनुपात में उपयोगिता या संतुष्टि का स्तर बढ़ेगा। इसके विपरीत $\alpha+\beta>1$, अथवा $\alpha+\beta<1$ क्रमशः वर्द्धमान उपयोगिता फलन या ह्रासमान उपयोगिता फलन के द्योतक हैं।

Cobweb model (कॉबवेब मॉडल) **मकड़ जाल मॉडल**

माँग तथा पूर्ति के चक्रीय प्रवाह के आधार पर निरूपित गत्यात्मक मॉडल। वस्तुतः यह मॉडल इस मान्यता पर आधारित है कि जहां माँग तथा कीमत में परस्पर सीधा एवं अन्तरालहीन सम्बन्ध है, पूर्ति तथा कीमत के मध्य यह सम्बन्ध अन्तराल युक्त

है। इस प्रकार,

$$Dt = f(P_t)$$
$$St = f(P_{t-1})$$

ऐसी स्थिति में माँग तथा पूर्ति के मध्य कभी भी समानता नहीं हो पाती, तथा साम्य स्थिति की स्थापना भी नहीं होती। इसे नीचे प्रस्तुत चित्र से भी समझा जा सकता है।
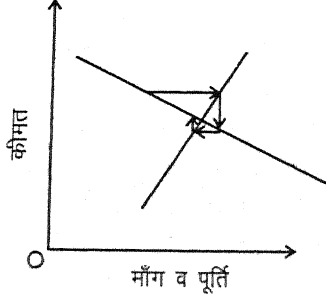
यद्यपि माँग व पूर्ति का अंतराल कम होता जाता है परन्तु उनमें साम्भ्य कदापि स्थापित नहीं हो पाता।

Coefficient of determination
(कोएफिशिएँट ऑफ डिटर्मिनेशन) **निर्धारण का गुणांक**
एक सांख्यिकीय माप, जिसके आधार पर किसी समीकरण पर आधारित चर के अनुमान की सत्यता का आकलन किया जा सकता है। इस समीकरण में दो या अधिक चरों के परस्पर सह–सम्बन्ध को दर्शाया जाता है। इस गुणांक का मूल्य शून्य से लेकर एक तक हो सकता है। शून्य होने पर प्रत्याशित तथा वास्तविक चर के बीच कोई भी संगति नहीं होती। यदि गुणांक का मूल्य एक हो तो प्रत्याशित तथा वास्तविक चर पूर्णतया समान होते हैं।

Collateral security (कॉलेटरल सीक्योरिटी) **सुरक्षा हेतु जमानत**
ऋण लेते समय ऋण लेने वाले द्वारा जमानत हेतु प्रस्तुत सम्पत्ति। ऋण की अदायगी न होने पर ऋणदाता इस सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले सकता है।

Collective bargaining (कलेक्टिव बार्गेनिंग) **सामूहिक सौदेबाजी**
इस व्यवस्था के अन्तर्गत श्रमिक संघों के पदाधिकारी फर्म या उद्योग के प्रतिनिधियों से मजदूरी की दरों, मंहगाई भत्तों, बोनस, कार्य की शर्तों, सेवा निवृत्ति आदि के बारे में आमने–सामने बैठकर विचार विमर्श करते हैं।

Collusion (कॉल्यूजन) **संगठन**
विभिन्न विक्रेताओं द्वारा परस्पर इस बात की सहमति कि वे एक–दूसरे के साथ गला काट स्पर्द्धा नहीं करेंगे। इस प्रकार के संगठन के कारण इन विक्रेताओं का एक अनौपचारिक एकाधिकार स्थापित हो जाता है, हालांकि दीर्घकाल में इस प्रकार की सहमति अव्यावहारिक बन जाती है।

Commission (कमीशन) **कमीशन**

किसी मध्यस्थ द्वारा वस्तु या सेवा की बिक्री या खरीद पर कुल राशि पर प्रतिशत रूप में लिया गया पारिश्रमिक।

Commodity (कमोडिटी) **वस्तु**

अर्थशास्त्र में उस भौतिक पदार्थ या सेवा को वस्तु कहा जाता है, जिसे एक उत्पादक साधनों के प्रयोग द्वारा प्राप्त करता है, तथा जिसमें उपभोक्ताओं की आवश्यकता को पूरा करने का गुण निहित है। यह भी कहा जात है कि इसी गुण के कारण प्रत्येक वस्तु की एक निर्दिष्ट कीमत होती है, जो उपभोक्ता वस्तु को खरीदने हेतु चुकाने को तत्पर रहता है।

Commodity exchange (कमोडिटी एक्सचेन्ज) **वस्तुओं के क्रय-विक्रय का स्थान**

एक बाज़ार जहां वस्तुओं का क्रय–विक्रय होता है। यह आवश्यक नहीं है कि बाज़ार में वस्तु का भौतिक रूप में आदान प्रदान हो। अनेक बार किसी वस्तु के स्वामित्व का हस्तांतरण हो जाता है, तथा एक अवधि के बाद भौतिक रूप से इसे हस्तांतरित किया जाता है।

Commodity price index

(कमोडिटी प्राइस इन्डैक्स) **वस्तु की कीमत का सूचकांक**

बहुत बड़ी मात्रा में किसी वस्तु का व्यापार होने पर प्रायः इसकी कीमत का सूचकांक तैयार किया जाता है। ऐसी वस्तुओं में अधिकांशतः कृषि से सम्बद्ध वस्तुएँ तथा खनिज पदार्थ शामिल किए जाते हैं।

Common market (कॉमन मार्केट) **साझा बाजार**

विभिन्न देशों का पूर्णतः एकीकृत बाजार, जिसमें सदस्य देशों के बीच वस्तुओं का व्यापार ही नहीं, अपितु श्रम का आवागमन भी मुक्त रहता है। एक देश से वहां के नागरिक वीसा प्राप्त किए बिना दूसरे सदस्य देश में जाकर बस सकते हैं, या कार्य कर सकते हैं तथा पूँजी का निर्बाध रूप से आवागमन हो सकता है। साझा बाजार की अन्तिम परिणति एक साझा मुद्रा के आविर्भाव में हो सकती है। इस प्रकार के साझा बाजार यूरोप, उत्तरी अमरीका, दक्षिण अमरीका आदि महाद्वीपों में स्थापित किए गए हैं। इन देशों के बीच परस्पर कोई तटकर नहीं होता, लेकिन बाहर के देशों से व्यापार करते समय कोई भी सदस्य ऊँची दर से कर ले सकता है या मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगा सकता है।

Company register (कम्पनी रजिस्टर) **कम्पनी की पंजिका**

संयुक्त कम्पनी का एक अधिकारी शेयरों का नवीनतम रजिस्टर रखता है। वह नए शेयर प्रमाण पत्रों को जारी करने तथा पुराने शेयरों को रद्द करने की प्रविष्टियां भी इस रजिस्टर में करता है।

Comparative advantage (कम्पेरेटिव एडवांटेज) **तुलनात्मक लाभ**

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में संलग्न एक देश किसी वस्तु का उत्पादन सापेक्ष या निरपेक्ष

रूप से किसी अन्य देश की तुलना में कम लागत पर करने में सक्षम हो सकता है। तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त का प्रतिपादन डेविड रिकार्डो ने किया था। निम्न तालिका द्वारा तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त को समझा जा सकता है:

देश	वस्तु की मात्रा		(निर्दिष्ट साधनों से) अवसर लागत अनुपात		
	X	Y	X		Y
A	100	100	1	:	1
B	180	120	1	:	2/3

X की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने में A देश की अवसर लागत 1Y है जबकि B देश में यही अवसर लागत 2/3 Y है। इस दृष्टि से B को X का उत्पादन करने में सापेक्ष रूप से (तुलनात्मक) लाभ है, हालांकि B दोनों ही वस्तुओं को A की अपेक्षा कम लागत में बना सकता है।

Compensation principle (कम्पन्सेशन प्रिंसिपल) **क्षतिपूर्ति सिद्धान्त**

कल्याण अर्थशास्त्र में केल्डोर, हिक्स, सीटोवस्की, लिटिल आदि ने बतलाया कि यदि सरकार की किसी नई नीति के तहत लाभ उठाने वाले लोग सम्भावित हानि उठाने वालों को रिश्वत (क्षतिपूर्ति) देकर भी लाभ में रहें, अथवा संभावित हानि उठाने वाले नीति को स्थगित करवाने हेतु लाभार्थियों को क्षतिपूर्ति देकर भी फायदे में रहें तो इस प्रकार की क्षतिपूर्ति न्यायोचित है क्योंकि इससे पूरे समाज को लाभ होगा।

Competition (कम्पीटीशन) **प्रतियोगिता**

किसी बाज़ार की वह स्थिति, जिसमें क्रेताओं तथा विक्रेताओं पर किसी प्रकार का दबाव नहीं होता। एक विक्रेता को यह छूट है कि वह निर्दिष्ट कीमत पर अपने लाभ को अधिकतम करने वाली मात्रा क्रेताओं को बेचे। एक उपभोक्ता भी निर्दिष्ट कीमत पर अधिकतम संतुष्टि प्रदान करने वाली मात्रा खरीदता है।

ऐसे बाज़ार में सरकार की कोई भूमिका नहीं होती, तथा क्रेताओं तथा विक्रेताओं की संख्या पर्याप्त होती है। प्रायः पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में वस्तु की कुल माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा कीमत का निर्धारण होता है। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में ही सभी विक्रेता समरूपी वस्तु बेचते हैं और इस कारण विज्ञापन की आवश्यकता नहीं होती।

परन्तु चाहे वस्तुएँ समरूपी हों अथवा विभेदीकृत हों, प्रतियोगिता वाले बाज़ार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाज़ार में प्रवेश करने या छोड़कर जाने की पूरी आजादी होती है, और इस कारण दीर्घकाल में प्रत्येक विक्रेता को केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त होता है।

परम्परागत रूप में अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि प्रतियोगिता से आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है तथा इसके शमन से आर्थिक कल्याण का ह्रास होता है। अनेक देशों

ने एकाधिकार प्रवृत्तियों पर रोक लगाने तथा प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देने हेतु कानून बनाए हैं।

Competition methods (कम्पीटीशन मेथड्स) **प्रतियोगितात्मक विधियाँ**

यदि किसी बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता न हो, तथा विक्रेताओं में परस्पर स्पर्द्धा हो तो इसके लिए दो प्रकार की विधियां प्रयुक्त की जाती हैं :

(अ) कीमत सम्बन्धी प्रतियोगिता – इसमें प्रत्येक विक्रेता अन्य विक्रेताओं की अपेक्षा कम कीमत पर वस्तु बेचकर बिक्री बढ़ाने का प्रयास करता है।

(ब) कीमत-इतर प्रतियोगिता – इसके अन्तर्गत प्रत्येक विक्रेता अपने वस्तु को अन्य विक्रेताओं की तुलना में अधिक आकर्षक या टिकाऊ दिखाने का प्रयास करता है और इसके लिए प्रचार भी करता है।

कुछ विक्रेता, क्रेताओं को अतिरिक्त सुविधाएँ देने का प्रयास करते हैं ताकि वे अन्य विक्रेताओं की तुलना में अधिक बिक्री कर सकें।

Complementarity (कम्प्लीमेंटेरिटी) **पूरकता**

दो वस्तुओं (या सेवाओं) के मध्य का सम्बन्ध जिसके अनुसार एक वस्तु (X) की कीमत में कमी होने पर जब उसकी (X की) माँग बढ़ती है तो दूसरी वस्तु (Y) की माँग में भी वृद्धि होती है। इसी प्रकार X की कीमत बढ़ने पर दोनों वस्तुओं की माँग में कमी होती है। पूरकता का यह सम्बन्ध पूर्णरूप से समानुपाती होना ज़रूरी नहीं है। पूरकता के उदाहरण इस प्रकार के हो सकते हैं : कार व पैट्रोल, कम्प्यूटर तथा प्रिंटर, मेज़ तथा कुर्सी, दूध व चीनी आदि। ऐसी वस्तुओं को पूरक वस्तुएँ कहा जाता है।

Complex number (कॉम्प्लेक्स नम्बर) **जटिल संख्या**

ऐसी संख्या, जिसमें वास्तविक तथा काल्पनिक अंश हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, (a+ib) में a तथा b वास्तविक अंश हैं जबकि i को (-1) का वर्गमूल माना जा सकता है जो वस्तुतः एक काल्पनिक अंश है।

Compliance costs (कम्प्लायेंस कॉस्ट) **वैधानिक रूप से आवश्यक लागत**

फर्म द्वारा कानून तथा नियमों की अनुपालना हेतु वहन की गई लागतें जिनमें अतिरिक्त खाते रखने, अतिरिक्त कर्मचारी रखने आदि के खर्चे शामिल हैं।

Compound interest (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) **चक्रवृद्धि ब्याज**

जब किसी ऋण के साथ–साथ ब्याज़ पर भी ब्याज़ का निर्धारण किया जाए तो इसे चक्रवृद्धि ब्याज़ कहा जाता है : उदाहरण के लिए, 1000 रुपए पर 10 प्रतिशत की दर से तीन वर्ष के लिए चक्रवृद्धि दर से ब्याज़ का निर्धारण निम्न सूत्र द्वारा किया जा सकता है :

$$1000\ (1+0.10)^3 - 1000$$

$$= 1331-1000 = 331$$ रुपए।

इसके विपरीत सरल ब्याज़ की राशि 100×3 यानी 300 रुपए ही होगी।

Concentration (कंसन्ट्रेशन) **संकेंद्रण या केन्द्रीयकरण**

जब किसी उद्योग में कुछ ही फर्में उत्पादन का अधिकांश भाग तैयार करती हैं तो इस प्रवृत्ति को संकेन्द्रण या केन्द्रीयकरण कहा जाता है।

Concentration ratio (कंसन्ट्रेशन रेशिया) **संकेंद्रण अनुपात**

यदि किसी बाज़ार में तीन फर्में कुल उत्पादन का क्रमशः 25 प्रतिशत, 15 प्रतिशत तथा 10 प्रतिशत तैयार करती हों तो इन तीनों का कुल उत्पादन में संकेंद्रण अनुपात इस प्रकार होगा :

$$C_3 = 25+15+10 = 50 \text{ प्रतिशत}$$

इस अवधारणा को हरफिंडाल ने विकसित करते हुए इसे सापेक्ष संकेन्द्रण का नाम दिया।

Conciliation (कन्सीलिएशन) **समझौता**

विवाद होने पर एक ऐसा समझौता तैयार किया जा सकता है जो सभी सम्बद्ध पक्षों को स्वीकार्य हो। समझौते का यह प्रारूप किसी निष्पक्ष व्यक्ति या सलाहकार द्वारा तैयार किया जा सकता है।

Conditions of entry (कन्डीशन ऑफ एंट्री) **प्रवेश की शर्तें**

बाज़ार में नए विक्रेताओं के प्रवेश में आने वाली कठिनाइयां अथवा सुगमता। यदि बाज़ार में प्रतियोगिता की स्थिति है तो यह प्रवेश निर्बाध होता है। नए विक्रेता भी पूर्व में विद्यमान विक्रेताओं की भांति कार्य कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि बाज़ार में एकाधिकार है तो नए विक्रेताओं का प्रवेश असम्भव रहता है। यदि विक्रेता संख्या में कम है, तो प्रवेश की शर्तें इन विक्रेताओं की परस्पर सहमति व गठबन्धन पर निर्भर होंगी।

Consortium (कॉसर्टियम)

व्यक्तियों, संस्थाओं अथवा सरकारों का एक समूह

इस समूह के सभी सदस्य अपने संसाधनों तथा कौशल को जमा करके निर्दिष्ट परियोजना हेतु प्रयोग में लेते हैं, तथा वृहत् स्तर पर काम करने की बचतों का लाभ उठाते हैं।

Conspicuous consumption

(कॉन्स्पीक्यूअस कन्ज़ंप्शन) **प्रदर्शन या दिखावे वाला उपभोग**

किसी वस्तु या सेवा को जब उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता के लिए नहीं, अपितु अन्य लोगों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए किया जाए तो वह दिखावे वाला उपभोग कहलाता है। यदि कोई व्यक्ति रॉल्स रॉयस कार को परिवहन के लिए नहीं, अपितु अपने वैभव का प्रदर्शन करने हेतु खरीदता है तो यह दिखावा मात्र कहलाएगा।

Constant returns (कॉस्टेंट रिटर्न्स) **स्थिर प्रतिफल**

किसी एक साधन या अनेक साधनों को जिस अनुपात में बढ़ाया या कम किया जाता है, यदि उत्पादन में भी उसी अनुपात से वृद्धि या कमी हो तो यह स्थिति स्थिर प्रतिफल की स्थिति कहलाती है।

अल्पकाल में केवल एक ही साधन में परिवर्तन का प्रभाव उत्पादन पर देखा जाता है। परन्तु दीर्घकाल में जिस अनुपात में सभी साधनों की मात्रा में परिवर्तन किया जाता है, स्थिर प्रतिफल के अन्तर्गत उत्पादन में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है। इसीलिए दीर्घकाल में इस प्रवृत्ति को पैमाने के स्थिरमान प्रतिफल (कॉंस्टेंट रिटर्न्स टू स्केल) कहा जाता है।

Constrained maximum (कॉंन्स्ट्रेंड मेक्सीमम) **सीमाबद्ध अधिकतम मूल्य**

यह किसी फलन की अधिकतम संभावित सीमा (मूल्य) है। उदाहरणस्वरूप, दी हुई आय में उपभोक्ता द्वारा अधिकतम कितनी उपयोगिता प्राप्त की जा सकती है, वह सीमाबद्ध अधिकतम मूल्य कहलाएगा। इसी प्रकार निर्दिष्ट साधनों (श्रम व पूँजी) के अन्तर्गत उत्पादक X की अधिकतम कितनी मात्रा का उत्पादन कर सकता है, यह उसके लिए सीमाबद्ध अधिकतम मूल्य माना जाएगा।

Constrained minimum (कॉंस्ट्रेंड मिनिमम) **सीमाबद्ध न्यूनतम मूल्य**

दी हुई सन्तुष्टि या उपयोगिता को न्यूनतम कितनी आय के भीतर प्राप्त किया जा सकता है, यह सीमाबद्ध मूल्य कहा जाएगा। इसी प्रकार उत्पादन की निर्दिष्ट मात्रा को कितनी न्यूनतम लागत पर प्राप्त किया जा सकता है, यह भी सीमाबद्ध न्यूनतम मूल्य है।

समोत्पाद वक्र विश्लेषण के अन्तर्गत चाहे सीमाबद्ध अधिकतम मूल्य ज्ञात करना हो चाहे सीमाबद्ध न्यूनतम मूल्य ज्ञात करना हो, ये दोनों ही एक जैसी तथा इष्टतम स्थितियां है। इन दोनों ही स्थितियों के लिए निम्न शर्त पूरी होनी चाहिए :

$$\frac{MP_L}{MP_K} = \frac{w}{r}$$

यहां MP_L व MP_K क्रमशः श्रम व पूँजी के सीमान्त उत्पादन स्तर हैं जबकि w व r क्रमशः मज़दूरी व ब्याज़ की दरें हैं। इस प्रकार इष्टतम स्थिति (सीमाबद्ध अधिकतम/सीमाबद्ध न्यूनतम मूल्य) वहाँ प्राप्त होगी **जहाँ दो साधनों के सीमान्त उत्पादन इनकी कीमतों के अनुपात के समान हों।**

Consumer (कन्ज्यूमर) **उपभोक्ता**

एक व्यक्ति या परिवार जो किसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु किसी वस्तु अथवा सेवा को क्रय करना चाहता है।

Consumer Credit (कंज्यूमर क्रेडिट) **उपभोग हेतु साख**

उपभोक्ताओं को उनके द्वारा क्रय की जाने वाली वस्तुओं या सेवाओं के लिए ऋण (साख) की व्यवस्था। इसमें हायर परचेज़, बैंक ऋण, क्रेडिट कार्ड आदि की सुविधाएँ शामिल हैं।

Consumer durables (कंज्यूमर ड्यूरेबल्स) **स्थायी उपभोग की वस्तुएँ**

इस प्रकार की वस्तुएँ वे हैं जिनका उपभोक्ता लम्बी अवधि तक तथा बार-बार प्रयोग

कर सकता है, जैसे मकान, पंखे, फर्नीचर, कार, स्कूटर आदि। परन्तु चपाती, मिठाई, शीतल पेय, पानी आदि का प्रयोग केवल एक ही बार किया जा सकता है।

Consumer equilibrium (कंज्यूमर इक्वीलिब्रियम) **उपभोक्ता का साम्य**

प्रत्येक उपभोक्ता को अपनी सीमित आय को विभिन्न उपभोग वस्तुओं या सेवाओं के मध्य इस प्रकार आवंटित करना होता है कि उसे अधिकतम संतुष्टि या उपयोगिता प्राप्त हो।

यदि उपभोक्ता को एक ही वस्तु का उपभोग करना हो तो उसके साम्य की स्थिति वहां होती है जहाँ वस्तु की सीमान्त उपयोगिता तथा कीमत समान हों। अस्तु, $MU_x = P_x$ की शर्त पूरी होने पर उपभोक्ता का साम्य स्थापित होगा। इसके विपरीत दो या अधिक वस्तुओं का उपभोग किया जाना हो तो साम्य स्थिति वहाँ प्राप्त होगी जहां सभी वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिता एवं कीमतों के अनुपात समान हों :

$$\frac{MU_X}{P_X} = \frac{MU_Y}{P_Y} = \frac{MU_Z}{P_Z} = \text{-----} = \frac{MU_n}{P_n}$$

Consumer goods (कंज्यूमर गुड्स) **उपभोग वस्तुएँ**

ऐसी वस्तुएँ जिनका उपयोग उपभोक्ता द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु किया जाता है।

Consumerism (कंज्यूमरिज़्म) **उपभोगवाद**

ऐसा दृष्टिकोण जिसके अनुसार उपभोक्ताओं के लाभ हेतु आर्थिक जीवन का संचालन किया जाता है। ऐसी मान्यता ली जाती है कि उपभोक्ता को एक व्यापक क्षेत्र में से वस्तुओं का चुनाव करना होता है। और इस कारण उपभोक्ता का ज्ञान उत्पादक फर्मों (जो अधिक संगठित रहती हैं) की अपेक्षा सीमित रहता है। इसीलिए उपभोगवादी प्रायः यह तर्क देते हैं कि जब कभी उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों के बीच टकराव हो, तो कानून को उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करनी चाहिए।

Consumer price index (कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स) **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक**

कीमतों का वह सूचकांक जिसका सम्बन्ध केवल उपभोग वस्तुओं से रहता है।

Consumer rationality (कंज्यूमर रैशनेलिटी) **उपभोक्ता की विवेकशीलता**

व्यष्टि अर्थशास्त्र में प्रायः यह मान्यता ली जाती है कि प्रत्येक उपभोक्ता विवेकशील है, तथा इस कारण वह सीमित आय का विभिन्न वस्तुओं के मध्य इस प्रकार आवंटन करता है कि उसे अधिकतम उपयोगिता या सन्तुष्टि प्राप्त हो। इसीलिए वह प्रत्येक वस्तु की सीमान्त उपयोगिता से अधिक कीमत नहीं देता। इष्टतम स्थिति में सभी वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिता तथा कीमतों का अनुपात समान रहता है। प्रायः विवेकशील उपभोक्ता को आर्थिक मानव कहा जाता है क्योंकि वह अपनी संतुष्टि को अधिकतप स्तर तक लाना चाहता है।

Consumer sovereignty (कंज्यूमर सोवरेंटी) **उपभोक्ता की सार्वभौमिक शक्ति**

एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता को सार्वभौमिक–शक्ति सम्पन्न माना जाता है, क्योंकि उसकी रूचि के आधार पर ही उत्पादक फर्में वस्तुओं की डिजाइन एवं मात्रा का निर्धारण करती हैं। एक बाज़ार या स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता की रुचि की उपेक्षा करना सम्भव नहीं है।

Consumer's surplus (कंज्यूमर्स सरप्लस) **उपभोक्ता का अतिरेक, उपभोक्ता की बचत**

किसी वस्तु या उसकी एक इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता या सन्तुष्टि का उसके लिए चुकाई गई कीमत से आधिक्य। एल्फ्रेड मार्शल ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी : उपभोक्ता किसी वस्तु से वंचित रहने पर उसके लिए जो कीमत देने को तैयार है, तथा वस्तु मिलने पर जो कीमत देता है उसका अन्तर ही उपभोक्ता की बचत है। इसे रेखाचित्र के रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।
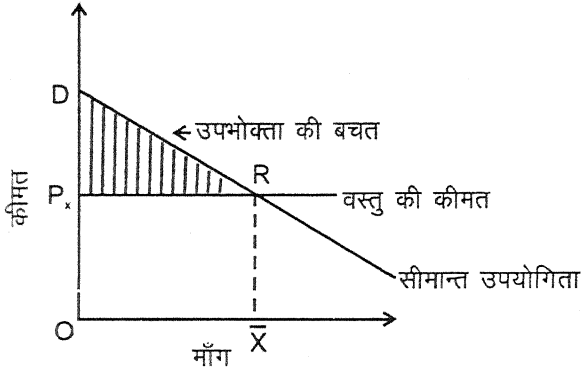
उपरोक्त चित्र में $O\overline{X}$ इकाइयां खरीदने पर $ODR\overline{X}$ के बराबर कुल उपयोगिता प्राप्त होती है जबकि इनके लिए उपभोक्ता कुल $OP_xR\overline{X}$ का भुगतान करता है। इस प्रकार DRP_x के समतुल्य कुल उपभोक्ता की बचत प्राप्त हुई।

Consumption expenditure (कंज़म्प्शन एक्सपेंडिचर) **उपभोग व्यय**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जो परिवारों द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं की खरीद पर व्यय किया जाता है।

Consumption function (कंज़म्प्शन फंक्शन) **उपभोग फलन**

उपभोग व्यय (आश्रित चर) तथा इसके निर्धारक चरों (प्रयोज्य आय, वस्तुओं की कीमतें तथा मात्राएँ, पूर्ववर्ती आय तथा उपभोक्ता की सम्पत्ति आदि) के बीच सम्बन्ध व्यक्त करने वाला गणितीय फलन।

Contingent liability (कंटिन्जेन्ट लाइबिलिटी) **संभावित देनदारी**

एक ऐसी देनदारी जो किसी विशिष्ट परिस्थिति में ही उत्पन्न होती है। उदाहरण

के लिए, किसी व्यक्ति के ऋण हेतु दी गई गारंटी से देनदारी तभी उत्पन्न होगी जब ऋणी ऋण की अदायगी करने से मना कर दे। बीमा कम्पनियां प्रायः आग लगने, चोरी होने या दुर्घटना होने की सम्भावित देनदारियों के लिए तैयार रहती हैं।

Contract (कॉन्ट्रेक्ट) **संविदा, वैधानिक समझौता**

दो या अधिक पक्षों में हुआ एक कानूनी समझौता। यह समझौता मौखिक हो सकता अथवा लिखित भी। समझौते के अन्तर्गत एक पक्ष अन्य पक्षों के लिए किसी वस्तु की आपूर्ति करने, अथवा अपनी सेवा प्रदान करने का दायित्व वहन करता है, जबकि दूसरा पक्ष तत्सम्बन्धी भुगतान करने का दायित्व स्वीकार करता है।

Contract curve (कॉन्ट्रेक्ट कर्व) **संविदा वक्र**

कल्याण अर्थशास्त्र के अन्तर्गत दो वस्तुओं की निर्दिष्ट मात्राओं (X तथा Y) को दो उपभोक्ता किस प्रकार इष्टतम रूप में परस्पर आवंटित करेंगे इसे दर्शाने वाला वक्र। एजवर्थ ने बतलाया कि इष्टतम आवंटन के लिए दोनों उपभोक्ताओं के लिए दोनों वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिताओं के अनुपात समान होने चाहिए। अस्तु

$$\frac{MU_X}{MY_y}(A) = \frac{MU_X}{MU_y}(B)$$

नीचे इसे समझने हेतु एजवर्थ आयताकार चित्र प्रस्तुत किया गया है,
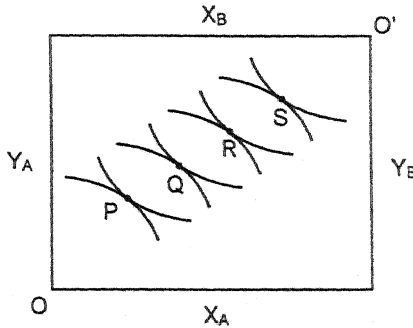
इस चित्र में P, Q, R तथा S पर X एवं Y के इष्टतम आवंटन की शर्त पूरी होती है। इन चारों को मिलाने पर जो वक्र प्राप्त होता है उसे संविदा वक्र कहा जाता है। इस प्रकार संविदा वक्र का प्रत्येक बिन्दु दोनों वस्तुओं के A व B के बीच इष्टतम आवंटन की स्थिति को व्यक्त करता है।

Convertibility (कन्वर्टीबिलिटी) **परिवर्तनशीलता**

एक विदेशी मुद्रा अथवा अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व कोष की अन्य विदेशी मुद्राओं में परिवर्तनशीलता की स्वतंत्रता। ऐसी मान्यता है कि यह परिवर्तनशीलता जितनी मुक्त होगी, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा पूँजी का प्रवाह बढ़ने की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी।

Convertible loans (कन्वर्टीबल लोन्स) **परिवर्तनशील ऋण**

किसी संयुक्त कम्पनी को दिया गया ऋण, ऋणदाता की इच्छानुसार निर्दिष्ट कीमत पर सामान्य अंशों या शेयरों के रूप में परिवर्तित करने की सम्भावना।

Cooperative (को–ऑपरेटिव) **सहकारी संस्था**

परस्पर हित के लिए दो या अधिक व्यक्तियों के एक समूह द्वारा स्थापित एक व्यावसायिक फर्म। सहकारी संस्थाओं के कुछ उदाहरण निम्न हैं :

(i) उत्पादकों (बुनकरों, कृषकों आदि) की सहकारी संस्था,
(ii) थोक व्यापार हेतु सहकारी संस्था,
(iii) उपभोक्ताओं की सहकारी संस्था,
(iv) खुदरा व्यापार हेतु सहकारी विपणन संस्था,
(v) भवन निर्माण हेतु सहकारी संस्था।

Corporate governance (कॉर्पोरेट गवर्नेन्स) **कम्पनी की सत्ता**

गत कुछ दशकों में एक ओर किसी फर्म के स्वामित्व तथा संचालकों में अन्तर उत्पन्न हो गया है, और दूसरी ओर पगार पाने वाले योग्य प्रबन्धकों द्वारा निर्णय प्रक्रिया पर नियंत्रण हो गया है। बड़ी-बड़ी कम्पनियों में शेयरधारी फर्म के स्वामी होते हैं, तथा वे ही संचालक मंडल का चुनाव भी करते हैं, लेकिन वास्तविक सत्ता तो पगार पाने वाले प्रबन्धकों के पास ही केन्द्रित रहती है।

Corporation tax (कॉर्पोरेशन टैक्स) **निगम कर**

एक प्रत्यक्ष कर जो केन्द्र सरकार द्वारा कम्पनियों के लाभ पर रोपित किया जाता है। इस कर की दर इस लिए महत्त्वपूर्ण है कि इसी पर कम्पनी का शुद्ध लाभ निर्भर करता है, तथा इसी शुद्ध लाभ पर अंशधारियों को मिलने वाला लाभांश निर्भर करता है।

Correlation (कोरीलेशन) **सहसम्बन्ध**

एक सांख्यिकीय अवधारणा जिसके द्वारा दो चरों के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया जाता है। यदि दोनों चरों में समानुपाती परिवर्तन हो तो इस सह–सम्बन्ध का गुणांक +1 होगा। यदि यह परिवर्तन समानुपाती नहीं है, परन्तु एक ही दिशा वाला है तब भी यह धनात्मक परन्तु इकाई से कम गुणांक ($\sigma<1$) वाला सह–सम्बन्ध होगा। परन्तु यदि एक चर में वृद्धि होने के साथ दूसरे चर में होने वाला परिवर्तन उससे विपरीत दिशा वाला हो तो सहसम्बन्ध का गुणांक ऋणात्मक ($\sigma<0$) होगा।

यहाँ सहसम्बन्ध तथा प्रतीपगमन (regression) में अन्तर को समझना ज़रूरी है। सह सम्बन्ध में जहाँ एक **चर में परिवर्तन के कारण दूसरे चर में परिवर्तन होना ज़रूरी नहीं है,** प्रतीपगमन के अन्तर्गत एक चर आश्रित चर होता है जबकि दूसरा चर स्वतंत्र चर होता है। उदाहरण के लिए, आय बढ़ने पर दूध की माँग बढ़े तो प्रतीपगमन कारण तथा प्रभाव को दर्शाता है, और चूंकि दो चरों में एक ही दिशा में परिवर्तन हो रहा है, प्रतीपगमन गुणांक धनात्मक होगा। हीन वस्तुओं के संदर्भ में यह गुणांक ऋणात्मक होता है

Cost (कॉस्ट) **लागत**

किसी फर्म द्वारा वस्तु के उत्पादन हेतु चुकाई गई बाह्य तथा आन्तरिक लागतें। बाह्य लागत का भुगतान अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त साधनों के लिए किया जाता है, जबकि आन्तरिक लागतें फर्म या उत्पादक के अपने स्वयं के साधनों हेतु आकलित की जाती है, हालांकि इनका वास्तविक भुगतान नहीं किया जाता।

Cost based pricing (कॉस्ट बेस्ड प्राइसिंग) **लागत-आधारित कीमत निर्धारण**

जब कोई फर्म उत्पादन, वितरण तथा विपणन की लागतों में अपना लाभ जोड़कर कीमत का निर्धारण करती है तो यह लागत-आधारित कीमत निर्धारण कहलाता है। इसमें औसत लागत, कुल लागत या सीमान्त लागत किसी पर भी कीमत का निर्धारण किया जा सकता है।

Cost-benefit analysis (कॉस्ट बेनीफिट एनालिसिस) **लागत-लाभ विश्लेषण**

देखिए benefit-cost analysis (लाभ–लागत विश्लेषण)। इसके अन्तर्गत परियोजना का आकलन करते समय स्थिर लागत तथा लाभ की तुलना की जाती है तथा लागत–लाभ अनुपात (C-B Ratio) जितना कम होगा, परियोजना आर्थिक या वित्तीय दृष्टि से उतनी ही व्यवहार्य मानी जाएगी।

Cost-effectiveness (कॉस्ट इफेक्टिवनेस) **लागत प्रभावशीलता**

इसे जाँचने हेतु लागत-लाभ अनुपात को देखा जाता है। परियोजना की लागत-लाभ का अनुपात जितना कम होगा। वह परियोजना उतनी ही लागत-प्रभावशील मानी जाएगी।

Cost function (कॉस्ट फंक्शन) **लागत फलन**

उत्पादन की मात्रा तथा लागत के मध्य सम्बन्ध। इस फलन में स्थिर तथा परिवर्तनशील दोनों प्रकार की लागतें शामिल हो सकती है।

$$C = aX^3 - bX^2 + cX + d$$

उक्त लागत फलन में C कुल लागत है, d स्थिर लागत है जबकि शेष को परिवर्तनशील लागतें कहा जा सकता है। स्पष्ट है, चाहे उत्पादन की मात्रा (X) शून्य हो, फर्म को स्थिर लागत (d) का तो भुगतान करना ही होगा। इस त्रिघाती लागत फलन के अनुसार प्रारम्भ में उत्पादन बढ़ने पर लागत में ह्रासमान गति से वृद्धि होगी तथा बाद में यह वर्द्धमान गति से बढ़ेगी।

Cost minimization (कॉस्ट मिनिमाइज़ेशन) **लागत को न्यूनतम करना**

उत्पादन के साधन की लागत उस स्तर पर न्यूनतम होती है जहां साधन का सीमान्त उत्पादन इसकी कीमत के समान हो ($MPz_1 = Pz_1$)। यदि उत्पादन प्रक्रिया में दो साधन प्रयुक्त किए जा रहें हो तो उत्पादन लागत का न्यूनतम स्तर वहां होगा जहां इन साधनों के सीमान्त उत्पादन तथा इनकी कीमतों के अनुपात समान हों। अस्तु,

$$\frac{MPz_1}{MPz_2} = \frac{Pz_1}{Pz_2}$$

Counter trade (काउन्टर ट्रेड) **प्रति-व्यापार**

जब कभी दो देशों के पास व्यापार करने हेतु विदेशी मुद्रा के भंडार नहीं हो, और इसके बावजूद ये परस्पर व्यापार करना चाहें तो ऐसा प्रति–व्यापार के माध्यम से ही हो सकता है। संक्षेप में *अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वस्तु विनिमय को ही प्रति-व्यापार कहा जाता है।* आपस में आदान प्रदान की जाने वाली वस्तुओं की कीमतों तथा मात्राओं के विषय में सहमति के बाद यह व्यापार सम्भव हो जाता है।

कभी-कभी एक देश जब दूसरे देश को मशीनों का निर्यात करने हेतु सहमत होता है तो प्रति व्यापार की शर्तों के अनुरूप उन मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं को खरीदने पर भी प्रति व्यापार किया जा सकता है।

Countervailing duty (काउन्टरवेलिंग ड्यूटी)

निरोधात्मक या प्रतिरक्षात्मक तटकर

यदि कोई देश अपना निर्यात बढ़ाने हेतु निर्यातों पर अनुदान दे और दूसरा देश अपना बचाव करने हेतु उन वस्तुओं पर विद्यमान आयात करों में वृद्धि कर दे तो इसे प्रतिरक्षात्मक तटकर कहा जाता है। इस उपाय के द्वारा एक देश द्वारा अपनी वस्तुओं की कीमतों में कमी के माध्यम से राशि-पातन की नीति को अपनाता है जबकि दूसरा देश उस नीति को प्रभावहीन बनाने का प्रयास करता है।

Countervailing power (काउन्टरवेलिंग पावर)

प्रतिरक्षात्मक या निरोधात्मक शक्ति

द्वयाधिकार वाले बाज़ार में विशालकाय विक्रेता फर्मों की शक्ति का सामना करने हेतु बड़े–बड़े क्रेता भी अपने आप को तैयार करते हैं। उदाहरण के लिए, खाद्य वस्तुओं के बड़े विक्रेताओं का सामना करने हेतु क्रेता भी शृंखलाबद्ध स्टोर प्रारम्भ कर सकते हैं। यह उनकी प्रतिरक्षात्मक शक्ति होगी। प्रो. गॉलब्रेथ के मतानुसार बड़ी फर्मों का सामना करने हेतु श्रमिक संघों या उपभोक्ता संघों का गठन किया जा सकता है।

Cournot, Antonie Augustin (ऍंटोनी ऑगस्टीन कूर्नो)

उन्नीसवीं शताब्दी के एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री

इन्होंने धन के सिद्धान्त का गणितीय रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने उपयोगिता के स्थान पर दो या अधिक वस्तुओं के विनिमय मूल्यों पर जोर दिया तथा लागतों एवं कीमतों के मध्य गणितीय सम्बन्धों की व्याख्या की। कूर्नो को उनके अल्पाधिकार (दो विक्रेताओं) वाले बाज़ार के मॉडल का प्रतिपादन करने हेतु भी पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी।

Covariance (को वेरीएँस)

दो दैव चरों के मूल्यों के पारस्परिक सम्बन्धों का माप

यदि X तथा Y दो चर हैं तथा इनके औसत मूल्य μx तथा μy हों तथा i का मूल्य 1 से N तक होता हो तो प्रत्येक चर का इसके औसत से जो विचलन है उसके योग को उनके प्रमाप विचलन से भाग देकर cov (X, Y) प्राप्त किया जा सकता है।

Credibility (क्रेडिबिलिटी) **विश्वसनीयता**

किस सीमा तक नीति विषयक घोषणाएँ विश्वसनीय हैं, यह जानना। आम जनता तभी इन घोषणाओं पर विश्वास करेगी जब सम्बद्ध अधिकारियों का पिछला इतिहास उनकी *कथनी के अनुरूप करनी* की पुष्टि करता हो।

Credit (क्रेडिट) **उधार; साख**

एक ऐसी व्यवस्था जिसके अन्तर्गत तत्काल भुगतान की अपेक्षा वस्तुओं या सेवाओं को स्थगित भुगतान के अन्तर्गत खरीदा जाता है। इस व्यवस्था को विक्रेता ही सुलभ कराता है, या फिर किसी बैंक या वित्तीय संस्था द्वारा साख उपलब्ध कराई जाती है। प्रायः किसी व्यक्ति को किस सीमा तक साख उपलब्ध कराई जाए यह उसके द्वारा प्रस्तुत जमानत अथवा अब तक अर्जित प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। इसीलिए साख का एक पर्याय प्रतिष्ठा या वित्तीय हैसियत को भी माना जाता है।

Credit card (क्रेडिट कार्ड) **साख कार्ड**

यह प्लास्टिक का बना एक कार्ड है जिसके आधार पर इसका धारक बिना तत्काल भुगतान किए एक सीमा तक स्थगित भुगतान के आधार पर वस्तुएँ या सेवाएँ खरीद सकता है। कार्डधारी सम्बद्ध वित्तीय संस्था को उन सभी बिलों का भुगतान एक मुश्त या किश्तों में कर सकता है।

Credit control (क्रेडिट कन्ट्रोल) **साख नियंत्रण**

किसी देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा व्यापारी बैंकों द्वारा निर्गमित साख को नियंत्रित करना। भारत में यह अधिकार रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया में निहित है। साख नियंत्रण हेतु केन्द्रीय बैंक निम्न में से कोई एक या अधिक विधियाँ प्रयुक्त कर सकता है : (i) बैंक दर, (ii) नगद रिज़र्व अनुपात, (iii) वैधानिक रिज़र्व अनुपात, (iv) खुले बाज़ार में प्रतिभूतियों की खरीद या बिक्री, (v) साख की विशिष्ट नियंत्रण विधियां–विशेष रूप से साख की माँग के अनुरूप उसे नियंत्रित करना, (vi) सीधी कार्यवाही।

इन सभी विधियों के आधार पर सम्बद्ध बैंकों की तरलता पर केन्द्रीय बैंक अंकुश लगाता है, या तरलता में वृद्धि करता है।

Credit creation (क्रेडिट क्रिएशन) **साख का सृजन**

प्रारम्भिक निक्षेप या जमा के आधार पर एक व्यापारी बैंक नगद रिज़र्व अनुपात के अनुरूप ऋण प्रदान करने हेतु आवेदनकर्ता का खाता खोलता है। फिर नगद रिज़र्व अनुपात के आधार पर दूसरे, तीसरे चौथे, पांचवें .... इसी प्रकार अन्य आवेदन

कर्ताओं के खाते खोले जाते हैं। इस प्रकार यदि रिज़र्व अनुपात 20 प्रतिशत हो तो मूल जमा की कुल पाँच गुनी जमाओं का सृजन हो सकता है।

Creeping inflation (क्रीपिंग इन्फ्लेशन) **रेंगती हुई मुद्रा स्फीति**

जब अर्थव्यवस्था में कीमत–स्तर धीमी गति से बढ़ता है तो उसे रेंगती हुई स्फीति कहा जाता है।

Cross-elasticity of demand

(क्रॉस इलास्टिसिटी ऑफ डिमान्ड) **माँग की तिरछी लोच**

एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर जो प्रतिक्रिया दूसरी वस्तु की माँग पर होती है उसे तिरछी लोच कहा जाता है।

माँग की तिरछी लोच का गुणांक दोनों वस्तुओं के पारस्परिक सम्बन्ध पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि पतलून की कीमत में कमी की जाए तो न केवल इसकी माँग में वृद्धि होगी अपितु कमीजों की माँग भी बढ़ जाएगी। माँग की यह तिरछी लोच पतलून की कीमत में कमीज़ की माँग के मध्य ऋणात्मक सम्बन्ध दिखाती हैं। ($\eta_{xy}<0$)।

इसके विपरीत यदि वीडियोकॉन वाशिंग मशीन की कीमत कम हो जाए, तो इसकी स्थानापन्न वाशिंग मशीनों (सैम्संग, गोदरेज आदि) की माँग की कम हो जाएगी ($\eta_{xy}>0$)

माँग की तिरछी लोच को निम्न सूत्र के द्वारा मापा जा सकता है :

$$\eta_{xy} = \frac{\text{A वस्तु की माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{B वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

माँग की तिरछी लोच के आधार पर हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि A तथा B परस्पर स्थानापन्न वस्तुएँ हैं या पूरक हैं अथवा पूर्णतया असम्बद्ध वस्तुएँ हैं।

Cross-subsidization (क्रॉस सब्सीडाइज़ेशन) **तिरछी अनुदान प्रक्रिया**

एक विशालकाय फर्म एक वस्तु या विभाग से प्राप्त लाभ का एक अंश दूसरी वस्तु या विभाग के लिए अनुदान हेतु कर सकती है। प्रायः किसी नए उत्पाद को बाज़ार में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से इस प्रकार का **आन्तरिक अनुदान** दिया जाता है।

Crowding out effect (क्राउडिंग आउट इफेक्ट)

सरकारी व्यय में वृद्धि का निजी क्षेत्र के व्यय पर प्रतिकूल प्रभाव

सरकारी व्यय में वृद्धि होने पर वास्तविक आय तथा उत्पादन में वृद्धि होती है, जिसके फलस्वरूप मुद्रा की माँग बढ़ती है। यदि मुद्रा की आपूर्ति अपरिवर्तित रहे तो इससे ब्याज़ दर में वृद्धि होगी। ब्याज़ दर बढ़ने से निजी क्षेत्र के व्यय में कमी होती है। इस प्रकार, सरकारी व्यय में वृद्धि से सकल माँग में जो वृद्धि होती है, निजी क्षेत्र की माँग में कटौती के फलस्वरूप निजी व्यय में आंशिक रूप से कमी होती है।

Currency (करेन्सी) **मुद्रा**

किसी देश में विद्यमान नगद यानी पत्र मुद्रा तथा सिक्के जिनका प्रयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया जा रहा है। प्रायः मुद्रा की आपूर्ति को ही इसमें शामिल किया जाता है।

Currency swap (करेन्सी स्वॉप) **अदल-बदल**

किसी वस्तु, वित्तीय ऋण पर ब्याज़ या मुद्रा का किसी अन्य वस्तु, अन्य वित्तीय ऋण पर ब्याज़ या मुद्रा के साथ विनिमय। प्रायः यह अदल बदल जोखिम को न्यूनतम करने के उद्देश्य से किया जाता है।

Current account (करेन्ट एकाउंट) **चालू खाता**

किसी देश के विदेशी व्यापार (दृश्य) एवं अदृश्य व्यापार की दशा को प्रस्तुत करने वाली तालिका, जो निर्दिष्ट अवधि में उस देश के भुगतान शेष को दर्शाती है। बैंक जमा के संदर्भ में चालू खाते का अर्थ है कि ग्राहक अपनी इच्छा या सुविधा के अनुसार नगद जमा कर सकता है, चैक जारी कर सकता है या स्वयं नगद निकाल सकता है।

Current prices (करेन्ट प्राइसेज) **चालू कीमतें**

निर्दिष्ट अवधि में प्रचलित औसत कीमतें। उदाहरण के लिए सन् 2000–2001 की औसत कीमतों के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद का अनुमान करना हो तो इस वर्ष प्रचलित कीमतों के औसत से सम्बद्ध वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा को गुणा किया जाता है। चालू कीमतों में मुद्रा स्फीति या संकुचन का प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु यदि 2000–2001 में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा को 1993–94 में प्रचलित औसत कीमतों से गुणा किया जाए तो यह स्थिर कीमतों पर आधारित सकल राष्ट्रीय उत्पाद का द्योतक होगा। इस प्रकार स्थिर कीमतों को चुनने पर हम केवल वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा यानी सकल राष्ट्रीय उत्पाद की वास्तविक मात्रा में 2000–2001 के वर्ष में हुए परिवर्तन का अनुमान करते हैं।

Current-weighted index (करेन्ट वेटेड इंडैक्स) **चालू भारित सूचकांक**

कीमतों अथवा मात्राओं का भारित औसत, जिसमें हाल की अवधि की कीमतों अथवा मात्राओं के अनुपात में भार लिए जाते हैं। इसे पास्चे सूचकांक भी कहा जाता है। मान लीजिए P_{ij} तथा q_{ij} क्रमशः i^{th} वस्तु की j^{th} अवधि की कीमतें तथा मात्राएँ हैं (जहां $i = 1, 2, 3, 4$ ----- n)। यह भी मान लीजिए कि o तथा t क्रमशः आधार वर्ष तथा वर्तमान वर्ष के द्योतक हैं। ऐसी स्थिति में चालू भारित अथवा पास्चे कीमत सूचकांक हेतु निम्न सूत्र प्रयुक्त किया जाएगा :

$$P_c = \left[\sum_i P_{it} \cdot q_{it}\right] / \left[\sum_i P_{io} \cdot q_{it}\right]$$

मात्रा सूचकांक हेतु चालू–भारित या पास्चे सूचकांक का सूत्र निम्न होगा

$$Q_c = \left[\sum_i P_{it} \cdot q_{it}\right] / \left[\sum_i P_{it} \cdot q_{io}\right]$$

Customs (कस्टम्स) **आयात कर**

आयातों पर रोपित कर जिनका प्रमुख उद्देश्य राजस्व प्रापत करना है। आयात कर में वृद्धि या कमी करके सरकार आयातों को कम करने अथवा प्रोत्साहन देने का उद्देश्य पूरा करती है।

Customs union (कस्टम्स यूनियन) **साझा बाजार**

विभिन्न देशों द्वारा स्थापित एक संगठन, जो परस्पर स्वतंत्र एवं आयात करों के बिना व्यापार करना चाहता हैं। ये देश जहां आपस में किसी बंधन या अवरोध के बिना व्यापार करते हैं, यथा सम्भव बाहर के देशों से आयातित वस्तुओं पर समान दरों से आयात कर रोपित करते हैं। साझा बाज़ार का प्रमुख उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण का लाभ प्राप्त करना है।

Cut throat competition (कट थ्रोट कम्पीटीशन) **गला काट प्रतियोगिता**

किसी वस्तु या सेवा के विभिन्न विक्रेताओं के मध्य चल रही गहन स्पर्द्धा, जिसके अन्तर्गत एक दूसरे को नीचा दिखाने के उद्देश्य से कीमत में कमी की जाती है तथा अन्य विक्रेताओं के ग्राहकों को लुभाया जाता है। लेकिन प्रायः इस प्रकार की प्रवृत्ति से सभी विक्रेताओं को हानि होती है, और दीर्घकाल में बाज़ार में केवल विशालकाय विक्रेता ही बाज़ार में शेष रह पाते हैं।

Cycle, trade (ट्रेड साइकिल) **व्यापार चक्र**

(देखिए Business cycle)

Cyclical adjustment(साइक्लिकल एडजस्टमेंट) **चक्रीय समायोजन**

सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सरकारी व्यय अथवा बजट घाटे में समायोजन करके उन्हें दीर्घकालीन प्रवृत्ति अथवा सामान्य स्तर के अनुरूप बनाना। इसके लिए एक मॉडल निरूपित किया जाता है।

Cyclical fluctuation (साइक्लिकल फ्लक्चुएशन) **चक्रीय उतार-चढ़ाव**

कीमत–स्तर, आर्थिक संवृद्धि दर अथवा अन्य किसी आर्थिक चर में होने वाले अल्पकालीन उतार–चढ़ाव।
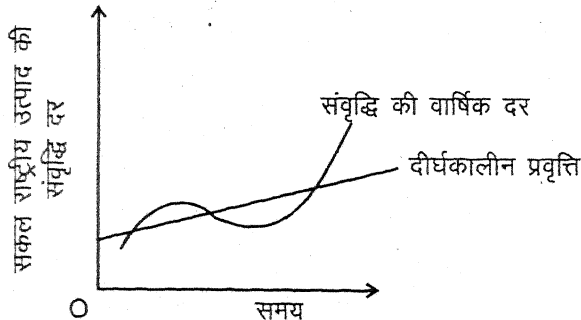
Cyclical unemployment (साइक्लिकल अनएँप्लॉयमेंट) **चक्रीय बेरोज़गारी**

किसी व्यापार चक्र के मंदी वाले काल में सकल माँग का स्तर नीचा होने के कारण परिलक्षित बेरोज़गारी। यह बेरोज़गारी व्यापार चक्र के अगले काल (यानी स्फीति वाले काल) में स्वतः लुप्त हो जाती है, क्योंकि उस अवधि में कीमतें, उत्पादन तथा सकल माँग में वृद्धि होती है। इस प्रकार चक्रीय बेरोज़गारी अस्थायी एवं अल्पकालिक होती है।

□□□

D

Dawn raid (डॉन रेड) **प्रारम्भिक आधिपत्य**

एक ऐसी स्थिति जिसमें किसी कम्पनी पर अधिकार करने की दृष्टि से प्रचलित बाज़ार कीमतों पर उसके काफी अधिक अंश खरीद लिए जाते हैं। इन सौदों में अंश खरीदने वाला अपनी *पहचान को गोपनीय रखने* हेतु किसी बिचौलिए की सेवाएँ लेता है। इन अंशों को लेने के बाद उस कम्पनी पर पूर्ण आधिपत्य करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

Deadweight burden of taxes
(डैडवेट बर्डन ऑफ टैक्सेज) **करों का अप्रतिभूत भार**

किसी कर से एकत्रित किए गए राजस्व की अपेक्षा कर के कुल प्रभाव का आधिक्य। किसी परोक्ष कर के कारण वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तथा इसके फलस्वरूप बिक्री में कमी होती है क्योंकि उपभोक्ता वस्तु की केवल उतनी मात्रा ही खरीदता है जिसकी उपयोगिता उत्पादन लागत से अधिक है, परन्तु कर सहित नई कीमत से कम है। इसके फलस्वरूप इन वस्तुओं से प्राप्त उपभोक्ता के अतिरेक में कमी हो जाती है।

Deadweight debt (डैडवेट डैट) **अप्रतिभूत ऋण**

बिना विशिष्ट सम्पत्ति का सृजन किए हुए ऋण लेना, जिससे ऋण अदायगी की लागत को पूरा करना कठिन हो जाता है। इस प्रकार के ऋणों में उपभोग हेतु लिए गए ऋण या व्यावसायिक घाटे की पूर्ति हेतु लिए गए ऋण शामिल किए जाते हैं।

Deadweight loss (डैडवेट लॉस) **अप्रतिभूत क्षति**

जब कभी किसी वस्तु का उत्पादन इष्टतम स्तर से कम होता है तो इससे उत्पादक के अतिरेक तथा उपभोक्ता के अतिरेक में कमी आ जाती है। यह कमी ही अप्रतिभूत क्षति कहलाती है क्योंकि इसका पूरी व्यवस्था से क्षरण हो जाता है। नीचे प्रस्तुत चित्र में अप्रतिभूत क्षति को समझाया गया है :
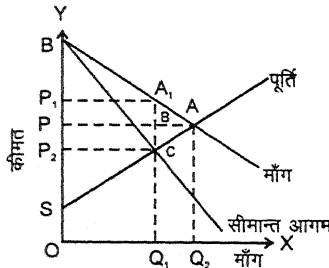
उपरोक्त चित्र में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में माँग तथा पूर्ति का प्रतिच्छेदन A बिन्दु पर ह़ोने के कारण OP कीमत पर OQ मात्रा क्रय की जाती है। इस स्थिति में उपभोक्ताओं को कुल $OBAQ_2$ के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है जबकि वे $OPAQ_2$ का कुल भुगतान करते हैं। इस प्रकार उपभोक्ता का कुल अतिरेक PBA हुआ। उत्पादकों को OQ_2 मात्रा बेचने पर कुल $OPAQ_2$ के बराबर आगम प्राप्त हुआ जबकि उनकी उत्पादन लागत $OSAQ_2$ रही। इस प्रकार उनका लाभ यानी अतिरेक SPA हुआ। कुला मिलाकर उपभोक्ताओं एवं उत्पादकों का संयुक्त अतिरेक PBA+SPA = SBA हुआ।

अब इसी बाज़ार में यदि एकाधिकार कायम हो जाए तो सीमांत आगम एवं पूर्ति यानी सीमान्त लागत का प्रतिच्छेदन C बिन्दु पर होने के कारण नई कीमत OP_1 एवं नई मात्रा OQ_1 हो जाती है। इस स्थिति में उपभोक्ता का अतिरेक P_1BA_1 हो गया जबकि उत्पादकों का अतिरेक SP_2C होगा। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि उपभोक्ता के अतिरेक में **क्षति** BA_1 A के समान होगी जबकि उत्पादकों के अतिरेक में यह कमी CBA के समान हुई। कुल अप्रतिभूत क्षति (जो व्यवस्था से पूर्णतया नष्ट हो गई) CA_1 A हो गई। इसका यह अर्थ हुआ *कि जितना हम बाज़ार को पूर्ण प्रतियोगिता से दूर ले जाएँगे, उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों के अतिरेक में कमी होगी तथा अप्रतिभूत क्षति अधिक होने से आर्थिक कल्याण में ह्रास होगा।*

Dear money (डीयर मनी) **मुद्रा का महंगा होना**

जब ब्याज़ की दरें काफी ऊँची होने पर ऋण लेना काफी खर्चीला हो जाता है तो यह मुद्रा के महँगी होने का सूचक है। मुद्रा का यह महँगापन किसी सीमा तक मुद्रा स्फीति की दर पर निर्भर करता है, क्योंकि स्फीति की दर से ब्याज़ की दर अधिक होने पर ही मुद्रा महँगी कहलाएगी।

Debentures (डिबेन्चर) **ऋण पत्र**

संयुक्त कम्पनियों या अन्य संस्थाओं द्वारा निर्गमित दीर्घकालीन प्रतिभूतियां, जिन पर निश्चित् ब्याज़ की राशि का भुगतान देय होता है। इन ऋण–पत्रों की परिपक्वता अवधि प्रायः 10 वर्ष से अधिक होती है। ऋण–पत्र के धारकों का कम्पनी के स्वामित्व में कोई अंश नहीं होता, लेकिन यदि निर्दिष्ट तिथि को ऋण पत्रों की मय ब्याज़ के अदायगी सुनिश्चित् न हो तो, वे अपनी राशि की वसूली हेतु न्यायालय से आदेश लेकर कम्पनी पर अधिकार कर सकते हैं। ऐसी दशा में कम्पनी के अंशधारियों से पूर्व उनको अपनी समूची राशि वसूल करने का अधिकार मिल जाएगा।

Debt burden (डैट बर्डन) **ऋण का भार**

ऋण की अदायगी की कुल लागत, जिसमें ऋण की मूल राशि की किश्त एवं ब्याज़ शामिल हैं। देश के आन्तरिक ऋण का शुद्ध भार प्रायः शून्य होता है क्योंकि नागरिकों के एक समूह को ब्याज़ तथा मूलधन का भुगतान किया जाता है तो अन्य दूसरे समूह को यह राशि प्राप्त होती है। लेकिन विदेशी ऋण की अदायगी वस्तुतः देश की जनता पर भार डालती है।

Debt crisis (डैट क्राइसिस) **ऋण-संकट**

जब बड़े–बड़े संस्थान अपने ऋणों (ब्याज़ सहित) का भुगतान करने में सक्षम न रहें, अथवा ऐसा करने से मना कर दें, तो ऋण–संकट उत्पन्न हो जाता है। ऐसा तब भी सम्भव है जब ऋण दाताओं को यह आशंका हो जाए, कि उनके द्वारा दिए गए ऋणों की अदायगी नहीं होगी।

Debt relief (डैट रिलीफ) **ऋण की अदायगी में राहत**

ऋणदाता कभी–कभी ऋणी व्यक्ति अथवा संस्था (फर्म आदि) को प्रदत्त ऋण का एक भाग माफ कर सकते हैं, अथवा ऋण की ब्याज़ सहित भुगतान को लम्बे समय के लिए स्थगित कर सकते हैं, अथवा अदायगी की किश्त की राशि को कम कर सकते हैं। इनमें से प्रत्येक उपाय ऋणी को राहत प्रदान करने वाला होता है।

Debt rescheduling (डैट रिशिड्यूलिंग) **ऋण का पुनर्सारणीकरण**

ऋण के अनुबन्ध में संशोधन करना, जिनके अनुसार किश्तों (तथा ब्याज़) के भुगतान की तिथियां आगे बढ़ा दी जाती हैं। यह व्यवस्था पिछड़े हुए देशों द्वारा लिए गए ऋणों के भुगतान हेतु अधिक प्रचलित है, क्योंकि वे निर्दिष्ट तिथि पर ऋण की किश्त चुकाने में प्रायः असमर्थ रहते हैं।

Debt servicing (डैट सर्विसिंग) **ऋण की अदायगी**

ऋण की मूल राशि की किश्त तथा ब्याज़ का भुगतान करना।

Debt service ratio (डैट सर्विस रेशियो) **ऋण अदायगी का अनुपात**

देश के कुल निर्यातों का वह अनुपात जो विदेशी ऋणों की किश्त तथा ब्याज़ के रूप में देय है। मान लीजिए, कुल निर्यातों से भारत को 30 बिलियन डालर प्राप्त होने हैं, तथा 6 बिलियन डालर का भुगतान विदेशी ऋणों की किश्त तथा ब्याज़ के रूप में चुकाने हैं, तो ऋण अदायगी का अनुपात 20 प्रतिशत होगा।

Decentralization (डीसेन्ट्रलाइज़ेशन) **विकेन्द्रीकरण**

निर्णय प्रक्रिया को एक व्यक्ति या एजेन्सी के पास केन्द्रित करने की अपेक्षा अनेक इकाइयों में बांट देना। सार्वजनिक क्षेत्र में सारे निर्णय देश या प्रांत की राजधानी में न लेकर, जिला अथवा ब्लॉक स्तर पर कुछ निर्णय लेने की छूट दी जाए, तो इसे विकेन्द्रीकरण कहा जाएगा। विकेन्द्रीकरण में नियोजन प्रक्रिया अथवा सत्ता का विकेन्द्रीकरण निहित होता है।

Decreasing balance depreciation
(डिक्रीज़िंग बेलेन्स डीप्रिसिएशन) **अवशिष्ट राशि पर मूल्य ह्रास**

सम्पत्ति के मूल्य ह्रास के प्रावधान हेतु पिछले वर्षों में किए गए प्रावधानों को घटाकर शेष पर वर्तमान वर्ष हेतु मूल्य ह्रास का प्रावधान करना। इस विधि के अनुसार उत्तरोत्तर प्रत्येक वर्ष में मूल्य ह्रास की राशि घटती जाएगी।

Decreasing returns (डिक्रीज़िग रिटर्न्स) **ह्रासमान प्रतिफल**

जैसे–जैसे किसी आदा या इन्पुट की मात्रा बढ़ती है, उत्पादन उससे कम अनुपात

में बढ़ता है, तो वह ह्रासमान प्रतिफल की प्रवृत्ति कहलाएगी।

Decreasing returns to scale
(डिक्रीज़िंग रिटर्न्स टू स्केल) **पैमाने के ह्रासमान प्रतिफल**
उत्पादन के सभी साधनों में एक ही अनुपात में वृद्धि होने पर यदि उत्पादन की वृद्धि उससे कम अनुपात में हो तो यह पैमाने के ह्रासमान प्रतिफल की स्थिति होगी।

Deficiency payment (डेफिसिएँसी पेमेंट) **आय को समर्थन**
जब समाज के गरीब व्यक्तियों को पूरक लाभ देने हेतु हस्तांतरण भुगतान किया जाए, तो वे अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार के तरीकों में बेरोज़गारी भत्ता, ऋणात्मक आय-कर आदि शामिल हैं।

Deficit (डेफीसिट) **घाटा**
बजट अथवा विदेशी सौदों में प्राप्तियों की राशि जब भुगतानों की राशि से कम हो तो इसे क्रमशः बजट घाटा/भुगतान संतुलन की ऋणात्मक स्थिति कहा जाता है। इसी प्रकार जब आयातों की राशि निर्यातों की राशि से अधिक हो तो इसे व्यापार का घाटा माना जाता है।

Deficit financing (डेफीसिट फाइनेन्सिंग) **घाटे की वित्त व्यवस्था**
जब कभी बजट घाटे को पाटने हेतु सरकार केन्द्रीय बैंक से ऋण लेती है तो यह घाटे की वित्त व्यवस्था कहलाती है।

Deflation (डीफ्लेशन) **मुद्रा संकुचन**
जब अनवरत रूप से सामान्य कीमत स्तर में कमी हो तो वह मुद्रा संकुचन की स्थिति कहलाती है। यह स्थिति सकल माँग में कमी के कारण उत्पन्न होती है। कीमत स्तर के साथ-साथ मुद्रा संकुचन की अवधि में रोज़गार का स्तर भी गिरने की प्रवृत्ति दर्शाता है।

Deflationary gap (डिफ्लेशनरी गैप) **संकुचनात्मक अन्तर**
आर्थिक क्रियाओं के सामान्य स्तर वाली प्रभावी माँग तथा किसी निर्दिष्ट समय में मुद्रा संकुचन के समय विद्यमान वास्तविक माँग का अन्तर। ऐसे समय में अप्रयुक्त साधन विद्यमान रहते हैं। इसके आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि सामान्य स्तर की माँग तक पहुंचने हेतु आर्थिक नीतियों में क्या परिवर्तन किया जाए।
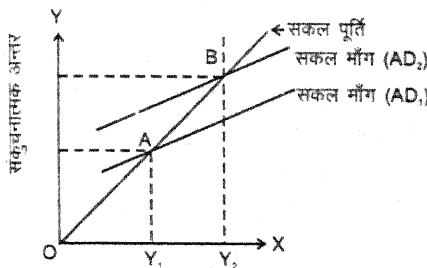
उपरोक्त चित्र में सकल पूर्ति वक्र 45° की रेखा है क्योंकि व्यवसायी लोग उतना ही उत्पादन करेंगे जिसकी उन्हें सकल माँग के अनुरूप अपेक्षा है। परन्तु एक बार अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय आय के पूर्ण रोज़गार वाले स्तर (OY_1) को प्राप्त कर लेती है, तो वास्तविक उत्पादन इसके आगे नहीं बढ़ पाएगा, और इसीलिए सकल पूर्ति वक्र शीर्ष रूप धारण कर लेता है। परन्तु जब तक सकल माँग का स्तर पूर्णरोज़गार के स्तर (B) से कम है तब तक अर्थव्यवस्था में संकुचनात्मक अन्तर विद्यमान रहता है।

De-industrialization (डी–इन्डस्ट्रियलाइज़ेशन) **औद्योगिक पराभव**

ऐसी स्थिति जिसमें राष्ट्रीय आय में उद्योगों का योगदान कम हो रहा है। इसके अन्तर्गत उद्योगों में संलग्न श्रमिकों का अनुपात भी कम होता है। 1979—1989 के बीच इंगलैंड में यह प्रवृत्ति पाई गई थी।

Demand (डीमान्ड) **माँग**

किसी वस्तु या सेवा को प्राप्त करने की इच्छा, जिसे पूरा करने हेतु उपभोक्ता के पास पर्याप्त साधन हैं, तथा वह उन साधनों को इच्छा-पूर्ति हेतु प्रयुक्त करने हेतु तत्पर भी है।

Demand curve (डीमान्ड कर्व) **माँग वक्र**

किसी सारणी का ऐसा रेखाचित्र जिसमें X अक्ष पर माँग की मात्रा, तथा Y अक्ष पर कीमत को प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य परिस्थिति में माँग वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है क्योंकि कीमत घटने पर उपभोक्ता अधिक इकाइयां खरीदना चाहता है।
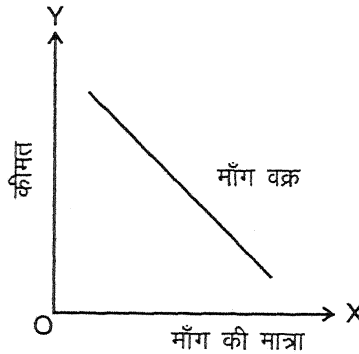
यह माँग वक्र सरल रेखा के रूप में अथवा वक्रीय रूप में भी हो सकता है। परन्तु यदि वस्तु एक गिफिन वस्तु हो तो माँग वक्र का ढलान धनात्मक होगा।

Demand determined output

(डीमान्ड डिटर्मिन्ड आउटपुट) **माँग निर्धारित-उत्पादन**

ऐसी स्थिति जिसमें उत्पादन में केवल प्रभावी माँग ही एक अवरोध है। ऐसा केवल गहन मंदी के दौरान होता है। प्रायः विशिष्ट प्रकार के कौशल या मशीनों की कमी

भी उत्पादन को नहीं बढ़ने देती, हालांकि अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में माँग की पर्याप्तता के कारण उत्पादन को भी पर्याप्त होता है।

Demand function (डिमान्ड फंक्शन) **माँग फलन**

माँग की मात्रा एवं इसे निर्धारित कने वाले चलों के सम्बन्ध को दर्शाने वाला गणितीय रूप।

$$D_x = f(P_x, P_y, M)$$

उक्त फलन में D_x माँग की मात्रा है, P_x वस्तु की कीमत है, P_y अन्य वस्तुओं की (औसत) कीमत है तथा M उपभोक्ता की आय का द्योतक है। माँग फलन के अन्तर्गत यह मान्यता ली जाती है कि जब कभी स्वतंत्र चरों में से किसी एक चर में परिवर्तन होता है तो आश्रित चर (D_x) में भी परिवर्तन होगा।

Demand pull inflation (डीमान्ड पुल इन्फ्लेशन) **माँग-प्रेरित मुद्रा स्फीति**

किसी अर्थव्यवस्था में एक लम्बी अवधि तक यदि सकल पूर्ति की तुलना में सकल माँग अधिक रहे तो कीमत स्तर बढ़ता है। चूंकि पूर्ति की बढ़ने की क्षमता पूर्ण रोज़गार के स्तर से अधिक नहीं होती, माँग के आधिक्य के कारण मुद्रा स्फीति होना स्वाभाविक है। माँग की इस वर्द्धमान प्रवृति का एक कारण मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि भी होता है।

Demand theory (डीमान्ड थ्योरी) **माँग का सिद्धान्त**

अर्थशास्त्र का वह सिद्धान्त जो वस्तुओं तथा सेवाओं की बाज़ार माँग के निर्धारक घटकों, तथा इस बाज़ार माँग के फलस्वरूप कीमतों पर होने वाले प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

De-merger (डीमर्जर) **कम्पनी का विघटन**

विलय के माध्यम से स्थापित किसी कम्पनी का पृथक्करण होना। यदि दोनों एकीकृत कम्पनियां प्रारम्भ से ही अलग–अलग इकाइयों के रूप में कार्य कर रही हों तो विलय के बाद भी इन दोनों के पृथक् होने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

Demographic transition (डेमोग्राफिक ट्रांज़ीशन) **जनांकीय संक्रमण**

जनसंख्या से सम्बद्ध चक्र, जिसका देश के आर्थिक विकास से सीधा सम्बन्ध होता है। अल्पविकसित देशों के विकास के प्रारम्भिक चरण में जन्म व मृत्यु दरें काफी ऊँची होने के कारण जनसंख्या की वृद्धि दर या तो शून्य होती है, या बहुत कम होती है। आर्थिक विकास प्रारम्भ होने के साथ–साथ जहां स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के साथ–साथ मृत्यु दर में तीव्रता से कमी होती है, वहीं जन्म दर का स्तर ऊँचा बना रहता है। इसके परिणाम स्वरूप जनसंख्या में विस्फोटक रूप से वृद्धि होती है। जब आर्थिक विकास अपने उच्चतम स्तर पर होता है तब तक लोगों में उच्चजीवन स्तर बनाए रखने की उत्कट इच्छा के कारण छोटे परिवार रखने की प्रवृत्ति काफी अधिक हो जाती है, तथा इस कारण जन्म दर भी काफी कम हो जाती

है। साथ ही मृत्युदर का स्तर निम्न स्तर होने के कारण जनसंख्या या तो बहुत ध
ीमी गति से बढ़ती है, अथवा लगभग स्थिर हो जाती है।
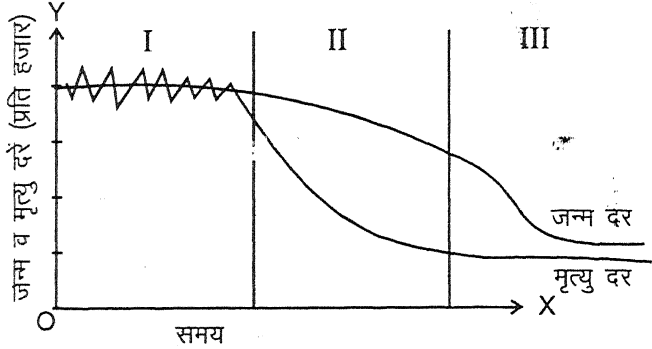
जनांकीय संक्रमण प्रायः द्वितीय चरण की ओर इंगित करता है जिसमें जनसंख्या की वृद्धि विस्फोटक गति से बढ़ती है। अत्यंत पिछड़े हुए (जैसे अफ्रीका महाद्वीप) देश प्रथम चरण में रहते हैं जहां जनसंख्या लगभग स्थिर रहती है। इसके विपरीत विकसित देशों, जैसे सं.रा. अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान व यूरोप के देशों में जन्म व मृत्यु दरें बहुत कम रहने के कारण जनसंख्या या तो स्थिर रहती है या बहुत धीमी गति से बढ़ती है। परन्तु जिन देशों में विकास कुछ दशकों पूर्व प्रारम्भ हुआ है–इंडोनेशिया, भारत, नेपाल, बांग्लादेश, मध्य एशिया के देश आदि-वहां जनसंख्या विस्फोटक गति से बढ़ती है (द्वितीय चरण)।

Demography (डेमोग्राफी) **जनांकीय शास्त्र**

मानवीय जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं–आकार, परिवर्तन की दर, जन्म व मृत्यु दरों, प्रजनन दर, आयुवर्ग, लिंगानुसार वितरण, भौगोलिक एवं व्यावसायिक वितरण आदि का अध्ययन।

Dependency ratio (डीपेन्डेन्सी रेशियो) **निर्भरता अनुपात**

कुल जनसंख्या का वह भाग जो स्वाभाविक रूप से आय अर्जित नहीं करता। शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक एवं किशोर (15 वर्ष तक के बालक व बालिकाएँ) तथा वृद्ध व्यक्ति (60 वर्ष से ऊपर वाले) उस वर्ग में आते हैं, जो स्वाभाविक रूप से शेष व्यक्तियों (16 से 60 वर्ष के लोगों) पर निर्भर करते हैं। इन लोगों का कुल जनसंख्या में अनुपात अधिक होने पर आर्थिक दृष्टि से निर्भर लोगों का अनुपात ऊँचा माना जाता है।

Dependent variable (डीपेन्डेंट वेरीएबल) **आश्रित चर**

एक ऐसा चर जो किसी अन्य चर में होने वाले परिवर्तन से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की माँग में परिवर्तन हेतु उसकी कीमत, अन्य वस्तुओं की कीमतों अथवा उपभोक्ता की आय में होने वाला परिवर्तन एक कारण बन जाता है, और इस प्रकार माँग एक आश्रित चर है।

Depletable resources (डिप्लीटेबल रिसोर्सेज़) **क्षरणीय साधन**

ऐसे साधन जिनका उपयोग एक बार ही किया जा सकता है, और इस कारण उनके भंडार में कमी होती जाती है। कोयला, प्राकृतिक गैस, खनिज तेल, लोहा आदि क्षरणीय साधन हैं। इनके विपरीत सौर ताप एक ऐसा साधन है जिसका नवीनीकरण होने से बार–बार ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है, और फिर भी सौर ताप में कमी नहीं होती।

Deposit account (डिपोज़िट एकाउंट) **निक्षेप या जमा खाता**

किसी व्यावसायिक बैंक में व्यक्ति या फर्म के नाम से जमा राशि। यह खाता चालू खाते, बचत खाते अथवा सावधि खाते के रूप में हो सकता है।

Depreciation (डिप्रीसिएशन) **मूल्य ह्रास**

किसी सम्पत्ति का अनवरत उपयोग करने से उसके मूल्य में प्रायः कमी होती जाती है। मूल्य का यह ह्रास सम्पत्ति के प्रारम्भिक मूल्य एवं उसके जीवन काल पर निर्भर करता है। यदि 2 करोड़ रुपए की कोई मशीन 20 वर्ष तक उपयोगी रहती है तो सरल रूप में इसका वार्षिक मूल्य ह्रास 10 लाख रुपए होगा। एक फर्म द्वारा प्रायः लाभ का आकलन करने से पूर्व मूल्य ह्रास की राशि का प्रावधान किया जाता है, ताकि 20 वर्ष बाद सुविधापूर्वक नई मशीन खरीदी जा सके।

Depression (डिप्रेशन) **मंदी**

व्यापार चक्र का वह चरण, जिसमें आर्थिक क्रियाओं का स्तर अत्यंत निम्न हो जाता है। वास्तविक उत्पादन तथा निवेश के स्तर बहुत कम होने के कारण रोज़गार का स्तर भी बहुत कम होता है। कुल मिलाकर मंदी के दौरान सकल माँग का स्तर बहुत नीचा रहता है।

Deregulation (डीरेगूलेशन) **अनियंत्रण**

आर्थिक क्रियाओं पर सरकारी नियंत्रण को समाप्त करना। ये नियंत्रण जब अनुपयोगी तथा अनावश्यक हो जाते हैं तो इन्हें हटाना उपयुक्त समझा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी समय मुद्रा स्फीति के दौरान कीमत नियंत्रण की नीति लागू की गई थी और आज कीमत स्तर में वृद्धि नाम मात्र को रह गई हो तो कीमत नियंत्रण को समाप्त करना उपयोगी हो सकता है।

Derived demand (डीराइव्ड डिमान्ड) **व्युत्पन्न माँग**

किसी साधन या वस्तु की माँग जिसका निरूपण अन्तिम वस्तु की माँग तथा अन्य किसी सहायक साधन की पूर्ति के आधार पर किया जाता है। यह निरूपण माँग की परोक्ष व्युत्पत्ति है। उदाहरण के लिए, एक चाकू की माँग तथा ब्लेड की पूर्ति के आधार पर चाकू के हैंडिल की व्युत्पन्न माँग निरूपित की जा सकती है।

इसी प्रकार किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त श्रम की माँग भी व्युत्पन्न माँग कहलाएगी। चाय के प्यालों की माँग को चाय की माँग के आधार पर अथवा पैट्रोल की माँग को वाहनों की माँग के आधार पर निरूपित किया जा सकता है।

Devaluation (डीवेल्युएशन) **मुद्रा का अवमूल्यन**

किसी अन्य मुद्रा की तुलना में जब कोई देश अपनी मुद्रा का अधिकृत मूल्य कम कर दे तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। मान लीजिए, अब तक एक डालर का अधिकृत मूल्य भारत में 40 रुपए था और रिज़र्व बैंक ऑफ इन्डिया अचानक इसे 50 रुपए कर दे तो इसका यह अर्थ हुआ कि भारतीय रुपया डालर के मुकाबले में सस्ता या डालर अब भारतीय रुपए के मुकाबले में महंगा हो गया है।

मुद्रा के अवमूल्यन का प्रयोजन भारतीय निर्यातकों को प्रोत्साहन देना, तथा आयात करने वालों को हतोत्साहित करना है क्योंकि निर्यातों के बदले उनकी (रुपए में) आय बढ़ती है, जबकि आयात महंगे होने के कारण उनकी माँग में कमी होती है। प्रायः जब कोई देश व्यापार संतुलन के व्यापक घाटे के दौर से गुज़रता है तो प्रायः ऐसी आशा की जाती है कि अवमूल्यन से यह घाटा समाप्त हो जाएगा।

Developed country (डेवलप्ड कंट्री) **विकसित देश**

आर्थिक दृष्टि से अग्रणी देश जहां औद्योगिक तथा सेवा क्षेत्र काफी विकसित होते हैं, तथा प्रति व्यक्ति आय का स्तर काफी ऊँचा होता है। यूरोप के सभी देश, कनाडा, सं. रा. अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया आदि देशों की गणना विकसित देशों में की जाती है।

Developing country (डेवलपिंग कन्ट्री) **विकासशील देश**

ऐसा देश जहां उद्योग व सेवा क्षेत्र अधिक विकसित नहीं हैं, सकल राष्ट्रीय उत्पाद में इनका योगदान बहुत कम हो, तथा प्रति व्यक्ति आय का स्तर काफी नीचा हो, विकासशील देश, अर्द्धविकसित देश अथवा विकासोन्मुख देश कहलाता है। इन देशों में आय का स्तर कम होने के कारण बचत व निवेश के स्तर भी नीचे होते हैं, तथा बेरोज़गारी व गरीबी चारों ओर व्याप्त रहती है। शिक्षा तथा स्वास्थ्य के स्तर भी इन देशों में काफी नीचे रहते हैं।

Development economics (डेवलपमेंट इकॉनोमिक्स) **विकास का अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र का वह व्यावहारिक रूप, जो अल्पविकसित या विकासशील देशों की समस्याओं, आर्थिक संवृद्धि की दर, तथा संस्थागत, संरचनात्मक एवं विकास के सामाजिक पक्षों को प्रस्तुत करता है। इस विवरण में राष्ट्रीय आय, जनसंख्या, उद्योग, कृषि, बचत, निवेश आदि भी निहित होते हैं। इन सबके अतिरिक्त विकास के अर्थशास्त्र में यह भी बतलाया जाता है कि देश के दीर्घकालीन विकास हेतु क्या उपाय किए जाने चाहिए।

Differentiated product (डिफ्रेन्सिएटेड प्रोडक्ट) **विभेदीकृत वस्तु**

बाज़ार की वह स्थिति जिसमें विक्रेता वस्तुओं में ट्रेडमार्क, डिजाइन, रंग, पैकिंग या अन्य किसी विधि द्वारा विभेद उत्पन्न कर देते हैं। जब बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता होती है तो सभी विक्रेता समरूपी वस्तुएँ बेचते हैं। परन्तु विभेदीकृत वस्तुओं के संदर्भ में क्रेताओं को ट्रेडमार्क, डिजाइन, रंग, पैकिंग के आधार पर यह सुनिश्चित् करना

होता है कि किस विक्रेता से वस्तु खरीदी जाए। इसके विपरीत जब बाज़ार में सभी विक्रेता समरूपी वस्तुएँ बेचते हैं तो क्रेता कहीं से भी वस्तु खरीद सकता है।

Diminishing average returns

(डिमिनिशिंग एवरेज़ रिटर्न्स) **ह्रासमान औसत प्रतिफल**

उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए किसी एक साधन को बढ़ाने पर जब औसत उत्पादन घटता हो तो वह ह्रासमान औसत प्रतिफल की स्थिति कहलाती है। इस स्थिति को ह्रासमान औसत उत्पादन (Diminishing average product) भी कहा जाता है।

Diminishing marginal rate of substitution

(डिमिनिशिंग मार्जिनल रेट ऑफ सब्स्टीट्यूशन)

ह्रासमान सीमान्त प्रतिस्थापन दर

सीमान्त प्रतिस्थापन दर से हमें दो साधनों की प्रतिस्थापन दर का बोध होता है। वस्तुतः यह दर दोनों साधनों की सीमान्त उत्पादकता का अनुपात है :

$$\frac{\Delta K}{\Delta L} = \frac{MP_L}{MP_K}$$

यदि उत्पादन के दो साधन क्रमशः श्रम व पूँजी हों तो $\frac{\Delta K}{\Delta L}$ यह बतलाती है कि श्रम की एक इकाई बढ़ाने (ΔL) पर पूँजी की इकाई में कितनी कमी (ΔK) की जाएगी। उत्पादन ह्रास नियम के अनुसार जैसे–जैसे श्रम की मात्रा में वृद्धि होती है, वैसे–वैसे इसके सीमान्त उत्पादन में कमी होती है, अर्थात् श्रम की अतिरिक्त इकाई के बदले पूँजी की उत्तरोत्तर कम इकाइयों का परित्याग किया जाएगा। अस्तु, $\frac{\Delta K}{\Delta L}$ या $\frac{MP_L}{MP_K}$ में कमी होती जाएगी।

Diminishing marginal returns

(डिमिनिशिंग मार्जिनल रिटर्न्स) **ह्रासमान सीमान्त प्रतिफल**

उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए यदि एक साधन को बढ़ाया जाए, तथा उस संदर्भ में कुल उत्पादन घटती हुई दर पर बढे तो यह ह्रासमान सीमान्त प्रतिफल की स्थिति मानी जाती है। यह ह्रासमान सीमान्त उत्पादन (diminishing marginal product) की स्थिति भी कहलाती है।
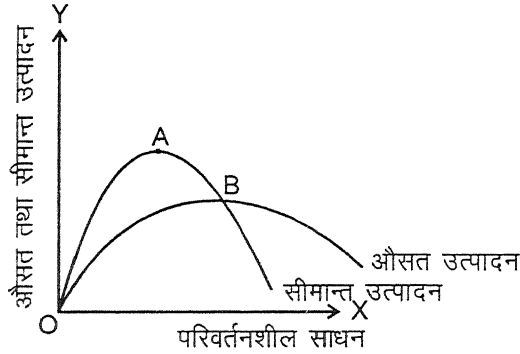
ऊपर दिए रेखाचित्र से यह स्पष्ट है कि जब औसत उत्पादन में वृद्धि होती है तब सीमान्त उत्पादन इससे अधिक होता है। परन्तु जब औसत उत्पादन ह्रासमान होता है तो सीमान्त उत्पादन इससे कम होता है, हालांकि सीमान्त उत्पादन की ह्रासमान प्रवृत्ति इससे पूर्व ही (A बिन्दु) से प्रारम्भ हो जाती है। इसे उत्पादन ह्रास नियम (Law of diminishing returns) भी कहा जाता है।

Diminishing marginal utility

(डिमिनिशिंग मार्जीनल यूटिलिटी) **ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता**

किसी वस्तु की सीमान्त उपयोगिता उसकी निर्दिष्ट अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली अतिरिक्त संतुष्टि या उपयोगिता को व्यक्त करती है। वस्तुतः उपभोक्ता की इच्छा की तीव्रता पर यह संतुष्टि निर्भर करती है। परन्तु जैसे–जैसे वस्तु का उपभोग बढ़ता है, इच्छा की तीव्रता में कमी होती है, और फलस्वरूप सीमान्त उपयोगिता में भी कमी होती जाती है। इसी को सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (Law of diminishing marginal utility) कहा जाता है।

Direct cost (डायरेक्ट कॉस्ट) **प्रत्यक्ष लागत**

किसी उत्पादन हेतु सामग्री एवं श्रम पर व्यय की गई प्रत्यक्ष राशि। यह परिवर्तनशील लागत (Variable cost) भी कहलाती है, तथा उत्पादन की मात्रा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई रहती है।

Direct float (डायरेक्ट फ्लोट) **प्रत्यक्ष हस्तक्षेप**

परिवर्तनशील विनिमय दरों के संदर्भ में मौद्रिक अधिकारियों द्वारा हस्तक्षेप। जब विनिमय दरों का निर्धारण बाज़ार में विदेशी मुद्रा की माँग व पूर्ति के आधार पर होता है, और माँग या पूर्ति में उतार–चढ़ाव के कारण विनिमय दर में भी उतार–चढ़ाव होता है तो मौद्रिक अधिकारी कभी–कभी विदेशी मुद्रा की माँग या पूर्ति को बढ़ाकर इसमें अत्यधिक कमी या वृद्धि नहीं होने देते।

Direct labour (डायरेक्ट लेबर) **प्रत्यक्ष श्रम**

(अ) श्रम का वह भाग जो वस्तु के उत्पादन में संलग्न है। (ब) स्थानीय निकायों,

राज्य सरकारों तथा केन्द्र सरकार के विभागों व निगमों में कार्यरत कर्मचारी ये दोनों प्रकार के श्रमिक प्रत्यक्ष श्रम की परिभाषा में शामिल हैं।

Direct tax (डायरेक्ट टैक्स) **प्रत्यक्ष कर**

सरकार द्वारा रोपित वह कर जिसे करदाता किसी अन्य व्यक्ति पर हस्तांतरित नहीं कर सकता और इसलिए वही उसका अंतिम भार वहन करता है। इसके विपरीत परोक्ष कर की वसूली उद्योगपति या व्यापारी से की जाती है परन्तु वह इसे पूर्ण या आंशिक रूप में उपभोक्ता पर अन्तरित कर देता है।

प्रत्यक्ष करों की श्रेणी में आयकर, निगम कर, व्यावसायिक कर, संपत्ति कर आदि को शामिल किया जा सकता है।

Discomfort index (डिस्कम्फर्ट इन्डैक्स) **आर्थिक समस्याओं का सूचकांक**

अमेरिका के एक अर्थशास्त्री ओकून ने वार्षिक मुद्रा स्फीति दर तथा बेरोज़गारी दर के आधार पर इस प्रकार के सूचकांक का प्रतिपादन किया। उनकी मान्यता यह थी कि दोनों समस्याओं में एक रैखिक सम्बन्ध है, तथा दोनों का भार समान है। परन्तु ओकून की इस मान्यता को बहुत से अर्थशास्त्री अनुपयुक्त मानते हैं।

Discount (डिस्काउंट) **बट्टा या कटौती**

इस शब्द के अलग–अलग संदर्भों में अलग–अलग अर्थ हैं :

(i) किसी वस्तु की सूची में वर्णित कीमत में कमी,
(ii) नए अंशों को कम कीमत पर बेचना,
(iii) पुराने अंशों को बाज़ार कीमत से कम पर बेचना,
(iv) किसी विनिमय बिल या प्रतिभूति को उसके अंकित मूल्य से कम पर खरीदना,
(v) किसी निवेश से भविष्य में प्राप्त होने वाली शुद्ध आय का वर्तमान मूल्य ज्ञात करना। इसे बट्टाकरण भी कहते हैं।

Discount rate (डिस्काउंट रेट) **बट्टा दर**

जब कोई अर्थशास्त्री या वित्त–विशेषज्ञ आगामी किसी वर्ष में किसी परियोजना से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय का वर्तमान मूल्य ज्ञात करना चाहता है तो वह भावी आय को बट्टा दर के आधार पर कम करता है।

$$PV = \sum \frac{B_i}{(i + r)^i} \qquad (i = 1, 2, 3, ----, n)$$

यहां PV शुद्ध आय का कुल वर्तमान मूल्य है, B_i किसी निर्दिष्ट (i^{th}) वर्ष में प्राप्त होने वाली शुद्ध आय है, तथा r बट्टा दर है। यह बट्टा दर अधिक होगी या कम, यह इस बात पर निर्भर करता है कि अर्थशास्त्री भविष्य के बारे में कितना आश्वस्त है। इस सूत्र में n उस परियोजना का जीवन काल (वर्षों में) है। स्पष्ट है कि यदि r (बट्टा दर) बहुत अधिक है, तो अर्थशास्त्री भविष्य को काफी जोखिमपूर्ण व अनिश्चित

मानता है। ऐसी दशा में शुद्ध आय का वर्तमान मूल्य (PV) काफी कम होगा।

Discrete distribution (डिस्क्रीट डिस्ट्रीब्यूशन) **समंकों का खंडित बंटन**

किसी चल के खंडित मूल्य। जैसे x के मूल्य 3, 7, 12, 51 आदि होने पर यह इसका खंडित बंटन माना जाएगा। इन चलों में एक निश्चित अन्तर होता है। इसके विपरीत अखंडित चल में 0–5, 6–10, 11–15 आदि के अन्तर्गत आवृत्तियों का बंटन किया जा सकता है। अस्तु,

आयु वर्ग (वर्ष)	आवृत्ति
0–5	6
6–10	7
11–15	5
16–20	2
आवृत्तियों का योग	20

इसके विपरीत यदि उपरोक्त 20 इकाइयों में से प्रत्येक का आयु के अनुसार बंटन किया जाए तो यह खंडित बंटन कहलाएगा।

Discretionary competition policy

(डिस्क्रीशनरी कंपीटीशन पॉलिसी) **ऐच्छिक प्रतियोगिता की नीति**

बाज़ार की संरचना एवं व्यवहार को नियंत्रित करने हेतु जब विलय, वर्जित व्यापार नीतियों आदि की प्रत्येक सम्बद्ध फर्म के बारे जांच की जाए तो उसका प्रयोजन यह देखना होता है कि इस प्रकार की नीतियों का किस सीमा तक प्रतिकूल प्रभाव हो सकता है।

Discriminating monopoly

(डिस्क्रिमिनेटिंग मोनोपोलिस्ट) **एकाधिकारी द्वारा भेदभाव करना**

कभी–कभी एक एकधिकारी द्वारा भेदभाव करना। कभी–कभी एक एकाधिकार प्राप्त विक्रेता अलग–अलग क्रेताओं से उसी वस्तु की अलग–अलग कीमतें लेता है या एक ही क्रेता से परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग कीमत वसूल करता है (खुदरा या थोक कीमतें या सीज़न के आधार पर) तो यह नीति भेदभाव की नीति कहलाती है। प्रायः माँग की लोच में भिन्नता होने के कारण कीमत विभेद की नीति अपनाई जाती है। फिर भी एकाधिकारी अपना कुल लाभ अधिकतम करना चाहेगा।
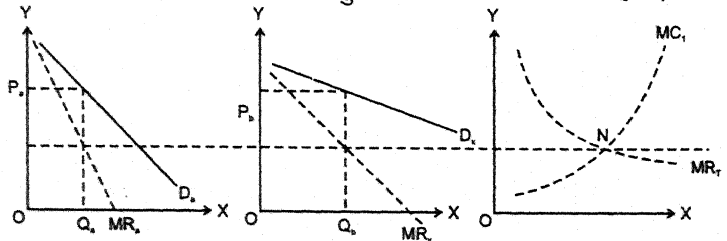
चित्र में एकाधिकारी की सीमान्त लागत MC_T तथा सकल सीमान्त आगम (MR_T) का प्रतिच्छेदन N बिन्दु पर होता है। इस MR=MC के स्तर के अनुरूप प्रथम बाज़ार में OP_a कीमत पर OQ_a मात्रा बेची जाएगी जबकि द्वितीय बाज़ार में OP_b कीमत पर OQ_b मात्रा बेची जाएगी। $OP_a > OP_b$ का कारण यह है कि प्रथम बाज़ार में माँग अपेक्षाकृत बेलोच है।

Discriminatory tariff (डिस्क्रिमिनेटरी टैरिफ) **विभेदात्मक आयातकर**

एक ही वस्तु का आयात जब अलग–अलग देशों से होने पर यदि उन पर आयातकर की दरें अलग–अलग हों तो यह विभेदात्मक आयात कर की नीति कहलाती है।

Diseconomies of scale (डिसइकॉनोमीज़ ऑफ स्केल) **पैमाने की अ-मितव्ययताएँ; पैमाने की अ-बचतें**

जब किसी फर्म का विस्तार होता चला जाए तो एक सीमा तक पैमाने की मितव्ययताओं के कारण इसकी दीर्घकालीन औसत उत्पादन लागत में कमी होती है। परन्तु एक सीमा के पश्चात् फर्म के प्रबन्धकों के लिए सभी विभागों के बीच नियंत्रण एवं समन्वय बनाए रखना कठिन हो जाता है, तथा इससे उत्पन्न अमितव्ययताओं के कारण दीर्घकालीन औसत उत्पादन लागत में वृद्धि होने लगती है।

ये अमितव्ययताएँ आन्तरिक (नियंत्रण व प्रशासन सम्बन्धी) तथा बाह्य (प्रदूषण तथा ट्रैफिक अवरोध आदि) दोनों प्रकार की हो सकती है, परन्तु दोनों ही कारणों से दीर्घकालीन औसत लागत में वृद्धि होती है।

Disequilibrium (डिस्इक्वीलिब्रियम) **असंतुलन; साम्य विहीनता की स्थिति**

साम्य का सामान्य अर्थ है दो विपरीत चरों में संतुलन होना। उदाहरण के लिए, जब माँग व पूर्ति, कीमत तथा सीमान्त उपयोगिता तथा आयात व निर्यात में समानता होती है तो उसे साम्य स्थिति कहा जाता है। परन्तु यदि जब ये विपरीत दशा में चलने वाले चर समान नहीं हों तो यह साम्य विहीनता या असन्तुलन की स्थिति कहलाती है।
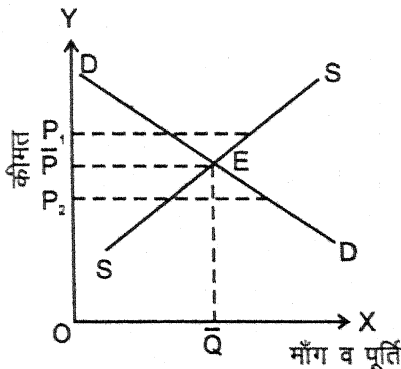
चित्र में E को साम्य स्थिति कहा जाता है जहां $O\bar{P}$ कीमत पर माँग तथा पूर्ति में साम्य है। परन्तु OP_2 कीमत पर माँग की मात्रा पूर्ति से अधिक है जबकि OP_1 पर पूर्ति की मात्रा माँग से अधिक है। ये दोनों ही वैकल्पिक स्थितियां असन्तुलन को प्रस्तुत करती हैं।

Disguised (concealed) unemployment

[डिस्गाइज़्ड (कन्सील्ड) अनएम्प्लायमेंट] **प्रच्छन्न या छुपी हुई बेरोज़गारी**

यह बेरोज़गारी की वह श्रेणी है जो प्रगट रूप में दिखाई नहीं देती, लेकिन श्रमिकों के सम्बद्ध वर्ग का उत्पादन या आय के सृजन में कोई योगदान नहीं होता। उदाहरण के लिए, एक दो हैक्टर के खेत में छह व्यक्ति कार्यरत है तथा 60 क्विंटल गेहूँ का उत्पादन हो रहा हैं। यदि दो व्यक्तियों को हटा देने पर भी उत्पादन वही रहे, यानी इनकी सीमांत उत्पादकता शून्य हो, तो इन दो व्यक्तियों को छुपे हुए बेरोज़गार कहा जाएगा।

Disincentives (डिसइन्सेन्टिव) **हतोत्साहन; दबाव**

ऐसी आर्थिक प्रक्रिया जिससे कार्य करने, निवेश करने या बचत करने की भावना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यदि करों की सीमान्त दरें काफी बढ़ा दी जाएँ तो इससे कार्य करने, या व्यवसाय में पूँजी का अधिक निवेश करने की भावना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार निक्षेपों पर ब्याज़ की दर घटाने से बचतें हतोत्साहित होती हैं।

Disinflation (डिसइंफ्लेशन) **अवस्फीति**

सामान्य कीमत स्तर में कमी, जो प्रायः राष्ट्रीय आय में ह्रास के साथ–साथ चलती है। जब मौद्रिक अधिकारी मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने हेतु कोई कार्यवाही करते हैं, और इसके फलस्वरूप जब कीमत स्तर में कमी होती है तो इसे अवस्फीति कहा जाता है।

Disintermediation (डिसइंटरमीडिएशन) **बिचौलियों की समाप्ति**

वित्तीय क्षेत्र में बिचौलियों को समाप्त करने हेतु पूँजी की आपूर्ति करने वालों तथा निवेश करने वालों के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित करना। उदाहरण के लिए, बचत करने वाले लोग बैंकों में जमा न करके सीधे व्यावसायिक संस्थानों को पूँजी प्रदान करके मध्यस्थों को समाप्त कर सकते हैं।

Disinvestment (डिस्इन्वेस्टमेंट) **अनिवेश**

(i) किसी सार्वजनिक कम्पनी के अंश, आंशिक या पूर्णरूप में किसी निजी कम्पनी को बेचना।

(ii) किसी निजी कम्पनी की मशीनों को नष्ट करके उसकी पूँजी स्टॉक में कमी करना।

(iii) किसी निजी कम्पनी द्वारा स्वयं ही अपने कुछ अंश खरीद लेना।

परन्तु प्रायः इन तरीकों से देश में विद्यमान कुल पूँजी का स्टॉक कम नहीं होता।

Dispersion (डिस्पर्शन) **अपकिरण; विचलन**

यदि किसी चल का एक मूल्य पर संकेन्द्रण न होकर फैलाव दिखाई दे तो इस फैलाव का माप अपकिरण के रूप में लिया जाता है। इसका सबसे सरल माप तो इसके उच्चतम तथा न्यूनतम मूल्यों के अन्तर को देखना है। यह अन्तर रेन्ज अथवा विस्तार कहलाती है। अपकिरण के लिए सबसे अधिक विश्वसनीय माप प्रमाप विचलन है। इसके लिए निम्न सूत्र प्रयुक्त किया जाता है :

$$\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

यहां σ तो प्रमाप विचलन का सूचक है जबकि Σd^2 समान्तर माध्य से विभिन्न मदों के विचलन के वर्गों का योग है। N मदों की कुल संख्या है। उक्त सूत्र को निम्न रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है :

$$\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}} = \sqrt{\frac{\Sigma(X - \overline{X})^2}{N}}$$

इस संशोधित सूत्र में X तो निर्दिष्ट मद का मूल्य है जबकि $\overline{X}$ समान्तर माध्य (arithmatic mean) है।

Disposable income (डिस्पोजेबल इन्कम) **प्रयोज्य व्यय**

परिवारों की वह आय जो उनके पास प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत कर चुकाने ाद शेष रहती है। इस आय को वे उपभोग तथा बचत के रूप में प्रयुक्त कर सकते हैं।

Dissaving (डिस्सेविंग) **सम्पत्तियों का क्षरण**

जब कोई परिवार अपनी आय से अधिक व्यय करता है तो उसकी सम्पत्ति का क्षरण प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रक्रिया में पहले तो बैंक जमाओं में से मुद्रा ली जाती है, और फिर वह सम्पत्ति को बेचना प्रारम्भ कर देता है या ऋण लेना शुरू कर देता है। परन्तु जिनके पास कोई सम्पत्ति नहीं है उनके लिए ऋण लेना सम्भव नहीं है।

Distorted prices (डिस्टॉर्टेड प्राइसेज़) **विकृत कीमतें**

वस्तुओं व सेवाओं की ऐसी कीमतें जो उनकी सही–सही सामाजिक कीमतों को व्यक्त नहीं कर पातीं। एकाधिकारी प्रायः औसत लागत से अधिक मूल्य लेता है।

Distribution (डिस्ट्रीब्यूशन) **वितरण; आवृत्ति**

(1) कुल आय का समाज के अलग–अलग वर्गों द्वारा प्राप्त भाग। उदाहरण के लिए, श्रमिकों को मजदूरी, भू–स्वामियों को लगान, पूँजीपतियों को ब्याज़ तथा उद्यमियों को लाभ, ये सब आय वितरण के उदाहरण हैं। (2) वितरण का एक अर्थ वस्तु के कुल उत्पादन को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने हेतु थोक व खुदरा व्यापारियों तक पहुँचाना भी है। (3) सांख्यिकीय दृष्टि से वितरण का अर्थ समंकों की आवृत्तियों से है।

Distribution costs (डिस्ट्रीब्यूशन कॉस्ट्स) **वितरण लागतें**

विभिन्न वस्तुओं के भौतिक वितरण में निहित लागतें। इनमें इनकी पैकिंग, ढुलाई, परिवहन, भंडारण आदि के व्यय शामिल हैं।

Distributive efficiency (डिस्ट्रीब्यूटिव एफीशिएन्सी) **वितरण सम्बन्धी दक्षता**

बाज़ार का वह निष्पादन, जो किसी वस्तु की ढुलाई, परिवहन, भंडारण, विज्ञापन आदि की लागतों के स्तर को प्रदर्शित करता है। जितनी ये लागतें कम हैं उतनी ही वितरण सम्बन्धी दक्षता अधिक मानी जाएगी।

Disutility (डिस्यूटीलिटी) **अनुपयोगिता**

कोई भी उपभोक्ता यदि वस्तु की किसी इकाई का उपभोग करने पर कष्ट की अनुभूति करता है तो उसे अनुपयोगिता कहते हैं। इस दृष्टि से अनुपयोगिता का अर्थ है– ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त करना।

Diversification (डाइवर्सिफिकेशन) **विविधीकरण**

ऐसी प्रक्रिया, जिसके अन्तर्गत एक फर्म अनेक प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करके उन्हें विभिन्न बाज़ारों में बेचती है। यह उल्लेखनीय है कि ये वस्तुएँ एक दूसरी से सम्बद्ध नहीं होती। प्रायः अल्पाधिकार प्राप्त बड़ी फर्में ही विविधीकरण में संलग्न होती हैं।

किसी फर्म के दृष्टिकोण से विविधीकरण इसलिए लाभप्रद है क्योंकि इससे *उत्पादन तथा विपणन की जोखिम अनेक उत्पादों में बंट जाती है।* यही नहीं, एक वस्तु में विशिष्टीकरण करने पर उसके बाज़ार में उच्चावचन होने पर फर्म को भारी क्षति का सामना करना पड़ सकता है।

परन्तु साथ ही उत्पादों में जितनी विविधता होगी, विशाल आकार होने पर भी उपलब्ध साधनों का इष्टतम उपयोग नहीं हो पाता। यही नहीं प्रत्येक उत्पाद के लिए प्रायः कुशल प्रबन्ध नहीं मिलने से उत्पादन लागत भी अधिक होती है।

Divestment (डाइवेस्टमेंट)

किसी फर्म द्वारा अपनी एक या अधिक इकाई को बन्द करना या बेच देना प्रायः इसलिए उस इकाई को बन्द करना या बेच देना उपयुक्त माना जाता है क्योंकि स्वतंत्र रूप से वह बेची गई इकाई लाभप्रद हो सकती है। कभी-कभी सरकार की एकाधिकार विरोधी नीति से बचने के लिए भी ऐसा किया जा सकता है।

Dividend (डिविडेंड) **लाभांश**

किसी संयुक्त कम्पनी द्वारा अपने अंशधारियों को कम्पनी के लाभ का वितरण। कम्पनी का संचालक मंडल साधारण अंशधारियों को साधारण अंश के अंकित मूल्य के अनुपात के रूप में लाभांश वितरित करने हेतु निर्णय लेता है, तथा साधारण सभा की बैठक में इसकी घोषणा की जाती है। लाभांश का निर्णय कुल लाभ में से करों की राशि घटाने के बाद ही किया जाता है।

Dividend warrant (डिविडेंड वारंट) **लाभांश के भुगतान का प्रपत्र**

वह चैक जिसे किसी कम्पनी के लाभांश के भुगतान हेतु जारी किया जाता है।

Dividend yield (डिविडेंड यील्ड) **लाभांश का अनुपात**

यदि 10 रुपए के एक अंश पर 75 पैसे का लाभांश दिया जाए तो लाभांश का अनुपात इस प्रकार होगा –

$$\frac{\text{लाभांश की राशि}}{\text{अंश का अंकित मूल्य}} = \frac{0.75}{100} = 7.5\%$$

Division of labour (डिविज़न ऑफ लेबर) **श्रम विभाजन**

ऐसी व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत समाज के विभिन्न व्यक्ति अलग–अलग कार्य करते हैं। श्रम विभाजन का एक परम्परागत उदाहरण भारत की वर्ण व्यवस्था में निहित था, जहां अलग–अलग जातियों के लोग अलग–अलग कार्य करते थे। 18वीं शताब्दी में अर्थशास्त्र के जनक एडमस्मिथ ने कहा कि यदि एक वस्तु के उत्पादन को विशिष्टीकरण के आधार पर अलग–अलग लोगों में बांट दिया जाए तो इससे श्रमिकों की दक्षता में वृद्धि होती है। आधुनिक युग में श्रम विभाजन सभी उत्पादन प्रक्रियाओं में व्याप्त हैं, लेकिन चरम सीमा के श्रम विभाजन से हानि भी हो सकती है।

Divorce of ownership from control (डाइवोर्स ऑफ ओनरशिप फ्रॉम कन्ट्रोल) **स्वामित्व से नियंत्रण का अलगाव**

आधुनिक युग में संयुक्त कम्पनी के वास्तविक स्वामियों, यानी अंशधारियों के पास कम्पनी का नियंत्रण निहित न होकर उन्हीं के द्वारा चुने गए संचालक मंडल के पास केन्द्रित होता है। इस प्रकार आज के युग में निगमों के स्वामी कम्पनी से सम्बद्ध महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेते।

Domar Model of Growth
(डोमर मॉडल ऑफ ग्रोथ) **संवृद्धि का डोमर मॉडल**

एक सैद्धान्तिक मॉडल, जिसे डोमर ने प्रतिपादित किया तथा जिसके अनुसार निवेश के फलस्वरूप एक और सकल माँग बढ़ती है, तथा दूसरी ओर एक समयावधि के भीतर सकल पूर्ति की क्षमता यानी सम्भावित सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि होती है। कीन्स ने कहा था कि निवेश बढ़ने पर सकल माँग बढ़ती है जब तक कि अतिरिक्त आय से सृजित बचत उच्च स्तर के निवेश को समाप्त न कर दे। इस प्रकार,

$\Delta Y = \frac{\Delta I}{\infty}$; इस सूत्र में ΔI निवेश में वृद्धि है, ∞ बचत की सीमान्त प्रवृत्ति है जबकि ΔY आय में वृद्धि को व्यक्त करता है।

डोमर ने यह जानने का प्रयास किया कि यदि निवेश के फलस्वरूप उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है, तथा अतिरिक्त आय का भी सृजन होता है तो निवेश किस दर से बढ़ना चाहिए ताकि आय की वृद्धि उस उत्पादन क्षमता के समान हो। इसके लिए

डोमर ने एक सूत्र का प्रतिपादन किया जिसके एक ओर उत्पादन क्षमता की वृद्धि दर है और दूसरी ओर आय की वृद्धि दर है तथा इसके हल से आर्थिक संवृद्धि की सम्भावित दर ज्ञात हो जाती है।

Dominant firm (डोमीनेंट फर्म) **प्रभावशाली (विशालकाय) फर्म**

ऐसी फर्म जो बाज़ार की कुल आपूर्ति का बड़ा अंश तैयार करती है। यदि बाज़ार में कुल 5 लाख कारों का प्रतिवर्ष उत्पादन होता हो तथा मारुति उद्योग लि. इसमें से 2.0 लाख (40%) कारें तैयार करती हैं, तथा शेष 8–10 अन्य फर्मों का योगदान हो, तो मारुति उद्योग को एक प्रभावशाली फर्म कहा जाएगा तथा यही कीमत नेतृत्व का दायित्व वहन करने में सक्षम हो सकती है।

Double counting (डबल काउन्टिंग) **दोहरी गणना**

राष्ट्रीय आय का अनुमान करते समय प्रायः प्रत्येक फर्म द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तु का मूल्य लिया जाता है तथा इसमें से अन्य फर्मों से खरीदे गए इनपुट्स को घटाया नहीं जाता। वस्तुतः ये इनपुट्स उन फर्मों के उत्पाद हैं, तथा राष्ट्रीय आय की गणना में *समस्त फर्मों के उत्पादों* का मूल्य लेने पर दोहरी गणना की समस्या उत्पन्न हो जाती है। कभी–कभी एक ही उत्पाद की गणना दो से अधिक बार भी हो सकती है, और इससे राष्ट्रीय आय का सही माप नहीं प्राप्त होता।

Double taxation (डबल टैक्सेशन) **दोहरा करारोपण**

किसी एक ही आय पर दो राज्यों या दो देशों द्वारा कर लगाना। ऐसा तब हो जाता है जब किसी कम्पनी की सम्पत्ति से एक देश में अर्जित आय पर उस देश में कर लगाया जाता है, परन्तु यदि वह कम्पनी मूलतः दूसरे देश में स्थित हो और वहां भी पहले देश में अर्जित आय पर करारोपण कर दिया जाए। इस प्रकार एक ही आय पर कम्पनी दोहरा कर देती है।

Down payment (डाउन पेमेंट) **प्रारम्भिक भुगतान**

किश्तों पर ली गई वस्तु या सम्पत्ति की कुल कीमत का वह भाग जिसका भुगतान तत्काल ही करना पड़े। यदि 7.0 लाख रुपए की कार की मासिक किश्त 15 हज़ार रुपए (ब्याज़ सहित) 5 वर्ष तक देना तय हो परन्तु उधार देने वाली कम्पनी 50 हज़ार रुपए का तत्काल भुगतान चाहे तो यह राशि प्रारम्भिक भुगतान कहलाएगी।

Dual economy (ड्यूअल इकॉनोमी) **दोहरी अर्थव्यवस्था**

ऐसी अर्थव्यवस्था जहां पूँजी गहन तकनीक का प्रयोग कुछ क्षेत्रों में होता है, और साथ ही उन्हीं क्षेत्रों या अन्य क्षेत्रों में परम्परागत व श्रम–गहन तकनीक भी प्रयुक्त होती हो। उदाहरण के लिए, कृषि के क्षेत्र में भारत में उच्च–स्तरीय पूँजी गहन तकनीक के साथ बैलों से जुताई या सिंचाई की तकनीक भी प्रयुक्त हो रही है।

Dummy variable (डमी वेरीएबल) **एवजी चर**

एक ऐसा चर, जिसका प्रतीपगमन विश्लेषण में सही मूल्य ज्ञात करना सम्भव न हो अपितु जिसे केवल उसकी मौजूदगी या अनुपस्थिति के आधार पर प्रतीपगमन सूत्र में शामिल किया जाए। उदाहरण के लिए, यदि अन्य चरों के साथ–साथ यह देखना हो कि गेहूँ की उत्पादकता में किसान के काले या गोरे होने की क्या भूमिका है तो समंकों के प्रस्तुतीकरण में गोरे रंग को 1.0 तथा काले रंग को 0 मूल्य पर देकर इनका प्रतीपगमन विश्लेषण किया जा सकता है।

Dumping (डंपिंग) **राशि पातन**

एक देश द्वारा अपने नागरिकों को ऊँची कीमत पर वस्तु बेचना, परन्तु अन्य किसी देश में काफी नीची कीमत पर निर्यात करना। चीन तथा जापान राशिपातन की नीति अपनाने वाले देशों में प्रमुख हैं। कभी-कभी राशिपातन के अंतर्गत लागत से भी कम कीमत पर निर्यात किया जाता है, ताकि अन्य देश के बाज़ार पर आधिपत्य किया जा सके।

Duopoly (ड्यूओपोली) **द्वयाधिकार**

बाज़ार की वह स्थिति जिसमें वस्तु के केवल दो ही विक्रेता हों। इनमें से एक के द्वारा की गई प्रत्येक कार्यवाही की प्रतिक्रिया दूसरे विक्रेता पर अवश्य होगी, और उसी के अनुरूप इनके प्रतिक्रिया फलनों का निरूपण किया जाएगा। द्वयाधिकार के मॉडल में बर्ट्रेन्ड, कूर्नो, एजवर्थ व चैम्बर्लिन के मॉडल हैं।

Duopsony (ड्यूओप्सोनी) **दो क्रेताओं का बाज़ार पर अधिकार**

Durable good (ड्यूरेबल गुड) **टिकाऊ वस्तु**

ऐसी वस्तु, जिसको दीर्घकाल तक उपयोग में लिया जा सकता है। इनमें मशीनें, वाशिंग मशीन, मकान, फर्नीचर आदि की गणना की जा सकती है।

Dynamic analysis (डायनेमिक एनालिसिस) **गत्यात्मक विश्लेषण**

किस प्रकार आर्थिक परिवर्तन होते हैं इसका अध्ययन। यदि निवेश फलन का विवर्तन हो जाए तथा बचत फलन वही रहे तो ब्याज़ दर में परिवर्तन हो जाएगा। ब्याज़ दर में किस प्रक्रिया के आधार पर परिवर्तन होगा इसका अध्ययन गत्यात्मक विश्लेषण कहलाता है।

एक अन्य अर्थ में जब पूर्ति का कीमत के साथ अन्तराल युक्त सम्बन्ध हो $[S_t = f(P_{t-1})]$ जबकि माँग का सम्बन्ध कीमत के साथ तात्कालिक हो $[D_t = f(P_t)]$ तो इससे माँग व पूर्ति में जो उच्चावचन कीमत के साथ होंगे उनके फलस्वरूप साम्य कीमत कभी भी प्राप्त नहीं होती। यह असंतुलन वाले मकड़जाल का अध्ययन भी गत्यात्मक विश्लेषण कहलाती है।

□□□

E

Earned income (अर्न्ड इनकम) **अर्जित आय**

कार्य करने के बदले प्राप्त आय। यह आय सम्पत्ति से प्राप्त किराए (लगान) या ब्याज़ से प्राप्त आय से भिन्न है क्योंकि इनके लिए व्यक्ति श्रम नहीं करता।

Earnings (अर्निंग्स) **साधनों को प्राप्त प्रतिफल**

उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त साधनों जैसे श्रम, भूमि, प्रबन्धन, पूँजी और उद्यम को प्रदत्त पारिश्रमिक। यह पारिश्रमिक मज़दूरी, लगान (या किराए) पगार, ब्याज़ तथा लाभ के रूप में दिया जाता है।

Earnings drift (अर्निंग ड्रिफ्ट) **आय प्राप्ति की प्रवृत्ति (क्षमता)**

आय प्राप्ति–विशेष रूप से मज़दूरी व पगार को प्राप्त करने की प्रवृत्ति, जो श्रम की प्रति इकाई के लिए तयशुदा दरों की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़ती है। इस प्रवृत्ति के पीछे ओवर टाइम कार्य, विशेष समझौते आदि कारण हो सकते हैं। कभी–कभी किसी विशेष कौशल की माँग उसकी आपूर्ति से अधिक होने के कारण भी तयशुदा दर से अधिक प्रतिफल मिल जाता है।

Earnings yield (अर्निंग्स यील्ड) **आय का औसत**

प्रति साधारण शेयर प्राप्त शुद्ध लाभ। एक संयुक्त कम्पनी कुल लाभ में से कर का भुगतान करने के बाद जो लाभांश घोषित करती है उसका प्रति अंश (शेयर) औसत।

Easy fiscal policy (इज़ी फिस्कल पॉलिसी) **उदार राजकोषीय नीति**

इस नीति के अन्तर्गत करों में कमी, सरकारी आय में वृद्धि तथा सरकारी ऋणों के प्रति उदासीनता आदि को शामिल किया जाता है। प्रायः अर्थव्यवस्था जब मंदी के दौर से गुजरती है तो उदार राजकोषीय नीति अपनाई जाती है।

Easy monetary policy (इज़ी मॉनेटरी पॉलिसी) **उदार मौद्रिक नीति**

इसके अन्तर्गत ब्याज़ की दरों में कमी तथा साख की सुगम उपलब्धता को शामिल करते हैं। इस नीति को उस समय लागू किया जाता है जब अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजरती हो, तथा निवेश एवं रोज़गार के स्तर नीचे हों। परन्तु ब्याज़ की दरें अत्यंत नीची होने पर ही यदि कुछ उद्यमी निवेश करने का प्रयास करें तो प्रायः ऐसे समय पर्याप्त उधार योग्य कोष नहीं मिल पाते।

Econometrics (इकोनोमेट्रिक्स) **अर्थमिती**

ऐसे सांख्यिकीय मॉडल जिन्हें विभिन्न आर्थिक चरों के सम्बन्धों को व्यक्त करने हेतु गणितीय रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उपभोग व्यय का निम्न सूत्र दिया जाए –

$$C = a + bY_d$$

(जहां C उपभोग व्यय हो, Y_d कुल प्रयोज्य आय हो तथा b आय का वह अनुपात हो जिसे उपभोग हेतु प्रयुक्त किया जाए) तो इस अर्थमिती के मॉडल हेतु Y_d व C के आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इसके आधार पर इसी सूत्र को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है :

$$C = a + bY_d + u$$

इस संशोधित सूत्र में u सांख्यिकी त्रुटि है। मॉडल के आधार पर a व b के मूल्य भी ज्ञात किए जा सकेंगे। इस अर्थमितिक मॉडल में Y_d एक स्वतंत्र चर है जिसमें प्रत्येक परिवर्तन के फलस्वरूप b के अनुरूप C (आश्रित चर) में भी परिवर्तन होगा।

Economic aid (इकोनोमिक एड) **आर्थिक सहायता**

विकासशील देशों के आर्थिक विकास हेतु वित्तीय तथा भौतिक सहायता का प्रावधान करना। यह सहायता द्विपक्षीय रूप में एक देश की सरकार द्वारा दूसरी सरकार को दी जा सकती है, या फिर निजी संस्थाओं (बैंक आदि) के माध्यम से दी जा सकती है। इसके विपरीत यह सहायता बहुदेशीय संस्थाओं जैसे विश्व बैंक, यूनीसेफ, यूनेस्को, यू.एन.डी.पी. आदि के माध्यम से दी जा सकती है।

Economically active population (इकोनोमिकली एक्टिव पॉपूलेशन)

आर्थिक दृष्टि से सक्रिय जनसंख्या का वह भाग जो वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में संलग्न है। इसे श्रम शक्ति भी कह सकते हैं।

Economic development (इकोनोमिक डेवलपमेंट) **आर्थिक विकास**

एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें उद्योगों के विकास के माध्यम से अर्थव्यवस्था का रूपान्तरण किया जाता है, तथा संरचनात्मक विकास एवं मूलभूत सुविधाओं का विस्तार किया जाता है। वस्तुतः आर्थिक विकास के अन्तर्गत सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है, तथा लोगों के जीवन–स्तर में सुधार होता है। आर्थिक विकास हेतु अर्थव्यवस्था में निवेश का स्तर बढ़ाया जाता है।

Economic efficiency (इकोनोमिक एफिशिएन्सी)

आर्थिक दक्षता; आर्थिक कुशलता

साधनों को उत्पादन प्रक्रिया में इस प्रकार आवन्टित करना कि उत्पादन लागत न्यूनतम हो। एक अन्य अर्थ में दी हुई लागत के अन्तर्गत वस्तुओं की अधिकतम मात्रा का उत्पादन करना भी आर्थिक दक्षता का प्रतीक है।

Economic forecasts (इकोनोमिक फोरकास्ट्स) **आर्थिक भविष्यवाणियाँ**

विगत अनुभवों तथा वर्तमान स्थिति को देखते हुए किसी वस्तु की माँग, देश/राज्य की जनसंख्या, कीमत स्तर आदि सामान्य चरों का बाज़ार की दशाओं की भविष्य में होने वाली स्थिति का पूर्वानुमान करना। ये पूर्वानुमान अनेक विधियों के आधार पर किए जा सकते हैं : (i) सर्वेक्षण करके, (ii) अर्थमितीय मॉडल लेकर, (iii) बाह्य

गणन विधि, (iv) संकेतात्मक पूर्वानुमान, (v) यदा–कदा विधि, (vi) काल–श्रेणी विश्लेषण।

Economic goods (इकोनोमिक गुड्स) **आर्थिक वस्तुएँ**

ऐसे उत्पाद जो प्रत्यक्ष रूप से (कार, चावल, फल, साबुन आदि) अथवा परोक्ष रूप से (रसोई गैस, बर्तन आदि) उपभोक्ताओं को उनकी ज़रूरतों की पूर्ति हेतु *संतुष्टि प्रदान* करते हैं।

Economic growth (इकोनोमिक ग्रोथ) **आर्थिक संवृद्धि**

किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन बढ़ने से सकल राष्ट्रीय उत्पादन में हुई वृद्धि, जिसके फलस्वरूप प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होती है। यह वृद्धि उपभोग तथा पूँजीगत, दोनों प्रकार की, वस्तुओं के उत्पादन से सम्बद्ध होती है। तथापि आर्थिक संवृद्धि का सीधा सम्बन्ध लोगों के जीवन स्तर में सुधार से नहीं है। इसके विपरीत, आर्थिक विकास के अन्तर्गत जीवन स्तर में सुधार अपेक्षित रहता है। इसी प्रकार सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि का आय के वितरण पर क्या प्रभाव होगा, इससे आर्थिक संवृद्धि का कोई सरोकार नहीं होता, न ही इसके फलस्वरूप पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों की समीक्षा करना आवश्यक समझा जाता। संक्षेप में, आर्थिक संवृद्धि का प्रयोजन केवल वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन में होने वाली वृद्धि से होता है।

Economic imperialism (इकोनोमिक इम्पीरियलिज़्म) **आर्थिक साम्राज्यवाद**

जब कोई बड़ा देश अपने उपनिवेशों से सस्ता श्रम का कच्चा माल आयात करके ऊंची कीमतों पर निर्मित वस्तुएँ उन पर थोपता हो तो इसे आर्थिक साम्राज्यवाद कहा जाता है। इस साम्राज्यवाद के विस्तार में बहुदेशीय निगम भी सहायक होते हैं। इस प्रक्रिया में उपनिवेश निर्धन होते जाते हैं, जबकि उसके शासक देशों के पास आर्थिक सत्ता केन्द्रित होती जाती है।

Economic man (इकोनोमिक मैन) **आर्थिक मानव**

अर्थशास्त्र में आर्थिक मानव उस व्यक्ति, परिवार या फर्म को कहा जाता है जो अपने आर्थिक लाभ को अधिकतम (या हानि को न्यूनतम) करने हेतु कार्य करती है। तदनुसार, उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है जबकि फर्म या उद्यमी का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है।

Economic model (इकोनोमिक मॉडल) **आर्थिक मॉडल**

ऐसा मॉडल जिसमें एक आश्रित चर तथा एक या अधिक स्वतंत्र चर होते हैं, जिनमें परस्पर सम्बन्ध होता है। परन्तु आश्रित चर का सम्बन्ध उपयोगिता, उत्पादन, लागत, निवेश, बचत, माँग, पूर्ति, आय, कीमत आदि आर्थिक मूल्यों से होने पर ही इसे आर्थिक मॉडल कहा जा सकता है।

Economic planning (इकोनोमिक प्लानिंग) **आर्थिक नियोजन**

निर्दिष्ट आर्थिक–समाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सरकार द्वारा निरूपित कार्य योजना

का कार्यक्रम। ये उद्देश्य इस प्रकार हो सकते हैं : (i) राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, (ii) उद्योगों व कृषि का विकास, (iii) संरचनात्मक विकास (सड़कें पेयजल, संचार व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, बिजली आदि), (iv) गरीबी उन्मूलन, (v) रोज़गार के अवसर बढ़ाना, (vi) निर्यातों में वृद्धि, (vii) आर्थिक स्थिरता, तथा (viii) जीवन स्तर में सुधार। आर्थिक नियोजन पूर्णतया सरकार में निहित हो सकता है अथवा सरकार तथा निजी क्षेत्र के सहयोग से किया जा सकता है। किन्हीं देशों में उत्पादन व निवेश आदि में वृद्धि के लिए संकेतात्मक योजनाएँ भी बनाई जाती हैं।

Economic policy (इकोनोमिक पॉलिसी) **आर्थिक नीति**

सरकार द्वारा पूर्व निर्धारित आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु घोषित उपाय अथवा रणनीतियां। उदाहरण के लिए पर्यटन नीति, मौद्रिक नीति, राजकोषीय नीति, वितरण नीति, कृषि नीति, श्रम नीति, औद्योगिक नीति, विदेशी व्यापार नीति आदि की घोषणा सम्बद्ध क्षेत्र के लिए कुछ उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की जा सकती है।

Economic rent (इकोनोमिक रेन्ट) **आर्थिक लगान**

किसी आर्थिक साधन की सेवाओं के लिए किया गया ऐसा भुगतान, जो इसकी दुर्लभता हेतु दिया जाता है। यदि उर्वरा भूमि की पूर्ति इसकी आवश्यकता के अनुरूप है तो उसके लिए इसकी उत्पादकता के अनुरूप भुगतान किया जाएगा। परन्तु यदि इसकी माँग बहुत अधिक है तो अतिरिक्त भुगतान को आर्थिक लगान कहा जाएगा। यही बात उत्पादन के अन्य साधनों के संदर्भ में भी लागू होती है जहां अल्पकालीन दुर्लभता के कारण साधन का स्वामी एक अतिरेक प्राप्त करता है।

Economics (इकोनोमिक्स) **अर्थशास्त्र**

मानव समाज में उत्पादन, उपभोग तथा वितरण के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन। प्रत्येक आर्थिक इकाई के पास उपलब्ध साधन तथा समय सीमित हैं, जबकि उसकी आवश्यकताएँ असीमित हैं। अर्थशास्त्र यह बताता है कि उपभोक्ता या उत्पादक असीमित ज़रूरतों की तुलना में सीमित साधनों के संदर्भ में अपनी ज़रूरतों को किस प्रकार प्राथमिकता प्रदान करता है। साधनों को प्राथमिकता के आधार पर उपयोग में लेकर प्रत्येक आर्थिक इकाई अपना हित (उपयोगिता, लाभ आदि) अधिकतम करता है।

Economic sanctions (इकोनोमिक सेंक्शन्स) **आर्थिक पाबन्दियाँ**

निर्यात व आयात अथवा पूँजी के हस्तांतरण पर लगाई गई द्विपक्षीय अथवा बहुपक्षीय पाबन्दियां। प्रायः किसी शक्तिशाली देश के दबाव में आकर किसी देश की सरकार आर्थिक पाबन्दियां लगाती है। अथवा कोई शक्तिशाली देश राजनैतिक दबाव बनाने हेतु आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए देश पर आर्थिक पाबन्दियां लगाता है जैसा कि सं.रा. अमरीका तथा यूरोपीय देशों ने भारत व पाकिस्तान द्वारा आणविक परीक्षणों के बाद किया था।

Economic systems (इकोनोमिक सिस्टम्स) **आर्थिक प्रणालियां**

विभिन्न देशों में सम्पत्ति के अधिकार, लाभ की प्राप्ति, वितरण प्रणाली, कीमत का निर्धारण, साधनों का आवंटन, साधनों की कीमतों का निर्धारण आदि के लिए अलग–अलग व्यवस्थाएँ विद्यमान हो सकती हैं। इसी प्रकार अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका भी भिन्न हो सकती है। इसी आधार पर किसी देश में पूँजीवाद, समाजवाद या साम्यवाद जैसी आर्थिक प्रणाली विद्यमान हो सकती है। पूँजीवाद में जहां पूर्णतया बाज़ार व्यवस्था के आधार पर निजी उद्यमियों को पूरी स्वतंत्रता रहती है, समाजवाद में सरकार तथा निजी क्षेत्र दोनों के कार्यक्षेत्र बंटे रहते हैं। साम्यवाद में पूर्णतया केन्द्रित नियोजित अर्थव्यवस्था के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं तथा निजी सम्पत्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता।

Economies of scale (इकोनोमिक ऑफ स्केल) **पैमाने की बचतें**

जब दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधनों को समानुपात में बढ़ाते हैं और दक्षता में वृद्धि के कारण उत्पादन लागत की तुलना में उत्पादन अधिक अनुपात में बढ़ता है तो औसत उत्पादन लागत में कमी होती है। यह चरण पैमाने की बचतों का माना जाता है। ये बचतें दो प्रकार की होती हैं : आन्तरिक बचतें तथा बाह्य बचतें। आंतरिक बचतें संयंत्र के बेहतर उपयोग, शोध, विपणन सम्बन्धी लागतों में बचत, श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण, भवन तथा कार्यालय का बेहतर उपयोग आदि के कारण होती हैं जबकि बाह्य बचतों के अन्तर्गत फर्म के विशाल आकार के कारण अन्य संस्थाओं व संगठनों द्वारा उसे दी गई रियायतों के कारण प्राप्त होती हैं।

Economy (इकोनॉमी) **अर्थव्यवस्था**

कोई समाज राज्य या देश, जिसे इसकी समूची अथवा आंशिक आर्थिक क्रियाओं के आधार पर परिभाषित किया जाता है। किसी अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं के आधार पर वर्ष भर में वस्तुओं व सेवाओं का जो उत्पादन किया जाता है उसके मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहा जाता है। इस आय का समाज के विभिन्न व्यक्तियों या संस्थाओं के मध्य वितरण किया जाता है, जो मजदूरी, लगान, ब्याज़, पगार या लाभ के रूप में हो सकता है।

Edgeworth box (एजवर्थ बॉक्स)

देखिए Contract Curve या संविदा वक्र।

Effective demand (इफेक्टिव डिमांड) **प्रभावी माँग**

किसी वस्तु या सेवा के प्रति इच्छा, जिसकी पूर्ति हेतु उपभोक्ता के पास पर्याप्त साधन हैं तथा इन्हें खर्च करने की उसमें तत्परता विद्यमान हो।

Effective rate of interest (इफेक्टिव रेट ऑफ इन्टरेस्ट) **ब्याज़ की प्रभावी दर**

किसी बाँड या प्रतिभूति की ख़रीद पर प्राप्त होने वाली ब्याज़ दर। उदाहरण के लिए, किसी बाँड की अंकित कीमत 1000 रुपए है तथा इसकी मौद्रिक (कूपन) ब्याज़ दर

5 प्रतिशत है तो इस पर 50 रुपए प्रतिवर्ष का मौद्रिक प्रतिफल प्राप्त होगा। परन्तु यदि वही बॉंड 500 रुपए में उपलब्ध हो जाए तो ब्याज़ की प्रभावी दर 10 प्रतिशत हो जाएगी। इसका कारण यह है कि बॉंड पर 500 रुपए का निवेश करके अब 50 रुपए की राशि अर्जित की जाएगी। इसके विपरीत यदि वही बॉंड 2000 रुपए में मिले तो ब्याज़ की प्रभावी दर 2.5 प्रतिशत ही होगी। इस प्रकार बॉंड की बाज़ार कीमत तथा ब्याज़ की प्रभावी दर में प्रतिकूल सम्बन्ध है।

Effective rate of protection

(इफेक्टिव रेट ऑफ प्रोटेक्शन) **संरक्षण की प्रभावी दर**

किसी निर्मित वस्तु पर आयात कर लगाया जाता है लेकिन इसमें प्रयुक्त इनपुट्स पर या तो आयात कर बिल्कुल न हो या नाम मात्र का हो तो संरक्षण की प्रभावी दर अपेक्षाकृत अधिक होगी।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए स्वदेशी वस्तु तथा आयातित वस्तु की कीमत 100 रुपए है। अब मान लीजिए स्वदेशी वस्तु में आयातित इनपुट्स का मूल्य 50 प्रतिशत है जबकि शेष देश में ही उपलब्ध कच्चे माल का मूल्य है। यदि अब आयातित निर्मित वस्तु पर 10 प्रतिशत आयात कर लगा दें तो इसकी भारत में कीमत बढ़ कर 110 रुपए हो जाएगी। यदि आयातित इनपुट्स पर कोई कर न हो तो उसका मूल्य 50 रुपए ही रहेगा। जबकि स्वदेश में निर्मित वस्तु का मूल्य 100 रुपए ही रहेगा तथा वह आयातित वस्तु की तुलना में सस्ता होगा। इस प्रकार, संरक्षण की प्रभावी दर (अंतिम वस्तु पर) 10 प्रतिशत न होकर 20 प्रतिशत होगी। (10 रुपए आयातित वस्तु पर कर/50 रुपए वर्तमान मूल्य वृद्धि)। आयातित इनपुट्स का अंश यदि 50 प्रतिशत से अधिक हो तथा उस पर कोई कर न हो तो प्रभावी संरक्षण की दर और भी अधिक हो जाएगी।

Efficiency (एफिशियएँसी) **दक्षता**

दुर्लभ साधनों (इनपुट्स) तथा वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन का सम्बन्ध। यदि यह सम्बन्ध भौतिक रूप में मापा जाए (उत्पादन/इनपुट्स) तो यह तकनीकी दक्षता कहलाती है। यदि उत्पादन की मात्रा तथा साधनों पर व्यय की गई लागत का अनुपात लिया जाए तो इसे आर्थिक दक्षता कहा जाता है। उत्पादन की कुल लागत में उत्पादन की मात्रा से भाग देने पर औसत लागत प्राप्त होती है। *यह औसत लागत जितनी कम होगी, आर्थिक दक्षता उतनी अधिक होगी।*

Efficient-markets hypothesis

(एफिशिएँट मार्केट्स हाइपोथेसिस) **श्रेष्ठ बाज़ार परिकल्पना**

यह कथन कि सभी प्रकार की उपलब्ध सूचनाएँ जो किसी वस्तु की कीमत को प्रभावित करती हैं वे उस कीमत में प्रतिबिम्बित होती हैं। ऐसा केवल पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में ही सम्भव है, तथा अतिरिक्त सूचना उपलब्ध होने पर वस्तुओं की

कीमतों पर भी प्रभाव होता है, तथा भविष्य में क्या कीमतें होंगी उनमें इसके आधार पर भी संशोधन किया जाता है। प्रायः सूचनाओं के निरन्तर प्रवाह के कारण वस्तुओं पर असामान्य लाभ अर्जित नहीं किया जा सकता। यह परिकल्पना वित्तीय बाज़ारों में प्रतिभूतियों के व्यापार पर अधिक लागू होती है।

EFTA (एफ्टा) **यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन**

देखिए कस्टम यूनियन। यूरोपीयन देशों का साझा बाज़ार।

Elasticity of demand (इलास्टिसिटी ऑफ डिमान्ड) **माँग की लोच**

वस्तु की कीमत, सम्बद्ध वस्तुओं की कीमतों तथा उपभोक्ता की आय में से किसी एक चर में परिवर्तन होने पर माँग की मात्रा में जो प्रतिक्रिया होती है उसे माँग की लोच कहा जाता है। इसी के अनुरूप माँग की लोच तीन प्रकार की होती है: कीमत लोच, तिरछी लोच तथा आय लोच।

Elasticity of substitution (इलास्टिसिटी ऑफ सब्स्टीट्यूशन) **प्रतिस्थापन लोच**

दो वस्तुओं की कीमतों के अनुपात में परिवर्तन होने पर उन वस्तुओं की माँग के अनुपात पर जो प्रतिक्रिया होती है उसे प्रतिस्थापन लोच कहा जाता है। इसका सूत्र निम्न होता है :

$$\sigma = \frac{d\left(\frac{Y}{X}\right)}{d\left(\frac{P_x}{P_y}\right)} \cdot \frac{\frac{P_x}{P_y}}{\frac{Y}{X}}$$

इस सूत्र में Y तथा X क्रमशः दो वस्तुएँ हैं, P_x व P_y इनकी कीमतें हैं तथा σ प्रतिस्थापन लोच है। यदि दोनों वस्तुएँ परस्पर स्थानापन्न है तो P_x व P_y के अनुपात में वृद्धि होने पर उपभोक्ता Y का उपयोग बढ़ाकर X की माँग में कमी करता है और ऐसी स्थिति में प्रतिस्थापन लोच धनात्मक होती है ($\sigma > 0$)। इसी प्रकार, यदि दोनों वस्तुएँ परस्पर पूरक हैं तो P_x में वृद्धि होने पर Y की मात्रा में (X की मात्रा के साथ–साथ) कमी होगी, तथा उस दशा में प्रतिस्थापन लोच ऋणात्मक होगी ($\sigma < 0$)।

Elasticity of supply (इलास्टिसिटी सप्लाई) **पूर्ति की लोच**

जब भी किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होता है तो प्रायः उत्पादक उसकी पूर्ति में परिवर्तन करते हैं। कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप पूर्ति पर जो प्रतिक्रिया होती है उसे पूर्ति की लोच कहते हैं। सामान्यतया कीमत में वृद्धि/कमी होने पर पूर्ति में भी वृद्धि/कमी होती है।

Elasticity of technical substitution(इलास्टीसिटी ऑफ टैक्नीकल सब्स्टीट्यूशन) **तकनीकी प्रतिस्थापन की लोच**

दो साधनों के मध्य स्थानापन्नता का सम्बन्ध होने पर यदि एक साधन की कीमत

में वृद्धि होती है, तो उत्पादक उसकी मात्रा में कमी करके दूसरे साधन की मात्रा को बढ़ा देता है। अन्य शब्दों में, यदि मज़दूरी व ब्याज़ के अनुपात $\left(\frac{w}{r}\right)$ में वृद्धि हो जाए, तो उत्पादक पूँजी व श्रम की मात्राओं के अनुपात में वृद्धि कर देगा। तकनीकी प्रतिस्थापन लोच का सूत्र निम्न होगा।

$$S = \frac{d(\frac{K}{L})}{d(\frac{w}{r})} \cdot \frac{\frac{w}{r}}{\frac{K}{L}}$$

उक्त सूत्र में S तकनीकी प्रतिस्थापन लोच का द्योतक है, K तथा L क्रमशः पूँजी व श्रम की इकाइयां हैं, जबकि w व r क्रमशः मज़दूरी व ब्याज़ की दरें हैं। हम यह बात सरलता से समझ सकते हैं कि दोनों साधनों के बीच स्थानापन्नता का सम्बन्ध होने पर तकनीकी प्रतिस्थापन की लोच धनात्मक होगी (S > O)।

Embargo (एम्बार्गो) **प्रतिबन्ध; निषेध**

किसी देश के साथ विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं के आयात–निर्यात पर आंशिक या पूर्ण प्रतिबन्ध। प्रायः राजनैतिक कारणों से ये प्रतिबन्ध लागू किए जाते हैं।

Empirical testing (इम्पीरिकल टैस्टिंग) **अनुभव मूलक परीक्षण**

आर्थिक सिद्धान्तों की सत्यता का आंकड़ों या समंकों के आधार पर परीक्षण करना। प्रायः अर्थशास्त्री निर्दिष्ट सिद्धान्त के विषय में एक परिकल्पना लेकर आंकड़ों का अध्ययन करता है, तथा यह सिद्ध करता है कि अमुक सिद्धान्त व्यावहारिक जीवन में स्वीकार्य है या नहीं।

Employee (एम्प्लॉयी) **कर्मचारी; वेतनभोगी व्यक्ति**

किसी व्यक्ति या फर्म द्वारा नियुक्त व्यक्ति जो अपने श्रम (शारीरिक या मानसिक) के द्वारा नियोक्ता को उत्पादन अथवा विपणन प्रक्रिया में सहायता प्रदान करता है।

Employer (एम्प्लॉयर) **नियोक्ता**

कर्मचारी को नियुक्त करने वाली फर्म या व्यक्ति।

Employment (एम्प्लॉयमेंट) **रोज़गार**

किसी वस्तु अथवा सेवा के उत्पादन, परिवहन, विपणन या सम्बद्ध किसी भी क्रिया में श्रम का प्रयोग। यह श्रम भौतिक या बौद्धिक (मानसिक) दोनों प्रकार का हो सकता है।

Employment contract (एम्प्लॉयमेंट कॉन्ट्रेक्ट) **रोज़गार सहमति पत्र**

श्रमिक तथा उसे रोज़गार प्रदान करने वाले व्यक्ति अथवा फर्म के बीच हुआ एक लिखित समझौता। प्रायः सभी प्रकार के कर्मचारियों तथा अधिकारियों के साथ नियोक्ता इस प्रकार का समझौता कर सकते हैं। इस समझौते में सेवा शर्तों का स्पष्ट उल्लेख किया जाता है।

Endogenous growth (एन्डोजेनस ग्रोथ) **आन्तरिक संवृद्धि**

ऐसी आर्थिक संवृद्धि जिसमें दीर्घकालीन विकास दर उस अर्थव्यवस्था के निष्पादन पर निर्भर करती है। यह बाह्य–निर्धारित संवृद्धि से भिन्न है, जो बाह्य घटकों (जनसंख्या वृद्धि, तकनीकी विकास आदि) से निर्धारित होती है। आन्तरिक संवृद्धि दर प्रायः बचत, निवेश, शोध आदि द्वारा निर्धारित होती है।

Endogenous money (एन्डोजेनस मनी) **आंतरिक मुद्रा**

मुद्रा की कुल पूर्ति का वह भाग जिसका बैंकों द्वारा अन्तरिक रूप से सृजन किया जाता है। विशेष रूप से निक्षेपों के आधार पर बैंकों द्वारा सृजित साख इसमें शामिल की जाती है।

Endogenous variable

(एन्डोजेनस वेरिएबल) **आन्तरिक रूप से निर्धारित चर**

किसी आर्थिक मॉडल में प्रस्तुत वह चर जो मॉडल में निरूपित सम्बन्धों को प्रभावित करता है तथा स्वयं भी उनसे प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय आय के मॉडल में उपभोग व्यय में वृद्धि जहां एक ओर सकल माँग में वृद्धि करके राष्ट्रीय आय में करती है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय आय में वृद्धि के फलस्वरूप उपभोग व्यय में वृद्धि भी वृद्धि होती है।

Engel's law (एन्जेल्स लॉ) **एन्जेल का नियम**

वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार उपभोक्ता अपनी अतिरिक्त आय को निम्न प्रकार व्यय करता है–

(i) विलासिता की वस्तुओं पर अधिक अनुपात में,
(ii) आरामदायक वस्तुओं पर आय वृद्धि के अनुपात में तथा,
(iii) सामान्य वस्तुओं (खाद्यान्न तथा अन्य ज़रूरी वस्तुओं) पर आय वृद्धि से कम अनुपात में।

इस नियम के अनुरूप आय तथा विभिन्न वस्तुओं की माँग के बीच सम्बन्धों को व्यक्त करने हेतु तीन प्रकार के एन्जेल वक्र बनाए जाते हैं।

Enterprise (एन्टरप्राइज़) **उद्यम**

कोई व्यावसायिक इकाई; किसी व्यक्ति में पहल करने की योग्यता के अतिरिक्त व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने के लिए विद्यमान दूरदर्शिता एवं जोखिम उठाने का साहस।

Entrepreneur (एन्ट्रेप्रेनियर) **साहसी; उद्यमी**

ऐसा व्यक्ति जो उद्यमशील है तथा व्यावसायिक इकाई को प्रारम्भ करने तथा इसे सफलतापूर्वक चलाने की जोखिम लेने को तत्पर हो। किसी भी फर्म के सभी खर्चों को राजस्व में से घटाने के बाद जो लाभ शेष रहता है, वह उद्यमी का पुरस्कार कहलाता है। परन्तु आधुनिक युग में संयुक्त कम्पनी व्यवस्था के अंतर्गत फर्म का उद्देश्य अधिकतम लाभ अर्जित करना नहीं रह गया है।

Entry (एन्ट्री) **नई फर्मों का बाज़ार में प्रवेश**

प्रायः नए विक्रेताओं या उद्यमियों को बाज़ार में प्रवेश की स्वतंत्रता इस पर निर्भर करती है कि बाज़ार किस प्रकार का है। एक पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में प्रवेश अथवा बहिर्गमन हेतु विक्रेताओं (नए व विद्यमान) को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। इसके विपरीत एकाधिकार वाले बाज़ार में नए विक्रेता बाज़ार में प्रवेश नहीं कर पाते, जबकि अल्पाधिकार वाले बाज़ार में पूर्व में विद्यमान फर्मों की नीतियों के कारण प्रवेश के द्वार अवरुद्ध हो जाते हैं।

Envelope curve (एन्वेलप कर्व) **आच्छादन वक्र**

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र, जो विभिन्न प्रक्रियाओं के आधार पर अधिकतम सम्भावित उत्पादन के स्तरों को दर्शाने वाला वक्र। वस्तुतः अल्पकाल में इष्टतम स्तर से अधिक उत्पादन करने पर उसी प्लांट के अन्तर्गत तो प्रति इकाई उत्पादन लागत अधिक होती है परन्तु एक नया प्लांट स्थापित करने पर अतिरिक्त उत्पादन की औसत लागत कम हो जाती है। प्रत्येक बार अल्पकालीन इष्टतम स्तर से अधिक उत्पादन हेतु नए प्लांट की स्थापना से मितव्ययताएँ प्राप्त होती हैं, तथा औसत उत्पादन लागत में एक सीमा तक कमी होती है। यदि इसके पश्चात् अ-बचतों का दौर प्रारम्भ होता है तथा औसत लागत बढ़ जाती है।
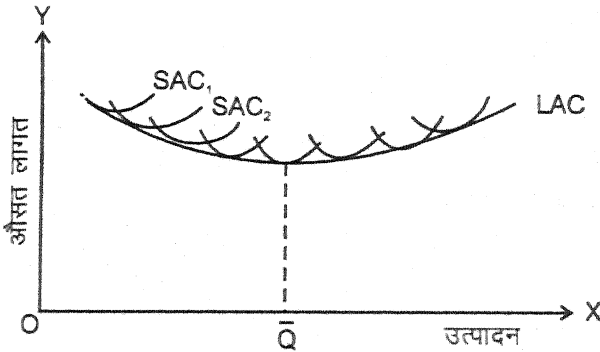
उपर्युक्त चित्र में दीर्घकालीन औसत लागत वक्र (LAC) आच्छादन वक्र है जो विभिन्न अल्पकालीन लागत वक्रों (SAC_S) को मिलाकर निरूपित किया गया है। जैसा कि स्पष्ट है, आच्छादन वक्र वस्तुतः अल्पकालीन लागत वक्रों की बाहरी सीमा है।

Environment (एन्वायरमेंट) **पर्यावरण**

वह वातावरण जिसे मूल रूप में प्रकृति ने मानव, जीव-जन्तुओं तथा पेड़-पौधों के अस्तित्व हेतु बनाया है। इनमें जल, वायु, मिट्टियाँ आदि शामिल हैं। परन्तु उद्योगों तथा कृषि के अन्तर्गत उत्पादन को विशाल पैमाने पर तथा द्रुत गति से बढ़ाने की लालसा के कारण आज विश्व में सर्वत्र पर्यावरण प्रदूषित हो गया है।

व्यापक अर्थ में हम प्रायः पर्यावरण के अन्तर्गत उस माहौल को लेते हैं जिसमें व्यक्ति, समाज या उत्पादन करने वाली संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।

Environmental impact assessment
(एन्वायरमैंटल इम्पैक्ट एसैसमेंट) **पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन**
किसी नई निवेश परियोजना का प्राकृतिक पर्यावरण पर क्या प्रभाव होगा इसका आकलन करना।

Equality (ईक्वालिटी) **समानता**
विभिन्न इकाइयों के मूल्यों में समानता। उदाहरण के लिए, किसी राज्य में सभी लोगों की प्रति व्यक्ति आय, या सभी खेतों में गेहूँ की उत्पादकता यदि समान हो तो वह समानता कहलाएगी।

Equalizing wage differential (इक्वेलाइज़िंग वेज डिफ्रेंशियल)
मज़दूरी के अन्तर को पाटना
यदि विभिन्न श्रमिकों के कार्य करने की दशाओं– जैसे काम के खतरे, शुद्ध हवा की उपलब्धता, आवास की दूरी आदि में अन्तर हो तो उनकी मज़दूरी में अन्तर रख कर कुछ श्रमिकों की असुविधा हेतु उन्हें क्षतिपूर्ति दी जा सकती है। इस प्रकार के मज़दूरी दरों में अन्तर प्रायः श्रमिक संघों को भी स्वीकार्य होते हैं।

Equation (ईक्वेशन) **समीकरण**
विभिन्न चरों के मध्य सम्बन्ध दर्शाने वाली गणितीय विधि। उदाहरण के लिए, $C = 100 + 0.8Y$ समीकरण में C तो उपभोग व्यय है, Y उपभोक्ता की आय है जबकि 0.8 आय में से उपभोग हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला अनुपात है। यदि Y में वृद्धि होती है तो उस वृद्धि का 80 प्रतिशत उपभोग हेतु प्रयुक्त हो जाएगा।

Equilibrium (इक्वीलिब्रियम) **साम्य स्थिति**
वह स्थिति जिसमें दो परस्पर विरोधी प्रवृत्ति वाले समीकरणों का सन्तुलन हो जाता है। उदाहरण के लिए, माँग व कीमत में प्रतिकूल सम्बन्ध होता है $(D = a - bP)$ जबकि पूर्ति तथा कीमत के बीच धनात्मक सम्बन्ध होता है $(S = \alpha + \beta P)$। यदि दोनों समीकरणों को एक साथ रखा जाए तो हमें वह कीमत ज्ञात हो जाती है जिस पर माँग व पूर्ति के मध्य समानता होगी $(D = S)$। इसी प्रकार बचत व निवेश की साम्य स्थिति ज्ञात की जा सकती है।
बाज़ार में विभिन्न विक्रेताओं की रणनीतियों के मध्य साम्य स्थिति तब प्राप्त होती है जब प्रत्येक विक्रेता अन्य विक्रेताओं की रणनीतियों को दृष्टिगत रखकर अपनी कीमत व बिक्री सम्बन्धी रणनीति बनाए। यह *खेल सिद्धान्त के अन्तर्गत प्राप्त साम्य होगा।*

Equity capital (इक्वीटी केपीटल) **शेयर पूँजी**
वह वित्तीय प्रतिभूति जो व्यक्तियों तथा संस्थाओं को इसलिए दी जाती है कि वे संयुक्त कम्पनी को दीर्घकालीन पूँजी प्रदान कर सकें। इन्हें साधारण अंश भी कहा जाता है तथा ऐसी पूँजी साधारण पूँजी कहलाती है।

Estate duty (एस्टेट ड्यूटी) **सम्पत्ति कर**

ऐसा कर जो किसी व्यक्ति की निजी सम्पत्ति पर उस समय लगाया जाता है जब उसका हस्तांतरण होता है।

Euler's theorem (ऑइलर थ्योरम) **ऑइलर प्रमेय**

एक गणितीय प्रमेय, जो सीमान्त तथा औसत उत्पादन का सम्बन्ध दर्शाता है। इसका प्रतिपादन एक स्विस गणितज्ञ एल. ऑइलर ने किया था। इस प्रमेय के अनुसार, कुल उत्पादन विभिन्न आदाओं (इनपुट्स) की संख्या तथा उनकी सीमान्त उत्पादकता के गुणन फलन का योग है। यदि प्रत्येक साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान पारिश्रमिक दिया जाए तो कुल भुगतान भी कुल उत्पादन के मूल्य के समान हो जाता है। परन्तु ऑइलर प्रमेय की व्यावहारिकता के लिए यह आवश्यक है कि औसत तथा सीमान्त उत्पादकता समान हो, अर्थात् पैमाने के समतामान प्रतिफल के अनुरूप उत्पादन हो। अन्य शब्दों में, $AP_{xi}=MP_{xi}=P_{xi}$ होने पर ऑइलर प्रमेय लागू होता है। इस समीकरण में X_i (i^{th}) साधन है, जबकि AP व MP सीमान्त उत्पादकता के प्रतीक हैं।

Eurocurrency (यूरोकरेन्सी) **यूरोपियन संघ के देशों के पारस्परिक व्यापार व लेन-देन हेतु प्रचलित मुद्रा**

यह मुद्रा प्रत्येक देश की अपनी मुद्रा के अतिरिक्त है तथा इसकी विनिमय दर यूरोपीयन संघ के देशों की मुद्राओं के अतिरिक्त विश्व की अन्य प्रमुख मुद्राओं के रूप में भी निर्धारित की गई है।

European Economic Community (EEC), European Union

(यूरोपियन इकॉनोमिक कम्यूनिटी, यूरोपियन यूनियन)

देखिए Common market (साझा बाज़ार)।

Ex-ante (एक्स आंते) **प्रत्याशित**

कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पूर्व कोई आर्थिक इकाई जिस प्रतिफल की अपेक्षा करती है उसे प्रत्याशित प्रतिफल कहते हैं। किसी परियोजना में निवेश करने से पूर्व उससे प्राप्त होने वाली अतिरिक्त आय या रोज़गार आदि का अनुमान किया जाता है। ये *सब प्रतिफलों के अपेक्षित प्रवाह प्रत्याशित प्रतिफल कहलाते हैं।* इन्हें केवल अनुभव के आधार पर निरूपित किया जाता है, और इसलिए इनका मूल्य भी परोक्ष रूप से ही अनुमानित किया जाता है।

Excess capacity (एक्सेस केपेसिटी) **अतिरिक्त क्षमता; अप्रयुक्त क्षमता**

यदि किसी फर्म उत्पादन का इष्टतम स्तर OQ हो तथा वास्तविक उत्पादन इससे कम हो तो उसके पास अतिरिक्त अथवा अप्रयुक्त क्षमता विद्यमान है।
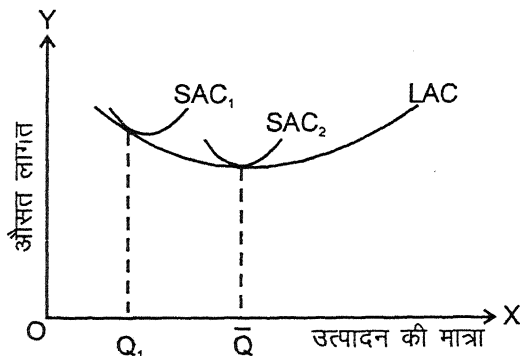
उपर्युक्त चित्र में न्यूनतम दीर्घकालीन औसत लागत पर $O\bar{Q}$ उत्पादन किया जा सकता है जिसे इष्टतम स्तर भी कहते हैं। परन्तु यदि फर्म केवल एक प्लांट लगाकर OQ_1 मात्रा में ही उत्पादन करती है तो $Q_1\bar{Q}$ को अतिरिक्त क्षमता कहा जाएगा।

Excess demand (एक्सेस डिमांड) **अतिरिक्त माँग; माँग का आधिक्य**

ऐसी स्थिति जिसमें निर्दिष्ट कीमत पर पूर्ति की अपेक्षा वस्तु की माँग अधिक हो।
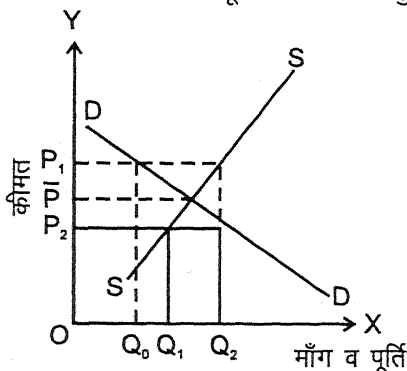
उपरोक्त चित्र में कीमत $O\bar{P}$ होने पर माँग तथा पूर्ति में साम्य स्थिति है। परन्तु यदि कीमत OP_2 हो तो जहां माँग OQ_2 है वहीं पूर्ति OQ_1 ही रहेगी। माँग का यह अतिरेक Q_1Q_2 है।

Excess profit (एक्सेस प्रोफिट) **अतिरिक्त लाभ**

प्रायः सामान्य लाभ की स्थिति वहां होती है जहां औसत लागत तथा कीमत समान हों (AC=Price)। लेकिन यदि कीमत, औसत लागत से अधिक हो तो यह अतिरिक्त लाभ की स्थिति कहलाती है। इसे असामान्य लाभ भी कहा जाता है।

Excess supply (एक्सेस सप्लाई) **अतिरिक्त पूर्ति; पूर्ति का आधिक्य**

माँग की तुलना में निर्दिष्ट कीमत पर पूर्ति का अधिक होना। ऊपर दिए गए चित्र

में यदि कीमत बढ़कर OP_1 हो जाए तो पूर्ति बढ़कर OQ_2 हो जाएगी लेकिन माँग के नियम के अनुरूप माँग घटकर OQ_0 रह जाएगी। इस स्थिति में पूर्ति का आधिक्य Q_0Q_2 होगा।

Exchange (एक्सचेंज) **विनिमय**

विनिमय के अर्थ अलग–अलग संदर्भ में देखे जाने चाहिए। सबसे अधिक प्रचलित अर्थ में विनिमय का अर्थ है सम्पति, वस्तु या सेवा का मुद्रा या अन्य किसी वस्तु अथवा सेवा के बदले आदान प्रदान। विनिमय का एक अर्थ शेयर बाजार में अंशों के व्यापार से भी लिया जाता है, जैसे स्टॉक एक्सचेंज। एक तीसरे अर्थ में मुद्रा के बदले निर्दिष्ट दर पर कितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी, यह देखा जाता है।

Exchange control (एक्सचेंज कन्ट्रोल) **विनिमय नियंत्रण**

बैंकिंग व्यवस्था के माध्यम से देश के निवासियों द्वारा विदेशी मुद्राओं की खरीद व बिक्री पर नियंत्रण। सरकार का विनिमय नियंत्रण के पीछे उद्देश्य यह रहता है कि देश की मुद्रा का विदेशी मुद्राओं के रूप में मूल्य अधिक न गिरने पाए। देश के लोगों के पास विद्यमान विदेशी मुद्राओं को बदलने के लिए उन्हें केंद्रीय बैंक से अनुमति लेनी होती है। बहुधा विनिमय नियंत्रण के माध्यम से विशिष्ट प्रकार के आयातों को सीमित करने का भी प्रयास किया जाता है।

Exchange equalization account
(एक्सचेंज इक्वेलाइज़ेशन एकाउंट) **विनिमय समानीकरण कोष**

देश की मुद्रा के विदेशी मुद्राओं के रूप में विनिमय मूल्य में स्थिरता बनाए रखने हेतु केन्द्रीय बैंक द्वारा रखा गया विदेशी मुद्राओं का कोष।

Exchange rate (एक्सचेंज रेट) **विनिमय दर**

किसी एक मुद्रा का किसी अन्य मुद्रा के रूप में विनिमय मूल्य। यदि एक डालर का मूल्य भारत में 47.4 रुपए हो तो यह डालर की भारतीय मुद्रा के रूप में विनिमय दर कहलाएगी। परम्परागत रूप में विनिमय दर का निर्धारण देश के केंद्रीय बैंक द्वारा किया जाता था। परन्तु आज विश्व के सभी प्रमुख देशों में विदेशी मुद्रा बाज़ार द्वारा विनिमय दर का निर्धारण होता है। यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि विदेशी मुद्रा की माँग (आयातों द्वारा निर्धारित) तथा पूर्ति (निर्यातों द्वारा निर्धारित) में उतार चढाव होने के कारण विनिमय दर में भी लचीलापन बना रहता है; इसमें रोजाना परिवर्तन होता रहता है।

Exchange rate exposure
(एक्सचेंज रेट एक्सपोज़र) **विनिमय दर में खुलापन**

वह सीमा जिस तक विनिमय दर में परिवर्तन होने पर किसी फर्म को हानि होने की आशंका रहती है। फर्म को दो स्थितियों में विनिमय दर के परिवर्तन से यह हानि हो सकती है :

(अ) उस समय, जबकि फर्म वस्तुओं का आयात–निर्यात करती है अथवा विदेशों में पूँजी निवेश करती है या वहाँ से उधार लेती है।

(ब) उस समय जबकि विनिमय दर में परिवर्तन के फलस्वरूप फर्म की उत्पादन या विपणन प्रक्रियाओं में परिवर्तन होते हैं, तथा फिर उसके कारण भविष्य में विदेशी मुद्राओं के प्रवाह पर प्रभाव होते हैं।

Exchange rate regime (एक्सचेंज रेट रेजिम) **विनिमय दर व्यवस्था**

वह तंत्र जिसके माध्यम से विभिन्न मुद्राओं के मध्य विनिमय दरों का निर्धारण होता है। स्वर्णमान के अन्तर्गत मुद्राएँ स्वर्ण की मात्रा से जुड़ी होने के कारण उनकी विनिमय दर स्थिर रहती थी। आधुनिक युग में विदेशी मुद्रा की माँग व पूर्ति में परिवर्तन के कारण विनिमय मूल्य में किसी रेन्ज के भीतर उच्चावचन होते रहते हैं।

Exchequer (एक्सचेकर) **संघीय खाता**

देश के केन्द्रीय बैंक के पास विद्यमान संघीय सरकार का खाता, जिसमें से सरकारी भुगतान किए जाते हैं।

Excise duty (एक्साइज़ ड्यटी)

केन्द्रीय या राज्य सरकार द्वारा निर्दिष्ट वस्तुओं के *उत्पादन पर* रोपित परोक्ष कर।

Exclusive dealing

(एक्सक्लूज़िव डीलिंग) **व्यापार करने का एकछत्र अधिकार**

कभी–कभी एक खुदरा अथवा थोक विक्रेता को किसी वस्तु के विक्रय अथवा वितरण हेतु एक छत्र अधिकार मिल जाता है। इस प्रकार के एक मात्र अधिकार से जहां उत्पादन करने वाली फर्म को सुविधा रहती है, वहीं महत्वपूर्ण उपभोग वस्तुओं के संदर्भ में ऐसा अधिकार होने पर उपभोक्ताओं का शोषण होने की प्रबल संभावना रहती है।

Ex-dividend (एक्स डिविडेंड) **लाभांश की घोषणा के पश्चात् शेयर की बिक्री**

लाभांश की घोषणा के पश्चात् लेकिन इसके भुगतान से पूर्व *शेयर का विक्रेता लाभांश* पर अपना अधिकार कायम रख सकता है। ऐसी स्थिति में शेयर के क्रेता को लाभांश नहीं मिल पाएगा।

Exim bank (एक्ज़िम बैंक) **आयात-निर्यात बैंक**

किसी देश (यथा भारत, सं.रा. अमरीका आदि) का वह बैंक जो व्यापार, विशेष रूप से निर्यातों, में वृद्धि हेतु निजी क्षेत्र की संस्थाओं को वित्तीय सहायता देता है।

Exogenous variable (एक्सोजेनस वेरिएबल) **बाह्य निर्धारक चर**

एक ऐसा चर, जो किसी आर्थिक मॉडल के कार्य को प्रभावित तो करता है लेकिन मॉडल में दिए गए सम्बन्धों का जिस पर कोई प्रभाव नहीं होता। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय आय के मॉडल में निर्यातों में वृद्धि से सकल माँग में वृद्धि होती है, जिससे राष्ट्रीय आय भी बढ़ती है। लेकिन निर्यातों के निर्धारण नें राष्ट्रीय आय का नहीं, अपितु किसी दूसरे देश की आयात प्रवृत्ति का योगदान होता है।

Expectations (एक्सपेक्टेशन्स) **अपेक्षाएँ**

वर्तमान आर्थिक घटनाओं को प्रभावित करने वाली भावी घटनाओं के अनुमान। प्रत्येक व्यक्ति का भविष्य के विषय में अपना एक दृष्टिकोण होता है, और इसलिए समग्र रूप में आर्थिक घटनाओं के स्वरूप का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इसीलिए प्रायः आर्थिक विश्लेषण में अपेक्षाओं को विभिन्न मॉडलों में एक चर के रूप में शामिल कर लिया जाता है। इसे या तो "अन्य बातें समान रहें" शीर्षक के रूप में अथवा विवेकशील अपेक्षाओं की परिकल्पना (rational expecatations hypothesis) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जॉन मेनार्ड केन्ज़ ने आर्थिक सिद्धान्तों में अपेक्षाओं की भूमिका को काफी महत्व दिया। विशेष रूप से व्यापार चक्रों तथा मुद्रा की सट्टा माँग का विश्लेषण करते समय इस अवधारणा को काफी महत्व दिया गया।

Expenditure (एक्सपेंडिचर) **व्यय**

सम्पत्ति अथवा वस्तुओं के क्रेताओं द्वारा किसी सम्पत्ति या वस्तु के क्रय पर किया गया व्यय। यह व्यय विक्रेता का कुल आगम (revenue) बन जाता है। समग्र रूप में परिवारों, व्यावसायिक फर्मों तथा सरकार द्वारा किया गया व्यय सकल माँग का रूप लेता है तथा अर्थव्यवस्था की गतिविधियों के स्तर को निर्धारित करता है।

Expenditure tax (एक्सपेंडिचर टैक्स) **व्यय पर कर**

यह एक प्रत्यक्ष कर है, तथा परिवार या एक व्यक्ति के द्वारा किए गए व्यय पर लगाया जाता है। प्रायः कर दाता की कुल प्राप्तियों में से बचत को घटाने पर जो राशि प्राप्त होती है, उसे उपभोग व्यय मान कर उस पर कर लगाया जाता है। प्रायः व्यय पर रोपित कर को आयकर का विकल्प माना जाता है। दोनों ही कर आनुपातिक हो सकते हैं अथवा प्रगतिशील।

Experience curve or learning curve
(एक्सपीरियंस कर्व ऑर लर्निंग कर्व) **अनुभव वक्र**

अनुभव के आधार पर फर्म के प्रबन्धकों द्वारा किए गए ऐसे प्रयास जिनसे प्रति इकाई लागत में कमी होती है। प्रायः जैसे जैसे प्रबन्धकों को अधिक अनुभव प्राप्त होता है, उनकी *कार्यकुशलता में निखार* आता है, तथा वे इस प्रकार की तकनीक का उपयोग करते हैं जिससे उत्पादन की लागत में लगातार कमी होती जाती है।
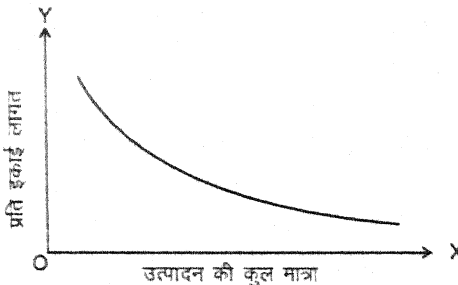
उपरोक्त चित्र अनुभव मूलक सुधारों के परिणामस्वरूप औसत उत्पादन लागत में हुई निरन्तर कमी को प्रदर्शित करता है।

Explicit cost (एक्सप्लिसिट कॉस्ट) **प्रत्यक्ष लागत; मौद्रिक लागत**

एक फर्म द्वारा उत्पादन प्रक्रिया हेतु बाहरी इनपुट्स या आदाओं के लिए चुकाई गई लागतें। श्रमिकों, ऋणदाताओं, भू–स्वामी, प्रबन्धकों आदि को चुकाई गई मज़दूरी, ब्याज़, लगान या किराया तथा पगार। इसके विपरीत आन्तरिक लागतें वे हैं जिन्हें उद्यमी स्वयं के साधनों के लिए चुकाता, बशर्ते उन्हें वह बाहर से जुटाता।

Exploitation (एक्सप्लॉयटेशन) **शोषण**

किसी अन्य व्यक्ति की विवशता का लाभ उठाते हुए उसकी पात्रता से कम चुकाना अथवा निर्दिष्ट भुगतान देकर काफी अधिक काम लेना। कार्ल मार्क्स ने इसे अतिरिक्त मूल्य की संज्ञा दी तथा कहा कि श्रमिक जितने मूल्य का सृजन करता है उसकी तुलना में उसे बहुत कम मज़दूरी दी जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि पूँजीपति अपने लाभ को बढ़ाने हेतु महिलाओं व बच्चों से काफी अधिक काम लेता है, तथा मज़दूरी कम देता है। **इससे शोषण का जन्म होता है।**

इसका एक अर्थ साधनों का विदोहन भी है। जैसे खनिज पदार्थों, खजिन तेल आदि को निकाल कर उद्योगों, परिवहन आदि के लिए उपयोग में लेना।

Exponent (एक्सपोनेंट) **घात**

किसी समीकरण में आश्रित चर से सम्बन्ध व्यक्त करने हेतु स्वतंत्र चर का घात। उदाहरण के लिए :

$$Y=X^2$$

इसका यह अर्थ है कि यदि X की मात्रा 3 हो तो Y का मूल्य 9 होगा जबकि X=4 होने पर Y=16 होगा।

Export (एक्सपोर्ट) **निर्यात**

देश में उत्पादित वस्तु को बाहर भेजकर विदेशी मुद्रा अर्जित करना। निर्यात का दूसरा अर्थ है, विदेशी यात्रियों आदि के देश में भ्रमण के दौरान प्राप्त विदेशी मुद्रा (परोक्ष निर्यात)। इसमें बैंकिंग, बीमा आदि सेवाओं के माध्यम से प्राप्त विदेशी मुद्रा भी शामिल है। एक तीसरे अर्थ में देश के व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा **किसी अन्य देश में** पूँजी का निवेश भी निर्यात कहलाता है। देश के भुगतान संतुलन को अनुकूल बनाने हेतु निर्यात बढ़ाना ज़रूरी है।

Export credit (एक्सपोर्ट क्रेडिट) **निर्यात हेतु साख**

नगद भुगतान की अपेक्षा स्थगित भुगतान (साख) के आधार पर निर्यात करना।

Export incentives (एक्सपोर्ट इन्सेंटिव्ज़) **निर्यातों को प्रोत्साहन**

सरकार द्वारा निर्यातों को बढ़ावा देने हेतु निर्यात पर अनुदान तथा/अथवा करों में राहत देना। निर्यात करने वालों को आसान शर्तों पर साख उपलब्ध कराना आदि

भी इसी नीति का एक अंग हो सकता है।

Export-led growth

(एक्सपोर्ट लेड ग्रोथ) **निर्यात आधारित संवृद्धि या विकास**

यदि निर्यात को अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख क्षेत्र मान लें तो यह कहा जा सकता है कि निर्यात में वृद्धि होने पर देश में उत्पादित वस्तुओं की माँग बढ़ेगी, जिससे उनका उत्पादन बढ़ेगा तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी। इस प्रकार निर्यात संवर्द्धन से राष्ट्रीय आय बढ़ती है।

Export multiplier (एक्सपोर्ट मल्टीप्लायर) **निर्यात-गुणक**

देश के निर्यातों में वृद्धि के अनुपात से राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि का अनुपात। यदि निर्यातों में 20 प्रतिशत वृद्धि होने पर राष्ट्रीय आय में 30 प्रतिशत वृद्धि होती है तो निर्यात गुणक 1.5 होगा।
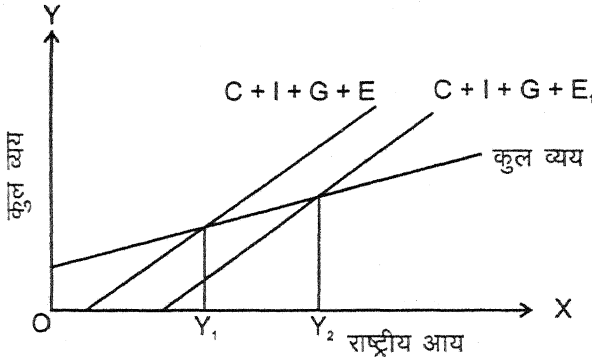
राष्ट्रीय आय का पूर्व स्तर Y_1 था। निर्यात में वृद्धि (E_1-E) होने पर यह Y_2 हो जाता है। अन्य चरों के यथावत् रहते हुए निर्यातों में हुई वृद्धि की तुलना में राष्ट्रीय आय में अधिक वृद्धि होती है।

Export restraint agreement

(एक्सपोर्ट रेस्ट्रेन्ट एग्रीमेंट) **निर्यात पर अंकुश हेतु समझौता**

एक निर्यातक देश तथा आयात करने वाले देश के बीच स्वैच्छिक समझौता, जिसके अनुसार निर्दिष्ट वस्तु के व्यापार को सीमित किया जाता है। इसके अनुसार उस वस्तु की निर्यात/आयात की सीमा तय कर दी जाती है।

Export subsidy (एक्सपोर्ट सब्सिडी) **निर्यातों पर अनुदान**

निर्यात करने वालों को सरकार की ओर से वित्तीय अनुदान जिसके कारण विदेशों से प्राप्त भुगतान की अपेक्षा उन्हें वस्तुतः अधिक राशि प्राप्त होती है। प्रायः ये अनुदान उस समय दिए जाते हैं जबकि देश में उत्पादन लागतें ज्यादा होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता करने में देश के निर्यातकर्ता सक्षम नहीं होते।

परन्तु अनुदान मिलने पर वे अपनी वस्तुओं को लागत से कम कीमत पर भी निर्यात कर सकते हैं।

इस प्रकार अनुदानों के माध्यम से निर्यातों को प्रोत्साहन दिया जाता है।

Export surplus (एक्सपोर्ट सरप्लस) **निर्यातों का आधिक्य**

आयातों की तुलना में कुल निर्यातों के मूल्य का अधिक होना।

Ex-post (एक्स पोस्ट) **वास्तविक मूल्य**

किसी घटना के बाद प्राप्त मूल्य, उत्पादन या आय। किसी भी निर्णय के बाद की प्राप्ति। यदि किसी परियोजना से प्रति वर्ष 5 लाख रुपए का लाभ प्राप्त होने की आशा है तो यह उसकी प्रत्याशित आय मानी जाती है। लेकिन परियोजना की क्रियान्विति के बाद यह आय 4.5 लाख रुपए हो तो यह आय का वास्तविक मूल्य कहलाएगा।

Exposure to risk (एक्सपोज़र टू रिस्क) **ज़ोखिम की सीमा**

वह सीमा जहां तक ऋणदाता संस्थाएँ ऋण लेने वालों की विफलता के कारण हानि उठा सकते हैं। इस संभावित हानि से बचने हेतु ऋण दाता संस्थाएँ यथासम्भव सुरक्षित ऋण ही देने का प्रयास करते हैं।

External balance (एक्सटर्नल बेलेन्स) **बाह्य शेष**

शेष विश्व के साथ किए गए टिकाऊ सौदों का पैटर्न। यदि पूँजी का आवागमन बिल्कुल न हो तो एक स्थैतिक अर्थव्यवस्था में बाह्य शेष का अर्थ है चालू खातों में शून्य भुगतान शेष। यदि ऐसा न हो तो चालू खाते में घाटा होने पर विदेशी मुद्रा कोषों में कमी हो जाएगी। यदि चालू खाते में बचत है तो विदेशी मुद्रा कोष बिना सीमा के बढ़ जाएँगे।

External diseconomies (एक्सटर्नल डिसइकोनोमीज़) **बाह्य अबचतें**

किसी फर्म के पैमाने में वृद्धि होने पर कुछ ऐसी लागतें बढ़ जाती हैं जिनका भार फर्म पर नहीं पड़ता। यदि वृहत् स्तर पर उत्पादन बढ़ने पर जल या वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है तो इन्हें पैमाने की अबचतें कहा जाता है।

Externality (एक्सटर्नेलिटी) **बाह्यता**

किसी व्यक्ति या संस्था की स्वयं की गतिविधि से नहीं, अपितु बाहरी शक्तियों की भूमिका के कारण उत्पन्न लाभ या हानि। उदाहरण के लिए, यदि किसी फर्म को अन्य फर्म द्वारा प्रशिक्षित प्रबन्धक बिना अतिरिक्त भुगतान किए उपलब्ध हो जाएँ, तो यह बाह्यता (लाभप्रद) है। यदि किसी लांड्री वाले को अन्य किसी फर्म द्वारा किए गए वायु प्रदूषण के कारण अधिक लागत वहन करनी पड़े तो यह बाह्यताजनित लागत या हानि है। इसी प्रकार यदि पड़ौस में बगीचा हो तथा उससे पराग लेकर मधु–मक्खियां किसी शहद उत्पादक को लाभ पहुँचाएँ तो यह भी बाह्यता होगी।

Extrapolate (एक्सट्रापोलेट) **बाह्यगणन करना**

काल श्रेणी के अंतर्गत वास्तविक मूल्यों को एक सरल रूप में आगे बढ़ाना या बाह्य गणना करना। प्रायः काल श्रेणी विश्लेषण के अन्तर्गत उच्चावचन होने के बावजूद एक सरल रेखा का निरूपण सांख्यिकीय विधि से करके इसे आगे बढ़ाना ही बाह्यगमन कहलाता है।
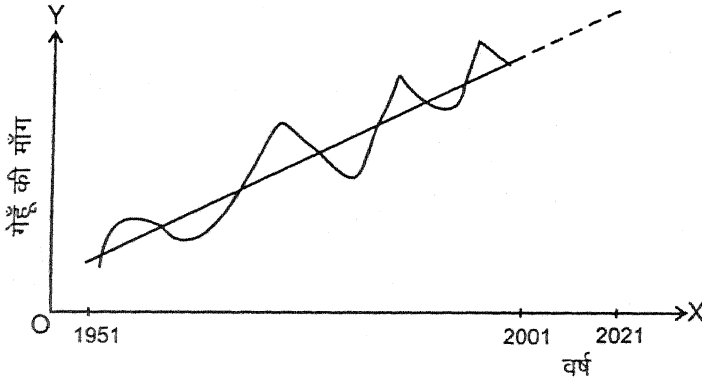
उपर्युक्त चित्र में 2001 तक गेहूँ की माँग के वास्तविक आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। एक सरल रेखा इस माँग के उच्चावचनों को दृष्टिगत रखते हुए 1951 से 2001 तक की प्रवृत्ति को दर्शाते हुए इस प्रकार खींची गई है कि रेखा से ऊपर के व रेखा के नीचे के मूल्यों का प्रसरण समान हों। 2001 से 2021 के बीच बाह्यगणन के आधार पर इस सरल रेखा को बढ़ाकर 2001 में गेहूं की कितनी माँग होगी इसका पूर्वानुमान किया गया है।

□□□

F

Factor (फैक्टर) **साधन**

उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त साधन, जैसे कच्चामाल, श्रम, पूँजी, प्रबन्ध आदि। उत्पादन फलन के अन्तर्गत इन्हें इनपुट्स भी कहा जाता है।

Factor cost (फैक्टर कास्ट) **उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त साधनों की लागत**

एक अन्य संदर्भ–विशेष रूप से राष्ट्रीय आय की गणना के समय में – वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों की लागत में से परोक्ष करों तथा अनुदानों को घटाने पर प्राप्त राशि।

Factor endowment (फैक्टर एन्डाऊमेंट)

साधनों का स्टॉक, जिनके आधार पर कोई देश अपने यहां उत्पादन प्रक्रिया चालू रखता है। इनमें भूमि, खनिज पदार्थ, जल, वन सम्पदा, मिट्टियां आदि प्रकृति प्रदत्त साधनों को शामिल किया जाता है। इनके अलावा श्रम तथा पूँजी स्टॉक भी साधनों के स्टॉक में सम्मिलित रहते हैं।

Factor income (फैक्टर इन्कम) **साधनों से आय**

साधनों के स्वामियों को प्राप्य आय, जिनके योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं। उदाहरण के लिए, श्रमिकों को प्राप्त मज़दूरी, पूँजी पर ब्याज़, भू–स्वामियों को प्राप्त लगान या किराया, प्रबन्धकों को प्राप्त पगार तथा उद्यमियों को प्राप्त लाभ का योग साधनों की आय पर आधारित राष्ट्रीय आय है।

Factor intensity (फैक्टर इन्टैन्सिटी) **साधन की गहनता**

वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों का अनुपात अथवा सापेक्ष भाग। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश में श्रम की प्रचुरता के कारण पूँजी की तुलना में श्रम सस्ता हो और इसी कारण श्रम–पूँजी का अनुपात (L/K) अधिक हो तो यह श्रम प्रधान तकनीक कहलाएगी। इससे भिन्न स्थिति में पूँजी का बाहुल्य होने तथा ब्याज़ दर कम होने पर (K/L) अधिक होगा। इनसे भिन्न स्थिति कृषि की हो सकती है जहां उद्योगों की तुलना में भूमि–गहनता दिखाई देती है।

Factor market (फैक्टर मार्केट) **साधन का बाज़ार**

वह बाज़ार, जहां किसी साधन का क्रय–विक्रय होता है। जैसे श्रम का बाज़ार, पूँजी बाज़ार, भूमि का बाज़ार। इन बाज़ारों में सम्बद्ध साधनों की कीमतें उनकी माँग व पूर्ति के अनुसार निर्धारित होती हैं।

Factor prices (फैक्टर प्राइसेज) **साधनों की कीमतें**

उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त साधनों की कीमतें। इन कीमतों का निर्धारण साधन–बाज़ार

की प्रकृति के अनुसार होता है। यदि वह बाज़ार प्रतियोगिता पूर्ण है तो साधन की माँग व पूर्ति के आधार पर उसकी कीमत निर्धारित होगी। यदि साधन का क्रेता एक ही व्यक्ति या फर्म हो तो कीमत का निर्धारण उसी के हाथ में होगा। यदि साधन की पूर्ति एकाधिकारी संगठन के पास केंद्रित हो (श्रमिक संघ ही पूर्ति का निर्धारण करे, तो उसके द्वारा ही साधन की कीमत निर्धारित होगी।

Factor productivity (फैक्टर प्रोडक्टिविटी) **साधन की उत्पादकता**

स्थिर कीमतों पर किसी साधन की प्रति इकाई उत्पादकता का मूल्य। यह भौतिक या मौद्रिक मूल्य पर आधारित होती है। साधन की उत्पादकता औसत या सीमान्त किसी भी रूप में मापी जा सकती है। उदाहरण के लिए

$$Q = f(L, K)$$

जहां उत्पादन की मात्रा Q है जबकि L व K क्रमशः श्रम व पूँजी की मात्राएँ हैं।

इस मॉडल में $\frac{Q}{L}$ व $\frac{dQ}{dL}$ क्रमशः श्रम की औसत तथा सीमांत उत्पादकता के द्योतक हैं, जबकि $\frac{Q}{K}$ तथा $\frac{dQ}{dK}$ क्रमशः पूँजी की औसत व सीमान्त उत्पादकता को प्रदर्शित करते हैं।

साधन की उत्पादकता के निर्धारक घटकों में इनकी मात्राएँ तथा उत्पादन की तकनीक को शामिल किया जाता है।

Factor proportions (फैक्टर प्रोपोर्शन्स) **साधनों के अनुपात**

दो या अधिक साधनों के अनुपात $\frac{K}{L}$ जिसके आधार पर इन का उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है।

Fair trading (फैयर ट्रेडिंग) **निष्पक्ष व्यापार**

प्रायः यह देखा गया है कि बाज़ार में एकाधिकारिक शक्तियों का उदय होने के साथ ही कीमत निर्धारण की प्रक्रिया विकृत होने लगती है, तथा उपभोक्ताओं तथा साधनों के स्वामियों का शोषण होने लगता है। फर्मों के विलय, परस्पर समझौतों या गठबंधन की नीतियों के आधार पर एकाधिकारिक शक्तियाँ प्रबल होती हैं तथा वस्तु अथवा साधन के व्यापार की निष्पक्षता समाप्त हो जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में भी किसी देश द्वारा अपनाई जा रही संरक्षणात्मक नीति के कारण भले ही देश के उद्योगों के हितों को समर्थन मिलता हो, तथापि व्यापार की निष्पक्षता का हनन होता है। यही कारण है कि देश के भीतर या बाहर विद्यमान एकाधिकारिक एवं संरक्षणात्मक नीतियो पर अंकुश लगाकर व्यापार को निष्पक्ष बनाने का प्रयास किया जाता है।

Fallacy of composition (फैलेसी ऑफ कम्पोजीशन) **संरचनात्मक भ्रांति**

आर्थिक सोच में एक भ्रांति है कि एक व्यक्ति या संस्था के लिए जो कुछ सही है वही समूचे समूह पर भी लागू होता है। उदाहरण के लिए, एक समूह द्वारा बचत को बढ़ाना अच्छी बात है परन्तु यदि समाज के सभी लोग अधिक बचत करें तो इससे सकल व्यय में कमी हो जाएगी जिससे आय भी कम होगी, और इससे कालांतर में बचत भी कम होगी।

FAO (एफ.ए.ओ.) **खाद्य एवं व्यापार संगठन**

एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, जो कृषि उत्पादन, वानिकी, पोषाहार, कृषि विपणन सम्बन्धी शोध आदि के विषय में अध्ययन करता है तथा अधिकारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है। विकासशील देशों की कृषि के विकास हेतु इसका दायित्व महत्वपूर्ण है।

Final income (फाइनल इनकम) **अंतिम आय**

किसी व्यक्ति या परिवार द्वारा प्राप्त आय में से प्रत्यक्ष करों को घटाने तथा हस्तांतरण आय (सामाजिक सुरक्षा लाभ आदि) को जोड़ने के बाद प्राप्त अन्तिम आय। इसे प्रयोज्य आय भी कहा जाता है।

Final products (फाइनल प्रोडक्ट्स) **अन्तिम उत्पाद**

वस्तुएँ तथा सेवाएँ, जिन्हें उपभोक्ता आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु ख़रीदते है। इनके विपरीत मध्यवर्ती वस्तुएँ हैं जिन्हें उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त किया जाता है। राष्ट्रीय आय के अनुमान हेतु अन्तिम उत्पादों की संख्या को उनके बाज़ार मूल्यों से गुणा किया जाता है।

Financial appraisal

(फाइनेन्शियल एप्रेज़ल) **वित्तीय आकलन; वित्तीय विश्लेषण**

किसी परियोजना में निहित पूँजीगत लागत तथा उसे प्राप्त होने वाली सकल तथा शुद्ध आय का रोकड़ प्रवाह निरूपित करना। वित्तीय आकलन के अन्तर्गत परियोजना के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले उत्पादन को *बाज़ार में प्रचलित कीमतों से गुणा करके* सकल आय ज्ञात की जाती है। इसी प्रकार सभी प्रकार की लागतों में केवल चुकाई गई लागतों को शामिल किया जाता है।

पूँजीगत लागत तथा परियोजना से प्रतिवर्ष प्राप्त होने वाले शुद्ध लाभ को रोकड़ प्रवाह के रूप में प्रस्तुत करने के बाद वित्तीय आकलन हेतु लाभ–लागत अनुपात, आन्तरिक प्रत्याय दर, अदायगी अवधि तथा शुद्ध वर्तमान मूल्य ज्ञात किए जाते हैं, तथा इनके आधार पर ही परियोजना की व्यवहार्यता देखी जाती है।

Financial innovation (फाइनेंशियल इनोवेशन) **वित्तीय नवप्रयोग**

वित्तीय संस्थाओं द्वारा उधार देने तथा उधार लेने हेतु आविष्कृत नई विधियां। इनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं : क्रेडिट कार्ड, ए.टी.एम. सुविधा, फोन द्वारा बैंकिंग सेवाएँ देना, मुद्रा के हस्तांतरण हेतु त्वरित सेवाएँ आदि।

Financial intermediary (फाइनेंशियल इन्टरमीडियरी) **वित्तीय मध्यस्थ**

एक ऐसा संगठन, जो वित्तीय बाज़ार में जमाकर्ता तथा उधार लेने वालों के बीच सेतु या मध्यस्थ का कार्य करता है।

Financial security (फाइनेंशियल सीक्योरिटी) **वित्तीय प्रतिभूति**

ऐसा प्रपत्र, जिसे वित्तीय कम्पनियां, संयुक्त कम्पनियां तथा सरकार द्वारा नई पूँजी जुटाने तथा उधार लेने हेतु जारी किया जाता है। इनमें शेयर, ऋण पत्र, हुंडियां, विनिमय बिल, ट्रेज़री बिल तथा बाँड शामिल हैं।

Financial system (फाइनेंशियल सिस्टम) **वित्तीय व्यवस्था**

वित्तीय संस्थाओं का नेटवर्क, जिसमें बैंक, व्यापारिक बैंक, सहकारी संस्थाएँ, भवन निर्माण समितियां आदि शामिल हैं, जो विभिन्न प्रकार के वित्तीय प्रपत्रों का लेन–देन करते हैं।

Fine tuning (फाइन ट्यूनिंग) **एकदम सही व्यवस्था**

राजकोषीय तथा मौद्रिक नीतियों के माध्यम से एक दम सही व्यवस्था कायम करना। यह व्यवस्था अल्पकाल हेतु सकल माँग में होने वाले उच्चावचनों को नियंत्रित करने हेतु की जाती है।

Firm (फर्म) **व्यावसायिक संस्थान; फर्म**

एक ऐसी आर्थिक इकाई, जो साधनों का उपयोग करके वस्तु का उत्पादन करती है अथवा इनकी विपणय क्रियाओं में सहयोग करती है। एक फर्म का उद्देश्य अपने लाभ के स्तर को अधिकतम करना अथवा हानि को न्यूनतम करना होता है। फर्म एकल स्वामित्व वाली, साझेदारी वाली, सहकारी संस्था या संयुक्त कम्पनी का रूप ले सकती है।

Firm location (फर्म लोकेशन) **फर्म की स्थिति**

उस स्थान का चयन, जहाँ फर्म अपना कार्य करना चाहती है। प्रायः यह स्थान बाज़ार के समीप होता है तथा वहाँ कार्य करने पर उत्पादन, परिवहन एवं विपणन की लागतें न्यूनतम होनी चाहिए।

Firm objectives (फर्म ऑब्जेक्टिव्ज़) **फर्म के उद्देश्य**

एक व्यावसायिक इकाई या फर्म का प्रमुख उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है। परन्तु गत चार–पांच दशकों में विद्वानों ने बाज़ार का अध्ययन करके यह पाया कि आज अधिकतम लाभ की प्राप्ति हेतु नहीं, अपितु अन्य उद्देश्यों को लेकर ये इकाइयां कार्य करती हैं। इनमें से कुछ उद्देश्य निम्न हैं : (i) बिक्री को अधिकतम करना, (ii) बाज़ार में वस्तु की कुल बिक्री में अपना अंश बढ़ाना अथवा इसे बनाए रखना, (iii) अपनी साख तथा गुणवता की पहचान बनाए रखना, (iv) एक साथ अनेक उद्देश्यों की पूर्ति करते रहना, (v) श्रमिकों से तालमेल बैठाए रखना ताकि हड़ताल न हो, (vi) श्रेष्ठतम प्रबन्ध व्यवस्था करना आदि।

First best (फर्स्ट बेस्ट) **प्रथम श्रेष्ठ; इष्टतम**

अर्थव्यवस्था की वह स्थिति, जिसमें साधनों तथा वस्तुओं के इष्टतम आवंटन की सभी शर्तें पूरी होती हों। यह स्थिति द्वितीय श्रेष्ठ की स्थिति से भिन्न है जिसमें यह मान्यता निहित रहती है कि दो या अधिक शर्तें पूरी न होने के कारण इष्टतम की तो प्राप्ति नहीं हो पाती लेकिन उसके समीप तक पहुंचा जा सकता है।

First degree price discrimination
(फर्स्ट डिग्री प्राइस डिस्क्रीमिनेशन) **प्रथम डिग्री का कीमत-विभेद**

कीमत विभेद की वह नीति, जिसके अन्तर्गत एक एकाधिकारी किसी उपभोक्ता को प्राप्त सीमान्त उपयोगिता के समान कीमत वसूल करता है, अर्थात् उपभोक्ता को किसी भी उपभोग इकाई से उपभोक्ता की बचत प्राप्त नहीं होती। उदाहरण के लिए, उपभोग की प्रथम इकाई के लिए उपभोक्ता 20 रुपए देने को तैयार है (यानी सीमान्त उपयोगिता = 20 रुपए है) और एकाधिकारी उसके लिए 20 रुपए ले ले तो उपभोक्ता की बचत शून्य है। यदि दूसरी इकाई के लिए उपभोक्ता 15 रुपए देने को तैयार हो और विक्रेता इस इकाई के लिए 15 रुपए वसूल करना चाहे, या फिर तीसरी इकाई के लिए 10 रुपए उपभोक्ता देना चाहे एवं एकाधिकारी इसके लिए 10 रुपए वसूल करना चाहता हो तो यह प्रक्रिया प्रथम डिग्री का कीमत विभेद कहलाएगी। इसके अन्तर्गत विक्रेता प्रत्येक इकाई के लिए उसकी सीमान्त उपयोगिता के समान मूल्य लेता है।

First derivative (फर्स्ट डेरीवेटिव) **प्रथम अवकलज**

स्वतंत्र चर की एक इकाई में परिवर्तन होने पर आश्रित चर में किस दर से परिवर्तन होता है, इसका माप। यदि $Y = f(x)$, तो प्रथम अवकलज $\frac{dy}{dx}$ होगा।

First in First out (FIFO)
(फर्स्ट इन, फर्स्ट आउट) **पहले अन्दर, पहले बाहर**

एक लेखाविधि, जिसके पीछे यह मान्यता रहती है कि फर्म जब कोई सामग्री उत्पादन हेतु प्रयुक्त करना चाहती है तो पहले उस सामग्री का उपयोग करेगी जो सबसे पहले क्रय की गई थी।

First order condition (फर्स्ट ऑर्डर कन्डीशन) **प्रथम क्रम की शर्त**

किसी फलन के मूल्य को किस स्तर पर अधिकतम या न्यूनतम किया जाएगा, उससे सम्बद्ध शर्त। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता X से प्राप्त अपनी उपयोगिता को अधिकतम करना चाहता है, $U = f(X)$

तो X के किस स्तर पर अधिकतम उपयोगिता प्राप्त होगी इसके लिए प्रथम अवकलन को शून्य के बराबर रखना होगा। अस्तु,

$$\frac{dU}{dX} = 0$$

यह प्रथम क्रम की शर्त है तथा X की सम्बद्ध इकाइयों को प्राप्त करने पर ही उपयोगिता फलन अधिकतम स्तर पर होगा।

Fiscal deficit (फिस्कल डेफिसिट) **राजकोषीय घाटा**

किसी राज्य या संघीय सरकार के राजस्व घाटे, शुद्ध कर्ज की राशि, पूँजीगत प्राप्तियाँ तथा समग्र घाटे का योग राजकोषीय घाटा कहलाता है। एक अन्य परिभाषा के अन्तर्गत राजस्व घाटे, पूँजीगत परिव्यय एवं शुद्ध उधार को राजकोषीय घाटा माना जाता है। जहां द्वितीय परिभाषा के अनुसार राजकोषीय घाटे को विभिन्न भागों में विभाजित किया जाता है, वहीं प्रथम परिभाषा इस घाटे को वित्तीय आधार पर प्रस्तुत करती है।

Fiscal drag (फिस्कल ड्रेग) **स्फीति जन्य राजकोषीय प्रवृति**

प्रगतिशील करों द्वारा आर्थिक विस्तार पर अंकुश। वस्तुतः जिस बिन्दु पर आयकर लागू होता है तथा जहां से कर की ऊँची दरें प्रारम्भ होती हैं ये सब मुद्रा के रूप में निर्धारित होती हैं। मुद्रा स्फीति के फलस्वरूप प्रत्यक्ष करों के रूप में आय का अनुपात इससे बढ जाता है, परन्तु परोक्ष करों के रूप में आय का अनुपात कम हो जाता है। परन्तु साथ ही प्रत्यक्ष करों का अनुपात बढने से उपभोक्ता की प्रयोज्य आय में भी कमी हो जाती हैं जिससे सकल माँग में कमी होती है।

Fiscal neutrality (फिस्कल न्यूट्रेलिटी) **राजकोषीय तटस्थता**

इस प्रकार की राजकोषीय नीति को लागू करना, जिससे अर्थव्यवस्था पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। उदाहरण के लिए, यदि कर प्रणाली के फलस्वरूप कुछ फर्में विशिष्ट प्रकार की मशीनों को अन्य की तुलना में अधिक तेज़ी से समाप्त करना चाहती हैं (भले ही उनकी आयु भी उतनी ही है) तो निवेश की प्रवृत्ति उन मशीनों के लिए बढ जाती है जहां करों की दरें कम हैं। राजकोषीय तटस्थता इस प्रकार की प्रवृत्ति को टालने का प्रयास करती है।

Fiscal policy (फिस्कल पॉलिसी) **राजकोषीय नीति**

करों तथा सरकारी व्यय के माध्यम से अर्थव्यवस्था को प्रभावित करना। इसके लिए करों की दरों में या कर वसूली के नियमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त राजकोषीय नीति के अन्तर्गत वस्तुओं व सेवाओं पर सरकारी व्यय में अथवा हस्तांतरण भुगतान (अनुदान, ब्याज़ अथवा पेंशन आदि) में परिवर्तन भी शामिल होते हैं। इन सभी उपायों का सकल माँग पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

Fiscal stance (फिस्कल स्टैंस) **राजकोषीय तैयारी**

सरकारी बजट में अर्थव्यवस्था के विस्तार अथवा संकुचन हेतु कर लगाने या सरकारी व्यय से सम्बद्ध नीतियों की दिशा। इसके अन्तर्गत सामान्य बजटीय स्थिति की समीक्षा की जाती है। यह कहा जाता है कि सरकारी राजकोषीय नीति को केवल

वास्तविक व्यय तथा कर राजस्व के आधार पर ही नहीं देखना चाहिए, क्योंकि इन पर आर्थिक गतिविधियों का प्रभाव पड़ता है। इस मॉडल में केवल यह सुनिश्चित् किया जाता है कि सरकार के कर राजस्व तथा व्यय में राष्ट्रीय आय के परिवर्तन की झलक दिखाई दे।

Fiscal year (फिस्कल ईयर) **राजकोषीय वर्ष**

यह सरकार के खातों के लिए निर्धारित 12 माह की अवधि है। भारत में राजकोषीय वर्ष 1 अप्रेल से लेकर 31 मार्च तक माना जाता है।

Fisher Equation (फिशर इक्वेशन)

इर्विंग फिशर का समीकरण, जो मुद्रा की कुल मात्रा, वस्तुओं की मात्रा तथा कीमत स्तर के सम्बन्ध को दर्शाता है। इसे फिशर का परिमाण सिद्धान्त भी कहते हैं। जिसके अनुसार $MV = PT$ । इस समीकरण में M तो सरकार द्वारा निर्गमित मुद्रा है, V इसका चलन वेग है, T वस्तुओं की कुल मात्रा का प्रतीक है तथा P कीमत स्तर को प्रदर्शित करता है। यदि V तथा T स्थिर रहें तो M तथा P में आनुपातिक वृद्धि होगी।

Fixed assets (फिक्स्ड एसेट्स) **स्थायी सम्पत्तियाँ**

ऐसी सम्पत्तियां जिन्हें कोई फर्म दीर्घकाल तक उपयोग में लेने हेतु ख़रीदती है, जैसे भवन, मशीनें आदि। फर्म के तलपट में इन सम्पत्तियों का शुद्ध मूल्य (ख़रीद मूल्य में से मूल्य ह्रास घटा कर) दर्शाया जाता है।

Fixed costs (फिक्स्ड कॉस्ट) **स्थिर लागतें**

ऐसी अल्पकालीन लागतें, जिनमें उत्पादन की मात्रा में वृद्धि होने पर भी कोई वृद्धि नहीं होती। इनमें भवन का किराया, प्रबन्धक की पगार, स्थायी सम्पत्तियों का मूल्य ह्रास आदि शामिल हैं। यदि फर्म कोई उत्पादन न करे तब भी ये लागतें तो वहन करनी ही होंगी। इन लागतों का अधिकतम लाभ वाले उत्पादन के स्तर से कोई सम्बन्ध नहीं होता, क्योंकि इनका प्रथम अवकलज शून्य होता है।

Fixed exchange rate system

(फिक्स्ड एक्सचेंज रेट सिस्टम) **स्थिर विनिमय दर व्यवस्था**

इस व्यवस्था के अन्तर्गत किसी देश की मुद्रा की अन्य देशों की मुद्राओं के रूप में विनिमय दरों को स्थिर रखा जाता है। उदाहरण के लिए, 1949 से 1967 के मध्य इसी व्यवस्था के अन्तर्गत ब्रिटिश पाउंड तथा अमरीकी डालर की विनिमय दर £1 = $2.80 पर स्थिर रखी गई थी। जब कभी विदेशी विनियम बाज़ार मे पाउंड मंहगा होता तो बैंक ऑफ इंग्लैंड डालर रखीदता था तथा पुनः £1 = $2.80 पर विनिमय दर को लाया जाता था। इसके विपरीत डालर मंहगा होने पर बैंक ऑफ इंगलैंड डालर की बिक्री कर देता था।
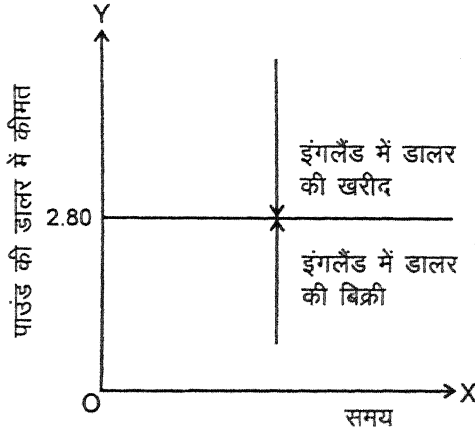
Fixed factors (फिक्स्ड फैक्टर्स) **स्थिर साधन**

उत्पादन के वे साधन, जिनमें परिवर्तन नहीं होता। अल्पकाल में मशीनों, भवन आदि में वृद्धि सम्भव नहीं होती जबकि श्रम, पूँजी आदि को परिवर्तनशील साधन माना जाता है। दीर्घ काल में प्रायः सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं। स्थिर साधनों से सम्बद्ध लागतों को ही स्थिर लागतें कहा जाता है।

Fixed-interest securities

(फिक्स्ड इन्टरेस्ट सिक्योरिटीज़) **स्थिर ब्याज़ वाली प्रतिभूतियां**

वे प्रतिभूतियां, जिनके अंकित मूल्य पर देय ब्याज़ स्थिर रहता है। उदाहरण के लिए, 1000 रुपए वाली प्रतिभूति पर 5.0 प्रतिशत की स्थिर दर पर ब्याज़ देय हो तो प्रतिवर्ष 50 रुपए ब्याज़ देय होगा। यदि बाज़ार में वह प्रतिभूति अधिक (कम) कीमत पर बिके तो वास्तविक रूप में अर्जित ब्याज़ दर कम (अधिक) होगी, लेकिन प्रतिभूति की निर्दिष्ट अवधि बीतने पर 50 रुपए ही ब्याज देय होगा।

Fixed investment (फिक्स्ड इन्वेस्टमेंट) **स्थिर निवेश**

टिकाऊ पूँजीगत उपकरणों व मशीनों में निवेश, जो उत्पादन प्रक्रिया में लम्बी अवधि तक प्रयुक्त होगा। यह आवश्यक नहीं कि स्थिर निवेश अचल सम्पत्ति (भवन आदि) से ही सम्बद्ध हो।

Fixed targets (फिक्स्ड टार्गेट्स) **निर्दिष्ट लक्ष्य**

समष्टिगत नीति के अन्तर्गत प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य, जैसे पूर्ण रोज़गार, कीमतों में स्थिरता, आर्थिक संवृद्धि, भुगतान शेष का संतुलन आदि, जिनके लिए सरकार प्रयत्नशील रहती है।

Flag of convenience (फ्लैग ऑफ कंवीनिएँस)

किसी ऐसे जहाज का पंजीकरण, जिसका स्वामित्व अनिश्चित् बना रहे

इंगलैंड में अनेक जहाज मालिकों ने करों तथा अनावश्यक सरकारी नियंत्रण से बचने हेतु इस प्रकार का तरीका अपनाया। कभी–कभी ब्रिटिश नाविकों के स्थान पर उन्होंने अन्य देशों के लोगों को जहाज पर काम देकर कम मज़दूरी दी।

Flexible exchange rate (फ्लैक्ज़िबल एक्सचेंज रेट) **लचीली विनिमय दर**

सरकार या केन्द्रीय बैंक की अपेक्षा विदेशी मुद्रा की माँग व पूर्ति के आधार पर विनिमय दर का निर्धारण। बाज़ार में माँग व पूर्ति में परिवर्तन होने पर भी तदनुसार विनिमय दर में भी परिवर्तन हो जाते हैं।

इस प्रणाली को **''फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट''** भी कहा जाता है।

Floor price (फ्लोर प्राइस) **न्यूनतम कीमत**

सरकार किसी भी जिंस की कीमत इस स्तर से नीचे नहीं जाने देती, तथा न्यूनतम समर्थन कीमत (Minimum support price) पर जिंस को ख़रीदना प्रारम्भ कर देती है। भारत सहित विश्व के सभी प्रमुख देशों में आज महत्वपूर्ण कृषि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन कीमतें घोषित की जा रही हैं।

Fluctuations (फ्लक्चुएशंस) **उच्चावचन; उतार-चढ़ाव**

दीर्घकाल में सभी आर्थिक चरों में अनवरत उतार चढ़ावों की प्रवृत्ति। इनमें अल्पकालीन दैव (random) तथा चक्रीय उच्चावचन दोनों ही शामिल हैं। कुल अवधि 2 वर्ष से 20 वर्ष।

Forced savings (फोर्स्ड सेविंग्स) **अनिच्छा पूर्वक की गई बचतें**

सरकार द्वारा प्रत्यक्ष करों या भविष्य निधि के अनुपात में वृद्धि करके लोगों को अधिक बचत करने पर विवश किया जा सकता है। प्रायः किसी संकट की स्थिति में ही ऐसा किया जाता है।

Fore closure (फोर क्लोज़र) **निषेधात्मक नीति**

विलय में सम्मिलित किसी कम्पनी द्वारा बाहरी फर्मों को माल की पूर्ति देने से इन्कार करना। इसके कारण वे फर्में अपेक्षाकृत प्रतियोगिता करने की स्थिति में नहीं रह पातीं। एक अन्य संदर्भ में बंधक रखी हुई सम्पत्ति पर ऋणदाता द्वारा अधिकार करना, क्योंकि ऋणी द्वारा मूल धन व ब्याज़ का भुगतान समय पर नहीं किया गया है।

Foreign direct investment; FDI (फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट)

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

किसी देश के व्यक्तियों या संस्थानों द्वारा अन्य देश की फर्मों की सम्पत्ति पर अधिकार अथवा सीधे उत्पादक संस्थाओं में निवेश करना। इसमें इन संस्थाओं की पूँजी में भागीदारी व इनको खरीदना शामिल हैं। निवेशकर्त्ता को निवेशित पूँजी पर अर्जित लाभांश को अपने देश भिजवाने की भी पूर्ण स्वतंत्रता रहती है।

Foreign exchange (फॉरेन एक्सचेंज) **विदेशी विनिमय**

दूसरे देशों की मुद्राएँ जिन्हें आयात हेतु कोई देश चुकाता है तथा/अथवा जिन्हें निर्यातों के बदले प्राप्त करता है।

Foreign exchange controls

(फॉरेन एक्सचेंज कन्ट्रोल्स) **विदेशी विनिमय नियंत्रण**

किसी देश के केंद्रीय बैंक द्वारा विदेशी मुद्राओं की उपलब्धता पर नियंत्रण। इसका उद्देश्य भुगतान शेष के घाटे को पाटना होता है। (देखिए विनिमय नियंत्रण या exchange controls)।

Foreign exchange market

(फॉरेन एक्सचेंज मार्केट) **विदेशी विनिमय बाज़ार**

वह बाज़ार, जिसमें विदेशी मुद्राओं का क्रय–विक्रय किया जाता है। इस बाज़ार का महत्व इसलिए है कि विश्व के लगभग सभी देश वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात व आयात करते हैं, अथवा निवेश के लिए उन्हें विदेशी मुद्रा की ज़रूरत होती है। अनेक संस्थाओं को निवेशित पूँजी का लाभांश अपने प्रधान कार्यालय को भेजना होता है। इस प्रकार विदेशी मुद्राओं की माँग व पूर्ति हेतु विदेशी विनिमय बाज़ार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

Foreign exchange reserves (फॉरेन एक्सचेंज रिज़र्व) **विदेशी विनिमय कोष**

दो या अधिक देशों के बीच भुगतान संतुलन को व्यवस्थित करने (भुगतान करने या प्राप्त करने) हेतु किसी देश के पास विद्यमान विदेशी मुद्राओं का कोष। इनमें अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास जमा कोष भी शामिल है।

जब कभी सभी स्रोतों के भुगतान व प्राप्तियों का समायोजन करने के बाद भी भुगतान शेष में भुगतानों का प्राप्तियों पर आधिक्य होता है तो विदेशी विनिमय कोषों में कमी करके उस घाटे को पूरा किया जाता है। इसके विपरीत जब प्राप्तियां अधिक होती है, तो ये विनिमय कोष बढ जाते हैं।

Foreign sector (फॉरेन सेक्टर) **विदेशी क्षेत्र**

अर्थव्यवस्था का वह भाग, जिसमें शामिल सभी गतिविधियों का अन्य देशों से सम्बन्ध होता है। इसमें आयात, निर्यात (वस्तुओं व सेवाओं–दोनों का) तथा पूँजी के प्रवाह शामिल किए जाते हैं।

Foreign trade (फॉरेन ट्रेड) **विदेशी व्यापार**

विदेशों से वस्तुओं के आयात तथा अन्य देशों को किए गए निर्यात। इन दोनों का अन्तर व्यापार शेष कहलाता है।

Foreign trade multiplier (फॉरेन ट्रेड मल्टीप्लायर) **विदेशी व्यापार गुणक**

प्रायः सकल राष्ट्रीय उत्पाद को उपभोग, निवेश तथा अनुकूल व्यापार शेष के रूप में परिभाषित किया जाता है। यदि यह अनुकूल व्यापार शेष बढता है तो स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय आय में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार विदेशी व्यापार गुणक निर्यात की प्रतिशत वृद्धि के फलस्वरूप सकल राष्ट्रीय उत्पाद में हुई वृद्धि के

प्रतिशत का अनुपात है। यदि आयात बढ़ते हैं तो यह अनुपात सकल राष्ट्रीय उत्पाद की कमी को प्रदर्शित करता है।

Forward integration (फॉरवर्ड इन्टीग्रेशन) **अग्रिम एकीकरण**

एक फर्म में **दो या अधिक चरणों** में कार्यरत अन्य फर्मों का विलय। *इसे शीर्ष एकीकरण भी कहा जाता है।* उदाहरण के लिए, आटा बनाने वाली इकाई का बेकरी तथा खुदरा ब्रेड विक्रेताओं के साथ एकीकरण हो जाए तो यह अग्रिम एकीकरण या अगली सम्बद्धता कहलाती है।

Forward market (फॉरवर्ड मार्केट) **अग्रिम बाज़ार**

एक ऐसा बाज़ार, जिसमें वस्तु, प्रतिभूति या विदेशी मुद्रा को अग्रिम रूप में बेचने या खरीदने का सौदा किया जाता है। जिस तिथि को यह सौदा होता है उससे आगे की तिथि पर वस्तु, प्रतिभूति या विदेशी मुद्रा का हस्तांतरण होता है।

Forward price (फॉरवर्ड प्राइस) **अग्रिम कीमत**

वह कीमत, जिस पर अग्रिम बाज़ार के सौदे के अन्तर्गत वस्तु, प्रतिभूति या विदेशी मुद्रा को निर्दिष्ट तिथि पर हस्तांतरित करने का सौदा किया जाता है।

Fractional banking (फ्रेक्शनल बैंकिंग)

एक बैंकिंग व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत बैंक अपनी जमाओं का एक न्यूनतम अंश स्थिर अनुपात में नगद अथवा उच्च तरल सम्पत्तियों के रूप में रखते हैं।

Franchise (फ्रेंन्चाइज़) **अधिकृत सामान्य व्यवस्था**

दो या अधिक फर्मों को एक सामान्य व्यवस्था के संचालन हेतु अधिकृत कर दिया जाए। इसके अंतर्गत एक ही ब्रांड, डिजाइन, पेटेंट या कार्यप्रणाली का उपयोग शामिल हैं। इनके अलावा उपकरणों की पूर्ति, प्रशिक्षण, पूँजी या साख की व्यवस्था भी अधिकार देने वाली फर्म का दायित्व रहता है। इस व्यवस्था से शोध, विकास, विपणन आदि में इस फर्म को पैमाने की मितव्ययताएँ प्राप्त होती हैं।

अधिकृत सामान्य व्यवस्था के अनेक उदाहरण है : पैप्सी, कोकाकोला, मॅक्डोनल्ड बर्गर, आई.बी.एम., यांकी आदि इसी व्यवस्था के तहत विशाल स्तर पर विश्वभर में कार्य कर रहे हैं।

Free entry (फ्री एन्ट्री) **मुक्त प्रवेश**

पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में नई फर्मों के प्रवेश तथा पुरानी फर्मों के बहिगर्मन पर कोई रोक टोक नहीं होती। इसके फलस्वरूप दीर्घकाल में ऐसे बाज़ार में प्रत्येक फर्म को केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त हो पाता है।

Free good (फ्री गुड) **मुफ्त में प्राप्त वस्तु**

ऐसी वस्तु जिसकी पूर्ति असीमित हो, प्रायः बिना किसी भुगतान के मिल जाती है। हवा, धूप, नदी का पानी आदि ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हें प्रायः हम मुफ्त में प्राप्त कर लेते हैं। हाँ, जहाँ ये दुर्लभ हो जाती है, हमें इनकी कीमत चुकानी पड़ती है।

Free rider (फ्री राइडर) **मुफ्त में लाभ उठाने वाला**

वह उपभोक्ता, जिसे स्वयं किसी वस्तु या सेवा के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती, जबकि वस्तुतः यह कीमत किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा चुकाई जाती है। यदि अनेक व्यक्ति मिलकर अपनी गली की सड़क को पक्का बनवाएँ तथा एक व्यक्ति उसकी कीमत नहीं चुकाए तो उसे इसी श्रेणी में रखा जाएगा, क्योंकि वह बिना कीमत चुकाए सड़क का उपयोग कर रहा है।

Free trade (फ्री ट्रेड) **स्वतंत्र व्यापार; निर्बाध व्यापार**

जब किसी देश द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के आयात व निर्यात पर किसी प्रकार का कर नहीं लगाया जाए, और न ही किसी प्रकार के मात्रात्मक प्रतिबन्ध अथवा अनुदान की नीति लागू की जाए तो इसे स्वतंत्र व्यापार की नीति कहा जाता है।

Free trade area (फ्री ट्रेड एरिया) **स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र; मुक्त व्यापार क्षेत्र**

एक प्रकार का व्यापार समझौता, जिसके अन्तर्गत सम्बद्ध देशों द्वारा परस्पर व्यापार हेतु सभी प्रकार की पाबन्दियां, कर तथा नियंत्रणों को समाप्त कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यूरोप के अनेक देशों, तथा अफ्रीका व लेटिन अमरीकी देशों ने परस्पर व्यापार हेतु सभी बाधाओं को समाप्त करके स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र बना लिए हैं।

Free trade zone/free port

(फ्री ट्रेड जोन/फ्री पोर्ट) **मुक्त व्यापार क्षेत्र**

देश के किसी बन्दरगाह के आस पास का ऐसा क्षेत्र जिसमें आयातों पर कोई भी कर या शुल्क वसूल नहीं किया जाता, बशर्ते ये आयातित वस्तुएँ अपने मौलिक रूप में अथवा रूपान्तरित रूप में निर्यात की जाने वाली हों।

Freight (फ्रेट) **माल भाड़ा या परिवहन व्यय**

वस्तुओं को कारखाने या डिपो से सड़क, रेल, वायु मार्ग या समुद्री मार्ग से उपभोक्ता तक पहुँचाने हेतु किया जाने वाला परिवहन व्यय।

Frequency distribution

(फ्रीक्वेंसी डिस्ट्रीब्यूशन) **बारम्बारता बंटन; आवृत्ति बंटन**

किसी चर को उसके लक्षण अथवा विशेषता के आधार पर संख्या के रूप में प्रस्तुत करना। उदाहरण के लिए, किसी कक्षा में विद्यार्थी, बच्चों का भार, आयु, कालेज में कमरे, परिवारों की आय आदि को आवृत्तियों या संख्या के रूप में प्रस्तुत करना ही बारम्बारता बंटन या आवृत्ति बंटन है।

Frictional unemployment

(फ्रीक्शनल अनएम्प्लॉयमेंट) **अन्तरिम बेरोज़गारी**

ऐसी बेरोज़गारी, जो लोगों के एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में अन्तरण के दौरान उत्पन्न होती है। यह अल्पकालीन एवं अस्थायी होती है, क्योंकि किसी व्यवसाय में नए रोज़गार के अवसर अन्य व्यवसायों से अधिक हो सकते हैं जबकि अन्यत्र ये कम

हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में सभी श्रमिकों को तत्काल नए व्यवसाय में रोज़गार नहीं मिल पाता। इस अन्तरिम अवधि में उन्हें बेरोज़गार रहना पड़ सकता है।

Friedman Milton (मिल्टन फ्रीडमैन)

नोबल पुरस्कार विजेता अमरीकी अर्थशास्त्री

इनका सर्वाधिक योगदान मौद्रिक नीति की उपादेयता को प्रचारित करने में रहा है। फ्रीडमैन पूर्ण प्रतियोगिता तथा पूँजीवाद के प्रबल समर्थक हैं। उनकी ऐसी मान्यता है कि किसी देश के आर्थिक विकास तथा स्थिरता के लिए मुद्रा की मात्रा को बढ़ाना या कम करना अन्य किसी भी उपाय की तुलना में अधिक सार्थक होता है।

फ्रीडमैन ने बतलाया कि मुद्रा–स्फीति की दर बहुत अधिक होने पर मुद्रा की पूर्ति में अप्रत्याशित कमी करने पर सकल माँग में कमी होगी तथा इससे बेरोज़गारी बढ़ेगी। परन्तु बेरोज़गारी में यह वृद्धि अल्पकालीन होती है, क्योंकि जैसे ही लोगों में भविष्य की स्फीति दर के बारे में आशंकाएँ कम होती हैं, पूर्ण रोज़गार को प्राप्त करना सम्भव हो जाएगा। उन्होंने कीन्स के इस तर्क को गलत बताया कि आय बढ़ने के साथ लोगों के उपभोग व्यय का अनुपात कम होता है तथा बचत का अनुपात बढ़ता है।

Fringe benefits (फ्रिन्ज बेनिफिट्स) **सहायक लाभ**

किसी भी कर्मचारी को पगार (मज़दूरी), बोनस, पेन्शन आदि के अलावा कम्पनी के मालिक द्वारा प्रदत्त अन्य लाभ या सुविधाएँ। इनमें परिवहन सुविधा (कार या बस), खेलकूद अनुदानित भोजन/नाश्ता, अनुदानित आवास सुविधाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, बच्चों की शिक्षा आदि शामिल हैं।

Full cost pricing (फुल कॉस्ट प्राइसिंग)

पूर्ण लागत आधारित कीमत निर्धारण

कीमत को सामान्य उत्पादन के स्तर से सम्बद्ध औसत लागत के अनुरूप निर्धारित करना। उत्पादन का स्तर उससे कम होने की स्थिति में औसत स्थिर लागत अधिक होने के कारण औसत लागत भी ऊँची होती है। इसे औसत लागत आधारित कीमत निर्धारण भी कहते हैं।

Full employment (फुल एम्प्लॉयमेंट) **पूर्ण रोज़गार**

रोज़गार का वह स्तर, जहां सभी काम चाहने वाले श्रमिकों को नियोजित कर लिया जाता है। इस स्तर पर अर्थव्यवस्था इसकी इष्टतम क्षमता के अनुरूप उत्पादन या सकल राष्ट्रीय उत्पाद का सृजन करती है। प्रायः समष्टिगत नीति का परम लक्ष्य पूर्ण रोज़गार की प्राप्ति ही रहता है। परन्तु अनेक बार अन्तरिम बेरोज़गारी के कारण शत प्रतिशत पूर्ण रोज़गार की प्राप्ति सम्भव नहीं हो पाती।

Full employment equitibrium

(फुल एम्प्लॉयमेंट इक्वीलिब्रियम) **पूर्ण रोज़गार युक्त साम्य**

सकल माँग व सकल पूर्ति का वह स्तर, जहां राष्ट्रीय आय या सकल राष्ट्रीय उत्पाद का साम्य स्तर प्राप्त होता है तथा पूर्ण रोज़गार की स्थिति रहती है। इस स्थिति को पूर्ण रोज़गार वाली राष्ट्रीय आय की साम्य स्थिति (full employinent national income) भी कहते हैं।

Full line forcing(फुल लाइन फोर्सिंग) **समस्त उत्पादों को लेने की शर्त**

कभी–कभी एक विशालकाय फर्म अपने वितरकों को इस बात के लिए विवश करती है कि कम्पनी के सभी उत्पादों को लेकर उनका विक्रय करेंगे। इससे वितरकों को उत्पादक की वस्तुओं में चुनाव करने की स्वतंत्रता नहीं रहती।

Functional distribution of income (फंक्शनल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ इन्कम)

साधनों के स्वामियों के मध्य कार्यानुसार आय का वितरण

श्रमिकों को मज़दूरी, पूँजीपति को ब्याज़, भू–स्वामी को किराया या लगान, प्रबन्धकों को पगार तथा उद्यमी को लाभ, ये सभी कार्यानुसार आय वितरण के उदाहरण हैं।

Fundamental disequilibrium (फन्डामेंटल डिस्इक्वीलिब्रियम)

आधारभूत विषम स्थिति

स्थिर विनिमय दर व्यवस्था के अन्तर्गत वह स्थिति जहां कोई देश लगातार भुगतान शेष की प्रतिकूल या अनुकूल स्थिति से जूझता है। इसका एक मात्र समाधान विनिमय दर को समायोजित करना है। यदि भुगतान शेष का घाटा दीर्घकाल से चल रहा हो तो देश को अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करना होता है, जबकि लगातार भुगतान शेष में अतिरेक विद्यमान होने पर अधिमूल्यन करना होगा।

Funding (फन्डिंग) **ऋण का रूपान्तरण**

अल्पकालीन सरकारी कर्ज़ को दीर्घकालीन ऋणपत्रों या बॉड्स के रूप में बदलना।

Future markets (फ्यूचर मार्केट्स) **अग्रिम या भावी सौदे**

वह बाज़ार, जिसमें वस्तुओं, प्रतिभूतियों अथवा विदेशी मुद्राओं की ख़रीद हेतु सौदे तो आज की तिथि में किए जाते हैं, परन्तु इनके समापन हेतु भविष्य की कोई तिथि रखी जाती है। परन्तु व्यवहार में वर्तमान तथा भावी तिथि के बीच कीमतों में उच्चावचन होने की आशंका रहती है। इस जोखिम से बचने हेतु प्रत्येक क्रेता सौदे की तिथि से ही सम्बद्ध वस्तु, प्रतिभूति या विदेशी मुद्रा को उसी भावी तिथि पर बेचने का भी सौदा कर लेता है। इसी प्रकार प्रत्येक विक्रेता भी जोखिम से बचने हेतु तत्काल ख़रीद का सौदा कर लेता है। यह सुरक्षा (hedging) लाभ हेतु नहीं, अपितु जोखिम से बचाव हेतु की जाती है। (देखें forward market)

□□□

G

Gains from trade (गेन्स फ्रॉम ट्रेड) **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से लाभ**

एक बन्द अर्थव्यवस्था की तुलना में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार करने वाले देशों के आर्थिक कल्याण का स्तर अधिक होता है। अलग–अलग देशों के पास प्रकृति प्रदत्त साधनों में भी विविधता होती है। यही कारण है कि वस्तुओं की उत्पादन लागतों में भी अन्तर होते हैं। यदि प्रत्येक देश अपेक्षाकृत कम लागत में उत्पादित वस्तु में विशिष्टीकरण करे तो परस्पर व्यापार करने पर सभी देशों को लाभ होगा। जिन वस्तुओं व मशीनों आदि के उत्पादन की कल्पना भी किसी एक देश में नहीं की जा सकती, व्यापार के कारण उन्हें भी आयातित करके उनका प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से ऐसी वस्तुओं का आयात किया जा सकता है जिन्हें देश में तैयार करने पर काफी अधिक लागत आ सकती है।

प्रायः विशिष्टीकरण से उत्पादन का पैमाना बड़ा होता है जिससे उत्पादन लागत में कमी होती है।

Galbraith, John K. (जॉन के. गॉलब्रेथ) **कनाडा मूल के अर्थशास्त्री**

जो भारत में अमरीका के राजदूत भी रहे। गॉलब्रेथ ने बताया कि बड़े औद्योगिकी देशों में दो प्रकार की औद्योगिक इकाइयां होती हैं। एक तो विशाल एकाधिकारी इकाइयों के रूपमें हैं जबकि अन्य बहुसंख्यक छोटी तथा प्रतियोगिता आधारित इकाइयां हैं। बड़ी इकाइयों का संचालन पगार पाने वाले व उच्च तकनीकी ज्ञान वाले प्रबन्धक करते हैं।

गॉलब्रेथ ने बतलाया कि बड़ी औद्योगिक इकाइयां विज्ञापनों की सहायता से नई माँग का सृजन करते हैं। उपभोक्ता उपयोगिता के आधार पर नहीं, अपितु विज्ञापनों से प्रभावित होकर वस्तु को ख़रीदता है। परन्तु वे यह भी बताते हैं कि एकाधिकारिक फर्मों पर अकुंश लगाने हेतु इन देशों में श्रमिक संघ भी सशक्त होते हैं।

गॉलब्रेथ ने तर्क दिया कि प्रबन्धकों का उद्देश्य अपनी कम्पनी का विस्तार करना होता है न कि अधिकतम लाभ अर्जित करना। आज के औद्योगिक युग में पूँजी का उत्पादन प्रक्रिया में काफी वर्चस्व है। उनका यह भी कथन है कि उपभोक्ता प्रायः प्रदर्शन प्रभाव के कारण वस्तु की माँग करता है। उनकी अनेक पुस्तकों में 'दी एफ्लुएँट सोसाइटी, दी ग्रेट क्रैश, दी न्यू इन्डस्ट्रियल स्टेट, इकोनोमिक्स एँड दी पब्लिक परपज़, दी नेचर ऑफ मास पावर्टी आदि प्रमुख हैं।

Gambling (गैंब्लिंग) **जुआ; अनिश्चितता के बावजूद सौदा करना**

जुआ खेलने वाला व्यक्ति तीन मान्यताओं के आधार पर जोखिम लेता है : (i) आय

की एक रेंज में सीमान्त उपयोगिता बढ़ती है, (ii) जुआरी लगभग दिवालिया हो गया है तथा यदि वह हार भी जाता है तो नुकसान उसका नहीं, बल्कि उसके लेनदारों का होगा, तथा (iii) जुए से कुछ व्यक्तियों को आनन्द मिलता है। फिर भी जुए से प्राप्त प्रतिफल का अग्रिम रूप से अनुमान करना असम्भव होता है।

Game theory (गेमथ्योरी) **खेल सिद्धान्त**

बाज़ार में विभिन्न प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीतियों के संदर्भ में प्रत्येक विक्रेता (खिलाड़ी) अपनी रणनीति का चयन इस प्रकार करता है कि उसका स्वयं का लाभ *प्रतिद्वन्द्वियों की आक्रामक नीतियों के बावजूद* अधिकतम हो। खेल सिद्धान्त प्रायः दो विक्रेताओं की रणनीतियों के प्रतिक्रिया स्वरूप प्राप्त होने वाले प्रतिफलों के विश्लेषण पर आधारित होता है।

चूंकि बाज़ार का आकार वही रहता है, एक विक्रेता की बिक्री (या लाभ) बढ़ने पर स्वभावतः दूसरे विक्रेता की बिक्री उतनी ही राशि से कम हो जाती है। कुल मिलाकर दोनों का लाभ मिलाया जाए तो एक का लाभ दूसरे विक्रेता की हानि के समान होने से इनका योग शून्य होता है। यही शून्य योग का खेल है।

खेल सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि दो विक्रेताओं वाले बाज़ार में प्रत्येक विक्रेता को सतर्क रहना पड़ता है क्योंकि ऐसा न होने पर प्रतिद्वन्द्वी के हाथों उसे भारी क्षति हो सकती है। इसी प्रकार प्रतिद्वन्द्वी भी सतर्क रहता है। यही कारण है कि इस खेल में *आक्रामक तथा प्रतिरक्षात्मक दोनों प्रकार की रणनीतियां अपनाना ज़रूरी होता है।*

General Agreement on Tariffs and Trade (GATT)

(जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफस एन्ड ट्रेड)

आयात करों तथा व्यापार पर सामान्य समझौता (गॉट)

1947 में स्थापित इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का सबसे प्रमुख उद्देश्य व्यापार पर रोपित करों तथा अन्य पाबन्दियों को समाप्त करके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देना है। यह संस्था दो प्रकार से कार्य करती रही है :

(1) एक देश द्वारा आयात करों में कमी करने पर उसके व्यापारिक भागीदार देश भी आयात करों में कमी करें।

(2) विभिन्न देशों को इस बात के लिए राजी करना कि किसी वस्तु के आयात कर की न्यूनतम दर को वे अन्य सभी देशों के लिए लागू करेंगे।

आयात करों तथा मात्रात्मक प्रतिबन्धों को समाप्त करने हेतु विश्व के लगभग सभी देशों के अनेक बार सम्मेलन हुए और गंभीर मंत्रणाएँ हुई। अन्ततः 1995 में गॉट को समाप्त करके विश्व व्यापार संगठन (डब्लू.टी.ओ.) की स्थापना की गई।

General equilibrium (जनरल इक्वीलिब्रियम) **सामान्य साम्य**

अर्थशास्त्र में वर्णित वह स्थिति, जब सभी वस्तुओं के बाज़ार तथा साधनों के बाज़ार

एक साथ साम्य स्थिति में हों, तथा उपभोक्ताओं, उत्पादकों तथा साधनों के स्वामियों को अधिकतम कल्याण की प्राप्ति हो जाए। यह स्थिति आंशिक साम्य से भिन्न है जिसमें एक ही वस्तु या एक ही साधन के बाज़ार में साम्य स्थिति का विश्लेषण किया जाता है। परन्तु सामान्य साम्य का मॉडल सैद्धान्तिक एवं गणितीय दृष्टि से आंशिक साम्य के मॉडल की अपेक्षा अधिक जटिल है।

Giffin good (गिफिन गुड) **गिफिन वस्तु**

ऐसी वस्तु, जिसकी कीमत बढ़ने (कम होने) पर उसकी माँग में भी वृद्धि (कमी) होती है। इस वस्तु का उपभोग प्रायः समाज का अत्यंत निम्न आय वाला वर्ग ही उपयोग करता है। इसीलिए जब गिफिन वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो अन्य वस्तुओं का उपभोग कम करके उपभोक्ता इसकी माँग को बढ़ाता है। इसके विपरीत जब कीमत में कमी होती है तो उपभोक्ता अन्य यानी बेहतर वस्तुओं का उपभोग करने हेतु गिफिन वस्तु का उपयोग कम करना चाहता है। इस प्रकार **गिफिन** *वस्तु का कीमत के साथ धनात्मक सम्बन्ध होता है।*

गिफिन वस्तु एक हीनतम वस्तु है और प्रायः इसकी कोई प्रतिस्थापन वस्तु नहीं होती।

सामान्य वस्तु का माँग वक्र
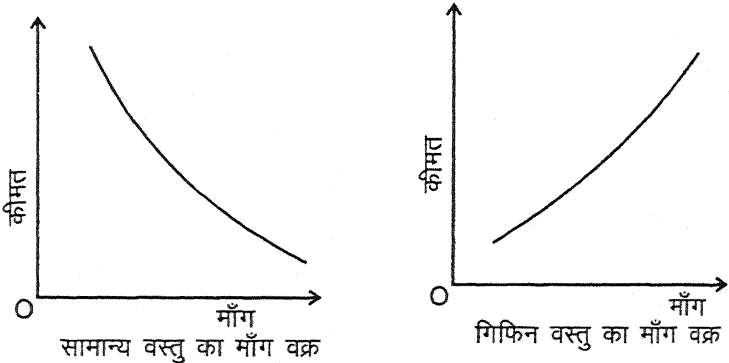
गिफिन वस्तु का माँग वक्र

उपर्युक्त चित्र में सामान्य तथा गिफिन वस्तुओं के माँग वक्र प्रस्तुत किए गए है।

Gift-tax (गिफ्ट टैक्स) **उपहार कर**

एक व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को उपहार में कोई सम्पत्ति, नगद राशि या प्रतिभूति दिए जाने पर सरकार द्वारा रोपित प्रत्यक्ष कर। यह उपहार स्नेह वश दिया जाता है, तथा कर का भुगतान उपहार देने वाला या प्राप्त करने वाला करता है।

Gilt-edged security
(गिल्ट एजेड सिक्योरिटी) **एक वित्तीय प्रतिभूति या सरकारी बॉंड**

इन प्रतिभूतियों में एक प्रकार का सुरक्षित निवेश किया जा सकता है। इनकी परिपक्वता अवधि 5 से 15 वर्ष की हो सकती है।

Gini co-efficient (जिनी कोएफिशिएँट) **जिनी गुणांक**

आय/सम्पत्ति के वितरण में व्याप्त असमानता का सांख्यिकीय माप। यदि जिनी गुणांक (g) शून्य है तो समाज के सभी व्यक्तियों की आय समान मानी जाएगी। इसके विपरीत यदि g=1 है, तो इसका आशय यह है कि एक ही व्यक्ति के पास समस्त आय केन्द्रित है। अन्य शब्दों में, जिनी गुणांक शून्य से जितना अधिक है, आय या सम्पत्ति के वितरण में उतनी ही अधिक विषमता मानी जाएगी।
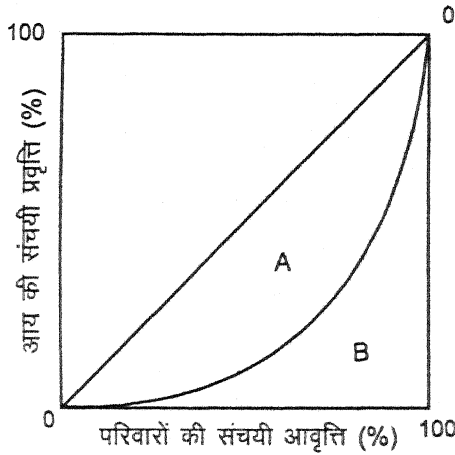
उपुर्यक्त चित्र में 00' एक सरल रेखा (450) है जिस पर आय का पूर्णतः समान वितरण है। वास्तविक आय वितरण जिस वक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है उससे जिनी गुणांक ज्ञात किया जा सकता है। यह वक्र 00' से जितना दूर होगा आय वितरण उतना ही अधिक विषम होगा। जिनी गुणांक ज्ञात करने हेतु निम्न सूत्र प्रयुक्त किया जा सकता है।

$$g = \frac{A}{A+B} \text{ यानी } \frac{\text{वक्र के ऊपर का क्षेत्र}}{\text{समरेखा 00' के नीचे का क्षेत्र}}$$

Giro (जिरो) **मुद्रा हस्तांतरण की विधि**

यह विधि उन व्यक्तियों के लिए भी मुद्रा हस्तांतरण में सहायक है जिनके पास किसी बैंक में खाता नहीं है। इंगलैंड का जिरो बैंक विभिन्न डाक घरों में स्थित अपनी शाखाओं के माध्यम से लोगों को यह सुविधा प्रदान करता है। कोई व्यक्ति जिरो बैंक में मुद्रा जमा करके डाकघर के माध्यम से कहीं भी भुगतान कर सकता है।

GNP deflator (जी.एन.पी. डिफ्लेटर) **सकल राष्ट्रीय उत्पाद का समायोजक**

यदि कोई व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय का वास्तविक मूल्य ज्ञात करना चाहता है तो वर्तमान मूल्यों पर आधारित आय का उसे समायोजन करना होगा। अनेक बार

मुद्रा स्फीति के कारण सकल राष्ट्रीय आय में काफी अधिक वृद्धि का आभास हो सकता है परन्तु यह वृद्धि वास्तविक नहीं मानी जा सकती क्योंकि वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा में तदनुरूपी वृद्धि नहीं हुई है।

राष्ट्रीय आय की वास्तविक वृद्धि जानने हेतु किसी आधार वर्ष (भारत में यह 1993–94 है) के औसत (100) को लेकर 2000–2001 की राष्ट्रीय आय का समायोजन किया जाता है। मान लीजिए, वर्तमान मूल्यों पर राष्ट्रीय आय का 2000–2001 का सूचकांक 125 है, तो इस वर्ष की आय का वास्तविक मूल्य ज्ञात करने हेतु $\frac{100}{125}$ से भाग दिया जाएगा। इस प्रकार 0.8 को हम राष्ट्रीय आय का समायोजक मान सकते हैं। मान लीजिए, 2001–2002 में वर्तमान मूल्य पर आधारित आय का सूचकांक 140 हो जाता है तो उस समय समायोजक $\frac{100}{140} = 0.714$ हो जाएगा।

Golden handshake(गोल्डन हैंडशक) **सुखद विदाई**

भारत में 1991 के वर्ष में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति चाहने वाले कर्मचारियों के लिए यह स्कीम लागू की गई। ऐसे कर्मचारी, जो सेवानिवृत्ति से पूर्व ही स्वेच्छा से विदा लेना चाहते हैं, उन्हें उनके समस्त सेवानिवृत्ति लाभ एक साथ प्रदान करके उनके शेष जीवन को सुखद अथवा स्वर्णिम बनाने हेतु यह स्कीम लागू की गई है। इसके पश्चात् यदि सरकार या सम्बद्ध कम्पनी नए कर्मचारी की नियुक्ति नहीं करे, तो उसे एक दीर्घकालीन बचत प्राप्त हो जाती है।

Golden hello (गोल्डन हैलो) **सुखद स्वागत**

सुखद विदाई के विपरीत यदि किसी नए प्रबन्धक, निदेशक या कर्मचारी को आकर्षित करने हेतु कम्पनी उसे एक मुश्त काफी अधिक राशि देने का प्रस्ताव करे तो यह सुखद स्वागत होगा।

Golden rule (गोल्डन रूल) **स्वर्णिम नियम**

यह नियम कि यदि संवृद्धि दर तथा पूँजी के सीमानत उत्पादन में समानता हो तो अर्थव्यवस्था में अधिकतम उपभोग का स्तर प्राप्त हो जाएगा। यदि लाभ की दर पूँजी के सीमान्त उत्पादन के समान हो तो स्वर्णिम नियम का अर्थ यह है कि निवेश व लाभ समान हों तथा उपभोग व मज़दूरी समान हों।

Gold standard (गोल्ड स्टैंडर्ड) **स्वर्णमान**

किसी देश में मुद्रा स्वर्ण की हो या स्वर्ण के रूप में पूर्णतया परिवर्तनशील हो तो यह स्वर्णमान कहलाता है। आज से लगभग सात दशक पूर्व विश्व के अधिकांश देशों में स्वर्णमान विद्यमान था। ऐसी व्यवस्था के अन्तर्गत विनिमय दर का निर्धारण मुद्रा में निहित स्वर्ण की मात्रा के आधार पर किया जाता था। चूंकि सभी सम्बद्ध देशों में स्वर्णमान मौजूद था, विनिमय दरें प्रायः स्थिर रहती थीं।

Goods (गुड्स) **वस्तुएँ**

ऐसे पदार्थ जो उपभोक्ताओं की आवश्यकताएँ पूरी करते हों, यानी, जिनमें उपयोगिता निहित हो। उपयोगिता का यह गुण उपभोक्ता की आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करता है तथा स्थान तथा समय के अनुरूप घटता–बढ़ता है। यदि उत्पादन प्रक्रिया हेतु किन्हीं साधनों (मध्यवर्ती वस्तुओं) का उपयोग किया जाए तो उनसे प्राप्त होने वाली उपयोगिता को परोक्ष उपयोगिता माना जाएगा।

Goodwill (गुडविल) **साख; प्रतिष्ठा**

अपने द्वारा लम्बे समय तक ग्राहकों को श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली वस्तुएँ या सेवाएँ देकर कोई फर्म एक साख या प्रतिष्ठा अर्जित कर लेती है। इसी कारण फर्म की भौतिक तथा वित्तीय सम्पत्तियों के अलावा उसकी ख्याति या साख का भी मूल्यांकन होता है। *परन्तु साख एक अभौतिक सम्पत्ति है।* यह मूल्य फर्म की सम्पत्तियों के मूल्य में जोड़ दिया जाता है। जब कभी कोई अन्य फर्म इस फर्म को खरीदना चाहती है तो साख सहित ही सभी प्रकार की सम्पत्तियों का मूल्य चुकाया जाएगा। प्रायः फर्म के उत्पादों के ब्रांड नेम, प्रबन्ध की कुशलता एवं ग्राहकों की संतुष्टि के आधार पर ही यह साख निरूपित होती है।

Government debt (गवर्नमेंट डैट) **सरकारी ऋण**

किसी समय पर सरकार के ऊपर मौजूद ऋण। यह ऋण संघीय सरकार से सम्बद्ध हो सकता है अथवा राज्य सरकार से। परन्तु **सरकारी गारंटी** पर अन्य संस्थाओं (जैसे कोई निगम या बिजली बोर्ड) द्वारा लिए गए ऋणों को सरकारी ऋण मानना ज़रूरी नहीं है।

Government expenditure (गवर्नमेंट एक्सपेंडिचर) **सरकारी व्यय**

सरकार द्वारा किए गए राजस्व तथा पूँजीगत व्यय। इस व्यय के माध्यम से कानून व्यवस्था, सामाजिक वस्तुएँ या सेवाएँ (स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषाहार, प्रतिरक्षा, सड़क, रेल, बन्दरगाह, प्रशासन, पुलिस आदि) या बाज़ार के माध्यम से प्रदत्त सेवाएँ (जैसे डाक, तार, दूरसंचार आदि) तथा हस्तांतरण भुगतान (बेरोज़गारी भत्ता, पेंशन आदि) किए जाते हैं।

प्रायः सरकारी व्यय की पूर्ति हेतु कर शुल्क आदि लगाए जाते हैं, अथवा ऋण लेकर इसे पूरा किया जाता है।

Gradualist monetarism (ग्रेजुअलिस्ट मोनेटरिज़्म) **धीमा मौद्रिक वाद**

ऐसी नीति जिसके माध्यम से *मुद्रा की पूर्ति में होने वाली वृद्धि को धीरे–धीरे तब तक कम किया जाता है* जब तक कि यह दर अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि दर के समान नहीं हो जाती।

Grant in aid (ग्रांट इन एड) **सहायता**

संघीय सरकार द्वारा राज्य सरकारों, या राज्य सरकार द्वारा स्थानीय निकायों को

प्रदत्त सहायता। यह सहायता इन संस्थाओं के बजटीय घाटे को पाटकर सार्वजनिक सेवाओं को जारी रखने हेतु दी जाती है।

Great Depression (ग्रेट डिप्रेशन) **महान् मंदी**

पिछली अनेक शताब्दियों में सर्वाधिक त्रासदी वाली अवधि 20वीं शताब्दी के चौथे दशक के प्रारम्भ में थी। समूचे, विश्व में 1929 के बाद तीन वर्ष की अवधि में विश्व भर में करोड़ों लोग बेरोज़गार हो गए क्योंकि कारखाने बन्द हो गए थे। खेतों में अनाज था लेकिन उसकी कीमतें रसातल में पहुंच गई थी। क्रयशक्ति का नितांत अभाव हो गया था तथा सर्वत्र एक निराशा का माहौल व्याप्त हो गया था।

Green consumers (ग्रीन कन्जूमर्स) **पर्यावरण प्रेमी उपभोक्ता**

ऐसे उपभोक्ता जो वस्तुएँ क्रय करते समय पर्यावरणीय बातों को ध्यान में रखते हैं। उदाहरण के लिए, एक पर्यावरण प्रेमी उपभोक्ता सादा पैट्रोल की अपेक्षा सीसा रहित पैट्रोल लेना चाहेगा। इसी प्रकार ऐसे उपभोक्ता कूड़ा फेंकने हेतु प्रदूषण को न्यूनतम रखने वाली विधियां अपनाएँगे।

Green field investment (ग्रीनफील्ड इन्वेस्टमेंट) **नव-निवेश**

विद्यमान प्लांट के रूपान्तरण की अपेक्षा नई जगह पर कारखाने में निवेश करना। इस प्रकार के निवेश से एक ही क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों की भीड़–भाड़ एवं संकेन्द्रण से होने वाले प्रदूषण एवं अन्य नुकसानों से बचा जा सकता है। वन सम्पदा के अनावश्यक क्षरण को भी इस प्रकार के नव–निवेश से रोका जा सकता है।

Green product (ग्रीन प्रोडक्ट) **पर्यावरण-रक्षक उत्पाद**

ऐसा उत्पाद जिसको निर्मित करने में पर्यावरण को न्यूनतम क्षति होती है। इनमें पुनर्चक्रीय (recyclable) वस्तुओं का प्रयोग, वाहनों में प्रदूषण को न्यूनतम करने वाले कन्वर्टर्स आदि शामिल हैं। इसी प्रकार रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर कम्पोस्ट खाद का उत्पादन भी इसी श्रेणी में आता है।

Green revolution (ग्रीन रीवोल्यूशन) **हरित क्रांति**

भारत सहित अनेक विकासशील देशों में कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने हेतु अत्यधिक उन्नत बीजों, उर्वरकों तथा पानी का उपयोग व्यापक क्षेत्र में किया जा रहा है। भारत में यह प्रक्रिया सातवें दशक के अन्तिम वर्षों से प्रारम्भ हुई। हरित क्रांति के फलस्वरूप गेहूँ तथा कुछ अन्य प्रकार के खाद्यान्नों की उत्पादकता में गत 35 वर्षों में चमत्कारिक रूप से वृद्धि हुई है।

Gresham's Law (ग्रेशल्स लॉ) **ग्रेशम का नियम**

सर ग्रेशम ने सोलहवीं शताब्दी में महारानी एलिज़ाबेथ को कहा था कि बुरी मुद्रा *अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है।* वस्तुतः उस समय मुद्रा स्वर्ण धातु से निर्मित होती थी। घिसे हुए या टूटे–फूटे सिक्कों को आम लोग चलन में रखते थे। तथा अच्छी मुद्रा को गलाकर धातु प्राप्त कर लेते थे।

ग्रेशम का नियम आज पत्र मुद्रा के युग में भी प्रासंगिक है। प्रत्येक व्यक्ति अच्छी मुद्रा को अपने पास बचाकर रखता है तथा गले सड़े या फटे हुए नोटों को चलन में रखने का प्रयास करता है।

Grey market (ग्रे मार्केट) **अनाधिकृत सौदे**

नए अंशों या शेयरों के सूचीबद्ध होने से पूर्व ही स्टॉक एक्सचेंज के बाहर उनका क्रय–विक्रय होना।

Gross domestic fixed investment
(ग्रॉस डोमेस्टिक फिक्स्ड इन्वेस्टमेंट) **सकल घरेलू स्थिर निवेश**

एक वर्ष की अवधि में देश के भीतर मशीनों व उपकरणों में किया गया निवेश। यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद का एक अंश होता है। इसमें से घिसावट या मूल्य ह्रास को घटा कर शुद्ध स्थिर घरेलू निवेश ज्ञात किया जाता है। पूँजी के स्टॉक में वर्ष भर में हुई वृद्धि जानने हेतु शुद्ध घरेलु निवेश की ही गणना की जाती है।

Gross domestic product (ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट) **सकल घरेलू उत्पाद**

किसी देश में वर्ष भर में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य। इसमें केवल अन्तिम वस्तुओं के मूल्य ही शामिल किए जाते हैं यह उल्लेखनीय है कि सकल घरेलू उत्पाद का मूल्यांकन देश में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं के आधार पर किया जाता है, भले ही उसमें विदेशी संस्थाओं का भी योगदान निहित हो। स्पष्ट है, देश के नागरिक बाहर रह कर जो कुछ अर्जित करते हैं, उसे सकल घरेलू उत्पाद में शामिल नहीं किया जाता।

Gross national product (ग्रॉस नेशनल प्रोडक्ट) **सकल राष्ट्रीय उत्पाद**

वर्षभर में देश में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य में देश के नागरिकों के द्वारा विदेश से ब्याज़, लाभांश आदि के रूप में भेजी गई राशि को जोड़ने एवं विदेशी नागरिकों द्वारा अपने देशों को प्रेषित आय/लाभांश को घटाने से प्राप्त राशि। कुल मिलाकर सकल राष्ट्रीय उत्पाद देश के नागरिकों द्वारा प्राप्त कुल आय का प्रतीक है, तथा आर्थिक संवृद्धि को मापने का एक सहज तरीका है।

Gross profit (ग्रॉस प्रॉफिट) **कुल या सकल लाभ**

बिक्री की कुल राशि में से उत्पादन की लागतों को घटाने से प्राप्त अधिशेष। कुल लाभ में से सम्पत्ति के मूल्य ह्रास एवं करों को घटाने पर शुद्ध लाभ प्राप्त होता है।

Group of seven (G-7) (ग्रुप ऑफ सेवन (जी–सात) **सात देशों का समूह**

सात विकसित देशों– कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, सं.रा. अमेरिका व ब्रिटेन का एक संगठन जिनके नेता समय–समय पर विश्व की आर्थिक समस्याओं एवं नीतियों पर विचार विमर्श करते हैं।

Group of Ten (G-10) [ग्रुप ऑफ टैन (जी–दस)] **दस देशों का समूह**

दस प्रमुख औद्योगिक देशों का अनौपचारिक समूह, जिसे पैरिस क्लब भी कहा जाता

है। इस समूह के सदस्य देश विश्व की आर्थिक समस्याओं पर चर्चा करते हैं, ये देश है : बेल्जियम, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, नीदरलैंड्स, स्वीडन, ब्रिटेन तथा सं.रा. अमेरिका।

Growth (ग्रोथ) **संवृद्धि**

आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होने पर वस्तुओं व सेवाओं के मूल्य में एक साल में हुई वृद्धि। इस वृद्धि को वर्तमान कीमतों में मापा जा सकता है, अथवा स्थिर (भारत में 1993–94 की औसत) कीमतों पर माप सकते हैं। एक वर्ष में हुई संवृद्धि में जनसंख्या से भाग देकर प्रति व्यक्ति आय में हुई संवृद्धि की दर ज्ञात की जा सकती है। आर्थिक संवृद्धि के आधार पर किसी देश की वर्तमान आर्थिक स्थिति तथा उसका निर्दिष्ट अवधि में हुए निष्पादन को मापा जा सकता है।

Growth theory (ग्रोथ थ्योरी) **संवृद्धि का सिद्धान्त; विकास का सिद्धान्त**

अर्थशास्त्र की वह शाखा, जो अर्थव्यवस्था में प्राप्त आर्थिक संवृद्धि का विश्लेषण करती है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत संवृद्धि मॉडलों की भी चर्चा की जाती है, तथा संवृद्धि दर के निर्धारक घटकों का विश्लेषण किया जाता है। संवृद्धि सिद्धान्त में संवृद्धि का इष्टतम सिद्धान्त, संतुलित संवृद्धि का सिद्धान्त आदि निहित हैं। संवृद्धि के मॉडलों में हैरड–डोमर मॉडल, सोलो मॉडल आदि प्रमुख हैं।

□□□

H

Hard budget constraint (हार्ड बजट कॉंस्ट्रेंट) **कठोर बजट सीमा**

किसी सार्वजनिक अथवा निजी संस्था के लिए निर्धारित व्यय की अधिकतम सीमा। इस सीमा से अधिक व्यय एक संकट को जन्म दे सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई फर्म अपनी औसत लागत की भी पूर्ति न कर पाए, अथवा लाभ का निर्दिष्ट स्तर अर्जित न कर पाएँ तो इसके प्रबन्धकों की् नौकरी खतरे में पड़ सकती है।

Hard currency (हार्ड करेन्सी) **दुर्लभ मुद्रा**

एक विदेशी मुद्रा जिसकी माँग बहुत अधिक है लेकिन जिसकी पूर्ति कम है। ऐसी मुद्रा का अन्य मुद्राओं के रूप में मूल्य या तो स्थिर रहता है अथवा बढ़ता जाता है। प्रायः जिस देश की अर्थव्यवस्था काफी सुदृढ़ हो, तथा जिसका भुगतान शेष लगातार अनुकूल चलता रहे उसकी मुद्रा दुर्लभ बन जाती है। इसके विपरीत जिस देश का भुगतान शेष लगातार प्रतिकूल रहता हो उसकी मुद्रा सुलभ होती है क्योंकि उसकी माँग की तुलना में पूर्ति बहुत अधिक होती है।

Hard landing (हार्ड लैंडिंग) **कठिन समापन**

बिना मंदी की शुरुआत के मुद्रा स्फीति एवं अधिशेष माँग से उबरने की कठिनाई। प्रायः प्रभावी माँग के ऊँचे स्तर तथा मुद्रा स्फीति के नीचे स्तर के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु किस प्रकार के राजकोषीय तथा मौद्रिक उपाय किए जाएँ यह एक कठिन निर्णय होता है। इसमें तनिक सी उदार नीति के फलस्वरूप माँग को नियंत्रित करके मुद्रा स्फीति को कम करना कठिन होता है, जबकि अत्यधिक कठोर निर्णयों का व्यापार जगत पर अत्यंत घातक प्रभाव हो सकता है।

Hard loan (हार्ड लोन) **कठिन ऋण**

सामान्य बाज़ार शर्तों पर लिया गया ऋण जिसके अन्तर्गत ब्याज़, ऋणी की हैसियत से जुड़ी जोखिम, ऋण की अदायगी की तिथि, ब्याज़ की अदायगी से सम्बद्ध करेन्सी तथा अदायगी की शर्तों आदि के विषय में *अग्रिम रूप* से तय हो जाता है।

Harmonization (हार्मोनाइजेशन) **समानीकरण**

किसी आर्थिक गठबन्धन के सदस्य देशों में करों की दरों तथा नियामक नियमों को एक जैसा रखने की व्यवस्था। यदि साझा बाज़ार के सदस्य देशों के बीच श्रम व पूँजी का आवागमन निर्बाध हो तो उन्हें करों तथा नियंत्रण की व्यवस्थाएँ भी समान स्तर पर रखनी होगी।

Harrod-Domar growth model (हैरड डोमर ग्रोथ मॉडल)

हैरड-डोमर का संवृद्धि मॉडल

हैरड तथा डोमर ने स्थिर पूँजी–श्रम अनुपातों तथा बचत क्षमताओं (प्रवृत्तियों) के आधार पर आर्थिक संवृद्धि दर का निर्धारण बतलाया। इस मॉडल के अनुसार उत्पादक इकाइयों के रूप में व्यक्त श्रम सेना एक बाह्य निर्धारित प्राकृतिक दर (n) से बढ़ती है। पूँजी–श्रम अनुपात (v) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति s के मूल्य स्थिर रहते हैं।

यदि राष्ट्रीय आय को Y, बचत को sY, वांछित पूँजी स्टॉक को vY, तथा इसकी वृद्धि दर को g मान लिया जाए तो वांछित निवेश का स्तर gvY होगा। पूँजी निवेश तथा बचत के प्रत्याशित स्तर तभी समान होंगे जब sY=gvY हो जबकि g=s/v है। इसके लिए वांछित संवृद्धि दर (w) (warranted growth rate) एवं पूँजी स्टॉक की वांछित वृद्धि दर (g) में समानता होनी चाहिए (w=s/v)।

अब श्रम सेना की बाह्य निर्धारित प्राकृतिक दर तथा वांछित संवृद्धि दर में समानता होनी चाहिए : n=w। यदि n>w, तो राष्ट्रीय आय की वृद्धि के बावजूद बेरोज़गारी बढ़ेगी। यदि w>n तो पूर्ण रोज़गारी प्राप्ति के बाद संवृद्धि की साम्य दर प्राप्त करना असम्भव होगा।

Harrod economic growth model

(हैरड इकोनोमिक ग्रोथ मॉडल) **हैरड का आर्थिक संवृद्धि मॉडल**

यह मॉडल किसी अर्थव्यवस्था के संवृद्धि पथ को प्रस्तुत करता है। हैरड ने संवृद्धि की उस दर के विषय में चर्चा की जो राष्ट्रीय आय के कीन्सीय साम्य स्तर के अनुरूप आवश्यक है। इसकी शर्त निम्न बतलाई गई :

बचत (S_t) = निवेश (I_t) यानी निर्दिष्ट अवधि (t) में बचत एवं निवेश में समानता होनी चाहिए। इसे निम्न सूत्र में भी व्यक्त कर सकते हैं :

$$S_t = sY_t$$

इसमें s को बचत की सीमान्त प्रवृत्ति का प्रतीक माना जा सकता है। इसी को निम्न समीकरण के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है :

$$\frac{\Delta Y}{Y_t} = \frac{s}{\infty}$$

इस सूत्र के अनुसार आर्थिक संवृद्धि दर ($\Delta Y/Y_t$) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति एवं त्वरक (∞) के गुणांक में समानता होनी चाहिए।

Harrod-neutral technical progress (हैरड न्यूट्रल टेक्नीकल प्रोग्रेस)

तटस्थ तकनीकी प्रगति से सम्बद्ध हैरड मॉडल

ऐसी तकनीकी प्रगति जिसके अन्तर्गत श्रम की दक्षता में वृद्धि होती है तथा श्रमिकों की संख्या की तुलना में उत्पादन में अधिक वृद्धि होती है। इस प्रकार की तकनीकी प्रगति में श्रम की बचत होती है। इसके विपरीत तकनीकी प्रगति के हिक्सीय मॉडल

के अनुसार तकनीकी प्रगति के अन्तर्गत केवल श्रम का ही नहीं, अपितु सभी साधनों की दक्षता में वृद्धि होती है।

Hazardous waste (हैज़ार्डस वेस्ट) **घातक कचरा**

ऐसा कचरा जो स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए घातक है। इस कचरे में खतरनाक रसायनिक पदार्थ या संक्रामक कीटाणु होते हैं, या विस्फोटक रेडियोधर्मिता निहित हो सकती है। अधिकांश देशों में इस कचरे के संग्रहण, परिवहन एवं शोधन को नियंत्रित किया जा रहा है।

Health insurance (हैल्थ इन्श्योरेंस) **स्वास्थ्य बीमा**

दुर्घटना या बीमारी के कारण आय में होने वाली क्षति, तथा मेडीकल खर्चों के पुनर्भरण हेतु बीमा। यह बीमा ऐच्छिक अथवा अनिवार्य दोनों प्रकार का हो सकता है।

Hecksher-Ohlin model (हैक्शर ओहलिन मॉडल)

स्वीडन के दो अर्थशास्त्रियों–हैक्शर तथा ओहलिन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु प्रतिपादित मॉडल

इस मॉडल के अनुसार सभी देशों में प्रत्येक वस्तु का उत्पादन समतामान प्रतिफलों के अन्तर्गत किया जाता है। लेकिन इन देशों में पूँजी व श्रम की मात्राएँ भिन्न–भिन्न होती हैं। एक देश में श्रम की बहुलता के कारण श्रम सस्ता होता है, जबकि दूसरे देश में पूँजी सस्ती होती है। जब दो देशों के बीच व्यापार संभव होता है तो श्रम प्रधान देश उन वस्तुओं का निर्यात करता है, जहां श्रम का अधिक प्रयोग होता है, जबकि पूँजी प्रधान देश ऐसी वस्तु का निर्यात करता है जहां पूँजी सस्ती होने के कारण उसका अधिक उपयोग होता है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार पूँजी या श्रम की गहनता पर है, जो वस्तुतः इनके बाहुल्य के अनुरूप इनकी कीमतों व उत्पादन लागत का निर्धारण करती हैं।

Hedging (हैजिंग) **अग्रिम बाजार में सुरक्षा कवच**

यदि कोई फर्म किसी वस्तु का भंडारण करना चाहती है तथा उसे भविष्य में कीमतें कम होने की आशंका है, तो वह उस स्टॉक को वर्तमान कीमत पर किसी आने वाली तिथि पर बेचने का सौदा कर लेती है। यदि वस्तुतः नियत तिथि तक कीमत गिर जाती है तो जहां भंडार में सुरक्षित स्टॉक पर फर्म को हानि होगी, वहीं अग्रिम बाजार के सौदे में उतना ही लाभ हो जाएगा। हैजिंग या इस सुरक्षात्मक कदम का उद्देश्य लाभ कमाना न होकर अपनी सुरक्षा का बन्दोबस्त करना है।

यदि फर्म को आज किसी वस्तु को बेचने का सौदा करना हो तो भविष्य में वस्तु की कीमत में होने वाली कमी से उत्पन्न जोखिम से बचने हेतु आज ही अग्रिम बाज़ार में उसे खरीदने का (उसी कीमत पर उतनी ही मात्रा में) सौदा करके कीमत की सम्भावित कमी से उत्पन्न हानि से बच सकती है। ये अग्रिम सौदे केवल वस्तुओं के लिए ही नहीं, अपितु विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में भी उतने ही सार्थक होते हैं।

Herfindahl index (हर्फिन्डाल इन्डैक्स) **हर्फिन्डाल सूचकांक**

विक्रेताओं का किसी बाज़ार में प्रभुत्व मापने का तरीका। इसे ज्ञात करने हेतु बाज़ार में किसी वस्तु के जितने भी विक्रेता हैं, उनमें प्रत्येक का कुलपूर्ति में सापेक्ष अंश देखा जाता है, तथा फिर प्रमुख 5 या 6 फर्मों के उत्पादन का अनुपात देखा जाता है। दो अलग–अलग बाज़ारों में संकेन्द्रण अनुपातों के आधार पर, अथवा एक ही बाज़ार में दो अवधियों के बीच, संकेन्द्रण अनुपात देखकर आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण मापा जाता है।

Heteroscedasticity (हैट्रोसेडास्टिसिटी) **विषम विचालिता**

जहां प्रसरण (variance) के मूल्यों में भिन्नता हो, वहां एक ही विशाल समूह से दैव रूप में आँकड़े लेने पर भी उनके प्रसरणों में संगति नहीं होती। वस्तुतः जहां आर्थिक आंकड़े परिवर्तनशील जगत से समय श्रेणी (time series) या विविध प्रकार के देशों या उद्योगों से लिए जाएँ, वहां स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो जाती है।

Hicks-neutral technical progress
(हिक्स-न्यूट्रल टेक्नीकल प्रोग्रेस) **हिक्सीय तटस्थ तकनीकी प्रगति**

हिक्स द्वारा तकनीकी प्रगति के विषय में प्रस्तुत विवरण। हिक्स ने बताया कि साधनों के दिए हुए अनुपातों को देखते हुए उसी अनुपात में सभी साधनों के औसत तथा सीमान्त उत्पादन में वृद्धि होती है। यदि $y = f(x, z)$ हो, (जहां y किसी वस्तु का उत्पादन है तथा x एवं z दो साधन की मात्राओं के प्रतीक हैं) तो यह मानते हुए कि उत्पादन की प्राप्ति समतामान प्रतिफल के अन्तर्गत हो रही है, तटस्थ तकनीकी प्रगति का हिक्सीय मॉडल बतलाता है कि *दोनों साधनों की मात्रा में जिस अनुपात से वृद्धि होती है उसी अनुपात में ही उत्पादन बढ़ेगा।*

Hidden economy (हिडन इकोनोमी) **छुपी हुई या अप्रगट अर्थव्यवस्था**

(देखिए black economy)

Hidden price reduction (हिडन प्राइस रिडक्शन) **अप्रगट कीमत ह्रास**

कीमत वही रखते हुए भार, गुणवत्ता या मात्रा में वृद्धि करना। उदाहरण के लिए, सर्फ वाशिंग पाउडर की कीमत 60 रुपए रखते हुए ही 1 किलो के स्थान पर 1. 20 किलो भार की थैली बेचना।

Hidden price rise (हिडन प्राइस राइज़) **अप्रगट कीमत वृद्धि**

कीमत वही रखते हुए वस्तु की इकाइयों की संख्या, इनके भार या गुणवत्ता में कमी करना।

Hidden reserve (हिडन रिज़र्व) **अप्रगट रिज़र्व**

किसी फर्म के तलपट में सम्पत्तियों का मूल्य कम दर्शाना, अथवा देनदारियों को बढ़ा–चढ़ा कर दर्शाना। उदाहरण के लिए, भवन या भूमि का मूल्य तलपट में आज के बाज़ार मूल्य के स्थान पर मूल कीमत के आधार पर व्यक्त करना।

Hidden tax (हिडन टैक्स) **अप्रगट कर**

उपभोक्ता की जानकारी के बिना किसी वस्तु की कीमत में किसी परोक्ष कर को शामिल कर देना। सिगरेट या शराब की कीमत में निहित उत्पादन कर की जानकारी प्रायः उपभोक्ता को नहीं होती।

Hidden unemployment (हिडन अनएम्पलॉयमेंट) **प्रच्छन्न बेरोज़गारी**

तकनीकी दृष्टि से कुछ लोग काम पर लगे हुए होते हैं, परन्तु उनकी सीमान्त उत्पादकता लगभग शून्य होती है। इस बेरोज़गारी को प्रायः श्रमिक संघों के दबाव के कारण समाप्त करना सम्भव नहीं होता।

Hierarchy (हैरार्की) **किसी फर्म का आन्तरिक संगठन**

इसमें अधिकारों की व्याख्या प्रायः ऊपर से नीचे के स्तर पर की जाती है।

High powered money (हाई पावर्ड मनी) **उच्चशक्तिमान मुद्रा**

वह मुद्रा, जिसे व्यापारी बैंक रिज़र्व सम्पत्ति के रूप में रखते हैं। इसे उच्च शक्तिमान इसलिए कहा जाता है कि यदि बैंक न्यूनतम रिज़र्व कोष a के समान रखते हैं तो इसके फलस्वरूप कुल जमाओं या निक्षेपों में (1/a)m रुपयों के समान वृद्धि हो जाती है।

High tech (हाई टैक) **अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी**

किसी अर्थव्यवस्था में कुछ चुनी हुई ऐसी औद्योगिक इकाइयां हो सकती हैं जिनमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है। आणविक शक्ति, ऐरोनॉटिक्स, कम्प्यूटर्स, रक्षा सामग्री, दूर संचार तथा रसायन व औषधि उत्पादन, इस प्रकार के उद्योग हो सकते हैं जिनमें प्रायः आधुनिकतम प्रौद्योगिकी प्रयुक्त की जाती है। सं.रा. अमरीका, जापान, ताइवान, अधिकांश यूरोपीय देश, दक्षिण कोरिया आदि देशों में उच्चतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग लगभग सभी औद्योगिकी इकाइयों में किया जा रहा है।

Hire (हायर) **किराए पर लेना**

किराए या लीज़ पर स्थायी उपयोग की किसी सम्पत्ति या वस्तु को लेकर उसके लिए नियमित रूप से भुगतान करना।

Hire purchase (हायर परचेज़) **किश्तों पर वस्तुएँ क्रय करना**

इस व्यवस्था के अन्तर्गत वस्तु को आज खरीदने तथा उसका हस्तांतरण क्रेता को आज ही किए जाने के बाद भी उसका स्वत्व हस्तांतरित नहीं किया जाता। वस्तुतः क्रेता को उसकी कीमत अनेक किश्तों में चुकानी होती है। प्रायः प्रत्येक किश्त में वस्तु की आंशिक कीमत के अतिरिक्त ब्याज भी शामिल होता है। जब तक सारी किश्तों का भुगतान नहीं होता, क्रेता को वस्तु का स्वामित्व नहीं मिल पाता।

Hiring (हायरिंग) **कर्मचारियों की भर्ती करना**

प्रत्येक फर्म के प्रबन्धकों का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व कर्मचारियों की भर्ती करना भी है। प्रत्येक भर्ती के समय प्रबन्धकों को फर्म की नियोजन नीति में वर्णित नियमों का

पालन करना होता है। भर्ती का कार्य नौकरी से बर्खास्तगी (firing) या निष्कासन से उल्टा है। प्रायः निष्कासन के समय में कानूनी प्रावधानों में वर्णित प्रक्रिया अपनानी पड़ती है जो भर्ती के प्रावधानों से अधिक कठोर होते हैं

Histogram (हिस्टोग्राम) **आवृत्ति चित्र; आयत-चित्र**

किसी चर के वितरण हेतु प्रस्तुत एक चित्र जिसमें मूल्यों को किसी खंडित (discrete) रेन्ज में प्रस्तुत किया जाता है। चित्र में प्रत्येक खंड का क्षेत्र सम्बद्ध अन्तराल में लक्षित संख्याओं के आधार पर निर्धारित होता है।
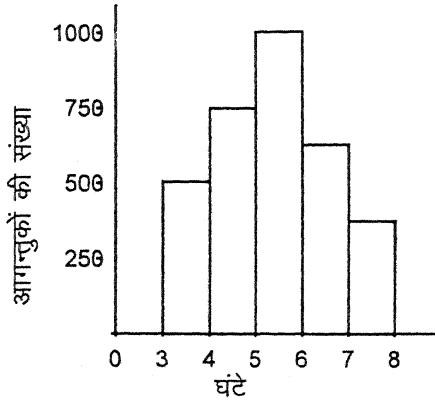
उपर्युक्त चित्र में बतलाया गया है कि 3.00 बजे दोपहर से 8.00 बजे रात्रि तक किसी प्रदर्शनी में कितने लोग आए। यह आवृत्ति चित्र सरल एवं एक प्रभावी विधि है जिसे देखकर निर्दिष्ट अवधि में प्रदर्शनी देखने वालों की संख्या में होने वाले उतार चढ़ाव की समीक्षा की जा सकती है।

Historic cost (हिस्टोरिक कॉस्ट) **प्रारंभिक या मौलिक लागत**

किसी सम्पत्ति को *ख़रीदते समय चुकाई गई लागत।* परन्तु कालान्तर में भूमि या भवन का बाज़ार मूल्य बढ़ता जाता है, तथा प्रायः फर्म के तलपट में बाज़ार मूल्य पर ही वह लागत दर्शायी जाती है।

Hit and run entry (हिट एन्ड रन एन्ट्री) **काम करो तथा भाग लो**

बाज़ार में कुछ ऐसे विक्रेता प्रवेश करते हैं जो तत्काल लाभ अर्जित करके बाज़ार से बहिर्गमन कर जाते हैं। प्रायः ऐसा तभी हो पाता है जब नवागन्तुक फर्म ने भारी राशि स्थायी सम्पत्ति में निवेश न की हो। लेकिन इस फर्म की दृष्टि केवल तात्कालिक लाभ अर्जित करने की ही रहती है।

Hoarding (होर्डिंग) **संचय करना**

मुद्रा या वस्तुओं को इस प्रकार से संचित करना कि वे उत्पादन या उपभोग प्रक्रिया से अछूती रहें। मुद्रा को अलमारी में बन्द करके रखना या अनाज़ को लम्बे समय

तक गोदाम में भरकर रखना, ताकि भविष्य में कभी ज़रूरत पडने पर इन्हें निकाल सकें। विकासशील देशों में इस प्रकार का संचय एक आम प्रवृत्ति है।

Holding company (होल्डिंग कम्पनी) **प्रधान या नियंत्रक कम्पनी**

ऐसी कम्पनी, जो किसी अन्य कम्पनी या कम्पनियों को नियंत्रित करती है। यह नियंत्रण शत प्रतिशत स्वामित्व का हो सकता है अथवा अंशों के बहुमत (51 प्रतिशत या इससे अधिक) का हो सकता है, जिसके कारण सहायक कम्पनी से सम्बद्ध **सभी महत्वपूर्ण निर्णय** नियंत्रण कम्पनी द्वारा ही किए जाते हैं। नियंत्रण कम्पनी अपने लेखों के साथ ही सहायक कम्पनी के लेखों को भी अपने अंशधारियों के समक्ष प्रस्तुत करती है।

आर्थिक सत्ता के केन्द्रीयकरण की प्रक्रिया में नियंत्रक कम्पनी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

Homogeneous function (होमोजीनियस फंक्शन) **समरूपी फलन**

जब किसी उपयोगिता या उत्पादन फलन के सभी स्वतंत्र चरों को एक ही अनुपात में बढ़ाया या कम किया जाए तो उसे समरूपी फलन कहा जाता है। नीचे दो उदाहरण हैं :–

(1) $U = f(X, Y)$: यहां U उपयोगिता का सूचक है, X तथा Y दो वस्तुएँ हैं जिनकी मात्रा पर U निर्भर है।

(2) $Q_y = f(K, L)$ जहां Q_y किसी वस्तु (Y) का उत्पादन है तथा K व L क्रमशः पूँजी तथा श्रम की मात्राएँ हैं जिनके प्रयोग से Y का उत्पादन किया जाता है।

समरूपी उपयोगिता फलन या समरूपी उत्पादन फलन का अर्थ यह है कि फलन शामिल स्वतंत्र चरों, यानी X तथा Y या K तथा L को समान अनुपात में बढ़ाया या कम किया जाए।

Homogeneous goods (होमोजीनियस गुड्स) **समरूपी वस्तुएँ**

यदि किसी बाज़ार में सभी विक्रेता पूर्ण रूप से एक जैसी (रंग, आकार, पैकिंग, ट्रेडमार्क, डिजाइन आदि में) वस्तुएँ बेचतें हों तो इन्हें समरूपी वस्तुएँ कहा जाता है। इसी प्रकार विक्रेताओं द्वारा क्रेताओं को दी जाने वाली सुविधाएँ (पार्किंग, साख, होम डिलीवरी आदि) भी एक सी होनी चाहिए। जब वस्तुएँ पूर्ण रूप से समरूपी होती हैं तो वे परस्पर पूर्ण रूप से स्थानापन्न होती हैं, तथा क्रेता किसी भी विक्रेता से वस्तु खरीद सकता है।

परन्तु व्यवहार में वस्तुएँ समरूप होने पर भी विक्रेताओं के व्यवहार तथा उनकी स्थिति में भिन्नता के कारण क्रेता अपनी रूचि व पसन्द के अनुसार ही किसी विक्रेता से वस्तु ख़रीदता है।

Homogeneous production function of degree one; linearly homogeneous production function

(होमोजीनियस प्रोडक्शन फंक्शन ऑफ डिग्री वन; लीनियर्ली होमोजीनियस प्रोडक्शन फंक्शन)

एक डिग्री का समरूपी उत्पादन फलन अथवा रैखिक समरूपी उत्पादन फलन

यदि उत्पादन के सभी साधनों को एक ही अनुपात में बढ़ाने पर उत्पादन भी उसी अनुपात में बढ़े तो इसे रैखिक समरूपी उत्पादन फलन कहते हैं। उदाहरण के लिए,

$$Q_y = AK^{.4}L^{.6}$$

इस फलन में Q_y उत्पादन का स्तर है, K तथा L क्रमशः पूँजी व श्रम की मात्राएँ हैं जबकि A दक्षता प्राचल है। यदि K तथा L को दो गुना कर दिया जाए तथा A भी स्थिर हो तो उत्पादन भी दो गुना हो जाएगा।

Homoscedasticity (होमोसेडास्टिसिटी) **सम-विचालिता**

एक ही विशाल जगत (population) से दैव रूप में चुने गए समंकों के प्रसरण (variance) के मूल्य समान होते हैं। सांख्यिकी की अनेक विधियों में समान प्रसरण वाले आंकड़े ही वैध होते हैं।

Homotheticity (होमोथेसिटी) **वक्रों की समान आकृति**

विभिन्न वक्रों की वह बिशेषता जिसके अनुसार सभी वक्रों की आकृति एक जैसी होती है। यदि विभिन्न उदासीनता या तटस्थता वक्रों या समोत्पाद वक्रों में समान आकृति का यह गुण विद्यमान हो, तो किसी भी बिन्दु पर उनका ढलान $\frac{dy}{dx}$ केवल Y तथा X के अनुपात पर निर्भर करेगा, न कि उनके निरपेक्ष आकार पर। कॉब डग्लस उत्पादन फलन या स्थिर प्रतिस्थापन लोच फलन से सम्बद्ध वक्रों में यह गुण विद्यमान रहता है।

Horizontal equity (होरीज़ोंटल इक्वीटी) **क्षैतिज समानता**

यह दृष्टिकोण कि समान परिस्थितियों वाले लोगों के लिए समान व्यवहार सुनिश्चित होना ज़रूरी है, तथा इस व्यवहार की विविधता का कारण उनकी आवश्यकताओं की विविधता में निहित है। इसी आधार पर समान आय वाले दो व्यक्तियों से समान दर से कर वसूल किया जाता है। *यही न्याय संगत कर प्रणाली का लक्षण है।*

Horizontal integration (हॉरीज़ोंटल इंटीग्रेशन) **क्षैतिज एकीकरण**

उत्पादन के समान चरणों वाली दो या अधिक इकाइयों का विलय। अन्य शब्दों में, यह एक ही वस्तु का उत्पादन करने वाली दो या अधिक इकाइयों का एकीकरण है। इस प्रकार के एकीकरण से उत्पादन के पैमाने का विस्तार होता है तथा पैमाने की मितव्ययताएँ (बचतें) प्राप्त होती हैं।

Hostile bid (होस्टाइल बिड) **द्वेष जनित प्रस्ताव या बोली**

किसी फर्म द्वारा, एक अन्य फर्म के अधिग्रहण का ऐसा प्रस्ताव हो सकता है जिसका कम्पनी के निदेशक विरोध कर रहे हों। निदेशकों का विरोध प्रायः इस कारण होता है कि वे अधिग्रहित होने वाली कम्पनी के एकल संचालन को श्रेष्ठ मानते हैं, या

वे ऐसा समझते हैं कि कोई अन्य कम्पनी उन्हें अधिक राशि दे सकती है।

Horizontal merger (हॉरीज़ोंटल मर्जर) **क्षैतिज विलय**

देखिए हॉरीज़ोंटल इंटीग्रेशन।

Hot money (हॉट मनी) **तत्काल हस्तांतरणीय मुद्रा**

यदि दो देशों के बीच ब्याज़ दरों में पर्याप्त अन्तर हो तो बैंकों में रखी विदेशी मुद्रा का तुरन्त एक देश से दूसरे देश को अन्तरण हो जाएगा। बैंकों में रखी यही राशि या तरल प्रतिभूतियां "हॉट मनी" या तत्काल हस्तांतरणीय मुद्रा कहलाती है।

Household (हाउस होल्ड) **परिवार**

लोगों का वह समूह, जिनके आर्थिक निर्णय परस्पर सम्बद्ध रहते हैं। वे एक ही घर में रहते हैं तथा उनके पारिवारिक खर्चे साझा रूप में किए जाते हैं। प्रायः समष्टिगत विश्लेषण में इन्हें परिवार के रूप में व्यक्त किया जाता है, जबकि व्यष्टिगत विश्लेषण में उपभोक्ता के रूप में इनका विश्लेषण किया जाता है।

Household production (हाउसहोल्ड प्रोडक्शन) **घरेलू उत्पादन**

परिवार के भीतर सेवाओं तथा वस्तुओं का उत्पादन, जिसका बाज़ार से औपचारिक या अनौपचारिक सम्बन्ध नहीं होता। परम्परागत समाज में आज भी अधिकांश उत्पादन घर में ही किया जाता है। अनेक उपभोग वस्तुओं का उत्पादन भी अधिकांशतः परिवार के लोगों के उपभोग हेतु ही किया जाता है।

परम्परागत एवं आधुनिक समाजों में वैसे भी अनेक आर्थिक क्रियाएँ परिवार के सदस्यों द्वारा सम्पादित कर ली जाती है, जैसे अपनी कार की सफाई, भोजन बनाना, लांड्री करना, सफाई करना आदि। इन सेवाओं के लिए परिवार द्वारा प्रायः कोई भुगतान नहीं किया जाता।

Human capital (ह्यूमन केपिटल) **मानवीय पूँजी**

ज्ञान की वह विधा, जो किसी व्यक्ति की दक्षता में वृद्धि करने में सहायक होती है। इस विधा में प्रशिक्षण, शोध तथा सामान्य शिक्षा शामिल हैं। यह उल्लेखनीय है कि यह पूँजी अभौतिक होती है, परन्तु भौतिक पूँजी की भाँति यह भी समय के साथ–साथ पुरानी हो जाती है, तथा ऐसी दशा में पुनः प्रशिक्षण अथवा शोध में निवेश करना आवश्यक हो जाता है।

Hyper inflation (हाइपर इन्फ्लेशन) **त्वरित गति वाली स्फीति**

इस स्थिति में कीमत स्तर की वृद्धि इतनी अधिक एवं तीव्र होती है कि *आम व्यक्ति का मुद्रा पर कोई विश्वास नहीं रह जाता।* इसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था एवं समाज में घोर संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति में मुद्रा की तुलना में वस्तु की कुल मात्रा अत्यंत नगण्य रह जाती है।

Hypothesis (हाइपोथीसिस) **परिकल्पना**

सैद्धान्तिक विश्लेषण के आधार पर विकसित एक कथन जिसकी सत्यता का परीक्षण

आंकड़ों के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक किन्हीं मान्यताओं पर आधारित होती है। ये मान्यताएँ उपभोक्ता या उत्पादक के व्यवहार से सम्बद्ध हो सकती हैं तथा इनकी विश्वसनीयता के आधार पर ही परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणाम विश्वसनीय होते हैं।

Hypothesis testing (हाइपोथीसिस टैस्टिंग) **परिकल्पना का परीक्षण**

इस बात की जांक कि किसी कथन या वक्तव्य पर अविश्वास करने हेतु कोई सांख्यिकीय आधार हैं। यदि परिकल्पना को आंकड़ों के आधार पर अस्वीकृत कर दिया जाए तो फिर नए आंकड़े प्राप्त करके पुनः उस मूल कथन का परीक्षण किया जाता है अथवा पुराने आंकड़ों के आधार पर आर्थिक सिद्धान्तों में ही संशोधन करना होता है।

उदाहरण के लिए, एक परिकल्पना लीजिए जिसके अनुसार किसी कम्पनी के आकार के आधार पर ही प्रबन्धकों को प्राप्त होने वाली पगार एवं सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। आंकड़ों के आधार पर इस कथन को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत किया जा सकता है। बार-बार आंकड़ों को जुटाकर उक्त परिकल्पना की प्रायिकता का बंटन किया जा सकता है।

I

Identity (आइडेंटिटी)

दो समान चरों के मध्य समानता स्थापित करने हेतु एक गणितीय विधि
उदाहरण के लिए, यदि यह माना जाए कि *सभी प्रकार से देखने* पर बचत तथा निवेश के मध्य समानता होगी तो इसे निम्न रूप में व्यक्त किया जाएगा :

$$S \equiv I$$

इसका एक उदाहरण फिशर के मुद्रा परिमाण सिद्धान्त के समीकरण में भी प्रस्तुत किया जाता है :

$$MV \equiv PT$$

इसमें M मुद्रा की मात्रा, V इसका चलन वेग, T वस्तुओं की मात्रा तथा P कीमत स्तर के प्रतीक हैं।

Illegal activities (इल्लीगल एक्टीविटीज) **अवैधानिक गतिविधियां**
देश के कानून द्वारा वर्जित गतिविधियां। उदाहरण के लिए, तस्करी को गैर कानूनी या अवैधानिक गतिविधि माना जाता है। इसी प्रकार करों की चोरी भी गैर कानूनी है।

Illiquidity (इल्लीक्विडिटी) **तरलता का अभाव**
किसी सम्पत्ति का वह लक्षण, जिसके अनुसार उसे तत्काल नगद रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे बेचने हेतु कोई बाज़ार विद्यमान नहीं है। यदि बाज़ार हो तब भी इस सम्पत्ति के लिए वांछित मूल्य उपलब्ध नहीं हो पाता। प्रायः तरलता के अभाव में फर्म या परिवार का दिवाला निकल सकता है।

Imaginary number (इमेजिनरी नम्बर) **अवास्तविक संख्या; काल्पनिक संख्या**
कोई ऐसी संख्या जिसका वर्ग –1 के समान हो। उदाहरण के लिए 1 के वर्गमूल –1 तथा +1 दोनों हो सकते हैं, और इसलिए $X^2=1$ के दो वास्तविक वर्ग मूल क्रमशः +1 तथा –1 हो सकते हैं। परन्तु $X^2=-1$ का कोई वर्गमूल नहीं हो सकता, अस्तु यह एक काल्पनिक संख्या कहलाएगी।

Immigration (इमिग्रेशन) **अप्रवास**
ऐसे विदेशी नागरिक जो किसी देश में आकर बसे हैं। ये लोग अल्पकाल के लिए अप्रवासी नहीं होते क्योंकि ये विद्याध्ययन, पर्यटन या व्यापार के लिए इस देश में नहीं रहते। इसके विपरीत अप्रवासी विदेशी नागरिक **दीर्घकाल के लिए** उद्योगों की स्थापना अथवा स्थायी कार्य (नौकरी आदि) के लिए आते हैं तथा इनकी वापसी की कोई निश्चित् तिथि नहीं होती। प्रायः अधिक पूँजी निवेश करने वाले अथवा विशिष्ट योग्यता वाले अप्रवासियों को स्थायी रूप से रहने हेतु वीज़ा भी मिल जाता है।

Immiserizing growth (इमिसराइजिंग ग्रोथ)
कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव वाली संवृद्धि

किसी क्षेत्र या देश में आर्थिक संवृद्धि की वह स्थिति जिससे आर्थिक कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, पूँजीगत वस्तुओं के आयात हेतु यदि कोई देश बहुत बड़ी मात्रा में प्राथमिक वस्तुओं (कच्चा माल, खनिज पदार्थ आदि) का निर्यात करे तो भले ही इससे आयातों को सुलभ बनाने हेतु विदेशी विनिमय की प्राप्ति हो जाएगी, परन्तु दीर्घकाल में देश की आर्थिक प्रगति पर उन निर्यातों के कारण प्रतिकूल प्रभाव होंगे। यही नहीं, देश को प्रतिकूल व्यापार शर्तों का भी सामना करना होगा तथा थोड़े से आयात हेतु सस्ती कीमत पर निर्यात करने होंगे।

Immobile factors (इम्मोबाइल फैक्टर्स) **अचल साधन**

ऐसे साधन, जो दो देशों या दो क्षेत्रों (कृषि व उद्योग) के बीच तत्काल अन्तरित नहीं किए जा सकते। दो क्षेत्रों या उद्योगों के बीच श्रमिकों का अन्तरण प्रायः इसलिए नहीं हो पाता कि उनमें वह कौशल या योग्यता नहीं है जिसकी दूसरे उद्योग में आवश्यकता है। इसी प्रकार श्रम या पूँजी को एक देश से दूसरे देश में स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें भाषा सम्बन्धी या वैधानिक कठिनाइयाँ है।

Impact effect (इन्पैक्ट इफेक्ट) **सामयिक घटना प्रभाव**

किसी आर्थिक घटना के प्रभाव का वह अंश जो अल्पकालिक या तात्कालिक होता है। उदाहरण के लिए, सरकारी व्यय, पूँजी निवेश या निर्यात अल्पकाल में आय पर उतना ही प्रभाव डाल सकता है जितना व्यय किया गया है। **फिर भी दीर्घकाल** में आय में होने वाला परिवर्तन गुणक प्रभाव के कारण काफी अधिक हो जाता है।

Imperfect competition (इंपर्फेक्ट कम्पीटीशन) **अपूर्ण प्रतियोगिता**

ऐसा बाज़ार, जिसमें अपेक्षाकृत कम विक्रेता होते हैं तथा या तो वे विभेदीकृत वस्तुएँ बेचते हैं, अथवा समरूपी वस्तुएँ होने पर भी विभिन्न विक्रेताओं के व्यवहार में भिन्नता होती है। यह भिन्नता उनके द्वारा क्रेताओं को दी जाने वाली सुविधाओं (होम डिलीवरी, साख, बिक्री बाद की सेवा या गारंटी, पार्किंग सुविधा, बच्चों के लिए खेलने की सुविधा, सेल्समैन का व्यवहार आदि) के कारण भी हो सकती है।

जब विक्रेताओं द्वारा विभेदीकृत वस्तुएँ बेची जाती हों तो ऐसे बाज़ार को एकाधिकारिक प्रतियोगिता वाला बाज़ार कहते है। संक्षेप में, वस्तुएँ विभेदीकृत हों या समरूपी, अपूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में क्रेता अपने पसन्द के अनुसार विक्रेता को चुनते हैं।

Implicit cost (इंप्लिसिट कॉस्ट) **आन्तरिक लागत**

फर्म द्वारा स्वयं के साधनों की अवसर लागतें। उदाहरण के लिए एक छोटे व्यवसायी या छोटे किसान द्वारा अपने उपक्रम में प्रयुक्त स्वयं के श्रम का कोई भुगतान नहीं किया जाता, परन्तु उसकी अवसर लागत का अनुमान अवश्य किया जा सकता है। फर्म का स्वामी यह अनुमान लगा सकता है कि यदि इतना ही श्रम वह अन्य किसी

उपक्रम में प्रयुक्त करता तो उसे कितनी आय प्राप्त होती। यही बात स्वयं की पूँजी या स्वयं के भवन की अवसर लागत पर भी लागू होती है।

Imports (इम्पोर्ट्स) **आयात**

ऐसी वस्तुएँ जो अन्य देशों में निर्मित होती हैं तथा जिन्हें भौतिक रूप में कोई देश क्रय करके मंगवाता है। इसी प्रकार यदि कोई देश विदेशी विशेषज्ञों की सेवाएँ लेकर (इंजीनियर, डाक्टर, तकनीशियन के रूप में) अथवा विदेशी भ्रमण या बैंकिंग व बीमा सुविधाओं के द्वारा विदेशी विनिमय को बाहर अन्तरित करता है तो यह सेवाओं का आयात कहलाता है। आयात की तीसरी श्रेणी विदेशी संस्थाओं द्वारा पूंजी के निवेश के रूप में होती है। आयातों के द्वारा कोई देश खनिज तेल, इस्पात, कच्चा माल, मशीनें आदि प्राप्त करके आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकता है। इसके विपरीत अनिवार्य खाद्य वस्तुएँ आयात करके खाद्यान्नों की कमी को पूरा करने में भी आयात सहायक होते हैं।

Import deposit (इम्पोर्ट डिपोज़िट) **आयात हेतु जमा**

आयात करने वाला व्यक्ति या संस्था आयातित वस्तु के मूल्य का एक अंश आयात होने के बाद सरकार के पास जमा करता है। आयात हेतु की गई इस जमा राशि से भुगतान संतुलन को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

Import duty (इम्पोर्ट ड्यूटी) **आयात कर**

सरकार द्वारा आयातित वस्तुओं पर लगाया गया कर। इस कर का उद्देश्य सरकारी कोष हेतु राजस्व प्राप्त करना तथा स्वदेशी उद्योगपतियों को संरक्षण प्रदान करना होता है। आयात कर को तटकर या tariff भी कहते हैं।

Import license (इम्पोर्ट लाइसेंस) **आयात लाइसेंस**

सरकार द्वारा किसी वस्तु को आयात करने हेतु जारी अनुज्ञा पत्र। आयात लाइसेंस की नीति द्वारा सरकार आयातों को नियंत्रित करती है तथा प्रायः स्वदेशी उद्यमियों को संरक्षण प्रदान करती है।

Import penetration (इम्पोर्ट पेनीट्रेशन) **आयातों का दबाव**

प्रायः तुलनात्मक लागतें कम होने के कारण आयात स्वदेशी वस्तुओं की अपेक्षा सस्ते होते हैं। लेकिन यदि आयातित वस्तुओं की लोकप्रियता काफी व्यापक हो जाए, और इनकी तुलना में देश के पास निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ कम हों तो व्यापार शेष काफी प्रतिकूल हो जाएगा। इसके फलस्वरूप अन्ततः उस देश का सकल राष्ट्रीय उत्पाद कम हो जाएगा। यही कारण है कि प्रायः आयातों पर अंकुश लगाने की नीति अपनाई जाती है।

Import propensity (इम्पोर्ट प्रोपेन्सिटी) **आयात क्षमता; आयात प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जो आयातों पर व्यय किया जाता है। आयात प्रवृत्ति औसत तथा सीमान्त दोनों प्रकार की हो सकती है।

औसत आयात प्रवृत्ति (AIP) = $\frac{m}{Y}$

जहां m आयातों का कुल मूल्य है, जबकि Y राष्ट्रीय आय है।

सीमान्त आयात प्रवृत्ति (MIP) = $\frac{\Delta m}{\Delta Y}$

जहाँ Δm आयात में हुई वृद्धि का प्रतीक है, जबकि ΔY राष्ट्रीय आय में हुई वृद्धि को दर्शाती है।

Import substitution (इम्पोर्ट सब्स्टीट्यूशन) **आयात प्रतिस्थापन**

देश के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के उद्देश्य से यदि सम्बद्ध वस्तुओं के आयात पर नियंत्रण लगाया जाए, तो इसे आयात प्रतिस्थापन की नीति कहा जाता है। प्रायः विकासशील देशों की रणनीति कुछ वस्तुओं के आयातों पर भारी कर लगाने या उन्हें निषिद्ध श्रेणी में डालकर देश में उनके उत्पादन में वृद्धि करने की रहती है। यह नीति "निर्यात प्रोत्साहन" की नीति से सर्वथा भिन्न है जिसके अनुसार सरकार अनुदानों या प्रत्यक्ष सहायता के माध्यम से निर्यातों में वृद्धि करने का प्रयास करती है।

Import surcharge (इम्पोर्ट सरचार्ज) **आयात सरचार्ज**

भुगतान शेष की प्रतिकूलता को समाप्त करने के उद्देश्य से आयात कर के ऊपर लगाया गया एक सरचार्ज।

Imported inflation (इम्पोर्टेड इंफ्लेशन) **मुद्रा स्फीति का आयात**

यदि आयातित वस्तुओं की कीमत में वृद्धि के कारण देश में उत्पादन की लागतें बढ जाएँ तो यह आयातित मुद्रा स्फीति है। 1973 में खनिज तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण भारत में रसायनिक खाद, डीजल तथा पैट्रोल की कीमतें काफी बढ़ गई थीं क्योंकि हमारे आयातों में खनिज तेल का अंश बहुत बड़ा रहा था।

Imputed cost (इंप्यूटेड कॉस्ट) **अवसर लागत**

फर्म के स्वयं के साधनों की वह लागत, जिसे खातों में अंकित नहीं किया जाता, परन्तु यदि ये ही साधन अन्यत्र प्रयुक्त होते तो इन्हें प्राप्त होने वाली कीमत, या अवसर लागत। देखिए Implicit cost या आन्तरिक लागत।

Imputed income (इंप्यूटेड इन्कम) **आंतरिक आय**

साधनों के स्वामी को स्वयं के साधनों हेतु प्राप्त होने वाली आय। किसी सम्पत्ति के स्वामी को प्राप्त हो सकने वाली वह आय जिसे वह अन्यत्र प्रयुक्त करने पर अर्जित करता है। इसका एक उदाहरण मकान का वह किराया है जो मकान मालिक अन्य किसी से प्राप्त करता, परन्तु उसे यह आय इसलिए नहीं मिल रही है क्योंकि वह स्वयं उस मकान में रह रहा है। इस प्रकार की आय को प्रायः राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल किया जाता है।

Incentives (इन्सेन्टिव्ज़) **प्रोत्साहन के तरीके**

जब कोई उद्यमी अपने श्रमिकों से अधिक तथा बेहतर उत्पादन प्राप्त करने हेतु पुरस्कारों की घोषणा करता है, तो स्वाभाविक तौर पर इस नीति की क्रियान्विति में सहयोग देने वाले श्रमिक पुरस्कार के अधिकारी हो जाते हैं। यही नीति सरकार निर्यात करने वालों के लिए अपना सकती है, तथा अधिक निर्यात करने वाली संस्थाओं को प्रोत्साहन राशि या पुरस्कार दिए जा सकते हैं।

नए निवेशकों को भी प्रायः सरकार करों में छूट देकर, या कम कीमत पर भूमि, पानी, बिजली आदि उपलब्ध कराकर अथवा उन्हें आसान शर्तों पर साख उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित कर सकती है।

Incidence of taxation (इन्सीडेन्स ऑफ टैक्सेशन) **कर का भार**

करारोपण का वास्तविक भार। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष करों के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तर यह भी है कि जहां प्रत्यक्ष कर (आयकर, सम्पत्ति कर, मनोरंजन कर आदि) को चुकाने वाला ही अन्ततः इसका भार वहन करता है, परोक्ष कर जैसे उत्पादन कर, आयात कर, बिक्री कर आदि की वसूली उत्पादक या विक्रेता से की जाती है परन्तु वह इस भार को पूर्ण या आंशिक रूप से उपभोक्ता पर अन्तरित कर देता है। इस प्रकार परोक्ष कर का वास्तविक भार पूर्ण या आंशिक तौर पर उपभोक्ता को वहन करना होता है। किसी परोक्ष कर (मान लीजिए, बिक्री कर) का कितना भार विक्रेता वहन करता है तथा कितना उपभोक्ता को वहन करना पड़ता है यह माँग की लोच पर निर्भर करता है। नीचे प्रस्तुत चित्र से यह स्पष्ट हो जाता है।

(a) (b)
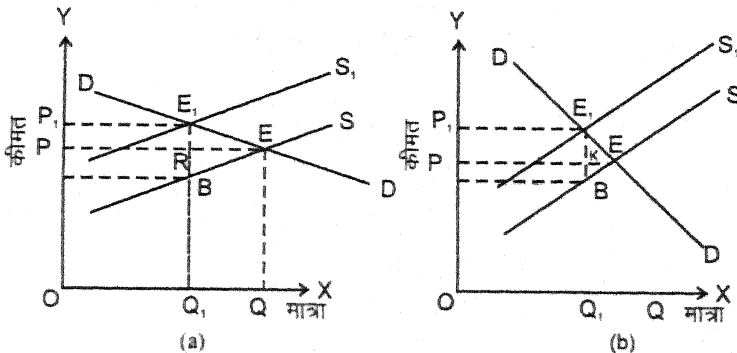
उपरोक्त चित्र के पैनल (a) में माँग तथा पूर्ति वक्रों के प्रतिच्छेदन से मौलिक कीमत OP तथा मात्रा OQ थी। यदि वस्तु पर E_1B के समान कर रोपित कर दिया जाए तो कीमत तथा मात्रा की साम्य स्थिति OP_1 तथा OQ_1 हो जाएगी। जैसा कि चित्र से स्पष्ट है, E_1B का लगभग आधा भाग RE_1 तो ऊँची कीमत के रूप में उपभोक्ता वहन करता है जबकि शेष (RB) विक्रेता को वहन करना होगा।

यदि माँग अपेक्षाकृत बेलोच हो, जैसा कि चित्र के पैनल (b) में बतलाया गया है तो पूर्व जितना ही परोक्ष कर (E_1B) रोपित करने पर कर का अधिक भार (KE_1) उपभोक्ता को वहन करना होगा जबकि केवल KB ही विक्रेता वहन करेगा। यह सरलता से समझा जा सकता है कि *माँग की लोच जितनी कम होगी (यानी माँग वक्र का ढलान जितना अधिक होगा) उपभोक्ता पर कर का उतना ही अधिक भार होगा।*

Income (इन्कम) **आय**

व्यक्तियों तथा उत्पादन/बिक्री में संलग्न संस्थानों के द्वारा मज़दूरी, ब्याज़, किराया या लगान, लाभांश, पगार अथवा लाभ के रूप में प्राप्त मुद्रा। इसमें सेवानिवृत्त व्यक्तियों को प्राप्य पेंशन तथा सरकार द्वारा प्रदत्त अनुदान/हस्तांतरण भुगतान भी शामिल है जो व्यक्तियों को मुद्रा के रूप में प्राप्त होता है। जहां व्यक्तिगत आय को उपभोग तथा बचत के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है, वहीं फर्म को प्राप्त आय यानी लाभ का उपयोग अंशधारियों को लाभांश के रूप में तथा/अथवा निवेश करने हेतु किया जा सकता है।

जब सभी को प्राप्त आय, यानी सकल मज़दूरी, ब्याज़ लगान/किराया, पगार तथा लाभ का योग किया जाता है तो इसे साधन–आधारित राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

Income consumption curve (इन्कम कंज़प्शन कर्व) **आय उपभो वक्र**

जैसे–जैसे उपभोक्ता की आय में वृद्धि (या कमी) होती है, उसके द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा में भी सामान्य तौर पर वृद्धि (या कमी) होती जाती है। आय उपभोग वक्र तटस्थता या उदासीनता वक्रों के सन्दर्भ में मौद्रिक आय में होने वाले परिवर्तनों के संदर्भ में उपभोक्ता की साम्य स्थितियों में क्या परिवर्तन होंगे, इसका बोध कराता है।
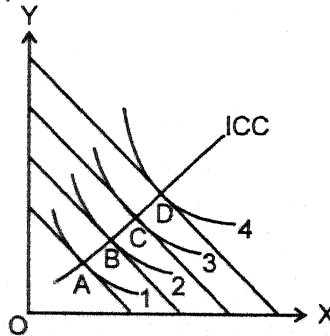
उपर्युक्त चित्र में जैसे–जैसे आय में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे उपभोक्ता की साम्य स्थिति A से हटकर पहले B तथा बाद में C व D हो जाती है। उपभोक्ता का संतुष्टि स्तर भी उत्तरोत्तर ऊँचे तटस्थता वक्र के अनुरूप बढ़ता जाता है। यदि सभी

साम्य स्थितियों को मिला दिया जाए तो जो वक्र या रेखा हमें प्राप्त होगी वही आय उपभोग वक्र या ICC कहलाएगी।

Income distribution (इन्कम डिस्ट्रीब्यूशन) **आय वितरण**

कुल आय का साधनों के स्वामियों के मध्य आवंटन। इसी प्रकार समाज में जितने व्यक्ति हैं उन्हें उत्पादन प्रक्रिया में उनके योगदान के आधार पर जो आय प्राप्त होती है उसके आधार पर वैयक्तिक आय वितरण ज्ञात किया जा सकता है।

प्रायः वैयक्तिक आय के वितरण में व्याप्त विषमताओं से उन व्यक्तियों को गरीबी की मार सहनी पड़ती है जिनकी आय से न्यूनतम ज़रूरतों की पूर्ति भी सम्भव नहीं होती।

Income effect (इन्कम इफेक्ट) **आय प्रभाव**

वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय में भी परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, **X** की कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय में वृद्धि होती है, जबकि कीमत बढ़ने पर इसमें कमी होती है। वास्तविक आय में वृद्धि के कारण उपभोक्ता वस्तु की अधिक मात्रा खरीदता है, भले ही उसकी मौद्रिक आय अपरिवर्तित रहे। वस्तुतः कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता उतनी ही मौद्रिक आय के अन्तर्गत अधिक मात्रा ख़रीद सकता है। प्रायः बढ़ी हुई वास्तविक आय का आवंटन X के अलावा Y या Z वस्तु हेतु भी किया जाता है।
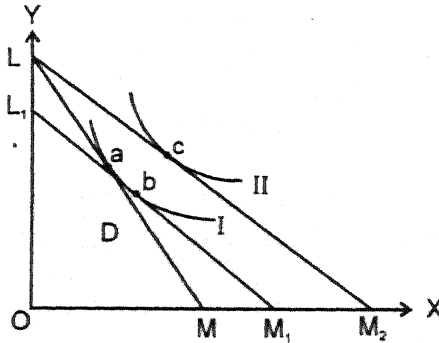
उपर्युक्त चित्र में जब X की कीमत में कमी होने पर बजट रेखा LM से आवर्तित होकर LM_2 हो जाती है तो उपभोक्ता की साम्य स्थिति a से बदलकर c हो जाती है। यदि उपभोक्ता को मूल संतुष्टि स्तर (I) पर रखते हुए नई कीमत के अनुरूप वस्तु ख़रीदने को कहा जाए तो उसकी साम्य स्थिति b होगी जहां अधिक X ख़रीदने हेतु उसे Y की मात्रा में कमी करनी होगी। *a से b के बीच जो साम्य स्थिति में परिवर्तन है उसे प्रतिस्थापन प्रभाव कहा जाता है।* परन्तु यदि उसे ऊँचे संतुष्टि स्तर (II) पर जाने की छूट दी जाए तो साम्य स्थिति c पर होगी। b से c पर जाने की स्थिति आय प्रभाव का परिणाम है। यह स्पष्ट है कि *इस आय प्रभाव के कारण उपभोक्ता X तथा Y दोनों की मात्राएँ अधिक लेता है।*

Income expansion path (इन्कम एक्सपैंशन पाथ) **आय विस्तार पथ**

एक वक्र जो यह दर्शाता है कि जैसे–जैसे आय में वृद्धि होती है, विभिन्न उपयोगों (जैसे आयात, निर्यात या उपभोग, बचत आदि) में इसका आवंटन किस प्रकार किया जाता है। प्रायः यह मान्यता ली जाती है कि प्रत्येक उपयोग की आय लोच इकाई के समान है और इस लिए आय विस्तार पथ (दो वस्तुओं के संदर्भ में) मूल बिन्दु से एक सीधी रेखा के रूप में होता है।

Income redistribution (इन्कम रीडिस्ट्रीब्यूशन) **आय का पुनर्वितरण**

सरकार द्वारा विभिन्न उपायों द्वारा वैयक्तिक आय वितरण की विषमताओं को कम किया जाता है। इन उपायों में प्रगतिशील कर, सरकारी व्यय नीति, नियंत्रण तथा *कम आय वाले लोगों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम* शामिल हैं। इन उपायों के लागू होने के कुछ समय बाद इस बात की समीक्षा की जाती है कि आय विवरण की विषमताओं में कितनी कमी हुई।

Income support (इन्कम सपोर्ट) **आय बढ़ाने हेतु सहायता**

कभी–कभी सरकार कम आय वाले व्यक्तियों या निर्धन परिवारों को नगद भुगतान करके उनकी आय को सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत एक न्यूनतम स्तर तक लाने का प्रयास करती है। इनमें वृद्ध, बीमार, अपंग व बेरोज़गार व्यक्तियों को दी जाने वाली राशि भी शामिल है। अनेक विकसित व विकासशील देशों में ये कार्यक्रम प्रचलित हैं। आय बढ़ाने हेतु सहायता के लाभार्थियों में दूसरा वर्ग उत्पादकों का है। जब किन्हीं वस्तुओं की कीमतें पर्याप्त आय नहीं दे पातीं तो सरकार उनके उत्पादकों की सहायतार्थ कुछ नगद राशि प्रदान करती है।

Income tax (इन्कम टैक्स) **आय कर**

आय पर आनुपातिक रूप से या *उत्तरोत्तर ऊँची आय पर अधिक दर* से कर रोपित किया जा सकता है। लगभग सभी देशों में आय के निम्न स्तरों पर कर की दर शून्य होती है।

आय कर एक प्रत्यक्ष कर है तथा इसका सम्पूर्ण भार कर दाता ही वहन करता है। प्रायः कर की राशि का निर्धारण करते समय कुछ रियायतें दी जाती है। उदाहरण के लिए मानक कटौती, अधिकृत दान की राशि, आश्रितों के दायित्व, बीमा आदि को सकल आय में से घटाकर करारोपण योग्य आय का निरूपण किया जाता है।

Income velocity of circulation (इन्कम वेलोसिटी ऑफ सर्कुलेशन)

देश में कुल मुद्रा के स्टॉक का राष्ट्रीय आय में अनुपात

प्रायः यह अनुपात वास्तविक चलन वेग की तुलना में कम होता है क्योंकि आय की अपेक्षा कुल क्रय–विक्रय के सौदों की राशि बहुत अधिक होती है तथा मध्यवर्ती वस्तुओं का व्यापार काफी अधिक होता है।

यही कारण है कि मुद्रा के वास्तविक स्टॉक का चलन वेग बहुत अधिक हो जाता है।

Increasing returns (इन्क्रीज़िंग रिटर्न्स) **वर्द्धमान प्रतिफल**

यदि अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए केवल एक साधन (मान लीजिए श्रम) में वृद्धि करने पर उत्पादन में उससे कहीं अधिक वृद्धि हो तो यह प्रवृत्ति वर्द्धमान प्रतिफल को दर्शाती है। मान लीजिए, श्रम की मात्रा 10 मानव दिवस से बढ़ाकर 15 दिवस करने पर, अन्य साधनों को यथावत् रखते हुए, उत्पादन की मात्रा 20 से बढ़कर 40 इकाई हो जाए तो इस प्रवृत्ति को वर्द्धमान प्रतिफल कहा जाएगा।

Increasing returns to scale

(इन्क्रीज़िग रिटर्न्स टू स्केल) **पैमाने के वर्द्धमान प्रतिफल**

जब उत्पादन के सभी साधनों को *समान अनुपात* में बढ़ाने पर उत्पादन की मात्रा में उससे अधिक वृद्धि हो तो इसे पैमाने के वर्द्धमान प्रतिफल की संज्ञा दी जाती है। निम्न उत्पादन फलन को देखिए :

$$Q = AL^{.6}K^{.8}$$

यह एक कॉब डग्लस उत्पादन फलन है जिसमें श्रम तथा पूँजी की उत्पादन लोच क्रमशः 0.6 तथा 0.8 है, तथा इनका योग 1.4 है। जिसका यह अर्थ हुआ कि श्रम व पूँजी की मात्राओं को 100 प्रतिशत बढ़ाने पर उत्पादन में 140 प्रतिशत वृद्धि होगी। (देखिए economic of scale या पैमाने की बचतें)

Incremental capital output ratio (ICOR)

इन्क्रीमेंटल केपीटल आउटपुट रेशियो **वर्धित पूँजी-उत्पादन अनुपात**

उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त पूँजी का उत्पादन के साथ अनुपात। मान लीजिए, 1 करोड़ रुपए की लागत से स्थापित प्लांट से किसी फर्म को 20 लाख रुपए का उत्पादन प्रतिवर्ष प्राप्त होता है तो पूँजी–उत्पादन अनुपात 5:1 हो गया। इसे वर्धित पूँजी उत्पादन अनुपात इसलिए भी कहा जाता है कि यह *अतिरिक्त पूँजी के निवेश से प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन* को व्यक्त करता है।

Incumbent firm (इन्कम्बैंट फर्म) **स्थविर प्रज्ञ फर्म**

एक पूर्ण स्पर्द्धा वाले बाज़ार में विभिन्न फर्मों द्वारा समरूपी वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, और जहां डूबी हुई लागतें (ऐसी सम्पत्ति जिसका विक्रय मूल्य शून्य हो) नहीं हैं, वहां किसी *पहले से विद्यमान यानी स्थविर फर्म एवं सम्भावित नई प्रवेशार्थी फर्मों के बीच कोई अन्तर नहीं होता।* यदि वस्तुओं की गुणवत्ता में अन्तर हो तथा डूबी हुई लागतें भी हों तब स्थविर फर्म की स्थिति प्रवेशार्थी नई फर्मों की अपेक्षा बेहतर होगी क्योंकि स्थविर फर्म ने अपनी साख को सुदृढ़ बना रखा है तथा उसकी उत्पादन लागत भी अपेक्षाकृत कम है।

Indexation (इन्डेक्सेशन) **समायोजनशील भुगतान**

ऐसी प्रक्रिया जिसके अन्तर्गत मज़दूरी, प्रतिभूतियों पर ब्याज़ के भुगतान मौद्रिक रूप में स्थिर न होकर कीमतों के सूचकांक के अनुरूप समायोजनशील होते हैं। ये

सूचकांक खुदरा या थोकमूल्य से सम्बद्ध हो सकते है। इसी प्रकार पेंशन का भुगतान भी खुदरा या थोक मूल्य के सूचकांक के आधार पर किया जा सकता है। इस समायोजन का प्रयोजन मूल्य स्तर के बढ़ने की स्थिति में वास्तविक आय में स्थिरता बनाए रखना है।

Index-linked (इन्डेक्स लिंक्ड) **सूचकांक से संबद्ध**

किसी चल के मूल्य को निर्दिष्ट सूचकांक के अनुरूप निर्धारित करना। उदाहरण के लिए, मज़दूरी या पेंशन को खुदरा मूल्य सूचकांक से सम्बद्ध करके यह सुनिश्चित् किया जा सकता है कि मज़दूरी या पेंशन में उसी अनुपात में वृद्धि की जाए जिसमें खुदरा मूल्य सूचकांक में वृद्धि हुई है। इससे इन भुगतानों की **वास्तविक राशि** को यथावत् रखा जा सकता है।

Index number (इन्डेक्स नम्बर) **सूचकांक**

किसी आधार वर्ष की तुलना में किसी चर के आकार में कितना (प्रतिशत) परिवर्तन होता है, यह दर्शाने वाली संख्या। सामान्य तौर पर आधार वर्ष की संख्या को 1 या 100 मानकर किसी अन्य वर्ष के मूल्य से इसकी तुलना की जा सकती है। उदाहरण के लिए, खुदरा मूल्यों का औसत 1980–81 में 100 था तथा 2000–2001 में कीमतें *आमतौर पर* 70 प्रतिशत बढ़ गई हों तो 2000–2001 में सूचकांक 170 हो जाएगा। निम्न उदाहरण से यह और भी स्पष्ट हो जाता है–

क्र.	वस्तु	आधार वर्ष (1980–81) की कीमत (रु.) प्रति इकाई	सूचकांक	वर्तमान वर्ष (2000–2001) की कीमत प्रति प्रति इकाई (रु.)	सूचकांक
1.	दूध (प्र.लीटर)	7.0	100	14.00	200
2.	घी (प्र.किलो)	80.00	100	100.00	125
3.	कपड़ा (प्र.मीटर)	30.00	100	40.00	133
4.	मकान किराया	500.00	100	1000.00	200
5.	दालें (प्र.किलो)	10.00	100	20.00	200
6.	पैट्रोलै (प्र.लीटर)	15.00	100	30.00	200
7.	बिजली (प्र.इकाई)	2.00	100	3.00	150
8.	फल (प्र.किलो)	10.00	100	15.00	150
	योग		800		1358
	औसत		100		170

कीमत सूचकांक हेतु निम्न सूत्र प्रयोग में लिया जा सकता है :

$$\frac{\sum P_{1i}}{\sum P_{oi}} \times 100$$

जहां i निर्दिष्ट वस्तु की कीमत है, P_1 इसकी वर्तमान कीमत एवं P_0 इसकी आधार वर्ष की कीमत है।

इस प्रकार 1980–81 (=100) की तुलना में 2000–2001 में मूल्य स्तर 70 प्रतिशत बढ़ गया है यानी सूचकांक 170 हो गया है।

Index of production (इन्डेक्स ऑफ प्रोडक्शन) **उत्पादन का सूचकांक**

प्रायः आधार वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष में चुनी हुई औद्योगिक या कृषि वस्तुओं का उत्पादन कितना बढ़ा इसके लिए भी सूचकांक बनाए जाते हैं। उत्पादन से सम्बद्ध सूचकांक में भी प्रत्येक वस्तु के आधार वर्ष के उत्पादन को 100 मानकर वर्तमान वर्ष के उत्पादन का प्रतिशत निकाला जाता है तथा दोनों वर्षों के सूचकाकों का औसत ज्ञात किया जाता है। जहाँ उत्पादन में कमी होती है वहां वर्तमान वर्ष का उस वस्तु का सूचकांक 100 से कम होगा। निम्न सूत्र से उत्पादन का सूचकांक ज्ञात किया जा सकता है:

$$\frac{\sum P_{1i}}{\sum P_{oi}} \times 100$$

जहां i प्रत्येक वस्तु के लिए Q_0 आधार वर्ष के उत्पादन हेतु तथा Q_1 वर्तमान वर्ष के उत्पादन के लिए प्रयुक्त किया गया है। इस संदर्भ में वस्तुओं की संख्या 1 से लेकर n तक हो सकती है $(i = 1, 2, 3, ----, n)$।

Indicative planning (इंडीकेटिव प्लानिंग)

संकेतात्मक नियोजन; अनौपचारिक नियोजन

इसके अन्तर्गत सरकार द्वारा दीर्घकाल के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित कर लिए जाते हैं तथा निजी व सरकारी क्षेत्र की आर्थिक इकाइयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने–अपने निवेश, जो रोजगार तथा उत्पादन को उन्हीं लक्ष्यों के अनुरूप निर्धारित करेंगे। इसके विपरीत औपचारिक नियोजन (जिसे केन्द्रीयकृत नियोजन भी कहा जाता है) के अन्तर्गत सरकार जहां अपने विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु साधनों का आवंटन करती है, निजी क्षेत्र की इकाइयों के लिए संकेतात्मक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

जापान व फ्रांस में छठे दशक से संकेतात्मक नियोजन की नीति अपनाई जा रही है। यह उल्लेखनीय है कि इस प्रकार के नियोजन में बाज़ार तंत्र की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहती है।

Indicator (इंडीकेटर) **संकेत; संकेतक**

नीति विषयक तरीकों के प्रयोग में लिया जाने वाला चर। आर्थिक नीति के लक्ष्यों में उच्चतर रोज़गार तथा संवृद्धि जैसे उद्देश्य निहित होते हैं। इनमें मुद्रा स्फीति की नीची दर एवं विनिमय दर की स्थिरता, जैसे उद्देश्य भी शामिल हो सकते हैं। नीति विषयक चर वे संकेतक हैं जिनका सरकार तथा केन्द्रीय बैंक उपयोग करते हैं, अथवा जिन्हें इनके द्वारा प्रभावित किया जाता है। परन्तु नीति से सम्बद्ध संकेतों को लक्ष्यों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि लक्ष्यों की अपेक्षा इनका माप अधिक विश्वस्त रूप में किया जा सकता है। इनसे सरकार को यह सुनिश्चित् करने में आसानी रहती है कि नीति विषयक उपाय कितने प्रभावी रहे हैं।

Indifference curve

(इन्डिफरेंस कर्व) **तटस्थता वक्र; उदासीनता वक्र; अनधिमान वक्र**

ऐसा वक्र जो वस्तुओं के विभिन्न संयोग प्रस्तुत करता है, जिनमें से प्रत्येक से उपभोक्ता को समान संतुष्टि या उपयोगिता प्राप्त होती है। वस्तुतः उपभोक्ता एक वस्तु का उपभोग बढ़ाने हेतु दूसरी वस्तु का त्याग करता है, और इसलिए तटस्थता वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है। परन्तु त्यागी जाने वाली वस्तु में त्याग की मात्रा उत्तरोत्तर कमी होने के कारण तटस्थता वक्र मूल बिन्दु से उन्नतोदर होता है।

उदासीनता का वक्र
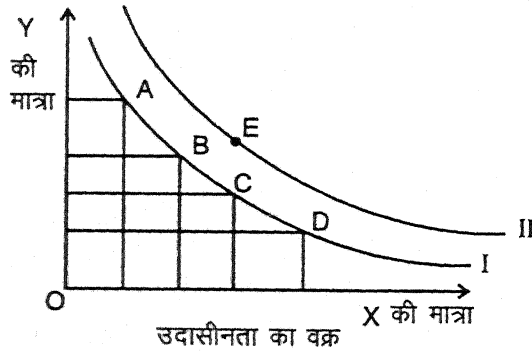
उपर्युक्त चित्र में A, B, C तथा D इन चारों वैकल्पिक स्थितियों में उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है। जैसे-जैसे उपभोक्ता A से B पर या B से C या C से D पर आना चाहता है, उसे Y की कुछ मात्राएँ छोड़कर ही X की मात्रा बढ़ानी होगी। परन्तु जैसा कि चित्र से स्पष्ट है, जैसे-जैसे उपभोक्ता X की मात्रा बढ़ाता है, **Y की त्यागी गई मात्र में कमी होती जाती है**। यदि यह त्याग (जिसे **सीमान्त प्रतिस्थापन दर** कहा जाता है) समान दर पर हो तो उदासीनता वक्र उन्नतोदर न होकर एक सीधी रेखा के रूप में होगा।

परन्तु यदि उपभोक्ता ऊपर वाले तटस्थता वक्र पर जाए (जैस कि बिन्दु E पर) तो

उसे X तथा Y दोनों की, अथवा एक की मात्रा वही रहते हुए दूसरी वस्तु की, अधिक मात्रा प्राप्त होगी जिसके कारण उसे A, B, C, या D की तुलना में अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी।

Indirect costs (इन्डायरेक्ट कॉस्ट्स) **परोक्ष लागतें**

वे सभी लागतें जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध उत्पादन से नहीं होता। उदाहरण के लिए, कारखाने में प्रयुक्त विद्युत् या उष्मा, प्लांट व मशीनों की घिसावट, सम्पत्ति का रख रखाव, प्रशासनिक खर्चे आदि को कुल लागत में शामिल तो किया जाता है परन्तु इन्हें उत्पादन से सम्बद्ध नहीं होने के कारण परोक्ष लागतों के रूप में माना जाता है। इन्हें Overheads या ऊपरी लागतें भी कहा जाता है।

Indirect labour (इन्डायरेक्ट लेबर) **परोक्ष श्रम**

ऐसा श्रम, जिसका अनुपात प्रक्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं होता। उदाहरण के लिए, सुपरवाइज़रों तथा लिपिकों की उत्पादन प्रक्रिया में कोई सीधी भूमिका नहीं होती।

Indirect tax (इन्डायरेक्ट टैक्स) **परोक्ष कर**

सरकार द्वारा रोपित वह कर जो वस्तुओं व सेवाओं पर लगाया जाता है। इस कर का भुगतान तो उत्पादन या विक्रेता द्वारा किया जाता है, परन्तु वह इसे आंशिक या पूर्णरूप से उपभोक्ता अथवा निजी अन्य व्यक्ति या फर्म पर अंतरित कर सकता है। परोक्ष कर की दर में वृद्धि करके सरकार अधिक राजस्व एकत्रित करना चाहती है परन्तु वस्तुतः इसमें कितनी वृद्धि होगी यह सम्बद्ध वस्तु की माँग की लोच पर निर्भर करता है। (देखिए incidence of taxation)

प्रायः परोक्ष कर की वही दर सभी उपभोक्ताओं पर लागू होती है। अन्य शब्दों में, किसी परोक्ष दर को प्रगतिशील बनाना सम्भव नहीं होता।

Indirect utility function

(इन्डायरेक्ट यूटिलिटी फंक्शन) **परोक्ष उपयोगिता फलन**

इसमें उपयोगिता का स्तर आय तथा कीमतों पर निर्भर करता है न कि X, Y व Z आदि वस्तुओं की मात्रा पर

प्रत्यक्ष उपयोगिता फलन : $U = f(X, Y, Z)$

परोक्ष उपयोगिता फलन : $U = f(\text{Income, Prices of } X, Y, Z)$

जहां प्रत्यक्ष उपयोगिता फलन के अंतर्गत X, Y, Z की या इन वस्तुओं में से किसी एक की मात्रा बढ़ने पर उपयोगिता (U) में वृद्धि होती है, वहीं परोक्ष उपयोगिता फलन में आय बढ़ने से तो उपयोगिता में वृद्धि होगी परन्तु कीमतों में वृद्धि के फलस्वरूप उपयोगिता में कमी होगी।

परोक्ष उपयोगिता फलन के अन्तर्गत आय तथा कीमतें वस्तुओं की मात्राओं को प्रभावित करती हैं और इन पर उपयोगिता निर्भर करेगी। परन्तु ये मात्राएँ प्रत्यक्ष उपयोगिता फलन के मॉडल में नहीं दर्शाई जातीं।

Indivisibility (इंडिविज़िबिलिटी) **अविभाज्यता**

वह न्यूनतम पैमाना जिस पर फर्म कोई तकनीक कार्य कर सकती है। उदाहरण के लिए, एक कम्पनी प्रतिदिन 5000 क्रियाएँ सम्पादित करने वाली एक मशीन ख़रीदना चाहती है। डिज़ाइन तथा तकनीकी कठिनाइयों के कारण यह कम्पनी केवल 3000 क्रियाएँ ही सम्पादित कर सकती है, परन्तु मशीन की अविभाजनशीलता के कारण उसका इष्टतम क्षमता से कम उपयोग हो पाता है। ऐसी स्थिति में वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत इष्टतम स्तर की अपेक्षा अधिक होगी।

बहुत बड़े संयंत्र के साथ चूंकि *छोटे स्तर पर कार्य करना महँगा होता है,* प्रायः यह कहा जाता है कि उत्पादन के अन्य साधनों, यानी पैमाने, को बढ़ाने से प्रति इकाई उत्पादन लागत कम होती है, यानी फर्म को पैमाने की मितव्ययताएँ (बचतें) प्राप्त होती हैं। इसके पीछे उस बड़े एवं अविभाज्य संयंत्र की क्षमता का इष्टतम प्रयोग भी एक महत्वपूर्ण कारण होता है।

Induced consumption
(इंड्यूस्ड कंसंप्शन) **स्फूर्त उपभोग; प्रेरित उपभोग**

कुल उपभोग व्यय में वृद्धि या कमी का वह भाग जो *राष्ट्रीय आय में हुए परिवर्तन का परिणाम* है। अल्पकाल में उपभोग व्यय में स्वायत्त उपभोग तथा स्फूर्त उपभोग दोनों की गणना की जाती है।

Induced investment (इंड्यूस्ड इंवेस्टमेंट) **स्फूर्त निवेश; प्रेरित निवेश**

कुल निवेश में हुई वृद्धि या कमी का वह भाग जो *राष्ट्रीय आय में हुई वृद्धि या कमी का परिणाम है।* उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ उपभोग व्यय में वृद्धि होने के कारण मौजूदा उत्पादन क्षमता पर दबाव पड़ता है और इसके कारण औद्योगिक संस्थान नए संयंत्रों में निवेश कर सकते हैं।

Industrial classification (इन्डस्ट्रियल क्लासिफिकेशन) **औद्योगिक वर्गीकरण**

एक ही प्रकार की आर्थिक क्रियाओं को उद्योगों या बाज़ारों के अनुरूप वर्गीकृत करना। उदाहरण के लिए, सर्राफा बाज़ार या अनाजमण्डी अथवा सूती वस्त्र उद्योग इसी प्रकार के वर्गीकरण हैं। प्रायः एक वर्ग को उप–वर्ग में भी बांटा जाता है।

Industrial democracy
(इन्डस्ट्रियल डेमोक्रेसी) **प्रजातांत्रिक औद्योगिक व्यवस्था**

किसी निगम के प्रबन्ध में चुने हुए निदेशकों के अलावा श्रमिकों के प्रतिनिधियों की भी निर्णय–प्रक्रिया में भागीदारी होने पर इसे प्रजातांत्रिक औद्योगिक व्यवस्था कहा जाता है। ऐसी व्यवस्था में निदेशक मंडल में श्रमिकों के प्रतिनिधि में शामिल किए जाते हैं। ये प्रतिनिधि मूलतः श्रमिकों के हितों की रक्षा करने का प्रयास करते हैं।

Industrial dispute (इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट) **औद्योगिक विवाद**

किसी औद्योगिक इकाई या कम्पनी के प्रबन्धकों तथा श्रमिक संघों के बीच किसी विषय पर हुआ विवाद या प्रबन्धकों द्वारा लिए गए निर्णय के विषय में असहमति।

इस विवाद के चलते श्रमिक संघ हड़ताल की घोषणा कर सकते हैं, या प्रबन्धक तालाबन्दी कर सकते हैं। यही कारण है कि औद्योगिक विवादों के निपटारे हेतु एक तीसरे पक्ष को मध्यस्थता हेतु तैयार किया जाता है तथा प्रायः उसके परामर्श से एक सर्वमान्य समाधान निकाल लिया जाता है।

Industrial economics (इन्डिस्ट्रयल इकोनोमिक्स) **औद्योगिक अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र की वह शाखा जो बाज़ार संरचना तथा बाज़ार के निष्पादन व संचालन पर प्रकाश डालता है। इसके अन्तर्गत एकाधिकार, फर्मों के विलय, विक्रेताओं की पारस्परिक रणनीतियों (खेल सिद्धान्त सहित) की भी चर्चा की जाती है।

Industrial espionage (इन्डस्ट्रियल एस्पियोनेज) **औद्योगिक जासूसी**

एक औद्योगिक संस्थान द्वारा दूसरे संस्थान की गतिविधियों तथा भावी रणनीतियों के बारे में *अनुचित तथा गैर कानूनी तरीकों* से सूचनाएँ जुटाना। इन तरीकों में दूसरे संस्थान के कागज़ात चुराना, फोन टेप करना, कम्प्यूटर में उपलब्ध सूचनाओं को हस्तगत करना तथा कर्मचारियों को लालच देना, शामिल हैं।

Industrial estate (इन्डस्ट्रियल एस्टेट) **औद्योगिक सम्पदा**

आवासीय सम्पदा के विपरीत एक ऐसा भूक्षेत्र जिसे औद्योगिक विकास हेतु चिन्हित किया गया हो। इस क्षेत्र में औद्योगिक उत्पादन हेतु वांछित सभी आवश्यक सुविधाएँ विद्यमान रहती हैं।

Industrial location
(इन्डस्ट्रियल लोकेशन) **औद्योगिक स्थिति; औद्योगिक स्थानीयकरण**

किसी फर्म द्वारा अपनी गतिविधियों के संचालन हेतु किसी भौगोलिक स्थान का चयन करना। यह चयन अनेक घटकों पर निर्भर करता है जैसे, (i) उद्योग की प्रकृति तथा इसके लिए आवश्यक कच्चा माल, पूँजी, श्रम, बाज़ार की समीपता, प्रतिद्वन्द्वी फर्मों की स्थिति आदि, तथा (ii) अलग–अलग स्थानों पर सम्भावित उत्पादन लागतें। जहाँ कुछ उद्योग विशिष्ट प्रकार की जलवायु में ही पनप सकते हैं, वहीं कुछ उद्योगों में कच्चे माल की उपलब्धता स्थानीयकरण का कारण बनती है।

Industrial policy (इन्डस्ट्रियल पॉलिसी) **औद्योगिक नीति**

सरकार द्वारा निरूपित एवं प्रायोजित ऐसी नीति जिसके उद्देश्य प्रायः निम्न हो सकते हैं : (i) नए उद्योगों में पूँजी निवेश को प्रोत्साहन देना, (ii) सभी प्रकार के उद्योगों की स्पर्द्धाशीलता को बढ़ाना, (iii) मंद गति से चल रही या बंद पड़ी औद्योगिक इकाइयों को गति प्रदान करना, (iv) औद्योगिक क्षेत्रों में रोज़गार को बढ़ाना, (v) उद्योगों के विकास में क्षेत्रीय विषमताओं को दूर करना, (vi) उद्योगों में उत्पादकता को बढ़ाना, तथा (vii) सरकारी तंत्र के माध्यम से औद्योगिक विकास करना, जिसमें औद्योगिक क्षेत्रों का विकास, औद्योगिक विकास हेतु पूँजी तथा प्रौद्योगिकी प्रदान करना शामिल है।

Industrial relations (इन्डस्ट्रियल रिलेशन्स) **औद्योगिक सम्बन्ध**

किसी औद्योगिक फर्म के प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच सम्बन्ध, विशेष रूप से

श्रमिक संघों के माध्यम से प्रबन्धकों के साथ सम्वाद स्थापित करना। प्रायः ये सम्वाद मज़दूरी की दरों, बोनस, अन्य प्रकार के वित्तीय लाभ, कार्य की शर्तों, नौकरी की सुरक्षा आदि से सम्बद्ध होते हैं।

Industrialization(इन्डस्ट्रियलाइजेशन) **औद्योगिकरण; वस्तुओं के उत्पादन (विनिर्माण) हेतु संगठित तथा वृहत् स्तर पर साधनों को जुटाना**

प्रायः प्राथमिक कृषि वस्तुओं के वृहत् स्तर पर रूपान्तरण को ही औद्योगीकरण कहा जाता है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप जहां एक ओर कृषि क्षेत्र के रोज़गार तथा राष्ट्रीय आय में इसके योगदान में लगातार कमी होती है, वहीं दूसरी ओर उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का, तथा औद्योगिक उत्पादन का राष्ट्रीय आय में, योगदान बढ़ता जाता है। इसी प्रकार खनिजों पर आधारित उद्योगों के विकास को भी इसमें शामिल किया जाता है।

Industry (इन्डस्ट्री) **उद्योग**

अर्थव्यवस्था का एक क्षेत्र जिसमें विभिन्न उत्पादक संस्थाएँ एक जैसे इनपुट्स प्रयोग में लेकर एक ही प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करती हैं। उद्योग का एक अन्य अर्थ है, विनिर्माण में संलग्न विभिन्न फर्मों का एक समूह। संकुचित अर्थ में इन्डस्ट्री का शाब्दिक अर्थ है कठिन तथा लगन के साथ कार्य करना।

Industry supply curve (इन्डस्ट्री सप्लाई कर्व) **उद्योग का पूर्ति वक्र; बाज़ार में वस्तु का पूर्ति वक्र**

एक वक्र जो यह दर्शाता है कि विभिन्न कीमतों पर सम्बद्ध वस्तु के उत्पादन कर्ता **संयुक्त रूप** से कितना उत्पादन करेंगे।

Inefficiency (इन्एफिशिएँसी) **अक्षमता**

साधनों के उपयोग से इष्टतम परिणाम प्राप्त नहीं कर पाना

इस अक्षमता के कारण वस्तु की उत्पादन लागत ऊँची बनी रहती है, तथा ऐसी फर्म अन्य फर्मों की अपेक्षा स्पर्द्धा में पिछड़ जाती है।

X-inefficiency (एक्स इन्एफिशिएँसी) **एक्स अक्षमता**

इस प्रकार की अक्षमता संगठनात्मक व्यवधानों के कारण उत्पन्न होती है, तथा फर्म सही उत्पादन करने के बावजूद इनपुट्स की आवश्यकता से अधिक मात्राएँ प्रयुक्त कर रही होती है।

Inelastic demand (इन्इलास्टिक डिमान्ड) **बेलोच माँग**

जब माँग के निर्धारक घटकों (जैसे कीमत, अन्य वस्तुओं की कीमतों, उपभोक्ता की आय आदि) में से किसी एक, दो या सभी चलों में परिवर्तन पर माँग में अनुपात से कम परिवर्तन हो, तो माँग बेलोच होती है। यदि माँग की लोच का सूत्र निम्न प्रकार हो:

$$e_x = \frac{X \text{ की मांग में प्रतिशत परिवर्तन}}{X \text{ की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

अस्तु, बेलोच माँग का अर्थ यह होगा कि X कि कीमत में जितना परिवर्तन हो उसकी तुलना में माँग में कम परिवर्तन होगा। ($e_x < 1$)

इसी प्रकार अन्य वस्तु की कीमत अथवा (P_y), उपभोक्ता की आय (M), को स्वतंत्र चर मानते हुए आश्रित चर, यानी माँग में होने वाले (प्रतिशत) परिवर्तन की तुलना में P_y या M में होने वाले (प्रतिशत) परिवर्तन से इसकी तुलना की जा सकती है। जहां भी आश्रित चर यानी माँग मे होने वाला परिवर्तन स्वतंत्र चर (P_x, P_y या M) की अपेक्षा कम हो, वहीं माँग बेलोच होगी।

Inelastic supply (इन्इलास्टिक सप्लाई) **बेलोचपूर्ति**

सामान्य तौर पर वस्तु की कीमत बढ़ने (या कम होने) पर उसकी बाज़ार पूर्ति में भी वृद्धि (या कमी) होती है। प्रायः जिस अनुपात में कीमत में परिवर्तन होता है उससे अधिक, या कम से कम उतने ही अनुपात में, पूर्ति में भी परिवर्तन होता है। परन्तु कुछ वस्तुओं के संदर्भ में पूर्ति का परिवर्तन कीमत के परिवर्तन से कम होता है। इस स्थिति को बेलोच पूर्ति की स्थिति कहा जाता है। इसका सूत्र निम्न है :

$$e_s = \frac{\text{पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

बेलोच पूर्ति के संदर्भ में $e_s < 1$ होगी।

Inequality (इन्इक्वालिटी) **असमानता**

ऐसी स्थिति, जिसमें समानता न हो। दो संख्याओं में असमानता होने पर हम $X \neq Y$ सूत्र को प्रयुक्त करते हैं। यदि X का मूल्य Y से अधिक हो तो इसकी अभिव्यक्ति $X > Y$ के रूप में की जाएगी।

Inequality of income (इन्इक्वालिटी ऑफ इन्कम) **आय की असमानता**

यदि किसी समाज में विद्यमान सभी व्यक्तियों या परिवारों की आय पूर्णतः समान हो तो इसे आय की समानता कहा जाएगा। परन्तु इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों की आय बहुत अधिक हो तथा बहुसंख्यक लोगों की आय उनकी उदरपूर्ति के लिए भी पर्याप्त न हो तो यह आय की असमानता का एक उदाहरण होगा।

आय की ही भांति सम्पत्ति के वितरण में भी असमानता पाई जाती है। आय की असमानता को मापने हतु प्रायः जिनी गुणांक को प्रयुक्त किया जाता है।

Infant industry (इन्फेंट इन्डस्ट्री) **शिशु उद्योग**

एक नवीन उद्योग (या फर्म), जो अपने विकास के प्रारम्भिक चरण में देश या विदेश की पुरानी तथा अनुभवी फर्मों के साथ स्पर्द्धा करने में सक्षम नहीं है, शिशु उद्योग कहलाता है। विकासशील देशों की सरकारें प्रायः शिशु उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने हेतु आयातों पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाती है, या उन पर ऊँची दरों से आयात कर लगाती हैं। संरक्षण की यह नीति तब तक लागू रहती है जब तक कि संरक्षित उद्योग स्पर्द्धा करने योग्य नहीं हो जाता।

Inferior good; inferior product

(इंफीरियर गुड; इंफीरियर प्रोडक्ट) **घटिया वस्तु**

ऐसी वस्तु जिसकी माँग तथा उपभोक्ता की आय में प्रतिकूल सम्बन्ध होता है। अन्य शब्दों में, उपभोक्ता की **आय में वृद्धि होने पर भी ऐसी वस्तु की माँग में कमी हो जाती है।** इस प्रतिकूल सम्बन्ध का कारण यह है कि सम्बद्ध वस्तु की निकट की स्थानापन्न तथा श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली अनेक वस्तुएँ बाज़ार में उपलब्ध होती हैं। जब आय में वृद्धि होती है तो उपभोक्ता प्रायः बेहतर गुणवत्ता वाली वस्तु को ख़रीद कर आवश्यकता की पूर्ति करना चाहेगा, एवं स्वाभाविक रूप में घटिया वस्तु की माँग में कमी हो जाएगी।

Infinitesimal (इन्फीनिटिसमल) **सूक्ष्मातिसूक्ष्म**

अत्यन्त सूक्ष्म, परन्तु शुन्य से कुछ अधिक। उदाहरण के लिए 6.5 लाख रुपए की लक्ज़री कार की कीमत में 5 हज़ार रुपए की कमी कर दी जाती है तो यह कमी 0.7 प्रतिशत ही हुई। इसके फलस्वरूप लक्ज़री कार की माँग में वृद्धि हो सकती है। परन्तु इस उदाहरण में कीमत तथा माँग के मध्य सम्बन्ध दिखाने वाले माँग वक्र के दो अलग-अलग बिन्दुओं पर माँग की लोच (चाप लोच) मापना सम्भव नहीं होता क्योंकि $dP_x \rightarrow 0$ है, यानि माँग में होने वाला परिवर्तन सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। इसे माँग के बिन्दु लोच वाले सूत्र से अवकलन के माध्यम से ही मापा जा सकता है :

$$e_x = \frac{dD_x}{dP_x} \cdot \frac{P_x}{D_x}$$

Inflation (इंफ्लेशन) **मुद्रास्फीति**

सामान्य कीमत स्तर में काफी समय तक वृद्धि होने की प्रवृत्ति। यह वृद्धि धीमी गति से होने पर उसे *रेंगती हुई* स्फीति कहा जाता है। यदि इसके विपरीत बहुत तीव्र गति से कीमतों में वृद्धि हो तो उसे *दौड़ती हुई मुद्रा स्फीति* कहा जाएगा। जब देश में दौड़ती हुई वृद्धि होती है तो आम जनता का प्रचलित मुद्रा में विश्वास नहीं रह पाता।

मुद्रा स्फीति का प्रमुख कारण वस्तुओं की तुलना में मुद्रा की अधिक मात्रा का चलन में होना है। परन्तु प्रायः स्फीति की पृष्ठभूमि में दो बड़े कारण निहित होते हैं : (1) वस्तुओं की उत्पादन लागत में वृद्धि होना, तथा (2) माँग का पूर्ति से अधिक होना। इन्हें क्रमशः '**लागत जन्य स्फीति**, तथा **माँग जन्य स्फीति** कहा जाता है।

Inflation tax (इंफ्लेशन टैक्स) **स्फीति का मुद्रा के मूल्य पर प्रभाव**

जब कीमत स्तर में वृद्धि का क्रम चलता रहता है तो मुद्रा के मूल्य, तथा सरकारी कर्ज़ के मूल्य में कमी होती है। फलस्वरूप जिन्हें व्यवसाय, नौकरी अथवा प्रतिभूतियों से आय प्राप्त होती है उसका वास्तविक मूल्य कम होता जाता है। *वस्तुतः यह एक प्रकार का कर ही है।*

Inflationary gap (इंफ्लेशनरी गेप) **स्फीतिजन्य अन्तराल**

पूर्ण रोज़गार वाली राष्ट्रीय आय के स्तर पर सकल माँग अथवा कुल व्यय का आधिक्य।
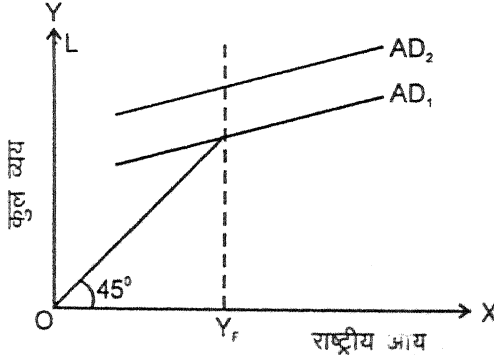
उपरोक्त चित्र में Y_F पूर्ण रोज़गार वाले स्तर की राष्ट्रीय आय है, क्योंकि इसी स्तर पर सकल माँग या कुल व्यय का स्तर AD_1 साम्य आय का स्तर दर्शाता है। परन्तु यदि सकल माँग का स्तर विवर्तित होकर AD_2 हो जाए तो राष्ट्रीय आय में तो वृद्धि नहीं होगी, अपितु एक स्फीति जन्य अन्तराल उत्पन्न हो जाएगा।

Inflationary spiral (इंफ्लेशनरी स्पाइरल) **स्फीति जन्य प्रवृत्ति**

कीमत स्तर में वृद्धि एक बिन्दु के पश्चात् **स्वयं स्फूर्त** बन जाती है, तथा बढ़ती हुई लागतों तथा बढ़ती हुई माँग, दोनों ही कारणों से इसे समर्थन मिलता जाता है। इसके फलस्वरूप *मूल्य वृद्धि का क्रम स्वयं–स्फूर्त बन जाता है*, तथा वृहत् स्तर पर सरकार का हस्तक्षेप न होने पर अनवरत रूप से चलता रहता है।

Infrastructure (इंफ्रास्ट्रक्चर) **संरचना; सामाजिक पूँजी**

सड़कें, रेलमार्ग, भवन, अस्पताल, स्कूल, पेयजल व्यवस्था आदि, जिनके लिए सरकार या स्थानीय निकाय निवेश करते हैं। इनमें शिक्षित या प्रशिक्षित श्रमिक भी शामिल किए जाते हैं।

प्रत्येक देश की आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति में संरचना के विकास की एक अहम् भूमिका होती है, अलबत्ता *प्रत्यक्ष रूप* से इसके योगदान का माप लेना सम्भव नहीं हो पाता।

Inheritance tax (इंहेरिटेंस टैक्स) **उत्तराधिकार कर**

किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारियों से प्राप्त होने वाला कर। इस कर की दर मृतक से प्रत्येक उत्तराधिकारी के सम्बन्ध पर भी निर्भर कर सकती है। उदाहरण के लिए, मृतक की पत्नी (या पति) से कोई कर नहीं लिया जाए लेकिन सम्बन्ध की समीपता के अनुरूप अन्य व्यक्तियों से प्रगतिशील दर से कर लिया जा सकता है।

Injections (इंजेक्शन्स)

घरेलू क्षेत्र से बाहर वस्तुओं व सेवाओं पर किया गया व्यय

संकुचित अर्थ में वस्तुओं व सेवाओं पर केवल परिवारों द्वारा ही व्यय किया जाता है लेकिन व्यापक संदर्भ में घरेलू उत्पाद पर सरकार, व्यावसायिक फर्में तथा विदेशी नागरिक भी व्यय कर सकते हैं। इस प्रकार का व्यय आय के वर्तुल प्रवाह में बाह्य प्रविष्टि के रूप में होता है।

Innovations (इनोवेशन्स) **नवोत्पाद**

किसी मौलिक विचार या खोज को व्यवसाय हेतु लागू करना। यदि यह नवोत्पाद उत्पादन से सम्बद्ध है तो इसे प्रक्रिया से जुड़ी खोज़ कहा जाएगा। यदि वस्तु की डिजाइन या गुणवत्ता में इसके कारण सुधार होता है तो यह उत्पादन सम्बन्धी नवोत्पाद है। प्रायः नवोत्पाद हेतु फर्म को पर्याप्त राशि व्यय करनी होती है, अथवा इसके फलीभूत होने में पर्याप्त समय लगता है।

Input-output analysis

(इन्पुट आउटपुट एनालिसिस) **आदा-प्रदा विश्लेषण**

किसी अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाहों का विश्लेषण। एक आदा–प्रदा तालिका की पंक्तियों (rows) के माध्यम से अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच वहां उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं को दर्शाया जाता है जबकि जहां ये वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्रयोग में ली जाती हैं (मध्यवर्ती वस्तुओं के रूप में या अन्तिम उपभोग हेतु) वहां इनकी मात्राओं को कॉलम में दिखाया जाता है। विभिन्न उद्योगों या क्षेत्रों की पारस्परिक निर्भरता को एक जटिल रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

Input prices (इन्पुट प्राइसेज़) **आदाओं या इनपुट्स की कीमतें**

उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले प्रत्येक इन्पुट की कीमत। यदि आदा या इनपुट के बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता है तो यह कीमत उसकी माँग व पूर्ति के द्वारा निर्धारित हो सकती है। इसके विपरीत यदि साधन या इनपुट के बाज़ार में बेचने या ख़रीदने वाली शक्ति एक व्यक्ति या संस्था के पास केन्द्रित हो तो फिर उसके द्वारा ही इनपुट की कीमत का निर्धारण होगा।

Inside money (इनसाइड मनी) **आन्तरिक मुद्रा**

किसी फर्म या व्यक्ति के पास विद्यमान मुद्रा उसके धारक के लिए तो सम्पत्ति होती है, लेकिन किसी अन्य व्यक्ति के लिए वही मुद्रा देनदारी हो सकती है। बैंक में विद्यमान शेष (balance) एक आन्तरिक मुद्रा है, क्योंकि इसके मूल्य में वृद्धि से समूची अर्थव्यवस्था का सकल धन नहीं बढ़ता। परन्तु स्वर्ण का स्टॉक बाह्य मुद्रा है, क्योंकि इसका मूल्य बढ़ने से राष्ट्र की सम्पत्ति का मूल्य भी बढ़ जाता है।

Insider trading (इन्साइडर ट्रेडिंग) **गोपनीय व्यापार**

शेयर या प्रतिभूति के बाज़ार में जहां अन्य व्यक्ति सामान्य ज्ञान के आधार पर कार्य

करते हैं वहीं कुछ लोग विशिष्ट या गोपनीय सूचनाओं (ज्ञान) के आधार व्यापार करके भारी मुनाफा कमाते हैं। प्रायः इस विशिष्ट ज्ञान के आधार पर सम्बद्ध व्यक्ति शेयरों की खरीद आम जनता से पूर्व ही कर लेते हैं, तथा कालान्तर में कीमत बढ़ने का लाभ उन्हें मिल जाता है।

Insolvency (इन्सॉल्वेंसी) **दिवालियापन; दीवाला**

(देखिए bankruptcy)

वह स्थिति जब किसी व्यक्ति की देनदारी उसके पास विद्यमान सम्पत्ति की तुलना में कई गुनी अधिक हो जाए। इसके फलस्वरूप वह व्यक्ति या फर्म अपनी देनदारियों का निपटारा नहीं कर सकता। प्रायः आय से अधिक व्यय की प्रक्रिया लम्बे समय तक चलने पर दिवालियापन की स्थिति बन जाती है।

Instalment (इंस्टलामेंट) **किस्त**

किसी राशि का ब्याज़ सहित एकमुश्त भुगतान करने की अपेक्षा नियमित अन्तराल के साथ *छोटी–छोटी राशि* के रूप में भुगतान करना। प्रायः किसी वित्तीय संस्था के सौजन्य से कोई बड़ी मशीन या महँगी उपभोग वस्तु खरीदने पर फर्म या व्यक्ति उसका एक साथ भुगतान न करके उस वित्तीय संस्था को किस्तों में वह राशि (ब्याज़ सहित) चुकाती है।

Institutional economics (इंस्टीट्यूशनल इकोनॉमिक्स) **संस्थागत अर्थशास्त्र**

अर्थव्यवस्थाएँ किस प्रकार कार्य करती हैं, तथा इस प्रक्रिया में संस्थाओं की क्या भूमिका है, इस बारे में प्रस्तुत विश्लेषण। प्रायः यह देखा गया है कि आर्थिक विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया में विभिन्न संस्थाओं (बैंक, बाज़ार, सहकारी संस्थाओं, सरकारी व ग़ैर सरकारी संगठनों, कम्पनियों, कानून व्यवस्था, पंचायत राज एवं स्थानीय निकायों आदि) की अहम् भूमिका होती है।

Institutional finance (इंस्टीट्यूशनल फाइनेंस) **संस्थागत वित्त**

पूँजी तथा साख के बाज़ार में यदि व्यक्तिगत योगदान हो, तो निवेश हेतु पर्याप्त पूँजी या साख नहीं मिल पाएगी। व्यक्तिगत ऋणों पर ब्याज की दर भी प्रायः अधिक होती है तथा ऋण साख देने वाला व्यक्ति जोखिम वहन करने में भी अधिक समर्थ नहीं होता। इसके विपरीत यदि बैंक, वित्तीय कम्पनी या म्यूचुअल फंड द्वारा पूँजी की व्यवस्था की जाए तो काफी अधिक परिमाण में निवेश किया जा सकता है। यही नहीं, इन संस्थाओं का प्रबन्ध भी कुशल व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, जो साधनों का उपयुक्त ढंग से आवंटन करने के कारण जोखिम को भी न्यूनतम कर सकते हैं। प्रायः बड़े स्तर पर निवेश हेतु केवल संस्थागत वित्त की ही आवश्यकता होती है। ये संस्थाएँ बड़े पैमाने पर पूँजी भी जुटा सकती हैं।

Institutional investors (इंस्टीट्यूशनल इंवेस्टर्स) **संस्थागत निवेशकर्ता**

(देखिए इन्स्टीट्यूशनल फाइनेन्स : संस्थागत वित्त)।

Insurance (इंश्योरेन्स) **बीमा; जोखिम से बचाव**

किसी व्यक्ति या संस्था (फर्म) को चोरी, दुर्घटना, आग, किसी व्यक्ति की मृत्यु आदि से सुरक्षा प्रदान करने की एक विधि। वह व्यक्ति या फर्म निर्दिष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु बीमा करवाती है तथा क्षति होने पर बीमे की तय शुदा राशि को प्राप्त करने हेतु अपना दावा प्रस्तुत कर सकती है।

प्रायः बीमा कम्पनियों द्वारा अधिकृत एजेंटों या मध्यस्थों के माध्यम से ही बीमा किया जाता है। इन मध्यस्थों को एजेंट या दलाल कहा जाता है।

Intangible assets (इंटैंजिबल एसेट्स) **अभौतिक सम्पत्तियाँ**

ऐसी सम्पत्तियां जिनका मूल्य तो है, लेकिन इन्हें देखना या छूना सम्भव नहीं है। इनमें फर्म की साख (गुडविल), पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट आदि शामिल हैं। इन अभौतिक सम्पत्तियों को बेचना या खरीदना भी प्रायः संभव होता है।

Intangible benefits (इंटैजिबल बेनीफिट्स) **अभौतिक लाभ**

किसी परियोजना या उपक्रम से प्राप्त होने वाले ऐसे लाभ जिन्हें देखना सम्भव नहीं हो। शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वच्छता अथवा सामाजिक कल्याण के उपक्रमों से प्राप्त लाभों का माप नहीं लिया जा सकता क्योंकि वे अभौतिक हैं। फिर भी ये लाभ किसी समाज के लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

Intangible costs (इंटैंजिबल कॉस्ट्स) **अभौतिक लागतें**

ऐसी लागतें जो अनुभव की जाएँ लेकिन जो अभौतिक हैं। यदि जल या वायु के प्रदूषण से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ते हों, और उससे श्रमिकों की कार्यकुशलता पर प्रतिकूल प्रभाव हों तो इसे अभौतिक लागत कहा जाएगा।

Integration (इंटीग्रेशन) **जुड़ाव या सम्बद्धता**

दो या अधिक औद्योगिक अथवा व्यावसायिक संस्थानों का विलय

इनमें क्षैतिज सम्बद्धता (horizontal integration) के अन्तर्गत समरूपी उत्पाद बनाने वाली इकाइयों का विलय किया जाता है। इसके विपरीत शीर्ष सम्बद्धता (vertical integration) के अन्तर्गत उत्पादन के विभिन्न चरणों से सम्बन्धित इकाइयों का विलय किया जाता है।

Intellectual property rights
(इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स) **बौद्धिक सम्पदा अधिकार**

कॉपी राइट, पेटैंट, डिज़ाइन, ट्रेड मार्क आदि अभौतिक सम्पत्तियों का वैधानिक (कानूनी) स्वामित्व। कोई अन्य व्यक्ति यदि उसकी नकल करने का प्रयास करता है तो कानून की नजर में वह एक अपराध माना जाएगा।

Interest (इन्टरेस्ट) **ब्याज़**

ऋण की मूल राशि के अलावा ऋणदाता को दी जाने वाली राशि। ब्याज़ की दर ऋण की निर्दिष्ट इकाई के प्रतिशत रूप में व्यक्त की जाती है। सामान्यतः यह

वार्षिक रूप में (जैसे 15 प्रतिशत, या 10 प्रतिशत या 6 प्रतिशत प्रतिवर्ष) व्यक्त की जाती है। प्रायः ब्याज़ की राशि ऋण की अवधि के आधार पर एक मुश्त तय की जाती है, अथवा ऋण की शेष राशि पर ली जाती है। एक मुश्त निर्धारण हेतु निम्न सूत्र प्रयोग में लिया जाता है :

$$P(1+i)^n - P = \text{ब्याज़ की राशि}$$

इसमें P तो मूल राशि है, i ब्याज़ की दर है, तथा n ऋण की अवधि है।

Interest elasticity of demand for money
(इन्टरेस्ट इलास्टिसिटी ऑफ डिमान्ड फॉर मनी) **मुद्रा की ब्याज़ लोच**
ब्याज़ की दर में निर्दिष्ट प्रतिशत परिवर्तन होने पर ऋण की माँग में होने वाला प्रतिशत परिवर्तन।

Interest rate futures (इंटरेस्ट रेट फ्यूचर्स) **ब्याज़ दर के अग्रिम सौदे**
इन सौदों के अन्तर्गत अग्रिम रूप से ऋण लेने वाले तथा देने वाले भविष्य की किसी दर पर निर्दिष्ट राशि उधार लेने या उधार देने हेतु सहमत होते हैं। ये सौदे प्रायः ब्याज़ की दर में होने वाले परिवर्तनों से उत्पन्न *जोखिम से बचने के लिए* किए जाते हैं।

Interest rate swap (इंटरेस्ट रेट स्वॉप) **ब्याज़ दर समायोजन**
वित्तीय ऋणों की ब्याज दरों में समायोजन। उदाहरण के लिए, एक कम्पनी पर परिवर्तनशील ब्याज़ दर वाला ऋण है जबकि दूसरी कम्पनी पर स्थिर ब्याज़ दर का ऋण है। पहली कम्पनी को ब्याज़ दर में वृद्धि होने की आशा है जबकि दूसरी कम्पनी को इसमें कमी होने की अपेक्षा है। ऐसी स्थिति में दूसरी कम्पनी पहली कम्पनी से परिवर्तनशील ब्याज़ के भुगतान हेतु अनुबन्ध करती है, और उसके बदले उसे स्थिर ब्याज़ दर से भुगतान प्राप्त होता है।

Interest yield (इंटरेस्ट यील्ड) **ब्याज़ का प्रतिफल**
किसी बॉंड या प्रतिभूति पर चुकाया गया ब्याज़, जो बॉंड की बाज़ार कीमत के एक अंश के रूप में व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी बांड पर 5 रुपए प्रतिवर्ष का ब्याज़ देय हो तथा उसकी बाज़ार कीमत 50 रुपए हो तो ब्याज़ के प्रतिफल की दर 10 प्रतिशत मानी जाएगी।

Interim dividend (इंटेरिम डिविडेंड) **अंतरिम लाभांश**
किसी कम्पनी के खातों में दर्शाए गए अन्तरिम लाभ के आधार पर घोषित लाभांश। यह लाभांश सामान्यतः एक संकेत प्रदान करता है, लेकिन अंतिम रूप से कोई गारंटी नहीं देता।

Inter firm conduct (इंटर फर्म कंडक्ट) **अन्तर्फर्म व्यवहार**
बाजार की स्थिति का वह रूप जिसमें विभिन्न फर्मों के पारस्परिक आचरण को प्रस्तुत किया जाता है। यह आचरण दो प्रकार का हो सकता है : (अ) प्रत्येक फर्म

स्वतंत्र रूप से कीमत, विज्ञापन आदि की रणनीति तैयार करे तथा प्रतिद्वन्द्वी फर्में क्या करना चाहती हैं इस ओर कोई ध्यान न दे। (ब) परस्पर निर्भरता वाला आचरण जिसमें प्रत्येक फर्म अपनी प्रतिद्वन्द्वी फर्मों की सम्भावित रणनीति के अनुरूप कीमत तथा विज्ञापन सम्बन्धी रणनीति तैयार करती है।

इनमें प्रथम रणनीति उस समय प्रभावी होती है जब बाज़ार में विक्रेताओं की संख्या काफी अधिक होने के कारण प्रतिद्वन्द्वी विक्रेता की रणनीति का अनुमान लगाना सम्भव नहीं होता। इसके विपरीत 4–5 तक प्रतिद्वन्द्वी बाज़ार में होने पर प्रत्येक फर्म की रणनीति अन्य विक्रेताओं की सम्भावित रणनीतियों पर निर्भर करती है। खेल सिद्धान्त इसी परस्पर निर्भरता का एक स्वरूप बतलाता है।

Inter industry trade (इंटर इन्डस्ट्री ट्रेड) **विभिन्न देशों के मध्य व्यापार**

इस व्यापार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ शामिल होती हैं तथा इन देशों में व्याप्त संसाधनों की भिन्नता पर उत्पादन की विशिष्टता तथा वस्तुओं के व्यापार की प्रकृति निर्भर करती है। एक देश उस वस्तु को अधिक मात्रा में तैयार करता है जिसके लिए उसके पास प्रचुर मात्रा में संसाधन हैं, तथा उसका निर्यात करके ऐसी वस्तु का आयात करता है जिसके लिए संसाधन अल्प मात्रा में हों। (देखिए हैक्शर–ओहलिन मॉडल)

Inter locked markets (इन्टरलॉक्ड मार्केट्स) **परस्पर सम्बद्ध बाज़ार**

किसी कस्बे या गांव की ऐसी स्थिति जिसमें बाज़ार का आकार छोटा हो तथा आवागमन के मार्ग (सड़क आदि) सुलभ न हों। ऐसी दशा में एक या दो फर्मों या व्यक्तियों का ही वस्तुओं तथा साधनों के क्रय–विक्रय पर वर्चस्व होता है। उदाहरण के लिए, कृषि के लिए इनपुट्स (बीज, खाद आदि) की बिक्री तथा उपभोग वस्तुओं का विपणन वही एक व्यापारी करता है। इसी प्रकार कृषि उपज इसी व्यापारी द्वारा खरीदी जाती है तथा यही कृषकों को उधार देता है। इस प्रकार सभी वस्तुओं तथा साधनों के क्रय–विक्रय पर एकाधिकार होने के कारण यह व्यक्ति गांव के लोगों का सभी प्रकार से शोषण करता है।

Intermediate products (इंटरमीडिएट प्रॉडक्ट्स) **मध्यवर्ती वस्तुएँ**

ऐसी वस्तुएँ या सेवाएँ, जो उत्पादकों द्वारा अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन हेतु प्रयुक्त की जाती हैं। उदाहरण के लिए, इस्पात एक मध्यवर्ती वस्तु है जिसका प्रयोग मोटर कार, वाशिंग मशीन, नट, बोल्ट, औजारों आदि के उत्पादन हेतु किया जाता है। (देखिए intermediate goods, इन्टरमीडिएट गुड्स)

Internal balance (इंटरनल बैलेन्स) **आन्तरिक संतुलन**

एक ऐसी स्थिति, जिसमें अर्थव्यवस्था पूर्ण रोज़गार के स्तर पर कार्यरत है तथा सामान्य कीमत स्तर स्थिर है। पूर्ण रोज़गार की प्राप्ति तथा कीमतों की स्थिरता–ये दो ही सरकार के लिए दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण समष्टिगत लक्ष्य होते हैं जिनकी एक साथ प्राप्ति प्रायः कठिन होती है। आन्तरिक संतुलन की स्थिति बाह्य संतुलन से

भिन्न है जिसके अन्तगर्त अर्थव्यवस्था के चालू तथा पूँजीगत खातों का भुगतान-शेष मध्यकाल के लिए संतुलन में रहता है।
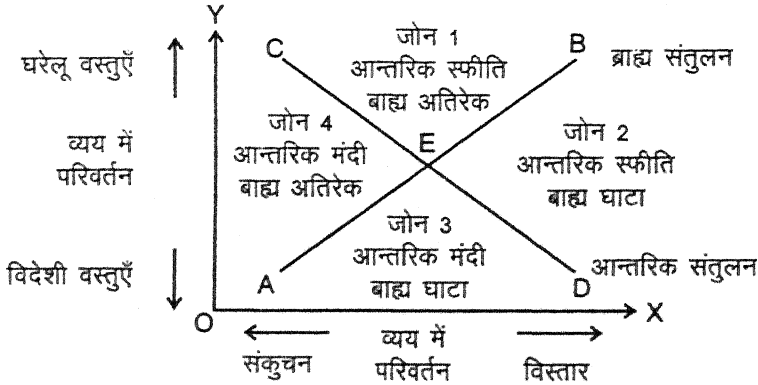
उपरोक्त चित्र में चार जोन प्रस्तुत किए गए हैं जिनमें से प्रत्येक के अन्तर्गत असंतुलन के कारण कुल व्यय में वांछित परिवर्तन करने होते हैं। इसमें AEB बाह्य संतुलन की रेखा है जबकि CED आंतरिक संतुलन को दर्शाती है। दोनों ही प्रकार के संतुलन की स्थिति E पर है।

Internal economics of scale (इंटरनल इकोनोमीज़ ऑफ स्केल) **पैमाने की आन्तरिक बचतें (मितव्ययिताएँ)**

उत्पादन का पैमाना बढ़ने के साथ–साथ औसत लागत में कमी होती है। फर्म अपने प्लांट को अधिक कुशलतापूर्वक संचालित करती है तथा विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन के फलस्वरूप भी प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी आती है।

Internal financing (इंटर्नल फाइनेंसिंग) **आन्तरिक वित्त व्यवस्था**

किसी फर्म के पास मौजूद लाभों को उसके विस्तार हेतु प्रयुक्त करना। शुद्ध लाभ को प्रायः लाभांश के रूप में वितरित कर दिया जाता है या इसे निवेश हेतु प्रयुक्त कर दिया जाता है। इसीलिए फर्म समूचे शुद्ध लाभ को लाभांश के रूप में बांटने की अपेक्षा आगे के विकास हेतु इसे पूर्ण या आंशिक रूप में निवेश करती है।

Internal labour market (इंटर्नल लेबर मार्केट) **आन्तरिक श्रम बाज़ार**

ऐसी व्यवस्था जिसमें किसी संस्थान के वरिष्ठ पदों पर वहीं पर कार्यरत कनिष्ठ लोगों को पदोन्नति दी जाती है। प्रायः ऐसा करने से एक ओर कर्मचारियों में निष्ठा एवं दायित्व की भावना जागृत होती है, तथा दूसरी ओर प्रबन्ध फर्म के कर्मचारियों के गुण–दोषों को पहचानते हुए सुपात्र व्यक्तियों को पदोन्नति का लाभ देकर पुरस्कृत करना चाहता है।

Internal rate of return (IRR) (इंटर्नल रेट ऑफ रिटर्न) **आन्तरिक प्रत्याय दर**

वह बट्टादर, जिस पर किसी परियोजना से प्राप्त होने वाले लाभों तथा इसकी पूँजीगत लागत, के वर्तमान मूल्य समान हो जाएँ। अन्य शब्दों में, इस दर पर परियोजना का शुद्ध वर्तमान मूल्य शून्य होता है। निम्न सूत्र को देखिए :

$$C_o = \sum_{i=1}^{n} \frac{Bi}{(1+r)^n}$$

उपरोक्त सूत्र में C_0 प्रारम्भिक पूँजी लागत है, B_i प्रत्येक वर्ष में परियोजना से अपेक्षित शुद्ध आय है, तथा n परियोजना की अवधि (वर्षों में) है। ये तीनों ज्ञात मूल्य हैं, तथा r यानी आन्तरिक प्रत्याय दर का मूल्य ज्ञात करने हेतु इस समीकरण को हल किया जा सकता है।

Internalization (इंटर्नलाइज़ेशन) **आन्तरिक विस्तार**

दो या अधिक गतिविधियों को मिलाना। प्रायः पृथक् पृथक् क्रियाओं के कारण लाभ का अधिकतम स्तर प्राप्त नहीं होता, क्योंकि उस व्यवस्था में प्रति इकाई लागत अधिक बैठती है। आन्तरिक विस्तार का सबसे अधिक प्रचलित रूप शीर्ष एकीकरण (vertical integration) है, जिसमें शीर्ष रूप में सम्बद्ध विभिन्न क्रियाओं को एकीकृत कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया अनेक प्लांट वाली घरेलू फर्म के बहुदेशीय निगम के साथ विलय में भी निहित होती है।

Internalizing externalities

(इंटरर्नलाइज़िंग एक्स्टर्नालिटीज) **बाह्यताओं को आत्मसात करना**

बाह्य लागतों तथा लाभों का आकलन करके उनका निर्णय प्रक्रिया में उपयोग करना। प्रायः फर्म या व्यक्ति को जब यह अनुभव होने लगता है उनके निर्णय के फलस्वरूप बाह्य लागतें बढ़ रहीं हैं तो वे उन गतिविधियों पर रोक लगाकर ऐसे कार्य करने लगते हैं जिनसे बाह्य लाभों में वृद्धि हो। बाह्यताओं को आत्मसात करने हेतु कर्मचारियों तथा श्रमिकों को प्रेरणा भी दी जा सकती है। कभी–कभी सरकार क्षति पहुंचाने वाली गतिविधियों पर करारोपण करके भी बाह्य लागतों को कम करती है।

International Bank for Reconstruction and Development (IBRD or World Bank)

(इंटरनेशनल बैंक फॉर रीकंस्ट्रक्शन एँड डेवलपमेंट (वर्ल्ड बैंक)

अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक)

1946 में स्थापित एक अन्तर्राष्ट्रीय बैंक, जो प्रारम्भ में विश्व युद्ध से हुई क्षति की पूर्ति हेतु विभिन्न देशों को आर्थिक सहायता देता था, और आज विकासशील देशों के सामाजिक तथा आर्थिक विकास हेतु रियायती ब्याज़ पर मदद कर रहा है। यह सहायता केवल संघीय सरकारों अथवा राज्य सरकारों के द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं के लिए ही दी

जाती है। इनमें विद्युत् उत्पादन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, कृषि, उद्योग, सड़क, दूर संचार, वनसम्पदा, निर्धनता उन्मूलन, रेल परिवहन आदि की परियोजनाएँ प्रमुख हैं।

International Commodity Agreement

(इंटरनेशनल कमोडिटी एग्रीमेंट) **अन्तर्राष्ट्रीय वस्तु समझौते**

एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता जिसके अनुसार विभिन्न देश विशेष रूप से प्राथमिक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि करने या इन्हें स्थिर रखने पर सहमत होते हैं। प्रत्येक प्राथमिक वस्तु के लिए एक पृथक् समझौता किया जाता है। प्रत्येक सम्बद्ध देश इस समझौते के अन्तर्गत उस वस्तु का एक बफर स्टॉक रखता है।

International Commodity Market

(इन्टर्नेशनल कमोडिटी मार्केट) **वस्तु का बाज़ार**

ऐसा स्थान, क्षेत्र या संस्थान जहां वस्तुओं का व्यापार किया जाता है। इनमें ऊन का बाज़ार, कपास का बाज़ार, फल व सब्जी बाज़ार, कपड़ा बाज़ार आदि हैं जहाँ विभिन्न देशों के क्रेता व विक्रेता दोनों एकत्रित होते हैं।

International common external tariff (इन्टर्नेशनल कॉमन एक्स्टर्नल टैरिफ) **समान आयात कर**

किसी साझा बाज़ार के सदस्य देशों द्वारा *गैर सदस्य देशों* से आयात की गई वस्तुओं पर रोपित समान आयात कर।

International debt (इन्टर्नेशनल डैट) **अन्तर्राष्ट्रीय या विदेशी ऋण**

किसी देश की सरकार या निजी संस्थाओं पर अन्य देशों की सरकारों, संस्थाओं अथवा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से लिए गए ऋणों की बकाया राशि। उदाहरण के लिए, भारत का वर्तमान विदेशी ऋण लगभग 100 बिलियन डालर है।

International Development Association (IDA)

(इन्टर्नेशनल डेवलपमेंट एसोसिएशन) **अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ**

विश्व बैंक की सहयोगी संस्था, जिसकी स्थापना 1960 में की गई थी। यह संस्था विकासशील देशों को नाम मात्र के ब्याज़ पर दीर्घकाल के लिए सहायता उपलब्ध कराती है। इन ऋणों की अदायगी की शर्तें भी काफी उदार हैं।

International Finance Corporation

(इन्टर्नेशनल फाइनेंस कार्पोरेशन) **अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम**

विश्व बैंक से सम्बद्ध एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था जिसकी स्थापना 1956 में की गई थी। यह निगम विश्व बैंक के सदस्य देशों में विद्यमान *निजी इकाइयों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।* प्रायः अन्तर्राष्ट्रीय वित्त निगम विकासशील देशों के निजीक्षेत्र की कम्पनियों की शेयर पूँजी में अपना योगदान देता है।

International Labour Organization (ILO)

(इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन) **अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन**

संयुक्त राष्ट्र संघ का एक विशिष्ट संगठन, जिसका उद्देश्य विश्व भर के श्रमिकों

के जीवन–स्तर तथा कार्य करने की दशाओं में सुधार करना है। सामाजिक न्याय के महान उद्देश्य को लेकर यह संगठन रोज़गार पर प्रभाव डालने वाली आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास करता है। जनशक्ति के प्रशिक्षण, सामाजिक नीति पर शोध तथा श्रमिक संगठनों के बीच सहयोग बढ़ाने के साथ–साथ श्रम से सम्बन्धित शोध को भी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन प्रोत्साहन देता है।

International liquidity (इंटरनेशनल लिक्वीडिटी)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु आवश्यक मौद्रिक सम्पत्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व कोषों के लिए वांछित मुद्राओं पर अन्तर्राष्ट्रीय तरलता निर्भर करती है। इन मुद्राओं का उपयोग भुगतान संतुलन को वित्तीय व्यवस्था हेतु किया जाता है। उदाहरण के लिए, अमरीकी डालर को खनिज़ तेल के व्यापार तथा रिज़र्व कोष हेतु प्रयुक्त किया जाता है तो अंतर्राष्ट्रीय तरलता डालर की आपूर्ति पर निर्भर करेगी।

International monetary fund (IMF)

(इंटरनेशनल मॉनीटरी फंड) **अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष**

1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के पश्चात् 1947 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गई। तभी से यह कोष निम्न क्षेत्रों में कार्य कर रहा है :

(1) विभिन्न देशों की विनिमय दरों में स्थिरता बनाए रखना।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय तरलता हेतु विभिन्न देशों की मुद्राओं का पूल रखना तथा आवश्यकता पड़ने पर निर्दिष्ट मुद्रा की अल्पकाल के लिए आपूर्ति करके सम्बद्ध देश के भुगतान शेष को प्रतिकूल होने से रोकना। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में प्रत्येक देश के अंशदान का 75 प्रतिशत उसकी अपनी मुद्रा के रूप में, तथा शेष अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व संपत्ति (डालर, ब्रिटिश पाउंड, जापानी येन आदि) के रूप में दिया जाता है। ऐसा 1970 तक हुआ।

1970 से अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने एक नई अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व सम्पत्ति–विशेष आहरण अधिकार (SDR) का सृजन किया जिससे अन्तर्राष्ट्रीय तरलता में वृद्धि हुई है।

International money (इंटरनेशनल मनी) **अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा**

वह मुद्रा, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय सौदों का निपटारा किया जाएँ। यह किसी भी देश की मुद्रा हो सकती है परन्तु यह ज़रूरी है कि इसे अन्य देशों के व्यक्ति एवं संस्थाएँ स्वीकार करें। यह तभी सम्भव है कि जब उस मुद्रा में पूर्ण परिवर्तनशीलता का गुण विद्यमान हो। ऐसी मुद्राएँ प्रधानतः डालर तथा पाउंड स्टर्लिंग के रूप में, या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा निर्गमित विशेष आहरण अधिकारों, के रूप में हो सकती हैं।

International reserves (इंटरनेशनल रिज़र्व्स) **अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व कोष**

विभिन्न देशों के मध्य भुगतान शेष के घाटे को निपटाने हेतु मौद्रिक सम्पत्तियां रखी जाती हैं। इनमें स्वर्ण, डालर, पाउंड स्टर्लिंग, ड्यूशमार्क आदि महत्वपूर्ण मुद्राएँ, विशेष आहरण अधिकार (SDR) आदि शमिल होते हैं।

International trade (इन्टरनेशनल ट्रेड) **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार**

निर्यात तथा आयात के माध्यम से विभिन्न देशों द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं का विनिमय करना। बहुधा यह व्यापार तुलनात्मक लागतों पर आधारित होता है, जिसके अन्तर्गत एक देश उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करता हैं जिनकी सापेक्ष लागतें वहां अन्य देशों की तुलना में कम हों। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से उत्पादक संस्थाओं को कच्चामाल तथा मशीनें कम कीमत पर उपलब्ध हो जाती हैं, और साथ ही उपभोक्ताओं को ऐसी वस्तुएँ प्राप्त होना सम्भव है जिनका उनके अपने देश में अभाव है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के फलस्वरूप प्रत्येक उत्पादक अपने साधनों का आवंटन अधिकतम दक्षता के आधार पर ही करता है ताकि वह अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में स्पर्द्धाशील रह सके।

अनेक देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से खनिज तेल, लौह अयस्क, कोयला तथा अन्य प्रकार के कच्चे माल प्राप्त करके औद्योगिक विकास कर सकते हैं, वहीं देश में बहुतायत से उत्पादित वस्तुओं का निर्यात करके लाभ कमा सकते हैं।

Interpersonal comparisons (इन्टर पर्सनल कम्पेरिज़न) **अन्तर्व्यक्ति तुलनाएँ**

एक व्यक्ति के कल्याण–स्तर की अन्य व्यक्ति के कल्याण से तुलना। प्रायः उपयोगिता का माप न होने पर यह तुलना अत्यंत कठिन होती है। इसीलिए विभिन्न उपभोक्ताओं को प्राप्त होने वाली उपयोगिता का माप लेकर विभिन्न व्यक्तियों के कल्याण–स्तरों की तुलना की जाती है। किसी कर की दर आनुपातिक (Proportional) हो अथवा प्रगतिशील (Progressive), इसका निर्धारण इसी प्रकार की तुलना पर आधारित होता है। इसी प्रकार साधनों के आवंटन से सम्बद्ध दक्षता की भी अन्तर्व्यक्ति तुलना की जा सकती है।

Interpolation (इन्टरपोलेशन) **आन्तरगणन**

किसी श्रेणी या सीरीज़ में नहीं दर्शायी गई इकाई का मूल्य ज्ञात करना। उदाहरण के लिए व्यक्तियों की लम्बाई एवं उनके भार के मध्य निम्न प्रकार का सम्बन्ध है :

लम्बाई (इंच)	भार कि.ग्रा.
40	30
45	34
50	38
55	42
60	46
65	50

अब यदि लम्बाई 58 इंच हो तो भार कितना होगा यह ज्ञात करना सरल है। यही

इस श्रेणी का आन्तरगणन कहलाता है। परन्तु इस सूत्र में यह मान्यता ली जाती है कि *लम्बाई में परिवर्तन के साथ भार में एक निर्दिष्ट क्रम में ही परिवर्तन होगा।*

Intertemporal budget constraint

(इंटरटेम्पोरल बजट कॉँस्ट्रेन्ट) **अन्तर-अवधि बजट सीमा**

किसी व्यक्ति, फर्म या सरकार के व्यय को *निर्दिष्ट अवधि* में दी हुई सीमा के अन्तर्गत ही रखे जाने की शर्त। व्यक्ति के लिए यह अवधि उसके जीवनकाल तक, तथा फर्म व सरकार के लिए उनके कार्यकाल तक सीमित रहती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि बजट सीमा के अन्तर्गत व्यक्ति या फर्म की आय तथा सरकार की कुल प्राप्तियों के अलावा ऋणों की राशि भी शामिल की जाती है।

Intertemporal substitution

(इन्टरटेम्पोरल सब्स्टीट्यूशन) **अन्तर-अवधि प्रतिस्थापन**

एक *निर्दिष्ट अवधि* के अन्तर्गत विभिन्न वस्तुओं के मध्य स्थानापन्नता की सीमा। उदाहरण के लिए, यदि यात्री किराया व्यस्तकाल में बहुत अधिक हो तथा वर्ष के अन्य महीनों में कम हो तो बहुत से लोग अपनी छुट्टियों के समय व्यस्तकाल की अपेक्षा अन्य महीनों में भ्रमण की योजना बना लेंगे।

इसी के अन्तर्गत उपभोक्ताओं के वर्तमान तथा भावी उपभोग के मध्य प्रतिस्थापन को भी शामिल किया जा सकता है। यदि उपभोक्ता राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा भाग उपभोग व्यय में प्रयुक्त करते हैं तो बचत तथा निवेश कम होने के फलस्वरूप आर्थिक विकास की दर कम होगी जिससे भविष्य में उपभोग हेतु प्राप्त होने वाली राशि भी कम हो जाएगी। इसके विपरीत जिस समाज में उपभोक्ता आज अधिक बचत तथा निवेश करते हैं उनका वर्तमान उपभोग स्तर कम होगा, परन्तु भविष्य में आय बढ़ने के फलस्वरूप उपभोग भी बढ़ जाएगा।

Intra-industry specialization

(इंट्रा–इन्डस्ट्री स्पेशलाइज़ेशन) **उद्योगों के मध्य विशिष्टीकरण**

ऐसी स्थिति जिसमें एक ही उद्योग से सम्बद्ध फर्में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त कर लेती हैं। उदाहरण के लिए, वस्त्र उद्योग के अन्तर्गत एक फर्म केवल सूटिंग–शर्टिंग वस्त्रों का उत्पादन कर सकती है, जबकि दूसरी फर्म केवल बैड–शीट या तौलियों का उत्पादन करती है। इनमें प्रत्येक फर्म विशिष्टीकरण के कारण वृहत्–स्तर पर उत्पादन करके प्रति इकाई लागत में कमी कर सकती है।

Intra-industry trade (इंट्रा–इन्डस्ट्री ट्रेड) **अन्तः फर्म व्यापार**

ऐसी स्थिति, जिसमें एक ही उद्योग से सम्बद्ध अलग–अलग देशों में कार्यरत विभिन्न फर्में विशिष्टता के आधार पर उत्पादन करती हैं तथा परस्पर व्यापार करती हैं। कभी–कभी एक सीज़न में कोई देश किसी वस्तु का निर्यात करके दूसरे सीज़न में उसका आयात कर सकता है। उदाहरण के लिए, भारत सर्दियों में सेव का निर्यात

करके, अन्य किसी मौसम में उसका आयात भी कर सकता है। इसी प्रकार वस्त्र उद्योग के संदर्भ में भारत सूटिंग–शर्टिंग वस्त्रों का निर्यात करके अन्य प्रकार के वस्त्रों (ब्लीच किए हुए वस्त्र, जीन्स का कपड़ा आदि) का आयात कर सकता है।

Intra-marginal intervention (in exchange markets)
इन्ट्रा–मार्जिनेल इन्टरवेंशन (इन एक्सचेंज मार्केट्स)
विदेशी विनिमय बाज़ारों में अंतःसीमान्त हस्तक्षेप

विनिमय दर में *परिवर्तनशीलता की स्थिति आने से पूर्व ही* सरकार द्वारा विदेशी विनिमय बाज़ार में हस्तक्षेप करना। यह उस स्थिति से भिन्न है जिसमें विनिमय दर में उतार–चढ़ाव आने के बाद सरकार हस्तक्षेप करती है। यह नीति केन्द्रीय बैंक के लिए इसलिए भी अनुकूल है क्योंकि विनिमय दर में भारी उतार चढ़ाव से पूर्व ही साधारण सी कार्यवाही करके सट्टेबाजी को रोकने में इससे सहायता मिलती है।

Intrapreneur (इंन्ट्राप्रीनियर) **कर्मचारी की स्वतंत्र उद्यमी के रूप में प्रगति**

किसी कर्मचारी का स्टेटस एक स्वतंत्र उद्यमी के रूप में परिवर्तित हो जाए तथा इस उन्नति हेतु उसका पूर्व नियोक्ता वित्तीय सहायता एवं मार्गदर्शन दे तो वह स्थिति उसके लिए सुखद रूपान्तरण की मानी जाती है।

Invention (इन्वेंशन) **आविष्कार**

नवोत्पादन के माध्यम से नई उत्पादन तकनीक विकसित करना अथवा नई प्रक्रिया से उत्पादन करना। आविष्कार के माध्यम से कोई भी फर्म अपनी स्पर्द्धाशीलता में सुधार कर सकती है तथा/अथवा वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार करके उनकी माँग में वृद्धि कर सकती है। इसके फलस्वरूप फर्म के लाभ में वृद्धि होती है।

Inventory (इन्वेन्टरी) **कच्चे माल अथवा तैयार माल का स्टॉक**

इनमें ईंधन, मेटेरियल आदि ऐसी वस्तुएँ शामिल हैं जो किसी भी समय उत्पादन प्रक्रिया में काम आ सकती हैं। इनमें वे तैयार वस्तुएँ भी शामिल हैं जो किसी भी समय ग्राहकों के लिए भिजवाई जा सकती हैं। इस प्रकार के स्टॉक का प्रबन्धन अत्यंत दक्ष हाथों में सौंपना चाहिए। बहुत अधिक या बहुत कम स्टॉक रखना फर्म के लिए हानिकारक हो सकता है।

Investment (इन्वेस्टमेंट) **निवेश**

निवेश को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है–
(i) वित्तीय निवेश– व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा किसी नई कम्पनी के शेयरों को खरीदना। (ii) उत्पादन प्रक्रिया हेतु भौतिक संसाधनों (मशीनों, उपकरणों, फैक्ट्री, भवन आदि) में पूँजी लगाना, (iii) श्रमिकों तथा कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके उनकी कुशलता में वृद्धि करना, (iv) वस्तु को उत्पादन स्थल से मंडी तक पहुँचाने हेतु परिवहन के साधनों तथा जल, व थल मार्गों का विकास करना ; तथा (v) शिक्षा, प्रशिक्षण आदि का विकास करना।

प्रायः राष्ट्रीय आय को उपभोग तथा बचत के रूप में विभाजित किया जाता है।

सामान्यतौर पर यह बचत ही निवेश के रूप में प्रयुक्त होती है (S = I)। परन्तु अनेक बार ऋण लेकर भी निवेश किया जाता है और तब बचत की अपेक्षा निवेश अधिक होता है।

निवेश को दो रूप में समझा जा सकता है : सकल निवेश तथा शुद्ध निवेश। यदि निवेश की कुल राशि में से प्रतिवर्ष होने वाले मूल्य ह्रास (घिसावट) को कम कर दिया जाए तो शेष राशि को शुद्ध निवेश कहा जाता है।

यहां यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि *पुराने शेयरों को ख़रीदना निवेश की परिभाषा में नहीं आता* क्योंकि इससे सम्बद्ध कम्पनी की उत्पादन क्षमता में कोई वृद्धि नहीं होती।

यह भी उल्लेखनीय है कि व्यष्टिगत स्तर पर किसी कम्पनी में कितनी पूँजी का निवेश किया जाएगा यह उसके प्रत्याशित लाभ पर निर्भर करता है। दूसरी ओर समष्टि स्तर पर निवेश की राशि पूँजी की सीमान्त दक्षता तथा ब्याज़ की दर पर निर्भर करेगी।

Investment appraisal (इन्वेस्टमेंट एप्रेज़ल) **निवेश का आकलन**

निवेश के प्रस्तावों की वांछनीयता तथा स्वीकार्यता का आकलन करना। इसके लिए प्लांट तथा मशीनों की घिसावट का पुनर्स्थापन, नई फैक्ट्री की शुरुआत, किसी पुरानी कम्पनी को खरीदना, नए उत्पाद का विकास, बिक्री संवर्द्धन के तरीकों, आदि बातों पर विचार किया जाता है।

साधारणतया निवेश की वांछनीयता हेतु प्रत्याशित शुद्ध लाभ को आधार बनाया जाता है। इसी के आधार पर लाभ लागत अनुपात, आन्तरिक प्रत्याय दर, शुद्ध वर्तमान मूल्य आदि ज्ञात किए जाते हैं। प्रायः इस आकलन प्रक्रिया में यह देखा जाता है कि निवेश से प्राप्त होने वाले लाभों का **बट्टाकृत मूल्य निवेश की प्रारम्भिक लागत से अधिक होना चाहिए** अन्य शब्दों में, आन्तरिक प्रत्याय दर (IRR) यदि बाजार में प्रचलित ब्याज़ की दर से अधिक हो तो निवेश वांछनीय माना जाएगा।

Investment centre (इन्वेस्टमेंट सेन्टर) **निवेश केंद्र**

किसी फर्म द्वारा स्थापित पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त एक ऐसी इकाई जो फर्म की उत्पादन लागतों एवं बिक्री से प्राप्त राशि (आगम) की समीक्षा करती है। परन्तु इस इकाई का एक महत्वपूर्ण दायित्व *कम्पनी के लिए नई पूँजी जुटाना भी है।*

Investment incentives (इन्वेस्टमेंट इंसेंटिव्ज़) **निवेश हेतु प्रोत्साहन**

केंद्र व राज्य सरकार द्वारा घोषित वे उपाय जिनसे व्यक्तियों तथा निजी क्षेत्र की संस्थाओं को उद्योग तथा व्यापार के विकास हेतु पूँजी निवेश करने हेतु प्रोत्साहन मिलता हो। इनमें लाभों को कुछ समय के लिए कर–मुक्त रखना, कम कीमत पर बिजली, पानी या कार्यशील पूँजी उपलब्ध करवाना कुछ विशिष्ट प्रकार के उद्योगों के लिए मशीनों तथा कच्चे माल के आयातों को कर मुक्त करना आदि शामिल हैं।

इन उपायों से लोग अधिक निवेश करने हेतु प्रोत्साहित होंगे, ऐसी अपेक्षा रहती है।

Investment income (इन्वेस्टमेंट इन्कम) **निवेश से प्राप्त आय**

सरकारी या व्यापारी बाँडों में निवेश से प्राप्त ब्याज़ की आय; शेयर पूँजी पर प्राप्त लाभांश, तथा वित्तीय संस्थाओं में की गई जमाओं से प्राप्त ब्याज़ को निवेश से प्राप्त आय कहा जाता है।

Investment schedule (इन्वेस्टमेंट शिड्यूल) **निवेश की सारणी**

ऐसी सारणी जो निवेश तथा राष्ट्रीय आय के बीच सम्बन्ध को दर्शाती है। इसमें स्वायत्त निवेश (autonomous investment), पुनर्स्थापना निवेश (replacement investment), तथा स्फूर्त (प्रेरित) निवेश (induced investment) तीनों के *राष्ट्रीय आय से सम्बन्ध* प्रस्तुत किए जाते हैं।
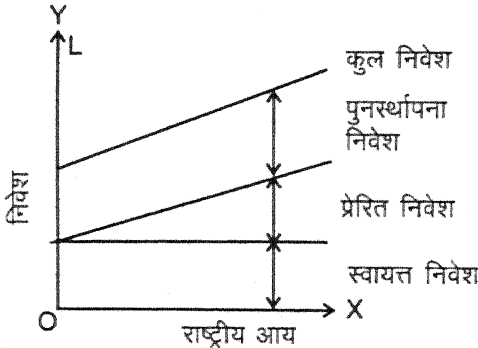
उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि स्वायत्त निवेश का राष्ट्रीय आय से कोई सम्बन्ध नहीं होता, लेकिन प्रेरित निवेश तथा पुनर्स्थापना निवेश के स्तर राष्ट्रीय आय के साथ धनात्मक रूप से जुड़े होते हैं।

Investment trust (इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट) **निवेश ट्रस्ट**

ऐसी कम्पनी जो अंशधारियों के कोषों को प्रतिभूतियों के पोर्टफोलियों में निवेश करती है। यह कम्पनी चयनित कम्पनियों के शेयरों में पूँजी लगाती है। इस कम्पनी को मूल कम्पनी से अलग हटकर स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अधिकार होता है। इसके शेयर स्टॉक एक्सचेंज में बेचे व ख़रीदे जाते हैं।

भारत में म्यूचुअल फंड वे ही कार्य करते हैं जिनका सम्पादन अन्य देशों में निवेश ट्रस्टों द्वारा किया जाता है।

Invisible balance (इंविजिबल बेलेंस) **अप्रत्यक्ष या अदृश्य व्यापार का शेष**

इसके अन्तर्गत बीमा, माल, भाडा, बैंकिंग सेवाओं, पर्यटन आदि सेवाओं हेतु प्राप्तियों तथा भुगतानों की बाकी निकाली जाती है। जहां दृश्य व्यापार यानी आयात तथा निर्यात का लेखा जोखा कस्टम अधिकारियों द्वारा रखा जाता है, अदृश्य भुगतानों तथ प्राप्तियों का लेखा जोखा देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा तैयार किया जाता है।

Invisible hand (इंविज़िबल हैंड) **अदृश्य शक्ति; अदृश्य प्रेरणा**

एडम स्मिथ द्वारा प्रस्तुत अवधारणा, जिसके अनुसार बाज़ार तंत्र स्वमेव ही बाज़ार में कीमतों को साम्य स्तर तक पहुंचा देता है। यदि कीमत साम्य स्तर से अधिक है तो विक्रेता अधिक मात्रा बेचना चाहेंगे जबकि माँग अपेक्षाकृत कम होगी। यदि कीमत साम्य स्तर से कम है तो माँग की मात्रा पूर्ति से अधिक होगी। दोनों ही स्थितियों में विक्रेताओं तथा क्रेताओं की परस्पर स्पर्द्धा के कारण अंततः साम्य स्थिति प्राप्त हो जाती है। स्मिथ ने कहा कि पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में प्रत्येक उत्पादक अथवा प्रत्येक उपभोक्ता स्वहित की भावना से उपलब्ध साधनों का आवंटन करता है। *यही स्वहित एक प्रकार की अदृश्य शक्ति है।*

Involuntary saving (इंवोलंटरी सेविंग) **विवशता-जनित बचत**

ऐसी बचत जिसे व्यक्ति करना नहीं चाहता परन्तु सरकार अथवा नियोक्ता के द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार उसकी आय में से यह काटी जाती है। भविष्य निधि इसका एक उदाहरण है।

Involuntary unemployment
(इंवोलंटरी अनएँप्लॉयमेंट) **विवशता-जनित बेरोज़गारी**

जहां स्वैच्छिक बेरोज़गारी के अन्तर्गत काम के अवसर उपलब्ध होने पर भी कोई व्यक्ति कार्य नहीं करना चाहता, विवशता जनित बेरोज़गारी के संदर्भ में व्यक्ति के समक्ष काम के अवसर ही नहीं होते। निर्दिष्ट मज़दूरी इतनी कम होती है कि काम की तलाश में घूमते हुए व्यक्ति को उसे स्वीकार करना उपयुक्त नहीं प्रतीत होता, क्योंकि या तो मज़दूरी का यह स्तर अपर्याप्त है, अथवा उस व्यक्ति की योग्यता अथवा अनुभव के अनुरूप नहीं है।

Inward investment (इन्वर्ड इंवेस्टमेंट)
अप्रवासियों द्वारा किया गया पूँजी निवेश

जब अप्रवासी व्यक्ति अपने देश में सम्पत्ति अथवा किसी फर्म में निवेश करते हैं, तो यह निवेश आन्तरिक प्रवाह की श्रेणी में आता है।

Irredeemable security (इर्रीडिमेबेल सिक्योरिटी) **बिना तिथि वाली प्रतिभूति**

ऐसी प्रतिभूति जिस पर भुगतान की तिथि अंकित नहीं है। अनिश्चित अवधि वाली इस प्रकार की प्रतिभूतियों में प्रीफरेंशियल शेयर भी शामिल हैं।

I-S (Investment-saving) Schedule [आइ–एस (इनवेस्टमेंट सेविंग) शिड्यूल]
निवेश-बचत सूची; निवेश-बचत वक्र

एक ऐसा वक्र जो प्रत्याशित बचतों तथा निवेश की साम्य स्थिति को दर्शाता है। बचतों तथा निवेश को एक सूची अथवा तालिका के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

इसके अन्तर्गत I-S वक्र राष्ट्रीय आय (Y) तथा ब्याज़ दरों (r) के अनुरूप प्रत्याशित

निवेश तथा प्रत्याशित बचतों के स्तरों को प्रस्तुत करता है। यह मान्यता ली जाती है कि जब राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है, तो बचत का स्तर बढ़ता है। जब ब्याज़ की दर कम होती है तब भी निवेश का स्तर बढ़ता है, जबकि बचत के स्तर में कमी होती है। I-S वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है जो यह दर्शाता है कि अधिक निवेश के पीछे प्रमुख कारण ब्याज़ की दर में कमी होना है। परन्तु निवेश बढ़ने पर पूँजी की सीमान्त दक्षता (MEC) में कमी होती है, अतः अधिक निवेश तभी होगा जब (MEC = interest rate) ब्याज़ की दर में कमी हो।

I-S/L-M Model (आई–एस / एल–एम मॉडल)

आई-एस तथा एल-एम मॉडल

प्रोफेसर जे.आर. हिक्स द्वारा प्रतिपादित मॉडल जिसके अन्तर्गत किसी अर्थव्यवस्था में सकल माँग के स्तर का निर्धारण किया जाता है। इस मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें **एक साथ वित्तीय बाज़ार तथा वस्तुओं के बाज़ारों में साम्य स्तर को ज्ञात किया जा सकता है।**

पहले राष्ट्रीय आय (सकल व्यय) तथा ब्याज़ की दरों के स्तरों को देखकर निवेश की माँग तथा बचतों की पूर्ति के साम्य स्तरों का विश्लेषण किया जाता है। इसके अनुसार राष्ट्रीय आय तथा ब्याज़ के उन स्तरों को देखा जाता है जिनमें से प्रत्येक पर निवेश तथा बचतों में समानता हो (I=S)। I-S वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है।

इसके बाद मुद्रा की माँग (L) को देखा जाता है जो राष्ट्रीय आय (सौदा माँग) तथा ब्याज़ की दर (सट्टा माँग) पर निर्भर करती है। इसके विपरीत मुद्रा की पूर्ति (M) का इन दोनों से ही कोई सम्बन्ध नहीं होता तथा उसकी पूर्ति स्थिर रहती है। इस आधार पर राष्ट्रीय आय एवं ब्याज़ की दरों के वे स्तर प्रस्तुत किए जाते हैं जिनमें से प्रत्येक पर कुल मुद्रा की माँग तथा पूर्ति में समानता हो (L=M)। यह LM वक्र धनात्मक ढलानयुक्त होता है।
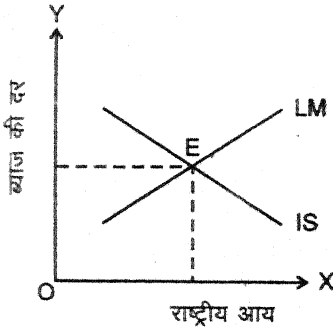
उपर्युक्त चित्र में I-S तथा LM का प्रतिच्छेदन E पर होता है, जहाँ वस्तुओं के बाज़ार (सभी

वस्तुओं तथा सेवाओं के स्तर, जहां ब्याज़ की दरों तथा राष्ट्रीय आय) में साम्य स्थिति है, तथा इसी के साथ यहीं पर मुद्रा के बाज़ार में भी मुद्रा की कुल माँग व पूर्ति में समानता है। इस प्रकार E पर समूची अर्थव्यवस्था एक प्रकार की साम्य स्थिति में होती है।

Isocost curve (आइसोकॉस्ट कर्व) **समलागत वक्र**

ऐसा वक्र जो दी हुई राशि के अन्तर्गत साधनों के विभिन्न संयोगों की सम्भावित मात्राएँ दर्शाता है। यदि फर्म दो साधनों का उपयोग करना चाहती है तथा उसके पास **निर्दिष्ट राशि** उपलब्ध है तो एक साधन (Labour) की अधिक इकाइयां लेने पर उसे दूसरे साधन (Capital) की मात्रा में कमी करनी होगी।
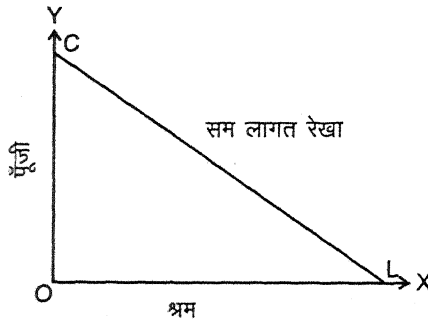
उपर्युक्त चित्र में सम लागत रेखा CL है जिसके प्रत्येक बिन्दु पर श्रम व पूँजी की भिन्न–भिन्न मात्राएँ प्रयुक्त की जा सकती हैं। इसमें OL अधिकतम श्रम की मात्रा हो सकती है जबकि OC पूँजी की अधिकतम सीमा होगी।

Isoquant (आइसोक्वांट) **समोत्पाद वक्र**

ऐसा वक्र जो श्रम तथा पूँजी के विभिन्न संयोगों से किसी वस्तु की निर्दिष्ट मात्रा के सम्भावित उत्पादन को दर्शाता है। यदि 100 क्विंटल गेहूँ के उत्पादन हेतु 200 इकाई श्रम तथा 500 इकाई पूँजी का उपयोग किया जा सकता है तो इस वक्र के अनुसार इतनी ही मात्रा गेहूँ का उत्पादन 400 इकाई श्रम तथा 200 इकाई पूँजी से भी किया जा सकता है।

उदासीनता का वक्र
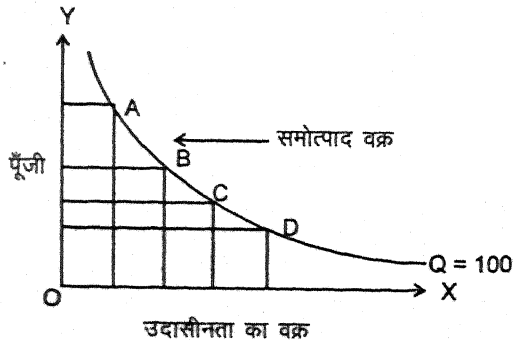
उपर्युक्त चित्र समोत्पाद वक्र को प्रस्तुत करता है जिसके अनुसार बिन्दु A पर पूँजी की अधिक तथा श्रम की कम इकाइयों से 100 क्विंटल गेहूँ उत्पादित किया जाता है। यदि पूँजी की इकाइयां कम करके श्रम की अधिक इकाइयों को प्रयुक्त किया जाए तब भी फर्म उतना ही उत्पादन कर सकती है। (बिन्दु B)। इसके विकल्प के रूप में उत्पादन की उतनी ही मात्रा को C बिन्दु पर और अधिक श्रम तथा पूँजी की अपेक्षाकृत कम मात्रा के साथ प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार समोत्पाद वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है, क्योंकि उत्पादन की निर्दिष्ट मात्रा हेतु यदि श्रम की मात्रा को बढ़ाया जाता है तो पूँजी की मात्रा में कमी की जाएगी।

प्रायः समोत्पाद वक्र मूल बिन्दु से उन्नतोदर होता है। इसका कारण है कि श्रम की मात्रा में निर्दिष्ट वृद्धि करने के लिए उत्पादक उत्तरोत्तर पूँजी की इकाइयों में कम कटौती करना चाहेगा। इसकी पुष्टि A से B, B से C तथा C से D पर आने के दौरान पूँजी की मात्रा में की गई कटौती को देखने में होती है।

Issued share capital (इस्यूड शेयर केपीटल) **निर्गमित शेयर पूँजी**

किसी कम्पनी की अधिकृत पूँजी का वह भाग, जिसे अंशधारियों ने प्राप्त कर लिया है। यह आवश्यक नहीं है कि इसकी शत प्रतिशत राशि का वे भुगतान कर चुके हों। इस प्रकार समूची अधिकृत पूँजी का एक भाग निर्गमित किया जा सकता है तथा निर्गमित पूँजी का एक भाग अंशधारियों में बकाया छोड़ा जा सकता है जिसे वे आवश्यकता पड़ने पर चुकाते हैं।

J

J-curve effect (जे–कर्व इफेक्ट) **जे-वक्र प्रभाव**

किसी देश द्वारा अपनी *मुद्रा का अवमूल्यन करने के बाद* इसके भुगतान संतुलन पर होने वाले प्रभाव का विश्लेषण। अवमूल्यन के फलस्वरूप तत्काल प्रभाव से निर्यातों की (विदेशी मुद्रा के रूप में) कीमतें कम हो जाती हैं, जबकि आयात (घरेलु मुद्रा के रूप में) महँगे हो जाते हैं। परन्तु इसके विपरीत निर्यातों के लिए अब घरेलु मुद्रा के रूप में अधिक मुद्रा प्राप्त होती है। निर्यातों में वृद्धि तथा आयातों की कमी में लम्बा समय लगता है; जिससे अल्पकाल में अवमूल्यन का लाभ नहीं मिल पाता। इस प्रकार अल्पकाल में तो भुगतान शेष का घाटा बढ़ता है। परन्तु दीर्घकाल में अवमूल्यन के वांछित परिणाम प्राप्त हो जाते हैं।

Jevons, William Stanley (1835-82) (विलियम स्टेंली जेवन्स)

इंग्लैंड के एक अर्थशास्त्री

जिन्होंने उपयोगिता की अवधारणा का विकास किया। इनकी पुस्तक का नाम "दी थ्योरी ऑफ पॉलिटिकल इकोनोमी" था। जेवन्स इस बात से सहमत नहीं थे कि वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन में निहित श्रम की मात्रा पर निर्भर करता है। उनके मतानुसार मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि उपभोक्ता की अपनी दृष्टि में उस वस्तु की उपयोगिता कितनी है। श्रम के विषय में उन्होंने कहा कि उसका मूल्य इसी बात पर निर्भर करता है कि उसकी उत्पादकता कितनी है। जेवन्स ने यह भी कहा कि उपभोक्ता वस्तु की ख़रीद उस समय तक करता है जहां वस्तु की अन्तिम (सीमान्त) इकाई से प्राप्त उपयोगिता उसकी कीमत के समान हो जाती है।

Job acceptable schedule

(जॉब एक्सेप्टेबल शिड्यूल) **रोज़गार की स्वीकृति हेतु शर्तें**

कोई भी व्यक्ति किसी कार्य को करने से पूर्व सम्भावित पारिश्रमिक, काम की दशाएँ, स्थिति आदि पर विचार करना चाहेगा। यदि काम करने वाला श्रमिक बेरोज़गार है तो उसकी अपेक्षाएँ बदल जाएँगी। उस दशा में वह कम पारिश्रमिक तथा किसी सीमा तक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी काम करने को तैयार हो जाएगा।

Job centre (जॉब सेंटर) **रोज़गार केन्द्र**

वह स्थान जहां श्रमिक को कार्य मिलने की सम्भावना है।

Job enlargement (जॉब ऐंलार्जमेंट)

किसी श्रमिक के कार्य में विविधता लाने हेतु उससे अतिरिक्त कार्य करवाना।

Job rotation (जॉब रोटेशन) **कार्य की प्रकृति में बार-बार परिवर्तन**

यदि श्रमिक को बार–बार नया काम दिया जाए तो उसे काम से उत्पन्न नीरसता का अनुभव नहीं होगा हालांकि विशिष्टीकरण न होने से उसकी दक्षता में वृद्धि नहीं हो पाएगी।

Jobber (जॉबर) **शेयरों तथा वस्तुओं का व्यापारी**

यह व्यापारी शेयर दलालों से भिन्न होता है। क्योंकि दलाल तो प्रायः उन शेयरों का स्वामी नहीं होता तथा उसका दायित्व केवल क्रेताओं व विक्रेताओं के बीच सम्पर्क कराने तक सीमित होता है। इसके विपरीत एक जॉबर अपनी ही वित्तीय प्रतिभूतियों को बेचता है तथा स्वयं के लिए ही इन्हें ख़रीदता है।

Joint costs (जॉइन्ट कॉस्ट्स) **संयुक्त लागतें**

संयुक्त वस्तुओं (जैसे पैट्रोल, डीज़ल, डामर आदि) के उत्पादन में हुई लागतें। पैट्रोल पदार्थों का शोधन करने पर ये संयुक्त वस्तुएँ प्राप्त होती है, परन्तु इनमें से *प्रत्येक की लागत का* पृथक् रूप से आकलन नहीं हो पाता।

Joint demand (जॉइन्ट डिमान्ड) **संयुक्त माँग**

दो या अधिक वस्तुओं को एक साथ ख़रीदने पर ही किसी माँग को पूरा किया जा सकता है। प्रायः कार के साथ पैट्रोल, दूध के साथ चीनी, कमीज़ के साथ पतलून की माँग की जाती है।

Joint profit maximization

(जॉइन्ट प्रोफिट मेक्सीमाइजेशन) **अधिकतम संयुक्त लाभ प्राप्त करना**

जब विभिन्न उत्पादक परस्पर स्पर्द्धा करने की अपेक्षा उत्पादन तथा कीमत का निर्धारण संयुक्त रूप से करते हैं तो उनका लक्ष्य व्यक्तिगत लाभ के स्थान पर, संयुक्त लाभ को अधिकतम करने का रहता है। प्रायः अल्पाधिकार वाले बाज़ार में जहां फर्मों की संख्या कम रहती है, संयुक्त लाभ को अधिकतम करने की रणनीति अपनाई जाती है।

Joint stock company (जॉइन्ट स्टॉक कम्पनी) **संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी**

एक ऐसी आर्थिक इकाई, जिसकी पूँजी अंशों या शेयरों में बंटी होती है, तथा निवेशकर्ता इसके अंशों को ख़रीदते हैं। इन अंशों को हस्तांतरित किया जा सकता है। अधिकांशतः इस प्रकार की कम्पनी में सभी अंशधारी प्रबन्ध में भागीदार नहीं होते, अपितु वे निदेशकों का चुनाव करके सामान्य प्रशासन का दायित्व उन्हें सौंप देते हैं। कम्पनी के शुद्ध लाभों को लाभांश के रूप में वितरित कर दिया जाता है। वस्तुतः कानूनी दृष्टि से अंशधारियों तथा कम्पनी का अस्तित्व अलग–अलग होता है। इसी कारण कम्पनी को प्रायः एक "वैधानिक कृत्रिम व्यक्ति" कहा जाता है।

Joint supply (जॉइन्ट सप्लाई) **संयुक्त पूर्ति**

ऐसी स्थिति जिसमें किसी फर्म द्वारा उत्पादित एक वस्तु की मात्रा कम होने पर स्वतः ही किसी अन्य वस्तु की पूर्ति में भी कमी हो जाती है। इसका एक सामान्य उदाहरण ऊन तथा मांस की पूर्ति से सम्बद्ध है।

Joint venture (जॉइन्ट वेन्चर) **साझा उपक्रम**

दो या अधिक स्वतंत्र उद्यमियों द्वारा साझा व्यापार। ये उद्यमी अधिकांश कार्य अलग–अलग रूप में करते हैं, परन्तु एक विशिष्ट क्रिया के सम्पादन हेतु अपने साधनों को मिलाकर कार्य करते हैं। इस साझा उपक्रम के फलस्वरूप इन फर्मों को जहां पैमाने की बचत प्राप्त होती है, वहीं इनका स्वतंत्र स्वरूप भी बना रहता है।

Junk bonds (जंक बॉड्स) **संशययुक्त प्रतिभूतियां**

किसी फर्म द्वारा निर्गमित ऐसी प्रतिभूति जिसकी सुरक्षा संदेहास्पद होती है। प्रायः ऐसी प्रतिभूतियों के विषय में यह आशंका रहती है कि उनकी मूल राशि तथा अंकित ब्याज़ का भुगतान सम्भवतः न हो पाए।

Just-in-time (JIT) (जस्ट इन टाइम) **समयबद्ध कार्य**

ऐसी व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत कच्चे माल की ख़रीद, श्रमिकों व कर्मचारियों की भर्ती, उत्पादन प्रक्रिया तथा उपभोक्ताओं तक वस्तुओं को पहुँचाने तक की *प्रत्येक क्रिया को* चरणबद्ध रूप में निश्चित् समय पर पूरा कर लिया जाए। यदि एक भी क्रिया में थोड़ा भी विलम्ब होता है तो समूची शृंखला गड़बड़ा जाती है। इसीलिए समयबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत मशीनों व कच्चे माल की आपूर्ति करने वालों, फर्म के प्रबन्धकों, श्रमिकों व कर्मचारियों, वितरकों, थोक तथा रिटेल व्यापारियों आदि के बीच पूर्ण रूप से तालमेल होना ज़रूरी है।

□□□

K

Kaldor, Nicholas (1908-86) (निकोलस केल्डोर)

बुडापेस्ट में जन्मे केल्डोर की शिक्षा इंगलैंड में सम्पन्न हुई, जहां 1947 तक उन्होंने अध्यापन किया। केल्डोर का करारोपण एवं राजकोषीय नीति पर विशेष योगदान रहा। केल्डोर ने ब्रिटिश सरकार को दीर्घकालीन पूँजीगत लाभ कर, विशिष्ट रोजगार कर आदि पर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं। बींसवी शताब्दी के छठे दशक में भारत सरकार ने भी अपनी कर सम्बन्धी नीति के विषय में निकोलस केल्डोर की सेवाएँ ली थीं। केल्डोर ने कल्याण अर्थशास्त्र के अन्तर्गत **क्षतिपूर्ति सिद्धान्त** का भी प्रतिपादन किया।

Kennedy Round (केनेडी राउंड) **केनेडी वार्ताएँ**

तटकर तथा व्यापार पर सम्पन्न सामान्य समझौते (GATT) के तत्वावधान में 1964–67 के बीच हुई वार्ताएँ। इन्हें सं. राज्य अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति केनेडी के नाम पर केनेडी राउंड कहा गया। इन वार्ताओं के अन्तर्गत विश्व के अधिकांश देशों ने आगामी पांच वर्षों में आयात करों में एक तिहाई कटौती करने हेतु सहमति व्यक्त की। परन्तु विदेशी व्यापार से सम्बद्ध अन्य प्रतिबन्धों तथा कृषि क्षेत्र में व्याप्त संरक्षण के विषय में कोई भी समझौता नहीं हो सका।

Keynes, John Maynard Keynes (जॉन मेनार्ड कीन्स, लार्ड कीन्स)

बीसवीं शताब्दी के एक महान् ब्रिटिश अर्थशास्त्री, जिन्होंने समष्टि अर्थशास्त्र को एक नई दिशा प्रदान की। इनकी अनेक पुस्तकों में से सर्वाधिक चर्चित पुस्तक "जनरल थ्यारी ऑफ एम्प्लायमेंट, इन्टरेस्ट एन्ड मनी" (1936) रही। कीन्स वे प्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने अर्थव्यवस्था में बेरोज़गारी से युक्त साम्य स्थिति के अस्तित्व का विस्तृत विश्लेषण किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि देश में बेरोज़गारी व्याप्त होने पर वह स्वतः समाप्त नहीं हो जाती, अपितु सरकारी हस्तक्षेप के द्वारा उसमें पर्याप्त कमी अवश्य की जा सकती है।

कीन्स से पूर्व के एवं उनके समकालीन अर्थशास्त्री यह मानते थे कि श्रम की पूर्ति इसकी माँग की तुलना में अधिक होने पर मज़दूरी की दर में की हो जाती है, और इसके फलस्वरूप पूर्ण रोज़गार की स्थिति प्राप्त हो जाती है। परन्तु कीन्स ने कहा कि साम्य स्थिति में भी प्रायः पूर्ण रोज़गार से कम की स्थिति परिलक्षित होती है, क्योंकि श्रमिक संघों के कारण *मज़दूरी में वृद्धि तो सम्भव है लेकिन मज़दूरी में कमी सम्भव नहीं हो पाती।*

कीन्स ने यह भी कहा कि मंदी का प्रमुख कारण प्रभावी माँग का अभाव रहता है तथा इसे केवल सरकारी हस्तक्षेप से ही ठीक किया जा सकता है।

Keynesian economics (कीन्सियन इकोनोमिक्स) **कीन्सीय अर्थशास्त्र**

कीन्स से पूर्व के सभी संस्थापक अर्थशास्त्री ऐसा मानते थे कि वैयक्तिक कल्याण अधिकतम होने पर समूची अर्थव्यवस्था में अधिकतम कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। कीन्स ने अपनी पुस्तक "दी जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लायमेंट, इंटरेस्ट एन्ड मनी" में प्रभावी माँग का सिद्धान्त प्रतिपादित किया तथा उपभोग फलन की अवधारणा विकसित की।

जहाँ संस्थापक अर्थशास्त्रियों ने निजी क्षेत्र की इकाइयों द्वारा समूची निर्णय प्रक्रिया का विश्लेषण किया, वहीं कीन्स ने प्रभावी माँग में वृद्धि हेतु **सरकार की सक्रिय भूमिका** की वकालत की। कीन्स ने यह भी बताया की बेरोज़गारी की स्थिति में मज़दूरी में स्वतः कमी होना, तथा तद्नुसार पूर्ण रोज़गार की प्राप्ति होना समभव नहीं है।

कीन्सीय अर्थशास्त्र में बतलाया गया कि राष्ट्रीय आय तथा उपभोग फलन का सम्बन्ध उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। उपभोग का स्तर आय तथा रोज़गार पर निर्भर करता है। इसमें यह भी बताया गया कि उपभोग तथा निवेश का योग सकल माँग कहलाता है, तथा साम्य स्थिति में सकल माँग तथा सकल पूर्ति समान होनी चाहिए। यदि सकल माँग (उपभोग या निवेश या दोनों) में वृद्धि होती है तो कुल रोज़गार भी बढ़ जाता है।

कीन्सीय अर्थशास्त्र के अनुसार अर्थव्यवस्था में संतुलन लाने हेतु बाज़ार की शक्तियाँ एक सीमा के पश्चात् अप्रासंगिक हो जाती हैं, और इसलिए सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है।

Keynesian Plan (कीन्सीय प्लान) **कीन्सीय योजना**

1944 में कीन्स ने ब्रेटनवुड्स सम्मेलन में द्वितीय युद्ध के बाद के मौद्रिक सुधारों हेतु एक योजना प्रस्तुत की। उन्होंने एक अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक इकाई (बैंकर) प्रारम्भ करने का प्रस्ताव रखा, जिसे उस सम्मेलन में स्वीकृति नहीं दी गई। अन्ततः अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना करके पिछड़े हुए देशों की भुगतान–शेष सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने के प्रयास प्रारम्भ हुएँ

Keynesian unemployment (कीन्सीय अनएँप्लायमेंट) **कीन्सीय बेरोज़गारी**

कीन्स के मतानुसार वस्तुओं तथा सेवाओं की "प्रभावी माँग" अपर्याप्त होने के कारण बेरोज़गारी का जन्म होता है। मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों के माध्यम से प्रभावी माँग में वृद्धि, तथा बेरोज़गारी में कमी लाई जा सकती है। कीन्स ने यह भी बतलाया कि सरकार की मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियां भी संरचनात्मक तथा स्वैच्छिक बेरोज़गारी को समाप्त नहीं कर सकती।

Kinked demand curve (किंक्ड डिमांड कर्व) **विकुंचित माँग वक्र**

एक ऐसा माँग वक्र जो सीधी सरल रेखा के रूप में न होकर किसी एक बिन्दु पर विंकुचन लिए होता है। पॉल एम. स्वीज़ी नामक अर्थशास्त्री ने बतलाया कि

अल्पाधिकार के अन्तर्गत किसी फर्म द्वारा कीमत में कमी (OP_1) करने पर उसके सभी प्रतिद्वन्द्वी भी अपनी–अपनी कीमतों में की कर देते हैं, और इसके फलस्वरूप कीमत में कमी करते समय माँग में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पाती। इसी कारण कीमत में कमी के बावजूद उस फर्म का कुल राजस्व कम हो जाता है। ($OPEQ>OP_1LQ_1$) इसके विपरीत यदि एक फर्म कीमत में वृद्धि करती है तो प्रतिद्वन्द्वी अपनी–अपनी कीमतों को यथावत् रखते हैं, और उसके फलस्वरूप माँग में अपेक्षाकृत काफी अधिक कमी हो जाती है, जिसके कारण राजस्व कम हो जाता है। ($OPEQ>OP_2MQ_2$)यही कारण है कि अल्पाधिकार वाले बाज़ार में कोई भी फर्म न तो कीमत में कमी करना चाहती है और न ही इसे बढ़ाना चाहती है, क्योंकि वह अपने राजस्व में कमी की जोखिम नहीं लेना चाहती। चित्र में E बिन्दु पर सर्वाधिक राजस्व (OPEQ) प्राप्त होता है जबकि M तथा L बिन्दुओं पर अपेक्षाकृत कम राजस्व मिलता है। स्पष्ट है कि OP कीमत पर ही वस्तु की बिक्री होती रहती है। **अस्तु, E पर माँग वक्र विकुंचित होता है।**
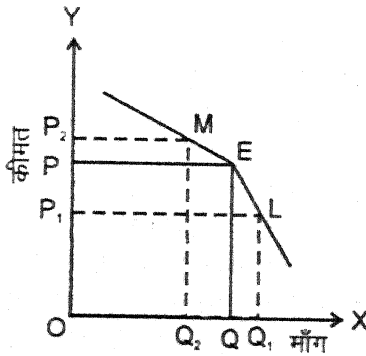
Klein, Lawrence, R. (Born 1920) **लॉरेन्स आर. क्लाइन**

अमरीकी अर्थशास्त्री, जिन्हें 1980 में नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। क्लाइन ने व्यापक स्तर पर अर्थमितीय मॉडलों का प्रयोग राष्ट्रीय आय के पूर्वानुमानों हेतु किया। उन्होंने सांख्यिकीय आधार पर समष्टिगत विश्लेषण द्वारा राष्ट्रीय आय तथा कीमत स्तर के उतार–चढ़ावों पर प्रकाश डाला।

Knight, Frank H. (1885-1973) **नाइट, फ्रेंक एच.**

एक अमरीकी अर्थशास्त्री, जिन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें कुछ का सामाजिक व्यवस्था तथा धर्म से भी सम्बन्ध था। उन्होंने बीमायोग्य जोखिम तथा बीमे के योग्य अनिश्चितताओं की व्याख्या की, तथा व्यावसायिक निर्णयों में अनुमानों का महत्व बतलाया।

Know-how (नो हाउ) **विशिष्ट ज्ञान**

किसी फर्म द्वारा लम्बे अनुभव के साथ प्राप्त की गई विशिष्ट योग्यता तथा व्यापारिक

सम्पर्क, जो उसकी प्रतियोगिता क्षमता मे वृद्धि करते हैं। इस विशिष्ट योग्यता में संगठन कौशल, व्यावसायिक प्रामाणिकता, तथा प्रेरणाओं की व्यवस्था शामिल हैं *जिनका पेटेंट सम्भव नहीं है।*

Kondratief cycle (कोन्ड्राटीफ साइकिल) **कोन्ड्राटीफ चक्र**

एक दीर्घकालीन (50 वर्ष या इससे अधिक अवधि वाला) व्यापार चक्र। इस दीर्घकालीन व्यापार चक्र के अन्तर्गत छोटी अवधि वाले अनेक व्यापार चक्र निहित हो सकते हैं। कोन्ड्राटीफ ने बताया कि दीर्घकालीन व्यापार चक्र की पृष्ठभूमि में बहुत व्यापक तथा क्रांतिकारी आविष्कार शामिल होते हैं जिनका अनेक दशकों तक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव बना रहता है।

Koopmans, T.C. (Born 1910) (कूपमैंस, टी.सी.) **नीदरलैंड में जन्मे अर्थशास्त्री**

1975 में कूपमैंस को नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। इनका मुख्य योगदान *सांख्यिकीय आर्थिक मॉडलों* के निरूपण में रहा। उन्होंने रैखिक प्रोग्रामिंग के प्रयोग तथा सामान्य साम्य के विश्लेषण में भी अमूल्य योगदान दिया।

Kurtosis (कर्टोसिस) **पृथुशीर्षत्व**

किन्हीं आवृत्तियों का वितरण जब सामान्य नहीं होता तो केन्द्रीय माध्य (मध्यका, बहुलक, समान्तर माध्य आदि) के मूल्य भी अलग–अलग होते हैं। ऐसी स्थिति में इन आवृतियों को दर्शाने वाला वक्र दाईं या बाईं ओर झुका हुआ (नुकीला) हो सकता है।

Kuznets, Simon S. (Born 1901) **कुज़नेट्स, साइमन एस.**

नोबल पुरस्कार विजेता साइमन कुज़नेट्स ने लम्बे समय तक सं.रा. अमरीका में शोध तथा अध्यापन किया। उन्हें 1971 में अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने अनेक पुस्तकें तथा लेख लिखे तथा *अर्थमिती के आधार पर* समष्टि मूलक सिद्धान्तों का परीक्षण किया। प्रोफेसर कुज़नेट्स ने यह भी बतलाया कि आर्थिक विकास के साथ–साथ सेवा तथा औद्योगिक क्षेत्रों का राष्ट्रीय आय में योगदान (प्रतिशत में) बढ़ता है, जबकि कृषि आय का अनुपात कम होता जाता है, कुज़नेट्स ने आय वितरण के विषय में प्रस्तुत अपने निश्कर्षों के लिए अनेक देशों से आंकड़े इकट्ठे किए।

□□□

L

Labour (लेबर) **श्रम**

उत्पादन के साधन के रूप में मानवीय योगदान। श्रम की पूर्ति में उन सभी व्यक्तियों को शामिल किया जाता है जो स्वस्थ हैं, तथा काम करना चाहते हैं। इसके साथ ही पहले से काम में लगे हुए स्त्री पुरुषों को भी श्रम की पूर्ति में शामिल किया जाता है। श्रम की प्रकृति, श्रमिकों की दक्षता एवं योग्यता में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है। श्रम की माँग उत्पादन की मात्रा तथा तकनीक पर निर्भर करती है। प्रायः श्रम को संगठित श्रम तथा असंगठित श्रम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। श्रम की मज़दूरी उनके सगठित स्वरूप के अलावा श्रमिक की दक्षता, काम के घंटों, काम करने की परिस्थितियों, भविष्य के प्रति सम्भावनाओं तथा मालिक के व्यवहार पर निर्भर करती है।

Labour-capital ratio (लेबर केपीटल रेशियो) **श्रम-पूँजी अनुपात**

उत्पादन की *निर्दिष्ट मात्रा* हेतु प्रयुक्त श्रम व पूँजी की मात्राओं का अनुपात। यदि यह अनुपात इकाई से अधिक है ($L/K > 1$) तो उत्पादन प्रक्रिया में श्रम की गहनता मानी जाएगी।

Labour economics (लेबर इकोनोमिक्स) **श्रम अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र की वह शाखा जिसका सम्बन्ध श्रम की पूर्ति तथा माँग के विभिन्न आयामों से होता है। इनमें श्रम की सहभागिता दर, मज़दूरी के लिए सौदेबाजी तथा श्रमिक संघों की रणनीति जैसे घटक शामिल हैं। इनके अलावा श्रम की माँग व पूर्ति श्रमिकों के प्रशिक्षण, काम के घंटों, काम करने की परिस्थितियों, भर्ती के तरीकों उत्पादन प्रक्रिया, श्रमिकों की गतिशीलता, सेवा निवृत्ति की आयु आदि पर भी निर्भर करती हैं।

Labour force (लेबर फोर्स) **श्रमि शक्ति**

इसे *कार्यशील जनसंख्या* भी कहा जाता है। श्रम शक्ति का अर्थ जनसंख्या में उन व्यक्तियों से है जो किसी देश में काम करने हेतु उपलब्ध हैं। इनमें कर्मचारियों, मज़दूरों, स्वयं के व्यवसाय या उपक्रमों में लगे व्यक्तियों तथा *वर्तमान में बेरोज़गार* लोगों को शामिल किया जाता है।

Labour hoarding (लेबर होर्डिंग) **श्रम का संचय**

किसी फर्म के द्वारा आवश्यकता से अधिक श्रम का नियोजन करना। ऐसा इस अपेक्षा के साथ किया जाता है कि कुछ ही समय के पश्चात् उत्पादन में वृद्धि होगी तथा यह अतिरिक्त श्रम उस समय सुविधापूर्वक खप जाएगा। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप

निकाले गए श्रमिकों को पुनः काम पर लगाने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने की लागत काफी कम होगी, तथा अतिरिक्त उत्पादन हेतु अतिरिक्त श्रम को ढूंढने की परेशानी भी नहीं होगी। कम्पनी के प्रबन्धक प्रायः उत्पादन कम होने की दशा में पहले से कार्यरत श्रमिकों को बर्ख़ास्त करने से उत्पन्न समस्याओं से स्वयं को बचाना चाहते हैं, तथा फालतू श्रमिकों को बनाए रखना चाहते हैं।

Labour intensity (लेबर इन्टेन्सिटी) **श्रम की गहनता**

उत्पादन प्रक्रिया में कुल इन्पुट्स में श्रम का अनुपात। किसी किसी प्रक्रिया में श्रम का अनुपात काफी अधिक रहता है तथा उसे गहन श्रम वाली प्रक्रिया कहते हैं। यदि श्रम को L तथा अन्य इन्पुट्स को K के रूप में लिया जाये तो श्रम की अधिक गहनता का अर्थ $L/K > 1$ से होगा।

Labour market (लेबर मार्केट) **श्रम बाज़ार**

ऐसा बाज़ार, जहां दी हुई मज़दूरी पर श्रम का क्रय एवं विक्रय होता है। श्रम की माँग के अन्तर्गत विभिन्न फर्मों द्वारा उत्पादन प्रक्रिया हेतु चाहे गए श्रमिकों की संख्या को लिया जाता है, जबकि श्रम की पूर्ति के अन्तर्गत निर्दिष्ट मज़दूरी दर पर उपलब्ध श्रमिकों को शामिल किया जाता है। श्रम की मज़दूरी दर कम होने पर श्रम की माँग बहुत अधिक होगी जबकि उपलब्ध श्रम की पूर्ति कम होगी। इसके विपरीत मज़दूरी दर अधिक होने पर माँग की अपेक्षा पूर्ति का आधिक्य होगा।

श्रम के बाज़ार में जहां माँग तथा पूर्ति में समानता है, वहीं साम्य मजदूरी का स्तर स्थापित हो जाता है। प्रायः श्रमिकों को संगठित करके ऊँची मज़दूरी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इसके विपरीत फर्मों के प्रबन्धक प्रायः पूँजी गहन तकनीक का प्रयोग करके श्रम की माँग को सीमित करने का प्रयास करते हैं। श्रम की माँग पर श्रमिकों की दक्षता, वस्तुओं की माँग के स्तर तथा पूँजी व श्रम के बीच स्थानापन्नता का भी प्रभाव पड़ता है।

श्रमिकों के कौशल तथा उत्पादन क्षमता में अन्तर होने के कारण श्रम को एक समरूपी इन्पुट नहीं माना जा सकता। दूसरी ओर, श्रमिकों में कभी–कभी गतिशीलता का अभाव होने से अनेक श्रमिक कम मज़दूरी पर भी श्रम की पूर्ति करने को सहमत हो जाते हैं।

Labour mobility (लेबर मोबिलिटी) **श्रम की गतिशीलता**

श्रमिकों का वह गुण जिसके अनुसार ऊँची मजदूरी मिलने पर श्रमिक एक स्थान से दूसरे स्थान पर या एक फर्म/उद्योग से दूसरी फर्म में रोज़गार हेतु जाने को तैयार हो जाते हैं। प्रायः परिवार से मोह, भाषा के अन्तर तथा जाति, धर्म अथवा अन्य घटकों के प्रतिकूल होने के कारण श्रम में पूँजी की तुलना में गतिशीलता कम होती है।

Labour productivity (लेबर प्रोडक्टिविटी) **श्रम की उत्पादकता**

श्रम की प्रत्येक इकाई को प्रयुक्त करने पर प्राप्त उत्पादन की (औसत) मात्रा। इसे

श्रम का औसत उत्पादन$\left(\frac{Q}{L}\right)$ भी कहा जाता है। यह उत्पादकता जिन घटकों पर निर्भर करती है उनमें श्रमिकों की शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुभव तथा अन्य इनपुट्स (पूँजी, भूमि आदि) की गुणवत्ता प्रमुख हैं।

यदि हमें श्रम की सीमान्त उत्पादकता $\left(\frac{dQ}{dL}\right)$ ज्ञात करनी हो तो श्रम की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने पर उत्पादन की मात्रा में हुई वृद्धि (या कमी) को ज्ञात किया जाएगा।

Labour supply (लेबर सप्लाई) **श्रम की पूर्ति**

श्रम बाज़ार में उपलब्ध श्रम यह पूर्ति जनसंख्या में कार्य करने योग्य लोगों की संख्या, इनमें कार्य करने के इच्छुक लोगों के अनुपात, मज़दूरी की दर, श्रमिकों की गतिशीलता, अप्रवास की शर्तों आदि पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त देश में विद्यमान शिक्षा तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था पर भी श्रम की पूर्ति निर्भर करती है।

Labour theory of value
(लेबर थ्योरी ऑफ वेल्यू) **मूल्य का श्रम सिद्धान्त**

इस सिद्धान्त के अनुसार वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्य उनके उत्पादन में निहित **श्रम की मात्रा** पर निर्भर करता है। इस सिद्धान्त में श्रम के अतिरिक्त अन्य साधनों के योगदान को गौण माना जाता है। परन्तु श्रम की गुणवत्ता के कारण उसकी उत्पादकता में विद्यमान अन्तर की भी अपेक्षा कर दी जाती है। मूल्य में श्रम सिद्धान्त का प्रतिपादन एडम स्मिथ तथा रिकार्डो ने किया, लेकिन डेविड रिकार्डो, तथा आगे चलकर कार्ल मार्क्स ने इस सिद्धान्त का काफी विस्तार से प्रयोग किया।

Labour turnover (लेबर टर्नओवर)
किसी फर्म के अन्तर्गत श्रमिकों का अन्तर्प्रवाह तथा बहिर्गमन

प्रायः श्रम के बहिर्गमन में श्रमिकों में से कुछ की सेवानिवृत्ति, स्वैच्छिक त्याग पत्र, बर्खास्तगी आदि कारण निहित होते हैं। सामान्य तौर पर व्यापार चक्रों के फलस्वरूप श्रमिकों के नियोजन अथवा बहिर्गमन अधिक हो सकते हैं। उत्कर्ष के समय श्रमिकों के नियोजन में पर्याप्त वृद्धि होती है जबकि मंदी के दौरान इनकी संख्या में कमी हो जाती है।

Laffer curve (लैफर कर्व) **लैफर वक्र**

ऐसा वक्र जो कर की दरों तथा इनसे प्राप्त राजस्व के बीच सम्बन्ध दर्शाता है। प्रारम्भ में आर्थिक क्रिया पर कर न होने पर कर की दर तथा राजस्व दोनों ही शून्य होते हैं। कर रोपित होने के पश्चात् जैसे जैसे इसकी दर बढ़ाई जाती है वैसे वैसे राजस्व में वृद्धि होती है परन्तु इसके साथ ही *आर्थिक क्रियाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव प्रारम्भ हो जाते हैं।* अन्ततः एक ऐसी सीमा आ जाती है जिसके पश्चात् कुल कर राजस्व

में कमी होने लगती है। इस प्रवृत्ति को कर वंचना के कारण और भी बल मिलता है। प्रस्तुत चित्र में 100 प्रतिशत दर होने पर सभी आर्थिक गतिविधियां बंद होने के कारण करों से प्राप्त राजस्व भी शून्य हो जाता है। इस चित्र के अनुसार R कर की अधिकतम दर होनी चाहिए।
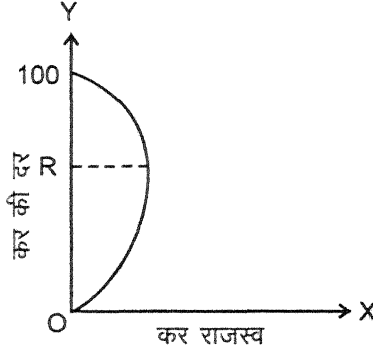
Lagrange multiplier (लेंग्राजी मल्टीप्लायर) **लैग्रांजी गुणक**

किसी भी गणितीय फलन में अधिकतम या न्यूनतम (सीमाबद्ध) मूल्य ज्ञात करने हेतु प्रयुक्त सांकेतिक चर। मान लीजिए हमारे समक्ष एक निम्न फलन है :

$$Y = f(X, Z)$$

तथा हमें इसे निम्न सीमा के भीतर अधिकतम करना है :

$$C^0 = w.L. + r.K$$

इसके लिए हम एक लैग्रांजी फलन को निम्न रूप में निरूपित कर सकते हैं :

$$S = f(X, Z) - \lambda\,[(w.L + r.k) - C^0]$$

इस लैग्रांजी फलन में λ को लैग्रांजी गुणक माना जा सकता है। इसके पश्चात् S का L, K तथा λ के सन्दर्भ में प्रथम अवकलज लेकर X एवं Z की वे मात्राएँ ज्ञात की जा सकती हैं जिन पर S का अधिकतम मूल्य ज्ञात हो सकता है।

Lagged relationship (लैगेड रिलेशनशिप) **अन्तरालयुक्त सम्बन्ध**

दो या अधिक चरों का ऐसा सम्बन्ध जिसमें एक चर का वर्तमान मूल्य दूसरे चर के पूर्व अवधि वाले मूल्य पर निर्भर करता है। निम्न उदाहरण देखिए :

$$C_t = f(Y_{t-1})$$

इस फलन में वर्तमान उपभोग (C_t) का स्तर, एक अवधि पूर्व काली आय (Y_{t-1}) के स्तर पर निर्भर करता है।

Laissez-faire (लैज़िज़ फेयरे) **स्वतंत्र बाज़ार वाली नीति**

इस नीति के अन्तर्गत यह मान्यता ली जाती है कि बाज़ार तंत्र ही सर्वोत्तम आर्थिक निर्णय लेने में सक्षम है और इसलिए राज्य को अर्थव्यवस्था में किसी भी प्रकार का

हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए तथा केन्द्रीय नियोजन की अपेक्षा सभी प्रकार के साधनों का आवंटन निजी संस्थाओं द्वारा होना चाहिए।

Land (लैंड) **भूमि**

उत्पादन प्रक्रिया हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले प्राकृतिक साधन। इन साधनों का उपयोग फसल उगाने, पशु पालन, वृक्षारोपण, भवन निर्माण आदि के लिए किया जा सकता है। इन्हीं साधनों में वन सम्पदा, जल सम्पदा, खनिज सम्पदा आदि को भी शामिल किया जाता है जिन्हें मानवीय श्रम तथा पूँजी की सहायता से आय सृजन हेतु काम में लिया जाता है।

Landlord (लैंड लॉर्ड) **भू-स्वामी**

भूमि तथा भवन का स्वामी जो उनका उपयोग स्वयं करता हो, अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संस्था को उसका उपयोग करने का अधिकार देकर उससे लगान अथवा किराया वसूल करता हो। प्रायः भू–स्वामी तथा किराएदार के बीच सम्बन्ध औपचारिक अथवा मौखिक शर्तों पर आधारित हो सकते हैं।

Lateral integration (लेटरल इंटीग्रेशन) **क्षैतिज एकीकरण**

एक ही उत्पाद का निर्माण करने वाली दो या अधिक फर्मों का विलय। इस विलय के फलस्वरूप वृहत् स्तर पर उत्पादन करके पैमाने की बचतें प्राप्त की जा सकती हैं। (देखें horizontal integration)

Latin American Free Trade Association (LAFTA)
(लेटिन अमेरिकन फ्री ट्रेड एसोसिएशन)
लेटिन अमरीकी मुक्त व्यापार संगठन

1960 में इस संगठन को प्रारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य लेटिन अमरीकी देशों के बीच एक स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र बनाना था। इनमें अर्जेंटीना, ब्राजील, पीरू, चिली, मैक्सिको, पैराग्वे तथ यूरेग्वे सदस्य देश थे। इनके अलावा कोलम्बिया, इक्वेडोर तथ वेनेजुएला ने आगे चलकर इस संगठन की सदस्यता प्राप्त की।

1995 में एक अन्य व्यापार ब्लॉक गठित किया गया जिसे "मर्कोसुर" नाम देकर लेटिन अमरीकी देशों का साझा बाज़ार बनाया गया जिसके अनुसार सदस्य देशों के परस्पर व्यापार में कोई आयात कर या मात्रात्मक प्रतिबन्ध नहीं रखा गया है, परन्तु गैर-सदस्य देशों से आयातित वस्तुओं पर कर लगाए जाते हैं। मैक्सिको ने इस नए संगठन को छोड़कर उत्तरी अमरीकी मुक्त व्यापार संगठन की सदस्यता ग्रहण कर ली है।

Law of diminishing returns; Law of diminishing marginal returns
(लॉ ऑफ डिमिनिशिंग रिटर्न्स; लॉ ऑफ डिमिनिशिंग मार्जिनल रिटर्न्स)
उत्पादन ह्रास नियम; सीमान्त उत्पादन ह्रास नियम

इस नियम के अनुसार यदि उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए एक

साधन की मात्रा में लगातार *वृद्धि की जाए तो एक सीमा के बाद अतिरिक्त उत्पादन में कमी होने लगती है।* अन्य शब्दों में, यदि परिवर्तनशील साधन की मात्रा लगातार बढ़ाई जाए तो एक सीमा के पश्चात् कुल उत्पादन में ह्रासमान गति से वृद्धि होने लगती है। संस्थापक अर्थशास्त्रियों (डेविड रिकार्डो, जॉन स्टुअर्ट मिल आदि) ने कहा कि उत्पादन ह्रास नियम एक शाश्वत तथा सार्वभौमिक नियम है, तथा परिवर्तनशील साधन की गुणवत्ता तथा उत्पादन तकनीक के यथावत् रहते हुए उत्पादनमें वृद्धि का क्रम शिथिल होता ही है। रिकार्डो ने तो यहां तक कहा कि यदि श्रम पर यह नियम लागू न हो, अपितु उत्पादन में वर्द्धमान गति से वृद्धि होती जाए, तो *एक गमले में इतना अन्न पैदा किया जा सकता है जो किसी बड़े देश के लिए पर्याप्त हो।*

Law of large numbers
(लॉ ऑफ लार्ज नम्बर्स) **बड़े समूहों के समरूपी व्यवहार का नियम**
इस नियम के अनुसार यदि छोटे समूहों या दो चार व्यक्तियों की अपेक्षा बड़े समूहों का व्यवहार देखा जाए तो उसमें अधिक एवं विश्वसनीयता तथा समरूपता दिखाई देगी, तथा इनके निष्कर्ष स्वाभाविक तौर पर *अधिक त्रुटि रहित* होंगे।

Law of one price (लॉ ऑफ वन प्राइस) **एक ही कीमत का नियम**
यदि एक ही वस्तु को अनेक बाज़ारों में बेचा जा रहा हो तो अन्ततः सभी बाज़ारों में एक ही कीमत स्थापित हो जाएगी। जिस बाज़ार में कीमत कम है, व्यापारी लोग वहां से वस्तु खरीद कर ऊँची कीमत वाले बाज़ार में पहुँचा देंगे। परन्तु इसके लिए यह आवश्यक है कि वस्तु के हस्तांतरण पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न हो।

Law of variable proportions
(लॉ ऑफ वेरिएबल प्रोपोर्शन्स) **परिवर्तनशील अनुपातों का नियम**
इस नियम के अनुसार यदि अन्य साधनों को यथावत् रखते हुए केवल एक साधन की मात्रा को बढ़ाया जाए तो एक सीमा तक उत्पादन बढ़ती हुई दर से बढ़ता है (उत्पादन वर्द्धमान नियम) फिर घटती हुई दर पर बढ़ता है (उत्पादन ह्रास नियम) एवं अधिकतम स्तर तक पहुँचने के बाद उत्पादन में गिरावट प्रारम्भ हो जाती है।

Lay off (ले ऑफ) **मज़दूरों की छंटनी**
किसी फर्म द्वारा अतिरिक्त श्रमिकों को काम से हटाना। इस प्रकार की छंटनी अल्पकाल हेतु हो सकती है, अथवा सदा के लिए भी की जा सकती है।

Less developed countries (LDCs)
(लैस डेवलप्ड कंट्रीज) **अल्प विकसित देश**
वे देश, जिनके विकास का स्तर काफी नीचा हो, तथा आय के निम्न स्तर के कारण जीवन स्तर भी काफी नीचा हो। आय के निम्न स्तर के कारण निवेश की दर भी काफी कम रहती है। इन देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषाहार तथा संरचनात्मक ढाँचा (सड़क, विद्युत्, संचार व्यवस्था, बैंकिंग व बीमा सुविधाएँ) की दृष्टि से भी काफी पिछड़ापन बना रहता है। निम्न आय, निम्न बचत, निम्न निवेश आदि के फलस्वरूप

एक अल्पविकसित देश निरन्तर एक कुचक्र में फंसा रहता है। इस कुचक्र को तभी तोड़ा जा सकता है जब व्यापक स्तर पर सरकार या विदेशी संस्थाएँ पूँजी का निवेश करके विकास की गति को बढ़ाने में योगदान दें।

Leads and lags(लीड्स एन्ड लैग्स)

प्रमुख संकेतों से सम्बद्ध उच्चतम एवं न्यूनतम स्थितियों के बीच के अन्तराल उदाहरण के लिए, यदि एक सात वर्षीय व्यापार चक्र के अंतर्गत बीच के वर्ष (चौथे वर्ष) में उच्चतम स्थिति प्राप्त होती है तो यह विगत तीन वर्षों में अन्य किसी घटक (उदाहरण के लिए नए भवनों का निर्माण) की परिणति हो सकती है। इसी प्रकार उच्चतम स्थिति के फलस्वरूप अगले तीन वर्षों में किसी सम्बद्ध घटक में परिवर्तन होंगे। इस प्रकार उच्चतम स्थिति के पूर्व तथा पश्चात् की अवधि तीन तीन वर्षों की होगी।

इसका एक अन्य अर्थ यह भी है कि विदेशी व्यापार से सम्बद्ध कर्ज़ों को सामान्य अवधि से कितना पहले या बाद में चुकाया जाता है। यदि व्यापारियों को यह अपेक्षा है कि देश की मुद्रा का अवमूल्यन होने वाला है तो वे आयात हेतु तुरन्त आदेश देना चाहेंगे ताकि अवमूल्यन के बाद स्वदेशी मुद्रा के रूप में अधिक कीमत न देनी पड़े। इसके विपरीत जो निर्यात करते हैं अथवा जिनके खाते में विदेशी मुद्रा पड़ी है वे विलम्ब से मुद्रा का रूपान्तरण करना चाहेंगे।

Leakages (लीकजेज़) **क्षरण; रिसाव**

कुल आय के वर्तुल प्रवाह का एक भाग जिसके प्रयोग से आय का आगे सृजन नहीं होगा। इनमें व्यक्तियों अथवा औद्योगिक/व्यापारिक संस्थानों द्वारा की गई बचतें, सरकार को चुकाए गए कर तथा विदेशी संस्थानों से किए गए आयात शामिल हैं। यदि इस प्रकार के रिसाव की कुल राशि निर्यातों या अपसंचय (पुरानी बचतों को बाहर निकालना) से अधिक है तो धीरे-धीरे राष्ट्रीय आय में कमी होने लगेगी।

Learning curve (लर्निंग कर्व) **अनुभव आधारित दक्षता वक्र**

प्रायः प्रबन्धक अनुभव के आधार पर नई प्रौद्योगिक को अधिक प्रभावी ढंग से लागू कर सकते हैं जिससे प्रति इकाई उत्पादन की लागत में कमी होने लगती है। (देखिए experience curve या अनुभव वक्र)।

Lease (लीज़)

एक अनुबन्ध, जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति या संस्थान को निर्दिष्ट अवधि के लिए भूमि अथवा भवन का उपयोग करने का अधिकार मिल जाता है। उपयोग कर्ता इसके बदले भूमि अथवा भवन के स्वामी को नियमित रूप से निर्दिष्ट राशि का किराए के रूप में भुगतान करता है। यह किराया अनुबन्ध के अनुसार समय-समय पर बढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार किराएदार को इस सम्पत्ति के रख रखाव एवं सुरक्षा का आंशिक या पूर्ण दायित्व सौंपा जा सकता है।

Leaseback (लीज़ बैक) **लीज़ की वापसी**

ऐसी व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत किसी सम्पत्ति का स्वामी किसी अन्य व्यक्ति को इसे उस शर्त पर बेचने का सौदा करता है कि इसके मूल स्वामी को ही यह सम्पत्ति एक निर्दिष्ट अवधि के लिए लीज़ पर दे दी जाएगी तथा उसके बदले वह तयशुदा किराया नए स्वामी को चुकाएगा।

Leasehold (लीज़ होल्ड) **लीज़ का प्रारूप**

लीज की शर्तों का विवरण देने वाला एक औपचारिक दस्तावेज़।

Leasing(लीजिंग)

मशीनों, उपकरणों, वाहनों आदि को लीज़ या किराए पर लेना

इन सभी को क्रय करने की अपेक्षा इन्हें निर्दिष्ट अवधि तथा निर्दिष्ट किराए पर लेना। किसी भी शर्त की अनुपालना न होने पर इसके मालिक को यह अधिकार है कि उस वाहन या मशीन को अपने कब्जे में ले ले। अधिकांश देशों में नई फर्मों को इस प्रकार के किराए पर आयकर में राहत दी जाती है।

Least cost combination of inputs (लीस्ट कॉस्ट कॉम्बीनेशन ऑफ इनपुट्स)

साधनों का न्यूनतम लागत वाला संयोग

यदि दो या अधिक साधनों के द्वारा निर्दिष्ट मात्रा में किसी वस्तु का उत्पादन करना हो तो जहां इन साधनों की मात्राओं से न्यूनतम लागत पर उत्पादन की वह मात्रा प्राप्त होती है वही न्यूनतम लागत वाला संयोग कहलाता है। इसके लिए प्रायः निम्न सूत्र दिया जाता है :

$$\frac{P_1}{P_2} = \frac{MP_1}{MP_2}$$

अर्थात् जिस स्तर पर दोनों साधनों की कीमतों का अनुपात इनकी सीमान्त उत्पादकता के अनुपात के समान हो, वही दोनों साधनों का इष्टतम या न्यूनतम लागत वाला संयोग होगा।
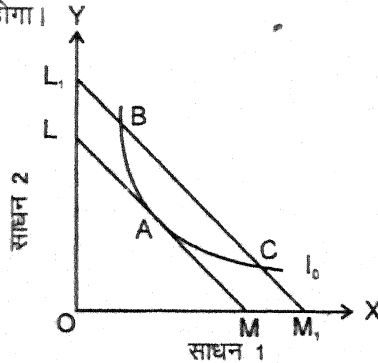
चित्र में दो सम लागत रेखाएँ (LM तथा L_1M_1) प्रस्तुत की गई हैं जिनमें L_1M_1

उत्पादन की ऊँची लागत की प्रतीक है। इनमें से प्रत्येक समलागत रेखा का ढलान साधनों की कीमतों का अनुपात है $\left(\frac{P_1}{P_2}\right)$। इसी चित्र में एक समोत्पाद वक्र I_0 है जिसके प्रत्येक बिन्दु पर 50 इकाइयों का उत्पादन दोनों साधनों के भिन्न–भिन्न संयोगों द्वारा किया जा सकता है।

यह स्पष्ट है कि ऊपर वर्णित इष्टतम की शर्त A बिन्दु पर ही पूरी होती है। यह भी स्पष्ट है कि *उतने ही उत्पादन के लिए* यदि बिन्दु B या C के अनुरूप साधनों का प्रयोग किया जाए तो उत्पादन लागत अधिक होगी।

Least cost supply (लीस्ट कॉस्ट सप्लाई)

न्यूनतम लागत वाला साधनों का संयोग

अधिकतम लाभ प्राप्ति हेतु एक फर्म सदैव साधनों के उस संयोग को उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त करेगी जहां कुल उत्पादन लागत न्यूनतम हो।

Least developed countries (LDCs) (लीस्ट डेवलप्ड कंट्रीज)

सबसे पिछड़े देश

1971 में अंक्टाड द्वारा उन देशों को सबसे पिछड़े हुए देश माना गया जहां प्रति व्यक्ति आय (1968 की कीमतों पर) 100 डालर प्रतिवर्ष से भी कम थी। इसके अतिरिक्त यह भी कहा गया कि औद्योगिक उत्पादन का राष्ट्रीय आय में अनुपात 10 प्रतिशत से कम होना, तथा साक्षरता की दर 20 प्रतिशत से कम होना भी इन देशों के लक्षण माने गए। 1990 में ऐसे देशों की संख्या 40 के लगभग थी, तथा इनमें विश्व की जनसंख्या का 10 प्रतिशत भाग अनुमानित किया गया था।

Legal tender (लीगल टेंडर) **वैधानिक मुद्रा**

किसी देश की मुद्रा का वह अंश जिसे वस्तु अथवा सेवा के लिए अथवा ऋणों की अदायगी हेतु भुगतान करने पर विक्रेता अनिवार्य रूप से स्वीकार करता है। इसमें चैक या हुंडी शामिल नहीं किए जाते। वैधानिक मुद्रा को सरकार तथा केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित किया जाता है।

Leisure (लैज़र) **विश्राम**

वह समय जिसे कोई व्यक्ति (श्रमिक, कर्मचारी या अधिकारी) प्रमोद के लिए व्यतीत करता है। इस अवधि में वह कोई कार्य नहीं करता। इस अवधि में सांस्कृतिक गतिविधियों, खेलकूद, साहित्य सृजन या मनोरंजन सम्बन्धी क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है।

प्रायः ऐसा माना जाता है कि कार्य के घंटों के बीच विश्राम के क्षण निकालने पर व्यक्ति की कार्य करने की प्रवृत्ति बनी रहती है। विश्राम न मिलने पर श्रमिक का जीवन नीरस हो जाता है, तथा उसकी दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

Lender (लेंडर) **ऋणदाता**

एक व्यक्ति, संस्था या संगठन जो किसी भी व्यक्ति या संगठन को उपभोग अथवा निवेश हेतु उधार देता है। यह उधार किसी जमानत के आधार पर अथवा बिना जमानत के भी, दिया जाता है। प्रायः ऋणदाता इस पर ब्याज़ लेता है।

Lender of the last resort (लेंडर ऑफ दी लास्ट रिज़ोर्ट) **अन्तिम ऋणदाता**

केन्द्रीय बैंक का एक मुख्य कार्य यह भी है कि वह व्यापारिक बैंकों को आवश्यकता के अनुसार प्रतिभूतियों को गिरवी रखकर ऋण उपलब्ध कराएँ। इससे इन बैंकों के समक्ष विद्यमान तरलता के संकट को दूर किया जा सकता है। परन्तु प्रायः यह सुविधा केवल ठोस वित्तीय स्थिति वाले बैंकों के लिए ही उपलब्ध कराई जाती है।

Leontief Paradox (लियोंतीफ पैराडोक्स) **लियोंतीफ विरोधाभास**

प्रायः विदेशी व्यापार से सम्बद्ध सिद्धान्तों के अर्न्तगत यह मान्यता ली जाती है कि जिस देश में श्रम बाहुल्य तकनीक का प्रयोग होता है वहां से श्रम प्रधान वस्तुओं का, तथा जहाँ पूँजी का बाहुल्य है वहां से पूँजी प्रधान वस्तुओं का, निर्यात किया जाता है। परन्तु अमरीकी अर्थशास्त्री वासिली लियोंतीफ ने आयात–निर्यात सम्बन्धी आंकड़ों का विश्लेषण करके यह निष्कर्ष दिया कि अमरीका से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में अधिकांश श्रम–प्रधान तकनीक के आधार पर उत्पादित की जाती हैं। इसके विपरीत आयातों में अपेक्षाकृत कम श्रम वाली तकनीक पर आधारित वस्तुएँ होती हैं।

ये निष्कर्ष हैक्शर–ओहलिन के इस सिद्धान्त से भिन्न हैं कि अमरीका में पूँजी का बाहुल्य होने के कारण वहां के निर्यात पूँजी–गहन तकनीक पर आधारित होने चाहिए। यही कारण है कि वासिली लियोंतीफ के निष्कर्षों को एक विरोधाभास माना गया। लियोंतीफ के मतानुसार प्राकृतिक संपदा तथा श्रम की दक्षता के हिसाब से अमरीका विश्व में शीर्ष स्थान पर है और इसीलिए वहां के व्यापार में इस प्रकार का विरोधाभास उत्पन्न हो सकता है।

Less developed countries (LDCs)

(लैस डेवलप्ड कन्ट्रीज) **अल्पविकसित देश**

विकासशील देश, जहां आय की संवृद्धि दरें, बचत व निवेश की दरें तथा संरचनात्मक विकास का स्तर काफी नीचा रहता है। प्रति व्यक्ति आय कम होने से जीवन स्तर भी नीचा बना रहता है। निवेश का स्तर कम होने के कारण बेरोज़गारी तथा निर्धनता भी व्याप्त रहती है।

Leverage (लीवरेज) **निरोघात्मक क्षमता**

किसी कम्पनी की देनदारी (ऋण) तथा शेयरपूँजी का अनुपात। जो कम्पनी ऋणों पर अधिक आश्रित रहती है, उसकी शुद्ध आय (लाभ) का उतना ही बड़ा भाग ब्याज़ तथा किश्तों के भुगतान पर खर्च हो जाता है तथा अंशधारियों को लाभांश निलना उतना ही अनिश्चित रहता है।

Lewis, Sir W. Arthur (born 1915) (सर डब्लू आर्थर लेविस)

वेस्ट इन्डीज़ में जन्मे एक अर्थशास्त्री जो बाद में अमरीका में बस गए
उन्होंने 1955 में एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक "दी थ्योरी ऑफ इकोनोमिक ग्रोथ" लिखी। प्रोफेसर लेविस ने बताया कि आर्थिक विकास के फलस्वरूप जहां एक ओर विकासशील देशों के लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है, वहीं तीव्र गति से विकास होने पर इन देशों में विद्यमान *सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास भी हो जाता है।* लेविस ने कहा कि इन देशों में *सामाजिक संरचना* जैसे सड़क, दूरसंचार आदि के विकास पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

लेविस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान विकासशील देशों में व्याप्त अतिरिक्त श्रम को कृषि से हटाकर उद्योगों में प्रयुक्त करने से सम्बद्ध है। उन्होंने कहा कि कृषि में अत्यधिक श्रम लगे होने पर फालतू श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता शून्य या इसके आसपास रहती है। यदि इन्हें ऊँची सीमान्त उत्पादकता वाले क्षेत्र, यानी उद्योगों में प्रयुक्त कर दिया जाए तो इससे जो बचत होगी उसे आर्थिक विकास हेतु नितेश किया जा सकता है।

Liabilities (लाइबिलिटीज़) **देनदारियां**

किसी फर्म, बैंकों या संस्थानों के तलपट में उद्धृत वह राशि जो अन्य संस्थाओं को चुकाई जानी है। इनमें सरकार को चुकाए जाने वाले करों की राशि भी शामिल है। प्रायः किसी अन्य फर्म द्वारा लिए गए ऋण की गारंटी देने पर वह राशि भी "सम्भावित" देनदारी के रूप में उद्धृत की जाती है।

Liability (लाइबिलिटी) **दायित्व या देनदारी**

किसी व्यक्ति या संस्थाक का दायित्व। किसी साझेदारी फर्म या व्यक्तिगत संस्थान में व्यक्ति का दायित्व **असीमित** होता है तथा फर्म का दीवाला निकलने पर उसकी निजी सम्पत्ति पर भी लेनदारों का अधिकार हो जाता है।

इसके विपरीत एक संयुक्त कम्पनी में अंशधारी या शेयर होल्डर का दायित्व शेयर की बकाया राशि तक ही सीमित रहता है।

Liberalization (लिबरलाइजेशन) **उदारीकरण**

मुक्त बाज़ार की दिशा में अर्थव्यवस्था को ले जाने वाली नीति। इसके अन्तर्गत आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बद्ध नियंत्रणों (आयात कर तथा मात्रात्मक प्रतिबन्ध) को कम करना, मुद्रा को परिवर्तनशील बनाना, विदेशी पूँजी के देश में निवेश को प्रोत्साहन देना तथा देश के उद्योगों को यथासम्भव बन्धन मुक्त करने की नीतियां निहित होती हैं। परन्तु उदारीकरण का यह अर्थ नहीं है कि अर्थव्यवस्था के प्रबन्धन में सरकार की भूमिका को पूर्णतया समाप्त कर दिया जाए।

Liberal trade policy (लिबरल ट्रेड पॉलिसी) **उदार व्यापार नीति**

ऐसी व्यापार नीति, जिसके अन्तर्गत देश के लोगों को न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप के

अन्तर्गत आयात व निर्यात करने की छूट रहती है। इसमें आयात करों में कमी, आयात पर विद्यमान मात्रात्मक प्रतिबन्धों की समाप्ति, नियमों में कठोरता की समाप्ति, तथा विनिमय दरों में समरूपता की स्थापना, आदि शामिल हैं। इनके अतिरिक्त विनिमय नियंत्रण को समाप्त करके अवमूल्यन आदि उपायों से भुगतान शेष को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है।

LIBOR–London Inter Bank Offered Rate (लन्दन इन्टर बैंक ऑफर्ड रेट) **लंदन में बैंकों की पारस्परिक ब्याज़ दर**

डॉलर तथा अन्य मुद्राओं की जमाओं से सम्बद्ध ब्याज़ दर, जिस पर बड़े बैंक ऋण लेने को तत्पर हैं, तथा फिर इन मुद्राओं को यूरो करेन्सी बाज़ार में उधार देते हैं। यह ब्याज़ दर बाज़ार की दशाओं को दर्शाती है तथा विदेशी मुद्रा के क्रेताओं की सुविधा हेतु व्यापक रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।

Licence (लाइसैंस) **लाइसैंस; अनुज्ञा पत्र**

किसी संस्थान या सरकार द्वारा किसी भी व्यक्ति अथवा फर्म को निर्दिष्ट वस्तु का उत्पादन, विक्रय, आयात या निर्यात करने की अनुमति। यह एक ऐसा दस्तावेज है जिसकी वैधता प्रायः इसमें वर्णित तिथि एवं भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित रहती है।

Life cycle (लाइफ साइकल) **आय तथा उपभोग की अवधि का पैटर्न**

यह मान्यता कि बच्चे अपने माता–पिता पर आश्रित रहते हैं, वयस्क होने पर प्रारम्भ में उनकी आय कम रहती है, फिर आय बढ़ती जाती है, तथा एक उम्र के बाद उसमें कमी होने लगती है। सेवानिवृत्ति के बाद यह आय बहुत कम रह जाती है। परन्तु दूसरी ओर बचपन तथा किशोरवस्था में उपभोग का स्तर ऊँचा रहता है और इस प्रकार पारिवारिक बचत का स्तर उस समय काफी कम रहता है। वयस्क होने पर भी कुछ वर्षों तक बचत का स्तर कम रहता है, जो बाद में बढ़ता है। परन्तु व्यक्ति के सेवानिवृत्त होने पर प्रायः बचतें ऋणात्मक हो जाती हैं।

Life cycle hypothesis (लाइफ साइकल हायपोथिसिस) **जीवन काल सम्बन्धी उपभोग की परिकल्पना**

इस परिकल्पना के अनुसार वर्तमान उपभोग केवल वर्तमान प्रयोज्य आय के स्तर पर निर्भर नहीं करता, अपितु यह किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन काल में प्राप्त होने वाली (अपेक्षित) आय पर निर्भर करता है। एक युवा कर्मचारी की आय का स्तर कम होने पर भी वह इस प्रत्याशा के साथ मकान, कार या ऊँची कीमत वाली वस्तुएँ ख़रीद लेता है कि उसे आगे चल कर अधिक आय की प्राप्ति होगी। वह इसके लिए ऋण लेने में भी संकोच नहीं करता। इसके विपरीत ढलती उम्र में व्यक्ति महँगी वस्तुओं को ख़रीदने हेतु उधार नहीं लेना चाहेगा क्योंकि उसे भविष्य में बहुत कम आय प्राप्त होने की आशा है।

Limited liability (लिमिटेड लाइबिलिटी) **सीमित दायित्व**

(देखिए Liability)

Limit pricing (लिमिट प्राइसिंग) **सीमा कीमत की नीति**

जो. एस. बेन, साइलोस लेविनी, फ्रांको मॉडिग्लियानी आदि अर्थशास्त्रियों ने गत कुछ दशकों में बतलाया है कि यदि बाज़ार में थोड़े से विक्रेता हों, (अल्पाधिकार) तो वे मिल जुल कर एक ऐसी कीमत निश्चित कर देते हैं जो अधिकतम स्तर पर है। यदि वस्तु की कीमत इससे अधिक हो जाए तो अन्य विक्रेता बाज़ार में प्रवेश कर जाएँगे। अन्य शब्दों में, जब तक कीमत *इस सीमा–कीमत पर या इससे कम है,* नए विक्रेताओं के प्रवेश का डर नही रहता।

प्रायः यह सीमा–कीमत उस कीमत से कम होती है जो सभी विद्यमान फर्मों के गठबन्धन से उत्पन्न एकाधिकारिक कीमत के रूप में होगी।
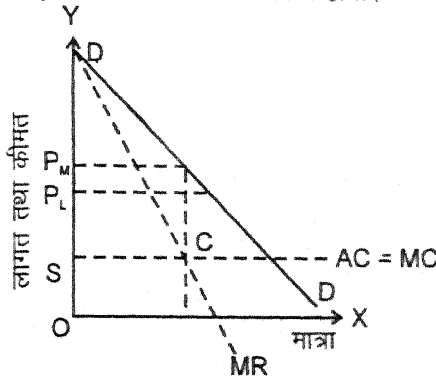
उपरोक्त चित्र में संयुक्त औसत व सीमांत लागत वक्रों (AC=MC) सीमान्त आगम वक्र C बिन्दु पर काटता है अतः गठबन्धन की (एकाधिकारिक) कीमत OP_M हो सकती है। परन्तु यदि अनुभव व दूर दर्शिता के आधार पर विद्यमान फर्में OP_L को सीमा कीमत के रूप में निर्धारित कर दें, तो जब तक वास्तविक कीमत OP_L या इससे कम रहेगी, बाहरी फर्मों का प्रवेश नहीं होगा। परन्तु यदि कीमत OP_L से अधिक हो जाए तो नई फर्मों के प्रवेश को रोकना सम्भव नहीं होगा। अन्य शब्दों में, OP_L एक सीमा–कीमत का स्तर है।

Linear approximation (लीनियर एप्रोक्सिमेशन) **रैखिक सम्भावना**

आर्थिक मॉडलों में प्रयुक्त एक सीधी रेखा, जो वस्तुतः एक अ–रैखिक फलन का प्रस्तुतीकरण है। प्रायः वास्तविक मूल्य तथा रैखिक मूल्य के बीच के अन्तर को न्यूनतम रखने का प्रयास किया जाता है।

Linear equation (लीनियर ईक्वेशन) **रैखिक समीकरण**

इस समीकरण में स्वतंत्र चरों तथा आश्रित चर के बीच रैखिक अथवा सीधा सम्बन्ध

होता है। उदाहरण के लिए $aX + bY + c = R$ के अन्तर्गत आश्रित चर यानी R तथा X एवं Y जैसे स्वतंत्र चरों की बीच रैखिक सम्बन्ध माना जाएगा, परन्तु यदि इस समीकरण को अरैखिक ($aX^2 + by + c = R$) के रूप में रख दिया जाए तो X में परिवर्तन होने पर R का परिवर्तन समानुपाती नहीं होगा।

Linear programming (लीनियर प्रोग्रामिंग) **रैखिक प्रोग्रामिंग**

दी हुई रैखिक सीमाओं के अन्तर्गत किसी रैखिक उद्देश्य फलन के अधिकतम (उत्पादन या आय) अथवा न्यूनतम (लागत) मूल्य ज्ञात करना। इस गणितीय तकनीक की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें सभी चरों के पारस्परिक सम्बन्धों में रैखिकता होती है। उदाहरण के लिए, आदाओं (इनपुट्स) तथा उत्पादन के बीच जो वस्तुओं के परस्पर रूपान्तरण के लिए, दो साधनों के मध्य स्थानापन्नता के लिए आदि सभी में रैखिकता विद्यमान रहती है।
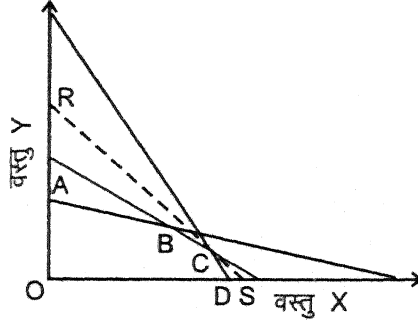
उपरोक्त चित्र में तीन साधनों की सीमा रेखाएँ प्रस्तुत की गई हैं जिनके अनुरूप एक सम्भाव्य क्षेत्र ABCD निरूपित किया गया है। X तथा Y दोनों वस्तुओं का उत्पादन ABCD पर ही कहीं पर किया जाना है। किस बिन्दु पर इन साधन सीमाओं के आधार पर निरूपित सम्भाव्य क्षेत्र का इष्टतम स्तर उपलब्ध होगा यह दोनों वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर होगा। यहां कीमत रेखा RS है जो संभाव्य क्षेत्र के C बिन्दु पर स्पर्श करती है। रैखिक प्रोग्रामिंग तकनीक के आधार पर इसी बिन्दु पर फर्म को अधिकतम आय प्राप्त होगा।

Linear regression (लीनियर रिग्रेशन) **रैखिक प्रतीपगमन**

ऐसी सांख्यिकीय तकनीक, जिसके द्वारा अन्य (स्वतंत्र) चरों में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप किसी आश्रित चर में होने वाले परिवर्तन को मापा जाता है इसका समीकरण निम्न प्रकार हो सकता है :

$$Y = a_0 + b_1 X_1 + b_2 X_2 - b_3 X_3$$

इस प्रतीपगमन मॉडल में X_1, X_2, X_3 आदि स्वतंत्र चर हैं जबकि Y एक आश्रित चर है। b_1, b_2 एवं b_3 प्रतीपगमन गुणांक हैं जिनमें प्रत्येक द्वारा संबद्ध स्वतंत्र चर में

परिवर्तन होने पर Y में होने वाले परिवर्तन का गुणांक है। इसे रैखिक प्रतीपगमन इसलिए कहा जाता है कि b_1, b_2, b_3 आदि गुणाकों का मूल्य स्थिर रहता है।

Linearly homogeneous production function
(लीनियरली होमोजीनस प्रोडक्शन फंक्शन) **रैखिक समरूपी उत्पादन फलन**
इस प्रकार के उत्पादन फलन में यह मान्यता निहित रहती है कि जिस अनुपात में उत्पादन के साधन (जैसे श्रम, पूँजी आदि) बढ़ते हैं उसी अनुपात में उत्पादन में भी वृद्धि होती है। (देखिये constatn returns to scale या पैमाने के समतामान प्रतिफल, अथवा Cobb Douglas Production Function)। उदाहरण के लिए

$$Q = AL^{.6}K^{.4}$$

इस उत्पादन फलन में L यानि श्रम अथवा K यानी पूँजी एवं वस्तु के उत्पादन (Q) के बीच रैखिक सम्बन्ध है। यदि A को एक स्थिर प्राचल मान लिया जाए तथा श्रम व पूँजी को दोगुना कर दिया जाए तो उत्पादन भी दो गुना हो जाएगा। यहां श्रम की उत्पादन लोच (.6) एवं पूँजी की उत्पादन लोच (.4) का योग 1.0 के समान है जो भी रैखिक समरूपी उत्पादन फलन का एक महत्वपूर्ण लक्षण है।

Liquid assets (लिक्विड एसेट्स) **तरल सम्पत्तियां**
ऐसी मौद्रिक सम्पत्ति (मुद्रा) जिसे सीधे ही भुगतान हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है।

Liquidation (लिक्विडेशन) **दिवालिया होना, समापन**
ऐसी प्रक्रिया जिसके माध्यम से किसी संयुक्त कम्पनी का एक स्वतंत्र वैधानिक इकाई के रूप में अस्तित्व समाप्त हो जाता है। इसके लिए कम्पनी के लेनदारों द्वारा पहल की जाती है, अथवा कम्पनी के संचालक ही इसकी खराब वित्तीय स्थिति को देखते हुए इसके समापन हेतु निर्णय कर लेते हैं।
जब कम्पनी को दिवालिया घोषित कर दिया जाता है तो अदालत किसी व्यक्ति को अवसायक या लिक्विडेटर के रूप में नियुक्त कर देती है। यह कार्य कम्पनी के संचालक मंडल या शेयर होल्डर्स द्वारा भी किया जा सकता है। अवसायक कम्पनी की सम्पत्तियों को बेचकर इसके लेनदारों को समूचे अथवा आनुपातिक रूप में भुगतान कर देता है।

Liquidity (लिक्विडिटी) **तरलता**
किसी सम्पत्ति की तरल या मुद्रा के रूप में परिवर्तनीयता का गुण। भूमि या भवन, मशीनों आदि में यह गुण अपेक्षाकृत बहुत कम होता है जबकि विदेशी मुद्रा, बैंक जमाओं आदि में अत्यधिक तरलता पाई जाती है।

Liquidity constraint (लिक्विडिटी कांस्ट्रेंट) **तरलता की कठिनाई**
किसी व्यक्ति अथवा फर्म को वांछित ऋण की प्राप्ति न होना। प्रायः व्यक्ति भविष्य में अधिक आय प्राप्त होने की आशा करते हुए वर्तमान में अधिक व्यय कर देता हैं। इसी प्रकार कोई फर्म भविष्य में अधिक लाभ की आशा में आज भारी राशि निवेश कर सकती है। दोनों ही स्थितियों में ऋण लेकर तरलता की कमी को पूरा किया

जाता है, तथा विद्यमान सम्पत्ति को जमानत के रूप में प्रयुक्त करके, अथवा अपनी प्रतिष्ठा (साख) के आधार पर व्यक्ति या फर्म ऋण लेने में सफल हो जाती हैं। परन्तु दीर्घकाल में कभी-कभी साख न होने अथवा जमानत के रूप में सम्पत्ति न होने पर ऋण प्राप्त नहीं हो पाता, विशेष रूप से जब बड़ी मात्रा में ऋण लेना हो। इसी को तरलता से सम्बद्ध कठिनाई कहा जाता है।

Liquidity preference (लिक्विडिटी प्रिफरेन्स) **तरलता की चाह; प्राथमिकता**

कीन्स ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि तरलता या मुद्रा की चाह तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होती है : (1) आवश्यकताओं की पूर्ति, या सौदों के निपटारे हेतु, (2) आड़े वक्त या संकट का सामना करने हेतु तथा (3) सट्टा करने हेतु।

Liquidity ratio (लिक्विडिटी रेशियो) **तरलता अनुपात**

वित्तीय संस्थाओं-विशेष रूप से बैंकों की कुल देनदारियों में तरल सम्पत्ति का अनुपात। प्रायः केन्द्रीय बैंक अथवा कानून द्वारा तरलता का एक न्यूनतम अनुपात निर्धारित किया जाता है।

Liquidity trap (लिक्विडिटी ट्रेप) **तरलता जाल**

बहुधा यह मान्यता ली जाती है कि मौद्रिक अधिकारियों (केन्द्रीय बैंकों) द्वारा मुद्रा की पूर्ति बढ़ाने पर ब्याज़ की दर में कमी होती है। परन्तु कीन्स ने कहा कि यदि ब्याज़ की दर काफी नीची है, तो मुद्रा की पूर्ति में कितनी ही वृद्धि कर दी जाए तब भी ब्याज की दर में कमी नहीं हो पाएगी। ऐसी दशा में लोग अतिरिक्त मुद्रा का निवेश करने की अपेक्षा इसे अपने पास ही रखना चाहेंगे। कीन्स के मतानुसार यह तरलता जाल है।
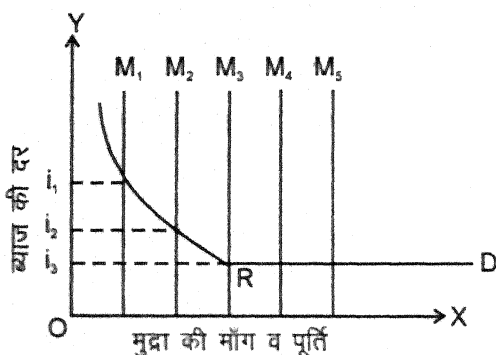
प्रस्तुत चित्र में मुद्रा की माँग का वक्र D तथा पूर्ति वक्र क्रमशः M_1, M_2, M_3, M_4 तथा M_5 के रूप में दिए गए हैं। जब पूर्ति में वृद्धि होती है तो M_3 आने तक ब्याज़ की दर में कमी होती है। इसके बाद यदि मुद्रा की पूर्ति M_4 तथा M_5 हो जाए तब

भी ब्याज़ की दर i_3 ही बनी रहेगी। मुद्रा के माँग वक्र का क्षैतिज भाग RD वस्तुतः तरलता जाल है। जिसमें मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होने पर भी ब्याज़ की दर यथावत् रहती है, तथा अतिरिक्त मुद्रा को लोग अपने पास ही रख लेते हैं– इसका प्रतिभूतियों में निवेश नहीं करते।

Listing (लिस्टिंग) **सूचीबद्धता**

एक स्टॉक एक्सचेंज द्वारा किसी कम्पनी को सूचीबद्ध करके इसके शेयरों को बेचने, या इनकी ख़रीद हेतु अनुमति देना। यह अनुमति तभी दी जाती है जब स्टॉक एक्सचेंज द्वारा निर्धारित शर्तों को वह कम्पनी पूरी करती है। सूचीबद्ध न होने पर कम्पनी के शेयरों को ख़रीदना या बेचना वैधानिक नहीं होगा।

List price (लिस्ट प्राइस) **प्रकाशित कीमत; प्रकाशित मूल्य**

किसी वस्तु या सेवा के लिए उद्धृत कीमत जो जनसाधारण के लिए सूची में या बोर्ड पर लिखी गई है। प्रायः उत्पादक द्वारा उपभोक्ताओं से प्रकाशित कीमत से कम कीमत वसूल की जाती है।

LM curve (एल एम कर्व) **तरलता-मुद्रा वक्र**

समष्टि अर्थशास्त्र में प्रयुक्त वह वक्र जिसके आधार पर मुद्रा बाज़ार में साम्य की स्थितियां दर्शायी जाती हैं। इस वक्र के द्वारा राष्ट्रीय आय तथा ब्याज की दरों के संयोगों की वह स्थिति प्रस्तुत की जाती है जिसमें मौद्रिक अर्थव्यवस्था का संतुलन हो।
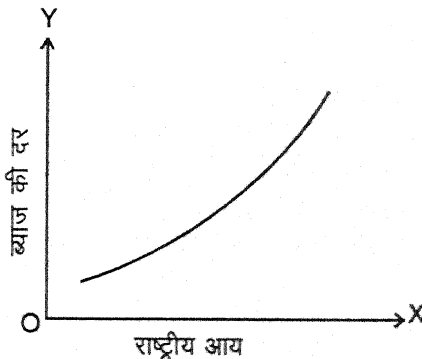
ऊपर प्रस्तुत चित्र एल–एम वक्र का है। यह बतलाता है कि मुद्रा की माँग में राष्ट्रीय आय के साथ–साथ वृद्धि या कमी होती है। इसमें यह मान्यता निहित है कि मुद्रा की पूर्ति बाह्य रूप में दी हुई (स्थिर) है। (देखिए IS curve).

Loan (लोन) **ऋण**

मुद्रा, जिसे निर्दिष्ट अवधि के लिए इस शर्त पर प्राप्त किया गया है कि ब्याज़ सहित इसकी अदायगी की जाएगी। प्रत्येक ऋण या तो किसी सम्पत्ति की जमानत पर प्राप्त किया जाता है, या ऋण लेने वाले (या उसके किसी सम्बन्धी/परिचित) की

व्यक्तिगत गारंटी के आधार पर प्राप्त किया जाता है। ऋण की अदायगी निर्दिष्ट अवधि के पश्चात् न होने पर जमानत वाली सम्पत्ति को, या व्यक्तिगत जमानत की स्थिति में गारंटी देने वाले व्यक्ति की सम्पत्ति को, बेचकर ऋण व ब्याज़ की वसूली की जाती है। ऋण दो प्रकार के हैं : (अ) उदार शर्तों वाले ऋण, जिनकी अदायगी न होने की दशा में ऋण की शर्तों में छूट दी जा सकती है, तथा (ब) कठोर शर्तों वाले ऋण, जिनकी शर्तों में कोई ढील नहीं दी जाती।

Loanable fund (लोनेबल फंड) **उधार योग्य कोष**

कीन्स के आविर्भाव से पूर्व यह धारणा प्रचलित थी कि उधार योग्य कोष (बचतों तथा पुरानी बचतों का अपसंचय) की पूर्ति तथा निवेशकर्ताओं द्वारा निवेश पूँजी की माँग जिस बिन्दु पर समान है वही साम्य ब्याज़ का स्तर होगा। उधार योग्य कोष वस्तुतः ये कोष हैं, जो निवेशकर्त्ताओं को उपलब्ध हैं। ये कोष ब्याज़ की दर के साथ–साथ बढ़ते तथा इसी के साथ कम होते हैं। इसके विपरीत निवेश–पूँजी की माँग तथा ब्याज़ की दर में प्रतिकूल सम्बन्ध होता है।

Loan loss reserves (लोन लॉस रिज़र्व)

सम्भावित बट्टाखाते ऋणों हेतु रिज़र्व

वित्तीय संस्थाएँ कभी–कभी अपने कर्ज़दारों में से कुछ के द्वारा ऋण की अदायगी न होने की स्थिति (सम्भावित) का सामना करने के लिए ऋणों के एक अनुपात में रिज़र्व कोष बना लेते हैं।

Loan portfolio (लोन पोर्टफोलियो) **ऋण पोर्टफोलियो**

किसी वित्तीय संस्था द्वारा प्रदत्त ऋणों को सम्पत्ति के रूप में मानना। इसके दो कारण हो सकते हैं : प्रथम यह कि एक बड़ी संस्था किसी एक व्यक्ति या फर्म को ऋण नहीं देना चाहती, और द्वितीय अनेक फर्मों को ऋण देना *सुरक्षा की दृष्टि से* उत्तम रहता है। इसके फलस्वरूप यदि एक व्यक्ति या संस्था ऋण अदायगी न कर पाए, तो अन्य ऋणियों से सम्बद्ध पोर्टफोलियो से अर्जित लाभ से उसकी पूर्ण या आंशिक रूप से क्षतिपूर्ति की जा सकती है।

Lobbying (लोबीइंग) **राजनैतिक दबाव डालना**

कुछ विशिष्ट समूहों द्वारा सरकार पर दबाव डालकर नीतियों में इच्छित परिवर्तन करवाना, या अपने हितों के अनुरूप कार्यक्रम लागू करवाना। कृषकों द्वारा मंत्री पर दबाव बनाकर कृषि जिंसों के न्यूनतम (समर्थन) मूल्यों में वृद्धि करवाना, या विद्युत् दरों, सिंचाई दरों, आदि में रियायत प्राप्त करना आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

Local content rule (लोकल कंटेंट रूल)

स्थानीय कच्चे माल के उपयोग का नियम

कोई वस्तु देश में ही बनी है, इसकी पुष्टि के लिए यह जानना ज़रूरी है कि उसका उत्पादन आयातित कच्चे माल पर नहीं, अपितु शत प्रतिशत स्वदेशी कच्चे माल पर

आधारित हो। परन्तु प्रायः यह सत्यापित करना कठिन होता है कि अमुक वस्तु में शत प्रतिशत स्वदेशी सामान का ही प्रयोग हुआ है।

Local government (लोकल गवर्नमेंट) **स्थानीय प्रशासन**

वह प्रशासनिक इकाई, जो सार्वभौम शक्ति सम्पन्न नहीं है, और ना ही जिन्हें केन्द्र (संघीय) या राज्य सरकारों से स्वायत्तता के अधिकार मिले हुए हैं। वस्तुतः ऐसी प्रशासनिक इकाइयों को सीमित स्वायत्तता प्राप्त होती है, तथा कर लगाने एवं बजट में प्रस्तुत राशि को व्यय करने सम्बन्धी इनके अधिकार देश के संविधान के अनुसार अत्यन्त सीमित होते हैं। ग्राम पंचायतें, नगर पालिकाएँ, तथा नगर निगम इस प्रकार की प्रशासनिक इकाइयों की गणना में आती हैं।

Local maximum (लोकल मेक्सिमय) **किसी फलन का अधिकतम मूल्य**

यदि $y=f(x)$ के फलन में y का अधिकतम मूल्य ज्ञात करना हो तो $\frac{dy}{dx}=0$ तथा $\frac{d^2y}{dx^2}<0$ की शर्तों की पूर्ति होनी चाहिएँ इसे अधिकतम स्थानीय मूल्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि x के किसी भी निकटवर्ती स्तर पर y का इससे अधिक मूल्य प्राप्त नहीं होगा।

Local minimum (लोकल मिनिमम) **किसी फलन का न्यूनतम मूल्य**

यदि $Y=f(X)$ के फलन में y का न्यूनतम मूल्य ज्ञात करना हो तो $\frac{dY}{dX}=0$ एवं $\frac{d^2Y}{dX^2}>0$ पर x का मूल्य ज्ञात करना होगा। X के किसी अन्य स्तर पर Y का इससे कम मूल्य प्राप्त नहीं होगा।

Location (लोकेशन) **स्थिति; किसी फर्म की भौगोलिक स्थिति**

यह स्थिति फर्म के आकार एवं व्यवसाय के अनुरूप एक या अनेक बिन्दुओं पर हो सकती है। किसी होटल की स्थिति समुद्री तट, पहाड़ों की तलहटी, ऐतिहासिक स्थलों आदि के समीप हो सकती है। किसी व्यावसायिक फर्म की स्थिति रेल्वे स्टेशन या बाज़ार के समीप हो सकती है।

Lock-out (लॉक आउट) **तालाबन्दी**

किसी फर्म के मालिकों द्वारा उठाया गया, कदम, जिसके अनुसार श्रमिकों को बर्ख़ास्त नहीं करने के बावजूद उन्हें कार्य–स्थल पर प्रवेश करने तथा मज़दूरी प्राप्त करने के अधिकार से वंचित किया जाता है।

Locomotive principle (लोकोमोटिव प्रिंसिपल) **अग्रणी शक्ति का सिद्धान्त**

इस सिद्धान्त के अनुसार अर्थव्यवस्था में, या विश्व स्तर पर आर्थिक संवृद्धि किसी अग्रणी क्षेत्र या देश के निष्पादन पर निर्भर करती है। यह नेतृत्व किसी उद्योग या किसी देश के हाथ में हो सकता है जिसकी तीव्र प्रगति के फलस्वरूप अन्य क्षेत्रों में भी विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। किसी एक बड़े प्रगतिशील देश में तीव्र गति से विकास होने पर यह लहर अनेक छोटे देशों में भी पहुंच सकती है। वस्तुतः यह अग्रणी उद्योग या देश एक प्रकार से इन्जन का कार्य करता है।

Log normal distribution (लॉग नॉर्मल डिस्ट्रीब्यूशन)

विभिन्न चरों के लघुगणक मूल्यों का सामान्य वितरण

इस प्रकार के वितरण में बहुलक की तुलना में समान्तर माध्य अधिक होता है।

London Inter-Bank Offered Rate (देखिए LIBOR)।

Logarithm scale (लॉगारिद्म स्केल) **लघुगणक पैमाना**

किसी चित्र में प्रस्तुत वह माप या पैमाना जिसमें किसी चर की दूरियों को लघुगुणकों के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। प्रायः क्षैतिज अक्ष पर समय (वर्ष) तथा किसी अन्य चर (राष्ट्रीय, आय, आयात, निर्यात या अन्य कोई) के मूल्यों को लघुगणक के रूप में शीर्ष अक्ष पर प्रस्तुत किया जाता है। प्रायः प्राकृतिक मूल्यों को शीर्ष अक्ष पर लेने पर इनमें होने वाले *व्यापक अन्तर को एक सीमित स्केल पर अंकित करना* कठिन होता है, परन्तु ये उतार चढाव लघुगणक रूप में सुविधापूर्वक अंकित किए जा सकते हैं।

Log-linear function (लॉग लीनियर फंक्शन) **रैखिक लघुगणक फलन**

इस फलनमें आश्रित तथा स्वतंत्र चरों को लघुगणक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए :

$$\log Y = a + b \log X$$

एक रैखिक लघुगणक फलन है। इसी को प्राकृतिक रूप में इस प्रकार लिखा जा सकेगा :

$$Y = aX^b$$

Long position (लॉंग पोजीशन) **क्रियाशील स्टॉक को बढ़ाना**

ऐसी स्थिति जिसमें किसी वस्तु या शेयर का व्यापारी जितनी मात्रा में ख़रीदता है उससे कम मात्रा में इसकी बिक्री करता है। इस प्रकार उसके पास स्टॉक में वृद्धि होती जाती है। ऐसा करने के पीछे यह धारणा निहित होती है कि उस वस्तु या शेयर की कीमत भविष्य में बढ़ेगी।

Long run (लौंग रन) **दीर्घकाल**

व्यष्टि अर्थशास्त्र में प्रयुक्त वह अवधि जिसमें उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील हो जाते हैं। इस दीर्घकाल में लोगों की आय, जनसंख्या, उत्पादन की तकनीक, फर्मों की संख्या, रुचि, वस्तुओं की डिजाइन आदि सभी में परिवर्तन हो सकते हैं, जो प्रायः अल्पकाल में स्थिर मान लिए जाते हैं।

Long run Phillips curve (लॉग रन फिलिप्स कर्व)

दीर्घकालीन फिलिप वक्र

ऐसा वक्र जो दीर्घकाल में मुद्रा स्फीति तथा बेरोज़गारी के बीच सम्बन्ध दर्शाता है। इसके पीछे यह मान्यता निहित रहती है कि दीर्घकालीन फिलिप वक्र के प्रत्येक बिन्दु पर वास्तविक तथा प्रत्याशित मुद्रा स्फीति की दरें समान होंगी। अल्पकालीन फिलिप वक्र की तुलना में दीर्घकालीन फिलिप वक्र मुद्रा स्फीति तथा बेरोज़गारी के सम्बन्धों को भिन्न रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

Long-term interest rate

(लॉग टर्म इन्टरेस्ट रेट) **दीर्घकालीन ब्याज़ दर**

सरकारी प्रतिभूतियों पर दी जाने वाली ब्याज़ दर। यह अवधि 15 वर्ष से अधिक हो सकती है।

Long-term unemployment

(लॉग टर्म अन–एम्प्लायमेंट) **दीर्घकालीन बेरोज़गारी**

एक वर्ष या इससे अधिक समय तक रोज़गार न मिलना। अस्थायी या अल्पकालिक बेरोज़गारी की तुलना में इससे अधिक गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं क्योंकि बेरोज़गारी की आर्थिक स्थिति तथा उनके मनोबल पर इसका काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः बेकारी का समय जितना अधिक होता है उतनी ही रोज़गार मिलने की संभावना कम हो जाती है।

Lorenz curve (लॉरेन्ज कर्व) **लॉरेन्ज वक्र**

आय के वितरण में व्याप्त विषमताओं को दर्शाने वाला वक्र। उदाहरण के लिए, किसी देश में व्यक्तिगत आय के प्रतिशत वितरण को संचयी रूप में शीर्ष स्तर पर रखते हुए, परिवारों के प्रतिशत को संचयी रूप में क्षैतिज स्तर पर रखकर यह ज्ञात किया जा सकता है कि 50 प्रतिशत या 60 प्रतिशत परिवारों को आय का कितना भाग मिल रहा है तथा 5 या 10 प्रतिशत धनी लोगों को कुल आय का कितना भाग मिल रहा है। लॉरेन्ज वक्र का चित्र नीचे प्रस्तुत किया गया है।
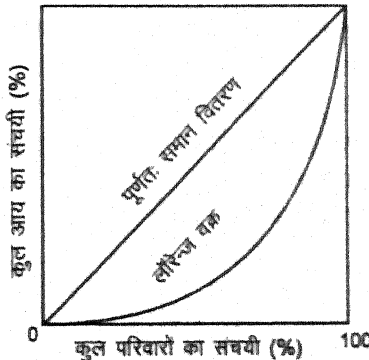
चित्र में 00' वह सरल रेखा है जिस पर आय वितरण में व्याप्त विषमता शून्य है। इसके विपरीत लॉरेन्ज वक्र बतलाता है कि जहां लगभग 25 प्रतिशत परिवारों को कुल आय में कोई हिस्सा नहीं मिलता, लगभग 5 प्रतिशत परिवारों को 25 प्रतिशत आय प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार **लॉरेन्ज वक्र समानता की रेखा (00') से जितना दूर होगा, आय वितरण में विषमता उतनी ही अधिक होगी।** (देखिए gini coefficient)

Loss (लॉस) **हानि**

किसी व्यावसायिक क्रिया का वह परिणाम जिसके अनुसार राजस्व की तुलना में कुल व्यय अधिक होता है। अल्पकाल में कुल राजस्व परिवर्तनशील लागतों से कम होने पर हानि होती है। दीर्घकाल में प्रायः उत्पादक इस हानि से छुटकारा पाकर लाभ अर्जित करते हैं *अथवा व्यवसाय बन्द कर देते हैं।*

Loss leading (लॉस लीडिंग) **लागत से कम कीमत**

अनेक वस्तुओं का व्यापार करने वाली फर्म कमी कभी एक वस्तु की कीमत *लागत से भी कम रखकर* उपभोक्ताओं को आकर्षित करती है ताकि उन वस्तुओं की बिक्री से प्राप्त लाभ से एक वस्तु पर होने वाली क्षति को पूरा कर सके। प्रायः जिस वस्तु की बिक्री में भारी प्रतिद्वन्द्विता हो वहां हानि उठाकर भी बेचना इस फर्म की व्यापक रणनीति का एक हिस्सा हो सकता है।

Loss minimization (लॉस मिनिमाइजेशन) **हानि को न्यूनतम करना**

यदि अल्पकाल में वस्तु की माँग कम होने तथा अल्पकालीन लागतों के अधिक होने के कारण फर्म को लाभ होने की सम्भावना बिल्कुल न हो, तो वह हानि को न्यूनतम करने का प्रयास करेगी। गणितीय रूप में तो लाभ अधिकतम करने या हानि को न्यूनतम करने की शर्त एक जैसी ही है, यानि

$$\frac{dTR}{dQ}=\frac{dTC}{dQ} \text{ या } MR=MC \text{ तथा } \frac{d^2TR}{dQ^2}<\frac{d^2TC}{dQ^2} \text{ होनी चाहिए}$$

परन्तु लाभ या हानि ज्ञात करने हेतु यह देखना होगा कि उत्पादन के उस स्तर पर कीमत तथा औसत लागत में क्या अंतर है। यदि कीमत, औसत लागत से अधिक है तो फर्म लाभ अर्जित कर रही है (जिसे उसे अधिकतम करना है), अथवा यदि औसत लागत उस उत्पादन स्तर पर कीमत से अधिक है, तो फर्म को हानि हो रही है जिसे वह न्यूनतम करना चाहेगी।
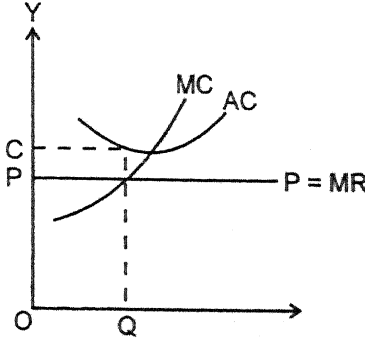
उपरोक्त चित्र में MC=MR=P की शर्त OQ इकाइयों का उत्पादन करने पर पूरी होती है जहां फर्म अपनी हानि को न्यूनतम करती है।

Lump of labour (लम्प ऑफ लेबर)

आवश्यकता से अधिक श्रम की उपलब्धता

प्रायः जितने श्रमिकों की आवश्यकता है उससे अधिक श्रमिक उपलब्ध होने पर बेरोज़गारी उत्पन्न हो जाती है। श्रम की बचत करने वाली तकनीक का प्रयोग करने पर यह समस्या और भी जटिल हो जाती है। परन्तु वस्तुतः श्रम की माँग स्थिर नहीं होती। उत्पादन की मात्रा बढ़ने के साथ–साथ बेरोज़गार श्रमिकों की संख्या में कमी होती है।

Lump-sum tax (लम्प सम टैक्स) **एक मुश्तकर**

ऐसा कर, जिसका करदाता की क्षमता से कोई सम्बन्ध न हो। लाइसेंस फीस, उपभोक्ताओं पर कोई निश्चित कर या शुल्क आदि इसके उदाहरण हैं।

Luxury (लक्ज़री) **विलासिता; विलासिता की वस्तु**

आय में वृद्धि के साथ–साथ ऐसी वस्तुओं की माँग में काफी अधिक वृद्धि होती है। एक विलासिता की वस्तु पर निर्धन व्यक्तियों की तुलना में धनी व्यक्ति अपनी आय का अधिक अनुपात व्यय करते हैं। प्रायः इन वस्तुओं की माँग की आय लोच इकाई से अधिक होती है $\eta_M > 1$। (देखिए Engel Curve).

M

M_0(एम जीरो) **करेन्सी नोट व सिक्के**

मुद्रा का वह अंश जिसमें चलन में प्रचलित करेन्सी नोट तथा सिक्के शामिल होते हैं।

M_1 (एम वन) **मुद्रा का एक रूप**

इसमें करेंसी नोट, सिक्के, निजी क्षेत्र के चालू खाते एवं केन्द्रीय बैंक के क्रियाशील शेष शामिल किए जाते हैं।

M_2 (एम टू)

इसमें करेन्सी नोट, सिक्के, ब्याज़ रहित बैंक, निक्षेप तथा राष्ट्रीय बचत खातों की राशि को शामिल किया जाता है। वस्तुतः M_2 को मुद्रा की संकीर्ण परिभाषा में शामिल किया जाता है।

M_3 (एम थ्री)

मुद्रा की इस श्रेणी में M_1 के अलावा निजी क्षेत्र की सावधि जमाएँ शामिल की जाती हैं। यह मुद्रा की व्यापक परिभाषा है। M_3 में चार प्रमुख अंश होते हैं :

(1) जनता के पास करेन्सी तथा सिक्के।

(2) बैंकों के पास तात्कालिक जमाएँ।

(3) बैंकों के पास सावधि जमाएँ।

(4) केन्द्रीय बैंक के पास अन्य जमाएँ।

M_4 and M_5 (एम फोर एण्ड एम फाइव)

इस परिभाषा में M_3 के साथ–साथ अन्य वित्तीय संस्थाओं के पास विद्यमान जमाओं को भी शामिल किया जाता है।

Macro economics (मैक्रो इकोनोमिक्स) **समष्टि अर्थशास्त्र**

अर्थव्यवस्था के विभिन्न मदों के समग्र का अध्ययन। एक परिवार या एक व्यक्ति के उपभोग का विश्लेषण उपभोक्ता व्यवहार का व्यष्टिगत अध्ययन कहलाता है, परन्तु देश के सभी उपभोक्ताओं की माँग का विश्लेषण समष्टिगत उपभोग फलन के अन्तर्गत किया जाता है। इसी प्रकार समष्टिगत रोजगार, निवेश, व्यापार आदि का अध्ययन समग्र मूल्यों का अध्ययन माना जाएगा। सरकार द्वारा किए जाने वाले व्यय तथा करारोपण का अध्ययन भी समष्टिगत नीतियों के अन्तर्गत किया जाता है। सरकार की मौद्रिक नीतियां, कीमत स्तर में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण भी समष्टिगत अर्थशास्त्र में किया जाता है।

Macro economic policy (मैक्रो इकोनोमिक्स पॉलिसी) **समष्टिगत नीति**

सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था के विस्तार अथवा नियंत्रण हेतु अपनाई गई नीति। इस प्रकार की प्रत्येक नीति सरकार द्वारा घोषित कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अपनाई

जाती है। इन समष्टिगत उद्देश्यों में पूर्ण रोज़गार की प्राप्ति, मुद्रा स्फीति पर नियत्रंण लगाना, भुगतान शेष को अनुकूल बनाना, आर्थिक मंदी से छुटकारा पाना, आर्थिक विकास की गति को बढ़ाना आदि शामिल हैं।

Mail order (मेल ऑर्डर) **डाक द्वारा विक्रय करना**

इस प्रकार की बिक्री करने वाली फर्म ऐसे ऐजन्टों की नियुक्ति करती है जिनका कार्य सम्भावित ग्राहकों की तलाश करना होता है। इन सम्भावित ग्राहकों को एक केटेलॉग दिया जाता है जिसमें से चुनाव करके कोई भी व्यक्ति उत्पादक या वितरक फर्म को सीधे ऑर्डर भेज सकता है।

Maintenance (मेंटीनेंस) **रख-रखाव**

भवनों, मशीनों, सड़कों आदि को अच्छी हालत में रखने के लिए की गई व्यवस्था। इनकी टूट फूट होने पर मरम्मत, तथा समय--समय पर इनकी देखभाल इसी रख रखाव का एक हिस्सा है।

Majority shareholder (मेजोरिटी शेयर होल्डर)

ऐसा अंशधारी जिसके पास किसी कम्पनी के आधे से अधिक अंश (शेयर) होने के कारण बहुमत का अधिकार हो। ऐसा अंशधारी ही कम्पनी के संचालकों की नियुक्ति करता है, तथा उसी की इच्छानुसार कम्पनी में सारे निर्णय लिए जाते हैं।

Malthus, Thomas Robert (1766-1834) (टॉमस रॉबर्ट माल्थस)

एक ब्रिटिश पादरी, जिसके जनसंख्या सम्बन्धी निराशाजनक विचार उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक "एस्से ऑन प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन एज़ इट एफेक्ट्स दी फ्यूचर इंप्रूवमेंट ऑफ सोसाइटी" (1798) में प्रकाशित हुए। माल्थस ने बतलाया कि जनसंख्या में प्रायः ज्यामिती दर से (2, 4, 8, 16, 32....) वृद्धि होती है, जबकि खाद्य सामग्री का उत्पादन अर्थमिति द्रर (1, 2, 3, 4, 5 ....) से बढता है। इसके फलस्वरूप जनसंख्या, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति की तुलना में काफी अधिक हो जाती है। माल्थस ने कहा कि यदि उस स्थिति के आविर्भाव को रोकना हो तो ब्रह्मचर्य का पालन आदि उपाय अपनाने होंगे, **अन्यथा** बीमारी, भुखमरी, परस्पर लड़ाई झगड़े आदि प्राकृतिक कारणो से जनसंख्या स्वतः ही कम हो जाएगी।

परन्तु उपरोक्त पुस्तक के प्रकाशन के बाद ही माल्थस को निराशावादी विचारक कहकर उनकी आलोचना की गई, और यह कहा जाने लगा कि विज्ञान ने खाद्यान्नों के उत्पादन की वृद्धि दर को भी काफी अधिक बढा दिया है। इस प्रकार, माल्थस के विचारों को अव्यावहारिक बतलाया गया।

Managed exchange rate

(मैनेज्ड एक्सचेंज रेट) **नियंत्रित विनिमय दर व्यवस्था**

इसके अन्तर्गत देशों की मुद्राओं की पारस्परिक विनिमय दर को एक केंद्रीय स्तर पर निर्धारित कर दिया जाता है, तथा सभी सम्बद्ध देश यह दायित्व लेते हैं कि विदेशी

मुद्राओं की खरीद–बिक्री के आधार पर उस दर को बनाए रखेंगे।

Management buy-in (मैनेजमेंट बाइ इन)

भूतपूर्व प्रबन्धकों द्वारा कम्पनी को खरीदना

किसी कम्पनी या उसके किसी खंड को अंशधारियों के एक छोटे से समूह (प्रायः **भूतपूर्व कर्मचारियों**) द्वारा ख़रीद लेना जो इसका संयुक्त रूप से प्रबन्ध करेंगे।

Management buy-out(मैनेजमेंट बाइ आउट) **प्रबन्धकों द्वारा स्वामित्व ग्रहण**

किसी कम्पनी के **वर्तमान प्रबन्धकों** द्वारा उस फर्म या उसके किसी खंड को ख़रीदना। बहुधा इस प्रकार की ख़रीद वर्तमान प्रबन्धकों द्वारा अत्यंत सावधानीपूर्वक की जाती है, तथा इसके लिए वित्तीय व्यवस्था बाहरी व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा की जाती है। सामान्यतः प्रबन्धक कम्पनी के कर्मचारी होते हैं, पर कभी–कभी वे उसके पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से स्वामी बन जाते हैं।

Management utility maximization (मैनेजमेंट यूटिलिटी मैक्सिमाइजेशन)

प्रबन्ध की उपादेयता का अधिकतम स्तर प्राप्त करना

प्रायः प्रबन्धकों को कम्पनी से पगार प्राप्त होती है, तथा उनका लक्ष्य अधिकतम लाभ अर्जित करने की अपेक्षा *स्वयं की उपादेयता* सिद्ध करना है। यह उपादेयता तीन घटकों पर निर्भर करती है : (i) स्टाफ, (ii) पगार तथा भत्ते, एवं (iii) निवेश। प्रबन्धक प्रायः कंपनी की राशि इन तीन भेदों पर ही ख़र्च करना चाहते हैं। स्टाफ बढ़ने पर प्रबन्धक का दायित्व बढ़ता है और इससे उसका पारिश्रमिक भी बढ़ता ही है। इसी प्रकार प्रबन्धक अपने यात्रा भत्ते, व सुविधाओं को बढ़वा लेते हैं तथा अपनी प्राथमिकता के अनुसार कम्पनी के लाभ का निवेश करते हैं। इन सभी के फलस्वरूप प्रबन्धक की उपादेयता सिद्ध होती है।

Managerial theories of the firm (मैनेजरियल थ्योरीज़ ऑफ द फर्म)

फर्म के प्रबन्धकीय सिद्धान्त

फर्म का आचरण इसके **प्रबन्धकों के कौशल** पर निर्भर करता है। परम्परागत रूप में प्रत्येक फर्म केवल अधिकतम लाभ के उद्देश्य से कार्य करती थी, तथा प्रबन्धकों का योगदान अधिक महत्वपूर्ण नहीं हुआ करता था। परन्तु गत कुछ दशकों में फर्म के प्रबन्धक तुष्टिकरण के उद्देश्य से या परिस्थितियों के अनुरूप अन्य उद्देश्यों (जैसे अधिकतम बिक्री, प्रतिष्ठा को बनाए रखना, बाज़ार में कुल बिक्री का कम से कम एक अनुपात अपने नियंत्रण में रखना आदि) की प्राप्ति हेतु निर्णय लेते हैं।

Mandatory spending programme (मैंडेटरी स्पेंडिंग प्रोग्राम)

व्यय का अनिवार्य प्रावधान

सरकारी व्यय का वह भाग जिसके लिए सरकार वैधानिक रूप से प्रतिबद्ध है। यह सरकार के स्वैच्छिक व्यय से सर्वथा प्रतिकूल है।

Manpower plananing (मैन पॉवर प्लानिंग) **जनशक्ति नियोजन**

मानव संसाधनों की कुशलता एवं दक्षता को बढ़ाने हेतु कार्यक्रम बनाना। यह कार्यक्रम कोई भी कम्पनी (फर्म) या सरकार बना सकती है। इसमें जनशक्ति की वर्तमान तथा भावी जरूरतों को ध्यान में रखा जाता है।

Margin (मार्जिन) **मार्जिन राशि**

किसी सौदे से सम्बद्ध कुल मूल्य का वह अंश जिसे व्यापारी को जमा करना होता है ताकि दूसरे व्यक्ति या फर्म को यह विश्वास हो सके कि वह व्यापारी अपने दायित्व को पूरा कर देगा। शेयरों के क्रेता को भी इसी प्रकार मार्जिन राशि जमा करनी होती है।

Margin requirement (मार्जिन रिक्वायरमेंट) **मार्जिन का प्रावधान**

किसी सौदे के कुल मूल्य का वह भाग, जिसे क्रेता या विक्रेता को दूसरे पक्ष के पास ना रखना होता है ताकि वह पक्ष यदि अपने दायित्व को पूरा करने से इन्कार कर दे तो उससे होने वाली क्षति की भरपाई कर सके।

Marginal benefit (मार्जिनल बेनीफिट) **सीमान्त लाभ**

किसी आर्थिक गतिविधि सें प्राप्त होने वाला अतिरिक्त प्रतिफल या लाभ। किसी गतिविधि में वृद्धि होने पर उससे प्राप्त कुल लाभ में भी परिवर्तन होता है। कभी–कभी यह परिवर्तन ऋणात्मक हो सकता है, परन्तु प्रायः कुल लाभ में वृद्धि ही होती है।

Marginal cost (मार्जिनल कॉस्ट) **सीमान्त लागत**

किसी गतिविधि में वृद्धि होने पर कुल लागत में होने वाली वृद्धि। प्रारम्भ में यह वृद्धि धीमी गति से होती है परन्तु एक सीमा के बाद गतिविधि में जिस अनुपात से वृद्धि होती है उसकी अपेक्षा अधिक अनुपात में लागत बढ़ती है, यानी सीमान्त लागत बढ़ती जाती है। नीचे चित्र में औसत तथा सीमान्त लागत वक्र प्रस्तुत किए गए हैं।
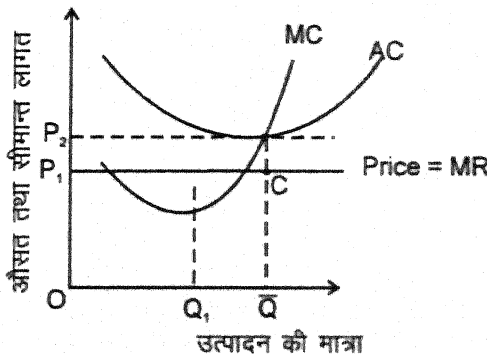
उपरोक्त चित्र में उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के साथ–साथ प्रारम्भ में कुल लागत में धीमी गति से वृद्धि होती है और इस कारण सीमान्त लागत (MC) कम होती है

लेकिन OQ_1 उत्पादन के पश्चात् कुल लागत में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण सीमान्त लागत बढ़ती जाती है।

Marginal cost pricing (मार्जिनल कॉस्ट प्राइसिंग)

किसी वस्तु या सेवा की कीमत इसके उत्पादन की सीमान्त लागत के अनुरूप निर्धारित करना

यह विधि उस समय उपयुक्त मानी जाती है जब निर्धारित कीमत पर माँग तथा उत्पादन में समानता हो। ऊपर प्रस्तुत चित्र में यदि C बिन्दु पर सीमान्त लागत तथा कीमत समान होने पर उत्पादन किया जाए तो औसत लागत का स्तर कीमत से अधिक होने के कारण उत्पादक को अनुदान देना होगा। परन्तु यदि उत्पादन का स्तर S बिन्दु के अनुरूप यानी $O\bar{Q}$ हो तो औसत लागत (AC), कीमत (OP_2) तथा सीमान्त लागत (MC) समान होंगे। यहां उत्पादक को सामान्य लाभ प्राप्त होगा।

Marginal efficiency of capital (MEC) (मार्जिनल एफिशिएँसी ऑफ केपीटल) **पूँजी की सीमान्त दक्षता**

इसे निवेश की सीमान्त दक्षता भी कहा जाता है। निवेश की अतिरिक्त मात्रा से अपेक्षित प्रतिफल दर। जैसे-जैसे निवेश में वृद्धि होती है, इस प्रतिफल की दर घटती जाती है।

वस्तुतः किसी भी अर्थव्यवस्था में निवेश की मात्रा पूँजी की सीमान्त दक्षता के अतिरिक्त *पूँजी की लागत यानी ब्याज़ दर* पर भी निर्भर करती है।
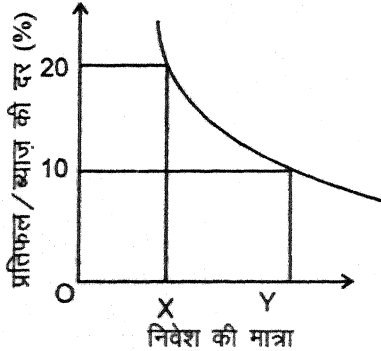
उपरोक्त चित्र बतलाता है कि ब्याज़ की दर 20 प्रतिशत होने पर OX राशि निवेश की जाती है परन्तु OY राशि का निवेश तभी होगा जब ब्याज़ की दर 10 प्रतिशत की जाए क्योंकि अधिक निवेश करने पर निवेश पर प्रतिफल की दर भी कम होंगी।

Marginal factor cost (मार्जिनल फैक्टर कॉस्ट) **साधन की सीमान्त लागत**

किसी साधन की अतिरिक्त मात्रा को प्रयुक्त करने पर उस पर व्यय की गई *अतिरिक्त लागत।*

Marginal firm (मार्जिनल फर्म) **सीमान्त फर्म**

ऐसी फर्म, जो किसी उद्योग के लाभ में थोडी सी वृद्धि होने पर बाज़ार में प्रवेश कर जाती है, तथा लाभ में थोड़ी सी कमी होने पर बहिर्गमन कर जाती है।

Marginal physical product (मार्जिनल फिजिकल प्रोडक्ट) **सीमान्त भौतिक उत्पादन**

किसी साधन की अतिरिक्त इकाई का उपयोग करने पर प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन। उस साधन की कितनी मात्रा अधिकतम लाभ प्राप्ति हेतु प्रयुक्त की जाएगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस स्तर पर साधन की कीमत इसके सीमान्त भौतिक उत्पादन के समान है।

Marginal product (मार्जिनल प्रोडक्ट) **सीमान्त उत्पादन**

(देखिए Marginal Physical Product सीमान्त भौतिक उत्पादन)

Marginal productivity (मार्जिनल प्रोडक्टिविटी) **सीमान्त उत्पादकता**

श्रम या पूँजी की अतिरिक्त मात्रा को प्रयुक्त करने पर वर्तमन कीमत पर प्राप्त होने वाला अतिरिक्त उत्पादन। प्रायः सीमान्त उत्पादकता किसी साधन की अंतिम इकाई से प्राप्त होने वाली उत्पादन की मात्रा होती है।

Marginal productivity theory of distribution

(मार्जिनल प्रोडक्टिविटी थ्योरी ऑफ डिस्ट्रब्यूशन)

वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक उद्यमी उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त प्रत्येक साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के समान पारिश्रमिक देता है। इस प्रकार श्रम, पूँजी, भूमि, प्रबन्ध आदि का भुगतान इनकी सीमान्त उत्पादकता के अनुरूप होना चाहिए। इस सिद्धान्त को आगे बढ़ाते हुए क्लार्क तथा विक्स्टीड ने कहा कि यदि सभी साधनों को उनकी सीमान्त तथा औसत उत्पादकता के समान भुगतान किया जाए तो जितना उत्पादन होगा, वितरण की कुल राशि भी उतनी ही होगी।

$$MP = AP = \text{Factor Price}$$

जहां MP तथा AP क्रमशः साधन की सीमान्त एवं औसत उत्पादकता के द्योतक हैं, फैक्टर प्राइस सम्बद्ध साधन के लिए चुकाई गई कीमत है।

Marginal propensity to consume (MPC)

(मार्जिनल प्रोपेन्ज़िटी टू कन्ज़्यूम) **उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति (क्षमता)**

राष्ट्रीय आय में परिवर्तन होन पर उपभोग की राशि में होने वाला परिवर्तन।

$$MPC = \frac{\text{उपभोग में परिवर्तन का प्रतिशत}}{\text{राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का प्रतिशत}}$$

(देखिए average propensity to consume उपभोग की औसत प्रवृत्ति (क्षमता)।)

Marginal propensity to import (MPM) (मार्जिनल प्रोपेन्ज़िटी टू इम्पोर्ड)

राष्ट्रीय आय में परिवर्तन होने पर आयातों में होने वाले परिवर्तन का अनुपात

$$MPM = \frac{\text{आयातों में परिवर्तन का प्रतिशत}}{\text{राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का प्रतिशत}}$$

Marginal propensity to save (MPS) (मार्जिनल प्रोपेन्ज़िटी टू सेव)

बचत की सीमान्त प्रवृत्ति

राष्ट्रिय आय में परिवर्तन होने पर बचतों में हुआ परिवर्तन।

$$MPS = \frac{\text{बचत में परिवर्तन का प्रतिशत}}{\text{राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का प्रतिशत}}$$

Marginal propensity to tax (MPT) (मार्जिनल प्रोपेन्ज़िटी टू टैक्स)

आय में हुए परिवर्तन की तुलना में करों से प्राप्त राशि में परिवर्तन

$$MPT = \frac{\text{करों की राशि परिवर्तन का प्रतिशत}}{\text{राष्ट्रीय आय में परिवर्तन का प्रतिशत}}$$

Marginal rate of substitution (MRS) (मार्जिनल रेट ऑफ सब्स्टीट्यूशन)

सीमान्त प्रतिस्थापन दर

जब उपभोक्ता एक वस्तु का उपभोग बढ़ाता है तो उसे किसी अन्य वस्तु की मात्रा में कमी करनी होती है। उदाहरण के लिए, X की एक इकाई को बढ़ाने हेतु उपभोक्ता Y की 3 इकाइयों का परित्याग करता हो तो सीमान्त प्रतिस्थापन दर

$(-\frac{3}{1})$ होगी। अस्तु,

$$MRS = \frac{\Delta Y}{\Delta X} < 0$$

इस सूत्र में ΔY द्वारा Y की त्यागी जाने वाली इकाइयों को तथा ΔX के द्वारा X की अतिरिक्त इकाई को मापा जाता है। उपरोक्त उदाहरण में चूंकि Y का परित्याग करके ही X की इकाई में वृद्धि होती है, इसलिए ΔY का चिन्ह ऋणात्मक होगा।

जे. आर. हिक्स ने कहा कि प्रारम्भ में X की अतिरिक्त इकाई हेतु उपभोक्ता Y की अधिक इकाइयों का परित्याग कर सकता है, परन्तु धीरे–धीरे Y की त्यागी जाने वाली इकाइयों में कमी होती है, *अर्थात् सीमान्त प्रतिस्थापन दर कम होती जाती है।*

Marginal rate of taxation (मार्जिनल रेट ऑफ टैक्सेशन) **कर की सीमान्त दर**

कर की वह दर जिसे कोई व्यक्ति अतिरिक्त आय पर चुकाता है। उदाहरण के लिए, प्रारम्भ में आय कर की दर 10 प्रतिशत हो तथा फिर आय में वृद्धि के साथ-साथ यह बढ़ती जाए और अन्ततः 30 प्रतिशत हो जाए (जैसा कि भारत में है) तो आयकर की सीमान्त दर 30 प्रतिशत मानी जाएगी। (देखिए **Propensity to tax**)

Marginal rate of technical substitution (MRTS)

(मार्जिनल रेट ऑफ टैक्नीकल सब्स्टीट्यूशन

तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर

उत्पादन की निर्दिष्ट मात्रा को प्राप्त करने हेतु किसी एक साधन की मात्रा में वृद्धि करने पर किसी अन्य साधन की मात्रा में कमी करनी होती है। उदाहरण के लिए, श्रम की एक इकाई में वृद्धि करने हेतु यदि पूँजी की 4 इकाइयों को छोड़ना पड़े

तो तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर $(-\frac{4}{1})$ होगी। अस्तु

$$MRTS = \frac{\Delta K}{\Delta L} < 0 \quad \{L = \text{श्रम},\ K = \text{पूँजी}\}$$

इस सूत्र में ΔL के द्वारा श्रम की मात्रा में की जाने वाली वृद्धि तथा ΔK के द्वारा पूँजी की मात्रा में होने वाली कमी को व्यक्त किया जाता है। चूंकि श्रम की मात्रा में वृद्धि हेतु पूँजी की इकाइयों में कमी की जाती है, तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर प्रायः ऋणात्मक होती है।

सीमान्त प्रतिस्थापन दर की भांति तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमान्त दर भी घटती जाती है, यानी उद्यमी धीरे–धीरे पूँजी की मात्रा में होने वाली कटौती में कमी करने लगता है।

Marginal rate of product transformation (MRPT)

(मार्जिनल रेट ऑफ प्रोडक्ट ट्रांसफॉर्मेशन)

वस्तु रूपान्तरण की सीमान्त दर

प्रत्येक देश, समाज या फर्म के पास सीमित साधन होते हैं। यदि वहां X के उत्पादन में वृद्धि की जाती है तो इसके लिए Y के उत्पादन में कमी करनी होगी। यानी दोनों वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाना सम्भव नहीं होता। अस्तु,

$$MRPT = \frac{\Delta X}{\Delta Y} < 0$$

इस सूत्र में ΔX के द्वारा X के उत्पादन में की जाने वाली वृद्धि को, तथा ΔY के द्वारा Y की मात्रा में की जाने वाली कमी को व्यक्त किया गया है। इसी कारण *वस्तु रूपान्तरण की सीमान्त दर ऋणात्मक होती है।* इस दर को X तथा Y की सीमान्त लागतों का अनुपात $\frac{MC_x}{MC_y}$ भी माना जाता है। प्रायः उत्पादन **वृद्धि** के साथ–साथ सीमान्त लागतों में वृद्धि होने के कारण वस्तु रूपान्तरण की सीमान्त दर ऋणात्मक होने पर भी *वर्द्धमान गति* से बढ़ती है।

Marginal revenue (MR) (मार्जिनल रेवेन्यू) **सीमान्त आगम**

किसी वस्तु की बिक्री में थोड़ी सी वृद्धि होने पर कुल आगम में होने वाली वृद्धि। बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता होने पर एक फर्म को बाज़ार में प्रचलित कीमत पर ही अपना उत्पाद बेचना होता है। ऐसी स्थिति में कीमत तथा सीमान्त आगम के बीच कोई अन्तर नहीं होता, जैसा कि नीचे प्रस्तुत चित्र के पैनल (a) में दिखाया गया है। परन्तु एकाधिकार अथवा अपूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में फर्म को बिक्री बढ़ाने के लिए कीमत में कमी करनी पड़ती है, तथा उस दशा में कीमत में जितनी कमी की जाती है, *सीमान्त आगम में उससे दो गुनी दर से कमी* हो जाती है। (पैनल b)।

(a) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत व सीमान्त आगम

(b) एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत व सीमान्त आगम

चित्र का पैनल (b) यह भी बतलाता है कि जहां कीमत (P) कभी ऋणात्मक या शून्य नहीं हो सकती, सीमान्त आगम शून्य भी हो सकता है तथा ऋणात्मक भी।

प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ प्राप्ति के लिए उस मात्रा को बेचती है जहां MR=MC यानी सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत में समानता हो।

(देखिए **Price determination** : कीमत निर्धारण)।

Marginal revenue product (MRP) (मार्जिनल रेवेन्यू प्रोडक्ट) **सीमान्त आगम उत्पाद**

किसी साधन की मात्रा में वृद्धि करने पर फर्म को प्राप्त करने वाले कुल आगम में होने वाली वृद्धि। इसके अन्तर्गत परिवर्तनशील साधन के उपयोग में होने वाली वृद्धि से प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन की बिक्री का मूल्य निहित होता है। सीमान्त आगम उत्पाद को ज्ञात करने हेतु निम्न सूत्र प्रयोग में लिया जाता है:

$$MRP = MR.\ MPP$$

इस प्रकार सीमान्त आगम को सीमान्त भौतिक उत्पादन से गुणा करने पर सीमान्त आगम उत्पाद प्राप्त होता है। चूंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत MR=P की स्थिति रहती है जबकि एकाधिकार के अन्तर्गत सीमान्त आगम का मूल्य कीमत से कम रहता है (MR<P), इसलिए दोनों प्रकार के बाज़ारों में सीमान्त आगम उत्पाद के मूल्य भी भिन्न होंगे। अस्तु,
साधन की निर्दिष्ट मात्रा पर MRP_c (प्रतियोगी बाज़ार) >MRP_m (एकाधिकार), जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है।

Marginal Social benefit (मार्जिनल सोशल बेनीफिट)

सीमान्त सामाजिक लाभ

किसी भी गतिविधि से समाज को प्राप्त कल्याण में वृद्धि। इसमें जहां कुछ व्यक्तियों को उस गतिविधि (उदाहरण के लिए, सिंचाई परियोजना) से प्रत्यक्ष लाभ होता है, वहीं अन्य व्यक्तियों को इससे परोक्ष लाभ भी होते है।

Marginal Social cost (मार्जिनल सोशल कॉस्ट)

सीमान्त सामाजिक लागत

किसी गतिविधि से समाज द्वारा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से वहन की जाने वाली अतिरिक्त लागत। सिंचाई परियोजना की अतिरिक्त लागत सरकार या समाज को वहन करनी पड़ती है, परन्तु इसके डूब वाले क्षेत्र से विस्थापित लोगों को इसकी परोक्ष कीमत चुकानी पड़ती है। सीमान्त सामाजिक लागत में परोक्ष तथा प्रत्यक्ष दोनों ही लागतें शामिल होती हैं।

Marginal utility (मार्जिनल यूटीलिटी) **सीमान्त उपयोगिता**

उपभोक्ता को किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर प्राप्य कुल उपयोगिता में होने वाला परिवर्तन (वृद्धि या कमी)। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता को एक चपाती खाने पर 10 रुपए के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है तथा दो

Marginal revenue (MR) (मार्जिनल रेवेन्यू) **सीमान्त आगम**

किसी वस्तु की बिक्री में थोड़ी सी वृद्धि होने पर कुल आगम में होने वाली वृद्धि। बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता होने पर एक फर्म को बाज़ार में प्रचलित कीमत पर ही अपना उत्पाद बेचना होता है। ऐसी स्थिति में कीमत तथा सीमान्त आगम के बीच कोई अन्तर नहीं होता, जैसा कि नीचे प्रस्तुत चित्र के पैनल (a) में दिखाया गया है। परन्तु एकाधिकार अथवा अपूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में फर्म को बिक्री बढ़ाने के लिए कीमत में कमी करनी पड़ती है, तथा उस दशा में कीमत में जितनी कमी की जाती है, *सीमान्त आगम में उससे दो गुनी दर से कमी* हो जाती है। (पैनल b)।

(a) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत व सीमान्त आगम

(b) एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत व सीमान्त आगम

चित्र का पैनल (b) यह भी बतलाता है कि जहां कीमत (P) कभी ऋणात्मक या शून्य नहीं हो सकती, सीमान्त आगम शून्य भी हो सकता है तथा ऋणात्मक भी।
प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ प्राप्ति के लिए उस मात्रा को बेचती है जहां MR=MC यानी सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत में समानता हो।
(देखिए Price determination : कीमत निर्धारण)।

Marginal revenue product (MRP) (मार्जिनल रेवेन्यू प्रोडक्ट)

सीमान्त आगम उत्पाद

किसी साधन की मात्रा में वृद्धि करने पर फर्म को प्राप्त करने वाले कुल आगम में होने वाली वृद्धि। इसके अन्तर्गत परिवर्तनशील साधन के उपयोग में होने वाली वृद्धि से प्राप्त अतिरिक्त उत्पादन की बिक्री का मूल्य निहित होता है। सीमान्त आगम उत्पाद को ज्ञात करने हेतु निम्न सूत्र प्रयोग में लिया जाता है:

$$MRP = MR.\ MPP$$

इस प्रकार सीमान्त आगम को सीमान्त भौतिक उत्पादन से गुणा करने पर सीमान्त आगम उत्पाद प्राप्त होता है। चूंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत MR=P की स्थिति रहती है जबकि एकाधिकार के अन्तर्गत सीमान्त आगम का मूल्य कीमत से कम रहता है (MR<P), इसलिए दोनों प्रकार के बाज़ारों में सीमान्त आगम उत्पाद के मूल्य भी भिन्न होंगे। अस्तु,
साधन की निर्दिष्ट मात्रा पर MRP_c (प्रतियोगी बाज़ार) > MRP_m (एकाधिकार), जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है।

Marginal Social benefit (मार्जिनल सोशल बेनीफिट)

सीमान्त सामाजिक लाभ

किसी भी गतिविधि से समाज को प्राप्त कल्याण में वृद्धि। इसमें जहां कुछ व्यक्तियों को उस गतिविधि (उदाहरण के लिए, सिंचाई परियोजना) से प्रत्यक्ष लाभ होता है, वहीं अन्य व्यक्तियों को इससे परोक्ष लाभ भी होते है।

Marginal Social cost (मार्जिनल सोशल कॉस्ट)

सीमान्त सामाजिक लागत

किसी गतिविधि से समाज द्वारा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से वहन की जाने वाली अतिरिक्त लागत। सिंचाई परियोजना की अतिरिक्त लागत सरकार या समाज को वहन करनी पड़ती है, परन्तु इसके डूब वाले क्षेत्र से विस्थापित लोगों को इसकी परोक्ष कीमत चुकानी पड़ती है। सीमान्त सामाजिक लागत में परोक्ष तथा प्रत्यक्ष दोनों ही लागतें शामिल होती हैं।

Marginal utility (मार्जिनल यूटीलिटी) **सीमान्त उपयोगिता**

उपभोक्ता को किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर प्राप्य कुल उपयोगिता में होने वाला परिवर्तन (वृद्धि या कमी)। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता को एक चपाती खाने पर 10 रुपए के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है तथा दो

चपाती का उपभोग करने पर कुल उपयोगिता 18 रूपए हो जाती है तो *दूसरी चपाती* की सीमान्त उपयोगिता 8 रुपए होगी।

प्रायः सीमान्त उपयोगिता उस वस्तु को ख़रीदने से सम्बद्ध इच्छा की व्यग्रता पर निर्भर करती है। उपभोग के क्रम में एक ऐसी स्थिति अवश्य आती है, जब इस व्यग्रता में कमी आती है, यानी सीमान्त उपयोगिता में कमी होने लगती है। इसे सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम कहते हैं।

Marginal utility of money (मार्जिनल यूटीलिटी ऑफ मनी)

मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता

किसी व्यक्ति के पास विद्यमान मुद्रा के स्टॉक में वृद्धि होने पर उस अतिरिक्त मुद्रा से प्राप्त होने वाली अतिरिक्त संतुष्टि। एल्फ्रेड मार्शल ने मान्यता ली थी कि मुद्रा की प्रत्येक इकाई की सीमान्त उपयोगिता समान रहती है। लेकिन ए.सी. पीगू ने कहा कि निर्धन व्यक्तियों के लिए मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता अधिक होती है परन्तु जैसे-जैसे व्यक्ति धनवान होता है, मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता में कमी आती है, और एक सीमा पर यह शून्य भी हो सकती है। इसीलिए पीगू ने प्रगतिशील कर लगाने का सुझाव दिया जिसके अन्तर्गत कर की सीमान्त दर धनवान लोगों के संदर्भ में अधिक होनी चाहिए।

Marginal utility of wealth (मार्जिनल यूटीलिटी ऑफ वेल्थ)

सम्पत्ति की सीमान्त उपयोगिता

कुल सम्पत्ति में थोड़ी सी वृद्धि होने पर व्यक्ति को प्राप्त संतुष्टि (उपयोगिता) में होने वाली वृद्धि। प्रायः सम्पत्ति में वृद्धि होने पर कुल संतुष्टि में ह्रासमान दर से वृद्धि होती है। इसका प्रमुख कारण है कि *केवल सम्पत्ति बढ़ने से व्यक्ति को अधिक स्नेह या प्यार नहीं मिल जाता।* द्वितीय, सम्पत्ति में वृद्धि के साथ व्यक्ति के जीवन में अधिक ख़तरे तथा जोखिम की उत्पत्ति होती है।

Marginalization (मार्जिनलाइजेशन) **सीमान्तीकरण**

ऐसी प्रवृत्ति जिसके अन्तर्गत समाज का एक वर्ग मार्जिन या हाशिए पर चला जाता है। यदि कृषि में ऐसी परिस्थितियां बन जाएँ कि मध्मय वर्ग के किसानों की जोतें बहुत छोटी रह जाएँ तो यह सीमान्तीकरण कहलाएगा। इसी प्रकार यदि समाज के किसी एक वर्ग को उसके अधिकारों से वंचित होना पड़ जाए तो यह भी सीमान्तीकरण की प्रवृत्ति होगी।

Market (मार्केट) **बाज़ार**

विनिमय तंत्र, जिसके अन्तर्गत किसी वस्तु, सेवा अथवा साधन के क्रेताओं तथा विक्रेताओं के मध्य सम्पर्क स्थापित किया जाता है। यह व्यवस्था शेयरों व सम्पत्ति के लिए भी की जा सकती है।

बाज़ार किसी भौगोलिक क्षेत्र या स्थान में स्थित हो सकता है, अथवा विशिष्ट वस्तु

समूह से सम्बद्ध होता है– (जैसे कपड़ा बाज़ार, किराना बाज़ार, टायर बाज़ार आदि)। यदि क्रेता एक देश में एवं विक्रेता किसी अन्य देश में स्थित हों, तो सम्बद्ध वस्तु का बाज़ार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का होगा।

क्रेताओं तथा विक्रेताओं की संख्या के आधार पर भी बाज़ार को परिभाषित किया जाता है। यदि दोनों की संख्या बहुत अधिक हो तो ऐसा बाज़ार प्रतियोगी बाज़ार कहलाता है। यदि क्रेताओं की संख्या बहुत अधिक तथा विक्रेता केवल एक हो, तो कीमत का निर्धारण वही विक्रेता करेगा। इस बाज़ार को एकाधिकार वाला बाज़ार कहा जात है। यदि अनेक क्रेताओं की तुलना में केवल दो विक्रेता हों तो इसे द्वयाधिकार वाला बाज़ार कहा जाता है। यदि विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक हो तथा केवल एक क्रेता हो तो बाज़ार को क्रेताधिकार वाला बाज़ार कहते हैं। यदि क्रेताओं या विक्रेताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम हो, तो इसे अपूर्ण प्रतियोगिता वाला बाज़ार कहा जाता है। (देखिए perfect competition, monopoly, duopoly, monopsony, imperfect competition)

Market access (मार्केट एक्सेस) **बाज़ार तक पहुंच**

विक्रेता की अपनी वस्तु को बेचने हेतु स्वतंत्रता। यदि वह निर्बाध रूप से वस्तु को बेचने में सक्षम है, तो यह एक आदर्श स्थिति मानी जाती है। परन्तु यदि परिवहन के साधनों के अभाव, या सरकार अथवा किसी संगठन की ओर से रोपित बाधाएँ विद्यमान हों तो ऐसा बाज़ार बाधा–युक्त बाज़ार कहलाता है।

Market clearing (मार्केट क्लीयरिंग)

निर्दिष्ट कीमत पर वस्तु की प्रत्याशित बाज़ार माँग तथा पूर्ति में समानता

यदि किसी कीमत स्तर पर प्रत्याशित माँग की मात्रा पूर्ति की तुलना में कम है तो कीमत में तब तक कमी होगी जब तक माँग में वृद्धि तथा/अथवा पूर्ति में कमी होकर दोनों की मात्राएँ समान नहीं हो जाती।

Market concentration (मार्केट कंसन्ट्रेशन) **बाज़ार में संकेन्द्रण**

किसी वस्तु के उत्पादन या बिक्री में कुछ ही फर्मों या व्यक्तियों का नियंत्रण होना। यदि तीन विक्रेता बाज़ार की कुल पूर्ति के 60 प्रतिशत भाग पर नियंत्रण कर रहे हों तो इसे निम्न रूप में व्यक्त किया जाएगा :

C_3=60 प्रतिशत

यदि 5 फर्मों का कुल पूर्ति के 90 प्रतिशत पर नियंत्रण हो तो C_5=90 प्रतिशत होगा।

Market conduct (मार्केट कन्डक्ट)

बाज़ार में विद्यमान क्रेताओं तथा विक्रेताओं का आचरण

इसमें तीन प्रमुख तत्व शामिल होते हैं :

(अ) विक्रेताओं का प्रमुख उद्देश्य, यथा अधिकतम लाभ प्राप्त करना, अधिकतम बिक्री करना, तुष्टिकरण आदि।

(ब) इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विक्रेताओं द्वारा अपनाई जाने वाली प्रतिस्पर्द्धा की विधियां, जिनमें कीमत निर्धारण, उत्पादन के स्तर एवं वस्तु विभेद की सीमा शामिल हैं। इसी में क्रेताओं की कीमत परिवर्तन के संदर्भ में व्यक्त की गई प्रतिक्रियाएँ भी शामिल हैं।

(स) विभिन्न विक्रेताओं के परस्पर व्यवहार (प्रतियोगिता, गठबन्धन आदि) की प्रकृति।

Market economy (मार्केट इमोनोमी) **बाज़ार तंत्र**

जब सभी वस्तुओं, सेवाओं एवं साधनों की कीमतें उनकी माँग व पूर्ति के आधार पर निर्धारित हों तो, इसे बाजार तंत्र वाली अर्थव्यवस्था या पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहा जाता है। ऐसी स्थिति में **सभी बाज़ारों** में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति होती है।

Market forces (मार्केट फोर्सेज़) **बाज़ार की शक्तियां**

बाज़ार में *माँग व पूर्ति की शक्तियां* जो साम्य कीमत तथा मात्रा का निर्धारण करती हैं। यदि दोनों शक्तियां संतुलित हों तो ऐसा बाज़ार प्रतियोगी बाज़ार कहलाता है।

Market performance (मार्केट पर्फोमेंस) **बाज़ार का निष्पादन**

उपभोक्ताओं की वस्तुओं व सेवाओं की माँग को पूरा करने हेतु विभिन्न फर्मों द्वारा किए गए साधन आवंटन की कुशलता। इसमें यह आंकलन किया जाता है कि फर्मों ने आर्थिक कल्याण के इष्टतम स्तर की प्राप्ति में किस प्रकार योगदान दिया। बाज़ार निष्पादन में निम्न पाँच प्रमुख तत्व होते हैं :

(i) उत्पादन में दक्षता, (ii) लागत के न्यूनतम स्तर की प्राप्ति, (iii) आवंटन सम्बन्धी दक्षता, जिसके अनुसार उत्पादन लागत एवं वस्तु की कीमत का अन्तर देखा जाता है, (iv) प्रौद्योगिक प्रगतिशील, जिसके अंतर्गत फर्मों द्वारा उत्पादन तकनीक में सुधार करके लागत में कमी, तथा/अथवा गुणवत्ता में सुधार किए जाते हैं, तथा (v) उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की गुणवत्ता एवं उसकी विक्रय विधि के प्रति व्यक्त संतुष्टि।

Market power (मार्केट पावर) **बाज़ार की सत्ता**

किसी *फर्म की वह शक्ति* जिसके आधार पर वह किसी वस्तु की कीमत निर्धारित कर सकती है, तथा अपनी ही शर्तों पर इसे बेच सकती है। बाज़ार की सत्ता का केन्द्रीयकरण होने पर प्रायः उपभोक्ताओं का शोषण होता है।

Market price (मार्केट प्राइस) **बाज़ार कीमत**

वह कीमत, जिसे उपभोक्ता किसी वस्तु को ख़रीदने हेतु चुकाते हैं। अधिकांश वस्तुओं के लिए यह एक साम्य कीमत होती है जिसका निर्धारण बाज़ार में माँग व कीमत के आधार पर होता है।

Market risk (मार्केट रिस्क) **बाज़ार सम्बन्धी जोखिम**

बाज़ार में कार्यरत कोई भी व्यापारी कीमत में उतार चढ़ाव की जोखिम उठाकर भी क्रय या विक्रय कर सकता है। कुछ व्यापारी माल खरीदते समय वायदा-बाज़ार में बेचने का सौदा कर लेते हैं, जबकि कुछ बेचते समय खरीदने का भी अग्रिम रूप

में सौदा करते हैं। इस प्रकार वायदा बाज़ार में सौदा करके बाज़ार की जोखिम से सुरक्षा की जा सकती है।(देखिए hedging)

Market segmentation (मार्केट सेग्मेंटेशन) **बाज़ार का विभाजन**

बाज़ार में क्रेताओं की प्रकृति के अनुसार उनका श्रेणीकरण किया जा सकता है। जैसे महिलाएँ व पुरुष। इस प्रकार के श्रेणीकरण द्वारा उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप वस्तुएँ पृथक्–पृथक् रूप से रखी जा सकती हैं, तथा बिक्री की रणनीति भी भिन्न हो सकती है।

Market share (मार्केट शेयर) **बाज़ार में हिस्सा**

किसी एक फर्म का बाज़ार की कुल बिक्री या आपूर्ति में कितना हिस्सा है, इसका आकलन। (देखिए market concentration)

Market structure (मार्केट स्ट्रक्चर) **बाज़ार का ढांचा**

बाज़ार की वह स्थिति जिसका विभिन्न फर्मों तथा क्रेताओं के व्यवहार तथा बाज़ार के निष्पादन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसमें क्रेताओं व विक्रेताओं की बाज़ार सत्ता, नए विक्रेताओं के प्रवेश की संभावना, वस्तु की प्रकृति (टिकाऊ है या नाशवान है) तथा फर्मों का कच्चे माल की आपूर्ति आदि घटक शामिल हैं जो बाज़ार के ढांचे को परिभाषित करते हैं।

वस्तुतः बाज़ार का ढांचा, फर्मों का चरित्र तथा क्रेताओं व विक्रेताओं का निष्पादन मिलाकर इस बात को निरूपित करते हैं कि कीमत का निर्धारण किस प्रकार होगा तथा लाभ कितना तथा कब तक प्राप्त होगा। इन तीनों को दृष्टि में रखकर ही सरकार बाज़ार के विषय में अपनी रणनीति बनाती है।
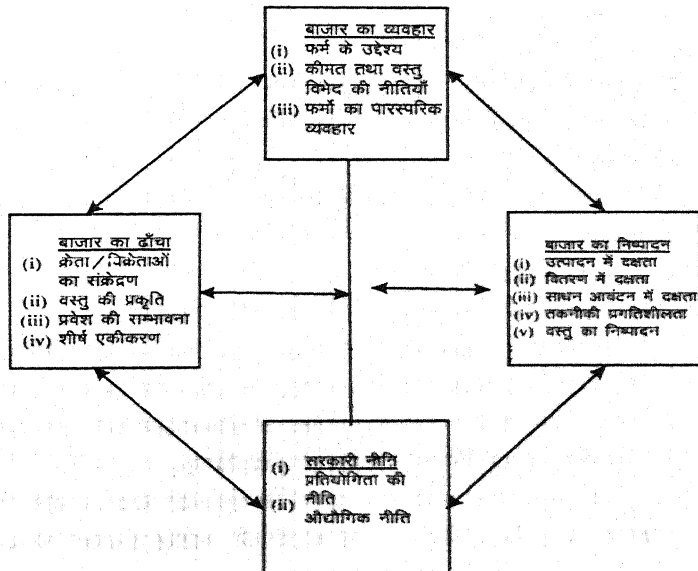
इस प्रकार बाज़ार का व्यवहार, निष्पादन, ढांचा तथा बाज़ार के सम्बन्ध में सरकार की नीतियां परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करती हैं।

Market supply (मार्केट सप्लाई) **बाज़ार की आपूर्ति**

किसी वस्तु या सेवा की वह मात्रा, जिसे बाज़ार में निर्दिष्ट कीमत पर बेचने हेतु प्रस्तुत किया गया हो। प्रायः यह आपूर्ति वस्तु की कीमत में वृद्धि के साथ बढ़ती है तथा कीमत में कमी होने पर इसमें कमी होती है। कीमत के अतिरिक्त बाज़ार की आपूर्ति अन्य वस्तुओं की कीमतों, सम्बद्ध साधनों की उपलब्धता तथा उत्पादकों की संख्या पर भी निर्भर करती है।

Marketable security (मार्केटेबल सीक्योरिटी) **बिक्री योग्य प्रतिभूति**

प्रायः द्वितीयक बाज़ार में इस प्रकार की प्रतिभूतियों के सौदे किए जाते हैं। ये प्रतिभूतियां राष्ट्रीय बचत पत्र आदि से भिन्न होती हैं, जिनकी प्रतिभूति की बाज़ारों में ख़रीद व बिक्री नहीं होती।

Marketable surplus (मार्केटेबल सरप्लस) **बिक्री योग्य अतिरेक**

प्रायः विकासशील देशों में छोटे किसान तथा दुग्ध विक्रेता अपने परिवारों के उपभोग हेतु अपने उत्पाद को रखकर शेष को बिक्री हेतु अलग रखते हैं। यही मात्रा बिक्री योग्य अतिरेक कहलाती है।

Marketed surplus (मार्केटेड सरप्लस) **बेचा गया अतिरेक**

कोई भी उत्पादक अपने परिवार हेतु जितनी मात्रा रखकर शेष में से एक भाग को बाज़ार में बेचता है। बाज़ार में बेची गई यही मात्रा वास्तविक रूप में बेचा गया अतिरेक कहलाता है।

Marketing (मार्केटिंग) **विपणन**

किसी फर्म के उत्पादों की बिक्री हेतु क्रेताओं को ढूंढने की प्रक्रिया। इसमें वितरण हेतु व्यवस्था करने के अतिरिक्त वस्तु का विज्ञापन भी शामिल है।

Mark up (मार्क अप) **लागत-ऊपर का मार्जिन**

निर्माण लागत या क्रय की लागत पर विक्रेता द्वारा चाहा गया मार्जिन जिसे जोड़कर वह वस्तु की कीमत का निर्धारण करता है।

Marshall, Alfred (1842-1924) **एल्फ्रेड मार्शल**

इंग्लैंड के अर्थशास्त्री, जिनकी पुस्तकों ने सबसे अधिक लोकप्रिय पुस्तक "प्रिंसिपल ऑफ इकोनोमिक्स" (1890) है। मार्शल ने स्पष्ट किया कि सीमान्त उपयोगिता के आधार पर वस्तु की, तथा सीमान्त उत्पादकता के आधार पर साधन की माँग का निर्धारण निर्भर करता है। मार्शल ने उपभोक्ता की सीमित आय के इष्टतम आवंटन हेतु सम–सीमान्त उपयोगिता का नियम निरूपित किया।

एल्फ्रेड मार्शल ने माँग की लोच की अवधारणा को प्रतिपादित किया। उन्होंने सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की भी विस्तृत व्याख्या की। मार्शल ने बाज़ार के व्यवहार

के विषय में बहुत कुछ लिखा, एवं बतलाया कि वस्तु की कीमत प्रायः उत्पादन की लागत के आधार पर निर्भर करती है। मार्शल ने पैमाने की बचतों की विस्तृत विवेचना करके उन्हें आन्तरिक तथा बाह्य बचतों के रूप में विभाजित किया। मार्शल ने ही ''प्रतिनिधि फर्म'' की अवधारणा को जन्म दिया।

Marshall-Lerner condition (मार्शल लर्नर कन्डीशन) **मार्शल लर्नर शर्त**

व्यापार शेष की प्रतिकूलता को समाप्त करने हेतु मुद्रा का अवमूल्यन किस दशा में प्रभावी होता है, इसकी व्याख्या इस शर्त के आधार पर की जाती है। इसके अनुसार मुद्रा का अवमूल्यन किसी देश के निर्यातों को बढ़ाने में *तभी सहायक हो सकता है जब निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की अन्य देशों में माँग काफी लोचदार हो।* इसी प्रकार आयात की जाने वाली वस्तुओं की माँग अवमूल्यन करने वाले देश में अत्यधिक हो तो वहां आयातों में अनुपात से अधिक कमी हो जाएगी। इस प्रकार *निर्यातों व आयातों की माँग अत्यधिक लोचदार होने पर व्यापार–शेष पर काफी अनुकूल प्रभाव पड़ता है।* इसके विपरीत यदि दोनों की माँग बेलोच हो तो निर्यातों में अनुपात से कम वृद्धि होगी जबकि आयातों में अनुपात से कम कमी होगी। अन्ततः इसके फलस्वरूप व्यापार शेष पर अवमूल्यन का अनुकूल प्रभाव कभी नहीं पड़ेगा।

Marshall Plan (मार्शल प्लान)

संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध में यूरोप के क्षतिग्रस्त राष्ट्रों के पुनर्विकास हेतु इसे लागू किया था। 1948 से 1951 तक यूरोपीय देशों को अनुदान तथा ऋणों के रूप में बहुत बड़ी राशि दी गई। इनमें आस्ट्रिया, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, नीदरलैंड्स, इंगलैंड आदि राष्ट्र थे।

Marxian economics (मार्क्सियन इकोनोमिक्स)

कार्ल मार्क्स के द्वारा प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा

मार्क्स ने मूल्य के श्रम–सिद्धान्त, तथा शोषण के सिद्धान्त की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने कहा कि पूँजीपति प्रायः श्रमिकों से अधिक काम लेकर तथा महिलाओं व बच्चों को काम पर रखकर उन्हें पर्याप्त मज़दूरी नहीं चुकाते, और इस प्रकार से प्राप्त अतिरेक (surplus value) का पुनर्निवेश करके अपने साम्राज्य का विस्तार करते जाते हैं। प्रायः इसके फलस्वरूप एक क्रांति का सूत्रपात होता है, तथा श्रमिक संगठित होकर पूँजीवाद को उखाड़ कर फेंक देते हैं।

Mass production (मास प्रोडक्शन) **बहुत विशाल स्तर पर उत्पादन करना**

यह उत्पादन प्रक्रिया यंत्रीकृत विधियों द्वारा प्रामाणिक वस्तुओं के लिए ही होता है। इसके विपरीत हस्तकला या हाथकर्घे से निर्मित उत्पादन का स्तर बहुत छोटा होता है। जहां विशाल स्तर पर प्रति इकाई उत्पादन लागत प्रायः कम होती है, अत्यंत छोटे स्तर पर यह लागत अधिक होती है।

Maturity structure (मेचोरिटी स्ट्रक्चर) **बॉंड्स तथा प्रतिभूतियों के भुगतान की तिथियों के क्रम में उन्हें श्रेणीबद्ध करना**

एक विवेकशील निवेशक बहुधा अलग–अलग तिथियों पर परिपक्व होने वाली प्रतिभूतियों में निवेश करना चाहता है। इससे निवेश की जोखिम कम हो जाती है।

Maximin (मेक्सीमिन) **न्यूनतम मूल्यों में अधिकतम करना**

यह खेल सिद्धान्त में प्रयुक्त एक रणनीति है। इसके अनुसार दो विक्रेताओं में से एक अपने प्रतिद्वन्द्वी द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीतियों के बदले उसे न्यूनतम लाभ देने का प्रयत्न करता है। ऐसी स्थिति में यह द्वितीय विक्रेता उन न्यूनतम लाभ वाली स्थितियों में से उस स्थिति का चुनाव कर लेता है जिससे उसे अधिकतम प्रतिफल प्राप्त होता है। यह स्थिति Minimax (अधिकतम मूल्यों में से न्यूनतम का चुनाव करना) से ठीक विपरीत है जिसके अन्तर्गत द्वितीय विक्रेता अपनी प्रत्येक रणनीति से अधिकतम लाभ अर्जित करने का लक्ष्य रखता है लेकिन उसका प्रतिद्वन्द्वी प्रथम विक्रेता उन अधिकतम मूल्यों में से उसे (द्वितीय विक्रेता को) न्यूनतम लाभ प्राप्त हो सके, यह सुनिश्चित करना चाहता है।

Maximum (मैक्सीमम) **अधिकतम**

किन्हीं संख्याओं के सैट में अधिकतम मूल्य वाली संख्या। एक उपभोक्ता को एक वस्तु की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त होने वाली कुल उपयोगिता अधिकतम होने पर वह उपयोग बन्द कर देगा। प्रत्येक फर्म अपना लाभ अधिकतम करना चाहती है। (देखिए Minimum)

Maximum, constrained (मैक्सीमम कंस्ट्रेन्ड) **सीमाबद्ध अधिकतम**

प्रत्येक उपभोक्ता अपनी आय की सीमा में रहकर ही अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करता है, और इसके लिए वस्तुओं की कीमतों के अनुपात, वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिताओं के अनुपात के समान होने चाहिएँ

तटस्थता वक्र के सिद्धान्त में जहां बजट रेखा का ढलान, यानी वस्तुओं की कीमतों का अनुपात, तटस्थता वक्र के ढलान, यानी दो वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिताओं के अनुपात, के समान हैं उसी बिन्दु पर सीमाबद्ध अधिकतम उपयोगिता प्राप्त होती है। नीचे चित्र में यह स्थिति E बिन्दु पर प्राप्त होती है।
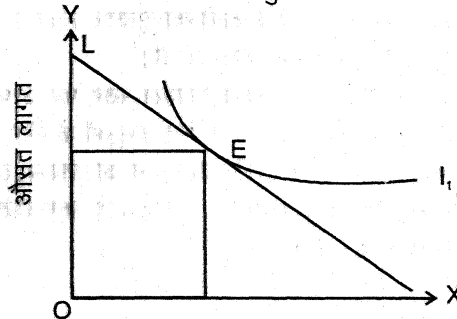
इस चित्र में LM बजट रेखा है जबकि I_1 तटस्थता वक्र है।

Mean (मीन) **माध्य**

संख्याओं के एक सैट का अ–भारित औसत। यदि कुछ संख्याएँ 1, 2, 3, 4, ..., n हों तो इनका अ–भारित माध्य ज्ञात करने हेतु इन सभी के योग में n का भाग दिया जाता है।

Mean, arithmatic (मीन अरिथमैटिक) **समान्तर माध्य**

सभी मूल्यों में कुल संख्या से भाग देने पर समान्तर माध्य प्राप्त होता है। यदि किसी मोहल्ले में 50 परिवारों की कुल मासिक आय 75,000 रुपए हो तो एक परिवार की औसत आय, या समान्तर माध्य का मूल्य 1500 रुपए होगा।

Mean, geometric (ज्योमेट्रिक मीन) **गुणोत्तर माध्य**

किसी श्रेणी के सभी मूल्यों के गुणनफल का मूल गुणोत्तर माध्य कहलाता है। इसका प्रयोग प्रायः उस समय किया जाता है जब उस श्रेणी के मूल्यों में काफी अधिक विषमता विद्यमान हो। उदाहरण के लिए, यदि किसी स्थान पर तीन फर्मों की वार्षिक आय 50 लाख रुपए, 10 करोड़ रुपए तथा 40 करोड़ रूपए हो तो समान्तर माध्य 16.83 करोड़ रुपए होगा। लेकिन गुणोत्तर माध्य 5.83 करोड़ रुपए होगा जो वास्तविकता के अधिक निकट है।

Mean, harmonic (हार्मोनिक मीन) **हरात्मक माध्य**

किसी श्रेणी के विभिन्न पदों के व्युत्क्रमों के समान्तर माध्य का व्युत्क्रम।

Median (मीडियन) **मध्यका**

किसी भी श्रेणी को आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित करने के बाद परिलक्षित *मध्य बिन्दु का मूल्य*। यदि किसी भी श्रेणी में 31 मदें हैं तो 16वीं मद का मूल्य मध्यका कहलाएगा। परन्तु इसके लिए श्रेणी की सभी मदों को आरोही या अवरोही क्रम में रखना होगा।

Medium of exchange (मीडियम ऑफ एक्सचेंज) **विनिमय का माध्यम**

एक व्यक्ति की सेवा या उसके पास उपलब्ध वस्तु को अन्य किसी भी व्यक्ति से विनिमय की प्रक्रिया का माध्यम। प्रायः यह प्रक्रिया *मुद्रा के द्वारा* सम्पादित की जाती है। मुद्रा देकर कोई व्यक्ति या संस्था किसी भी वस्तु या सेवा को प्राप्त कर सकता है, अथवा अपनी सेवा या वस्तु को मुद्रा के बदले बेच सकता है। इस प्रकार मुद्रा विनिमय का सर्वोत्तम माध्यम है।

Mercantilism (मर्कन्टिलिज़्म) **वणिक वाद**

जर्मनी में उत्पन्न ऐसी विचारधारा, जिसके अनुसार अनुकूल व्यापार या भुगतान संतुलन के आधार पर किसी देश की अर्थव्यवस्था को अधिकतम गति से बढ़ाया जा सकता है।

Merchant bank (मर्चेन्ट बैंक) **व्यावसायिक बैंक**

जो सामान्य जनता की अपेक्षा केवल व्यावसायिक फर्मों से लेनदेन करता है। इनका व्यवसाय विशेष प्रकार की गतिविधियों, जैसे विदेशी व्यापार आदि तक सीमित रहता

है। इसके अलावा ये हुंडियों का लेन देन, हायर पर्चेज़ तथा औद्योगिक वित्त का व्यवसाय भी करते हैं।

Merger (मर्जर) **विलय**

दो या अधिक फर्मों का विलय करके एक नई फर्म की स्थापना करना। इसमें सभी फर्मों की सम्पत्तियों तथा दायित्व का भी एकीकरण हो जाता है।

Merit goods (मेरिट गुड्स) **सरकार द्वारा प्रदान की गई वस्तुएँ**

ऐसी वस्तुओं की आपूर्ति प्रायः सरकार जनहित के लिए कर सकती है, जैसे जनस्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा आदि।

Merit subsidies (मेरिट सब्सिडीज़) **उपयोगी अनुदान**

ऐसा अनुदान जो अर्थव्यवस्था में उत्पादन बढ़ाने में सहायक हो। यदि विद्युत् आपूर्ति में बड़े उद्योगपतियों को अनुदान दिया जाए जो पहले से पर्याप्त मुनाफा कमा रहे हों तो इसे उपयोगी अनुदान नहीं माना जाएगा। यदि खाद्यान्नों के वितरण में निर्धनता की रेखा से नीचे रहने वालों को अनुदान दिया जाए तो इससे उत्पादन में तो वृद्धि नहीं हो पाती लेकिन कल्याणकारी दृष्टि से यह उचित है। परन्तु यदि बड़े किसानों को बिजली, पानी या उर्वरकों पर अनुदान दिया जाए तो यह भी उपयोगी अनुदान नहीं है।

Micro economics (माइक्रो इकोनोमिक्स) **व्यष्टि अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र की वह शाखा, जिसमें एक इकाई (उपभोक्ता, फर्म या किसी साधन का स्वामी) के व्यवहार तथा इसके द्वारा साधनों के आवंटन का अध्ययन किया जाता है। प्रायः यह मान्यता ली जाती है कि प्रत्येक इकाई **अपना हित** (उपयोगिता, लाभ या पारिश्रमिक) अधिकतम करना चाहती है। यह भी मान लिया जाता है कि *यह इकाई एक प्रतिनिधि इकाई है।*

Micro economics policy (माइक्रो इकोनोमिक्स पॉलिसी)

व्यष्टिगत आर्थिक नीति

सरकार द्वारा विशिष्ट उद्योग या बाज़ार के संदर्भ में अपनाई गई नियंत्रण या नियमन की नीति, जिसका प्रयोजन निर्दिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना है। सरकार चाहती है कि इस नीति के माध्यम से **वर्ग विशेष को लाभ हो**, तथा साधनों का इष्टतम आवंटन हो सके।

Mid-market-price (मिड मार्केट प्राइस) **मध्यवर्ती कीमत**

किसी बाज़ार में क्रेताओं तथा विक्रेताओं द्वारा उद्धृत न्यूनतम तथा अधिकतम कीमत के बीच का स्तर।

Middleman (मिडिलमैन) **मध्यस्थ या बिचौलिया**

एक फर्म या व्यापारी, जो किसी सम्पत्ति या प्रतिभूति के क्रेता तथा विक्रेता के मध्य कड़ी का कार्य करता है। इस दृष्टि से एक थोक व्यापारी या दलाल को मध्यस्थ माना जा सकता है।

Migration (माइग्रेशन) **प्रवास**

लोगों का दो स्थानों, प्रान्तों या देशों के बीच गमन करना। प्रायः प्रवास से हमारा आशय किसी व्यक्ति का देश के बाहर जाने से होता है। बाहर से यदि कुछ लोग देश में आते हैं तो इसे भी प्रवास या अप्रवास कहा जाता है। प्रायः प्रवास के अन्तर्गत श्रम के बहिगर्मन या आगमन को ही शामिल करते हैं।

Mill, John Stuart Mill (1806-1873) **जॉन स्टुअर्ट मिल**

एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री, जिनकी पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ पॉलिटिकल इकोनोमी विद सम ऑफ देयर एप्लीकेशन टू सोशल फिलोसोफी" में मिल ने संस्थापक अर्थशास्त्र की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की। वे स्वतंत्र बाज़ार प्रणाली के पक्षधर थे, फिर भी उन्होंने कहा कि *यदि आवश्यक* हो तो सरकार को भी आर्थिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करना चाहिए।

Minimum efficient scale (मिनिमम एफीशिएँट स्केल)

न्यूनतम दक्षता वाला पैमाना

वह बिन्दु, जहाँ दीर्घकाल में फर्म को पैमाने की मितव्ययताएँ मिलना बन्द हो जाता है, तथा औसत लागत या तो स्थिर हो जाती है, अथवा बढ़ने लगती है।

Minimum lending rate (मिनिमम लैंडिंग रेट)

बैंक ऑफ इंगलैंड द्वारा बैंकों से ली जाने वाली न्यूनतम ब्याज़ (बैंक) दर।

Minimum wage rate (मिनिमम वेज रेट) **न्यूनतम मज़दूरी दर**

सरकार द्वारा घोषित मज़दूरी की वह दर, जिससे कम मज़दूरी देना कानूनी दृष्टि से एक अपराध है। कभी–कभी श्रमिक संघ तथा मालिक लोग मिलकर भी न्यूनतम मज़दूरी हेतु एक समझौता कर लेते हैं। यह स्तर बहुत अधिक होने पर नियोक्ता मज़दूरों के स्थान पर मशीनों का प्रयोग प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके विपरीत मज़दूरी का न्यूनतम स्तर बहुत नीचा होने पर श्रमिकों का जीवन निर्वाह भी दूभर हो जाता है।

Minority share holder (माइनोरिटी शेयर होल्डर)

अल्पमत वाला अंशधारी

ऐसा अंशधारी, जिसके पास पर्याप्त शेयर न होने से कम्पनी के मताधिकार में वर्चस्व नहीं हो पाता। हालांकि प्रायः थोड़े से व्यक्तियों के पास शेयरों का बहुमत पाया जाता है।

Mint (मिंट) **सरकारी मुद्रा का निर्गम करने वाली संस्था**

इस संस्था के पास सिक्कों या करेंसी नोट के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित रहता है।

Mis match (मिस मैच) **बेमेल संबंध**

बेरोज़गार श्रमिकों के कौशल तथा स्थिति एवं उपलब्ध रोज़गार के अवसरों के बीच का अन्तर। प्रायः श्रमिक जिस प्रकार का कार्य करने में सक्षम हैं, उस प्रकार के अवसर उपलब्ध न होने पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Mixed economy (मिक्स्ड इकोनोमी) **मिश्रित अर्थव्यवस्था**

ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें राजकीय तथा निजी, दोनों ही प्रकार के उपक्रम क्रियाशील रहते हैं। जिन क्षेत्रों में सरकार उचित समझती है, वहां सरकारी उपक्रम कार्य करते हैं, तथा शेष आर्थिक क्रियाओं का सम्पादन एवं संचालन व्यक्तियों या निजी क्षेत्र की संस्थाओं द्वारा *स्वतंत्र रूप* से किया जाता है।

Mobility (मोबीलिटी) **गतिशीलता**

उत्पादन के साधन का एक स्थान से दूसरे स्थान पर, या एक उद्योग से दूसरे उद्योग में अन्तरण की सहजता। श्रम की गतिशीलता के अन्तर्गत प्रायः श्रमिक के स्थान या अपना कार्य क्षेत्र बदलने की प्रवृत्ति को देखा जाता है। इसी प्रकार पूँजी भी गतिशील हो सकती है। परन्तु प्रायः अशिक्षा, अज्ञान या सामाजिक कारणों से श्रम की गतिशीलता अवरुद्ध हो जाती है। उत्पादन के साधनों में सभी दृष्टि से भूमि में कोई गतिशीलता नहीं होती।

Mode (मोड) **बहुलक**

किसी श्रेणी में किसी ऐसी संख्या, जिसकी आवृत्ति सर्वाधिक हो। उदाहरण के लिए, 100 परिवारों की एक श्रृंखला में प्रति परिवार बच्चों की संख्या 0 से लेकर 6 हो सकती है परन्तु लगभग 45 परिवार ऐसे हो सकते हैं जहां 3 बच्चे प्रति परिवार हैं। स्पष्ट है, इस सीरीज़ में बहुलक 3 माना जाएगा, **जिसकी आवृत्ति सर्वाधिक है।**

Model (मॉडल) **मॉडल; प्रतिदर्श**

वास्तविक जगत इतना विशाल एवं विविधतापूर्ण है कि इसकी सही–सही एवं संक्षेप में व्याख्या नहीं की जा सकती। एक अच्छा मॉडल या प्रतिदर्श उन सभी तत्वों का बोध कराता है जिसके आधार पर किसी क्षेत्र, जाति, समुदाय या व्यापक विश्व की प्रमुख बातों को समझा जा सकता है, क्योंकि इसमें कम महत्वपूर्ण तत्वों को शामिल नहीं किया जाता। प्रत्येक मॉडल को कतिपय मान्यताओं के आधार पर ही स्वीकार्य माना जाता है। (देखिये Economic model)

Modigliani-Miller Theorem (मॉडिग्लियानी–मिलर थ्योरम) **मॉडिग्लियानी-मिलर प्रमेय**

एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार एक पूर्ण पूँजी बाज़ार में किसी फर्म के लिए पूँजी की लागत हेतु वित्त जुटाने की विधि से कोई सम्बन्ध नहीं होता। पूँजी जुटाने हेतु ऋण सुविधा, शेयरों का निर्गम या अर्जित लाभों का उपयोग किया जा सकता है।

Monetarism (मॉनेटरिज़्म) **मौद्रिकतावाद**

ऐसी विचारधारा, जिसके अनुसार अर्थव्यवस्था के क्रियाकलापों में मुद्रा (करेन्सी एवं साख मुद्रा) का सर्वाधिक प्रभाव होता है। इसके अन्तर्गत एक ओर जहां वस्तुओं व सेवाओं की खरीद हेतु मुद्रा की उपलब्धता को दृष्टिगत रखा जाता है, तो दूसरी ओर अर्थव्यवस्था की उन वस्तुओं व सेवाओं के लिए उत्पादन क्षमता को देखते हुए एक सन्तुलन की आवश्यकता निरूपित की जाती है।

मौद्रिकतावाद के अनुसार मुद्रा की आपूर्ति (उपलब्धता) में वृद्धि के फलस्वरूप मुद्रा स्फीति का जन्म होता है। प्रायः सरकार जितना करों तथा अन्य तरीकों से राजस्व एकत्रित करती है, उससे अधिक ख़र्च करने के कारण घाटे का बजट बनता है जिसकी पूर्ति हेतु मुद्रा की मात्रा बढ़ानी होती है। यदि *मुद्रा (तथा साख) की मात्रा को नियंत्रित किया जाए तो कीमत-स्तर भी नियंत्रित किया जा सकता है।*

Monetary base (मॉनेटरी बेस) **मौद्रिक आधार**

मुद्रा का वह अंश, जो देश के केन्द्रीय बैंक के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहता है। बहुधा इसमें केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित करेन्सी, तथा केन्द्रीय बैंक के पास व्यापारी बैंकों की जमा राशि को शामिल किया जाता है। (देखिए high-powered money)

Monetary base control (मॉनेटरी बेस कन्ट्रोल) **मौद्रिक आधार पर नियंत्रण**

केन्द्रीय बैंक द्वारा करेन्सी तथा नगद रिज़र्व अनुपात के माध्यम से आधार-मुद्रा पर नियंत्रण रखना।

Monetary policy (मॉनेटरी पॉलिसी) **मौद्रिक नीति**

सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में प्रचलित ब्याज़ दर तथा मुद्रा (करेन्सी एवं साख) पर नियंत्रण रखने वाली नीति। केन्द्रीय बैंक प्रायः बैंक दर, नगद रिज़र्व अनुपात, प्रतिभूतियों की खुले बाज़ार में ख़रीद या बिक्री तथा विविध प्रकार की साख नियंत्रण विधियों से मुद्रा या साख की मात्रा को नियंत्रित करता है। इस नीति के माध्यम से मुद्रा की सकल मात्रा को नियंत्रित करके कीमत–स्तर को नियंत्रित किया जाता है।

Monetary system (मॉनेटरी सिस्टम) **मौद्रिक प्रणाली**

किसी देश की सरकार द्वारा मुद्रा की आपूर्ति को नियंत्रित करने हेतु अपनाई गई नीतियां तथा तत्सम्बन्धी तरीके। इन तरीकों में बैंक दर, खुले बाज़ार में प्रतिभूतियों की ख़रीद या बिक्री, नगद रिज़र्व अनुपात, विशिष्ट साख नियंत्रण (मुद्रा की मौसमी माँग के अनुरूप) आदि शामिल होते हैं।

Money (मनी) **मुद्रा**

ऐसा अस्त्र, जिसे वस्तुओं व सेवाओं के विनिमय, उनकी कीमतों के माप, ऋणों के भुगतान एवं मूल्य के संचय हेतु किसी देश में प्रयुक्त किया जाता है। मुद्रा में करेन्सी तथा साख मुद्रा (चैक, हुंडी, बिल ऑफ एक्सचेंज आदि) को शमिल किया जाता है। मुद्रा के रूप में ही किसी देश, राज्य अथवा व्यक्ति या परिवार की आय की गणना की जाती है। जहां सरकार द्वारा निर्गमित मुद्रा (करेन्सी, सिक्के आदि) विधि ग्राह्य है, वहीं साख मुद्रा की स्वीकार्यता जारी करने वाले व्यक्ति या संस्था की प्रतिष्ठा पर निर्भर करती है।

Money market (मनी मार्केट) **मुद्रा बाज़ार**

अति अल्प कालीन ऋणों का बाज़ार। उदाहरण के लिए, एक दिन के लिए प्राप्त

ऋण की प्रशासनिक लागत काफी अधिक होती है। इस बाज़ार में लेन देन करने वाले प्रायः बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थाएँ ही होती हैं तथा केवल अपवाद स्वरूप ही व्यावसायिक फर्में इसमें भाग लेती हैं।

Money multiplier (मनी मल्टी प्लायर) **मुद्रा, गुणक**

मुद्रा की मात्रा, तथा आय की मात्रा में हुए परिवर्तनों का अनुपात। उदाहरण के लिए, देश में विद्यमान उच्चशक्ति मुद्रा की मात्रा में n अनुपात में परिवर्तन होता है, तथा जनता के पास आय में मुद्रा का अनुपात v होता है, तो उच्च शक्ति मुद्रा का गुणक n/v होगा।

Money supply (मनी सप्लाई) **मुद्रा की आपूर्ति**

किसी देश या अर्थव्यवस्था में चलन में विद्यमान मुद्रा की मात्रा। वस्तुतः चलन में कितनी मुद्रा विद्यमान है, यह जानने के लिए ज़रूरी है कि हम यह बतलाएँ कि किस प्रकार की मुद्रा की चर्चा की जा रही है। संकुचित अर्थ में करेन्सी नोट, सिक्के तथा केन्द्रीय बैंक के पास जमा राशि को मुद्रा माना जाता है जबकि अत्यन्त व्यापक अर्थों में मुद्रा की परिभाषा के अन्तर्गत करेन्सी नोट, सभी प्रकार की जमाएँ तथा निजी क्षेत्र में प्रचलित बिल, हुंडियां, साख–पत्र एवं इन सभी के चलन वेग आदि भी मुद्रा के अन्तर्गत शामिल किए जाते हैं।

Money supply schedule(मनी सप्लाई शेड्यूल) **मुद्रा की आपूर्ति की सूची**

इसमें करेन्सी नोट, सिक्के आदि की आपूर्ति प्रायः सरकारी नीति के अनुरूप होती है, तथा उसका ब्याज़ की दरों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसके विपरीत अन्य सभी प्रकार की मुद्राओं की आपूर्ति ब्याज़ की दर में वृद्धि के साथ–साथ बढ़ती है।

Money wages (मनी वेज़ेज़) **मौद्रिक मज़दूरी**

प्राप्त मज़दूरी का वर्तमान मूल्य। प्रायः मुद्रा स्फीति के फलस्वरूप मज़दूरी का वर्तमान मूल्य बढ़ जाता है, जबकि इसकी क्रय शक्ति यथावत् रह सकती है, या कीमत–स्तर में बहुत अधिक वृद्धि होने पर वास्तविक मज़दूरी, या मौद्रिक मज़दूरी की क्रय शक्ति में कमी हो सकती है। संक्षेप में, सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि होने पर यदि मौद्रिक मज़दूरी बढ़े तब भी इसका वास्तविक स्तर यथावत् रह सकता है या कम हो सकता है।

Monopolistic competition (मोनोपोलिस्टक कंपीटीशन) **एकाधिकारिक प्रतियोगिता**

बाज़ार की वह स्थिति जिसमें विक्रेताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है, तथा प्रत्येक विक्रेता द्वारा उत्पादित वस्तु अन्य विक्रेताओं के उत्पादों से भिन्न होती है, भले ही यह भिन्नता वास्तविक न हो। उदाहरण के लिए, दो वस्तुओं के रंग या इनकी डिजाइन में अन्तर हो सकता है, जबकि इनकी गुणवत्ता समान है। यही कारण है कि अलग–अलग विक्रेता वस्तुओं के मूल्य भी अलग–अलग रख सकते

हैं। प्रायः डिजाइन के अन्तर को प्रचारित करने हेतु विक्रेताओं में अपनी-अपनी वस्तु को बेचने हेतु विज्ञापन करने की स्पर्द्धा भी तीव्र हो सकती है। इसके बावजूद इस बाज़ार में विभिन्न उत्पादों के बीच निकट की स्थानापन्नता होती है, और इस कारण कीमतों के अन्तर भी अत्यन्त कम रहते हैं। इस बाज़ार में नए विक्रेताओं के प्रवेश पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता। (देखिए Imprefect Competition).

Monopoly (मोनोपोली) **एकाधिकार**

ऐसी बाज़ार स्थिति, जिसमें एक वस्तु का केवल एक ही विक्रेता होता है, तथा वैधानिक अथवा विशाल स्तर के कारण किसी नई फर्म का बाज़ार में प्रवेश नहीं हो पाता। कभी–कभी उस फर्म का कच्चे माल की आपूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होने से भी दीर्घकाल तक उसका एकाधिकार बना रहता है।

एकाधिकारी अपनी शक्ति के आधार पर स्वयं ही कीमत का निर्धारण करता है, परन्तु प्रायः ऊँची कीमत पर उपभोक्ता वस्तु की कम मात्रा ख़रीदते हैं। यदि उसे अपनी वस्तु की बिक्री बढ़ानी होती है तो वह कीमत में कमी करता जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि एकाधिकारी की वस्तु का *माँग वक्र ऋणात्मक ढलानयुक्त* होता है। (चित्र देखिए)
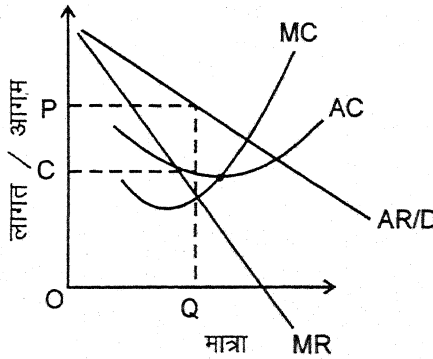
उपरोक्त चित्र में AR या D वस्तु का माँग वक्र है जबकि इससे सम्बद्ध सीमान्त आगम वक्र MR है। ये दोनों ही वक्र ऋणात्मक ढलानयुक्त हैं।

एकाधिकारी अपने लाभ को अधिक़तम करने हेतु उतनी मात्रा का उत्पादन करता है जिस पर MR=MC हो। यह मात्रा OQ है। एकाधिकारी को इस मात्रा पर प्रति इकाई PC रुपए का लाभ प्राप्त होता है।

चूंकि एकाधिकारी का वर्चस्व प्रायः दीर्घकाल तक कायम रहता है, उसे यह लाभ दीर्घकाल में भी मिलता रहता है।

Monopoly power (मोनोपोली पावर) **एकाधिकारिक शक्ति**

हालांकि किसी बाज़ार में एकाधिकारी का एक छत्र राज्य रहता है तथा उसकी

एकाधिकारिक शक्ति शत प्रतिशत हो सकती है। फिर भी अब्बा पी. लर्नर ने एकाधिकारिक शक्ति की अवधारणा का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार (सैद्धान्तिक दृष्टि से) किसी बाज़ार में वस्तु के एक विक्रेता का *कुल आपूर्ति के कितने भाग पर नियंत्रण* है, वह उस विक्रेता की एकाधिकारिक शक्ति कहलाती है। यदि सम्पूर्ण आपूर्ति पर एक ही फर्म का अधिकार हो तो यह शत प्रतिशत एकाधिकार है। इसके विपरीत विक्रेताओं की संख्या बहुत विशाल हो तो एक विक्रेता की (एकाधिकारिक) शक्ति शून्य के समीप या नगण्य भी हो सकती है। (देखिए Concentration ratio)।

Monopoly profit (मोनोपोली प्रॉफ़िट) **एकाधिकारिक लाभ**

सामान्य लाभ (जहां औसत लागत तथा कीमत में समानता होती है : AC=Price) की तुलना में फर्म को कितना अधिक लाभ प्राप्त होता है, उसका माप। लाभ का यह अतिरेक एकाधिकारी के संदर्भ में दीर्घकाल तक भी चलता रहता है, क्योंकि ऐसे बाज़ार में नए विक्रेताओं का प्रवेश सम्भव नहीं हो पाता।

Monopsony (मोनोप्सोनी) **क्रेताधिकार**

बाज़ार की वह स्थिति, जिसमें किसी वस्तु अथवा उत्पादन के साधन का केवल एक ही क्रेता हो। इस विशिष्ट स्थिति के कारण यह क्रेता मनमानी कीमत पर वस्तु या उस साधन को ख़रीदना चाहता है। परन्तु प्रायः यदि वह बहुत कम कीमत लगाता है तो साधन या वस्तु का विक्रेता अत्यंत कम मात्रा बेचना चाहेगा। जैसे–जैसे क्रेता ऊँची कीमत ऑफर करता है, वैसे–वैसे साधन या वस्तु के विक्रेता उसकी आपूर्ति बढ़ाते जाएँगे। यही कारण है कि क्रेताधिकारी के लिए साधन या वस्तु का पूर्ति वक्र धनात्मक ढलानयुक्त होता है।

Monotonic function (मोनोटोनिक फंक्शन) **लयबद्ध फलन**

ऐसा फलन जिसमें यदि स्वतंत्र चर में वृद्धि या कमी हो तो आश्रित चर में भी **उसी दिशा में** परिवर्तन होगा। इस प्रकार यदि $y=f(x)$ हो तो लयबद्धता का अर्थ यह होगा कि x में वृद्धि होने पर y में भी वृद्धि होगी।

Monte Carlo Methods (माँटे कार्लो मैथड्स) **मांटे कार्लो विधियाँ**

ऐसी विधि, जिसके द्वारा जटिल आर्थिक मॉडल का भी सरल समाधान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। इससे यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि किसी व्यवस्था के अन्तर्गत साम्य स्थिति प्राप्त की जा सकती है या नहीं, तथा फिर वह स्थिति किस सीमा तक स्थिर बनी रहती है।

Montreal Protocol (मॉट्रीयल प्रोटोकोल)

एक 1987 में तैयार किया गया अन्तर्राष्ट्रीय समझौता, जिस पर हस्ताक्षर करने वाले देशों ने ओज़ोन परत को क्षति पहुँचाने वाले पदार्थों पर नियंत्रण करने हेतु जहरीली गैसों के प्रसारण को रोकने के विषय में प्रतिबद्धता व्यक्त की।

Moratorium (मॉरेटोरियम) **ऋण अदायगी में दी गई प्रारम्भिक छूट**

बहुधा ऋणदाता प्रारम्भिक अवधि को छोड़कर शेष अवधि में मूलधन तथा ब्याज़ की अदायगी हेतु सहमति दे देता है। यह *अदायगी का स्थगन मात्र है* न कि ऋण व ब्याज़ को आंशिक रूप में करना। इस छूट के कारण ऋणी प्राप्त ऋण का उपयोग करके उससे लाभ अर्जित करने की स्थिति में पहुंचने के बाद ही उसकी अदायगी करना शुरू करता है। परन्तु इस सुविधा का लाभ वही ऋणी उठा सकता है जो 3–4 वर्ष के बाद पर्याप्त लाभ प्राप्त करने की आशा रखता है।

Mortgage (मॉरगेज) **गिरवी रखना**

ऋण लेते समय मकान, जमीन या किसी भी प्रकार की सम्पत्ति के स्वत्व को जमानत के रूप में ऋणदाता को सौंप देना। यह व्यवस्था किसी भी अवधि (5–7, 10 या 20 वर्ष) के लिए हो सकती है। जैसे ही ऋण की ब्याज़ सहित अदायगी हो जाती है, ऋणी को उस सम्पत्ति का स्वत्व लौटाया जा सकता है।

Most favoured nation (MFN) clause (मोस्ट फेवर्ड नेशन क्लॉज़)

आयात शुल्क या तटकरों को समान करने की व्यवस्था

व्यापार तथा तटकर पर हुए सामान्य समझौते (GATT) का वह सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक देश को अपने सभी व्यापारिक भागीदारों के सन्दर्भ में एक ही दर से तटकर लेना होता है। इससे पूर्व दो देश परस्पर व्यापार समझौता करके परस्पर तटकरों में कटौती करते थे तो तीसरे देश को भी इसी कटौती का लाभ देना ज़रूरी होता था। इस सुविधा को विकसित देश प्रायः विकासशील देशों के हितों के विपरीत प्रयुक्त करते थे।

Moving average (मूविंग एवरेज) **परिवर्तनशील माध्य**

काल श्रेणी (Time series) विश्लेषण में जब यह देखा जाता है कि आश्रित चर में उच्चावचन बहुत अधिक हैं तथा इनके कारण एक सरल या सहज प्रवृत्ति का अनुभान नहीं हो पा रहा है तो फिर चलायमान अथवा परिवर्तनशील माध्य के आधार पर इसे सहज बनाने का प्रयास किया जाता है। परन्तु इस विधि के अन्तर्गत हाल के वर्षों का परिवर्तनशील माध्य या औसत लेना सम्भव नहीं हो पाता।

Multi collinearity (मल्टी कोलीनियरिटी) **बहुसंरेखता**

प्रायः प्रतीपगमन विश्लेषण के अन्तर्गत यह मान्यता ली जाती है कि मॉडल में शामिल सभी स्वतंत्र चर आश्रित चर (Y) को स्वतंत्र रूप से प्रभावित करते हैं। परन्तु कभी-कभी दो या अधिक स्वतंत्र चरों में भी सह-सम्बन्ध पाया जाता है तथा इनमें से एक में वृद्धि होने पर स्वभावतः दूसरे में भी वृद्धि हो सकती है। उदाहरण के लिए, कृषि उत्पादन के मॉडल में सिंचित क्षेत्र (X_2) तथा उन्नत बीजों के क्षेत्र (X_3) में पर्याप्त सह सम्बन्ध हो सकता है, हालांकि दोनों ही उत्पादन फलन में स्वतंत्र चर हैं। स्पष्ट है, इस सह-सम्बन्ध के रहते हुए X_2 तथा X_3 में परिवर्तन से Y में होने वाले परिवर्तन को पृथक् पृथक् रूप से ज्ञात नहीं किया जा सकता। स्वतंत्र चरों का यह

सम्बन्ध धनात्मक या ऋणात्मक, दोनों ही प्रकार का हो सकता है।

Multilateral trade (मल्टीलेटरल ट्रेड) **बहुपक्षीय व्यापार**

बहुत से देशों के बीच चलने वाला व्यापार। प्रायः दो देशों के बीच व्यापार होने पर उसमें सन्तुलन स्थापित नहीं हो पाता, लेकिन अनेक देशों के मध्य व्यापार होने पर आयातों व निर्यातों में सन्तुलन प्राप्त करना सम्भव हो जाता है।

Multi-national company (MNC) (मल्टी नेशनल कम्पनी) **बहुदेशीय या बहुराष्ट्रीय कम्पनी**

जब एक फर्म दो या अधिक देशों में व्यवसाय करती है तो इसे बहुदेशीय या बहुराष्ट्रीय कम्पनी कहा जाता है। प्रायः ऐसी कम्पनी का प्रधान कार्यालय एक देश में होता है जबकि अन्य देशों में इसकी शाखाएँ या सहायक कम्पनियाँ स्थापित की जाती है *जो अपने लाभ प्रधान कार्यालय को भेजती हैं।*

Multi product firm (मल्टी प्रोडक्ट फर्म) **अनेक उत्पादों वाली फर्म**

प्रायः ऐसी फर्म अपने संसाधनों का आवंटन विभिन्न उत्पादों हेतु इस प्रकार करती है कि सभी में इसका सीमांत आगम समान हो। यह स्थिति फर्म के लिए अधिकतम लाभ वाली स्थिति होती है। ऐसा न होने पर फर्म संसाधनों का तब तक पुनर्आवंटन करेगी जब तक कि सीमान्त आगम के स्तर समान नहीं हो जाते।

Multiple equilibrium (मल्टीपल इक्वीलिब्रियम)

जब दो परस्पर विपरीत श्रेणियों की साम्य स्थिति अनुपम (एकल) नहीं होती, अपितु अधिक बिन्दुओं पर प्राप्त होती है। साम्य को प्राप्त करने शर्तें दोनों या तीनों बिन्दुओं पर पूरी हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय आय के साम्य स्तर की दो स्थितियाँ हो सकती हैं : एक आशावाद के अनुरूप उच्चस्तर पर, तथा दूसरी निराशाजनक दृष्टिकोण के कारण नीचे वाले स्तर पर।

Multiple exchange rates (मल्टीपल एक्सेंचज रेट) **बहुआयामी विनिमय दरें**

ऐसी प्रणाली, जिसमें किसी देश की विनिमय दरें किसी अन्य देश की मुद्रा के सम्बन्ध में दो या अधिक हो सकती हैं। किसी भी सौदे की विनिमय दर करेन्सी के धारक, या विदेशी मुद्रा के उपयोग पर निर्भर कर सकती है। बहुआयामी विनिमय दरों में देश के नागरिकों तथा विदेशियों के बीच भेदभाव किया जा सकता है, या विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के निर्यात तथा आयात के लिए भिन्न–भिन्न विनिमय दरें लागू की जा सकती हैं। इसी प्रकार चालू तथा पूँजीगत खातों के लिए पृथक् दरें हो सकती हैं। बहुधा बहुआयामी विनिमय दरों का विदेशी व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, और इसीलिए इनका प्रयोग आज के संदर्भ में नहीं किया जा रहा है।

Multiple regression (मल्टीपल रिग्रेशन) **बहुआयामी प्रतीपगमन**

अनेक चरों में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव एक (आश्रित) चर में देखना। उदाहरण

के लिए, K= a+bX-cY+dZ समीकरण में X, Y व Z में परिवर्तन होने का प्रत्यक्ष प्रभाव K पर दिखाई देता है। b, c तथा d इस समीकरण में प्रतीपगमन के गुणांक हैं, जो स्पष्ट करते हैं कि क्रमशः X, Y व Z में से प्रत्येक में एक इकाई का परिवर्तन K में कितनी इकाई परिवर्तन ला सकेगा। जहां b तथा d के गुणांक धनात्मक हैं, c का ऋणात्मक स्वरूप बतलाता है कि Y में परिवर्तन होने पर K में उससे विपरीत (ऋणात्मक) परिवर्तन आएगा।

Multiplier (मल्टीप्लायर) **गुणक**

दो श्रेणियों में से एक (X) के मूल्य में परिवर्तन होने पर दूसरी (Y) के मूल्य में कितना गुणा परिवर्तन होगा। मान लीजिए, निवेश में 10 प्रतिशत की वृद्धि होने पर राष्ट्रीय आय में 30 प्रतिशत वृद्धि हो जाए तो निवेश गुणक का मूल्य = 3 होगा।

Multiplier accelerator model (मल्टीप्लायर एक्सलेरेटर मॉडल) **गुणक-त्वरक मॉडल**

(देखिए accelerator multiplier)

गुणक के कारण निवेश बढ़ने पर उत्पादन में वृद्धि होती है, जबकि उत्पादन बढ़ने से निवेश में वृद्धि होती जाती है। यह प्रक्रिया अनवरत रहती है। जब त्वरक सशक्त होता है तो अर्थव्यवस्था का विस्तार विस्फोटक गति से होता है, जबकि इसके कमज़ोर होने पर विस्तार की गति धीमी हो जाती है।

Mutual fund (म्यूचुअल फंड) **म्यूचुअल फंड**

एक वित्तीय संस्था, जिसके पास निवेशकों की राशि रहती है। भारत का सबसे बड़ा म्यूचुअल फंड यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया है। प्रायः म्यूचुअल फंड निवेशकों को शेयरों (जिन्हें यूनिट कहा जाता है) की बिक्री करके उस धन राशि को लाभप्रद व्यवसायों में निवेश कर देता है। म्यूचुअल फंड के पास संचित शेयरों के मूल्य बढ़ने पर उसका लाभ बढ़ता है, जिसे प्रशासनिक व्यय को समायोजित करके म्यूचुअल फंड के यूनिट धारियों में आवंटित कर दिया जाता है।

Mutual inter-dependence (म्यूचुअल इंटरडिपेंडेंस) **पारस्परिक अन्तर्निर्भरता**

विभिन्न फर्मों के पारस्परिक व्यवहार का दिग्दर्शक। प्रत्येक फर्म पर उसके प्रतिद्वन्द्वियों की रणनीतियों का प्रभाव होता है, और इसकी प्रत्येक रणनीति प्रतिद्वन्द्वियों को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, एक फर्म अपनी कीमत में कटौती करके यह अपेक्षा कर सकती है (स्वतंत्र रूप से) कि उसकी बिक्री में काफी वृद्धि हो जाएगी। परन्तु उसके प्रतिद्वन्द्वी भी यदि अपनी–अपनी कीमतों में कटौती कर दें तो उस फर्म की बिक्री या तो बहुत कम बढ़ेगी, या उसमें कमी भी हो सकती है।

इस प्रकार की पारस्परिक अन्तर्निर्भरता प्रायः अल्पाधिकार (oligopoly) वाले बाज़ार में देखी जा सकती है।

□□□

N

NAFTA (North American Free Trade Agreement) (नॉर्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट)
उत्तरी अमरीकी मुक्त व्यापार समझौता

1989 में स्थापित एक स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र, जिसमें सं. रा. अमरिका तथा कनाड़ा शामिल हैं। इस समझौते के अन्तर्गत 10 वर्ष की अवधि के लिए दोनों देशों में विनिर्मित वस्तुओं, कच्चे माल तथा कृषि जन्य जिंसों के व्यापार से सम्बद्ध सभी अवरोधों को समाप्त करने पर सहमति हुई थी।

NASDAQ (National Association of Securities Dealers Automated Quotation System) (नैस्डॉक)
सं.रा. अमेरिका का एक प्रतिभूति/शेयर बाजार

जिसे प्रारम्भ में नियमित स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध नहीं हुए शेयरों के तात्कालिक लेऩ देने हेतु स्थापित किया गया था। अब यह कम्प्यूटर आधारित व्यवस्था है, तथा न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज के समानान्तर कार्य कर रही है।

Nash equilibrium (नैश इक्वीलिब्रियम) **नैश साम्य**

ऐसी स्थिति, जिसमें दो या अधिक विक्रेता अपनी–अपनी रणनीतियों पर इस विश्वास के साथ निर्णय लेना चाहते हैं कि अन्य विक्रेताओं द्वारा अपनाई गई रणनीतियों को देखते हुए उनकी अपनी रणनीति में परिवर्तन से किसी भी विक्रेता को लाभ नहीं होगा। जब तक विक्रेताओं में परस्पर स्पर्द्धा की रणनीति चलेगी तब तक यथास्थिति बनी रहेगी।

National accounts (नेशनल एकाउंट्स) **राष्ट्रीय आय के लेखे**

राष्ट्रीय आय से सम्बद्ध कुल लेखे, जिनमें सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), राष्ट्रीय आय (मूल्य ह्रास को घटाकर), कुल उपभोग, कुल बचत, कुल निवेश, सरकारी व्यय, निर्यात, आयात आदि के लेखे शामिल हैं। इनमें स्टॉक तथा प्रवाह, दोनों से ही सम्बद्ध आंकड़े शामिल होते हैं।

National Debt (नेशनल डैट) **राष्ट्रीय कर्ज़**

किसी देश की सरकार पर बकाया ऋण। यह ऋण देश के लोगों से प्राप्त किया गया हो, अथवा विदेशी संस्थाओं या सरकारों से लिया गया हो। कभी-कभी जितना स्वदेशी ऋण दिखाई देता है, वास्तविक ऋण उससे कम हो सकता है क्योंकि भविष्य निधि, पेंशन कोष आदि सरकारी कोषों में काफी राशि जमा हो सकती है। प्रायः सरकार को स्वदेशी ऋणों की तुलना में विदेशी ऋण का भार अधिक पीड़ित करता हैं क्योंकि उसके मूल धन तथा ब्याज़ का भुगतान डालर या पाउंड–स्टर्लिंग में करना पड़ता है।

National Development Council (NDC) (नेशनल डेवलपमेंट काउंसिल) **राष्ट्रीय विकास परिषद्**

भारत में केन्द्र सरकार एवं राज्यों की पंचवर्षीय योजनाओं के दृष्टिकोण एवं आकार को स्वीकृत करने हेतु स्थापित की गई संस्था। इसके अध्यक्ष देश के प्रधानमंत्री तथा सदस्यों में योजना आयोग के सदस्य तथा सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय वित्तमंत्री, उद्योग मंत्री, वाणिज्य मंत्री आदि शामिल किए जाते हैं।

National income (नेशनल इन्कम) **राष्ट्रीय आय**

देश में विद्यमान संसाधनों के स्वामियों द्वारा एक वर्ष में प्राप्त की गई मौद्रिक आय का योग। राष्ट्रीय आय तथा शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product) समान होते हैं। शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करने हेतु सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के सकल मूल्य (GNP) में से मूल्य ह्रास को घटा दिया जाता है।

National product (नेशनल प्रोडक्ट) **राष्ट्रीय उत्पाद**

देश के नागरिकों द्वारा किसी वर्ष में उपलब्ध संसाधनों की सहायता से उत्पादित की गई वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्य। इनमें देश के बाहर रहने वाले नागरिकों की सेवाओं का मूल्य जोड़ा जाता है लेकिन देश में कार्यरत विदेशी नागरिकों के संसाधनों से प्राप्त आय को घटा दिया जाता है।

Nationalization (नेशनलाइजेशन) **राष्ट्रीयकरण**

निजी क्षेत्र में कार्यरत किसी फर्म का स्वामित्व एवं प्रबन्ध सरकार द्वारा ग्रहण कर लेना। प्रायः किसी भी कम्पनी या बैंक का राष्ट्रीयकरण इसलिए किया जाता है कि ऐसा करना देश की जनता (उपभोक्ताओं, श्रमिकों आदि) के हित में है। राष्ट्रीयकरण के पश्चात् इसके मालिकों को उपयुक्त मुआवज़ा दिया जाता है। इसके प्रबन्ध का दायित्व सरकार के पास निहित हो जाने पर उत्पादित वस्तु की कीमत सरकारी नीति के अनुरूप निर्धारित की जाती है। राष्ट्रीयकरण से प्रायः श्रमिकों तथा उपभोक्ताओं को राहत मिलती है, लेकिन कर्मचारियों में कार्य के प्रति निष्ठा, एवं दक्षता के प्रति उदासीनता आ सकती है, क्योंकि "सरकारी कर्मचारी" बन जाने पर उन्हें अपने पद की सुरक्षा की अनुभूति होने लगती है जिससे उनके निरंकुश बनने की सम्भावना भी बढ़ जाती है।

Natural growth rate (नेचुरल ग्रोथ रेट) **प्राकृतिक संवृद्धि या विकास दर**

राष्ट्रीय आय की वह वृद्धि दर, जिस पर बेरोज़गारी की दर स्थिर रहती है। यदि कोई तकनीकी प्रगति न हो तथा श्रम शक्ति की वार्षिक वृद्धि g हो तो यही वृद्धि राष्ट्रीय आय में भी होने पर बेरोज़गारी की दर यथावत् रहती है। यदि इसमें तकनीकी प्रगति की दर (p) को जोड़ दिया जाए, तो प्राकृतिक संवृद्धि दर $g+p$ मानी जाएगी।

Natural monopoly (नेचुरल मोनोपोली) **प्राकृतिक एकाधिकार**

यदि किसी बाज़ार में एक फर्म का आकार इतना बढ़ जाए कि वह पैमाने की

मितव्ययताओं के कारण न्यूनतम लागत पर वस्तु को बेचने में समर्थ हो जाए तो उसके सभी प्रतिद्वन्द्वी बाज़ार से बाहर हो जाते हैं। इस प्रकार न्यूनतम लागत पर वस्तुओं को बेचने के कारण प्राप्त एकाधिकार को प्राकृतिक एकाधिकार कहा जाता है।

Natural rate of interest (नेचुरल रेट ऑफ इन्टरेस्ट)

ब्याज की स्वाभाविक या प्राकृतिक दर

ब्याज़ की वह दर, जो स्थिर मूल्य–स्तर वाली अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियों के निर्दिष्ट स्तर के अनुरूप हो। यदि बाज़ार में ब्याज़ की दर इसके प्राकृतिक स्तर से कम हो तो इससे आर्थिक गतिविधियों में तीव्रता आएगी, और अन्ततः दीर्घकाल में इसके कारण कीमत स्तर एवं मज़दूरी दरों में वृद्धि होगी।

Natural rate of unemployment (नेशनल रेट ऑफ अन–एँम्प्लॉयमेंट)

बेरोज़गारी की स्वाभाविक दर

मुद्रा स्फीति की स्थिर दर पर विद्यमान बेरोज़गारी की दर। यह प्रधानतः संस्थागत घटकों, जैसे बाज़ार में एकाधिकार की स्थिति, सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था, न्यूनतम मज़दूरी के कानून, श्रम की गतिशीलता, श्रमिक संघों की शक्ति आदि पर निर्भर करती है, जिन्हें सरकारी नीतियों द्वारा प्रभावित किया जा सकता है। वास्तविक बेरोज़गारों की विगत संख्या भी इसे प्रभावित कर सकती है।

Natural resources (नेचुरल रिसोर्सेज़)

प्राकृतिक साधन खनिज पदार्थों, भूमि (मिट्टियों), पानी, जंगलों आदि प्रकृति प्रदत्त संसाधन

ये किसी भी फर्म या किसान को उत्पादन प्रक्रिया हेतु कच्चा माल या आधारभूत इनपुट्स की आपूर्ति करते हैं। प्राकृतिक साधनों में जंगलों मिट्टियों आदि की सुरक्षा एवं संरक्षा मानव द्वारा की जा सकती है, लेकिन खनिज पदार्थो का एक बार उपयोग होने के पश्चात् उनका पुनर्भरण नहीं किया जा सकता। किसी भी देश के आर्थिक विकास में श्रम तथा पूँजी के साथ–साथ प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता भी होनी चाहिए।

Natural wastage (नेचुरल वेस्टेज) **स्वाभाविक निष्क्रमण**

वे श्रमिक, जो स्वेच्छा से अपने पद का परित्याग करते हैं। स्वैच्छिक सेवा निवृति (VRS) इसका एक उदाहरण है। प्रायः सेवानिवृति की आयु तक पहुंचने पर, अथवा असाध्य रोग के कारण श्रमिक को काम से हटाया जाता है और उसमें उसकी विवशता निहित रहती है। उसे प्राकृतिक या स्वाभाविक निष्क्रमण नहीं माना जाता।

Near money (नियर मनी) **मुद्रा की निकटतम प्रतिस्थापन वाली प्रतिभूतियां**

अल्पकाल में परिपक्व होने वाली प्रतिभूतियाँ तथा ऐसे प्रपत्र जिन पर सरकारी गांरटी होने के साथ जिन्हें तुरन्त ही मुद्रा के रूप में परिवर्तित किया जा सकता हो।

Necessary and sufficient conditions (नेसेसरी एण्ड सफीशिएँट कन्डीशन्स) **आवश्यक तथा पर्याप्त शर्तें**

किसी भी आर्थिक मॉडल से सम्बन्धित अधिकतम या न्यूनतम मूल्य ज्ञात करने हेतु *आवश्यक या प्रथम क्रम की शर्त* यह है कि उसके प्रथम अवकलज को शून्य के समान रखा जाए। अधिकतम लाभ उत्पादन के उस स्तर पर प्राप्त होता है जब सीमान्त लाभ शून्य हो (यानी सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत समान हों)। इसकी पर्याप्त या द्वितीय क्रम की शर्तें यह होगी की लाभ फलन का द्वितीय अवकलज शून्य से कम यानी ऋणात्मक हो $\left(\frac{d^2TR}{dQ^2} < \frac{d^2TC}{dQ^2}\right)$। परन्तु किसी फलन का न्यूनतम मूल्य ज्ञात करने हेतु जहां प्रथम क्रम की या आवश्यक शर्त वही रहती है, द्वितीय क्रम की या पर्याप्त शर्त के अनुसार द्वितीय अवकलज धनात्मक होना चाहिए।

Necessity (नेसेसिटी) **अनिवार्यता**

ऐसी वस्तु या सेवा, जिसका उपभोग आवश्यक रूप में करना होाता है। इसीलिए इसकी कीमत में वृद्धि होने पर इसकी माँग में अनुपात से कम कमी होती है। ऐसी वस्तु या सेवा की माँग में आय के साथ–साथ वृद्धि तो होती है परन्तु वह भी अनुपात से कम। इस प्रकार अनिवार्यता की माँग *आय व कीमत दोनों ही दृष्टि से बेलोच होती है।*

Negative equity (नेगेटिव इक्वीटी) **ऋणात्मक अंशधारिता**

यदि किसी फर्म द्वारा अपनी सम्पत्ति के मूल्य से अधिक ऋण ले लिए जाएँ तो ऋणात्क अंशधारिता की स्थिति बन जाती है। प्रायः इसे ऋणात्मक शुद्ध मूल्य (Negative Net Worth) की स्थिति भी कहते हैं।

Negative income tax (नेगेटिव इन्कम टैक्स) **ऋणात्मक आयकर**

एक ऐसी व्यवस्था, जिसमें आयकर तथा सामाजिक सुरक्षा दोनों को शामिल कर लिया जाता है। प्रायः कम आय वाले व्यक्तियों या परिवारों को सरकार की ओर से भुगतान किया जाता है ताकि वे अपना जीवन यापन कर सकें। परन्तु जिन व्यक्तियों की आय एक स्तर से ऊपर होती है न केवल उन्हें सरकारी सहायता के लाभ से ही वंचित किया जाता, अपितु आयकर भी चुकाना पड़ता है।
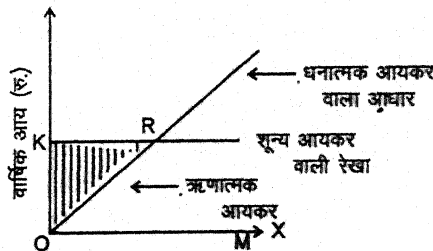
उपरोक्त चित्र में जिन परिवारों की आय OK के स्तर से कम (R बिन्दु तक) है उन्हें ऋणात्मक आयकर के दायरे में रखा जाता है। उन्हें सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा हेतु अन्तरण आय प्रदान की जाती है।

Neo-classical economics (नियो क्लासिकल इकोनोमिक्स) **नव संस्थापक अर्थशास्त्र**

मार्शल द्वारा प्रतिपादित विचार धारा। इसके अन्तर्गत धन को नहीं, अपितु धन के मानव कल्याण हेतु उपयोग को अर्थशास्त्र की विषय वस्तु माना गया। इसमें साधनों के इष्टतम आवंटन हेतु सीमान्त शर्तों की अनुपालना को प्राथमिकता दी गई। मार्शल ने यह भी बताया कि निरन्तर अपयोग करने से वस्तु की सीमान्त उपयोगिता में अथवा साधन की समीन्त उत्पादकता में ह्रास प्रारम्भ हो जाता है। मार्शल ने माँग, पूर्ति तथा बाज़ार में कीमत निर्धारण की प्रक्रिया का भी विश्लेषण किया जबकि इससे पहले श्रम की मात्रा को ही कीमत का आधार बतलाया जाता था।

Net capital formation (नैट केपीटल फॉर्मेशन) **शुद्ध निवेश, शुद्ध पूँजी निर्माण**

देश या किसी अर्थव्यवस्था में पूँजी स्टॉक में हुई वृद्धि। इसके अनुमान हेतु कुल निवेश में से पूँजी के मूल्य ह्रास को घटाया जाता है

Net domestic product (नैट डोमेस्टिक प्रॉडक्ट) **शुद्ध घरेलू उत्पाद**

किसी देश में कार्यरत उत्पादन के संसाधनों से प्राप्त कुल आय का योग। इसमें से पूँजी के मूल्य ह्रास को घटाया जाता है।

Net economic welfare (नैट इकोनोमिक वैलफेयर) **शुद्ध आर्थिक कल्याण**

प्रति व्यक्ति आय की अपेक्षा आर्थिक कल्याण की अधिक व्यापक अवधारणा। इसमें आय के अतिरिक्त आर्थिक गतिविधियों से सम्बद्ध प्रयास की लागत, बाल कल्याण, महिलाओ का सशक्तिकरण, पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षा आदि से सम्बद्ध बिन्दुओं को भी शामिल किया जाता है। इनमें से कुछ को प्रत्यक्षतः मुद्रा के रूप में मापना सम्भव नहीं होता, लेकिन उनसे होने वाले लाभों को जोड़कर, तथा प्रतिकूल प्रभावों की लागतों को घटाकर आर्थिक कल्याण का माप लिया जाता है। इन सभी में पर्याप्त व्यक्तिपरकता होने के कारण शुद्ध आर्थिक कल्याण के माप को प्रायः सही नहीं माना जाता।

Net exports (नैट एक्सपोर्ट्स) **शुद्ध निर्यात**

आयातों को निर्यातों में से घटाने पर प्राप्त व्यापार शेष। यदि यह शेष ऋणात्मक हो, तो आयातों का मूल्य निर्यातों से अधिक माना जाएगा।

Net foreign assets (नैट फॉरेन एसेट्स) **शुद्ध विदेशी सम्पत्तियां**

किसी देश के नागरिकों के स्वामित्व वाली विदेश–स्थित सम्पत्तियों में से अप्रवासी विदेशी नागरिकों की उस देश में स्थित सम्पत्तियों को घटाने पर प्राप्त राशि। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, तथा किसी देश की कम्पनियों में विदेशी व्यक्तियों या संस्थाओं के निवेश को भी विदेशियों की सम्पत्ति का ही भाग माना जाता है।

Net investment (नेट इन्वेस्टमेंन्ट) **शुद्ध निवेश**

(देखिए net capital formation)

Net national product (NNP) (नैट नेशनल प्रोडक्ट) **शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद**

सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से पूँजी के मूल्य ह्रास को घटाने पर प्राप्त कुल राशि। देश में उपलब्ध संसाधनों से उत्पादित सभी वस्तुओं व सेवाओं के बाज़ार मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहते हैं। इसमें से पूँजी के मूल्य ह्रास या क्षरण को घटाने पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद प्राप्त होता है।

Net present value (नैट प्रज़ेन्ट वैल्यू) **NPV** **शुद्ध वर्तमान राशि**

किसी भी आगामी वर्ष में प्राप्त होने वाली आय को निर्दिष्ट दर से बट्टाकरण करने पर प्राप्त मूल्य। मान लीजिए एक वर्ष बाद किसी निवेश से 1.0 लाख रू का लाभ प्राप्त होने वाला है, तथा इसके लिए 12 प्रतिशत की बट्टा दर प्रयुक्त की जाती हैं। ऐसी दशा मे शुद्ध वर्तमान राशि

$$\frac{1.0 \text{ लाख रुपए}}{(1 + 0.12)} = 89{,}300 \text{ रू होगा।}$$

इसी प्रकार दो वर्ष के अन्तराल पर 1.0 लाख रूपए की शुद्ध वर्तमान राशि

$$\frac{1.0 \text{ लाख रुपए}}{(1 + 0.12)^2} = 79{,}700 \text{ रू होगी।}$$

Net present worth (नैट प्रजेंट वर्थ) **NPW** **शुद्ध वर्तमान मूल्य**

शुद्ध वर्तमान अर्घ । भविष्य के सभी वर्षो में किसी निवेश से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय के *बट्टा कृत मूल्य में से पूँजीगत लागत को घटाने पर प्राप्त राशि।* यह राशि धनात्मक होने पर ही प्रस्तावित निवेश को वित्तीय दृष्टि से व्यवहार्य माना जाता है।

Net profit (नैट प्रॉफिट) **शुद्ध लाभ**

किसी संस्थान या फर्म के सभी खर्चों का समायोजन करने के बाद प्राप्त लाभ। इसकी गणना करों का दायित्व चुकाने से पूर्व अथवा करों का भुगतान करने के बाद की जा सकती है।

Net tangible assets (नैट टैन्जीबल एसेट्स) **शुद्ध भौतिक सम्पत्तियाँ**

किसी संगठन की सभी भौतिक सम्पत्तियों के मूल्य में से उसके वर्तमान दायित्वों को घटाने पर प्राप्त राशि। यह सभी सम्पत्तियों में से सभी दायित्वों को घटाने पर प्राप्त राशि से भिन्न है, क्योंकि उस संदर्भ में सम्पत्तियों में साख या प्रतिष्ठा (goodwill) के मूल्य को भी शामिल किया जाता है।

Net transfer income from abroad (नैट ट्रांसफर इन्कम फ्रॉम एब्रोड)

विदेशों से प्राप्त शुद्ध हस्तांतरण आय

देश के नागरिकों को विदेशों से प्राप्त आय में से विदेशियों द्वारा देश के बाहर प्रेषित

आय को घटाने के बाद प्राप्त राशि।

Net worth (नैट वर्थ) **शुद्ध मूल्य; शुद्ध अर्घ**

किसी संगठन, संस्था या फर्म की देनदारियों को घटाने के बाद उसकी सम्पत्तियों का शुद्ध मूल्य। शुद्ध मूल्य का *सही माप* उसी स्थिति में लिया जा सकता है जब सम्पत्तियों का मूल्य निरपेक्ष तथा निष्पक्ष रूप में अनुमानित किया गया हो।

Net yield (नैट यील्ड) **शुद्ध प्रतिफल**

किसी शेयर या प्रतिभूति पर प्राप्त होने वाले लाभांश या ब्याज (आयकर घटाने के बाद) का उसके मूल्य में अनुपात।

Neutral taxes (न्यूट्रल टैक्स) **तटस्थ कर**

वे कर, जिनसे आर्थिक प्रेरणाओं पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता तथा इस कारण संसाधनों के आवंटन की दक्षता प्रभावित रहती है। उदाहरण के लिए, एक मुश्त कर का साधनों के आवंटन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता। परन्तु प्रगतिशील करों (आयकर आदि) या बहुत ऊँची दर वाले आयात या बिक्रीकरों से कर–वंचना तथा काला बाजारी को प्रोत्साहन मिलता है।

Neutrality of money (न्यूट्रालिटी ऑफ मनी) **मुद्रा की तटस्थता**

ऐसी मान्यता है कि मुद्रा की मात्रा तथा इसमें होने वाली वृद्धि अर्थव्यवस्था के व्यवहार को प्रभावित नहीं करती। परन्तु प्रायः अल्पकाल में ऐसा नहीं हो पाता क्योंकि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होने पर कीमतों पर अवश्य प्रभाव होता है, और इससे आर्थिक गतिविधियां निश्चित रूप से प्रभावित होती हैं। दीर्घकाल में मुद्रा स्फीति की दर मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि पर निर्भर करती है।

New product (न्यू प्रोडक्ट) **नव-उत्पाद**

ऐसी वस्तु या सेवा, जो विद्यमान वस्तुओं या सेवाओं से भिन्न हो तथा जिसकी उपभोक्ता एक नव–उत्पाद के रूप में पहचान करें। इसमें कितनी नवीनता है यह *उपभोक्ताओं की मानसिकता* पर निर्भर करता है।

New protectionism (न्यू प्रोटेक्शनिज्म) **नवसंरक्षण वाद**

संरक्षणवाद की नए तर्कों के साथ पुनरावृत्ति। प्रायः एक देश अन्य देशों से अपने उद्योगों को प्रति स्पर्द्धा करने से रोकने हेतु आयातों पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध या अत्यधिक ऊंची दर से आयात कर लगा देता है। आधुनिक संदर्भ में भी यह तर्क दिया जाता है कि अन्य देशों के उद्योगों में विशाल स्तरीय उत्पादन के कारण उत्पादन लागतें कम होती हैं, जबकि हमारे देश में पैमाना छोटा होने के कारण लागतें ऊँची होती हैं, और इस कारण हमारा **मैदान समान स्तरीय नहीं** है। इसी के चलते हमें अपने उद्योगों को संरक्षण देना चाहिए।

No arbitrage (नो आर्बीट्रेज) **पुनर्बिक्री सम्भव न होना**

कभी–कभी वस्तु की लागत काफी अधिक होने के कारण उसकी बिक्री हेतु विक्रेता

तृतीय श्रेणी के कीमत विभेद की नीति अपनाता है। इस नीति के अन्तर्गत एक ही वस्तु की अलग–अलग बाजारों में अलग अलग कीमतें इस प्रकार ली जाती हैं कि कम कीमत पर खरीदने वाले क्रेता अधिक कीमत वाले बाज़ार में वस्तु को नहीं बेच पाते।

Nominal exchange rate (नॉमिनल एक्सचेंज रेट) **अ-वास्तविक विनियम दर**
किसी करेंसी की वह विनियम दर, जिसे वर्तमान मूल्यों में व्यक्त किया जाए, तथा मुद्रा स्फीति के लिए कोई समायोजन न किया जाए।

Nominal interest rate (नॉमिनल इन्टरेस्ट रेट) **अवास्तविक ब्याज़ दर**
किसी ऋण पर चुकाई गई ब्याज़ दर, जिसे मुद्रा स्फीति के आधार समायोजित न किया गया हो।

Nominal price (नॉमिनल प्राइस) **अवास्तविक कीमत**
चालू कीमतों पर आधारित किसी वस्तु या प्रतिभूति का मूल्य। इस मूल्य का मुद्रा स्फीति के आधार पर कोई समायोजन नहीं किया जाता ।

Nominal protection (नॉमिनल प्रोटेक्शन) **अवास्तविक संरक्षण**
आयात कर लगाने पर किसी वस्तु की कीमत में हुई आनुपातिक वृद्धि । इसके फलस्वरूप देश में आयातित वस्तु की कीमत प्रायः देश में विद्यमान कीमत से अधिक हो जाती है। यह "प्रभावी" या वास्तविक संरक्षण से भिन्न है जिसके अन्तर्गत कच्चे माल के आयात पर कम दर से तथा तैयार वस्तु के आयात पर ऊँची दर से कर लगाया जाता है।

Nominal values (नॉमिनल वेल्यूज) **अवास्तविक मूल्य**
सकल घरेलू उत्पाद या निवेश आदि सकल मूल्यों को चालू मूल्यों के आधार पर मापना । ये राशियाँ स्थिर मूल्यो पर आधारित राशियों से भिन्न है, जिनके अन्तर्गत वर्तमान वर्ष मे उत्पादित वस्तुओं या सेवाओं को किसी आधार वर्ष में प्रचलित मूल्यों या कीमतों से गुणा किया जाता है।

Nominee holding (नॉमिनी होल्डिंग) **नामिति के पास विद्यमान शेयर**
वास्तविक स्वामी की अपेक्षा किसी अन्य पंजीकृत धारक के पास शेयरों को रखना। प्रायः ऐसा सुविधा या सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता है।

Non accelerating inflation rate of unemployment (NAIRU)
(नॉन एक्सलेटिंग रेट ऑफ एनएंप्लॉयमेंट) **स्थिर मुद्रा-स्फीति पर बेरोज़गारी**
बेरोज़गारी की वह दर जिस पर मुद्रा स्फीति की दर यथावत् रहती है। जिस स्थिति में माँग के दबाव पर स्फीति की दर निर्भर करती है, वहां सभी उत्पादक अन्य उत्पादकों की प्रत्याशा की अपेक्षा अधिक दर से कीमतें बढ़ाते हैं, और इसके फलस्वरूप मुद्रा स्फीति की गति तीव्र हो जाती है। इसके विपरीत यदि माँग कम है तो प्रत्येक विक्रेता अन्य विक्रेताओं की प्रत्याशा की अपेक्षा कीमतों में धीमी गति से वृद्धि करती है। नाइरू वह बेरोज़गारी की दर है **जिसके अन्तर्गत फर्म अन्य**

फर्मो की प्रत्याशा के अनुरूप ही अपनी कीमत में वृद्धि करती है। बेरोज़गारी की प्राकृतिक दर श्रम की माँग तथा पूर्ति के अनुरूप बाज़ार की उन शक्तियों को व्यक्त करती है जो न तो विद्यमान मुद्रा स्फीति की दर को बढ़ाती है और न ही कम करती है।

Non-discrimination (नॉन डिस्क्रिमिनेशन) **भेदभाव रहित व्यवहार**

प्रायः एक ही व्यक्ति अलग–अलग व्यक्यिों के साथ अलग–अलग व्यवहार करता है, तथा इसके पीछे धर्म, जाति, रंग, लिंग या भाषा सबन्धी कारण निहित होते हैं। परन्तु भेद भाव रहित व्यवहार की नीति में इन सभी को समान स्तर पर रखा जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सभी विदेशियों के साथ समतापूर्ण व्यवहार किया जाता है।

Non-durable consumer good (नॉन ड्यूरेबल कंज़ूमर गुड)

तत्काल उपभोग्य वस्तु

ऐसी वस्तु, जिसका उपभोग एक बार ही किया जा सकता है। इनमें चपाती, चावल, अंडा, सब्जी, फल आदि शामिल हैं।। इसके विपरीत स्थायी उपभोग्य वस्तुएँ दीर्घकाल तक उपयोग में लाई जा सकती है। फर्नीचर, कटलरी, घडी, मेज, टी. वी. आदि इसके उदाहरण हैं।

Non-inflationary growth (नॉन इंफ्लेशनरी ग्रोथ) **स्फीति रहित विकास**

आर्थिक गतिविधियों में मुद्रा स्फीति के बिना वृद्धि करना। समष्टिगत आर्थिक प्रबन्धन में यह एक आदर्श प्रवृत्ति मानी जाती है। परन्तु कुछ अर्थशास्त्री यह तर्क देते हैं कि अर्थव्यस्था के दीर्घकालीन विकास हेतु थोड़ी बहुत मूल्य वृद्धि होनी ही चाहिए।

Non-linear function (नॉन लीनियर फंक्शन) **अ-रैखिक फलन**

एक ऐसा फलन, जिसमें आश्रित तथा स्वतंत्र चरों के बीच सीधा एवं रैखिक सम्बन्ध नहीं हो। यदि $Y = ax_1 + bx_2^2 - c x_3^3$ हो तो वह अरैखिक फलन होगा।

Non-marketed economic activity (नॉन मॉर्केटेड इकोनोमिक एक्टिविटी)

ऐसी आर्थिक गतिविधियां जिनका बाजार में कोई लेखा जोखा नहीं होता

एक कृषक के पारिवारिक सदस्य उसके खेत में काम करें, या दूकान के मालिक का बेटा अथवा भाई उसकी सहायता करे तो यह गतिविधि आर्थिक होने पर भी इसका नगद भुगतान नहीं किया जाता, और इसलिए प्रायः राष्ट्रीय आय की गणना में इसे शामिल नहीं किया जाता।

Non-monetary job characteristics (नॉन मानेटरी जॉब केरेक्टरिस्टिक्स)

वित्त या मुद्रा के अतिरिक्त काम से सम्बद्ध अन्य घटक

इनमें काम के घंटे, कार्य करने की दशाएँ, छुट्टियाँ, प्रशिक्षण का प्रावधान, पदोन्नति के अवसर, कार्य–स्थल की स्थिति, नियोक्ता या उच्च अधिकारी का व्यवहार तथा साथी श्रमिकों की प्रकृति, आदि शामिल होते हैं। इसके विपरीत मौद्रिक या वित्तीय घटकों में पगार, भत्ते, भविष्य निधि, पेन्शन का अधिकार, बीमा सुविधा, स्वास्थ्य व

चिकित्सा सम्बन्धी सुविधा, घर या वाहन के लिए उपलब्ध ऋण सुविधाएँ, शामिल होती हैं। प्रायः श्रमिक किसी भी काम के लिए स्वीकृति देने से पूर्व उसे उपलब्ध होन वाले वित्तीय तथा गैर–वित्तीय, *दोनों ही प्रकार के लाभों* पर विचार करता है।

Non-parametric statistics (नॉन पेरामेट्रिक स्टेटिस्टिक्स)

गैर फलनिक सम्बन्ध वाली सांख्यिकीय विधियाँ

क्रमान्तर विधि या "रैंक कोरीलेशन" ऐसी ही विधि है, जिसमें सुन्दरता, बुद्धिमत्ता, कड़ुवाहट आदि प्राचलों को मापना सम्भव न होने पर भी इनको क्रमिक रूप में रखते हुए इन्हीं क्रमों के आधार पर दो श्रेणियों (सीरीज़) के बीच सह–सम्बन्ध की समीक्षा की जाती है।

Non-performing debt (नॉन पर्फोमिंग डैट)

ऐसा ऋण जिसके मूलधन तथा ब्याज का भुगतान नहीं हो पा रहा हो

इस प्रवृत्ति से ऋणदाता बैंक या संस्थान को प्रत्यक्ष क्षति तो होती ही है, उन्हें ऐसे व्यक्तियों/फर्मों को ऋण दे डालने से उत्पन्न अपयश भी झेलना पड़ता है।

Non-price competition (नॉन प्राइस कॉम्पीटीशन) **कीमत-इतर प्रतियोगिता**

एक विक्रेता अन्य विक्रेताओं के साथ कीमत के स्तर पर ही स्पर्द्धा करे यह जरूरी नहीं है। वस्तु की डिजाइन, बिक्री के उपरान्त की सेवा, होम डिलीवरी, अन्य सुविधाएँ आदि, पैकिंग, विक्रय कौशल आदि के माध्यम से भी वह अन्य विक्रेताओं के साथ प्रतियोगिता कर सकता है।

Non-profit making organizations (नॉन प्रॉफिट मेकिंग ऑर्गेनाइजेशन)

अ-लाभकारी संगठन

ऐसा संगठन जिसका प्राथमिक उद्देश्य लाभ–अर्जन करने की अपेक्षा जन–सेवा या सदस्यो में सौहार्द बढ़ाने का हो। एक चेरिटेबल ट्रस्ट या क्लब इसी का उदाहरण है।

Non-satiation (नॉन सेटिएशन) **अन्तहीन लालसा**

किसी उपभोक्ता को अधिक से अधिक मुद्रा दे दी जाए और यह क्रम अनवरत हो, तब भी उसकी लालसा का अन्त नहीं होगा। एक वस्तु के प्रति उसकी माँग एक सीमा तक रूक जाएगी परन्तु फिर नई वस्तु या वस्तुओं की माँग उत्पन्न हो जाएगी।

Non-systematic risk (नॉन सिस्टेमेटिक रिस्क) **अव्यवस्थित जोखिम**

कुछ परियोजनाएँ इस प्रकार की होती हैं कि उनमें प्रत्येक के प्राचल अविवेकपूर्ण होने के कारण उनमें निवेश करना काफी जोखिमपूर्ण हो सकता है। इनमें से कुछ जोखिम तो बीमा योग्य हो सकती हैं, पर अन्य ऐसी नहीं होतीं।

Non-tariff barriers (नॉन टैरिफ बेरियर्स) **ग़ैर-तटकर अवरोध**

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रायः आयात करों के अलावा मात्रात्मक प्रतिबन्ध, किन्हीं वस्तुओं के आयात का पूर्ण निषेध, आयातकर्ताओं के लिए कड़े प्रशासनिक नियम,

आयात के मूल्य को अग्रिम रूप से जमा कराना, अभ्यंश प्रणाली, आयात हेतु विदेशी विनिमय की विलम्बित उपलब्धता, आदि हैं जिनके कारण आयातकर्ता परेशान होकर आयात करना ही छोड़ देते हैं, या इन्हें कम कर देते है।

Non-tradables (नॉन ट्रेडेबल्स) **ऐसी सेवाएँ तथा वस्तुएँ जिनका क्रय-विक्रय अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में नहीं हो सकता**

चिकित्सा हेतु परम्परागत भारतीय घरेलू नुस्खे इसका एक उदाहरण है। वस्तुतः आधुनिक युग में तकनीकी प्रगति के कारण प्रत्येक वस्तु या सेवा का आयात या निर्यात सम्भव हो गया है, तथापि प्रत्येक देश में ऐसी विलक्षण वस्तु या प्रतिभा विद्यमान हो सकती है जिसका निर्यात सम्भव नहीं होता।

Non-trading goods and services (नॉन ट्रेडिंग गुड्स एण्ड सर्विसेज) **बाजार में प्रविष्ट न होने वाली वस्तुएँ तथा सेवाएँ**

आय तथा व्यय के लेखे तैयार करते समय प्रायः उन्हीं साधनों को व्यय निर्धारण में शामिल किया जाता है जिनकी नियोक्ता कीमत चुकाता है, क्योंकि ये सभी बाजार में उपलब्ध होती हैं। परन्तु परिवार के सदस्यों की सेवाओं, स्वयं के मकान का किराया, कृषक के पास उपलब्ध बीज, खाद आदि की लागत को इन लेखों में शामिल नहीं किया जाता *क्योंकि ये बाजार में नहीं खरीदी जातीं*।

Normal distribution (नॉर्मल डिस्ट्रीब्यूशन) **सामान्य वितरण**

किसी भी श्रेणी में समंकों का वितरण इस प्रकार होता है कि औसत (केन्द्रीय माध्य) समंक केन्द्र में एवं उससे छोटे व बड़े समंकों को पहले तथा बाद में इस प्रकार रखा जाता है कि वे एक घंटी का आकार ले लेते हैं।
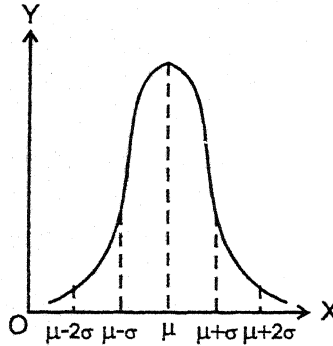
चित्र में प्रस्तुत समंकों का उपरोक्त वितरण सामान्य वितरण माना जाता है।

Normal product (नॉर्मल प्रोडेक्ट) **सामान्य वस्तु**

एक वस्तु या सेवा, जिसकी माँग की आय–लोच धनात्मक है यानी आय बढ़ने पर क्रेता उसकी अधिक मात्रा ख़रीदते हैं। इसी प्रकार वस्तु की कीमत कम होने

पर उपभोक्ता की वास्तविक आय बढ़ने के कारण भी उपभोक्ता उसकी अधिक मात्रा ख़रीदते हैं।

Normal profit (नॉर्मल प्रॉफिट) **सामान्य लाभ**

प्रायः लागत का आकलन करते समय फर्म सामान्य लाभ को शामिल करती है। यह लाभ का वह स्तर है जो उद्यमी की जोखिम वहन करने का प्रतिफल है, तथा इसके प्राप्त न होने पर वह अपना व्यवसाय बन्द कर सकता है। उद्यमी को कम से कम वह पारिश्रमिक ज़रूर मिलना चाहिए। इस प्रकार सामान्य लाभ कुल लागत (TC) का एक हिस्सा बन जाता है। यदि वस्तुओं को बेचने से प्राप्त आगम (TR) तथा कुल लागत समान हों (TR = TC) तो भी उद्यमी को सामान्य लाभ तो अवश्य प्राप्त हो जाएगा।

Normative economics (नॉर्मेटिव इकोनोमिक्स) **आदर्शवादी अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र में "क्या होना चाहिए" का विश्लेषण। देश में बेरोजगारी की समस्या है, तो यदि आर्थिक विश्लेषण में इस समस्या के समाधान भी बताए जाएँ, तो यह आदर्शवादी आर्थिक विश्लेषण कहलाएगा।

Null hypothesis (नल हाइपोथेसिस) **ऋणात्मक परिकल्पना**

यह परिकल्पना कि किसी चर का कोई प्रभाव नहीं है। प्रायः सांख्यिकीय आंकड़ों का विश्लेषण करने से पूर्व यही परिकल्पना ली जाती है कि दो श्रेणियों में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। उदाहरण के लिए, आय तथा बचत के सम्बन्धों की समीक्षा करते समय, ऋणात्मक परिकल्पना यह हो सकती है कि किसी व्यक्ति की आय का स्तर बचत के अनुपात को प्रभावित नहीं करता और फिर समंकों के आधार पर इस बात की जांच की जाती है कि वह परिकल्पना सही है या नहीं।

Numeraire (न्यूमरेयर)

अन्य वस्तुओं के मानक मूल्यों को किसी वस्तु के रूप में व्यक्त करना

उदाहरण के लिए, खनिज तेल की कीमत का अन्तर्राष्ट्रीय मानक अमरीकी डालर है। इसी प्रकार , अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सौदों के लिए विशेष आहरण अधिकारों (SDR) को मानक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

□□□

O

Osolescence (ऑब्सोलेसैंस) **पुरानापन, अरुचिपूर्णता**

किसी प्रचलित तकनीक या वस्तु के प्रति अरुचि उत्पन्न होना। जब कभी किसी नई उत्पादन तकनीक का विकास हो जाता है, तो प्रचलित तकनीक के प्रति उत्पादकों को अरुचि उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार **नए उत्पाद बाजार में आने पर** पूर्व में प्रचलित उत्पाद पुराने तथा अरुचिपूर्ण प्रतीत होने लगते हैं। फिएट कार इन दशकों में अपना मूल्य खो चुकी है, क्योंकि मारुति, सैंट्रो, माटिज आदि अधिक आराम देह व सुविधापूर्ण कारें उपलब्ध होने लगी हैं।

Occupation (ऑक्यूपेशन) **व्यवसाय**

कोई व्यक्ति या परिवार किस कार्य में संलग्न है, वही उसका व्यवसाय कहलाता है। कृषि, पशु पालन, लकड़ी काटना, बढ़ई गिरी, जवाहरात, खेतों में मजदूरी, खनन करना, खुदरा व्यापार, परिवहन सेवा, विद्यालय में पढाना, कारखाने या कम्पनी में प्रबन्धक का कार्य करना, ये सब व्यवसायों के उदाहरण हैं जिनके माध्यम से कोई व्यक्ति अपना जीविकोपार्जन करता है।

OECD (Organization for Economic Cooperation and Development)
(ओईसीडी) **आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन**

विकसित देशों का एक संगठन, जिसके सदस्य देशों के वित्त तथा वाणिज्य मंत्री समय–समय पर परस्पर आर्थिक हितों पर चर्चा करते हैं तथा परस्पर व्यापार एवं आर्थिक विकास की नीतियों पर विचार करते हैं। यह संगठन विकासशील देशों को आर्थिक सहायता प्रदान करने, एवं विभिन्न देशों से सम्बन्धित आर्थिक आंकड़ों के प्रकाशन की भी व्यवस्था करता है।

Off-balance-sheet financing (ऑफ बेलेन्सशीट फाइनेंसिंग)
किसी सम्पत्ति को ख़रीदने की अपेक्षा इसे लीज़ या किराए पर लेना

ऐसी सम्पत्ति को सम्पत्ति के रूप मे तलपट मे नहीं दर्शाया जाता। इस प्रकार लीज़ या किराए की राशि को ख़र्चो में डाल दिया जाता है, तथा फर्म उस सम्पत्ति या मशीन के पुराने पन की जोखिम से भी अपने आप को बचा लेती है।

Offer curve (ऑफर कर्व) **ऑफर वक्र, अर्पण वक्र**

कोई देश विभिन्न सापेक्ष कीमतों पर किसी वस्तु की कितनी मात्रा बेचने को तैयार है, इसे प्रस्तुत करने वाला वक्र। एक छोटे देश के लिए अर्पण वक्र एक सरल रेखा के रूप में होता है, जिसका ढलान आयातों व निर्यातों की वैश्विक कीमतों के अनुपात को दर्शाता है। परन्तु एक सशक्त एवं एकाधिकार प्राप्त देश के लिए यह वक्र

नतोमुखी होता है। यह देश आयात कर रोपित करके व्यापार–शर्तो को अपने पक्ष में बनाए रखता है।
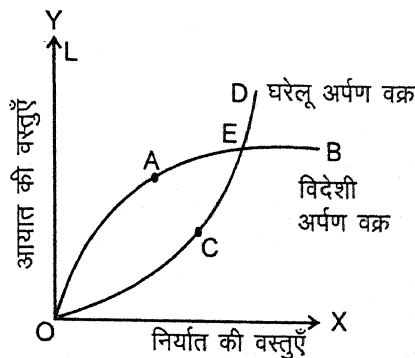
उपरोक्त चित्र में एक बड़े देश के लिएं OAEB एक नतोदर अर्पण वक्र है जो बताता है कि अधिक आयातों के लिए उत्तरोत्तर अधिक मात्रा निर्यात करनी होती है जबकि देश के लोग OCED के अनुरूप उतने ही आयातों के लिए उत्तरोत्तर कम मात्रा निर्यात करना चाहते हैं। यहाँ E बिन्दु स्वतंत्र व्यापार का संतुलन बिन्दु है जहाँ दोनों अर्पण वक्र परस्पर प्रतिच्छेदन करते है।

Offer for sale (ऑफर फॉर सेल) **बिक्री हेतु आमंत्रण**

नई शेयर पूँजी का निर्गम करने हेतु इसकी आम जनता में माँग के अनुरूप शेयरों की कीमत की घोषणा करना। परन्तु प्रत्येक बिक्री हेतु शेयर की एक न्यूमतम कीमत भी रखी जाती है।

Official financing (ऑफीशियल फाइनेंसिंग) **अधिकृत वित्त प्रबन्ध**

यदि किसी देश के चालू तथा पूँजीगत खातों का शेष शून्य नहीं होता, तो केन्द्रीय बैंक या तो विदेशी विनिमय कोष से मुद्रा निकाल कर, या इसमें जमा करके उन खातों को संतुलित करता है।

Ohlin (ओहलिन) **बर्टिन ओलिन**

(देखिए Hecksher -Ohlin Model) एक स्वीडिश अर्थशास्त्री, जिन्होंने प्रोफेसर हैक्शर के साथ मिलकर रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त में संशोधन किया।

Oligopoly (ओलिगोपोली) **अल्पाधिकार**

बाजार की वह स्थिति, जिसमें थोड़े से विक्रेताओं की उपस्थिति के कारण उनमें परस्पर कीमत युद्ध या अन्य विधियों से प्रत्येक विक्रेता अपना हित सर्वाधिक करने, तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी को अधिकतम क्षति पहुँचाने का प्रयास करता है। प्रायः ऐसे बाजार में पारस्परिक क्रिया व प्रतिक्रिया के कारण तब तक अस्थिरता तथा असमंजस

की स्थिति बनी रहती है जब तक कि या तो इन प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं में परस्पर समझौता नहीं हो जाता, अथवा इनमें से एक सशक्त फर्म कीमत नेतृत्व अपने अधिकार में नहीं ले लेती । यह एक अनुभव मूलक तथ्य है कि अल्पाधिकार वाले बाज़ार में *अल्प समय तक तो प्रतिद्वन्द्विता के कारण अस्थिरता रहती है,* परन्तु कुछ समय बाद ही विभिन्न फर्मों में परस्पर सहमति के कारण, या कीमत नेतृत्व के कारण स्थायित्व कायम हो जाता है।

Oligopsony (ऑलीगोप्सोनी) **क्रेताओं का अल्पाधिकार**

बाजार की वह स्थिति, जिसमें एक वस्तु या सेवा के क्रेताओं की संख्या थोड़ी होती है। इनमें से प्रत्येक क्रेता अपने प्रतिद्वन्द्वी क्रेताओं की सम्भावित प्रतिक्रियाओं के अनुरूप वस्तु खरीदने हेतु कीमत का निर्धारण करता है।

Ombudsman (ओम्बड्समैन) **लोकपाल**

विभिन्न सरकारी संस्थाओं के प्रबन्ध के विषय में प्राप्त *शिकायतों की जांच हेतु* नियुक्त अधिकारी।

On-the-job training (ओन द जॉब ट्रेनिंग) **कार्य के दौरान प्रशिक्षण**

किसी कर्मचारी या श्रमिक को कार्य करने के दौरान प्रशिक्षित करना। यह उस स्थिति से भिन्न है जिसमें कर्मचारी को नियुक्ति से पूर्व प्रशिक्षण लेना होता है। वर्तमान संदर्भ में नियुक्ति से पूर्व के प्रशिक्षण की तुलना में अनुभवी एव कार्यरत कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना अधिक उपयोगी माना जा रहा है।

OPEC (Organization of Petroleum Exporting countries) (ओपेक)

पैट्रोल निर्यातक देशों का संगठन

इसकी स्थापना 1960 में की गई। इसके सदस्य देशों में प्रारम्भ में पांच देश (ईरान, ईराक, सउदी अरेबिया, वेनेजुएला तथ कुवैत) थे। परन्तु बाद में कतार, इंडोनेशिया, लीबिया, आबू धाबी, अल्जीरिया, नाइजीरिया, इक्वेडोर तथा गेबोन भी इस संगठन में शामिल हो गए। इस संगठन का प्रमेख उद्देश्य पैट्रोल पदार्थों के उत्पादन को नियंत्रित करके उनकी ऊंची कीमतें वसूल करना है, क्योंकि इस गठबन्धन का पैट्रोल पदार्थों के उत्पादन पर लगभग एकाधिकार है। 1973 में ओपेक ने कच्चे तेल की कीमत को 2.50 डालर से बढ़ाकर 11.50 डालर करके पूरे विश्व को संकट में डाल दिया था।

Opaque policy measures (ओपेक पॉलिसी मैज़र्स)

अस्पष्ट या छद्म नीतियाँ

ऐसी नीतियाँ, जिनकी दिशा, निर्धारक एजेन्सी तथा उनकी कियान्विति की लागत के बारे में अस्पष्टता दिखाई दे। वस्तुतः कुछ नीतियाँ पारदर्शी एवं सुस्पष्ट होती हैं तथा कुछ नीतियों के विषय में *पारदर्शिता नहीं होती।* उदाहरण के लिए, सरकार घाटे वाले मार्गों पर बसें चलाना चाहती है। एक पारदर्शी नीति के तहत किसी फर्म

को इसके लिए **अनुदान देकर** तैयार किया जा सकता है। इसके विपरीत छद्म या अस्पष्ट नीति के तहत उसी फर्म को लाभ प्रद मार्गों के लिए एकाधिकारिक परमिट इस शर्त पर दिए जा सकते हैं कि वह अपने लाभ का एक हिस्सा घाटे वाले मार्गों पर बस संचालित करने पर व्यय करेगी।

Open economy (ओपन इकोनोमी) **खुली अर्थ व्यवस्था**

ऐसी अर्थ व्यवस्था, जिसके व्यापारिक (आयात–निर्यात विषयक) तथा वितीय (पूँजी के आगमन व बहिर्गमन सम्बन्धी) सम्बन्ध अन्य देशों से हों। इसके साथ ही सूचनाओं का आदान– प्रदान भी अर्थ व्यवस्था के खुलेपन का प्रतीक है। यह एक बन्द अर्थ व्यवस्था से सर्वथा भिन्न है जिसका बाहरी जगत से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

Open market operations, (ओपन मार्केट ऑपरेशन्स) **खुले बाजार की कियाएँ**

यह मौद्रिक नीति का एक हिस्सा है जिसके अन्तर्गत साख का विस्तार करने हेतु केन्द्रीय बैंक खुले बाज़ार में प्रतिभूतियां खरीदता है, जबकि साख को नियंत्रित करने हेतु प्रतिभूतियां बेची जाती हैं। प्रतिभूतियां बेचने पर जनता के पास विद्यमान मुद्रा (बैंक जमा आदि) केन्द्रीय बैंक के पास जाती है, जबकि केन्द्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियां खरीदने पर जनता के पास मुद्रा की मात्रा में वृद्वि होती है

Open outcry (ओपन आउट क्राई) **खुले सौदे**

वस्तुओं, शेयरों तथा मुद्राओं का खुला व्यापार, जिसमें क्रेता व विक्रेता खुले तौर पर बोली लगाते हैं। ऐसा उसी समय होता है जब सभी व्यापारियों को निर्दिष्ट बाज़ार का पूर्ण ज्ञान हो, तथा वे *समान स्तर* पर खड़े होकर **बिना दबाव** के कय–विक्रय में संलग्न हों।

Operational research (ओपरेशनल रिसर्च) **क्रियाशील शोध**

व्यावसायिक जगत से सम्बद्ध व्यावहारिक समस्याओं पर गणितीय तथा सांख्यिकीय विधियों द्वारा शोध करना। इस शोध का क्षेत्र विपणन, वित्त उत्पाद,वितरण प्रणाली आदि तक व्याप्त हो सकता है।

Opening price (ओपनिंग प्राइस) **प्रारम्भिक कीमत**

वह कीमत जो बाज़ार खुलने के समय होती है। शेयर तथा वस्तु दोनों ही के संदर्भ में इन प्रारम्भिक कीमतों का औचित्य होता है, और प्रायः इनकी तुलना बाज़ार बन्द होने पर बोली गई कीमतों से की जाती है।

Opportunity cost (ऑपोर्च्युनिटी कॉस्ट) **अवसर लागत**

इसे आर्थिक लागत (economic cost) भी कहा जाता है। इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं: (अ) एक वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने हेतु किसी अन्य वस्तु की कितनी मात्रा कम की गई। (ब) एक साधन को एक फर्म जो कीमत चुका रही है, उसे अन्य फर्म कितना भुगतान करेगी।(स) एक उपभोक्ता X की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने हेतु Y के उपभोग में कितनी कमी करेगा । प्रायः एक वस्तु की मात्रा में वृद्धि करने हेतु दूसरी वस्तु की मात्रा में इसीलिए कमी की

जाती है क्योंकि उत्पादक हो या उपभोक्ता, सीमित साधनों के कारण वह *एक वस्तु का त्याग करके ही* दूसरी वस्तु की मात्रा में वृद्धि कर सकता है।

Optimization (ऑप्टीमाइजेशन) **इष्टतम प्राप्ति की प्रक्रिया**

उपभोक्ता, उत्पादक या साधन के स्वामी के समक्ष विद्यमान विभिन्न विकल्पों में से उस विकल्प का चुनाव जो सर्वश्रेष्ठ प्रतिफल प्रदान करे।

Optimum (ऑप्टीमम) **इष्टतम स्थिति**

प्रत्येक आर्थिक इकाई–उपभोक्ता हो, उत्पादक हो या साधन का स्वामी हो–अपना कल्याण अधिकतम करना चाहती है। इष्टतम स्थिति वही स्थिति है जिसे प्राप्त करने के बाद वहां से होने वाला प्रत्येक विचलन उस कल्याण में कमी लाएगा। हां, कभी–कभी कीमतो मे परिवर्तन होने पर या आर्थिक इकाई के पास उपलब्ध साधनों (आय या संसाधन) में, अथवा तकनीक या रुचि में,परिवर्तन होने पर इष्टतम स्थिति में भी परिवर्तन हो सकता है। इष्टतम की प्राप्ति हेतु प्रमुख शर्त यह है कि निर्णय प्रक्रिया में कोई भी बाहरी दबाव या हस्तक्षेप नहीं हो रहा है।

Optimum savings (ऑप्टीमम सेविंग्स) **इष्टतम बचत स्तर**

आय का वह श्रेष्ठतम अनुपात, जो बचत या निवेश हेतु प्रयुक्त किया जाना उचित है। वर्तमान उपभोग तथा भावी संवृद्धि दर में प्रतिकूल सम्बन्ध होता है। ऐसी दशा में दोनों का इष्टतम संयोग वहीं होगा जहां वर्तमान व भावी, दोनों पीढ़ियों के कल्याण का श्रेष्ठतम संयोग दिखाई दे।

Optimum tariff (ऑप्टीमम टॉरिफ) **इष्टतम तटकर**

आयात करों का वह स्तर, जिस पर किसी देश को अधिकतम कल्याण की प्राप्ति हो। एक छोटे देश की स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में नगण्य होती है और इसलिए उसके तटकर का स्तर शून्य होना चाहिए। इसके विपरीत एक एकाधिकार सम्पन्न देश के संदर्भ में ऊँचा आयात कर भी उपयुक्त हो सकता है। परन्तु विभिन्न वस्तुओं के संदर्भ में इष्टतम तटकर का निर्धारण करने हेतु इनमें से प्रत्येक की तिरछी लोच का पता होना चाहिए। यहां यह मान्यता भी प्रासंगिक है कि तटकर लगाने पर अन्य देश प्रतिशोधात्मक आयात-कर नहीं लगाएँगे।

Option (ऑप्शन) **विकल्प**

किसी वस्तु,शेयर या मुद्रा को निर्दिष्ट कीमत पर खरीदने का प्रसंविदा निश्चित होने के बाद निश्चित तिथि के तीन माह के भीतर कभी भी उस वस्तु शेयर या मुद्रा को बेचने अथवा प्राप्त करने का अधिकार। प्रायः क्रेता व विक्रेता इस विकल्प या अधिकार का उपयोग सम्बद्ध वस्तु, शेयर, या मुद्रा की कीमतों में सम्भावित प्रतिकूल परिवर्तन से बचने के लिए ही करते हैं।

Order-driven market (ऑर्डर ड्रिवन मार्केट) **आदेश-प्रेरित बाजार**

संपत्ति बाज़ार, जिसमें कोई मध्यस्थ क्रेताओं व विक्रेताओं के आदेशों को **निर्दिष्ट समय पर** समायोजित करता है। संपत्ति का क्रेता निर्दिष्ट कीमत पर या इस से कम

पर खरीदने का आदेश देता है, जबकि विक्रेता निर्दिष्ट कीमत या इससे अधिक पर बेचना चाहता है। वह मध्यस्थ एक निश्चित समय पर दोनों के लिए सहमति वाली कीमत का ऑफर देकर सौदा करवाने का प्रयास करता है। सौदा न होने पर उस समय या तिथि के बाद दोनों ही पक्ष स्वतंत्र हो जाते हैं।

Ordinal utititly (ऑर्डीनल यूटिलिटी) **क्रम सूचक उपयोगिता**

उपभोक्ता के किसी भी निर्णय से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को या तो संख्याओं के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, अथवा *उपयोगिता के मापनीय न होने की स्थिति में* प्राप्त संतुष्टि या प्रतिफल को एक क्रम में रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि दो चपाती तथा एक प्लेट चावल की उपयोगिता 300 इकाई हो, तथा तीन चपाती तथा एक प्लेट चावल की उपयोगिता 350 इकाई हो तो दोनों का संख्या सूचक अन्तर 50 इकाई होगा। क्रम सूचक उपयोगिता के अन्तर्गत उपभोक्ता केवल यह बताने में सक्षम होता है कि वह चपाती– चावल के द्वितीय संयोग को अपेक्षाकृत अधिक पसन्द करता है, परन्तु इनके **अन्त : का माप उसे ज्ञात नहीं होता।**

Ordinary shares (ऑर्डीनेरी शेयर्स) **साधारण शेयर**

किसी संयुक्त कम्पनी की पूँजी का एक अंश या शेयर। इन शेयर धारियों को कम्पनी के सभी खर्चों का समायोजन करने के बाद निर्धारित लाभांश दिया जाता है,जो उनके पास विद्यमान अंशों पर आधारित होता है। साधारण अंशधारी कम्पनी की वार्षिक साधारण सभा में मताधिकार का प्रयोग कर सकते हैं। प्रत्येक शेयर अथवा अंश पर एक मत निर्धारित होता है। कम्पनी का दीवाला निकलने पर कर्ज़दारों को भुगतान करने के बाद जो सम्पत्ति शेष रहती है, शेयरों के आधार पर उस सम्पत्ति का वितरण इन्हीं के मध्य किया जाता है।

Organic growth (ऑर्गेनिक ग्रोथ) **ऑर्गेनिक विकास**

किसी व्यवसाय की स्वयं स्फूर्त प्रगति। इस प्रगति में बाहरी किसी शक्ति का योगदान नहीं होता। फर्म नए उत्पादों, बेहतर प्रबन्धन, प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त करने तथा नए बाज़ारों की खोज आदि तरीकों से अपना विकास करती है। ऐसी फर्म अपनी क्षमता का इष्टतम उपयोग करती है तथा उपभोक्ताओं का विश्वास अर्जित करने में सफल रहती है। यह विकास अन्य फर्मों के विलय आदि से हुए विकास से भिन्न होता है जिसे बाहरी कारणो से हुआ विकास माना जाता है।

Organizational slack (ऑर्गेनाइज़ेशल स्लैक) **संगठनात्मक अप्रयुक्तता**

किसी फर्म द्वारा अपनी उप–इकाइयों या शाखाओं के लिए उनकी क्षमता से अधिक संसाधन उपलब्ध कराना। आवश्यकता से अधिक स्टाफ की भरती, तथा अवश्यकता से अधिक मशीनों को स्थापित कराने पर इनकी क्षमता अप्रयुक्त रहती है। प्रायः मूल कम्पनी या फर्म आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए अपनी उप–इकाइयों या शाखाओं में अप्रयुक्त क्षमता बनाए रखना चाहती है।

Organization theory (ऑर्गेनाइज़ेशन थ्योरी) **संगठन के व्यावहारिक सिद्धान्त**

बड़े–बड़े व्यावसायिक संगठनों की निर्णय प्रक्रिया का विश्लेषण। प्रायः ऐसी मान्यता होती है कि फर्म एक स्वायत्त शासी निर्णय लेने वाली इकाई है, जिसका एक मात्र उद्देश्य अधिकतम लाभ की प्राप्ति है। परन्तु संगठन के *व्यावहारिक सिद्धान्त* के अनुसार बड़े-बड़े संस्थानों में निर्णय प्रक्रिया विकेन्द्रीकृत होती है, तथा कम्पनी के निर्णय प्रायः आर्थिक घटकों से ही निर्धारित नहीं होते। यदि अधिक लाभ न मिले, परन्तु **कम्पनी का बाज़ार में वर्चस्व बना रहे** तब भी उसके प्रबन्धक संतुष्ट हो सकते हैं।

Organized labour (ऑर्गेनाइज्ड लेबर) **संगठित श्रम**

वे श्रमिक जो श्रमिक संघो से जुड़े हुए हैं। श्रमिक संघ कम्पनी के मालिक से मज़दूरी की दरों, काम के घंटों ,काम करने की दशाओं श्रमिकों को प्राप्त होने वाली सुविधाओं, ग्रेचुटी तथा भविष्य निधि के भुगतान तथा छुट्टियों के बारे में विचार विमर्श करते हैं। मालिकों का व्यवहार अत्यधिक छद्म तथा प्रतिकूल होने पर श्रमिक संघ आन्दोलन भी कर सकते हैं। श्रमिक यदि संगठित नहीं हैं तो मालिक प्रायः उनका शोषण करते हैं, परन्तु संगठित होने पर उनकी *प्रत्येक उचित माँग* को मालिक प्रायः स्वीकार करते हैं।

Organized sector (ऑर्गेनाइज्ड सेक्टर) **संगठित क्षेत्र**

अर्थव्यवस्था का वह भाग जहां व्यक्ति की अपेक्षा संस्थाएँ उत्पादन तथा वितरण आदि क्रियाओं का सम्पादन करती हैं। संयुक्त कम्पनियाँ बैंक,बीमा कम्पनियां आदि संगठित क्षेत्र के अन्तर्गत ही आती हैं। विकसित देशों में अधिकांश आर्थिक क्रियाएँ संगठित क्षेत्र में ही सम्पन्न होती हैं,जबकि विकासशील देशों में वैयक्तिक स्तर पर सम्पन्न अधिकांश क्रियाओं का राष्ट्रीय आय के लेखों मे समावेश नहीं हो पाता, अथवा ऐसा सही रूप में नहीं किया जाता।

Origin (ऑरीजिन) **मूल बिन्दु**

किसी रेखा चित्र में वह बिन्दु जो सभी चरों के शून्य को व्यक्त करता है।

Original income (ऑरिजिनल इन्कम) **प्रारम्भिक आय**

किसी व्यक्ति या परिवार की आयकर तथा अन्य करों के भुगतान, तथा किसी भी अन्तरण भुगतान (अनुदान,सामाजिक सुरक्षा, भुगतान आदि),की प्राप्ति से पूर्व की आय।

Oscillations (ओसीलेशन्स) **उच्चावचन**

काल, श्रेणी विश्लेषण में विभिन्न वर्षों में कीमत–स्तर में होने वाले उतार चढ़ाव। प्रायः व्यापार चक्रों के अंतर्गत कभी कुछ वर्षों तक कीमत स्तर कम होता है, फिर यह कुछ वर्षों तक बढ़ता है, और फिर इसमें गिरावट का दौर चलकर पुनः कीमतें बढ़ती हैं। यह उच्चावचन का क्रम लम्बी अवधि तक चलता रहता है। विशेष बात यह है कि कीमत–स्तर निम्नतर स्तर तक आकर फिर उच्चतर स्तर तक पहुंचता है फिर गिरता है, लेकिन एक निम्न स्तर, दूसरे निम्न स्तर के समान नहीं होता, और न ही एक उच्चस्तर दूसरे उच्चस्तर के समान होता है।

Output (आउटपुट) **उत्पादन**

निर्दिष्ट अवधि में संसाधनों की सहायता से उत्पादित वस्तुओं या सेवाओं का स्तर। किसी भी देश की आर्थिक प्रगति का माप इसी से लिया जाता है कि वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन किस अनुपात में बढ़ रहा है।

Output effect (आउटपुट इफेक्ट) **उत्पादन प्रभाव**

इन्पुट्स या आदाओं की कीमतों को यथावत् रखते हुए किसी एक इन्पुट के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि से होने वाला प्रभाव। बहुधा उत्पादन में वृद्धि होने पर एक या अधिक इन्पुट्स के प्रयोग में समान अनुपात से वृद्धि नहीं होती।

output labour ratio (आउटपुट लेबर रेशियो) **उत्पादन-श्रम अनुपात**

प्रति घंटा श्रम प्राप्त होने वाला उत्पादन। यह श्रम की औसत उत्पादकता होगी। (देखिए output per hour worked)

Output method (आउटपुट मैथड)

राष्ट्रीय आय को वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा के आधार पर मापना

इसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में एक वर्ष के भीतर उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा को उनकी कीमतों से गुणा करने के बाद प्राप्त योग को सकल राष्ट्रीय उत्पाद माना जाता है। यह राष्ट्रीय आय को मापने की व्यय–विधि से भिन्न है, जिसमें उपभोग व्यय, निवेश, तथा सरकारी व्यय (C+I+G) का योग लिया जाता है ।यह विधि आय-आधारित राष्ट्रीय आय से भी भिन्न है जिसके अन्तर्गत सभी साधनों को वर्ष भर में प्राप्त आय का योग लिया जाता है।

Output per hour worked (आउटपुट पर ऑवर वर्क्ड) **प्रति घंटा उत्पादन**

कुल उत्पादन में श्रम की इकाइयों से भाग देने पर प्राप्त गुणांक। यह श्रम की उत्पादकता का माप है।

outside money (आउटसाइड मनी) **मुद्रा**

इसके धारक के लिए एक सम्पत्ति है, परन्तु किसी अन्य व्यक्ति के लिए देनदारी नहीं है। सोने या चांदी के सिक्के इसके उदाहरण हैं।

Over-capacity working (ओवर केपेसिटी वर्किंग)

क्षमता से अधिक कार्य करना

प्रायः क्षमता का निर्धारण परम्परागत आधार पर किया जाता है। कभी कभी अल्पकाल के लिए सामान्य क्षमता से अधिक उत्पादन कर लिया जाता है। दो या तीन पारियों में उत्पादन करने पर इसे मशीनों की क्षमता से अधिक कार्य माना जाएगा।

Over-draft (ओवर ड्राफ्ट) **निर्धारित सीमा से अधिक ऋण लेना**

किसी बैंक में जमा राशि से अधिक निकालना ओवर ड्राफ्ट कहलाता है। इसके कारण ग्राहक के खाते में ऋणात्मक बाकी दर्शायी जाती है। जब तक यह ऋणात्मक बाकी रहती है, बैंक सम्बद्ध ग्राहक से ब्याज लेता है। परन्तु प्रत्येक ग्राहक की सम्पत्तियों का शुद्ध मूल्य देखकर बैंक ओवर ड्राफ्ट की सीमा भी तय कर देता है।

Overfull employment (ओवर फुल एँप्लॉयमेट) **पूर्ण से अधिक रोज़गार**

उपलब्ध श्रम की अपेक्षा रोज़गार का इतना ऊंचा स्तर कि इससे श्रम की माँग का आधिक्य हो जाता है। इसके फलस्वरूप मज़दूरी की दरें बढ़ जाती हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादन लागतें बढ़ती हैं। इसके साथ ही श्रम की कमी के कारण वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में भी कमी होती है। इसके फलस्वरूप माँग–प्रेरित स्फीति का जन्म होता है। परन्तु पूर्ण से अधिक रोजगार, तथा इसके कारण उत्पन्न मुद्रा स्फीति दीर्घकाल तक नहीं चल पाती । सरकार मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने हेतु नीतियां बनाती है जिनसे लोगों की प्रत्याशाएँ नई दिशा लेती हैं तथा धीरे–धीरे माँग पर अंकुश लगने लगता है तथा कीमत वृद्धि की गति भी धीमी हो जाती है।

Overhead costs (ओवरहैड कॉस्ट्स) **उत्पादन हेतु आवश्यक स्थिर लागतें**

ये लागतें अल्पकाल में उत्पादन शून्य होने की स्थिति में स्थगित की जा सकती हैं। दीर्घकाल में उत्पादन की सम्भावना समाप्त होने पर भी इन्हें टाला जा सकता है। परन्तु उत्पादन प्रक्रिया चालू रहने की स्थिति में ये लागतें वहन करनी ही होती हैं। प्रायः ओवर हैड लागतों में बिजली, पानी, प्लांट व मशीनों का मूल्य ह्रास,रखरखाव,स्टोर आदि पर होने वाले ऐसे खर्चों को भी शामिल किया जाता है जिनका उत्पादन से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता।

Overheating (ओवरहीटिंग) **माँग से अधिक क्रियाएँ**

माँग की अपेक्षा अधिक क्रियाओं के फलस्वरूप क्षमता से अधिक उत्पादन किया जाता है, जिसके कारण उत्पादन के संसाधनों की कमी हो जाती है, वहीं इसके कारण व्यापार–शेष प्रतिकूल होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

Overmaning (आवेर मैनिंग)

किसी क्षेत्र में श्रम का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करना

ऐसा कानूनी प्रक्रिया के कारण अथवा श्रमिक संघों के दबाव के कारण हो सकता है, या फिर प्रबन्धकों की इस आशा के कारण उन्हें उत्पादन बढ़ाना पड़ सकता है। (देखिए over full employment)

Overseas investment (ओवरसीज इन्वेस्टमैंट) **विदेशी निवेश**

(देखिए foreign direct investment, foreign institutional investors)

Over shooting (ओवर शूटिंग) **अल्पकालीन समायोजन की समस्या**

किसी अर्थ व्यवस्था में झटके लगने के बाद ऐसी सम्भावना बन सकती है कि कुछ चरों की गति दीर्घकाल की अपेक्षा अल्पकाल में ही बढ़ जाती है।

ऐसा प्रायः समायोजन प्रक्रिया की गति के अन्तर के फलस्रूप होता है। उदाहरण के लिए, किसी झटके के बाद यह अपेक्षा की जाती है कि देश की मुद्रा की विनिमय दर पूर्वापेक्षा 5 प्रतिशत कम रहेगी। विनिमय दर के इस परिवर्तन के फलस्वरूप

कुछ वस्तुओं के आयात/निर्यात में धीमी गति से परिवर्तन होगा जबकि अन्य में अपेक्षा के अनुरूप समयोजन हो जाएगा।

इसी कारण यह आवश्यक हो जाता है कि विनिमय दर में 5 प्रतिशत से भी अधिक की कमी की जाए इससे जहां भी तत्काल समायोजन हो सकता है उनके व्यापार में अधिक परिवर्तन होने चाहिए, ताकि धीमी गति से अन्य क्षेत्रों में परिवर्तन होने पर भी कुल मिलाकर व्यापार के क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन हो जाएँ।

Over-subscription (ओवर सब्स्क्रिप्शन)

आशा से अधिक आवेदन प्राप्त होना

ऐसी स्थिति, जिसमें नए शेयरों के निर्गम की तुलना में काफी अधिक प्रार्थनापत्र प्राप्त हो जाएँ। यदि कुल निर्गम 10 लाख शेयरों का हो तथा 15–16 लाख या 20 लाख शेयरों के आवंटन हेतु प्रार्थना पत्र आ जाएँ तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रायः निर्गम हेतु नियुक्त एजेन्सी की निपुणता पर यह निर्भर करता है कि प्रस्तावित निर्गम से अधिक शेयरों के लिए आवेदन प्राप्त होते हैं या कम के लिए।

Over-the -counter market (ओवर दी काउन्टर मार्केट)

अनियंत्रित प्रतिभूति बाज़ार

जब प्रतिभूतियों के बाज़ार पर स्टॉक एक्सचेंज का अंकुश न हो तो इसे अनियंत्रित प्रतिभूति बाज़ार कहा जाता हैं

Overtime (ओवर टाइम) **निर्धारित अवधि के बाद कार्य करना**

श्रमिक या किसी कर्मचारी की दैनिक कार्यावधि 8 घंटे की हो और यदि उसे 10 या 12 घंटे तक काम पर रोका जाए तो यह अतिरिक्त समय ओवर टाइम कहलाता है। इन अतिरिक्त घंटो का प्रति घंटा पारिश्रमिक सामान्य पारिश्रमिक की तुलना में काफी अधिक होता है।

Over trading (ओवर ट्रेडिंग) **क्षमता से अधिक व्यापार करना**

कभी–कभी कोई फर्म इसकी वित्तीय सामर्थ्य से काफी अधिक व्यापार (खरीद/बिक्री) कर लेती है। इस प्रक्रिया में बहुत जोखिम होती है। प्रायः फर्म को अपनी बढ़ी हुई देनदारियों पर काफी ब्याज़ देना पड़ता है। प्रायः क्षमता से अधिक व्यापार कने पर फर्म का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। इसी कारण बैंक ओवर ट्रेडिंग को उचित नहीं मानते हुए ऐसी फर्म को ऋण देने में संकोच करते हैं।

Overutilized capacity (ओवर यूटीलाइज्ड केपेसिटी)

क्षमता से अधिक उत्पादन करना

ऐसी दशा में अल्पकालीन लागत के न्यूनतम स्तर से भी अधिक उत्पादन किया जाता है। प्रायः इस स्थिति में औसत लागत बढ़ जाती है।

Over valued currrecy (ओवर वैल्यूड करेन्सी) **करेन्सी का ऊँचा मूल्य रखना**

किसी करेन्सी की जितनी विनियम दर बाजार की स्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए

उससे ऊँची विनिमय दर रखना। मान लीजिए, प्रतियोगी दशाओं में एक डालर की विनिमय दर भारत में 48 रुपए होनी चाहिए परन्तु रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया इसे 40 रुपए पर निर्धारित कर देता है, तो रुपए का मूल्य ऊंचा रखा जा रहा है। रुपए का मूल्य इसके साम्य स्तर से ऊँचा रखने के कारण देश के व्यापारियों को निर्यातों का मूल्य कम प्राप्त होता है, जिससे निर्यात नहीं बढ़ पाते । दूसरी ओर देश के आयात कर्त्ताओं को आयातों की कीमत भी कम देनी पड़ती है, जिससे आयात अधिक हो सकते हैं।

कुल मिलाकर करेन्सी के ऊँचे मूल्य के कारण प्रायः देश का व्यापार शेष प्रतिकूल रहता है। इसे दुरुस्त करने हेतु अवमूल्यन किया जाता है, ताकि आयात कम हों एवं निर्यात बढ़ सकें।

Owner-occupied housing (ओनर ओक्यूपाइड हाऊसिंग)

मालिक द्वारा अपने भवन का प्रयोग

बहुधा आयकर अधिकरी ऐसे भवन के आंकलित किराए को भवन के मालिक की आय में शामिल नहीं करते।

□□□

P

Package of policies (पैकेज ऑफ पॉलिसीज) **नीतियों का पैकेज**

एक ही समय पर सरकार द्वारा अनेक नीतियों की घोषणा। प्रायः दो कारणों से ऐसा किया जाता है : प्रथम, एक नीति दूसरी नीति को समर्थन दे सकती है, जिसके कारण समग्र रूप से राज्य की नीतियों का वांछित परिणाम प्राप्त हो सकता है। द्वितीय, निर्दिष्ट नीति के प्रभावों की अनिश्चितता को दूसरी नीतियों द्वारा कम किया जा सकता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अर्थव्यवस्था की समस्याओं का *समेकित समाधान प्राप्त करने हेतु* एक नीति की अपेक्षा एक साथ नीतियों की घोषणा अधिक प्रभावी परिणाम दे सकती है।

Paid up capital (पेड अप कैपीटल) **इकाई गई पूँजी**

किसी कम्पनी की अधिकृत पूँजी का एक भाग शेयर होल्डरों से चुकाने को कहा जाता है। उसमें से जितना भाग वे वस्तुतः चुकाते हैं, वह चुकाई गई पूँजी है। कुल मिला कर एक शेयर का पूरा मूल्य शेयर होल्डर नहीं चुकाते, और *आवश्यकता पड़ने पर* वह अवशिष्ट राशि उनसे माँगी जा सकती है।

Paradox of thrift (पैराडॉक्स ऑफ थ्रिफ्ट) **बचत का विरोधाभास**

पारिवारिक बचतों में वृद्धि होने पर इसके अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों ही प्रकार के प्रभाव हो सकते हैं। एक मंदीग्रस्त अर्थ व्यवस्था में बचत में वृद्धि के प्रयासों से उपभोग में कमी होती है और इससे आय का स्तर कम हो जाता है। प्रायः बचत के कारण उपभोग में कमी आती है लेकिन निवेश वस्तुओं में उतनी ही वृद्धि होने के कारण (S=I) सकल राष्ट्रीय उत्पाद वही रहता है परन्तु यदि बचत अधिक हो तथा निवेश कम रहे (S>I) तो इसके फलस्वरूप सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कमी हो जाएगी।
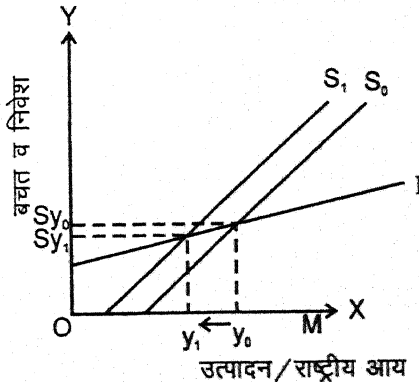
उपरोक्त चित्र में बचत का स्तर S_0 से बढ़कर S_1 होता है परन्तु इससे राष्ट्रीय आय का स्तर y_0 से घटकर y हो जाता है तथा वास्तविक बचत का स्तर Sy_0 से घटकर Sy_1 रहता है। कुल मिलाकर अधिक बचत करने पर(यदि निवेश में उतनी ही वृद्धि न हो) राष्ट्रीय आय में कमी हो सकती है, जिसके कारण वास्तविक बचत के स्तर में भी प्रत्याशित वृद्धि नहीं हो पाती।

Paradox of value (पैराडॉक्स ऑफ वेल्यू) **मूल्य का विरोधाभास**

किसी वस्तु का मूल्य उसकी उपादेयता पर नहीं, अपितु उसकी दुर्लभता पर निर्भर करता है। पानी इसका एक उदाहरण है, जिसकी उपादेयता या सीमान्त उपयोगिता निस्संदेह रूप से बहुत अधिक होने पर भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण इसका मूल्य बहुत कम होता है। इसके विपरीत हीरे की उपादेयता या सीमांत उपयोगिता बहुत कम होने पर भी इसकी दुर्लभता के कारण इसका मूल्य काफी अधिक होता है। यही मूल्यका विरोधाभास है।

Paradox of voting (पैराडॉक्स ऑफ वोटिंग) **मतदान का विरोधाभास**

यदि नीति निर्धारण की प्रक्रिया में अलग अलग सदस्यों के मतदान की वरीयताएँ इस प्रकार हों कि किसी भी विकल्प को बहुमत न मिले तो एक विरोधाभास उत्पन्न हो जाता है। यदि सर्वसम्मति से या बहुमत से एक विकल्प के पक्ष में मतदान हो तो कोई भी समस्या नहीं होती, तथा निर्णय प्रक्रिया सरल होती है।

उदाहरण के लिए, किसी समिति में तीन सदस्य हैं तथा उन्हें अपनी वरीयता को 1,2,3 क्रम में व्यक्त करना है। उनके तीन विकल्पों (A, B, C) में मतदान की वरीयता निम्न प्रकार की हो सकती है

मतदाता	तीनों विकल्पों के प्रति वरीयताएँ		
1	A	B	C
2	B	C	A
3	C	A	B

A तथा B के बीच A का चयन होना चाहिए क्योंकि A को प्रथम वरीयता का एक तथा द्वितीय वरीयता का भी एक मत प्राप्त होता है। परन्तु A तथा C के मध्य चयन करने के लिए C के लिए भी पूर्व वाली स्थिति प्राप्त होने के कारण C का चयन होना चाहिए, क्योंकि C के लिए द्वितीय मतदाता से द्वितीय, तथा तृतीय मतदाता से प्रथम वरीयता के मत प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार B तथा C के बीच B का चयन होना चाहिए। कुल मिलाकर *समिति के तीनों सदस्य किसी भी विकल्प के विषय में निर्णय कर पाने में सफल नहीं हो पाते* । यही मतदान का विरोधाभास है।

Parameter (पैरामीटर) **प्राचल**

किसी विश्लेषण में दी हुई कोई संख्या। तुलनात्मक स्थैतिक विश्लेषण में किसी

प्राचल में परिवर्तन हो सकता है लेकिन यह परिवर्तन मॉडल में निहित चरों के कारण नहीं, अपितु बाह्य घटकों के कारण हो सकता है। प्रायः अल्पाधिकार वाले बाजार में एक विक्रेता स्वयं की कीमत को प्राचल मान सकती है, तथा प्रतिद्वन्द्वी की कीमत को परिवर्तनशील (चर) मान सकती है। परन्तु बाज़ार की दृष्टि से कीमत प्राचल नहीं होगी, क्योंकि बाज़ार में कीमत में परिवर्तन होते रहते हैं।

Pareto-optimality (परेटो ऑप्टीमेलिटी) **परेटो इष्टतम स्थिति**

यह वह चरम स्थिति है जिसमें संसाधनों की निर्दिष्ट मात्राओं, उपयोगिता फलनों, तथा निर्दिष्ट तकनीक के अन्तर्गत सभी उपभोक्तोओं तथा उत्पादकों को अधिकतम कल्याण की प्राप्ति होती है। यदि एक उपभोक्ता या उत्पादक को अधिक बेहतर स्थिति में पहुँचाना हो तो ऐसा तभी सम्भव होगा जबकि अन्य किसी उपभोक्ता या उत्पादक को कल्याण के निम्न स्तर पर लाया जाए। अन्य शब्दों में, परेटो इष्टतम स्थिति में *सम्पूर्ण समाज को अधिकतम आर्थिक कल्याण की प्राप्ति* हो जाती है।

Pareto, vilfredo (1848-1923) : **विल्फ्रेडो परेटो**

एक इतालती अर्थशास्त्री, जिन्होंने सामान्य साम्य की गणितीय विधि से साधनों तथा वस्तुओं के आवंटन का इष्टतम स्तर बतलाया, तथा उपभोग,उत्पादन तथा समूची अर्थव्यवस्था की इष्टतम स्थिति का दिग्दर्शन कराया। परेटो ने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र में निर्दिष्ट साधनों या वस्तुओं का तब तक पुनर्आवंटन किया जाना चाहिए जब तक कि इष्टतम स्थिति प्राप्त न हो जाए।

परेटो ने कहा कि सम्पूर्ण समाज का अधिकतम कल्याण उस स्तर पर प्राप्त होगा जहाँ **सभी** उपभोक्ताओं को अधिक उपयोगिता, **सभी** उत्पादकों को अधिकतम उत्पादन तथा **सभी** फर्मों को अधिकतम लाभ की प्राप्ति होती है, तथा सभी आर्थिक इकाइयों के लिए इष्टतम की शर्तें पूरी होती हैं।

1. उपभोक्ताओं के लिए : $\frac{MU_{XA}}{MU_{YA}} = \frac{MU_{XB}}{MU_{YB}} = \frac{MU_{XC}}{MU_{YC}}$ ....

2. उत्पादकों के लिए : $\frac{MP_{LX}}{MP_{KX}} = \frac{MP_{LY}}{MP_{KY}} = \frac{MP_{LZ}}{MP_{KZ}}$ ....

3. फर्मों के लिए : $\frac{MU_X}{MC_X} = \frac{MU_Y}{MC_Y} = \frac{MU_Z}{MC_Z}$ ....

नोट : इस मॉडल में तीन उपभोक्ता A, B व C हैं; उत्पादन के दो साधन (L तथा K) हैं, जिनकी सहायता से तीन वस्तुओं (X, Y तथा Z) का उत्पादन किया जाता है।

Parkinson's Law (पार्किन्सन्स लॉ) **पार्किन्सन का नियम**

प्रोफेसर सी.नॉर्थकोट पार्किन्स के कथनानुसार किसी कार्य के लिए उपलब्ध समय के अनुसार कार्य का भी विस्तार हो जाता है। परन्तु यदि यह कथन सही है तो इससे उत्पन्न अदक्षता फर्म के लिए गम्भीर संगठनात्मक समस्या उत्पन्न कर सकती है।

Partial adjustment (पार्शियल एड्जस्टमैंट) **आंशिक समायोजन**

समायोजन की वह प्रक्रिया, जिसमें निर्णय लेने वाली आर्थिक इकाई उसके नियंत्रण वाले चरों के वांछित स्तर तथा वास्तविक स्तर के अन्तर को आंशिक रूप से ही समाप्त करने का प्रयत्न करती है। यह आंशिक समायोजन दो कारणो से किया जा सकता है :

प्रथम, लागत में समायोजन की गति की अपेक्षा अधिक वृद्धि की सम्भावना हो सकती है; तथा द्वितीय, अनिश्चितता के कारण सम्पूर्ण समायोजन की अपेक्षा आंशिक समायोजन को उचित माना जा सकता है। प्रायः लागत में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि होने की दशा में किसी वांछित समायोजन को अनेक अवधियों में फैला दिया जाता है

Partial derivative (पार्शियल डेरीवेटिव) **आंशिक अवकलज**

यदि कोई फलन अनेक (दो या अधिक) चरों पर आश्रित हो तो अन्य चरों को स्थिर मानते हुए एक चर में होने वाले परिवर्तन का आश्रित चर पर प्रभाव देखने हेतु आंशिक अवकलज ज्ञात किया जाता है। मान लीजिए, हमारा फलन इस प्रकार है

$$Y=f(X,Z)$$

तो आंशिक अवकलज हेतु निम्न रूप से निर्दिष्ट फलन को व्यक्त करेंगे : $\frac{\partial Y}{\partial X}$,

यदि Z को स्थिर मानें, तथा $\frac{\partial Y}{\partial Z}$, यदि X को स्थिर मानें।

यही मॉडल फलन में दो से अधिक स्वतंत्र चरों को रखने पर भी वैध रहेगा।

Partial equilibrium (पार्शियल इक्वीलिब्रियम) **आंशिक साम्य**

आर्थिक विश्लेषण में प्रायः दो श्रेणियों के बीच सम्बन्धों की व्याख्या करते समय "अन्य बातें यथावत् रहने" की मान्यता ली जाती है। उदाहरण के लिए माँग फलन $D_x=f(P_x,P_y,M)$ में जब वस्तु की कीमत तथा माँग के मध्य सम्बन्ध देखा जाता है तो अन्य वस्तुओं की कीमतें (P_y) तथा उपभोक्ता की आय (M) को यथावत् मान लिया जाता है। संक्षेप में, OP_x माँग तथा कीमत (P_x) के प्रतिकूल सम्बन्ध के आधार पर की माँग का वक्र निरूपित किया जाता है। इसी प्रकार कीमत(P_x) तथा पूर्ति(S_x) के मध्य घनात्मक सम्बन्ध के पीछे भी " अन्य बातें यथावत् रहने" की मान्यता निहित है।
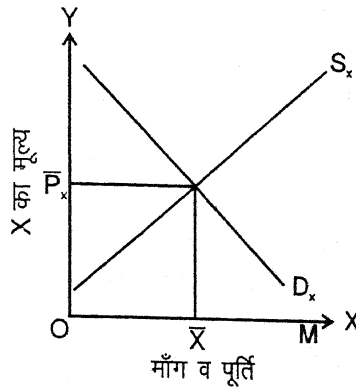
उपरोक्त चित्र में माँग वक्र (D_x) तथा पूर्ति वक्र (S_x) का प्रतिच्छेदन E बिन्दु पर होता हैं, तद्नुसार $O\overline{P}_x$ कीमत पर $O\overline{X}$ मात्रा बेची व खरीदी जाती है।
यह आंशिक साम्य का उदाहरण है, क्योंकि दोनों ही फलनों के पीछे "अन्य बातें यथावत् रहने" की मान्यता निहित है।

Participation rate (पार्टीसिपेशन रेट) **आर्थिक सक्रियता दर**

जनसंख्या में उन लोगों का प्रतिशत, जो निर्दिष्ट आयु –वर्ग के तहत आर्थिक दृष्टि से सक्रिय हैं। ये व्यक्ति कर्मचारियों,श्रमिकों, प्रबन्धकों,स्वतंत्र उद्यमियों के रूप में हो सकते हैं, या काम की तलाश में हो सकते है। आर्थिक सक्रियता दर में पुरुषों तथा महिलाओं दोनों को लिया जाता है, हांलाकि अलग अलग आयु वर्गों में यह दर अलग अलग होती है। इसे क्रियाशीलता दर (activity rate) भी कहा जाता है।

Partnership (पार्टनरशिप) **साझेदारी**

ऐसा व्यवसाय, जिसमें दो या अधिक व्यक्ति संयुक्त रूप से कार्य करते हैं। कभी–कभी एक साझेदार निष्क्रिय हो सकता है, हांलाकि वह व्यवसाय हेतु पूँजी उपलब्ध कराता है। साझेदारी में सभी व्यक्ति हानि तथा लाभ में हिस्सा बंटाते है। यदि साझेदारी फर्म का दीवाला निकल जाए तो प्रत्येक साझेदार का अपरिमित्व दायित्व है, जिसके अनुसार उसकी निजी सम्पत्ति को बेचकर भी उस घाटे को पूरा किया जा सकता है।

फर्म में किसी नए साझेदार के प्रवेश करने, किसी एक साझेदार के फर्म से अलग होने, किसी एक साझेदार की मृत्यु होने या पागल हो जाने पर पुरानी साझेदारी फर्म को समाप्त करके नई फर्म बनानी होती है। एक फर्म में अधिकतम 20 साझेदार हो सकते है।

Part time work (पार्ट टाइम वर्क) **अंशकालीन कार्य**

सामान्य रूप से पूर्णकालीन कार्य के लिए निर्धारित घंटों (भारत में 8 घंटे हैं) से कम

अवधि के लिए कार्य करना। यह नियोक्ता तथा/अथवा कर्मचारी की सुविधा के लिए किया जा सकता है। प्रायः विशेषज्ञों की सेवा अंशकाल के लिए ही ली जाती हैं क्योंकि वे पूर्णकालीन सेवाओं के लिए उपलब्ध नहीं होते, अथवा उनकी पूर्णकालीन सेवाओं की लागत बहुत होती है।

Par value (पार वेल्यू) **अंकित मूल्य**

परिपक्व होने पर किसी प्रतिभूति के लिए प्राप्त होने वाला मूल्य। यदि बाज़ार में ब्याज़ दर प्रतिभूति के कूपन पर अंकित दर से अधिक है तो प्रतिभूति का मूल्य अंकित मूल्य से कम होगा। इसके विपरीत यदि ब्याज़ दर कूपन की दर से कम है तो प्रतिभूति का मूल्य अंकित मूल्य से अधिक होगा

Patent (पेटेंट) **पेटेंट**

नए उत्पाद, उत्पादन की नई प्रक्रिया, तथा नई तकनीक के आविष्कार को सरकार द्वारा दी गई औपचारिक मान्यता। पेटेंट प्राप्त होने पर इसके धारक को एक प्रकार का एकाधिकार मिल जाता है क्योंकि **उस प्रकार की वस्तु का** उत्पादन **उस प्रकार की प्रक्रिया** अथवा **तकनीक** का उपयोग अन्य कोई भी फर्म द्वारा नहीं किया जा सकता। परन्तु पेटेंट धारक की निरंकुशता को नियमित करने हेतु प्रायः सरकार पेटेंट का पंजीकरण एक निर्दिष्ट समय के लिए ही करती है, जिसका नवीनीकरण अनिवार्य होता है।

Pawnbrokes (पॉन ब्रोकर) **अस्थायी नियंत्रक**

ऋणी की सम्पत्ति को अस्थायी तौर पर नियंत्रण में लेने वाला साहूकार। ऐसा व्यक्ति जो ऋणी की व्यक्तिगत सम्पत्ति को जमानत के रूप में अधिकार में लेता है तथा ऋण की ब्याज़ सहित अदायगी होने पर उसका स्वत्व लौटा देता है।

Pay (पे) **पारिश्रमिक, पगार**

निर्दिष्ट समय तक कार्य लेने के पश्चात् श्रमिक या कर्मचारी को दिया गया पारिश्रमिक। यह पारिश्रमिक कार्य के अनुसार हो सकता है अथवा अवधि (प्रति सप्ताह या प्रतिमाह) के अनुसार । कार्य के अनुसार चुकाया जाने वाला पारिश्रमिक कार्य के पूरा होने पर चुकाया जाता है,जबकि अवधि के अनुसार चुकाए गए पारिश्रमिक के अन्तर्गत प्रायः कार्य कितना हुआ इसकी उपेक्षा कर दी जाती है।

Pay-as-you-earn (PAYE) (पे एज़ यू अर्न) **कमाओ व कर चुकाओ**

किसी व्यक्ति पर बकाया आय कर की उसे पगार या पारिश्रमिक मिलने से पूर्व वसूल करने की प्रणाली। भारत में भी इंगलैंड की भांति नियोक्ता द्वारा कर्मचारी या किसी भी अन्य व्यक्ति या संस्था को भुगतान करते समय एक निर्दिष्ट दर से स्रोत पर ही कटौती करनी पड़ती है। इसे स्रोत पर कर की कटौती (TDS या Tax Deducted at Source) कहा जाता है।

Pay-back period (पे बैक पीरियड) **अदायगी अवधि**

ऐसी अवधि, जिसके भीतर कोई भी फर्म या निवेशकर्ता किसी परियोजना से इतना लाभ अर्जित कर ले जो प्रारम्भिक निवेश के समान हो। उदाहरण के लिए, किसी परियोजना में पूँजीगत लागत या निवेश की राशि 2 करोड़ रुपए है, तथा निवेश के बाद प्रतिवर्ष उस परियोजना से 50 लाख रुपए की शुद्ध आय (लाभ) प्राप्त होती है। ऐसी दशा में पूँजीगत लागत की वसूली (cost recovery) की अवधि चार वर्ष मानी जाएगी।

Pay control (पे कन्ट्रोल) **पारिश्रमिक या मजदूरी पर नियंत्रण**

कभी–कभी मजूदरी की बहुत अधिक दरें होने पर सरकार की कीमत तथा आय–नियंत्रण की नीति के अन्तर्गत इनमें *वृद्धि की सीमा* निर्धारित कर दी जाती है। इसके अनुसार मज़दूरी की वृद्धि में या तो एक निर्दिष्ट प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है, अथवा फ्लैट रेट से वृद्धि की छूट दी जा सकती है।

Pay-off matrix (पे ऑफ मैट्रिक्स) **प्रतिफल मैट्रिक्स**

खेल सिद्धान्त के अन्तर्गत जब एक फर्म (A) किसी रणनीति की घोषणा करती है, और तत्काल ही प्रतिद्वन्द्वी फर्म उसकी रणनीति की घोषणा कर देती है तो दोनों की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रथम फर्म को प्राप्त होने वाला लाभ **संयुक्त रणनीति का प्रतिफल** कहलाता है। मान लीजिए, A के पास दो रणनीतियां (a_1, a_2) हैं जबकि उनके प्रत्युत्तर में B भी दो रणनीतियां (b_1, b_2) अपना सकता है। ऐसी दशा में A की रण नीतियों के प्रत्युत्तर में B द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीतियों के फलस्वरूप *A को मिलने वाले प्रतिफलों या लाभ* को एक मैट्रिक्स के रूप में निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। A को प्राप्त होने प्रतिफलों की मैट्रिक्स नीचे प्रस्तुत है।

	b_1	b_2
a_1	10	4
a_2	6	12

इस मैट्रिक्स के अनुसार जैसे ही A अपनी प्रथम रणनीति (a_1) की घोषणा करता है, B अपनी दूसरी रणनीति (b_2) की घोषणा कर देगा, और इससे A को प्राप्त प्रतिफल 4 रुपए रह जाएगा। यदि A की रणनीति a_2 हो तो B की रणनीति b_1 होगी जिसका प्रतिफल A को 6 रुपए मिलेगा।

अब B को पहल करने दें। यदि वह b_1 रणनीति घोषित करता है तो A की रणनीति a_1 होगी जिससे उसे 10 रुपए का लाभ मिलेगा। इसी प्रकार B की रणनीति b_2 होने पर A की रणनीति a_2 होगी जिससे उसका लाभ 12 रुपया हो जाएगा। यह एक 2×2 की प्रतिफल मैट्रिक्स है।

इसी प्रकार A की तीन व B की 4 रणनीतियों का संयुक्त प्रतिफल जानने हेतु 3×4 की मैट्रिक्स बनाई जाएगी।

Payments in kind (पेमैंट इन काइंड) **वस्तुओं या सेवाओं के रूप में भुगतान**

अनेक बार किसी कर्मचारी या श्रमिक से काम लेने के पश्चात् उसे नकद में न देकर पारिश्रमिक का भुगतान जिंस या वस्तु के रूप में किया जाता है। भारत में आज भी कहीं कहीं कृषि क्षेत्र में मज़दूरों को उनकी सेवाओं के बदले अनाज के रूप में मज़दूरी चुकाई जाती है।

Pay roll (पेरोल) **कर्मचारियों या मज़दूरों की सूची**

Pay roll tax (पेरोल टैक्स) **मजदूरी के सकल भुगतान पर रोपित कर**

यह कर इंगलैंड में प्रचलित रहा है। इस प्रकार के कर से मज़दूरों की भर्ती पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

Peak (पीक) **उच्चतम स्तर**

कीमत स्तर में उच्चावचन होने पर कीमतों का उच्चतम स्तर। व्यापार चक्रों के अन्तगर्त ऐसे अनेक उच्चतम स्तर प्राप्त हो सकते हैं।

Peak-load pricing (पीक लोड प्राइसिंग) **व्यस्त समय हेतु कीमत निर्धारण**

ऐसी कीमत निर्धारण प्रक्रिया जिसके अन्तर्गत माँग का स्तर बहुत ऊँचा होने पर वस्तु या सेवा की काफी ऊँची कीमत ली जाती है, जबकि माँग कम होने पर वही विक्रेता कीमत में कमी कर देता है। प्रायः गर्मी की छुट्टियों में पहाड़ी स्थानों या सैरगाहों पर स्थित होटल मालिक कमरों का किराया ऊँची दर से लेते हैं,जबकि सर्दी में भीड़ कम होने पर किराए में कमी कर देते हैं। *यह भी एक प्रकार कीमत का विभेद है।*

Penetration price (पेनीट्रेशन प्राइस) **आक्रामक निम्न कीमत**

किसी वस्तु की बिक्री बढ़ाने तथा बाजार में अपना वर्चस्व कायम करने हेतु फर्म द्वारा अत्यन्त कम कीमत पर बिक्री करना। प्रायः ऐसा उन *उपभोक्ताओं को लुभाने हेतु* किया जाता है जो कीमत के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, तथा जिन वस्तुओं की मोंग की कीमत लोच काफी अधिक होती है।

Pension (पेन्शन)

सेवा निवृत्ति के बाद सरकारी कर्मचारियों को मिलने वाला नियमित भुगतान

यह भुगतान उन सभी कर्मचारियों को देय होता है जिन्होंने *निर्दिष्ट अवधि या आयु तक* सरकारी नौकरी की हो।

Pension fund (पेन्शन फंड) **पेन्शन कोष**

एक संस्थागत व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत पेन्शन के भुगतान एवं सम्बद्ध राशि का प्रबन्ध किया जाता है। इस कोष हेतु नियोक्ता द्वारा प्रत्येक कर्मचारी के हिसाब से नियमित रूप से राशि जमा करवाई जाती है।

Per capita income (पर केपिटा इन्कम) **प्रति व्यक्ति आय**

किसी देश या क्षेत्र में विभिन्न संसाधनों के माध्यम से उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं के कुल मूल्य में जनसंख्या से भाग देने पर प्राप्त औसत। प्रति व्यक्ति आय एक **औसत राशि है** तथा प्रायः इसके आधार पर आय के वितरण में व्याप्त विसंगति को नहीं देखा जा सकता।

Per capita real GDP (पर केपिटा रियल जी.डी.पी)
प्रति व्यक्ति वास्तविक घरेलू उत्पाद

स्थिर मूल्यो पर आकलित सकल घरेलू उत्पाद के मूल्य में जनसंख्या से भाग देने पर प्राप्त औसत। जनसंख्या में वयस्क व्यक्तियों की संख्या में बच्चों का भारित औसत जोड़ दिया जाता है। उदाहरण के लिए, अलग-अलग आयु के बच्चों के जनसंख्या में अनुपात को उस वर्ग का भार माना जा सकता है।

Percentile (पेसेन्टाइल) **शतांश**

किसी श्रेणी में आकार के अनुसार सभी मूल्यों को क्रम में रखते हुए एक एक शतांश का मूल्य रखना उदाहरण के 1/100 का, 2/100...... 10/100 का समूचे वितरण में क्या मूल्य है इसे ज्ञात करना।

Perfect capital mobility (पर्फेक्ट केपीटल मोबिलिटी) **पूर्ण पूँजी गतिशीलता**

ऐसी स्थिति, जिसमे दो देशों के मध्य पूँजी निर्बाध रूप से गतिशील होती है। इस तरह की स्वतंत्रता के अन्तर्गत पूँजी निवेश से सम्बद्ध जोखिम एवं पूँजी का प्रतिफल सभी देशों में समान हो जाता है। पूँजी की गतिशीलता में सरकारी नियंत्रण के कारण अवरोध उत्पन्न हो जाते हैं।

Perfect competition (पर्फेक्ट कम्पीटिशन) **पूर्ण प्रतियोगिता**

एक आदर्श बाज़ार, जिसमें क्रेताओं तथा विक्रेताओ की विशाल संख्या होने के कारण किसी एक क्रेता या विक्रेता द्वारा कीमत का निर्धारण नहीं होता, अपितु सकल माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा कीमत तय होती है। सभी विक्रेता समरूपी वस्तुएँ बेचते हैं और इस कारण न तो विज्ञापन की आवश्यकता होती है और न ही किसी के प्रति विशिष्ट व्यवहार किया जा सकता है।

पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाजार में फर्म को अपना पैमाना बढ़ाने या कम करने की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है तथा नई फर्मों के आगमन या पुरानी फर्मों के बहिर्गमन की पूर्ण छूट होने के कारण दीर्घकालमें दो बातें होती है:– प्रथम, प्रत्येक फर्म अपनी इष्टतम क्षमता के अनुरूप उत्पादन करती है, तथा द्वितीय, प्रत्येक फर्म को केवल सामान्य लाभ (P=AC) प्राप्त होता है। इस प्रकार के बाजार में प्रत्येक क्रेता व विक्रेता को बाजार की स्थिति का पूर्ण ज्ञान रहता है, जिसके कारण किसी का भी शोषण नहीं हो पाता।
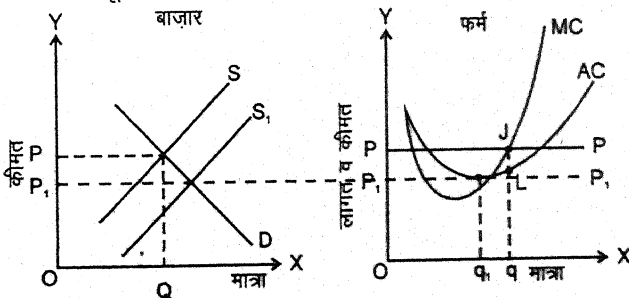
उपरोक्त चित्र में प्रारंम्भिक कीमत OP थी जो माँग व पूर्ति के साम्य के आधार पर निर्धारित हुई थी। इस कीमत पर बाजार में कुल OQ इकाइयां बेची व खरीदी जा रही थी। चूंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म को प्रचलित कीमत पर ही अधिकतम लाभ वाली मात्रा बेचनी होती है (जहां MC=Price हो) प्रत्येक फर्म Oq इकाइयां बेचती थी। इस कीमत पर प्रति इकाई JL लाभ प्राप्त होता था। चूंकि यह सामान्य लाभ से अधिक था, नई फर्मों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ जिसके कारण पूर्ति वक्र विवर्तित होकर S_1 हो गया, तथा साम्य कीमत कम होकर OP_1 हो गई। इस कीमत पर फर्म Oq_1 इकाइयां बेचती है एवं उसे सामान्य लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकाल में प्रत्येक फर्म को केवल सामान्य लाभ की प्राप्ति होती है।

Perfeet market (पर्फेक्ट मार्केट) **पूर्ण बाज़ार**

See perfect competition : देखिए पूर्ण प्रतियोगिता।

Perfect substitute (पर्फेक्ट सब्स्टीट्यूट) **पूर्ण स्थानापन्न वस्तु**

ऐसी वस्तु, जो प्रत्येक दृष्टि से (रंग,डिजाइन,स्वाद,पैकिंग, ट्रेड मार्क आदि) किसी दूसरी वस्तु के अनुरूप हो। पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में सभी विक्रेता पूर्णतया स्थानापन्न वस्तुओं की बिक्री करते हैं। जहाँ वस्तुओं के मध्य पूर्ण स्थानापन्नता होती है वहां कीमत भी पूर्णतः समान रहती है। ऐसी किन्हीं भी दो वस्तुओं के मध्य स्थानापन्नता लोच अनन्त होती है।

Performance related pay (पर्फोमेंस रिलेटेड पे) **निष्पादन के अनुसार पारिश्रमिक**

कभी कभी फर्म को प्राप्त होने वाले उत्पादन या लाभ के अनुरूप कर्मचारियों या श्रमिकों को पारिश्रमिक दिया जाता हैं। इसका एक उदाहरण बोनस का है। इस प्रकार निष्पादन के अनुसार कर्मचारियों को भुगतान करने से उनमें कार्य के प्रति उत्साह बना रहता है।

Peril point (पेरिल पॉइन्ट) **खतरे का बिन्दु**

सं.रा.अमरीका व कुछ अन्य देशों में आयात कर का वह स्तर, जिससे नीचे आने पर देश की अर्थ–व्यवस्था को आघात लगने की आशंका रहती है।

Period of gestation (पीरियड ऑफ जेस्टेशन) **अन्तराल अवधि**

किसी परियोजना में पूँजी निवेश करने तथा उत्पादन प्रारम्भ होने के बीच की अवधि। यदि यह अन्तराल लम्बा होता है,(जैसा कि बड़ी परियोजनाओं के संदर्भ में होता है) तो परियोजना से सम्बद्ध लागतों तथा प्रतिफल से जुड़ी मान्यताएँ प्रायः अनिश्चित हो सकती हैं।

Periphery (पेरीफरी) **बाह्य सीमा**

किसी अर्थव्यवस्था के भौगोलिक क्षेत्र की बाहरी परिधि। एक नगर की बाहरी परिधि पर वे गांव स्थित हो सकते हैं जहाँ से नगर में कच्चामाल, दूध, अनाज, तथा श्रमिकों

की आवक होती है, तथा जहाँ नगर में उत्पादित वस्तुएँ बिकने जाती हैं। प्रायः केन्द्र तथा परिधि के बीच सम्बन्धों की सहजता सड़क, दूर संचार आदि सुविधाओं पर निर्भर करती है।

Permanent income (पर्मानेन्ट इन्कम) **स्थायी आय**

वह राशि जिसे कोई व्यक्ति अनवरत रूप में व्यय कर सकता है, तथा जिसके व्यय करने की सम्भावना भविष्य में भी बनी रहती है। प्रायः स्थायी आय का निर्धारण किसी व्यक्ति द्वारा अपनी अर्जित आय के स्तर, अन्य स्रोतों से अपेक्षित आय,सरकार या किसी अन्य वयक्ति से प्राप्त होने वाली आय (बोनस,महंगाई भत्ता आदि) के आधार पर किया जाता है। प्रायः स्थायी आय के निर्धारण में **व्यक्ति परक दृष्टिकोण** अपनाया जाता है,क्योंकि स्वयं के भविष्य के विषय में व्यक्ति कुछ अधिक ही आशावादी होता हैं।

स्थायी आय की अवधारणा के अनुरूप ही मिल्टन फ्रीडमैन ने कहा कि आज का उपभोग स्तर आज की आय द्वारा नहीं अपितु किसी व्यक्ति की " स्थायी" आय के अनुमानों के आधार पर निरूपित किया जाता है। उन्होंने कहा कि अपनी स्थायी आय के अनुमान के कारण प्रायः व्यक्ति अपनी वर्तमान प्रयोज्य आय से कम या अधिक उपभोग व्यय करता है।

Permit to pollute (परमिट टू पॉल्यूट) **एक सीमा तक प्रदूषण की छूट**

कभी–कभी किसी कारखाने के प्रबन्धक पानी या हवा में एक अधिकतम सीमा तक प्रदूषण करने की छूट ले लेते हैं। प्रायः यह सीमा पर्यावरण को न्यूनतम रूप में दूषित करने हेतु उत्पादन जारी रखने के उद्देश्य से दी जाती है। इस सीमा का उल्लंघन करने पर उस कारखाने को बन्द किया जा सकता है, अथवा उससे भारी दंड वसूल किया जा सकता है।

Perpetual inventory method (पर्पीचुअल इन्वेंटरी मेथड) **कुल पूँजी स्टॉक का अनुमान करना।** किसी देश के प्रारम्भिक निवेश स्तर को आधार बनाकर विभिन्न प्रकार की पूँजीगत वस्तुओं (भवन,प्लांट व मशीनें,वाहन आदि) में हुई वास्तविक वृद्धि को जोड़ते हुए इनमें से जिनका पूर्णतः ह्रास हो चुका है उन्हें घटाकर वर्ष के अन्त में विद्यमान पूँजी स्टॉक का मूल्य ज्ञात करना।

Perpetuity (पर्पीचुइटी) **स्थायी रूप से आय देने वाली प्रतिभूति**

Perquisites (पर्क्वीजिट्स) **कार्य करने पर मुद्रा के अतिरिक्त प्राप्त भुगतान**

सामान्यतः इनमें कम्पनी का मकान, वाहन, खेल कूद की सुविधा,मनोरंजन के साधन, मेडीकल ताकि बीमा की सुविधाएँ शामिल रहती हैं।कुछ समय पूर्व इन सुविधाओं को पगार के अलावा कर मुक्त रूप में उपलब्ध कराया जाता था, परन्तु अब वाहन सुविधा, मकान आदि को भी आय के साथ जोड़कर आय-कर के दायरे में ले लिया गया है।

Personal disposable income (पर्सनल डिस्पोज़ेबल इनकम)

व्यक्तिगत प्रयोज्य आय

किसी परिवार द्वारा प्राप्त समस्त आय में से भविष्य निधि तथा करों का भुगतान करने के बाद शेष आय, जिसे उपभोग तथा बचत के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

Personal income distribution (पर्सनल इन्कम डिस्ट्रीब्यूशन)

वैयक्तिक आय का वितरण

समाज के विभिन्न व्यक्तियों के बीच आय का वितरण। यह वितरण कार्यानुसार आय वितरण से भिन्न है जिसमें श्रम, पूँजी, भवन, भूमि आदि के प्रयोग का पारिश्रमिक क्रमशः मजदूरी,ब्याज, किराया लगान आदि के रूप में दिया जाता है। राष्ट्रीय आय का अनुमान भी अलग–अलग साधनों के पारिश्रमिक के रूप में लगाया जाता है। परन्तु वैयक्तिक आय वितरण में किसी व्यक्ति के पास विद्यमान सभी संसाधनों के प्रयोगानुसार प्राप्त आय का योग लिया जाता है, भले ही कुछ व्यक्तियों के पास बहुत से साधन हों और उनकी आय बहुत अधिक हो। समाज में विद्यमान लोगों की विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आय को वैयक्तिक आय कहा जाता है।

(देखिए Lorenz curve; gini ratio)

Personal savings ratio (पर्सनल सेविंग्स रेशियो)

व्यक्तिगत बचत का अनुपात

किसी परिवार की प्रयोज्य आय का वह भाग, जिसे वह बचाकर रखता है। बचत का अनुपात प्रायः कीमत स्तर, पारिवारिक सम्पत्ति तथा भविष्य में रोजगार की आशाओं पर निर्भर करता है।

Personal sector (पर्सनल सैक्टर)

परिवारों की आर्थिक गतिविधियों से सम्बद्ध क्षेत्र

अर्थव्यवस्था में तीन क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां संचालित की जाती हैं– परिवारों द्वारा, उत्पादकों या फर्मों द्वारा, तथा सरकार द्वारा। इनमें परिवारों द्वारा उत्पादन के साधन प्रदान किए जाते हैं तथा उसके बदले प्राप्त आय को उपभोग तथा बचत के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

Peso problem (पीसो प्रॉब्लम)

सर्वाधिक ब्याज आधारित स्फीति की दीर्घकालीन प्रवृत्ति

यह समस्या तब प्रारम्भ होती है जब मुद्रा सफीति तथा मुद्रा की गिरती हुई क्रय शक्ति की विगत समस्या के *भविष्य में भी ने रहने की सम्भावना* होती है

Petro dollars (पैट्रो डॉलर्स)

तेल निर्यातक देशों द्वारा अमरीका की डॉलर प्रतिभूतियों में निवेश

भुगतान शेष काफी अनुकूल होने पर इन देशों ने खरबों डालर का निवेश किया हुआ है।

Phillips curve (फिलिप्स कर्व) **फिलिप वक्र**

ब्रिटेन के अर्थशास्त्री ए.डब्लू फिलिप्स द्वारा बेरोजगारी के स्तर तथा *मजदूरी जनित मुद्रा–स्फीति के सम्बन्ध* को व्यक्त करने हेतु एक वक्र निरूपित किया। उन्होंने बतलाया कि सकल माँग में वृद्धि के कारण बेरोजगारी में कमी (नीचे के चित्र में (A से B) होने से मज़दूरी की दर में वृद्धि होती है (C से D)। इससे उत्पादकों की इस भावना का पता चलता है कि जैसे उनके उत्पादों की माँग बढ़ती है वे अधिक मज़दूरी चुकाने हेतु तत्पर रहेंगे।
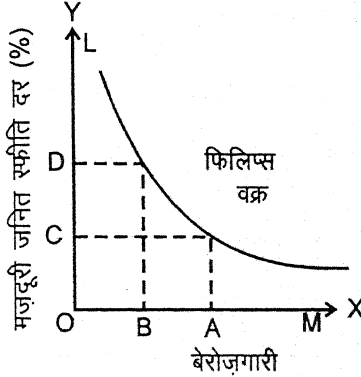
इसके विपरीत सकल माँग में कमी होने पर मौद्रिक मज़दूरी की वृद्धि दर में कमी हो जाती है। इस वक्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि *बेराज़गारी के स्तर तथा माँग–जनित मुद्रा स्फीति में प्रतिकूल सम्बन्ध हैं।*

Physiocrats (फिज़िओक्रेट्स) **प्रकृतिवादी**

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस के डा. केने द्वारा स्थापित एक विचारधारा, जिसके अनुसार **केवल भूमि ही** किसी समाज में समस्त आय तथा सम्पत्ति का सृजन करने में सक्षम है। डा. केने किसी भी आर्थिक गतिविधि में सरकारी हस्तक्षेप के विरुद्ध थे, तथा यह मानते थे कि सभी व्यक्तियों को उनका पारिश्रमिक एक "प्राकृतिक व्यवस्था" के अनुसार मिल जाता है।

Picketing (पिकेटिंग) **प्रदर्शन**

श्रमिक–आंदोलन का एक रूप, जिसके अन्तर्गत कार्य स्थल के बाहर प्रदर्शन किया जाता है। ये प्रदर्शनकारी अन्य श्रमिकों तथा कर्मचारियों को कार्यालय या कारखाने के भीतर जाने से रोकने तथा नियोक्ताओं पर नैतिक दबाव डालने हेतु प्रदर्शन करते हैं।

Piecework (पीसवर्क)

पारिश्रमिक भुगतान की वह विधि जिसके अन्तर्गत किसी श्रमिक या कर्मचारी को उसके द्वारा किए गए **कार्य के आधार पर** भुगतान किया जाता है।

Pie diagram (पाईडायग्राम) **वृत्त चित्र**

विभिन्न चरों के सापेक्ष आकार को प्रस्तुत करने वाला चित्र। यह एक गोलाकार या वर्तुल रूप लिए होता है, तथा वृत्त के भीतर विभिन्न चरों के योग को प्रतिशत रूप में दर्शाया जाता है। प्रायः दो अवधियों के बीच आकार में होने वाले सापेक्ष परिर्वतनों को वृत्त चित्र से सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। एक ही समय में दो श्रेणियों से सम्बद्ध विभिन्न चरों के आकार (दो वृत्त चित्रों द्वारा) प्रस्तुत करके इनके सापेक्ष अन्तर भी ज्ञात किए जा सकते हैं।

Pigou, A. C. (ए.सी.पीगू) (1877–1959)

एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री, जिन्होंने अपनी पुस्तक "दी इकोनोमिक्स ऑफ वेलफेयर" में कल्याण अर्थशास्त्र के सिद्धान्त की व्याख्या की। पीगू ने बाज़ार कीमतों को विभिन्न वस्तुओं की सापेक्ष उपयोगिताओं का प्रतीक माना। उन्होंने निजी प्रतिफल (लाभ) तथा सामाजिक प्रतिफल का अन्तर बतलाते हुए कहा कि संसाधनों के इष्टतम आवंटन के लिए कहीं अनुदान की, तथा कहीं–कहीं करारोपण की आवश्यकता होती है। उन्होंने यह कहा कि धनी व्यक्ति के लिए मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता कम होती है, जबकि गरीब व्यक्तियों के लिए यह बहुत अधिक होती है। इसीलिए *धनी लोगों से कर लेकर* उस राशि को अनुदान के रूप में निर्धन व्यक्तियों को देने पर कुल कल्याण वृद्धि हो जाएगी। इसी आधार पर उन्होंने कहा कि एक सहृदय डाक्टर निर्धन व्यक्ति से कम फीस लेता है जबकि धनी व्यक्ति से ली जाने वाली फीस अधिक होती है।

Pigou-effect (पीगू इफैक्ट) **पीगू प्रभाव**

कीमतों तथा मज़दूरी दरों में लचीलापन होने पर बेरोज़गारी को कम किया जा सकता है। मंदी के दौरान यदि मज़दूरी की दरों व कीमतों में पर्याप्त कमी हो जाए तो मुद्रा की क्रय शक्ति में वृद्धि के कारण पूर्ण रोज़गार की स्थिति प्राप्त हो जाएगी। पीगू ने तर्क दिया कि कीमतों में कमी से संपत्ति (मुद्रा) की क्रय शक्ति बढ़ने पर उपभोग माँग में वृद्धि होगी जिससे आय तथा रोज़गार के स्तर बढ़ेंगे।

Placing (प्लेसिंग) **शेयरों की चयनित बिक्री**

आम जनता के लिए शेयरों को निर्गमित करने की अपेक्षा *निवेशकों के चयनित समूह* को नए शेयर आवंटित करना।

Planned economy (प्लान्ड इकोनोमी) **नियोजित अर्थ व्यवस्था**

(देखें central planning)

Planned investment (प्लान्ड इन्वेसटमैंट) **नियोजित निवेश**

निर्दिष्ट अवधि में व्यक्तियों ,परिवारों, फर्मों तथा सार्वजनिक निकायों द्वारा प्रस्तावित निवेश। वास्तविक निवश इसकी अपेक्षा कम हो सकता है क्योंकि वांछित मात्रा में मशीनें या निर्माण सामग्री उपलब्ध नहीं होती। वास्तविक निवेश मंदी के दौर में

नियोजित निवेश की अपेक्षा अधिक भी हो सकता है।

Planned savings (प्लान्ड सेविंग्स) **नियोजित बचतें**

निर्दिष्ट अवधि में व्यक्तियों, परिवारों, फर्मों तथा सार्वजनिक निकायों द्वारा प्रस्तावित बचत। वास्तविक बचत प्रस्तावित बचत की तुलना में कम या अधिक हो सकती है क्योंकि बचतें, कीमत–स्तर ,आकस्मिक आवश्यकताओं की प्रकृति तथा सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों पर निर्भर करती हैं।

Planning-programming-budgeting system (प्लानिंग प्रोग्रामिंग बजटिंग सिस्टम) **सार्वजनिक क्षेत्र में साधनों के आवंटन की व्यवस्था**

इस व्यवस्था के अन्तर्गत यह देखा जाता है कि कोई भी सरकारी उद्यम या विभाग निम्न के विषय में क्या सोचता है– (अ) इसके उद्देश्य, (ब) उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किए गए उपाय (स) इनके अन्तर्गत प्रयुक्त किए जाने वाले साधन (द) उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की मात्राएँ। इसी क्रम में विचार करते हुए निर्दिष्ट क्षेत्र या इकाइयों में साधनों का आवंटन, उत्पादन के लक्ष्यों का निर्धारण तथा तकनीक का चयन किया जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत पूँजीगत वस्तुओं तथा विभिन्न आवर्ती लागतों की भी विस्तृत रूप रेखा तैयार की जाती है।

Plough back (प्लो बैक) **लाभ का निवेश**

कोई भी कम्पनी जब शेयरों के निर्गम या ऋणों की अपेक्षा स्वयं के लाभों को अपने विस्तार हेतु प्रयुक्त करती है तो वह लाभ का निवेश कहलाता है।

Point-elasticity (पॉइंट इलास्टीसिटी) **माँग की बिन्दु लोच**

यदि कीमत में अत्यंत सूक्ष्म (0.1 प्रतिशत) परिवर्तन हो तथा इससे माँग पर होने वाले प्रभाव को देखा जाए तो वस्तुतः लोच का आकलन **माँग वक्र के उसी बिन्दु पर** किया जा रहा है। (ΔP तथा ΔQ) शून्य के समान होते हैं। यह माँग की चाप लोच से भिन्न है जिसके अन्तर्गत माँग तथा कीमत दोनों के परिवर्तन पर्याप्त तथा मापनीय होते हैं। उस संदर्भ में कीमत लोच का माप माँग वक्र के दो बिन्दुओं के मध्य लिया जाता है।

Poison pill (पॉइजन पिल) **जहर की गोली**

एक कम्पनी जब दूसरी परन्तु अपेक्षाकृत छोटी कम्पनी को अपने अधिकार में लेने की पेशकश करती है तो यह उस छोटी कम्पनी के लिए जहर की गोली के समान घातक होगा।

Political economy (पॉलिटिकल इकोनोमी) **अर्थशास्त्र का वैकल्पिक रूप**

प्रायः आर्थिक नीतियों के निरूपण हेतु नीति निर्धारकों को आर्थिक सिद्धान्तों का ज्ञान होना आवश्यक समझा जाता है। किसी नीति का साधनों के आवंटन तथा आय के वितरण पर क्या प्रभाव होगा यह जानकारी भी इन सिद्धान्तों से मिल सकती है जिसका उपयोग नीति –निर्माण में किया जा सकता है।

Poll tax (पोल टैक्स) **एक मुश्त समान कर**

आय को आधार बनाने की अपेक्षा प्रत्येक नागरिक से **एक ही दर** से एक मुश्त कर वसूल करना

Pollution (पॉलूशन) **प्रदूषण**

जहरीली गैसों के द्वारा पर्यावरण, विशेष रूप से जल तथा वायु को दूषित बनाना। इनसे मानव के स्वास्थ्य पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रायः आर्थिक विकास के साथ उद्योगों व कृषि में जिस गति से उत्पादन बढ़ता है तथा परिवहन के क्षेत्र में वाहनों की संख्या में आशातीत वृद्धि होती है, उससे रसायनों का काला धुंआ वायुमंडल को नुकसान पहुँचाता है। प्रदूषित वायु में सांस लेने के कारण इन्सान को फेफड़ों से सम्बद्ध बीमारियां हो जाती है। इसी प्रकार कारखानों से रसायन पदार्थों को पानी में छोड़े जाने से जल–प्रदूषण होता है, तथा ऐसा पानी मनुष्य व पशुओं के लिए घातक बन जाता है।

Pollution standards (पॉलूशन स्टैन्डर्स) **प्रदूषण सम्बन्धी मानक**

प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों को नियंत्रित करने की विधि। किसी औद्योगिक इकाई या अस्पताल के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह ज़हरीले रसायनों की मात्रा को न्यूनतम स्तर तक घटाने के बाद ही उन्हें वायु या जल में छोड़ें। वस्तुतः उत्पादन प्रक्रिया जारी रखने के लिए मानव समाज को एक स्तर तक प्रदूषण को सहन करना ही पड़ता है।

Pollutor pays principle (पॉलूटर पेज़ प्रिंसिपल)

प्रदूषणकर्ता को प्रदूषण की सामाजिक लागत वहन करनी चाहिए,ऐसा सिद्धान्त

विभिन्न देशों में सरकार ने इस तरह के कानून बनाए हैं जिनके अनुसार जल तथा वायु प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों को इसके निवारण हेतु व्यवस्था करनी पड़ती है। इसे सरकार की प्रदूषण नियंत्रण (pollution control) की नीति कहा जाता है।

Population (पॉपूलेशन) **जनसंख्या**

किसी देश या भौगोलिक क्षेत्र में रहने वालों की कुल संख्या। इन्हें आयु के अनुसार तथा लिंग के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। जनसंख्या का आकार जन्म दर, मृत्यु दर तथा आप्रवास की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

Population trap (पॉपूलेशन ट्रेप) **जनसंख्या का जाल**

एक ऐसी स्थिति, जिसमें जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि के कारण समूची बचतों का उपयोग केवल बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता पूर्ति हेतु किया जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन–स्तर में सुधार की *सभी सम्भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं।* इस स्थिति से उबरने के लिए जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी लाने के साथ ही बचतों व निवेश में वृद्धि करनी पड़ती है।

Portfolio (पोर्ट फोलियों) **निवेशकर्ता के पास विद्यमान शेयर एवं प्रतिभूतियाँ**
प्रायः एक निवेशकर्ता जोखिम से बचने के लिए अलग–अलग शेयरों तथा प्रतिभूतियों में पूँजी निवेश करता है। इसी प्रकार कुछ शेयर या प्रतिभूतियां अल्पकाल में ब्याज़/लाभांश देने वाली होती हैं जबकि अन्य की कीमतें दीर्घकाल में बढ़ने की सम्भावना रहती है।

Portfolio theory (पोर्ट फोलियो थ्योरी) **निवेश का सिद्धान्त**
इस प्रक्रिया का अध्ययन जिसके अनुसार कोई निवेशकर्ता जोखिम को न्यूनतम करते हुए दीर्घकाल में अधिकतम लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से पूँजी का निवेश करता है। किसी प्रतिभूति या शेयर से प्राप्त होने वाले प्रतिफल में ब्याज़ अथवा लाभ के साथ इसके मूल्य में होने वाली वृद्धि या कमी को समायोजित किया जाता है। इसी के आधार पर शेयरों तथा प्रतिभूतियों का मिश्रण चुना जाता है।

Portfolio selection (पोर्टफोलियो सिलेक्शन) **शेयरों तथा प्रतिभतियों का चयन**
(देखिए portfolio theory)

Positive economics (पोज़ीटिव इकोनोमिक्स) **वास्तविक अर्थशास्त्र**
आर्थिक प्रक्रियाओं का अध्ययन। इसके अन्तर्गत निम्न बातों का अध्ययन किया जा सकता है– (i) किस प्रकार एक उपभोक्ता या फर्म अपने पास उपलब्ध साधनों का आवंटन करके अधिकतम उपयोगिता या लाभ प्राप्त कर सकती है(ii)वस्तु या साधन की कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है,(iii) बाज़ार की प्रकृति के अनुसार निर्णय प्रक्रिया में क्या अन्तर आता है,(iv) आय में विसंगतियां क्यों उत्पन्न होती हैं, (v) श्रम की माँग व पूर्ति में विसंगति होने पर बेरोज़गारी किस प्रकार बढ़ सकती है, (vi)मुद्रा की मात्रा तथा कीमत स्तर में क्या सम्बन्ध है तथा मुद्रा स्फीति या संकुचन की स्थिति किस प्रकार उत्पन्न होती है, आदि। इन सभी के अध्ययन के साथ कुछ मान्यताएँ जुड़ी होती हैं तथा उन मान्यताओं के अनुरूप कुछ आर्थिक नियम प्रतिपादित किए जाते हैं।
यह अध्ययन आदर्शवादी अर्थशास्त्र से भिन्न है जिसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में व्याप्त मुद्रा स्फीति, मन्दी, बेरोजगारी आय की विषमताओं, निर्धनता आदि की समस्याओं को *हल करनें हेतु नीतियां प्रस्तुत की जाती हैं।*

Potential competition (पोटेन्शियल कम्पीटीशन) **सम्भावित प्रतिस्पर्द्धा**
यह प्रतिस्पर्द्धा विद्यमान एवं सम्भावित नए प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं के साथ हो सकती है। प्रायः अल्पाधिकार वाले बाज़ार में मौजूद विक्रेता सीमाबद्ध कीमत को इतना कम रखते हैं कि सम्भावित प्रतिस्पर्द्धा न्यूनतम रहे।

Potential entrant (पोटेन्शियल एँट्रेन्ट) **सम्भावित प्रवेशार्थी**
सही! मौके तथा अनुकूल परिस्थितियों के आशा में एक नई फर्म, जो बाज़ार में प्रवेश की इच्छुक है। यदि बाज़ार में प्रवेश पर कोई रोक नहीं है,तो वस्तु की कीमत ऊँची

होने तथा मौजूदा फर्मो को पर्याप्त लाभ प्राप्त होने की दशा मे कोई भी नई फर्म बाज़ार में प्रवेश कर जाएगी। इसके प्रवेश के बाद पूर्व में विद्यमान विक्रेताओं के लाभ में कमी हो जाएगी, तथा वे इस नई फर्म के अस्तित्व को स्वीकार कर लेंगे।

Potential output (पोटेन्शियल आउटपुट) **सम्भावित उत्पादन**

उपलब्ध श्रम,पूँजी,भूमि–भवन तथा तकनीक के आधार पर अधिकतम उत्पादन का सम्भावित स्तर। किसी फर्म की उत्पादन क्षमता उसके पास विद्यमान पूँजी तथा प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है। समूची अर्थव्यवस्था के लिए संभावित उत्पादन सभी फर्मों की उत्पादन क्षमताओं का योग नहीं है। यह सकल उत्पादन भूमि,पूँजी,श्रम,तथा अलग अलग क्षेत्रों में प्रचलित प्रौद्योगिकी पर निर्भर करेगा।

Poverty (पॉवर्टी) **निर्धनता**

किसी व्यक्ति या परिवार की निर्धारित न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सामर्थ्य नहीं होना। निर्धनता के मानक अलग अलग देशों या क्षेत्रों में अलग–अलग हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार जिस व्यक्ति की आय एक डालर प्रतिदिन से कम है, वह निर्धन है। भारत में शहरों में 2100 केलोरी तथा गांवों में 2400 केलोरी प्रतिदिन से कम उपभोग करने वाला व्यक्ति निर्धन है। इतनी मात्रा भोजन के लिए भारत में एक परिवार की वार्षिक आय 20,000 रुपया होनी चाहिए। जिस परिवार का आय या व्यय स्तर इससे कम है उसे गरीबी की रेखा से नीचे वाला(BPL या Below Poverty Line) परिवार कहा जाता है।

Poverty line (पावर्टी लाइन) **निर्धनता की रेखा**

आय का वह स्तर जो अपर्याप्त उपभोग से व्यक्ति को बचाता है। यह स्तर स्थान तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। इसी प्रकार खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के अनुरूप भी समय समय पर ग़रीबी की रेखा की परिभाषा बदली जाती है।

Poverty trap (पावर्टी ट्रेप) **निर्धनता का जाल**

ऐसी स्थिति, जिसमें सामाजिक सुरक्षा योजना के अन्तर्गत सरकार से राहत पाने वाला व्यक्ति रोज़गार की तलाश करना ही बंद कर देता है, क्योंकि उसे जो रोज़गार प्राप्त होना है उसका पारिश्रमिक सरकार से सामाजिक सुरक्षा के अन्तर्गत प्राप्त हो रहे भुगतान से भी कम होगा। संक्षेप में, ऐसी स्थिति में निर्धन व्यक्ति काम करने की अपेक्षा सामाजिक सुरक्षा योजना के अन्तर्गत सरकार से भत्ता लेना अधिक उपयुक्त समझते हैं।

Precautionary demand for money (प्रीकॉशनरी डिमान्ड फॉर मनी) **मुद्रा की सतर्कता या आकस्मिक माँग**

मुद्रा की कुल माँग का वह भाग जिसे कोई व्यक्ति आकस्मिक रूप से उत्पन्न समस्या से निपटने हेतु अपने पास रखता है। यह मुद्रा की सौदा माँग से भिन्न है जिसमें उपभोक्ता या उत्पादक सामान्य क्रय विक्रय हेतु मुद्रा अपने पास रखते हैं। इस प्रकार

सतर्कता माँग मुद्रा की सट्टा माँग से भी भिन्न है जिसके अन्तर्गत प्रतिभूति खरीदने हेतु मुद्रा पास रखी जाती है।

Predatory pricing (प्रीडेटरी प्राइसिंग)

प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं को क्षति पहुंचाने वाली कीमत नीति

यदि फर्म चयनित रूप से कीमत में कटौती करके प्रतिद्वन्द्वी फर्मों को क्षति पहुंचाए या एकाधिकार होने पर उपभोक्ताओं का शोषण करने की दृष्टि से कीमत निर्धारित करे, तो वह इस प्रकार की कीमत नीति मानी जाएगी

Preference share (प्रीफरेंस शेयर) **प्राथमिकता पूर्ण शेयर**

उन व्यक्तियों या संस्थाओं को दी गई वित्तीय प्रतिभूतियां, जिन्हें कोई कम्पनी दीर्घ कालीन पूँजी जुटाने हेतु निर्गमित करती है। इन शेयरों पर एक निश्चित दर से "लाभांश" दिया जाता है, भले ही किसी वर्ष में कम्पनी को हानि हुई हो। इन शेयरों के धारकों को कम्पनी की वार्षिक बैठक में मताधिकार नहीं होता।

Premium (प्रीमियम)

(1) बीमा पॉलिसी पर नियमित भुगतान,
(2) किसी शेयर के निर्गम मूल्य से अधिक मूल्य लेना, तथा
(3) ब्याज़ की दर पर अतिरिक्त भुगतान, जो निवेश से सम्बद्ध जोखिम को देखकर तय किया जाता है,

Prescriptive statement (प्रीस्क्रिप्टिव स्टेटमैंट) **सुझावात्मक कथन**

इसके अनुसार किसी समस्या के समाधान हेतु क्या होना चाहिए, इसका विवेचन किया जाता है। यह कथन "वास्तविक कथन"से भिन्न है जिसके अन्तर्गत उस समस्या के उद्भव एवं कारणों की व्याख्या निहित होती है।

Pressure group (प्रेशर ग्रुप) **दबाव बनाने वाला समूह**

सरकार की नीतियों तथा कानूनों में परिवर्तन हेतु दबाव बनाने वाला संगठन। यह संगठन अपने सदस्यों के हित के लिए अथवा व्यापक हितों के पोषण(जैसे पर्यावरण,जल आपूर्ति या जल प्रबन्धन, अनुदान या सब्सिडी आदि) के लिए प्रयास करता है, तथा सरकार पर नीतियों में परिवर्तन हेतु दबाव डालता है।

Pre-tax profits (प्री टैक्स प्रॉफिट) **कर-पूर्व के लाभ**

किसी संयुक्त कम्पनी के वे लाभ जिसमें से निगम कर नहीं घटाया गया हो। अन्य संस्थानों का वह लाभ जिसमें से आय कर नहीं घटाया गया हो।

Price (प्राइस) **कीमत**

वह राशि, जिसका किसी वस्तु या सेवा की एक इकाई के लिए भुगतान किया गया हो। प्रायः प्रत्येक वस्तु की कीमत उस पर अंकित रहती है। कीमत का निर्धारण बाज़ार की प्रकृति के अनुसार होता है। जहां एकाधिकार के अन्तर्गत विक्रेता ही कीमत निर्धारित करता है, पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार मे कीमत का निर्धारण बाज़ार

की कुल माँग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है। एडम स्मिथ के अनुसार किसी वस्तु की कीमत उसकी दुर्लभता पर निर्भर करती है।

Price control (प्राइस कन्ट्रोल) **कीमत नियंत्रण**

जब सरकार यह अनुभव करती है कि बाज़ार में एकाधिकारिक शक्तियों के वर्चस्व के कारण वस्तु की कीमत बहुत अधिक है,तो वह कानून के माध्यम से अधिकतम कीमत निर्धारण कर देती है। परन्तु यदि यह कीमत एक सीमा से कम है तो वस्तु की माँग उसकी पूर्ति की अपेक्षा बहुत अधिक होने के कारण उसकी काला बाज़ारी शुरू हो जाएगी (देखिए black market)

Price discrimination (प्राइस डिस्क्रिमिनेशन) **कीमत विभेद**

जब कोई भी विक्रेता एक ही वस्तु के लिए अलग–अलग बाज़ारों में अलग–अलग लें अथवा एक ही बाज़ार में अलग–अलग उपभोक्ताओं से भिन्न कीमतें ले तो इसे कीमत विभेद कहा जाता है। कीमत विभेद की नीति की सफलता निम्न बातों पर निर्भर करती हैं (1) उपभोक्ताओं को अलग अलग समूहों में बांटना संभव हो, (2) प्रत्येक समूह में वस्तु की माँग की लोच अलग अलग होनी चाहिए, (3) कम से कम एक बाजार में फर्म का एकाधिकार होना चाहिए तथा (4) कम कीमत पर वस्तु प्राप्त करने वाले उपभोक्ताओं के लिए यह सम्भव नहीं हो कि अधिक कीमत देने वाले उपभोक्ताओं को वस्तु बेच सकें।

Price earning ratio(P/E Ratio) (प्राइस अर्निंग रेशियो)

कीमत व प्रतिफल का अनुपात

किसी कम्पनी के साधारण शेयर की वर्तमान कीमत तथा प्रति शेयर चुकाए गए लाभांश का अनुपात। यदि यह अनुपात अपेक्षाकृत ऊँचा है तो ऐसी आशा की जा सकती है कि शेयर पर प्राप्त लाभांश सुरक्षित है।

Price elasticity (प्राइस इलास्टीसिटी) **माँग की कीमत लोच**

किसी वस्तु की कीमत में परिर्वन होने पर उसकी माँग में कितना परिवर्तन सम्भावित है इसका माप। यदि कीमत की अपेक्षा माँग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन होता है,तो माँग अधिक लोचदार मानी जाएगी। यदि इसके विपरीत माँग में होने वाला परिवर्तन कीमत में परिवर्तन की अपेक्षा कम है तो वस्तु की माँग बेलोच मानी जाएगी।

Price fixing (प्राइस फिक्सिंग)

दो या अधिक विक्रेताओं द्वारा मिलकर तय की गई कीमत

अनेक देशों में इसे एकाधिकारिक कीमत मानते हुए इस प्रकार के प्रयासों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ है।

Price index (प्राइस इंडैक्स) **कीमत सूचकांक**

किसी एक वस्तु की कीमत निर्दिष्ट आधार वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष में कितनी अधिक या कम है, उसका प्रतिशत रूपान्तरण। अनेक वस्तुओं की आधार वर्ष तथा

वर्तमान वर्ष की कीमतों का अन्तर सूचकांक का परिवर्तन कहलाता है। यदि प्रत्येक वस्तु की माँग के अनुरूप भार देकर उससे सूचकांको को गुणा करके उनका भारित औसत लिया जाए तो वह भारित सूचकांक कहलाएगा।

Price effect (प्राइस इफेक्ट) **कीमत प्रभाव**

किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में कुछ परिवर्तन तो प्रतिस्थापन प्रभाव $\left(\frac{P_X}{P_y}\right.$ में परिवर्तन$\left.\right)$ के कारण होता है, एवं कुछ परिवर्तन आय की क्रयशक्ति में परिवर्तन (आय प्रभाव) के कारण होता है। इन दोनों का योग कीमत प्रभाव कहलाता है।

$$\frac{dD_x}{dP_x} = \frac{\partial D_x}{\partial M\left(\frac{P_x}{P_y}\right)} + D_x\left(\frac{\partial D_x}{\partial M}\right)$$

कीमत प्रभाव= प्रतिस्थापन प्रभाव+आय प्रभाव। इसे रेखाचित्र के रूप में नीचे प्रस्तुत किया जाता है।
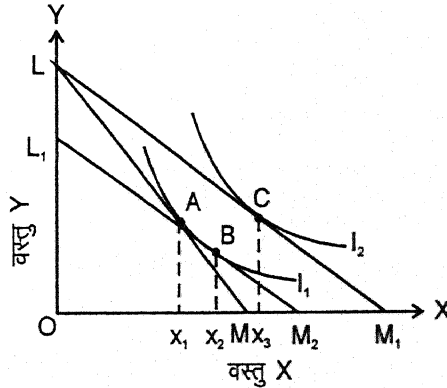
$X_1 - X_2$ = प्रतिस्थापन प्रभाव (A से B)

$X_2 - X_3$ = आय प्रभाव (B से C)

$X_1 - X_3$ = कीमत प्रभाव (A से C)

उपभोक्ता का मूल साम्य बिन्दु A पर था। वस्तु की कीमत में कमी होने पर बजट रेखा आवर्तित होकर LM से LM_1 बन जाती है जहां C बिन्दु पर उसे नई साम्य स्थिति प्राप्त होती है। यह परिवर्तन कीमत प्रभाव है। परन्तु यदि उसकी आय में LL_1 की कटौती करके उसे नए मूल्य–अनुपात के अनुरूप X खरीदने को कहा जाए तो वह B बिन्दु पर साम्य स्थिति प्राप्त करेगा जो प्रतिस्थापन प्रभाव दर्शाता है। B

बिन्दु पर वह OX_2 मात्रा ख़रीदता है ($OX_2>OX_1$); परन्तु यहाँ Y की मात्रा पूर्वापेक्षा कम है। इस प्रकार, A से B पर आने को प्रतिस्थापन प्रभाव माना जाएगा। यदि अब उसकी वास्तविक आय में की गई कटौती लौटा दी जाए तो वह C पर पहुंच जाएगा जहां X की मात्रा OX_3 होगी तथा Y की मात्रा भी बढ़ जाएगी। यह आय प्रभाव है।

Price elasticity of supply (प्राइस इलास्टिसिटी ऑफ सप्लाई) **कीमत की पूर्ति लोच**

कीमत में परिवर्तन होने पर वस्तु की पूर्ति में कितना आनुपातिक परिवर्तन होता है, इसका माप।

$$e_s = \frac{\text{पूर्ति में परिवर्तन का प्रतिशत}}{\text{कीमत में परिवर्तन का प्रतिशत}}$$

पूर्ति की लोच *सामान्य तौर पर* धनात्मक होती है जिसके अनुसार वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की पूर्ति में भी वृद्धि होती है। लेकिन कुछ वस्तुएँ ऐसी हो सकती हैं जिनकी पूर्ति में कीमत की तुलना में कम परिवर्तन हो पाता है पैनल (b)
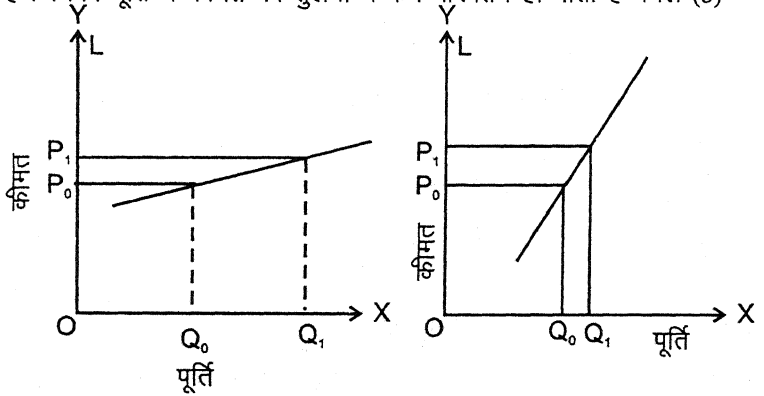
उपरोक्त चित्र के अनुसार पैनल (a) में वस्तु की पूर्ति काफी अधिक लोचदार है जबकि पैनल (b) में यह बेलोच है।

Price Leader (प्राइस लीडर) **कीमत निर्धारक**

एक अल्पाधिकार वाले बाज़ार में जब कीमत युद्ध के चलते बाज़ार में अस्थिरता रहती है तो अन्ततः छोटी फर्में मिलकर एक सशक्त या बड़ी फर्म को कीमत नेतृत्व के लिए आग्रह करती हैं। यही फर्म अपनी निम्न लागत या बड़े आकार के कारण कीमत का निर्धारण करती है, तथा शेष सभी फर्में उसी कीमत पर अपनी वस्तु बेचने को विवश रहती हैं। कीमत निर्धारक फर्म निर्दिष्ट कीमत पर शेष फर्मों के लिए ''जीओ व जीने दो'' की नीति का अनुसरण करती है। यह नेतृत्व तीन प्रकार

का हो सकता है– (अ) एक विशालकाय फर्म द्वारा कीमत नेतृत्व, (ब) एक निम्न लागत वाली फर्म द्वारा कीमत नेतृत्व ,तथा (स) एक अनुभवी फर्म द्वारा संकेतात्मक कीमत नेतृत्व।

Price maker (प्राइस मकर) **कीमत निर्माता**

ऐसी फर्म, जो किसी वस्तु या प्रतिभूति की कीमत का निर्धारण करके उस पर वस्तु या प्रतिभूति को खरीदने या बेचने हेतु तत्पर रहती है। ऐसी फर्म वस्तु या प्रतिभूति का पर्याप्त स्टॉक अपने पास रखती है ताकि आवश्यकतानुसार स्टॉक में से आपूर्ति करके या उसमें वृद्धि करके निर्धारित कीमत को बनाए रख सके।

Price mechanism (प्राइस मेकेनिज्म) **कीमत तंत्र**

एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में कीमतों को उपभोक्ताओं व उत्पादों के लिए संदेशवाहक तथा प्रेरणा–स्रोत माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि प्रत्येक आर्थिक इकाई साधनों के आवंटन हेतु कीमत को ही निर्धारक घटक के रूप में स्वीकार करती हैं। किसी वस्तु का उपभोग बढ़ाना है या कम करना है, किसी वस्तु का कितना उत्पादन करना है, किस साधन की कितनी मात्रा बेचनी या खरीदनी है, ये सभी निर्णय सम्बद्ध कीमत के अनुसार ही लिए जाते हैं। प्रायः स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में कीमत का निर्धारण माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा किया जाता है।

Price reform (प्राइस रिफॉर्म) **कीमत सुधार**

कृत्रिम रूप से नियंत्रित कीमतों वाली नीति को ऐसी नीति द्वारा प्रतिस्थापित करना, जिसमें कीमतें अवसर लागतों के अनुरूप हों। इस व्यवस्था में बाज़ार की माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा *निर्धारित कीमतों के आस पास* वस्तुओं व सेवाओं की कीमतें निर्धारित होती हैं

Preces and incomes policy (प्राइसेज़ एन्ड इन्कम पॉलिसी)

कीमतों व आय से सम्बद्ध नीति

कीमतों व मज़दूरी की वृद्धि के कारण प्रारम्भ मुद्रा स्फीति को प्रत्यक्षतः नियंत्रित करने वाली नीति। इस नीति के पीछे यह मान्यता निहित है कि मज़दूरी व कीमतों को नियंत्रित करके मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने के साथ ही रोज़गार के उच्च स्तर को बनाए रखना भी सम्भव है। इसके विपरीत मंदी को नियंत्रित करने वाली मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों के प्रभाव परोक्ष होने के साथ रोज़गार पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले होते हैं।

Price squeeze (प्राइस स्क्वीज़) **पाश-युक्त कीमत**

एक प्रकार की प्रतिबन्धित व्यापार नीति, जिसके अन्तर्गत शीर्ष रूप से एकीकृत फर्में अन्य फर्मों को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करती है। ऐसा तब होता है जब एकीकृत फर्में कच्चा माल तथा तैयार वस्तु दोनों का उत्पादन करती हैं *जबकि ग़ैर एकीकृत फर्में केवल तैयार वस्तु बनाती हैं।* ऐसी स्थिति में यदि कच्चे माल की आपूर्ति पर

एकीकृत फर्मों का एकाधिकार हो तथा उसकी कीमत में आशातीत वृद्धि कर दी जाए तो इस पाश–युक्त कीमत से ग़ैर एकीकृत फर्मों को भारी नुकसान होगा। इसके विपरीत यदि ग़ैर –एकीकृत फर्मे कच्चा माल तथा तैयार वस्तु दोनों का उत्पादन करती हों, तथा एकीकृत फर्म पर तैयार माल बेचने के लिए पूरी तरह निर्भर हों तो भी एकीकृत फर्म अपनी क्रेताधिकारी की हैसियत से तैयार माल की अत्यंत कम कीमत देना चाहे तो यह भी पाश–युक्त कीमत का एक उदाहरण होगा।

Price rigidity (प्राइस रिजिडिटी) **कीमत अनम्यता**

अल्पाधिकार वाले बाज़ार में प्रायः कीमत अनम्यता की स्थिति पाई जाती है। प्रो. पॉल स्वीज़ी ने बताया कि प्रायः प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं की प्रतिक्रिया किसी फर्म द्वारा कीमत में कमी करने तथा कीमत बढ़ाने के प्रति भिन्न–भिन्न होती हैं। यदि एक फर्म कीमत में कमी करना चाहे तो सारी प्रतिद्वन्द्वी फर्मे भी कीमतें घटा देंगी, और परिणामस्वरूप उस फर्म को कीमत में कमी करने के बावजूद नुकसान होगा। इसके विपरीत यदि फर्म वस्तु की कीमत में थोड़ी भी वृद्धि करना चाहे, तो कोई भी प्रतिद्वन्द्वी कीमत में वृद्धि नहीं करेगा,जिससे इसकी माँग भी भारी कमी हो जाएगी ।
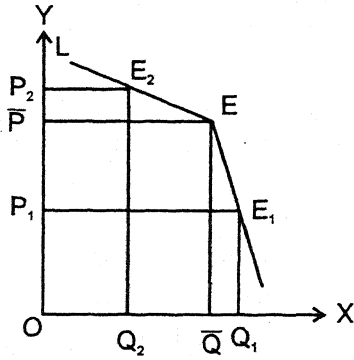
उपरोक्त चित्र में $O\bar{P}$ कीमत पर माँग का स्तर $O\bar{Q}$ है जहां कुल आगम $O\bar{P}E\bar{Q}$ प्राप्त होता है। यदि फर्म कीमत को घटाकर OP_1 लाती है तो प्रतिद्वंद्वियों की प्रतिक्रिया के कारण बिक्री OQ_1 तक ही बढ़ेगी जहां कुल आगम $OP_1E_1Q_1$ होगा जो प्रारम्भिक आगम से कम है [$OP_1E_1Q_1 < O\bar{P}E\bar{Q}$] । यदि इसके विपरीत फर्म कीमत में थोड़ी-सी वृद्धि करके OP_2 तक लाती है तथा कोई भी प्रतिद्वन्द्वी कीमत में वृद्धि नहीं करता तो इसकी बिक्री घट कर OQ_2 रह जाएगी, जहां कुल आगम $OP_2E_2Q_2$ है जो भी मूल आगम से कम है। [$OP_z E_zQ_z < O\bar{P}E\bar{Q}$] इस प्रकार अल्पाधिकार वाले बाज़ार में **फर्म को न तो कीमत कम करने में लाभ है** और ना ही इसे बढ़ाने में। इस प्रकार $O\bar{P}$ अनम्य एक कीमत है।

Price stickiness (प्राइस स्टीकिनेस) **कीमत अनम्यता**

(देखिए price rigidity)।

Price support (प्राइस सपोर्ट) **सरकार द्वारा कीमत को समर्थन**

उत्पादकों के विशिष्टि समूह की आय में स्थिरता बनाए रखने की दृष्टि से सरकार न्यूनतम समर्थन कीमतों की घोषणा करती हैं। इनके अनुसार यदि उत्पादन बढ़ने पर कीमतों में गिरावट की आशंका होती है, तो सरकार न्यूनतम कीमतों पर उन जिंसों को खरीद लेती है। विश्व के अनेक देशों (भारत सहित) में कृषि उत्पादों के लिए सरकारें समर्थन मूल्य की घोषणा करती हैं, तथा समय समय पर इनमें संशोधन किए जाते हैं।
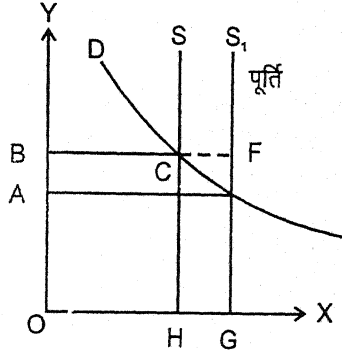
यदि उपरोक्त चित्र में प्रारम्भिक साम्य कीमत OA मानली जाए (जहां पूर्ति वक्र S_1 माँग वक्र D का प्रतिच्छेदन करता है) और यदि सरकार ऐसा समझती है कि यह कीमत काफी कम है तो वह OB स्तर पर समर्थन मूल्य की घोषणा कर सकती हैं ऐसी स्थिति में सरकार समर्थन मूल्य पर CF(=HG) मात्रा को ख़रीद कर बफर स्टॉक में रख सकती है। इस मात्रा पर सरकार को CFGH राशि अनुदान हेतु खर्च करनी पड़ेगी।

Price taker (प्राइस टेकर) **निर्धारित मूल्य पर बेचने वाला**

पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में कीमत का निर्धारण बाज़ार की माँग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा किया जाता है। अन्य शब्दों में, एक फर्म को जितनी मात्रा बेचनी है वह इसी कीमत पर बेचेगी तथा ऐसी दशा में कीमत तथा सीमान्त आगम में कोई अन्तर नहीं होगा (P=MR)। इसी प्रकार अल्पाधिकार के अन्तर्गत कीमत नेतृत्व होने पर शेष फर्में निर्धारित मूल्य पर वस्तु बेचती हैं।

Price volatility (प्राइस वोलेटिलिटी) **कीमत का उतार चढ़ाव**

वह सीमा जिसके भीतर कीमतों में उतार चढ़ाव होते हैं। ये उतार चढ़ाव प्रतिक्षण, प्रति घंटे,प्रतिदिन या प्रति सप्ताह हो सकते हैं। प्रायः ये उतार चढ़ाव माँग, पूर्ति या दोनों में भारी परिवर्तन के कारण होते हैं। ये उतार चढ़ाव शेयरों, कृषि जन्य वस्तुओं तथा विनिमय दरों में अधिक होते हैं, बनिस्पत औद्योगिक उत्पादों के।

Price war (प्राइस वार) **कीमत युद्ध**

अल्पाधिकार वाले बाज़ार में प्रायः प्रत्येक विक्रेता अपने प्रतिद्वन्द्वियों को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से अपने उत्पाद की कीमत को कम करता है, तथा कीमत घटाने का यह क्रम सभी विक्रेताओं के संदर्भ में चलता रहता है, जब तक कि कि सभी विक्रेताअें की कीमतें उत्पादन लागत तक कम नहीं हो जातीं।

Primary sector (प्राइमरी सैक्टर) **प्राथमिक क्षेत्र**

अर्थ व्यवस्था का वह भाग, जिसका भू–गर्भ से कच्चा माल(खनिज पदार्थ आदि) निकालने, कृषि तथा पशुपालन, वनों आदि से सीधा सम्बन्ध होता है। अन्य शब्दों में, प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के विदोहन करने से सम्बद्ध क्रियाएँ प्राथमिक क्षेत्र की क्रियाएँ हैं। इनसे प्राप्त होने वाली आय प्राथमिक क्षेत्र की आय कहलाती है।

Prime rate (प्राइम रेट)

बैंकों द्वारा अल्पकालीन ऋणों पर वसूल की जाने वाली ब्याज की दर

यह दर चयनित ग्राहकों के लिए होती है तथा प्रायः सामान्य ब्याज की दर से कम रहती है।

Principal (प्रिंसिपल) **मुखिया**

(1) एक व्यक्ति या फर्म जो अपने कार्य को सम्पादित करने हेतु किसी एजेंट की नियुक्ति करती है।

(2) ऋण की मूल राशि। इस राशि पर ही ब्याज़ का आकलन किया जाता है।

Principles cf taxation (प्रिंसिपल्स ऑफ टैक्सेशन) **करारोपण के सिद्धान्त**

कर लगाते समय इस बात का ध्यान रखना होता है कि करदाता की योग्यता या सामर्थ्य (Ability) के अनुसार करारोपण किया जाए; कर एकत्रित करने में प्रशासनिक व्यय कम से कम हो (मितव्ययता का सिद्धान्त); कर राशि जन कल्याण पर व्यय की जाए, तथा यथासम्भव आय की विषमताओं में कमी हो। करारोपण के अन्तर्गत उत्पादकता का सिद्धान्त भी होता है जिसके अनुसार थोड़े से कर लगाने पर काफी अधिक राजस्व एकत्रित होना चाहिए।

Prisoner's dilemma (प्रिज़नर्स डिलेम्मा) **कैदी का धर्मसंकट**

खेल सिद्धान्त से सम्बद्ध एक अवधारणा,जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने अन्य साथियों पर विश्वास करे या न करे, इसी दुविधा या ऊहापोह में वह कोई निर्णय नहीं ले पाता। इसकी तुलना एक कैदी के धर्मसंकट से की जाती है। दो व्यक्तियों ने बैंक में डाका डाला और दोनों पकड़े गए। दोनों को जेल की कोठरियों में अलग–अलग रखा गया। जेलर पहले कैदी (A) को मिलकर उससे कहता है कि वह (A) निर्दोष है तथा दूसरे कैदी (B) ने उसे डकैती में फंसाया है। उससे कहा जाता है कि यदि वह (A) सरकारी गवाह बन जाए तो उसे छोड़ दिया जाएगा तथा (B) को 30 वर्ष की सजा हो जाएगी। यही बात B को A के बारे में बताई जाती

है। रणनीति यह भी है कि यदि दोनों अपराध स्वीकार कर लेते हैं (तथा उनमें से प्रत्येक सरकारी गवाह बनने हेतु सहमत हो जाता है) तो उन्हें 10—10 वर्ष की सज़ा होगी, यदि दोनों अपने आपको अलग अलग रहते हुए निर्दोष बताएँ तो दोनों को छोड़ दिया जाएगा।

जेलर की इस रणनीति के फलस्वरूप A व B में **परस्पर अविश्वास उत्पन्न होता है** तथा उनमें से प्रत्येक स्वयं को बचाने क लिए एवं दूसरे व्यक्ति को फसाने के लिए अपराध स्वीकार करते हुए सरकारी गवाह बनने को तैयार हो जाता है। परिणामस्वरूप दोनों को 10—10 वर्ष की सजा हो जाती है।

बाजार में दो विक्रेताओं के बीच यदि परस्पर सहयोग एवं अनौपचारिक सहमति है तो वे मिलकर कीमत का निर्धारण करेंगे। इसके फलस्वरूप *ऊँचे स्तर की कीमत पर दोनों को लाभ होगा* लेकिन इससे उपभोक्ताओं का शोषण होगा—ठीक वैसे ही जैसा कि दोनों अपराधियों के बीच सहमति के कारण उत्पन्न होता है। परन्तु यदि दोनों फर्मों के बीच परस्पर अविश्वास उत्पन्न होने के कारण वे एक दूसरे को कीमत युद्ध के आधार पर हानि पहुंचाने का यत्न करते हैं तो इससे जहां दोनों को हानि होगी,वहीं उपभोक्ताओं को कम कीमत पर वस्तु प्राप्त हो जाएगी।

संक्षेप में, दूसरे विक्रेता पर विश्वास किया जाए या न किया जाए, इस **धर्मसंकट** के दौरान यदि अविश्वास के आधार पर निर्णय लिया जाता है तो दोनों ही विक्रेता परस्पर एक दूसरे को क्षति पहुंचा देते हैं।

Private company (प्राइवेट कम्पनी) **निजी कम्पनी**

एक कम्पनी जिसका दायित्व सीमित है लेकिन जिसके शेयर जनता के लिए निर्गमित नहीं किए जाते। ये शेयर प्रायः एक परिवार के सदस्य एवं उनके निकट सम्बन्धी ही ख़रीदते हैं। इस कम्पनी के सदस्यों की अधिकतम संख्या 50 हो सकती है।

Private cost (प्राइवेट कॉस्ट) **निजी लागत**

किसी वस्तु का उत्पादन करने वाली फर्म द्वारा चुकाई गई लागतें। इनमें कच्चे माल की लागत, ईंधन, किराया, पगार, ब्याज, मजदूरी, मशीनों का मूल्य ह्रास तथा सामान्य लाभ शामिल हैं। इन सभी का योग कुल लागत होगी तथा फर्म द्वारा इसी के आधार पर कीमत का निर्धारण किया जाएगा। निजी लागत में इस फर्म द्वारा किए उत्पादन के फलस्वरूप अन्य व्यक्तियों को पहुँचाई गई क्षति (विशेष रूप से प्रदूषण के कारण) का आकलन नहीं किया जाता। लेकिन यदि सरकार द्वारा किसी इनपुट पर सब्सिडी दी जाती है तो उसका निजी लागत में समायोजन किया जाता है।

Private enter prise economy (प्राइवेट एन्टर प्राइज इकोनोमी)

स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था

ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें लगभग सभी आर्थिक निर्णय निज़ी इकाइयों (व्यक्तियों या

फर्मों) द्वारा लिए जाते हैं। कीमतों का निर्धारण बाज़ारों में विद्यमान माँग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा किया जाता है। उत्पादन के संसाधनों पर भी व्यक्तियों या परिवारों का स्वामित्व रहता है, तथा उत्पादन से सम्बद्ध लाभ भी उन्हें ही मिलते हैं। ऐसी अर्थव्यवस्था में प्रतिरक्षा, शांति व कानून व्यवस्था तथा आवश्यक सेवाओं की आपूर्ति आदि ही सरकार के नियंत्रण में रखी जाती हैं।

Prvate good (प्राइवेट गुड) **निजी वस्तु**

कोई ऐसी वस्तु या सेवा जिसके उपयोग का अधिकार केवल उसके स्वामी के पास निहित होता है। इसके विपरीत सार्वजनिक वस्तु वह होती है जिसे एक व्यक्ति द्वारा उपयोग में लेने पर भी *दूसरा उसके उपयोग के अधिकार से वंचित नहीं होता।*

Private property (प्राइवेट प्रॉपर्टी) **निजी सम्पति**

वे वस्तुएँ, जिन में कानूनी तौर पर किसी व्यक्ति,परिवार या फर्म का स्वामित्व निहित है तथा जिसका स्वामी उसे उपयोग में ले सकता है, बेच सकता है या उपहार में किसी अन्य व्यक्ति को दे सकता है। इस सम्पत्ति से प्राप्त होने वाली आय पर भी उस व्यक्ति या परिवार का ही अधिकार होता है। परन्तु निजी सम्पत्ति के स्वत्व का हस्तांतरण केवल कानूनी प्रक्रिया के आधार पर ही सम्भव है।

Private sector (प्राइवेट सैक्टर) **निजी क्षेत्र**

अर्थव्यवस्था का वह भाग, जिसका संचालन सरकार नहीं करती। इसके अन्तर्गत सभी उत्पादन प्रक्रियाएँ वैयक्तिक, या साझेदारी या संयुक्त पूँजी वाले उपक्रमों द्वारा पूरी की जाती हैं।

private sector balance (प्राइवेट सैक्टर बैलेन्स)

निजी क्षेत्र की बचतों का निवेश पर आधिक्य

राष्ट्रीय आय के आंकलन में निजी क्षेत्र के आधिक्य,सरकारी क्षेत्र का आधिक्य तथ अर्थव्यवस्था के चालू खाते के शेष का योग शून्य होता है। इसी लिए सरकारी क्षेत्र के शेष को यथावत् रखते हुए निजी क्षेत्र का शेष बढ़ने पर चालू खाते के घाटे में कमी हो जाती है।

Privatizativon (प्राइवेटाइजेशन) **निजीकरण**

अब तक सरकारी स्वामित्व में रहे उपक्रमों या सम्पत्तियों को निजी क्षेत्र के स्वामित्व में हस्तांतरित करना। इसकी प्रक्रिया के अन्तर्गत या तो समस्त सम्पत्तियों को निजी संस्थाओं को बेच दिया जाता है, अथवा उनकी शेयर पूँजी का बड़ा भाग निजी कम्पनियों को हस्तांतरित कर दिया जाता है। संक्षेप में, निजीकरण के पश्चात् सरकार की अपेक्षा निजी क्षेत्र की संस्थाओं द्वारा उस उपक्रम से सम्बद्ध निर्णय लिए जाते हैं।

Probability (प्रॉबेबिलिटी) **प्रायिकता**

दो या अधिक घटनाओं में से एक घटना के घटित होने की सम्भावना को प्रायिकता

कहा जाता है। यदि एक पांसे में 6 अंक (1,2,3,4,5,6) हैं तथा उस पांसे को फेंका जाए तो प्रत्येक अंक प्राप्त होने की प्रायिकता 1/6 होगी। ताश के 52 पत्तों में इक्के की प्रायिकता 4/52 या 1/13 होगी क्योंकि इनमें इक्कों की संख्या चार होती है। घटनाओं की संख्या जितनी अधिक होगी, प्रायिकता का गुणांक उतना ही कम होगा। इसीलिए एक लाटरी का ईनाम जीतने की प्रायिकता लगभग शून्य होती है।

Process ray (प्रोसेस रे) **प्रक्रिया रेखा**

एक सीधी रेखा जो उत्पादन में विस्तार हेतु स्थिर अनुपातों में साधनों के प्रयोग को दर्शाती है। उदाहरण के लिए,उत्पादन में वृद्धि हेतु पूँजी प्रधान या श्रम प्रधान टैक्नोलोजी को प्रयोग किया जा सकता है अथवा दोनों साधनों की समान मात्रा को प्रयुक्त करके उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।
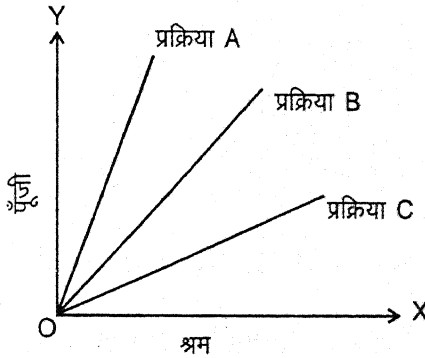
उपरोक्त चित्र में प्रक्रिया A के अन्तर्गत पूँजी प्रधान तकनीक के आधार पर श्रम व पूँजी की मात्रा को समान अनुपात में बढ़ाकर उत्पादन में वृद्धि की जाती है। इसके विपरीत प्रक्रिया C एक श्रम प्रधान उत्पादन प्रक्रिया की प्रतीक है, जबकि प्रक्रिया B में दोनों की मात्राएँ समान रखते हुए उत्पादन में वृद्धि हेतु इनकी *समान अनुपात में* वृद्धि की जाती है।

Procurement (प्रोक्योरमैंट) **सरकार द्वारा वस्तुओं व सेवाओं की ख़रीद**

प्रायः किसी वस्तु की कीमत में स्थिरता बनाए रखने हेतु निर्दिष्ट कीमत पर सरकार उसकी मात्रा ख़रीदती है, ताकि पूर्ति अधिक हो जाने पर कीमत में कमी न हो। इसके विपरीत जब वस्तु का उत्पादन उसकी माँग की तुलना में काफी कम रह जाता है, और उस कारण उसकी कीमतें बढ़ना शुरू करती हैं तो संग्रहीत स्टॉक में से वस्तु की पर्याप्त मात्रा निकाली जाती है ताकि कीमतों की वृद्धि पर रोक लगाई जा सके।

Producer good (प्राड्यूसर गुड) **उत्पादक वस्तु**

ऐसी वस्तु, जिसे उत्पादन क्रिया को संचालित करने हेतु तैयार किया जाता है। इस

श्रेणी में मशीनें, यंत्र,माल ढोने वाले वाहन आदि रखे जा सकते हैं। ये पूँजीगत वस्तुएँ कहलाती हैं, जो उपभोग वस्तुओं से भिन्न हैं जिन्हें सीधे उपभोक्ताओं को उपलब्ध करवाया जाता है।

Producer's surplus (प्रोड्यूसर्स सरप्लस) **उत्पादक का अतिरेक**

बिक्री से प्राप्त कुल आगम में सं सकल लागत को घटाने के पश्चात् शेष राशि। रेखाचित्रीय दृष्टि से यदि पूर्ति वक्र धनात्मक ढलान युक्त हो तो साम्य स्तर के उत्पादन स्तर पर उत्पादक का अतिरेक कुल आगम में से पूर्ति वक्र के नीचे वाले भाग यानी कुल लागत को घटाने पर प्राप्त होगा।
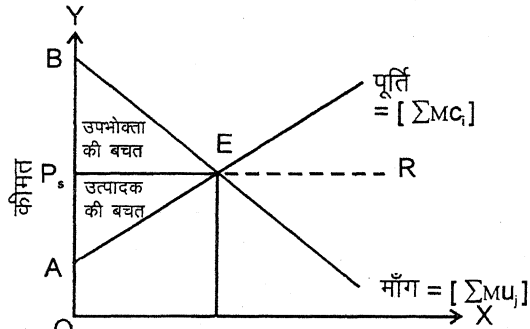
उपरोक्त चित्र में माँग वक्र तथा पूर्ति वक्र का प्रतिच्छेदन E बिन्दु पर होता है जहां साम्य कीमत OP_s तथा साम्य मात्रा OQ_s है। यह एक पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार की स्थिति है जिसके अन्तर्गत पूर्ति वक्र के नीचे का क्षेत्रफल कुल उत्पादन लागत है जबकि माँग वक्र के नीचे का क्षेत्रफल कुल उपयोगिता का प्रतीक है। इस प्रकार OQ_s मात्रां पर कुल उपयोगिता $OBEQ_s$ है जिसमें से उपभोक्ता OP_sEQ_s की राशि व्यय कर देते हैं। इस प्रकार P_sBE उपभोक्ता की बचत मानी जाएगी।

उत्पादकों को कुल OP_sEQ_s का राजस्व प्राप्त होता है जिसमें से उत्पादन की लागत $OAEQ_s$ है। इस प्रकार AP_sE उत्पादकों को प्राप्त होने वाली बचत है। यह बचत केवल धनात्मक ढलानयुक्त पूर्ति वक्र के अन्तर्गत प्राप्त होती है।

यदि पूर्ति वक्र P_sR हो तो उपभोक्ता की बचत फिर भी P_sBE होगी, परन्तु उत्पादक की बचत शून्य हो जाएगी।

Product (प्रॉडक्ट) **उत्पाद**

(1) वस्तु या सेवा

(2) गुणनफल। उदाहरण के लिए, 15×25=375, एक गुणनफल है।

Product development (प्रोडक्ट डेवलपमेंट) **नवोत्पाद विकास**

नई वस्तुओं का विकास करके फर्म द्वारा विद्यमान बाज़ार में ही बिक्री हेतु प्रस्तुत करना। प्रायः विभिन्न फर्मों के लिए यह अपरिहार्य हो जाता है कि वे समय समय

पर नए उत्पादों का विकास करके उपभोक्ताओं को एक ही प्रकार की वस्तुओं से उत्पन्न नीरसता से मुक्त करती रहें। किसी फर्म द्वारा इन नई वस्तुओं की गुणवत्ता पूर्व में प्रचलित वस्तुओं की तुलना में बेहतर होना जरूरी नहीं है। इस प्रक्रिया में वस्तु की डिज़ाइन में सुधार भी शामिल है।

Product differentiation (प्रोडक्ट डिफ्रेंसिएशन) **वस्तु विभेद**

प्रोफेसर चैम्बरलिन ने कहा है कि प्रत्येक विक्रेता अपनी वस्तु को अन्य विक्रेताओं द्वारा बाज़ार में प्रस्तुत वस्तुओं की तुलना में भिन्न दर्शाना चाहता है। इस भिन्नता के अन्तर्गत वस्तु के ट्रेड मार्क, डिज़ाइन, पैकिंग, रंग आदि शामिल हैं, जिनके आधार पर उपभोक्ता अपनी पसंद की वस्तु ख़रीदना चाहता है। परन्तु गुणवत्ता में अन्तर न होने के कारण सभी वस्तुओं की उत्पादन लागतें समान रहती है, अलबत्ता *उपभोक्ताओं की पसन्द के अनुरूप* वस्तुओं की कीमतों में थोड़ा बहुत अन्तर हो सकता है। परन्तु सभी वस्तुओं में निर्विवाद रूप से निकट की स्थानापन्नता रहती है, और इस कारण प्रायः किसी भी उत्पादक द्वारा उसकी वस्तु की कीमत में थोड़ी सी कटौती की तत्काल अन्य विक्रेताओं पर प्रतिक्रिया होती है, तथा वे भी अपनी कीमतों में कटौती कर देते हैं।

Production (प्रॉडक्शन) **उत्पादन**

विभिन्न साधनों या इनपुट्स के प्रयोग द्वारा किसी वस्तु को उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध करवाना। उत्पादन में प्रायः भौतिक रूप की ही गणना की जाती है।

Production function (प्रॉडक्शन फंक्शन) **उत्पादन फलन**

साधनों या इनपुट्स तथा उत्पादन के भौतिक सम्बन्धों का प्रस्तुतीकरण। इसे निम्न रूप मे व्यक्त किया जा सकता है : $Q = f(L, K, Z)$ जहां Q उत्पादन की मात्रा है, जबकि L, K तथा Z साधनों की मात्राएं हैं। इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि एक या अधिक साधनों की मात्रा में वृद्धि करने पर उत्पादन की मात्रा में कितना परिवर्तन होगा। यदि साधनों तथा उत्पादन में समानुपाती परिवर्तन होता है तो इसे स्थिर मान प्रतिफल वाला उत्पादन फलन कहते हैं। यदि उत्पादन का परिवर्तन साधनों के परिवर्तन से अधिक है तो वर्द्धमान प्रतिफल वाला उत्पादन फलन कहा जाता है। अन्त में, यदि साधनों की तुलना में उत्पादन का परिवर्तन अनुपात से कम हो तो यह ह्रासभान प्रतिफल वाला उत्पादन फलन माना जाएगा।

Product characteristics Model (प्रॉडक्ट केरक्टरिस्टिक्स मॉडल)

वस्तु-वैशिष्ट्य मॉडल

उपभोक्ता किसी वस्तु के अनेक ब्रांड्स में से एक का चयन करता है। इनमें से हर ब्रांड में स्थिर अनुपात वाले लक्षण होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी उपभोक्ता को जूस ख़रीदना है तथा उसे उत्पाद में दो प्रमुख गुणों या लक्षणों का – इसका फ्लेवर तथा इसमें निहित विटामिन की मात्रा की समीक्षा करनी है। बाज़ार में तीन ब्रांड के

जूस उपलब्ध हैं : A, B तथा C, जिनमें उत्पाद से सम्बद्ध दोनों लक्षण अलग- अलग अनुपातों में विद्यमान हैं, ब्रांड A में विटामिन ज़्यादा है तथा फ्लेवर उतना अच्छा नहीं है जबकि ब्रांड C में फ्लेवर बहुत अच्छा, लेकिन विटामिन कम हैं। ब्रांड B में दोनों संतुलित मात्रा में हैं।
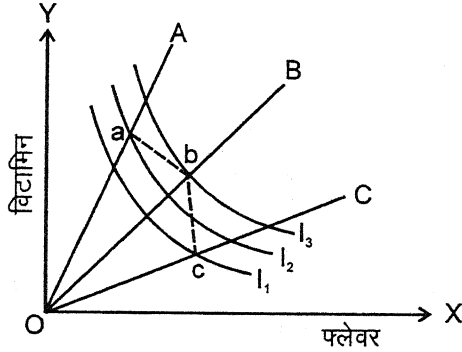
उपरोक्त चित्र में a,b तथा c बिन्दु यह बताते हैं कि तीनों ब्राडों की कीमतों पर व्यय की एक इकाई से प्रत्येक ब्रांड का कितना जूस ख़रीदा जा सकता है। I_1, I_2 तथा I_3 तीन उदासीनता वक हैं जो उपभोक्ता के तीन संतुष्टि स्तरों को दर्शाते हैं। इस चित्र में उपभोक्ता की अन्तिम पसन्द b बिन्दु पर होगी क्योंकि वहां c की तुलना में अधिक विटामिन प्राप्त होते हैं। b बिन्दु पर a की तुलना में विटामिन कम है लेकिन फ्लेवर बेहतर है और यह बिन्दु उच्चतम उदासीनता वक्र पर स्थित है। इसी दृष्टि से उपभोक्ता का चुनाव b बिन्दु पर होना उपयुक्त निर्णय है।

Production possibility frontier (प्रॉडक्शन पॉसिबिलिटी फ्रन्टियर)

उत्पादन सम्भावना सीमा

एक रेखाचित्र,जो दिए हुए साधनों के अन्तर्गत X तथा Y की अधिकतम मात्राओं की सम्भावना को व्यक्त करता है। ऐसी मान्यता ली जाती है कि अर्थ व्यवस्था के पास उपलब्ध साधनों को इन्हीं दो वस्तुओं के उत्पादन हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है।
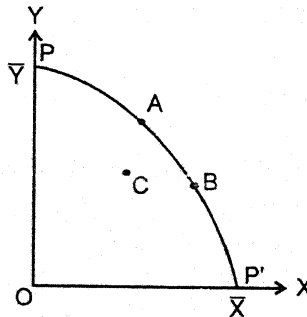
उपरोक्त चित्र में PP' उत्पादन सम्भावना सीमा के अन्तर्गत X की अधिकतम मात्रा $O\overline{X}$ होगी,जबकि सभी साधनों को Y के उत्पादन हेतु प्रयुक्त करने पर उसकी अधिकतम मात्रा $O\overline{Y}$ होगी। यदि PP' पर अन्य किसी बिन्दु , A या B पर साधनों का आवंटन किया जाए तो X तथा Y दोनों का उत्पादन किया जा सकेगा। उत्पादन सम्भावना सीमा को देखने पर निम्न बातें स्पष्ट होती है -:

(1) दोनों में से एक वस्तु (X) का उत्पादन बढ़ाने पर दूसरी वस्तु (Y) के उत्पादन में कमी होगी क्योंकि अर्थ व्यवस्था को उपलब्ध साधनों की मात्रा सीमित है। इसीलिए PP' का ढलान ऋणात्मक है। इस कारण इसे Y का X में रूपान्तरण वक्र भी कहा जाता है।

(2) PP' का प्रत्येक बिन्दु साधनों के पूर्ण उपयोग को दर्शाता है, हालांकि A तथा B के मध्य X की मात्रा बढ़ेगी जबकि Y की मात्रा में कमी होगी। परन्तु चित्र में C पर रहने की स्थिति में साधनों के अल्प उपयोग की स्थिति रहेगी।

(3) P से P' के बीच उत्पादन सम्भावना सीमा मूल बिन्दु से नतोदर है। इसका अर्थ यह है कि X की मात्रा बढ़ाने पर उत्तरोत्तर Y की अधिक मात्रा छोड़नी होगी। इसका यह भी अर्थ हुआ कि X (या Y) का उत्पादन क्रमागत ह्रास नियम के अन्तर्गत हो रहा है।

Production subsidy (प्रॉडक्शन सब्सिडी) **उत्पादन हेतु अनुदान**

सरकार द्वारा उत्पादन के लिए प्रति इकाई स्थिर राशि का अनुदान। यह अनुदान आयातित वस्तुओं के लिए न होकर केवल देश में निर्मित वस्तुओं के लिए होता है।

Productive efficieney (प्रॉडर्क्टिव एफिशिएंसी) **उत्पादन सम्बन्धी दक्षता**

बाज़ार निष्पादन का वह पक्ष जिसके अनुसार वस्तुओं का उत्पादन न्यूनतम लागत पर किया जाता है। प्रायः दीर्घकाल में ही न्यूनतम लागत पर, अथवा अधिकतम दक्षता के साथ उत्पादन किया जा सकता है।
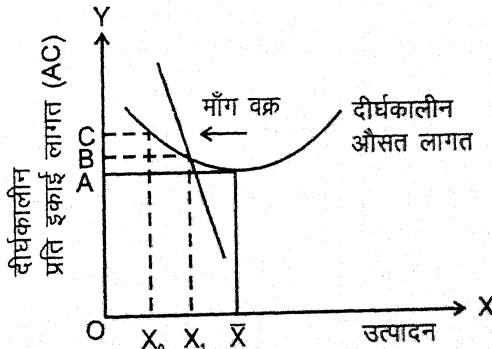
उपरोक्त चित्र में $O\overline{X}$ मात्रा में उत्पादन करने पर लागत न्यूनतम होती है, यानी

अधिकतम दक्षता पर उत्पादन होता है। परन्तु यदि माँग के अनुरूप उत्पादन की मात्रा OX_1 हो तो यह अल्पकालीन तथा इष्टतम से नीचे की स्थिति मानी जाएगी। यहां साधनों का उपयोग इष्टतम मात्रा से कम उत्पादन के लिए होगा। परन्तु यदि परिस्थितिवश फर्म OX_0 इकाइयों का ही उत्पादन करे, तो यह इष्टतम से काफी नीचे की स्थिति मानी जाएगी।

Productivity (प्रॉडक्टीविटी) **उत्पादकता**

उत्पादन के एक या अधिक साधनों तथा उत्पादन की मात्रा में किसी एक साधन (श्रम या पूँजी की इकाइयां) की मात्रा से भाग दिया जाए, तो वह उस साधन की उत्पादकता(जैसे श्रम या पूँजी की उत्पादकता) मानी जाएगी। यदि इस औसत में वृद्धि हो तो इसे उत्पादकता में वृद्धि कहा जाएगा।

Product life-cycle (प्रॉडक्ट लाइफ साइकल) **उत्पाद का जीवन-काल**

एक प्रक्रिया, जो यह दर्शाती है कि दीर्घ काल में किसी उत्पाद की प्रकृति में क्या परिवर्तन हो सकते हैं। इस मॉडल में प्रत्येक वस्तु की डिजाइन, ट्रेड मार्क, पैकिंग, नाम आदि में परिवर्तन किए जाते हैं, या नई वस्तुओं का उत्पादन किया जा सकता है। उत्पाद के जीवन काल में प्रारम्भिक उत्पादन लागत ऊँची होती है क्योंकि नए उत्पाद की माँग भी कम रहती है, परन्तु जैसे-जैसे इसके बारे में उपभोक्ताओं को अधिक जानकारी मिलती है, माँग के साथ साथ उत्पादन का पैमाना बढ़ता है, और इस कारण लागत में कमी होती है।

उत्पाद के जीवनकाल में चार चरण होते है

(1) **उत्पाद का शुभारम्भ :** जिसके पूर्व नए उत्पाद को बाज़ार में प्रविष्ट कराने से सम्बन्धित सारी औपचारिकताएँ पूरी हो जाती है।

(2) **उत्पाद के विकास का चरण :** इसके अन्तर्गत नई वस्तु समूचे बाज़ार में अपनी पहचान बना लेती है, तथा इसके वैशिष्ट्य के विषय में उपभोक्ता पूरी तरह परिचित हो जाते हैं।

(3) **उत्पाद-विकास की चरम स्थिति :** इसमें उपभोक्ताओं को उसी वस्तु को हर बार ख़रीदना पड़ता है।

(4) **उत्पाद की लोकप्रियता में कमी :** उपभोक्ता बार बार एक ही प्रकार की वस्तु का उपभोग करते रहने से अरुचि की अनुभूति करने लगते हैं। यदि इसी बीच कोई बेहतर व नया उत्पादन बाज़ार में प्रविष्ट हो जाए तो पुराने उत्पादन की माँग शून्य हो सकती है।

Product-life-cycle theory (प्रॉडक्ट लाइफ साइकल थ्योरी)

उत्पाद के जीवन काल का सिद्धान्त

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के पैटर्न में दीर्घकाल में होने वाले परिवर्तन। ये परिवर्तन नवोत्पाद एवं इसके प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप होते हैं। इनका क्रम इस प्रकार

होता है– (अ) नए उत्पादों के साथ ही उपभोग करने वाला देश उत्पादक देश बनता है क्योंकि नवोत्पादन तथा माँग में गहरा सम्बन्ध होता है। शीघ्र ही मूल रूप से उत्पादक देश उस वस्तु का निर्यात करने लगता है। (ब) धीरे धीरे अन्य देशों में उत्पादन प्रारम्भ हो जाता है जिससे नवोत्पादन करने वाले देश के निर्यात कम होने लगते है। (स) इन अन्य देशों में उत्पादन का पैमाना बढ़ता है जिससे वे भी उन वस्तुओं का निर्यात करने लगते हैं। (द)जैसे-जैसे इन उत्पादों में प्रामाणिकता आती है, और जैसे जैसे उत्पादन तकनीक का प्रचलन बढ़ता है, अपेक्षाकृत कम दक्ष श्रमिकों को प्रयुक्त करते हुए, विकासशील देश भी नवोत्पादन की दौड़ में शामिल हो जाते हैं। अन्ततः ये देश भी नवोत्पादों का निर्यात करने लगते हैं।

Product market (प्रॉडक्ट मार्केट) **वस्तुओं के बाज़ार**

ऐसा बाज़ार, जिसमें वस्तुएँ बेची व ख़रीदी जाती हैं। इन बाज़ारों में बहुधा माँग व पूर्ति की शक्तियां ही क़ीमत का निर्धारण करती है।

Product market matrix (प्रॉडक्ट मार्केट मैट्रिक्स)

वस्तुओं के बाज़ार की मैट्रिक्स

किसी वस्तु के बाज़ार की रणनीति में परिवर्तन का विश्लेषण करने वाली मैट्रिक्स।

वस्तु		बाज़ार: वर्तमान	बाज़ार: नया
	वर्तमान	1. बाज़ार में प्रविष्ट होना	2. बाज़ार का विकास
	नया	3. वस्तु का विकास	4. विविधीकरण

बाज़ार की परिवर्तनशील दशा में लाभ कमाने तथा विकास करने हेतु फर्म के समक्ष चार रणनीतियां होती हैं: (अ)वर्तमान बाज़ारों मं विद्यमान वस्तुओं के साथ ही प्रभावी ढंग से बाज़ार में प्रविष्ट होना, ताकि बाज़ार की कुल बिक्री में उसका हिस्सा बढ सके।(ब) विद्यमान वस्तुओं के लिए नए बाज़ारों की खोज करना। (स) विद्यमान बाज़ारों के लिए नए उत्पाद तैयार करना। (द) नए बाज़ारों के लिए नए उत्पाद तैयार करना।

Product mix (प्रॉडक्ट मिक्स) **उत्पाद संयोग**

एक फर्म द्वारा उत्पादित वस्तुओं के संयोग। चूंकि अधिकाशं उत्पादों के लिए

जीवन काल (या चक्र) लगभग वही रहता है ,कम्पनियों के लिए यह उचित रहता है कि वे नवोत्पादों, इनके विकास तथा अन्तिम उत्पादन के बीच उपयुक्त संयोग बनाए रखें। फर्म उससे मिलते जुलते उत्पादों के लिए बाज़ार–पृथक्करण हेतु भी रणनीति अपना सकती है।

Product performance (प्रॉडक्ट पर्फोर्मेंस) **वस्तु-निष्पादन**

बाज़ार निष्पादन का एक हिस्सा,जो वर्तमान उत्पादों की क्वालिटी तथा नए उत्पादों के विकास हेतु फर्म की प्रवृत्ति का परिचायक होता है। नए उत्पादों के विकास तथा मौजूदा उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार से उपभोक्ताओं को उनके द्वारा ख़र्च की गई राशि में पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगिता प्राप्त होती है जिसे उनके कल्याण-स्तर में वृद्धि होती है।

Product standards (प्रॉडक्ट स्टैंडर्ड्स) **उत्पादों के मानक**

उत्पाद की डिजाइन तथा निर्माण के **न्यूनतम मानक** जिन्हें कानूनी तौर पर मानना ज़रूरी है। ये मानक प्रायः सुरक्षा एवं स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए निर्धारित किए जाते हैं।

Profit (प्रॉफिट) **लाभ**

किसी फर्म की कुल *लागतों पर कुल आगम का आधिक्य* (TR–TC) । इस परिभाषा के अनुसार लाभ की परिभाषा में निम्न तत्त्व शामिल होते हैं:

(1) सभी बाह्य एवं आन्तरिक लागतों का भुगतान करने के पश्चात् फर्म के मालिक या *मालिकों को प्राप्त प्रतिफल।*

(2) किसी फर्म के स्वामी या स्वामियों द्वारा प्रदत्त पूँजी तथा *जोखिम उठाने* हेतु प्राप्त प्रतिफल।

(3) उद्यमियों द्वारा उत्पादन सम्बन्धी गतिविधियों में योगदान देने, नए उत्पादों को प्रस्तुत करने तथा जोखिम उठाने का पुरस्कार।

इनमें से प्रत्येक तत्त्व लाभ की परिभाषा प्रस्तुत करता है।

Profitability (प्रॉफिटेबिलिटी) **लाभप्रदता**

आकार के अनुरूप फर्म को प्राप्त कुल लाभ, जिसे कुल निवेशित सम्पत्ति या प्रयुक्त कुल श्रम के आधार पर मापा जाता है।

Profit and loss account (प्रॉफिट एन्ड लॉस एकाउंट) **लाभ व हानि खाता**

किसी व्यावसायिक फर्म की प्राप्तियों, तथा निर्दिष्ट अवधि में किए गए व्यय का लेखा जोखा। इस खाते के अन्तर्गत उधार के सौदे, सम्पत्ति के मूल्य में हुआ परिवर्तन, रोकड़ सौदे तथा सम्पत्ति का वास्तविक मूल्य, इन सभी की प्रविष्टियाँ रखी जाती हैं।

Profit margin (प्रॉफिट मार्जिन) **लाभ मार्जिन**

किसी वस्तु के विक्रय मूल्य में से उसकी विज्ञापन लागत एवं उत्पादन लागत को

घटाने के बाद शेष राशि। लाभ मार्जिन का आकार लागत के ऊपर प्राप्त की गई राशि पर निर्भर करती है, जो माँग की स्थिति तथा प्रतियोगिता की गहनता पर निर्भर करेगी।

Profit maximization (प्रॉफिट मैक्सीमाइज़ेशन) **अधिकतम लाभ की प्राप्ति**

प्रत्येक फर्म का उद्देश्य कुल आगम तथा कुल लागत के बीच के धनात्मक अन्तर ($TR - MC > O$) को अधिकतम करना है। उत्पादन के किस स्तर पर इस उद्देश्य की पूर्ति होगी यह दो क्रम की शर्तों के आधार पर निर्धारित होगा :

(1) **प्रथम क्रम की शर्त :** जहां सीमान्त आगम तथा सीमान्त लागत समान हों,

$$\text{यानी } \frac{dTR}{dQ} = \frac{dTC}{dQ}$$

(2) **द्वितीय क्रम की शर्त :** जहां सीमान्त आगम वक्र का ढलान सीमान्त लागत वक्र के ढ़लान से कम हो,

$$\text{यानी } \frac{d^2TR}{dQ^2} < \frac{d^2TC}{dQ^2}$$
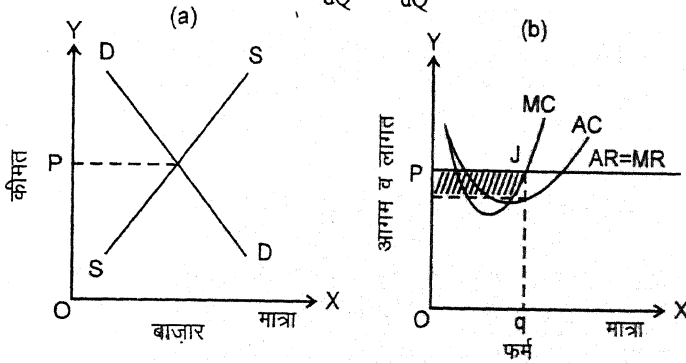
पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अधिकतम लाभ की प्राप्ति
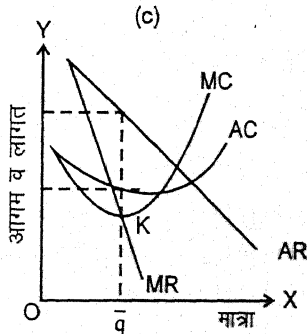
एकाधिकार के अंतर्गत अधिकतम लाभ की प्राप्ति

$$AR = \text{कीमत या औसत आगम} \left(\frac{TR}{Q}\right)$$

$$AC = \text{औसत लागत} \left(\frac{TC}{Q}\right)$$

$$MR = \text{सीमांत आगम} \frac{d(TR)}{dQ}$$

$$MC = \text{सीमान्त लागत} \left(\frac{dTC}{dQ}\right)$$

उपरोक्त चित्र में पैनल (a) व पैनल (b) पूर्व प्रतियोगिता वाले बाज़ार में क्रमशः बाज़ार तथा फर्म की साम्य स्थितियां दर्शाते हैं। बाज़ार में माँग(DD) व पूर्ति की शक्तियों द्वारा OP कीमत का निर्धारण होता है(पैनल a) तथा फर्म को इसी कीमत पर वस्तु बेचनी होती है (AR=MR) । अस्तु, फर्म को Oq मात्रा बेचकर अधिकतम लाभ अर्जित करती है।

अब चित्र का पैनल (C) देखिए, जहां MC तथा MR के समान होने पर Oq मात्रा परं अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। दोनों ही प्रकार के बाज़ारों में क्रमशः J व K बिन्दुओं पर द्वितीय क्रम की शर्तें पूरी होती हैं।

profit motive (प्रॉफिट मोटिव) **लाभ का उद्देश्य**

आर्थिक गतिविधि का उद्देश्य सेवा न होकर लाभ प्राप्ति होना। यह उद्देश्य एक प्रबल प्रेरणा का स्रोत होता है। परन्तु समाज के कुछ लोग केवल लाभ कमाने हेतु कार्य नहीं करते। उनका प्रमुख उद्देश्य सम्मान प्राप्त करना, जीवन में शान्ति की प्राप्ति, शक्ति का अर्जन करना, आदि में से कोई भी हो सकता है। परन्तु व्यवसायिक जगत में मूलतः लाभ के उद्देश्य से ही कार्य किया जाता है।

Profit-related pay (प्रॉफिट रिलेटेड पे) **लाभ आधारित पगार**

पगार-निर्धारण की वह व्यवस्था, जिसमें कर्मचारियों को लाभ के अनुसार भुगतान किया जाता है। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि इस व्यवस्था में मज़दूरी दर परिर्वनशील तथा लचीली होने के कारण बेरोज़गारी को कम करने में सहायता मिलती है।

Profit sharirg (प्रॉफिट शेयरिंग) **लाभ का बँटवारा**

कर्मचारियों तथा मज़दूरों को फर्म के लाभ में से हिस्सा देना। ऐसा या तो लाभ आधारित पगार देकर किया जा सकता है, अथवा उन्हें कम्पनी के शेयर देकर लाभ में भागीदार बनाया जा सकता है। परन्तु यह व्यवस्था मज़दूरों की अपेक्षा प्रबन्धकों के लिए अधिक सामान्य है। लाभ के बंटवारे हेतु सर्वाधिक प्रचलित विधि बोनस का भुगतान है।

Profit taking (प्रॉफिट टेकिंग) **सम्पत्ति पर पूँजीगत लाभ अर्जित करना**

जब सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि होती है तो फर्म के मालिक या तो उसे अपने ही पास रखना चाहते हैं, अथवा उसे बेचकर पूँजीगत लाभ कमाना चाहते हैं। इस पूँजीगत लाभ पर उन्हें कर देना पड़ता है, तब भी वे फ़ायदे में रहते हैं। परन्तु सम्पत्ति को पास रखने में एक जोखिम यह है कि यदि कुछ समय के बाद कीमत में कमी हो जाए तो वह घाटा भी फर्म के स्वामी को भुगतना पड़ता है।

Progressive taxation (प्रोग्रेसिव टैक्सेशन) **प्रगतिशील करारोपण**

करारोपण की वह विधि, जिसके अन्तर्गत जैस-जैसे कर का आधार(आय या सम्पत्ति का मूल्य)बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे *कर की दर में वृद्धि की जाती है।* उदाहरण के लिए, 1.0 लाख तक की आय पर 10 प्रतिशत की दर से आय कर लिया जाए तथा इसके ऊपर तीन लाख से लेकर 5.0 लाख तक की आय पर 20 प्रतिशत की दर से एवं 5.0 लाख से ऊपर की आय पर 30 प्रतिशत की दर से कर लिया जा सकता है। **कर की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई दर का ही दूसरा नाम प्रगतिशील करारोपण** हैं । इसमें ग़रीबों से कोई कर नहीं लिया जाता जबकि अमीरों को ऊँची दर से कर का भुगतान करना पड़ता है।

Propensity to consume (प्रॉपेन्सिटी टू कन्ज़ूम) **उपभोग प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग, जिसे लोग उपभोग हेतु व्यय करना चाहते हैं।

(देखिए see average and marginal propensity to consume)

Propensity to import (प्रॉपेन्सिटी टू इम्पोर्ट) **आयात प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जो आयात हेतु प्रयुक्त किया जाता है।

(देखिए average and marginal propensity to import) ।

Propensity to save (प्रॉपेन्सिटी टू सेव) **बचत प्रवृत्ति**

राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसे परिवारों के लोग बचाना चाहते हैं। कुल बचत में राष्ट्रीय आय से भाग देने से प्राप्त गुणांक को बचत प्रवृत्ति कहा जाता है।

(देखिए average and marginal propensity to save)

Propersity to tax (प्रॉपेन्सिटी टू टैक्स) **करारोपण की प्रवृत्ति**

कुल आय में करों की कुल राशि का अनुपात

$$\text{औसत कर प्रवृत्ति} = \frac{\text{कुल कर}}{\text{कुल राष्ट्रीय आय}}$$

$$\text{सीमान्त कर प्रवृत्ति} = \frac{\text{करों की कुल राशि में परिवर्तन}}{\text{राष्ट्रीय आय में परिवर्तन}}$$

Property (प्रॉपर्टी) **सम्पत्ति**

(1) भूमि व भवन–प्रकृति प्रदत्त वे स्थायी सम्पत्तियां जिन्हें मानव ने अपने लिए निर्मित या तैयार किया है। इनकी आपर्ति को तत्काल बढाना सम्भव नहीं होता।

(2) निजी तथा संस्थागत स्वामित्व वाली स्थायी प्रकृति की सम्पत्तियां ।
(3) सार्वजनिक स्वामित्व वाली सम्पत्तियां ।(see assets)
(4) बौद्धिक सम्पदा जिसका सृजन व्यक्ति अपने कौशल तथा दिमाग से करता है।

Property developer (प्रॉपर्टी डेवलपर) **संम्पत्ति का विकास करने वाला**
वह व्यक्ति, जो सम्पत्ति का निर्माण करके इसे उपयोग हेतु अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं को बेचता है। इसमें सम्पत्ति के उपयोग में परिवर्तन करने का उद्देश्य भी निहित हो सकता है।

Properity income (प्रॉपर्टी इन्कम) **सम्पत्ति से प्राप्त आय**
किसी भी प्रकार की सम्पत्ति से प्राप्त आय। इनमें किराया,रॉयल्टी आदि शामिल हैं।

Property lending (प्रॉपर्टी लैंडिंग) **सम्पत्ति की ख़रीद हेतु वित्त प्रबन्ध**
इस प्रकार के ऋणों के लिए सम्बद्ध सम्पत्ति को तब तक जमानत के रूप में रखा जाता है जब तक कि ऋण की ब्याज़ सहित अदायगी न हो जाए।

Property market (प्रॉपर्टी मार्केट) **सम्पत्ति के क्रय विक्रय की व्यवस्था**
इसके लिए कोई केन्द्रीय व नियमित व्यवस्था नहीं होती, लेकिन भूमि व भवन की माँग तथा उपलब्धता के आधार पर उनकी कीमत निर्धारित होती है।

Property rights (प्रॉपर्टी राइट्स) **सम्पत्ति का अधिकार**
किसी संस्था, व्यक्ति या परिवार में निहित किसी सम्पत्ति का कानूनी अधिकार। इस अधिकार के अन्तर्गत सम्पत्ति के स्वामी को यह अधिकार है कि वह इसका स्वयं उपयोग करे, इसे लीज़ या किराए पर दे, दान में दे अथवा इसे बेच दे।

Proportional tax (प्रोपोर्शनल टैक्स) **आनुपातिक कर**
ऐसा कर जिसके अन्तर्गत राजस्व की राशि आय या सम्पत्ति के अनुपात में बढ़ती है। उदाहरण के लिए, सभी करदाताओं से उनकी आय का 10 प्रतिशत कर के रूप में लिया जाए तो यह आनुपातिक कर है। इसके विपरीत प्रगतिशील कर के अन्तर्गत कर की दर में आय के साथ साथ वृद्धि की जाती है।

Protection (प्रॉटेक्शन) **संरक्षण**
ऐसी नीति जो इस मान्यता पर आधारित है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विशेष रूप से आयातों पर प्रतिबन्ध लगाना देश के हित में है। जिन उद्योंगों को विदेशी आयातों से कोई भी ख़तरा है उन्हें संरक्षण दिया जाता है। सरकार आयात पर भारी कर लगाकर या मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगाकर विदेशी वस्तुओं का घरेलू बाज़ार में प्रवेश रोकती है ताकि इस **संरक्षण की छत के नीचे** घरेलू उद्योग पनप सकें।
परन्तु कुछ अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि संरक्षण की नीति दीर्घकाल तक चलने पर देश के उद्योग सरकारी सहायता पर निर्भर हो जाते हैं जिनसे सरकार पर आर्थिक बोझ तो बढ़ता ही है, इन उद्योगों में दक्षता का विकास भी नहीं हो पाता।
संरक्षण के अन्तर्गत ही ऊँची लागत वाले घरेलू उद्योगों को अनुदान देकर उनकी

वस्तुओं के निर्यात को प्रोत्साहन दिया जाता है परन्तु यह नीति भी दीर्घकाल तक चलने देना अर्थव्यवस्था के लिए घातक है।

Protectionism (प्रोटेक्शनिज़्म) **संरक्षण वाद**

विदेशी वस्तुओं के आयात से देश के घरेलू उद्योगों को बचाने हेतु आयात करों तथा मात्रात्मक प्रतिबन्धों की ऊँची दीवारें खड़ी करने की नीति। ऐसा विश्वास किया जाता है कि घरेलू उद्योगों के लिए इस प्रकार की नीति वांछनीय है। परन्तु जिन उद्योगों को तुलनात्मक लाभ प्राप्त हैं, उन्हें संरक्षण के दायरे में लेना अधिक लाभप्रद है, जबकि जिन्हें तुलनात्मक लाभ नहीं मिलता उन्हें संरक्षण प्रदान करने से *अक्षमता को प्रोत्साहन मिलता है।*

Proxy (प्रॉक्सी वोट) **ऐवजी मत**

किसी अन्य व्यक्ति के मताधिकार का प्रयोग करना। प्रायः कम्पनी की साधारण सभा की बैठक में जो अंशधारी भाग नहीं ले पाते उन्हें उनके मतों का अन्य किसी अंशधारी के माध्यम से उपयोग करने का अवसर दिया जाता है।

Public expenditure (पब्लिक एक्सपेंडिचर) **सार्वजनिक व्यय**

सरकार द्वारा विभिन्न मदों पर किया जाने वाला ख़र्च

Public finance (पाब्लिक फाइनेंस) **सार्वजनिक वित्त**

सरकारी तंत्र की वित्त व्यवस्था का अध्ययन। इसमें करारोपण, सार्वजनिक संस्थाओं के व्यय, सरकार द्वारा किए गए हस्तांरण भुगतान, सरकार की विभिन्न सम्पत्तियों से प्राप्त आय, सरकार द्वारा लिए जाने वाले ऋण एवं उनकी अदायगी आदि का अध्ययन शामिल हैं।

Public goods (पाब्लिक गुड्स) **सार्वजनिक वस्तुएँ**

ऐसी वस्तुएँ तथा सेवाएँ ,जिन्हें प्रयोग में लेने का अधिकार सभी नागरिकों को है। प्रायः सार्वजनिक वस्तुओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, उद्यान, सड़क आदि) का उत्पादन, तथा इनकी आपूर्ति निजी लाभ के दृष्टिकोण से नहीं की जाती।

Public interest (पब्लिक इंटरेस्ट) **जनहित**

ऐसी वस्तु या सेवा, जिसमें " सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय ' का दृष्टिकोण निहित होता है। एकाधिकारिक शक्ति पर नियंत्रण करना, सार्वजनिक सम्पत्तियों की गुणवत्ता एवं रख रखाव, सरकार की किसी नीति से आम व्यक्ति को होने वाली क्षति से बचाने हेतु जन हित की बात उठाई जाती है। प्रायः उपयुक्त एजेंसी को बार-बार निवेदन करने पर यदि सुनवाई नहीं होती, तो कोई भी व्यक्ति सक्षम अदालत में जनहित याचिका दायर कर सकता है।

Public debt (पब्लिक डेट) सार्वजनिक ऋण

राष्ट्रीय ऋण तथा अन्य प्रकार के कर्ज़ जिन्हें अन्ततः सरकार को चुकाना है। इन ऋणों में राज्य सरकारों केन्द्र सरकारों तथा सरकारी उपक्रमों द्वारा लिए गए ऋण शामिल होते है।

Public sector (पब्लिक सैक्टर) **सार्वजनिक क्षेत्र**

अर्थव्यवस्था के वे भाग, जिन पर व्यक्तियों तथा निजी संस्थाओं का न तो स्वामित्व है, और न ही संचालन का निजी अधिकार होता है।

Public utility (पब्लिक यूटीलिटी) **सार्वजनिक महत्व की वस्तुएँ व सेवाएँ**

वे इकाइयां या उपक्रम, जो पेयजल, गैस, पैट्रोल, प्राथमिक स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, विद्युत शक्ति आदि की आपूर्ति करती है। इन वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति करने वाली इकाइयाँ या तो सरकारी स्वामित्व वाली होती है अथवा उन पर सरकार का अंकुश होता है।

public works (पब्लिक वर्क्स) **सार्वजनिक निर्माण**

सरकारी ख़र्च पर किए जाने वाले निर्माण कार्य। इनमें प्रायः सरकारी भवन तथा सड़कों के निर्माण को शामिल किया जाता है। मंदी के दौरान सार्वजनिक निर्माण कार्यों को गति प्रदान करने से रोज़गार के स्तर में वृद्धि होती है।

Pump priming (पम्प प्राइमिंग) **मंदी से स्थायी मुक्ति**

इस सिद्धान्त के अनुसार मन्दी के दौरान अस्थायी रूप से अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्रयशक्ति का संचार करके इसका स्थायी हल निकाला जा सकता है। इसके पीछे यह तर्क निहित है कि भविष्य के प्रति विश्वास की कमी के कारण निवेश रुक जाता है, और ऐसे समय में सरकारी व्यय में वृद्धि करके सकल माँग तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने से उस खोए हुए विश्वास को पुनः प्राप्त किया जा सकता है, जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो जाएगी। इस प्रकार **सरकारी व्यय में वृद्धि का गुणक प्रभाव हो सकता है।**

Purchasing power (परचेज़िग पावर) **क्रय शक्ति**

मुद्रा की एक इकाई द्वारा ख़रीदी जाने वाली वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा। इस अर्थ में मूल्य सूचकांक से क्रय शक्ति ठीक विपरीत है। यदि मूल्य सूचकांक 100 से बढ़कर 200 हो जाए तो निर्दिष्ट अवधि में मुद्रा की क्रय शक्ति आधी रह गई है, ऐसा माना जाएगा।

Purchasing power parity theory (परचेचिंग पावर पैरिटी)

क्रय शक्ति समता सिद्धान्त

विनिमय दर निर्धारण का एक सिद्धान्त। इसके अनुसार दो देशों की विनिमय दर का निर्धारण इस आधार पर किया जाता है कि अलग अलग रूप में उनकी क्रय शक्ति कितनी है।

उदाहरण के लिए, 1 डालर में सं.रा.अमरीका में 1 पाउंड मक्खन ख़रीदा जा सकता है तथा उसी मक्खन के लिए भारत में 50 रुपए देने होते हैं तो विनिमय दर $1=50 रुपए होगी । सूचकांकों के रूप में यदि विभिन्न वस्तुओं का भारित सूचकांक भारत में 1980 व 2000 के बीच 100 से बढ़ कर 200 हो जाए जबकि अमरीका में उन्हीं

वस्तुओं का सूचकांक 150 हो, तो भारत में डालर की विनिमय दर पूर्वपेक्षा 4\3 अधिक होगी। इस प्रकार *डालर व रुपए की विनिमय दर का परिवर्तन इनकी क्रय शक्ति में होने वाले परिवर्तन पर निर्भर करेगा।*

Pure floating rate exchange (प्योर फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट)

विशुद्ध रूप से परिवर्तनशील विनिमय दर

वह विनिमय दर, जो परिवर्तनशील व लचीली है लेकिन इसमें परिवर्तन केन्द्रीय बैंक की नीति पर नहीं, अपितु विशुद्ध रूप से बाज़ार की शक्तियों पर निर्भर करेंगे।

□□□

Q

Quadrant (क्वॉड्रेन्ट) **अक्ष**

किसी रेखा चित्र का वह भाग जो मूल बिन्दु से इसकी दिशा के आधार पर परिभाषित किया जाता है।

Quadratic (क्वॉड्रेटिक)

एक द्विघाती गणितीय फलन जिसका स्वरूप $y = ax^2 + bx + c$ होता है जिसमें शून्य नहीं होता।

Qualification of accounts (क्वालिफिकेशन ऑफ एकाउंट्स)

अंकेक्षकों का यह प्रतिवेदन, कि वे किसी फर्म या संस्था के खातों को सत्यापित नहीं कर सकते। ऐसा प्रायः इसलिए हो जाता है कि उस संस्था के लेखे ठीक से तैयार नहीं होते अथवा घोर वित्तीय अनियमितताएँ देखी गई हों।

Quality (क्वालिटी) **गुणवत्ता**

किसी वस्तु या सेवा के **गुणों की पूर्णता** जिनके अनुसार उपभोक्ताओं या ग्राहकों की आवश्यकता एवं अपेक्षाओं के अनुरूप वह वस्तु या सेवा पाई गई हैं।

Quality circle (क्वालिटी सर्किल) **गुणवत्ता चक्र**

कर्मचारियों का एक समूह, जो अधीक्षक के नेतृत्व में नियमित रूप से मिलकर उन तरीकों पर विचार विमर्श करता है जिनके आधार पर उस फर्म के उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

Quality control (क्वालिटी कंट्रोल) **गुणवत्ता नियंत्रण**

उत्पादित की गई वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता में नियमितता एवं अनवरतता बनाए रखना। इसका उद्देश्य यह है कि तैयार वस्तु के निर्माण में **अपेक्षित मानकों** का पूरा ध्यान रखा जाए। वस्तुओं में सैंपल या प्रतिचयन के आधार पर इन मानकों का परीक्षण किया जाता है तथा कोई भी कमी पाए जाने पर तत्काल उसमें सुधार करने के आदेश दिए जाते हैं। इस विधि के द्वारा फर्म की प्रतिष्ठा बनाए रखा जाती है।

Quality ladder (क्वालिटी लैडर) **गुणवत्ता की सीढ़ी**

वह मॉडल, जिसके अन्तर्गत एक उत्पादक अपनी वस्तु या सेवा की गुणवत्ता में *उत्तरोत्तर* सुधार करता है। इसके फलस्वरूप वस्तुएँ अधिक विश्वसनीय बनती हैं तथा उनकी डिजाइन एवं बनावट में निखार आता है।

Quantity demanded (क्वांटिटी डिमान्डेड) **माँगी गई मात्रा**

किसी वस्तु (या साधन) की वह मात्रा, जिसे *निर्दिष्ट कीमत पर निर्दिष्ट अवधि में* उपभोक्ता (या उत्पादक) क्रय करना चाहता है। जहां निर्दिष्ट वस्तु की माँग का

प्रश्न है, इस पर कीमत के अलावा उपभोक्ता की आय, अन्य वस्तुओं की कीमतों तथा उपभोक्ता की रुचि का भी प्रभाव पड़ता है।

Quantity of money (क्वांटिटी ऑफ मनी) **मुद्रा की मात्रा**

अर्थ व्यवस्था में चलन में विद्यमान मुद्रा की कुल मात्रा। इसमें करेन्सी के अलावा बैंक निक्षेपों पर आधारित मुद्रा(यानी साख मुद्रा) भी शामिल है। (देखिए money supply).

Quantity supplied (क्वांटिटी सप्लाइड) **पूर्ति की मात्रा**

निर्दिष्ट समय पर दी हुई कीमत पर उत्पादकों द्वारा विक्रय हेतु प्रस्तुत मात्रा। यह मात्रा उत्पादक द्वारा चाही गई कीमत, उत्पादन के साधनों की मात्रा, प्रयुक्त की गई टेक्नोलोजी,आदि पर निर्भर करती है। प्रायः कीमत में वृद्धि होने पर पूर्ति की मात्रा भी बढ़ती है।

Quantity theory of money (क्वांटिटी थ्योरी ऑफ मनी)

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की कुल मात्रा तथा कीमत स्तर में आनुपातिक सम्बन्ध है। इसके लिए निम्न समीकरण प्रयुक्त किया जाता है :

$$P = \frac{MV + M'V'}{T}$$

जहां P मूल्य स्तर है, M सरकार द्वारा निर्गमित मुद्रा है, जबकि M' साख मुद्रा है। V एवं V' क्रमशः M एवं M' के चलन वेग के प्रतीक है। इस समीकरण में T वस्तुओं व सेवाओं की मात्राएँ हैं। मुद्रा के परिणाम सिद्धान्त के अनुसार में V, V' तथा T को स्थिर रखते हुए *जितने अनुपात में M तथा M' को बढ़ाया जाता है, P भी उतने ही अनुपात में बढ़ जाता है।*

Quantity traded (क्वांटिटी ट्रेडेड) **क्रय तथा विक्रय की गई मात्रा**

निर्दिष्ट कीमत पर उपभोक्ताओं द्वारा ख़रीदी गई तथा विक्रेताओं द्वारा बेची गई **(साम्य)** मात्रा।

Quasi-rent (क्वासी रेंट) **आभास लगान**

आर्थिक लगान उत्पादन के किसी साधन के लिये **अल्प अवधि** में चुकाई गई कीमत का उसकी प्रतियोगी कीमत से आधिक्य। प्रायः अल्पकाल में किसी साधन की कमी होने पर जितनी कीमत प्रतियोगी बाज़ार में होनी चाहिए उससे अधिक कीमत देनी पड़ जाती है। यह आधिक्य ही आभास लगान है। दीर्घकाल में उस साधन की पूर्ति में पर्याप्त वृद्धि होने के कारण आभास लगान शून्य हो जाता है।

Quesnay, Francois (फ्रैंको केने (1694–1774)

प्रकृतिवाद के संस्थापक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री। डा. केने ने कहा कि केवल कृषि ही सभी प्रकार की सम्पत्ति का मूल स्रोत है। इसमें खेती करने वाले एक आर्थिक अतिरेक का सृजन करते हैं जो उनके जीविकोपार्जन से अधिक राशि है। यह अतिरेक भू–स्वामियों

को प्राप्त होता है। प्रकृतिवादी किसी भी सरकारी हस्तक्षेप के विरोधी थे।

Queue (क्यू) **कतार**

क्रेताओं का वह समूह, जो वस्तु या सेवा की ख़रीद के लिए अपनी बारी का इन्तजार करता है। इसमें " पहले आओ, पहले पाओ"के सिद्धान्त की अनुपालना होती है।

Quota (कोटा) **अभ्यंश; एक मात्रात्मक आवंटन**

इस मात्रा को न्यूनतम या अधिकतम रूप में निर्धारित किया जा सकता है। न्यूनतम अभ्यंशों के अन्तर्गत नौकरियों में विकलांगों, महिलाओं अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों तथा अन्य पिछड़ी जातियों को आवंटित अनुपात शामिल है। विदेशों से आयात की गई वस्तुओं के लिए अधिकतम अभ्यंश हो सकता है। अल्पाधिकार वाले बाज़ार में किसी गठबंधन के सदस्य द्वारा बेची जाने वाली *अधिकतम मात्रा भी* इसी के अन्तर्गत रखी जाती है।

Quota (IMF) (कोटा)(आईएमएफ)

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा आवंटित अभ्यंश

कुल कोषों में प्रत्येक सदस्य देश को आवंटित अभ्यंश उसकी मतदान शक्ति का पर्याय होता है। अभ्यंश का आकार जितना बड़ा है उस सदस्य देश को उतना ही अधिक सम्मान प्राप्त होगा, तथा उसकी ऋण लेने की क्षमता भी अधिक होगी।

Quota(OPEC) (कोटा) (ओपेक) **तेल निर्यातक देशों द्वारा आवंटित अभ्यंश**

तेल निर्यातक देशों के संगठन द्वारा सदस्य देशों को आवंटित अधिकतम बिक्री की मात्रा। इन अभ्यंशों का निर्धारण इस संगठन की वार्षिक बैठक में किया जाता है।

Quota sample (कोटा सैंपल) **आनुपातिक प्रतिचयन**

इसके अन्तर्गत किसी जनसंख्या के विभिन्न खंडों में विद्यमान इकाइयों के अनुपात में ही कुल प्रतिचयनित इकाइयों का आवंटन किया जाता है। उदाहरण के लिए, कुल जनसंख्या में विभिन्न आयु समूह में जितने जितने लोग हैं प्रतिचयनित संख्या में भी उसी अनुपात में लोगों का चयन किया जाता है।

Quotation (कोटेशन) **स्टॉक एक्सचेंज से सम्बद्धता**

जब निवेशकों के लिए सभी वांछित सूचनाएँ किसी कम्पनी द्वारा उपलब्ध करवा दी जाती है तो उसके शेयरों के क्रय–विक्रय की अनुमति स्टॉक एक्सचेंज द्वारा प्रदान कर दी जाती है।

Quoted company (कोटेड कम्पनी)

वह कम्पनी जिसके शेयरों के क्रय –विक्रय की स्टॉक एक्सचेंज द्वारा अनुमति दे दी जाती है इससे कम्पनी को पूँजी जुटाने में पर्याप्त सहायता मिल जाती है।

Quote- driven market (कोट ड्रिवन मार्केट) **प्रतिभूति बाज़ार**

इस बाज़ार में एक सीमा के भीतर निर्दिष्ट कीमतों पर शेयरों व प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय होता है । यदि किसी शेयर की आपूर्ति कम होती है तो उसकी कीमत में वृद्धि कर दी जाती है, तथा इसकी आपूर्ति काफी अधिक होने पर बाज़ार में विद्यमान दलाल उसकी कीमतों में कमी कर देते हैं। ☐☐☐

R

Racial discrimination (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन) **जातिगत भेदभाव**

कभी– कभी किसी व्यक्ति को साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी जाति क्या है। रोज़गार, बीमा, मकानों का आवंटन, सरकारी अनुदान तथा साख सुविधाओं के संदर्भ में अनेक देशों में जातिगत प्राथमिकताएँ देखी जाती हैं। यह भेद–भाव अनुचित तथा आर्थिक दृष्टि से अकुशलता का पोषक माना जाता है, परन्तु भारत में सामाजिक न्याय के नाम पर अनेक जातियों को ऐसी रियायतें दी गई हैं जो अन्य जातियों के लोगों को नहीं मिल पातीं।

Rain forest (रेन फॉरेस्ट) **शीतोष्ण कटिबन्ध के वनों का क्षेत्र**

ऐसे वन क्षेत्र, जहां पर्याप्त वर्षा होती है। पर्यावरणविद् इस प्रकार की वर्षा एवं उससे सम्बद्ध वनों को बहुत महत्त्व देते हैं।

R&D (Research and development) (रिसर्च एण्ड डेवलेपमेन्ट)

शोध एवं विकास

साधनों का उपयोग नए ज्ञान के सृजन, नए तथा बेहतर उत्पादों के विकास तथा उत्पादन की नई विधियों के विकास हेतु करना।

Random sample (रैंडम सैंपल) **दैव प्रतिचयन**

किसी जनसंख्या में विद्यमान सभी इकाइयों को प्रतिचयन(सैंपल) में शामिल होने का समान अवसर प्रदान करना।

(देखिए quota sample)

Random walk (रैडम वॉक) **दैव प्रवृत्ति**

ऐसी स्थिति, जिसमें किसी चर में होने वाले परिवर्तनों का कोई सम्बन्ध पूर्व में हुए परिवर्तनों के साथ नहीं होता। इसीलिए उस चर की पुराने किसी मूल्य तक पहुंचने की कोई प्रवृत्ति नहीं होती। उदाहरण के लिए, किसी शेयर की प्रारम्भिक कीमत 10 रु. है तथा उसके 10 प्रतिशत बढ़ने या कम होने की सम्भावना एक जैसी है। यह नहीं कहा जा सकता कि वह कब बढ़ेगी या कब कम होगी। यदि लम्बी अवधि तक यह अनश्चितता चलती है तो सम्भावित मूल्यों की आवृत्तियों में काफी अधिक अपकिरण दिखाई देगा।

Range (रेन्ज) **विस्तार**

किसी चर के सम्भावित मूल्यों के न्यूनतम तथा अधिकतम मूल्यों का अन्तर। उदाहरण के लिए, यदि किसी कक्षा में विद्यार्थियों की न्यूनतम लम्बाई 140 से.मी.

तथा अधिकतम लम्बाई 170 से.मी हो, तो इस चर का विस्तार 140 से 170 से.मी. माना जाएगा।

Rank correlation (रैंक कोरीलेशन) **क्रमान्तर सह-सम्बन्ध**

दो चरों के मध्य *उनके क्रमों के अनुसार* सह-सम्बन्ध देखा जा सकता है। जहां गुणात्मक मूल्यों को मापना सम्भव न हो वहां सम्बद्ध गुण के अनुरूप विभिन्न इकाइयों को क्रम में रखा जा सकता है। यदि दोनों सीरीज़ में इसी प्रकार क्रम के अनुरूप प्रत्येक चर को रखा जाए तो क्रमान्तर सह–सम्बन्ध ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, सुन्दरता तथा बुद्धिमता का सीधा माप नहीं हो सकता, तथापि 10 व्यक्तियों के एक समूह में प्रत्येक को दोनों गुणों के आधार पर किसी क्रम में रखा जा सकता है। स्वाभविक है, यदि प्रत्येक व्यक्ति को दोनों ही गुणों के आधार पर एक ही क्रम (1,2,.........,10) मिल जाए तो यह क्रमान्तर सह–सम्बन्ध का गुणांक 1.0 होगा। क्रमान्तर सह–सम्बन्ध के गणांक जानने हेतु स्पियर मैन ने निम्न सूत्र प्रस्तुत किया :

$$r^* = 1 - \frac{6\sum D^2}{N(N^2 - 1)}$$

इस सूत्र में r* तो क्रमान्तर सह-सम्बन्ध का गुणांक है, N कुल इकाइयों की संख्या है तथा D दोनों सीरीज़ की प्रत्येक इकाई के *क्रमों का अन्तर* है।

Ratchet effect (रैचेट इफैक्ट) **पूर्व की अधिकतम संख्या का प्रभाव**

प्रायः कोई भी चर इसके पूर्व परिलक्षित अधिकतम मूल्य से प्रभावित हो सकता है। उदाहरण के लिए, निर्दिष्ट आय में उपभोग की राशि कितनी होगी, यह पूर्व की *अधिकतम आय पर निर्भर कर सकता है।* इसी प्रकार श्रमिक संघ वास्तविक मज़दूरी में कितनी वृद्धि चाहते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि पूर्व में वास्तविक मज़दूरी प्राप्त हो चुकी है।

Rateable value (रेटिएबल वैल्यू) **भवन कर का आधार**

भवन का वह मूल्य, जिसके आधार पर भवन कर रोपित किया जाना है।

Rate of interest **(रेट ऑफ इन्टरेस्ट)** **ब्याज़ की दर**

साख प्राप्ति की लागत, जो प्रतिशत रूप में व्यक्त की जाती है। प्रत्येक ऋण पर मूल-राशि के ऊपर ऋणी को कुछ राशि ऋणदात्री संस्था को चुकाना होता है! मूलधन के ऊपर दी जाने वाली इस राशि का **प्रतिशत रूप ही** ब्याज़ की दर कहलाता है।

Rate of return (रेट ऑफ रिटर्न) **प्रतिफल की दर**

(1) किसी व्यवसाय में पूँजी के ऊपर प्राप्त लाभ का प्रतिशत

(2) पूँजी के ऊपर प्राप्त ब्याज़ का प्रतिशत। प्रतिफल की प्रतिशत दर वार्षिक आधार पर व्यक्त की जाती है।

Ratio (रेशियो) **अनुपात**

एक संख्या में दूसरी संख्या से भाग देने पर प्राप्त संख्या। अर्थशास्त्र में किसी भी श्रेणी (सीरीज़) में होने वाले परिवर्तन को मापने का एक तरीका।

Rational behaviour (रेशनल बिहेवियर) **विवेकपूर्ण व्यवहार**

अर्थशास्त्र में सबसे अधिक एवं सर्वमान्य मान्यता यह है कि प्रत्येक आर्थिक इकाई का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है। इसके अनुसार उपभोक्ता अपनी आय का विभिन्न वस्तुओं के मध्य इस प्रकार आवंटन करता है कि उसे प्राप्त होने वाली उपयोगिता अधिकतम हो जाए। इसी प्रकार उत्पादक अपने साधनों को विभिन्न वस्तुओं के मध्य इस प्रकार आवंटित करता है कि अधिकतम आगम प्राप्त हो जाए। प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ की प्राप्ति करने का प्रयास करती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र में प्रत्येक आर्थिक इकाई का व्यवहार विवेकपूर्ण माना जाता है। क्योंकि उसे अपना कल्याण (उपयोगिता या लाभ) अधिकतम करना है, या अपनी हानि (त्याग, क्षति) को न्यूनतम करना है।

Rational expectations (रेशनल एक्सपैक्टेशस) **विवेकपूर्ण प्रत्याशाएँ**

इस परिकल्पना के अनुसार व्यक्ति तथा फर्म पक्षपात रहित, तथा पूर्ण सूचनाओं के आधार पर भावी घटनाओं का अनुमान करती हैं तथा उसी के अनुरूप निर्णय लेती हैं। निवेश तथा शेयर बाज़ार के विषय में व्यवसायिक व्यय पर निवेशकों द्वारा भविष्य के विषय में किए गए अनुमानों का काफी प्रभाव होता है। इन्हीं अनुपातों का व्यापार चक्रों की आकृति पर काफी हद तक प्रभाव पड़ता है। यदि व्यावसायिक इकाइयों का निर्णय पूर्ण ज्ञान पर आधारित हो तो शायद कीमतों में उतार –चढ़ाव ही रुक जाएँ। इसी प्रकार मज़दूरी के विषय में मज़दूरों तथा नियोक्ताओं के बीच चलने वाला संवाद भी दोनों पक्षों द्वारा भावी कीमतों के लिए किए गए अनुमानों पर निर्भर करता है। फिर भी, विवेकशील प्रत्याशओं का मॉडल पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ारों के लिए अधिक अनुकूल माना जाता है।

Rationalization (रैशनलाइजेशन) **दक्षतापूर्ण व्यवहार करना**

साधनों के आवंटन को और अधिक दक्षतापूर्ण बनाना। यदि साधनों का उपयोग विवेकपूर्ण न हो तो उद्योगों का पुनर्गठन करके इसे अधिक दक्षतापूर्ण बनाना होता है। प्रायः इस प्रक्रिया के अन्तर्गत बहुत ऊँची लागत वाले प्लांटों को बन्द करने से लेकर विभिन्न फर्मों के विलय तक के निर्णय लिए जा सकते है। इसी के अन्तर्गत फर्मों में मौजूद अधिक्षमता को न्यूनतम करने के प्रयास भी शामिल हैं।

Rational number (रैशनल नम्बर) **परिमेय संख्या**

ऐसी संख्या जो दो पूर्ण संस्थाओं के अनुपात के रूप में प्रस्तुत की जाए उदाहरण के लिए, $1.5 = \frac{3}{2}$ को परिमेय संख्या माना जा सकता है, लेकिन $\sqrt{2}$ परिमेय संख्या नहीं है।

Rationiang (राशनिंग) **अल्पपूर्ति वाली वस्तु का आवंटन**

द्वितीय महायुद्ध के दौरान अनेक देशों में अनाज तथा कपड़े का राशनिंग किया गया था, क्योंकि इनकी पूर्ति में भारी कमी हो गई थी। राशनिंग का मुख्य उद्देश्य अल्पपूर्ति वाली वस्तु का उपभोक्ताओं में संतुलित रूप में, तथा *निर्दिष्ट कीमत पर* आवंटन करना है।
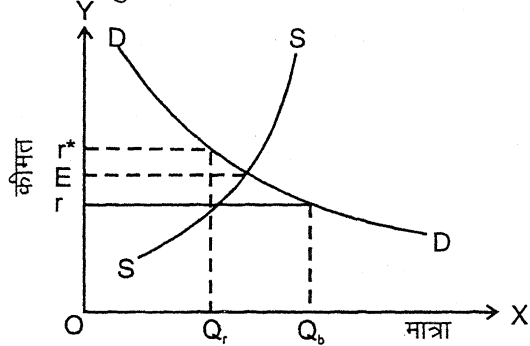
उपरोक्त चित्र में माँग व पूर्ति का साम्य होने की दशा में OE कीमत का निर्धारण होगा। लेकिन सरकार इसे ऊँची कीमत मानते हुए Or कीमत पर बेचने हेतु उत्पादकों को वस्तु बेचने हेतु पाबन्द कर देती है। विक्रेता इस कीमत पर OQr मात्रा ही बेचना चाहेंगे। परन्तु Or कीमत पर माँग का स्तर OQ_b है जो पूर्ति की तुलना में काफी अधिक है। इसके फलस्वरूप काला बाज़ार में वह वस्तु Or* कीमत पर बेची जाएगी। अन्य शब्दों में, राशनिंग अपने आप में बुरा नहीं है लेकिन यदि राशनिंग के अन्तर्गत कीमत *काफी कम रखी जाए तो इसके कारण वस्तु का काला बाज़ार होगा* तथा उसमें बहुत ऊँची कीमत पर उपभोक्ताओं को वस्तु बेची जाएगी।

Rawlsian social welfare function (रॉल्सीयन सोशल वैलफेयर फंक्शन) **रॉल्स का सामजिक कल्याण फलन**

सामाजिक कल्याण का वह फलन जिसमें समाज के *सबसे पिछड़े सदस्य को* प्राप्त उपयोगिता को सामाजिक कल्याण का माप मान लिया जाता है।

Raw materials (रॉ मेटिरियल्स) **कच्चा माल**

प्राथमिक क्षेत्र के उत्पाद, जिन्हें उत्पादन प्रक्रिया में इनपुट्स या संसाधनों के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। कच्चे माल में कपास, जूट आदि रेशे वाली फसलें, ऊन, चमड़ा, लकड़ी, खनिज पदार्थ जैसे लोहा, कोयला, बॉक्साइट, जिप्सम, जस्ता, आदि को शामिल किया जा सकता है।

Reaction curve (रिएक्शन कर्व) **प्रतिक्रिया वक्र**

ऐसा वक्र, जो प्रतिद्वन्द्वी की निर्दिष्ट कीमत या मात्रा के विरुद्ध किसी फर्म द्वारा निर्धारित की जाने वाली कीमत या मात्रा को दर्शाता है। जहां दोनों प्रतिद्वन्द्वियों के प्रतिक्रिया फलन परस्पर काटते हैं वहां साम्य कीमत या मात्रा का निर्धारण होता है।

Reaganomics (रीगनोमिक्स) **रीगन की नीति, रीगन का अर्थशास्त्र**
अमरीका के राष्ट्रपति रीगन ने अपने शासन काल में मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण हेतु कठोर मौद्रिक नीति तथा उदार राजकोषीय नीति का सम्मिश्रण करने का प्रयास किया था। परन्तु इस नीति के फलस्वरूप अमरीकी सरकार के बजट में भारी घाटा हुआ तथा भुगतान शेष काफी प्रतिकूल हो गया।

Real balance effect (रीयल बैलेन्स इफैक्ट) **वास्तविक कोष प्रभाव**
आय में मौद्रिक कोषों के अनुपात में परिवर्तन होने से कुल व्यय पर होने वाला प्रभाव। मुद्रा स्फीति के दौरान जब कीमतों में वृद्धि होती है, तब लोगों के पास मौजूद मुद्रा-कोषों की क्रय शक्ति कम हो जाती है। इसके फलस्वरूप लोग अपने व्यय में कमी करेंगे तथा बचत बढ़ाएँगे। मुद्रा की मात्रा स्थिर रहने की स्थिति में इस प्रवृत्ति के कारण मुद्रा-स्फीति रुक जाएगी

Real balances (रीयल बैलेन्सेज़) **वास्तविक कोष**
मुद्रा कोष की वास्तविक क्रय शक्ति। इसे ज्ञात करने हेतु मुद्रा की मात्रा में उपयुक्त कीमत सूचकांक से भाग दिया जाता है, एवं यह ज्ञात किया जा सकता है कि मुद्रा की एक इकाई से कितनी वस्तुओं व सेवाओं को ख़रीदा जा सकता है।

Real business cycle (रीयल बिज़नेस साइकल) **वास्तविक व्यापार चक्र**
यह सिद्धान्त कि आर्थिक गतिविधियों में परिलक्षित वास्तविक झटकों के कारण उतार चढ़ाव उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, तकनीकी प्रगति की रफ्तार में परिवर्तन से आर्थिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं

Real costs (रीयल कॉस्ट्स) **वास्तविक लागतें**
किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में प्रयुक्त वास्तविक संसाधन। इसकी वैकल्पिक परिभाषा में किसी वस्तु के उत्पादन हेतु किसी अन्य वस्तु की त्यागी गई मात्रा (अवसर लागत) को भी लिया जाता है। परन्तु वास्तविक लागत तथा निजी लागत में अन्तर है क्योंकि निजी लागतों में अनुदान, कर तथा बाह्य लागतों को शामिल नहीं किया जाता, क्योंकि इनका भार उत्पादक पर नहीं पड़ता।

Real exchange rate (रीयल एक्सचेंज रेट) **वास्तविक विनिमय दर**
मुद्रा स्फीति को समायोजित करते हुए स्थिर कीमतों के रूप में निर्धारित किसी मुद्रा की विनिमय दर। उदाहरण के लिए, यदि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में प्रतिद्वन्द्वियों की अपेक्षा किसी देश में मुद्रा स्फीति की दर अधिक है तो प्रतिद्विन्द्वियों की तुलना में इसके निर्यात महँगे हो जाएँगे, तथा घरेलू उत्पादों की तुलना में आयात सस्ते हो जाएँगे, जब तक कि इसकी विनिमय दर मुद्रा स्फीति के अन्तर की समाप्ति होने वाले स्तर तक नहीं गिर जाती । संक्षेप में, वास्तविक विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की वास्तविक वस्तुएँ तथा सेवाएँ परस्पर अदल-बदल की जा सकती हैं।

Real GDP (रीयल जी.डी.पी.) **वास्तविक सकल घेरलू उत्पाद**

किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद में उपयुक्त कीमत सूचकांक से भाग देने से प्राप्त राशि।

Real GNP (रीयल जी.एन.पी.) **वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद**

किसी देश के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में उपयुक्त कीमत सूचकांक से भाग देने से प्राप्त राशि।

Real income (रीयल इन्कम) **वास्तविक आय**

मौद्रिक आय में वस्तुओं के सामान्य मूल्य स्तर से भाग देने पर प्राप्त आय। मान लीजिए, वर्तमान मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय 30,000 रुपए है लेकिन सामान्य मूल्यों का सूचकांक 150 है। ऐसी स्थिति में वास्तविक आय का स्तर 20,000 रु. ही होगा।

Real wages (रीयल वेजेज) **वास्तविक मज़दूरी**

मज़दूरी के स्तर में मूल्य स्तर से भाग देने पर प्राप्त राशि (W/P) । वस्तुतः यह *मज़दूरी की क्रय शक्ति* का एक माप है। वास्तविक मज़दूरी में तभी वृद्धि मानी जाएगी जब मौद्रिक मज़दूरी में होने वाली वृद्धि कीमत स्तर में हुई वृद्धि से अधिक हो।

Realignment of exchange rate (रीएलाइनमेंट ऑफ एक्सचेंज रेट) **विनिमय दर को सन्तुलित करना**

सम्बद्ध देशों की परस्पर सहमति के आधार पर विनिमय दरों में संशोधन करना। 1979 से यूरोपीय मौद्रिक प्रणाली के अन्तर्गत अनेक बार यह प्रक्रिया अपनाई गई हैं।

Real interest rate (रीयल इंटरेस्ट रेट) **वास्तविक ब्याज दर**

ऋण पर वास्तविक प्रतिफल। मौद्रिक ब्याज दर को मुद्रा स्फीति की दर से समायोजित करने पर वास्तविक ब्याज़ दर ज्ञात की जा सकती है। सरल रूप में यदि ब्याज़ की मौद्रिक दर (r) में से मुद्रा–स्फीति की दर (p) को कम कर दिया जाए तो वास्तविक ब्याज दर (r") ज्ञात की जा सकेगी। इस प्रकार,

$$r'' = r - p$$

Real national income (रीयल नेशनल इन्कम) **वास्तविक राष्ट्रीय आय**

राष्ट्रीय आय के अनुमानों को उपयुक्त प्राचलों से समायोजित करने पर प्राप्त राशि। विकास दर के संदर्भ में, यदि उत्पादन की वृद्धि दर 6 प्रतिशत है, परन्तु आयात–निर्यात का अन्तर अन्तर्राष्ट्रीय आय का 25 प्रतिशत हो, तथा व्यापार शर्तों में 10 प्रतिशत की गिरावट आती है, तो वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर

$[6-\left(\frac{10}{4}\right)]$ केवल 3.5 प्रतिशत होगी।

Real terms (रीयल टर्म्स) **वास्तविक परिवर्तन**

आर्थिक चरों में मात्रा–सम्बन्धी परिवर्तनों का घटाने पर प्राप्त संख्या। सकल घरेलू

उत्पाद प्रायः चालू कीमतों पर आधारित अनुमान होती है। वास्त्व में इसमें कितनी वृद्धि हुई यह ज्ञात करने के लिए इसे " जी डी पी डिफ्लेटर" यानी कीमत सूचकांक के द्वारा समायोजित किया जाता है। इसी के आधार पर सही अर्थ में राष्ट्रीय आय की वृद्धि ज्ञात की जा सकती है।

Real wage resistance (रीयल वेज रेज़िस्टैन्स) **वास्तविक मज़दूरी में कमी से सम्बद्ध प्रतिरोध**

प्रायः श्रमिक संघ मज़दूरी के सम्बन्ध में ऐसा कोई प्रस्ताव स्वीकार नहीं करते जिससे कीमत स्तर में हुई वृद्धि की क्षतिपूर्ति न होती हो। कम्पनी के प्रबन्धक भी जानते हैं कि श्रमिक उन्हें प्राप्त होने वाली वास्तविक मज़दूरी में कमी को सहन नहीं कर पाते, तथा इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मज़दूरी में इतनी वृद्धि की जाए जिससे उनकी वास्तविक मज़दूरी पूर्वापेक्षा अधिक हो।

Recession (रेसेशन) **मंदी**

व्यापार चक्र का वह चरण जिसमें आर्थिक गतिविधियों (वास्तविक उत्पादन एवं निवेश) में कमी होती है तथा रोज़गार के स्तर में कमी आती है। मंदी की उत्पत्ति सकल माँग में कमी के फलस्वरूप होती है।

Reciprocal (रेसी प्रोकल) **विलोम**

किसी संख्या से 1 में भाग देने से प्राप्त संख्या । तदनुसार 4 का विलोम 1/4 होगा

Reciprocity (रेसीप्रोसिटी) **पारस्परिक समानता का व्यवहार**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों में कोई देश " अ" किसी अन्य देश "ब" के नागरिकों के साथ वही व्यवहार करता है जो "ब " उस देश के नागरिकों के साथ करता है। वस्तुतः यह नीति **"जैसे को तैसा"** के सिद्धान्त पर आधारित है।

Recovery (रीकवरी) **आर्थिक स्थिति में सुधार**

व्यापार चक्र का वह चरण जिसमें उत्पादन तथा रोज़गार के स्तर में धीरे धीरे वृद्धि होने लगती है। इसी के चलते निवेश का स्तर भी बढ़ने लगता है। यह सुधार प्रायः सकल माँग में वृद्धि का परिणाम होता है, जो स्वयं विस्तारशील राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियों पर आधारित रहता है।

Recycling (रीसाइक्लिंग) **पुनर्प्रयोग**

ऐसे सामान तथा वस्तुओं का परिशोधन करके पुनः काम में लेना, जिसे अन्यथा बेकार की वस्तुएँ समझकर फेंका जा सकता था। पुराने अखबारों की लुग्दी बनाकर कागज बनाना, पुराने डिब्बों को ठीक करके पुनः काम में लेना, चिथड़ों को गलाकर कागज बनाना, काच की बोतलों तथा खनिज पदार्थों के अवशेषों को पुनः काम में लेना, आदि इसके उदाहरण हैं। इस प्रकार के पुनर्प्रयोग से एक ओर तो राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर फालतू वस्तुओं के अंबार लगाने से पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों को भी कम किया जा सकता है।

Redeemable financial security (रीडीमेबल फाइनेंशियल सीक्योरिटी) **भुनाने योग्य वित्तीय प्रतिभूति**

बॉन्ड, ऋण पत्र या प्राथमिक शेयर इस प्रकार की वित्तीय प्रतिभूतियाँ हैं जिनकी परिपक्वता तिथि पर इन्हें भुनाया जा सकता है।

Redeployment of labour (रीडीप्लॉसमेंट ऑफ लेबर) **श्रम का अन्तरण**

श्रमिकों का एक फर्म से दूसरी फर्म में एक उद्योग से दूसरे उद्योग में या एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर रोज़गार प्राप्त करना ही उनका अन्तरण कहलाता है। यह तभी सम्भव है जब श्रम में पर्याप्त गतिशीलता विद्यमान हो ।

Rediscounting (रीडिस्काउंटिग) **परिपक्वता से पूर्व किसी प्रतिभूति को भुनाना**

जब कभी किसी प्रतिभूति का धारक नियत तिथि से पूर्व रोकड़ या मुद्रा चाहता है तो कोई भी बैंक ,व्यक्ति या वित्तीय संस्था इस पर अंकित मूल्य से कम चुका कर इसे ख़रीद सकती है, तथा परिपक्वता की तिथि पर इस प्रतिभूति को जारी करने वाली संस्था से इसकी पूरी राशि प्राप्त कर सकती है।

Redistribution of income (रीडिस्ट्रिब्यूशन ऑफ इन्कम) **आय का पुनर्वितरण**

सम्पूर्ण समाज या क्षेत्र में यदि आय के वितरण में काफी विषमताएँ व्याप्त हों तो सरकार आय के पुनर्वितरण हेतु नीतियाँ बनाती है : (1) प्रगतिशील कर लगाकर धनी व्यक्तियों से ऊँची दरों से कर (आय कर, सम्पत्ति कर आदि) वसूल किए जाते है। (2) अत्यंत कम आय वाले व्यक्तियों पर एक ओर तो कर का कोई भार नहीं होता, जबकि सब्सिडी आदि देकर उन्हें आय बढ़ाने हेतु पूँजी तथा अन्य साधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इन नीतियों के परिणामस्वरूप कुछ सालों के बाद आय वितरण में व्याप्त विषमता में कमी आ सकती है। धनी व्यक्तियों की आय का कुल आय में हिस्सा कम होता है, जबकि निम्न आय वाले व्यक्तियों का हिस्सा बढ़ जाता है।

Red-lining (रैड लाइनिंग) **निषेध करना**

बैंकों या बीमा कम्पनियों द्वारा विशिष्ट क्षेत्रों में वित्तीय सहायता देने से इंकार करना। बैंकों का इन क्षेत्रों में अनुभव सुखद न हाने के कारणे प्रायः उन्हें इस प्रकार के कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं।

Redundancy (रीडंडैंसी) **कार्यमुक्त होना**

किसी श्रमिक या कर्मचारी की कोई गलती न होने पर भी उसे कार्यमुक्त कर देना। वैधानिक दृष्टि से ऐसी स्थिति में श्रमिक/ कर्मचारी को नियोक्ता से क्षतिपूर्ति प्राप्त करने का पूरा अधिकार है।

Reflation (रीफ्लेशन) **राष्ट्रीय उत्पाद तथा आय में सुधार**

प्रायः मंदी की स्थिति होने पर सरकार ऐसी नीति अपनाती है कि उत्पादन तथा रोज़गार के स्तरों में वृद्धि हो। इसमें मौद्रिक तथा राजकोषीय दोनों प्रकार के उपाय किए जा सकते हैं।

Refusal to supply (रीफ्यूज़ल टू सप्लाई) **माल की बिक्री से इन्कार करना**

कभी–कभी उत्पादक अपनी वस्तु को सभी या कुछ ग्राहकों को बेचने से मना कर देता है। यदि उत्पादक को ऐसा लगता है कि कुछ वितरकों के पास पर्याप्त भंडारण व्यवस्था नहीं है, या वे बिक्री के समय अथवा बाद में उपभोक्ताओं को वांछित सेवाएँ नहीं दे पाएँगे–*जिससे उत्पादक की प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव होगा*– तो वह ऐसे वितरकों को वस्तु की आपूर्ति करने से मना कर सकता है। इसी प्रकार उन वितरकों को भी वस्तु की पूर्ति नहीं की जाती, जो ऐसी वस्तुओं को बेचते हैं,जो इसकी निकट की स्थानापन्न हैं, तथा प्रतिद्वन्द्वी निर्माताओं द्वारा बनाई जा रही हैं।

Regional aid (रीजनल एड) **पिछड़े क्षेत्रों की सहायता**

संघीय या केन्द्रीय सरकार बहुधा ऐसे क्षेत्रों के लिए विशिष्ट सहायता प्रदान करती हैं जो आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े हुए हैं । भारत में सूखा सम्भाव्य क्षेत्रों, जनजाति बाहुल्य वाले क्षेत्रों, पर्वतीय क्षेत्रों, बीहड़ वाले क्षेत्रों आदि के विकास हेतु केन्द्रीय सरकार विशेष रूप से सहायता प्रदान कर रही है।

Regional policy (रीजनल पॉलिसी) **विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से सम्बद्ध नीति**

इस नीति का उद्देश्य आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए भौगोलिक क्षेत्रों के विकास हेतु कार्यक्रम बनाना है जिससे ये क्षेत्र राष्ट्रीय औसत स्तरों के समीप पहुंच सकें। जहां बेरोज़गारी बहुत अधिक है वहां अतिरिक्त रोज़गार के अवसरों का सृजन करना, अथवा जहां गांवों की शहरों से सम्बद्धता नहीं है, वहां सड़कों का विकास करना इस प्रकार की नीति में शामिल है। इस नीति में निम्न प्रावधान हो सकते हैं :

(1) निवेश हेतु पूँजी उपलब्ध कराना,
(2) नए उद्योगों को विशिष्ट क्षेत्रों में स्थापित करने हेतु प्रोत्साहन देना,
(3) सीधे ही ढांचागत विकास की योजना बनाना,
(4) इन क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों को राज्य व केन्द्र सरकार द्वारा रोपित करों में छूट देना।

Regional unemployment (रीजनल अन–एंप्लॉयमेंट) **क्षेत्रीय बेरोज़गारी**

किसी क्षेत्र में स्थापित उद्योगों के बन्द हो जाने की स्थिति में व्याप्त बेरोज़गारी। इसी दृष्टि से प्रायः एक ही क्षेत्र में उद्योंगों को संकेन्द्रण उचित नहीं माना जाता, क्योंकि वहां स्थित इकाइयों के बन्द होने से बेरोज़गारी की समस्या गम्भीर हो जाती है।

Registered unemployed (रजिस्टर्ड अन–एंप्लायड) **पंजीकृत बेरोज़गार**

ऐसे बेरोज़गार व्यक्ति जो पंजीकरण करवाने के पश्चात् सरकार से बेरोज़गारी भत्ता या सामाजिक सुरक्षा के लाभ प्राप्त करते हैं।

भारत में ऐसे कुशल, अर्द्ध–कुशल या अकुशल बेरोज़गारों को पंजीकृत बेरोज़गार माना जाता है, जो रोज़गार एक्सचेंज कार्यालयों में रोज़गार पाने के उद्देश्य से अपना पंजीकरण कराते हैं तथा जिन्हें रोज़गार प्राप्त होने तक वे इसी श्रेणी में रहना चाहते हैं।

Regression analysis (रीग्रेशन एनालिसिस) **प्रतीपगमन विश्लेषण**

सम्बन्धित श्रेणियों में परिलक्षित सम्बन्ध ज्ञात करना। प्रतीपगमन के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि एक श्रेणी (सीरीज़) में परिवर्तन होने पर दूसरी श्रेणी की इकाइयां किस प्रकार प्रभावित होती हैं। इसके आधार पर एक श्रेणी के किसी एक चर को देखकर दूसरी श्रेणी के चर का अनुमानित मूल्य ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, $Y=a+bX$ में यह माना जाता है कि Y एक आश्रित चर है जबकि X एक स्वतंत्र चर है। यदि a तथा b के मूल्य दिए हुए हों तो X के प्रत्येक मूल्य के बदले Y का मूल्य ज्ञात किया जा सकता है। इस समीकरण में b को प्रतीपगमन गुणांक माना जाता है। इसी प्रकार यदि दो या अधिक स्वतंत्र चर हों तब प्रतीपगमन समीकरण का रूप निम्न होगा :

$$Y = a + bX_1 + cX_2 - dX_3$$

इस समीकरण में X_1, X_2 तथा X_3 स्वतंत्र चर हैं जबकि b, c एवं d तीनों के प्रतीपगमन गुणांक है। यहां X_3 का प्रतीपगमन गुणांक ऋणात्मक है जो बतलाया है कि X_3 की एक इकाई में परिवर्तन होने पर Y पर इसका ऋणात्मक प्रभाव होगा।

Regression cofficient (रीग्रेशन कोएफिशिएंट) **प्रतीप-गमन गुणांक**

(देखे regression analysis) ।

Regressive tax (रीग्रेसिव टैक्स) **अवरोही कर**

ऐसा कर *जिसकी दर* में आय /सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि के साथ साथ उत्तरोत्तर कमी होती है। तद्नुसार,धनी व्यक्तियों से निम्न दर पर तथा ग़रीब लोगों से ऊंची दर पर आयकर वसूल किया जाएगा। यही नीति सम्पत्ति कर पर भी लागू होगी।

Regulation (रेगूलेशन) **नियमन, नियंत्रण**

आर्थिक गतिविधि पर सरकार या किसी सरकारी एजेन्सी द्वारा नियंत्रण करना। इनमें कीमतों पर नियंत्रण के द्वारा मुद्रा स्फीति को काबू में रखने से लेकर विनिमय दर पर नियंत्रण शामिल हैं। आयातों पर नियंत्रण, पर्यावरण सम्बन्धी नियमों की अनुपालना में कारखानों पर नियंत्रण, एकाधिकारिक विस्तार को रोकना आदि भी इसमें शामिल हैं।

Regulatory agency (रेगूलेटरी एजेन्सी) **नियंत्रण करने वाली एजेन्सी**

ऐसी संस्था, जो निर्दिष्ट क्षेत्र में सरकारी नीति के अनुरूप किसी आर्थिक गतिविधि को नियंत्रित करती है। अनेक देशों में नगर नियोजन विभाग स्थापित किए गए हैं जो किसी नगर में भवन निर्माण,सड़क निर्माण आदि को नियंत्रित करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न कम्पनियों के विलय को नियंत्रित किया जाता है क्योंकि इससे एकाधिकार को प्रोत्साहन मिलता है। केन्द्रीय बैंक द्वारा साख के विस्तार पर नियंत्रण रखा जाता है।

Relationship banking (रीलेशनशिप बैंकिंग)

ग्राहक-बैंक सम्बन्धों पर आधारित बैंकिंग

बैंक न केवल ग्राहक की पूंजी को जमा करता है तथा उसे ऋण–सुविधा प्रदान करता है, अपितु उसे संकट के समय मार्गदर्शन तथा समर्थन भी देता है। ऐसी मान्यता ली जाती है कि बैंक तथा ग्राहक के बीच दीर्घकाल तक चलने वाले तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहने चाहिए।

Relative income hypothesis (रिलेटिव इन्कम हाइपोथीसिस) **सापेक्ष आय परिकल्पना**

इसके अनुसार समाज में आय वितरण की दृष्टि से किसी व्यक्ति का स्थान उसके द्वारा की जाने वाली बचत को निर्धारित करता है। तद्नुसार, एक धनी समुदाय के बीच रहकर भी कोई व्यक्ति सापेक्ष दृष्टि से निर्धन हो सकता है, अथवा निर्धन समुदाय के बीच एक व्यक्ति सापेक्ष दृष्टि से धनी हो सकता है। प्रथम उदाहरण में धनी लोगों के बीच सापेक्ष दृष्टि से गरीब व्यक्ति अधिक आय उपभोग व्यय करके बचत कम करेगा। इस प्रकार किसी व्यक्ति का उपभोग व्यय इस बात पर निर्भर करता है कि *उसके आस-पास के व्यक्ति क्या कर रहे हैं।*

Relative prices (रीलेटिव प्राइसेज़) **सापेक्ष कीमतें**

एक से अधिक वस्तुओं के उपभोग के सन्दर्भ में व्यक्ति मौद्रिक कीमत की अपेक्षा सापेक्ष कीमतों को अधिक महत्व देता है। उदाहरण के लिए, दो वस्तुओं की कीमतों Px तथा Py में Px=15 व Py=10 हैं। निरपेक्ष रूप में x की कीमत y से अधिक है। परन्तु मान लीजिए Px घट कर 12 रह जाए तो **निरपेक्ष रुप से** X अभी भी महंगी होने के बावजूद उपभोक्ता Y की मात्रा में कमी करके X की अतिरिक्त इकाइयां ख़रीदेगा क्योंकि Px/ Py अब पूर्वापेक्षा कम हो गई है।

Renewable energy (रिन्यूएबल एनर्जी) **पुनर्उपयोग्य ऊर्जा**

ऐसी ऊर्जा, जिसका उत्पादन नाशवान प्राकृतिक साधनों से न किया गया हो। कोयला,खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस आधारित ऊर्जा के उत्पादन में इन साधनों का बार बार उपयोग नहीं किया जा सकता। परन्तु सौर ऊर्जा या पवन ऊर्जा ऐसी ऊर्जा है जिसमें प्राकृतिक साधन नष्ट नहीं होते। अणु-आधारित ऊर्जा भी इसी श्रेणी में आती है।

Renewable resources (रिन्यूएबल रिसोर्सेज़) **पुनर्उपयोग्य संसाधन**

ऐसे संसाधन जो अनवरत रूप से उपयोग में लिए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, सौर ताप या हवा ऐसे साधन हैं जिनसे अनवरत रूप से ऊर्जा बनाई जा सकती है। भू–जल का सतत् रूप से उपयोग किया जा सकता है, बशर्ते जितना जल उपयोग में लिया जाता है उतने ही जल का वर्षा से पुनर्भरण होता रहे।

Rent (रेंट) ***लगान, किराया***

सम्पत्ति के स्वामी को उसकी भूमि, भवन या अन्य सम्पत्ति के उपयोग के बदले नियमित रूप से किया जाने वाला भुगतान। मार्शल ने इसी संदर्भ में आभास

लगान की अवधारणा प्रतिपादित की जिसके अन्तर्गत किसी भी सम्पत्ति की पूर्ति अल्पकाल में कम होने की स्थिति में, उसकी माँग अत्यधिक होने पर उसके लिए प्रतियोगी मूल्य से अधिक कीमत चुकाई जाती है। यह अतिरेक भी एक प्रकार का लगान है जो दीर्घकाल में लुप्त हो जाता है क्योंकि उस साधन या सम्पत्ति की पूर्ति दीर्घकाल में बढ़ सकती है।

Rental payment (रैटल पेमैंन्ट) **किराया**

अल्पकाल के लिए किराए पर ली गई किसी मशीन (साइकल,टी.वी,कुर्सियां, टैंट कंप्यूटर या कोई अन्य उपकरण) का भाड़ा या किराया।

Rent control (रेंट कन्ट्रोल) **किराया नियंत्रण**

किराए पर दी गई सम्पत्ति –विशेष रूप से भूमि या भवन के किराए पर पर सरकार द्वारा रोपित अंकुश या नियंत्रण। इसके अन्तर्गत *किराए दारों को राहत देने के लिए* सरकार अधिकतम सीमा निर्धारित कर देती है। इसके पीछे यह मान्यता ली जाती है कि किराएदार (या काश्तकार) की आर्थिक स्थिति सम्पत्ति के मालिक की तुलना में कमज़ोर होती है।

Rentier (रेन्टियर) **ब्याज़खोर**

ऐसा व्यक्ति जिसकी आय का मुख्य स्रोत प्रतिभूतियों या प्रदत्त ऋणों पर प्राप्त होने वाला ब्याज़ है।

Rent seeking (रेंट सीकिंग) **स्वार्थपूर्ति के प्रयास**

कभी- कभी कोई व्यक्ति उत्पादन प्रक्रिया पर समय तथा पैसा ख़र्च करने की अपेक्षा सरकारी नियमों में परिवर्तन कराने हेतु प्रयासरत रहता है, ताकि उसके प्रतिद्वन्द्वी बाज़ार से बाहर हो जाए।

Repeated game (रिपीटेड गेम) **खेल की पुनरावृत्ति**

ऐसा खेल, जिसके विषय में खिलाड़ियों को पुनरावृत्ति की आशा हो। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि इस खेल के अन्तर्गत प्रतिद्वन्द्वी उनकी सम्भावित रणनीतियों के अनुरूप कोई कदम उठाएँगे। उसी के अनुरूप ये खिलाड़ी अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने हेतु स्वयं की रणनीति का निरूपण करेंगे।

Replacement cost (रिप्लेसमेंट कॉस्ट) **पुनर्स्थापना लागत**

मशीन या किसी अन्य सम्पत्ति को पुनर्स्थापित करने हेतु व्यय की जाने वाली राशि। इस लागत में प्रायः मुद्रा स्फीति जन्य लागत वृद्धि भी शामिल होती है।

Replacement ratio (रिप्लेसमैंट रेशियो) **पुनर्स्थापना अनुपात**

किसी श्रमिक की वर्तमान आय का, उसके काम पर रहते हुए प्राप्त होने वाली आय में अनुपात। यदि उसकी वर्तमान आय पूर्वापेक्षा अधिक है तो उसे नया रोज़गार लेने में कोई रुचि नहीं होगी। विकसित देशों में बेरोज़गारों को मिलने वाला भत्ता उनकी वर्तमान आय है। यदि यह आय पूर्व में प्राप्त हुई आय (बेरोज़गारी भत्तों) से ज़्यादा है तो वे लोग बेरोज़गार रहना ही पसंद करेंगे।

Representative firm (रिप्रज़ेन्टेटिव फर्म) **प्रतिनिधि फर्म**

यदि किसी उद्योग में लगभग एक ही आकार वाली फर्में हैं तथा उनकी उत्पादन तकनीक भी एक जैसी ही है, तो पूरे उद्योग के व्यवहार का अध्ययन किसी भी एक फर्म के व्यवहार को देख कर किया जा सकता है। इस फर्म को प्रतिनिधि फर्म कहते हैं।

Repressed inflation (रीप्रस्ड इंफ्लेशन) **नियंत्रित स्फीति**

ऐसी स्थिति, जिसमें सरकारी नियंत्रण के माध्यम से कीमतों तथा मज़दूरी की वृद्धि को रोका जाता है । ऐसी दशा में नियंत्रण हटते ही कीमतों तथा मज़दूी की दरों में विस्फोटक रूप में वृद्धि होने की आशंका रहती है।

Reputational policy (रेपूटेशनल पॉलिसी) **प्रतिष्ठात्मक नीति**

एक ऐसी नीति, जिसके अन्तर्गत नीति निर्माता की प्रमाणिकता के विषय में अन्य व्यक्तियों की धारणा महत्वपूर्ण होती है। उदाहरण के लिए, सरकार यह वादा करती है कि वह कीमतों पर नियंत्रण करने हेतु प्रभावी नीति बना चुकी है, लेकिन वस्तुतः मुद्रा की पूर्ति में अत्यन्त थोड़ी-थोड़ी कमी की जाती है। इसके फलस्वरूप कीमतों में प्रभावी ढंग से कमी न हो पाने के कारण व्यापारी तथा उपभोक्ता सरकार की स्फीति विषयक नीति को *विश्वसनीय नहीं मान पाते।* संक्षेप में, जितनी प्रभावी नीति मानी जाती है, उसके उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उतने ही प्रभावी तरीके भी अपनाए जाने चाहिए ,तभी नीति बनाने वाले की विश्वसनीयता कायम रह पाएगी।

Required rate of return (रीक्वायर्ड रेट ऑफ रिटर्न) **प्रतिफल की वांछित दर**

निवेश पर चाही गई न्यूनतम प्रतिफल की दर जो व्यवसाय में इसे स्वीकार्य बनाती हो। प्रायः प्रतिफल की दर निवेशित पूँजी की ब्याज़ दर से अधिक होनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम उठाने का प्रतिफल भी वांछित रहता है।

Resale price maintenance (rpm) (रीसेल प्राइस मेंटीनेंस) **पुनः बिक्री की कीमत**

यदि पूर्तिकर्ता ऐसी कीमत तय करता है जिस पर खुदरा व्यापारियों को अपनी वस्तु बेचनी है तो इसे पुनः बिक्री की कीमत कहा जाता है। ऐसी बिक्री से खुदरा व्यापारियों की *पारस्परिक स्पर्द्धा* को रोका जा सकता है। परन्तु खुदरा मार्जिन एक जैसे होने से अदक्ष खुदरा व्यापारी भी अस्तित्व में बने रहते हैं, और इसीलिए इस प्रकार की कीमत नीति को अनुचित माना जाता है।

Rescheduling of debt (रीशिड्यूलिंग ऑफ डैट)

ऋण के प्रसंविदे में संशोधन करना

जिनके अनुसार ब्याज़ अथवा अदायगी की किश्तों को आगे की तिथियों तक स्थगित कर दिया जाता है। यह सुविधा प्रायः कम आय वाले व्यक्तियों तथा विकासशील देशों को प्रायः दी जाती है।

Research and development (R&D) (रिसर्च एवं डेवलपमैंट)
नए ज्ञान को विकसित करने हेतु साधनों का आवंटन करना। (देखें R&D)

Reserve asset ratio (रिज़र्व एसेट रेशियो) **बैंको की कुल रिज़र्व सम्पत्ति में न्यूनतम तरलता अनुपात**
ग्राहकों की दैनिक आवश्यकताओं तथा अन्य दायित्वों के निर्वाह हेतु केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित न्यूनतम अनुपात, जिसे बैंकों द्वारा अपनी सम्पत्ति के अनुरूप नगद रूप में रखना होता है। यह नगद राशि प्रायः बैंकों की प्रतिष्ठा को बचाने में सहायक होती है।

Reserve currency (रिज़र्व करेन्सी) **विदेशी विनिमय कोष हेतु प्रयुक्त करेन्सी**
इस करेन्सी की स्वीकार्यता हेतु इसका परिवर्तनशील होना आवश्यक है।

Reserves ratio (रिज़र्व रेशियो) **रिज़र्व अनुपात**
बैंकों की कुल सम्पत्ति में तरलता अनुपात। (देखें reserve asset ratio)

Reserves (रिजर्व्स) **रिज़र्व कोष**

(1) किसी कम्पनी के शेयरधारियों के लिए कम्पनी के तलपट में दर्शायी गई ऐसी राशि जो सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि की प्रतीक है।

(2) बैंकों की सम्पत्ति का तरल भाग।

(3) विभिन्न देशों द्वारा भुगतान संतुलन के घाटे की पूर्ति हेतु रखी गई विदेशी मुद्राएँ।

Residual (रेज़ीड्युअल) **त्रुटि**
प्रतीपगमन विश्लेषण में प्रायः एक "त्रुटि" चर या अवशिष्ट प्राचल को जोड़कर इसका समीकरण प्रस्तुत किया जाता है। अनेक बार प्रतीपगमन के मॉडल में सभी स्वतंत्र चर शामिल नहीं किए जाते, परन्तु जिन्हें शामिल किया जाता है *उनके परिवर्तन आश्रित चर के सभी परिवर्तनों को दर्शाने में पर्याप्त नहीं होते।* कभी- कभी माप अथवा चरों में ही त्रुटि रह जाती है तो कभी चरों के बीच विद्यमान सम्बन्धों में शतप्रतिशत एकाग्रता नहीं आ पाती। इसीलिए प्रतीपगमन समीकरण में एक अवशिष्ट प्राचल या " त्रुटि " को प्रविष्ट कर देते हैं। नीचे एक समीकरण प्रस्तुत किया गया है :

$$Y=a+bX_1+cX_2+U$$

इस समीकरण में u "त्रुटि" का प्रतीक है जो X_1, X_2 आदि स्वतंत्र चरों के अलावा शेष सभी चरों के Y पर होने वाले प्रभाव को व्यक्त करता है।

Resource allocation (रीसोर्स एलोकेशन) **साधनों का आवंटन**
किसी देश या फर्म के पास उपलब्ध संसाधनों को उपभोक्ताओं की माँग के अनुरूप विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन हेतु आवंटित करना। साधनों का आवंटन उस दशा में इष्टतम माना जाता है जब निर्दिष्ट वस्तु के उत्पादन हेतु इनका संयोग **न्यूनतम लागत वाला** हो।

Restraint of trade (रेस्ट्रेंट ऑफ ट्रेड) **व्यापार पर रोक**

किसी प्रसंविदा में वर्णित वह शर्त जो किसी व्यक्ति को व्यवसाय करने या इसे जारी रखने पर रोक लगाती हो। उदाहरण के लिए, किसी फर्म को बेचने के प्रसंविदे में यह शर्त लगाई जा सकती है कि विक्रेता कभी भी फर्म के क्रेता से व्यापार में प्रतिस्पर्द्धा नहीं करेगा। प्रायः वैधानिक दृष्टि से ऐसी शर्त ग़लत मानी जाती है।

Restrictive practices (रेस्ट्रिक्टिव प्रेक्टिसेज) **निषेधात्मक क्रियाएँ**

(1) ऐसी क्रियाएँ जो फर्मों को अपनी वस्तुएँ बेचने या इनपुट्स ख़रीदने में स्वतंत्र स्पर्द्धा करने से रोकती हैं। इनमें विभिन्न क्रेताओं या आपूर्ति करने वालों के बीच भेदभाव करना शामिल है। इसी के अन्तर्गत वस्तुओं की प्रकृति या भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार बाज़ार का वर्गीकरण करना भी शामिल है।

(2) ऐसे कार्य जिनसे श्रम के इष्टतम प्रयोग में अवरोध उत्पन्न होता है। प्रायः श्रमिक संघों के दबाव के कारण यह अवरोध उत्पन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक श्रमिक संघ किसी कार्य के लिए आवश्यकता से अधिक लोगों को रोज़गार देने पर ज़ोर दे सकता है

Restrictive trade agreement (रेस्ट्रिक्टिव ट्रेड एग्रीमेंट)

निषेधात्मक व्यापार समझौता

आपूर्तिकर्ताओं के बीच ऐसा गठबन्धन, जिसके अन्तर्गत उनके बीच विद्यमान स्पर्द्धा आंशिक या पूर्ण रूप से समाप्त कर दी जाती है। प्रायः इस समझौते के अन्तर्गत समान कीमत निर्धरित करने,समान रूप से डिस्काउंट देने, बाज़ार का विभाजन करना, आदि शामिल होते हैं।

Retail banking (रिटेल बैंकिंग) **खुदरा बैंकिंग**

इस व्यवस्था के अन्तर्गत बैंक आम जनता के लिए कार्य करते हैं। छोटे जमाकर्ताओं से निक्षेप स्वीकार करना तथा छोटे व्यापारियों को ऋण प्रदान करना इसमें शामिल हैं। यह थोक बैंकिंग से इस अर्थ में भिन्न है कि उसमें बड़े जमाकर्ताओं तथा बड़ें व्यापारों के साथ ही बैंकों का लेन देन होता है।

Retail price index (रीटेल प्राइस इन्डेक्स) **खुदरा मूल्य सूचकांक**

आम उपभोक्ताओं के काम में आने वाली वस्तुओं की कीमतों पर आधारित सूचकांक। भारत में कृषि मज़दूरों के लिए चयनित वस्तुओं की खुदरा कीमतों के आधार पर ये सूचकांक तैयार किए जाते हैं। इसी प्रकार चयनित शहरों में श्रमिकों के लिए जीवन निर्वाह व्यय के सूचकांक खुदरा कीमतों के आधार पर निरूपित किए जाते हैं।

Retail outlets (रीटेल आउटलेट्स) **खुदरा दूकानें**

इन दूकानों पर सीधे उपभोक्ताओं को वस्तुएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। ये दूकानें डिपार्टमेंटल स्टोर से लेकर एक थड़ी के रूप में हो सकती हैं, परन्तु प्रायः इनमें थोड़ी मात्रा में ही उपभोक्ता वस्तुएँ खरीदते हैं।

Retail sales (रीटेल सेल्स) **खुदरा बिक्री**

उपभोग व्यय का वह भाग जो खुदरा व्यापारियों के पास पहुंचता है। इनमें केवल वस्तुओं की ख़रीद को ही शामिल किया जाता है।

Retained profits (रीटेन्ड प्रॉफिट्स) **रोका गया लाभ; अवितरित लाभ**

कम्पनी द्वारा करों के भुगतान के पश्चात् शेष रहे लाभ का वह हिस्सा जिसे पुनः व्यवसाय में निवेश कर दिया जाता है। अन्य शब्दों में,कर चुकाने के बाद शेष समूचा लाभ कम्पनी द्वारा लाभांश के रूप में वितरित नहीं किया जाता, अपितु एक अंश को रोककर उसको कम्पनी द्वारा उपयोग में ले लिया जाता है।

Retatiation (रीटेलिएशन) **प्रतिशोध**

किसी अन्य फर्म या देश की क्रियाओं के लिए उसे दंडित करना या प्रतिशोध लेना। यदि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक देश दूसरे देश की वस्तुओं पर 100 प्रतिशत आयात कर लगाता है तो दूसरा देश बदले में पहले देश की वस्तुओं पर मात्रात्मक प्रतिबन्ध लगा सकता है। इसी प्रकार, एक फर्म अपनी कीमत नीति के माध्यम से दूसरी फर्म को हानि पहुंचाना चाहती है तो वह फर्म व्यापक स्तर पर प्रतिशोधात्मक नीति अपना सकती है।

Return on capital employed (रीटर्न ऑन केपीटल एम्प्लायड)

निवेशित पूँजी पर प्राप्त प्रतिफल

फर्म को प्राप्त लाभ उसकी पूँजी का कितना प्रतिशत है, इसका लेखा जोखा। पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में निवेशित पूँजी पर प्राप्त प्रतिफल के आधार पर यह देखा जाता है कि फर्म सामान्य लाभ अर्जित कर रही है या इससे अधिक।

Returns to scale (रिटर्न्स टू स्केल) **पैमाने के प्रतिफल**

उत्पादन के सभी साधनों (इनपुट्स) के आनुपातिक परिवर्तन की तुलना में उत्पादन की मात्रा में होने वाला आनुपातिक परिवर्तन। मान लीजिए, उत्पादन के सभी साधनों में 100 प्रतिशत की वृद्धि की जाती है और इसके फलस्वरूप उत्पादन में 150 प्रतिशत वृद्धि होती है, तो यह स्थिति पैमाने के वर्द्धमान प्रतिफल की होगी। यदि उत्पादन में 80 प्रतिशत वृद्धि हो तो यह एक पैमाने के ह्रासमान प्रतिफल का उदाहरण होगा, जबकि साधनों के 100 प्रतिशत परिवर्तन की तुलना में उत्पादन भी 100 प्रतिशत बढ़ता है तो इसे पैमाने का समतामान प्रतिफल कहा जाएगा। पैमाने का प्रतिफल जांचने के लिए निम्न सूत्र प्रयोग में लिया जाता है:

$$r^* \text{ (पैमाने का प्रतिफल)} = \frac{\text{उत्पादन में प्रतिशत वृद्धि}}{\text{साधनों की मात्रा में प्रतिशत वृद्धि}}$$

Returns to the variable factor (रीटर्न्स टू दी वेरिएबल फैक्टर)

परिर्वनशील साधन का प्रतिफल

यदि अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए उत्पादन के एक साधन में वृद्धि की जाए, तथा इसके फलस्वरूप उत्पादन में भी उसी अनुपात में वृद्धि हो जाए तो इसे समतामान प्रतिफल कहा जाता है। यदि उत्पादन में होने वाली वृद्धि साधन की मात्रा में होने वाली वृद्धि से कम हो तो यह ह्रासमान प्रतिफल कहलाएगा। इसके विपरीत यदि उत्पादन की वृद्धि साधन की मात्रा में हुई वृद्धि से अधिक हो तो यह वर्द्धमान प्रतिफल का उदाहरण होगा। इस प्रकार,परिवर्तनशील साधन के प्रतिफल को जानने हेतु *साधन की मात्रा में हुए प्रतिशत परिवर्तन की तुलना उत्पादन में हुए प्रतिशत परिवर्तन* से की जाएगी।

रेखाचित्रीय रूप में, साधन के प्रतिफल को जानने हेतु साधन के सीमान्त उत्पादन (MP) की तुलना औसत उत्पादन (AP) की जाती है।
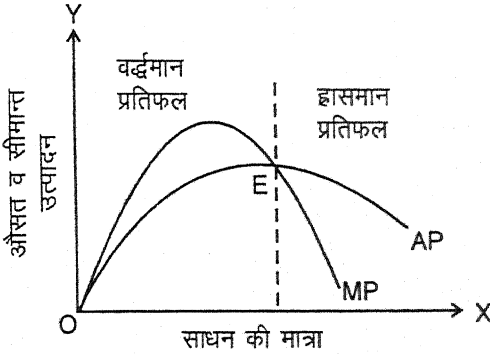
इसके लिए निम्न सूत्र प्रयुक्त किया जाता है

साधन का प्रतिफल (k):

$$k = \frac{MP}{AP}$$

उपरोक्त चित्र में OE तक वर्द्धमान प्रतिफल प्राप्त होता है, जब कि इसके बाद ह्रासमान प्रतिफल प्राप्त होगा। E बिन्दु पर MP= AP है, अतः समतामान प्रतिफल प्राप्त होगा।

Revaluation (रीवेल्युएशन) **पुनर्मूल्यांकन**

(1) मुद्रा स्फीति के कारण किसी व्यक्ति या फर्म की सम्पत्तियों का मूल्य बढ़ने पर इनका पुनर्मूल्यांकन किया जाता है।

(2) स्थिर विनिमय दर के चलते जब अन्य मुद्राओं की तुलना में किसी देश की मुद्रा का मूल्य बढ़ा दिया जाए तो यह भी पुनर्मूल्यांकन कहलाता है। उदाहरण के लिए यदि $1=45 रु. हो तथा इसे बदलकर $1=40 रु. कर दिया जाए तो यह रु का पुनर्मूल्यांकन कहलाएगा क्योंकि डालर की तुलना में रु. महंगा हो गया है, अथवा डालर अपेक्षाकृत सस्ता हो गया है।

Revealed preference (रिवील्ड प्रीफ्रेंस) **प्रगट अधिमान**

उपभोक्ता के ऋणात्मक ढलानयुक्त माँग वक्र की वैकल्पिक व्याख्या, जिसके अनुसार दी हुई परिस्थितियों में उपभोक्ता अपनी प्राथमिकता को व्यक्त करता है। उपभोक्ता दो संयोगों में से एक को पसन्द करता है क्योंकि यह उसकी पसन्द है। यदि किसी एक वस्तु की कीमत कम हो जाए तो उसकी प्राथमिकता या उसका अधिभान बदल जाएगा।
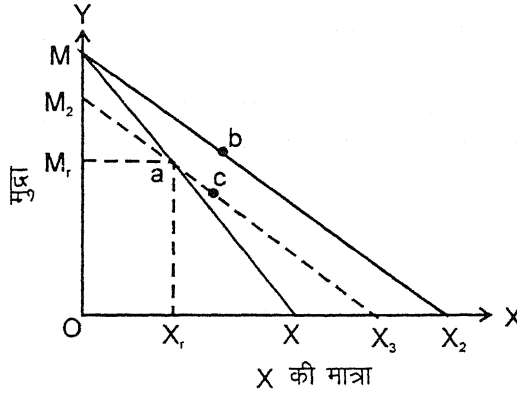
मूल बजट रेखा MX पर उपभोक्ता ने a बिन्दु के लिए अपना अधिभान व्यक्त किया था, क्योंकि उसे वही उपभोग स्तर (OX_r) पसन्द था। यदि X की कीमत कम हो जाए तो उपभोक्ता MX_2 बजट रेखा b पर आना चाहेगा क्योंकि अब X सस्ती वस्तु है। परन्तु a से b पर आने हेतु उसे प्रतिस्थापन प्रभाव (M_2X_3 पर c बिन्दु) तथा आय प्रभाव (c से b बिन्दु तक) दोनों की अनुभूति होती है। अन्य शब्दों में, X की कीमत कम होने पर **उसकी प्राथमिकता का क्रम बदल जाता है:** ($b>c>a$) । अन्य शब्दों में, उपभोक्ता का अधिभान X की निर्दिष्ट मात्रा के लिए दो कारणों से व्यक्त होता है: प्रथम, इसलिए कि वह उसे पसन्द करता है,और द्वितीय इसलिए कि वह सस्ती है। इस दृष्टि से, $c > a$ है, यानी c को a की अपेक्षा अधिक पसन्द किया जाएगा।

Revenue (रिवेन्यू) **आगम; प्राप्तियाँ**

(1) फर्म को वस्तु की बिक्री से प्राप्त कुल राशि यदि कुल आगम में वस्तु की मात्रा से भाग दिया जाए तो औसत आगम (AR) या कीमत ज्ञात हो जाएगी। यदि मात्रा की वृद्धि से कुल आगम की वृद्धि में भाग दिया जाए तो सीमान्त आगम या MR प्राप्त होगा । अस्तु,

$$TR = P \times Q \; ; \; AR = \frac{TR}{Q} \; ; \; MR = \frac{dTR}{dQ}$$

(2) रेवेन्यू का दूसरा अर्थ है सरकार को करों से प्राप्त राजस्व। इसमें प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों प्रकार के कर शामिल हैं।

Reverse take over (रिवर्स टेक ओवर) **छोटी कम्पनी में बड़ी कम्पनी का विलय**

ऐसी स्थिति, जिसमें एक छोटी परन्तु प्रगतिशील कम्पनी एक बड़ी लेकिन अ–प्रगतिशील कम्पनी को ख़रीद लेती है। ऐसी दशा में छोटी कम्पनी स्थिर ब्याज़ वाली प्रतिभूतियों का निर्गम करके आवश्यक पूँजी जुटाती है।

Reverse yield gap (रिवर्स यील्ड गैप)

शेयरों पर प्राप्त प्रतिफल की अपेक्षा प्रथम श्रेणी की प्रतिभूतियों पर प्राप्त प्रतिफल का आधिक्य

प्रायः ऐसा मुद्रा-स्फीति के दौरान होता है जब शेयरों के मूल्य बढ़ने से उन पर पूँजीगत लाभ मिलते हैं जबकि प्रतिभूतियों के संदर्भ में ऐसा नहीं होता। स्थिर मूल्य स्तर के दौरान प्रतिफल का यह अन्तर धनात्मक होता है, तथा शेयरों पर प्रतिफल बढ़ाना आवश्यक होता है ताकि शेयरधारियों को उनकी सापेक्ष जोखिम की क्षतिपूर्ति मिल सके।

Revised sequence (रिवाइज्ड सीक्वेंस) **उल्टा क्रम**

ऐसा तब होता है जब उपभोक्ताओं की माँग के उदासीन रवैये या निष्क्रिय प्रत्युत्तर की अपेक्षा पूर्तिकर्ता इस बात का सक्रिय रूप से निर्धारण करते हैं कि उपभोक्ताओं को क्या बेचा जाएगा। यह विश्लेषण जॉन केनथ गॉलब्रेथ ने प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा कि आज के युग में **उपभोक्ता की शक्ति सार्वभौमिक नहीं है** क्योंकि आज विशालकाय एकाधिकारिक तथा अल्पाधिकारिक विक्रेता नए उत्पादों तथा विज्ञापन के माध्यम से उपभोक्ताओं की रुचि को प्रभावित करने में सक्षम हैं।

Ricardo, David (1772-1823) (डेविड रिकार्डो)

संस्थापक विचारधारा के एक महत्वपूर्ण अर्थशास्त्री

रिकार्डो ने उत्पादन ह्रास नियम, श्रम के मूल्य सिद्धान्त, वितरण के सिद्धान्त आदि की व्याख्या की। रिकार्डो ने लगान की उत्पत्ति की विस्तृत समीक्षा की, तथा कहा कि आर्थिक प्रगति से सर्वाधिक लाभ भू–स्वामियों को होता है।

Ridge lines (रिज लाइंस) **रिज रेखाएँ**

उत्पादन के दो साधनों के आधार पर निरूपित समोत्पाद वक्रों पर स्थित वे बिन्दु-पथ जहां श्रम या पूँजी की सीमान्त उत्पादकता शून्य है तथा इसके आगे भी साध ान का प्रयोग करने पर इसकी सीमान्त उत्पादकता ऋणात्मक हो जाती है।
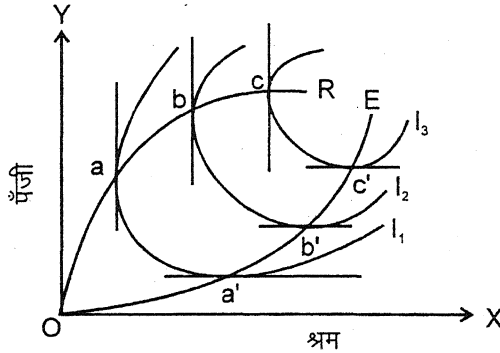
उपरोक्त चित्र में तीन समोत्पाद वक्र I_1, I_2 तथा I_3 दिए गए हैं। प्रत्येक समोत्पाद वक्र का ढलान $\frac{MP_L}{MP_K}$ के समान होता है। तदनुसार a', b' तथा c' बिन्दुओं पर समोत्पाद वक्रों का ढलान शून्य है, यानी श्रम की सीमान्त उत्पादकता इन बिन्दुओं पर शून्य है। इनको मिलाने पर OE रिज रेखा प्राप्त होती है जिसके प्रत्येक बिन्दु पर श्रम की सीमांत उत्पादकता शून्य, तथा **जिसके बाहर श्रम की सीमान्त उत्पादकता ऋणात्मक है।**

इसके विपरीत a, b तथा c पर समोत्पाद वक्रों का ढलान अनन्त है $\left(\frac{MP_L}{MP_K}=\infty\right)$ जो तभी हो सकता है जब पूँजी की सीमान्त उत्पादकता शून्य हो । अस्तु OR वह रिज रेखा है जिसके प्रत्येक बिन्दु पर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता शून्य है। इसके बाहर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता ऋणात्मक होगी। संक्षेप में, *दोनों साधनों के विवेकशील उपयोग का क्षेत्र OR तथा OE रिज रेखाओं के मध्य का होगा।*

Rights issue (राइट्स इश्यू) **नए शेयरों का अधिकारिक निर्गम**

जब नए शेयर निर्गमित करते समय पहले मौजूदा शेयरधारियों को उनकी शेयर *पूँजी के अनुपात में शेयर ख़रीदने का प्रस्ताव* दिया जाता है तो इसे अधिकारिक निर्गम कहा जाता है। प्रायः इन नए शेयरों का मूल्य उनके बाज़ार मूल्य से कम रखा जाता है जिससे इनकी बिक्री आसान हो जाती है। यदि मौजूदा शेयरधारी कम्पनी के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते तो फिर इन्हें आम जनता को बेचा जा सकता है।

Risk (रिस्क) **जोखिम**

किसी कार्य का प्रतिफल अनिश्चित ही नहीं होता, अपितु इसका मूल्य कुछ भी हो सकता है। *जोखिम एक प्रकार की अनिश्चितता है* जहां कार्य का प्रतिफल अनिश्चित् होने पर (जैसे कि लाटरी पर घोषित ईनाम) सम्भावित प्रतिफलों में एक दैव ड्रॉ के आधार पर इसे अनुमानित किया जाता है जिसका मूल्य ज्ञात है। विभिन्न सम्भावित प्रतिफलों का प्रसरण प्रायः जोखिम का माप होता है।

प्रायः कोई भी उद्यमी निवेश करते समय सम्भावित प्रतिफल से अनभिज्ञ रहने के बावजूद उपक्रम को प्रारम्भ करता है। इसीलिए उस उपक्रम से *लाभ होने पर इसे जोखिम उठाने का पुरस्कार माना जाता है।*

Risk adjusted return on capital (RAROC)
(रिस्क एड्जस्टेड रिटर्न ऑन केपीटल) **जोखिम आधारित पूँजी पर प्रतिफल**
विभिन्न प्रकार के प्रस्तावित निवेशों पर प्राप्त प्रतिफलों की जोखिम के आधार पर तुलना करना। वास्तविक प्रतिफल को यह देखकर समायोजित किया जाता है कि सम्पत्तियों की प्राप्ति में कितनी जोखिम है। इसमें अधिक जोखिम युक्त सम्पत्ति के वास्तविक प्रतिफल को समायोजन के समय कम कर दिया जाता है। सम्पत्तियों की जोखिम को कितना सही रूप में अनुमानित किया जाता है, यह जोखिम आधारित पूँजी के प्रतिफल की उपादेयता को निर्धारित करेगा।

Risk averse (डिस्क एवर्स) **जोखिम से बचना**
प्रायः कुछ निवेशक सुरक्षित प्रतिफल चाहते हैं भले ही वे अपेक्षाकृत कम हों । इस प्रकार के व्यक्ति प्रतिफल में न्यूनतम प्रसरण चाहते हैं, तथा चाहते हैं कि जो भी पूँजी निवेश की जाए उसके प्रतिफल में अधिकतम निश्चितता या *कम से कम जोखिम हो।*

Risk bearing (रिस्क बीयरिंग) **जोखिम उठाना**
यदि, किसी परियोजना में निहित मान्याताएँ गलत हो जाएँ तो उसकी जिम्मेदारी लेना। प्रत्याशित प्रतिफल कितने ही लुभावने क्यों न हों, प्रत्येक परियोजना में हानि होने की आशंका रहती है। जोखिम उठाने वालों में निजी फर्मों के उद्यमी या किसी कम्पनी के शेयरधारी दोनों ही हो सकते हैं। यदि परियोजना से काफी अधिक हानि होने की आशंका हो, तो फर्म से जुड़े अन्य व्यक्तियों को ऋण दाता, कर अधिकारी, ग्राहक, प्रबन्धक,श्रमिक आदि भी जोखिम उठानी पड़ती है ।

Risk capital (रिस्क केपीटल) **जोखिम युक्त पूँजी**
पूँजी निवेश करने वाले जब नए उपक्रमों एवं अनजानी परियोजनाओं में निवेश करना चाहते हैं तो यह संभावना रहती है कि वे इसे खो देंगे। ये निवेशक यह सोचकर जोखिम उठा लेते हैं कि कुछ क्षेत्रों में उन्हें भारी मुनाफा होगा, तथा कहीं कहीं काफी नुकसान होने पर भी औसत प्रतिफल धनात्मक रहने वाला है।

Risk free security (रिस्क फ्री सीक्योरिटी) **जोखिम रहित प्रतिभूति**
ऐसी प्रतिभूति, जिसमें निवेश करना किसी भी प्रकार से जोखिमपूर्ण नहीं है। प्रायः इसमें सरकारी बाण्ड शामिल होते हैं जिन्हें उसका धारक कभी भी अंकित मूल्य पर या इससे कुछ कम मूल्य पर भुना सकता है।

Risk loving (रिस्क लविंग) **जोखिम को पसन्द करना**
ऐसी परियोजना में निवेश करना, जिसमें अन्य परियोजनाओं की तुलना में समान प्रतिफल होने पर भी उनमें काफी अन्तर हो।

Risk neutral (रिस्क न्यूट्रल)
प्रत्याशित प्रतिफलों के अन्तर के प्रति उदासीनता दिखाना
ऐसा व्यक्ति, जिसके लिए समस्त सम्पत्ति की सीमान्त उपयोगिता एक जैसी हो,किसी परियोजना के केवल औसत प्रतिफल में रुचि दिखाता है, न कि इनके वितरण में।

Risk poolling (रिस्क पूलिंग)
दो ऐसी जोखिमपूर्ण परियोजनाओं को मिलाना, जिनके प्रतिफल अनिश्चित् होने पर भी पूर्णतया असम्बद्ध हैं। इन परियोजनाओं के अपेक्षित प्रतिफलों में उन परियोजनाओं की तुलना में अपकिरण कम होता है जिन्हें पृथक्- पृथक् रूप में देखा जाता है।

Risk premium (रिस्क प्रीमियम) **अतिरिक्त प्रतिफल**
निवेश पर प्राप्त अतिरिक्त प्रतिफल जो व्यसाय चलाने वाले निवेश के असफल होने की स्थिति से उत्पन्न क्षति के अलावा चाहते हैं। सरकारी प्रतिभूति में अपेक्षाकृत कम जोखिम है क्योंकि इसकी अदायगी सरकार करेगी, और इसीलिए इस पर प्रतिफल भी कम होता है। इसके विपरीत एक नए उद्योग या छोटी, परन्तु नई फर्म में पूँजी लगाना काफी जोखिमपूर्ण होता है, तथा निवेशकों की समूची या आंशिक पूँजी डूबने का ख़तरा बना रहता है, भले ही उसमें प्रतिफल की सम्भावना भी अधिक रहती हो।

Risk sharing (रिस्क शेयरिंग) **जोखिम का बँटवारा**
ऐसे प्रसंविदे, जिनके अनुसार किसी कार्य में निहित जोखिम को आंशिक रूप से अन्य व्यक्ति या संस्था पर अन्तरित किया जा सकता है। मान लीजिए, एक फर्म किसी जोखिम पूर्ण परियोजना में निवेश करना चाहती है। यदि समूची पूँजी स्वयं लगाए तो सारी जोखिम उसी फर्म को वहन करनी होगी। यदि वह शेयरों का निर्गम करके या भागीदारी के आधार पर किसी अनुपात में बाहर से पूँजी प्राप्त करती है तो उस सीमा तक जोखिम का निर्वहन बाहरी व्यक्तियों को करना होगा।

Risk taking (रिस्क टेकिंग) **जोखिम उठाना**
एक सुरक्षित निवेश का वैकल्पिक अवसर उपलब्ध होने पर भी कोई व्यक्ति किसी जोखिम पूर्ण उपक्रम में निवेश करना चाहता है। उदाहरण के लिए, किसी अन्य व्यक्ति या फर्म के लिए कार्य करने की अपेक्षा कोई व्यक्ति स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ कर सकता है।

River pollution (रिवर पोलूशन) **नदियों को प्रदूषित करना**
बहुधा मलमूत्र एवं औद्योगिक तथा कृषि जन्य फालतू उत्पादों को नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है। इससे जहां एक ओर पौधें व मछलियों के अस्तित्व को ख़तरा उत्पन्न हो जाता है, वहीं दूसरी ओर पानी में गंदगी मिल जाने से वह पीने योग्य नहीं रह जाता। भारत की प्रमुख नदियों –गंगा, यमुना, चम्बल, गोदावरी आदि को व्यापक रूप में प्रदूषित किया गया है।

Robinson, Joan (1903- 1983) (जोन रॉबिन्सन) **एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री**
जिन्होंने अपनी पुस्तक " दी इकोनोमिक्स ऑफ इंपर्फेक्ट कॉम्पीटीशन" (1933) में बतलाया कि वस्तुएँ समरूपी होने पर भी बाज़ार में कुछ अपूर्णताएँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनके कारण उपभोक्ताओं की पसन्द अलग अलग विक्रेताओं के लिए विकसित होती है। उदाहरण के लिए, बिक्री कौशल, वस्तु की बिक्री के बाद दी जाने वाली सुविधाएं, वाहन पार्किंग, वस्तु को घर तक पहुंचाने की सुविधा या साख पर वस्तु की बिक्री आदि के संदर्भ में विक्रेताओं का दृष्टिकोण अलग अलग होता है। इसके फ़लस्वरूप क्रेताओं की पसन्द भी अलग अलग होती है, तथा उसी के अनुरूप सभी विक्रेता एक ही कीमत पर वस्तु को नहीं बेचते। जैसा कि सर्वविदित है, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत वस्तुएँ व सुविधाएँ समरूपी होती हैं, एवं तदनुसार समूचे बाज़ार में वस्तु एक ही कीमत पर बेची जाती है।

Robustness of policies (रोबस्टनेस ऑफ पॉलिसीज़)
आर्थिक नीतियों का वह गुण, जो निहित मॉडल की विशिष्टताओं के अनुरूप नीतियों को प्रस्तुत नहीं करता । प्रायः किसी नीति के प्रभावों का पूर्वानुमान आर्थिक सिद्धान्तों, अर्थमितीय मॉडल या दोनों के मिश्रित रूप को दखकर किया जाता है। यदि हमें मॉडल की विश्वसनीयता पर संदेह है, तो आर्थिक नीति के प्रभावों के विषय में भी हम निश्चित् तौर पर कुछ नहीं बतला सकते।

Roll- over of loans (रॉल ओवर ऑफ लोन्स) **ऋणों का नवीनीकरण**
भुगतान की अवधि आने पर ऋणी को इस बात की छूट देना कि वह ऋण का नवीनीकरण कर सकता है। प्रायः ऋणदाता इस बात से आश्वस्त होना चाहता है कि ऋण की राशि का उपयोग लाभप्रद सौदों के लिए किया जा रहा है, तथा इस कारण इसके नवीनीकरण में उसे कोई जोखिम नहीं दिखाई देती।

Rounding error (राउंडिंग एरर) **पूर्णांकों हेतु त्रुटि की प्रविष्टि**
जब संख्याओं को न्यूनतम दशमलव बिन्दु तक प्रस्तुत किया जाता है तो प्रायः इस प्रक्रिया (जोड़ने या घटाने) में कहीं त्रुटि रह जाती है। यदि सभी संख्याओं को पूर्णांक के रूप में प्रस्तुत किया जाए तो यह त्रुटि और अधिक या कम हो सकती है।

Royalty (रॉयल्टी) **रॉयल्टी**
खान के मालिकों को खनन करने वालों द्वारा नियमित रूप से दिया जाने वाला भुगतान। प्रायः खानों का स्वामित्व सरकार में निहित होता है। इसी प्रकार पुस्तकों के लेखकों को प्रकाशक रॉयल्टी का भुगतान करते हैं।

Rules-based policy (रूल्स बेस्ड पॉलिसी) **नियम-आधारित नीति**
ऐसी नीति जो पूर्ण-निर्धारित या प्रकाशित नियमों के अनुरूप क्रियान्वित की जाती है। यह उस नीति से सर्वथा भिन्न है जिसका कोई आधार नहीं है तथा जिसकी क्रियान्विति नीति निर्धारकों की इच्छानुसार की जाती है।

Rules of origin (रूल्स ऑफ ओरीजिन) **उद्गम से सम्बद्ध नियम**

मुक्त व्यापार क्षेत्र के सदस्य देशों के पारस्परिक व्यापार हेतु निर्धारित नियम।

Rules of the game (रूल्स ऑफ दी गेम) **स्वर्णमान से सम्बद्ध नियम**

जो देश स्वर्ण कोष में कमी अनुभव करते हैं, वे ब्याज़ की दरों तथा मुद्रा की मात्रा में कटौती करते हैं। जहां स्वर्ण काषों में वृद्धि होती है उन देशों में मुद्रा की मात्रा तथा ब्याज़ की दरों में वृद्धि की जाती है ऐसी अपेक्षा की जाती है कि इससे शीघ्र ही साम्य स्थिति पुनः स्थापित हो जाएगी।

Rybczynski theorem (रिबज़िंस्की थ्योरम)

एक साधन में वृद्धि पर आधारित विकास की प्रमेय

रिबज़िंस्की ने दो वस्तुओं व दो साधनों का मॉडल लेकर पैमाने के स्थिर मान प्रतिफल की मान्यता ली, तथा बतलाया कि एक साधन की मात्रा में वृद्धि (अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए) के द्वारा आर्थिक विकास किया जा सकता है। उन्होंने यह भी मान्यता ली कि साधनों की कीमतें स्थिर रहती हैं, तथा स्थिर साधनों की अपेक्षा परिर्वतनशील साधन ही उत्पादन वृद्धि तथा आर्थिक विकास में योगदान देता है।

□□□

S

Sacking (सैकिंग) **श्रमिकों की बर्ख़ास्तगी**

प्रायः श्रमिकों की अनुशासनहीनता अथवा दुर्व्यवहार के कारण उनकी बर्खास्तगी मालिक द्वारा की जा सकती है। कभी-कभी जिस कार्य के लिए किसी श्रमिक को रखा गया था वह पूर्ण हो जाने पर भी उसे हटाया जा सकता है।

Saddle point (सैडल पॉइन्ट) **उच्चावचन बिन्दु**

किसी फलन के दो चरों का वह बिन्दु जिस पर एक दिशा में अधिकतम मूल्य तथा दूसरी दिशा में न्यूनतम मूल्य प्रदर्शित किए जाते हैं। प्रायः इस अवधारणा का भूगोल में अधिक प्रयोग किया जाता है।

Salary (सेलेरी) **पगार, मज़दूरी का एक परिष्कृत रूप**

प्रायः पगार का भुगतान "सफेद पोश" कर्मचारियों को किया जाता है। मज़दूरी तथा पगार में दो प्रकार के अन्तर होते है :

(1) किसी कर्मचारी को पगार का भुगतान काम के घंटों के हिसाब से नहीं किया जाता जबकि मज़दूरी का आधार काम के घंटे भी हो सकते है।

(2) प्रायः पगार का भुगतान मासिक आधार पर ही किया जाता है जबकि मज़दूरी दैनिक या साप्ताहिक आधार पर भी दी जा सकती है।

Sales promotion (सेल्स प्रोमोशन) **बिक्री सम्वर्द्धन**

किसी फर्म द्वारा वस्तु व सेवाओं की बिक्री बढ़ाने हेतु किए गए उपाय। इनमें सर्वाधिक प्रचलित उपाय विज्ञापन है। परन्तु इसके अलावा भी अन्य बहुत से तरीके हैं जिनसे विक्रेता द्वारा उपभोक्ताओं को लुभाया जा सकता है—जैसे फ्री सैम्पल वितरण, पुरस्कारों की घोषणा, डिपो पर वस्तु का प्रदर्शन आदि।

Sales revenue (सेल्स रेवेन्यू) **बिक्री से प्राप्त आगम**

वस्तु या सेवा की बिक्री से प्राप्त कुल आय। यह दो बातों पर निर्भर करती है : वस्तु की कीमत तथो बिक्री की मात्रा।

Sales revenue maximization (सेल्स रेवेन्यू मैक्सीमाइज़ेशन)

प्रोफेसर कैनथ बोल्डिंग के मतानुसार आधुनिक युग में अधिकतम लाभ अर्जित करने की अपेक्षा एक फर्म अपनी वस्तु की बिक्री उस स्तर तक बढ़ाना चाहती है जहां कुल आगम अधिकतम हो, भले ही उसका लाभ अधिकतम न हो। नीचे के चित्र में कुल आगम को अधिकतम करने हेतु फर्म OX* तक बिक्री को बढ़ाना चाहेगी।
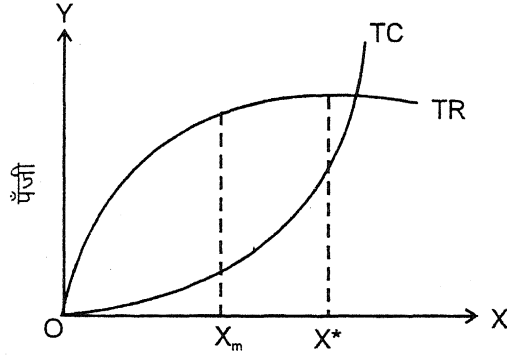
जैसा कि चित्र से स्पष्ट है, कुल लागत (TC) तथा कुल आगम (TR) का अन्तर OX_m इकाइयों की बिक्री करने पर अधिकतम होता है, परन्तु फर्म अपनी प्रतिष्ठा की दृष्टि उसकी बिक्री को अधिकतम करना चाहती है *न कि इससे प्राप्त लाभ को।*

Sales tax (सेल्स टैक्स) **बिक्री कर**

एक प्रकार का परोक्ष कर, जिसे वस्तु की कीमत में जोड़ कर इसकी बिक्री की जाती है, तथा *जिसे माँग की लोच के अनुरूप* आंशिक या पूर्ण रूप से उपभोक्ता को वहन करना पड़ता है। माँग जितनी बेलोच होगी उपभोक्ता को बिक्री कर का उतना ही अंश भुगतना पड़ेगा।

Sample (सैंपल) **प्रतिदर्श**

सम्पूर्ण समग्र यानी सभी इकाइयों से सम्बद्ध आंकड़े इकट्ठे करना काफी मंहगा, तथा लम्बी प्रक्रिया वाला कार्य होता है। इसीलिए प्रायः प्रतिचयन विधि को अपनाकर एक प्रतिदर्श चुना जाता है, तथा प्रतिदर्श में निहित इकाइयों को प्रतिनिधि मानकर इनसे संग्रहित आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष को ही समग्र के लिए लागू किया जाता है

Samuelson Poul A.

(जन्म 1915) अमरीका के एम.आई.टी. में कार्यरत नोबुल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री

जिन्होंने अनेक प्रचलित आर्थिक सिद्धान्तों में संशोधन किया, तथा नए सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। नए सिद्धान्तों में प्रगट अधिमान सिद्धान्त ,गुणक—त्वरक प्रतिक्रिया की अवधारणा आदि शामिल हैं। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, वितरण, रेखीय प्रोग्रामिंग,सामान्य साम्य आदि के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण विचारों का प्रतिपादन किया।

Satisficing (सेटिस्फाइंग थ्योरी) **तुष्टिकरण सिद्धान्त**

फर्म से सम्बन्धित सिद्धान्त, जिसके अनुसार फर्म अधिकतम लाभ प्राप्ति की अपेक्षा लाभ का एक संतोषजनक स्तर ही चाहती है, लेकिन अन्य तुष्टिकरण मापदंडों को अवश्य पूरा करना चाहती है। इन मापदंडों में बाज़ार की कुल बिक्री का एक न्यूनतम हिस्सा, पूंजी पर निर्दिष्ट प्रतिफल, लाभ का न्यूनतम स्तर, उपभोक्ताओं का संतोष आदि शामिल हैं। इनकी प्राप्ति होने पर फर्म बाज़ार में **अपने निष्पादन से सन्तुष्ट रहती है।**

Saving (सेविंग) **बचत**

वर्तमान उपभोग के ऊपर का आय का आधिक्य (S=Y–C) । बहुधा अर्थ व्यवस्था में निवेश का सबसे प्रमुख स्रोत बचत को ही माना जाता है। बचत तीन प्रकार की होती है- पारिवारिक बचतें, व्यवसायिक–विशेष रूप से निगमित क्षेत्र की बचतें, (रोके हुए लाभ) तथा सरकारी बचतें। बचतों को या तो बैंक या किसी वित्तीय संस्था के पास जमा किया जाता है ,अथवा किसी वित्तीय प्रतिभूति अथवा शेयरों को ख़रीदने में इसे प्रयुक्त किया जाता है। बचत का उपयोग पूँजीगत सामान (प्लांट ,मशीने आदि) अथवा भौतिक सम्पत्ति ख़रीदने में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। फिर भी बचत तथा निवेश में अन्तर है क्योंकि निवेश के अन्तर्गत उत्पादन कार्यों में प्रयुक्त की जाने वाली पूँजी में वृद्धि को शामिल किया जाता है।

Saving function (सेविंग फंक्शन) **बचत फलन**

ऐसा फलन, जो बचत की राशि तथा आय के सम्बन्ध को व्यक्त करता है। प्रायः दोनों में धनात्मक सम्बन्ध होता है। अर्थात आय बढ़ने के साथ-साथ बचत में वृद्धि होती है। इसी प्रकार हम बचत फलन में ब्याज़ की दर को भी एक स्वतंत्र चर के रूप में शामिल कर सकते हैं। बचत तथा ब्याज़ की दरों में भी धनात्मक फलनिक सम्बन्ध होता है।

Saving ratio (सेविंग रेशिया) **बचत का अनुपात**

राष्ट्रीय आय का वह अनुपात, जिसे बचत में प्रयुक्त किया जाता है। इनमें पारिवारिक, व्यवसायिक, तथा सरकारी तीनों प्रकार की बचतें शामिल की जाती हैं।

Saving schedule (सेविंग शिड्यूल) **बचत सूची**

एक तालिका, जिसमें आय के विभिन्न स्तरों पर की गई बचत की राशि को प्रस्तुत किया जाता है। प्रायः आय के निचले स्तरों पर बचत बहुत कम या ऋणात्मक होती है, लेकिन आगे चलकर आय में वृद्धि के साथ साथ बचत की दर में भी वृद्धि होती है।

Say's law (सेज़ लॉ) **से का नियम**

जीन बाप्टिस्ट से एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री (1767–1832) थे। उन्होंने कहा कि लचीली कीमतों तथा मज़दूरी वाली अर्थव्यवस्था में असन्तुलन की स्थिति शीघ्र ही समाप्त हो जाती है, तथा "पूर्ति स्वयं माँग का सृजन कर देती है"। उन्होंने कहा कि बेरोज़गारी होने पर स्वतः मज़दूरी की दर कम होगी तथा स्वेच्छा से बेराज़गार रहने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त सभी को रोज़गार उपलब्ध हो जाएगा । इसी प्रकार वस्तु के बाज़ार में पूर्ति का आधिक्य होने पर कीमत में कमी होगी, तथा पूर्ति व माँग में समानता स्थापित हो जाएगी। इस प्रकार से के मतानुसार वस्तुओं का अत्यधिक उत्पादन होने या श्रम सेना में बहुत ज़्यादा व्यक्ति होने पर भी आर्थिक संकट के आविर्भाव की सम्भावना अत्यंत कम रहती है। परन्तु बाद के अर्थशास्त्रियों ने कहा कि *कीमतों तथा मज़दूरी की दरों में प्रायः लचीलापन नहीं होता,* और इस कारण साम्य स्थिति की स्वमेव प्राप्ति की परिकल्पना सही नहीं है।

Scale (स्केल) **पैमाना**

प्लांट, मशीनों, श्रम, पूँजी आदि का वह संयोग, जिससे किसी वस्तु का उत्पादन सम्भव होता है। पैमाने में वृद्धि (या कमी) का अर्थ यह है कि उत्पादन के सभी *साधनों में एक ही अनुपात में वृद्धि* (या कमी) की जा रही है।

Scale economies (स्केल इकोनोमीज़) **पैमाने की बचतें**

उत्पादन के साधनों को जिस अनुपात में बढ़ाया जाता है, प्रारम्भ में उससे कहीं अधिक अनुपात में उत्पादन में वृद्धि होती है। इसके फलस्वरूप उत्पादन की औसत लागत (AC) में कमी होती जाती है। यह केवल दीर्घकाल में ही सम्भव है। (देखें economies of scale) ।

Scarcity (स्केर्सिटी) **दुर्लभता; अभाव**

उत्पादन के किसी साधन या किसी वस्तु की माँग की तुलना में अति अल्प उपलब्धता । दुर्लभता के कारण ही साधनों या वस्तुओं का चयन *प्राथमिकता के आधार* पर किया जाना उचित रहता है। एडम स्मिथ ने दुर्लभता को एक नए रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि यदि कोई वस्तु या साधन दुर्लभ न हो तथा उसकी पर्याप्त पूर्ति उपलब्ध दिखाई दे तो उसकी कीमत शून्य होगी। दुर्लभता के कारण ही कीमतें धनात्मक होती हैं,या दुर्लभता के साथ -साथ इन वस्तुओं की कीमतें भी बढ़ जाती हैं।

Scatter diagram (स्केटर डॉयग्राम) **विक्षेप चित्र**

दो चरों या श्रेणियों में सह-सम्बन्ध की दिशा को चित्र रूप में प्रस्तुत करना। उदाहरण के लिए, X तथा Y दो श्रेणियों में प्रत्येक संख्या को आयताकार रूप में प्रस्तुत करने पर निम्न में से कोई एक स्थिति प्राप्त हो सकती है:
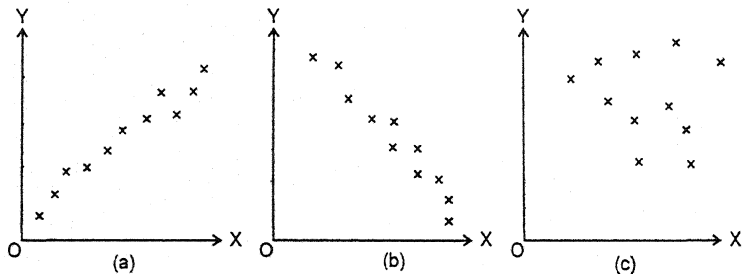
उपरोक्त तीन चित्रों में (a) के अन्तर्गत कुल मिलाकर x तथा y के बीच धनात्मक सह-सम्बन्ध दिखाई देता है, जबकि (a) में यह सम्बन्ध ऋणात्मक प्रतीत होता है। परन्तु पैनल (c) के अन्तर्गत x तथा y के विक्षेप चित्र में किसी प्रकार का भी कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं दिखाई देता।

Scultz ,Theodore W. (जन्म 1902) **शिकागो विश्वविद्यालय के एक अर्थशास्त्री**

जिन्हें 1979 में प्रो० आर्थर लुइस के साथ संयुक्त रूप से नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

शुल्ज़ ने मानवीय पूँजी के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, तथा शिक्षा के महत्व को प्राथमिकता दी। उन्होंने विकासशील देशों की कृषि व्यवस्था का काफी गहराई से अध्ययन किया तथा वहां के कृषकों के लिए रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत किए।

Schumpeter, Joseph A. (1883–1950) (जोसेफ ए. शुम्पीटर) **एक आस्ट्रियन अर्थशास्त्री**

जिन्होंने अल्पकालीन, मध्यकालीन व दीर्घकालीन व्यापार चक्रों के विश्लेषण हेतु एक वृहद् सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने यह भी बतलाया कि आर्थिक विकास या संवृद्धि की कुंजी उद्यमियों द्वारा विकसित नवोत्पादों में निहित है, क्योंकि वे जोखिम उठाते हैं। नवोत्पादों की परिभाषा में उन्होंन उत्पादन की नई प्रौद्योगिकी, नई वस्तु की बाज़ार में प्रविष्टि, तथा नए बाज़ारों की खोज को शामिल किया। परन्तु उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि नवोत्पादों पर प्रारम्भ में जो प्रतिफल प्राप्त होते हैं वे धीरे-धीरे कम होने लगते हैं ,क्योंकि नकल करने वालों की संख्या बढ़ जाती है। इसीलिए नवोत्पाद की प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ करके विकास की गति को बढ़ाना होता है।

Seasonal adjustment (सीज़नल एडजस्टमेंट) **मौसमी समायोजन**

आर्थिक चरों में मौसमी परिवर्तनों को दुरूस्त करने हेतु किए गए समायोजन। अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय के अनुमानों को मौसम के अनुसार समायोजित करने से इन अनुमानों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

Seasonal unemployment (सीज़नल अनएम्प्लॉयमेंट) **मौसमी बेरोज़गारी**

वह बेरोज़गारी, जिसका सम्बन्ध वर्ष के अलग- अलग मौसमों में विशिष्ट वस्तुओं की माँग में होने वाले परिवर्तनों से होता है । इस प्रकार की बेरोज़गारी की गम्भीरता इस बात पर निर्भर करती है कि उन बेरोज़गार को तत्काल कार्यों में खपाया जा सकता है या नही।

Secondary benefits (सेकन्डरी बेनीफिट्स) **द्वितीयक लाभ; अतिरिक्त परोक्ष लाभ**

किसी परियोजना से प्राप्त होने वाले प्राथमिक तथा प्रत्यक्ष लाभों के अतिरिक्त परोक्ष तथा **द्वितीयक लाभों की गणना।** उदाहरण के लिए, किसी सिंचाई परियोजना के प्रत्यक्ष लाभों में फसलों के उत्पादन में होने वाली वृद्धि को लिया जाता है, जबकि परोक्ष या द्वितीयक लाभों में अनाज़ के व्यापारियों , हम्मालों, परिवहन क्षेत्र के लोगों तथा कृषि जिंसों का परिनिर्माण करने वालों को प्राप्त होने वाली अतिरिक्त आय को शामिल किया जाता है।

Secondary market (सेकेन्डरी मार्केट) **द्वितीयक बाज़ार**

वह बाज़ार जिसमें शेयरों को पुनः बिक्री हेतु प्रस्तुत किया जाता है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि शेयरों की प्राथमिक बिक्री की तुलना में द्वितीयक बाज़ारों में कई गुने सौदे सम्पन्न किए जाते हैं।

Second- best (सेकन्ड बैस्ट) **द्वितीय श्रेष्ठ**

अर्थशास्त्र में इष्टतम स्थिति को सर्वश्रेष्ठ या इष्टतम माना जाता है। ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों का आर्थिक कल्याण अधिकतम होता है। परन्तु अनेक बार सामाजिक, संरचनात्मक अथवा संगठनात्मक कठिनाइयों के कारण इष्टतम स्थिति को प्राप्त करना सम्भव नहीं हो पाता । ऐसी स्थिति में जिस भी **परिस्थितिजन्य श्रेष्ठतम स्थिति** तक पहुँचा जा सकता है, उसे द्वितीय श्रेष्ठ की स्थिति कहा जाता है। द्वितीय श्रेष्ठ की स्थिति में इष्टतम से नीचे की स्थिति रहती है।

Second degree price discrimination (सेकन्ड डिग्री प्राइस डिस्क्रिमिनेशन) **द्वितीय श्रेणी का कीमत विभेद**

जब सभी उपभोक्ताओं को अलग अलग श्रेणियों में बांटकर उनकी सुविधा व रुचि के आधार पर उनसे कीमतें ली जाएँ तो यह द्वितीय श्रेणी का कीमत विभेद कहलाता है। उदाहरण के लिए, विशिष्ट समय पर अग्रिम बुकिंग करवाने वाले यात्रियों से एयर लाइन्स कम्पनी कम किराया ले सकती है जबकि ऐन वक्त पर जाने वाले यात्रियों से पूरा किराया लिया जा सकता है।

Second derivative (सेकन्ड डेरीवेटिव) **द्वितीय अवकलज**

किसी फलन का प्रथम अवकलज उसके ढलान या सीमान्त मूल्य को मापता है। द्वितीय अवकलज सीमान्त मूल्य से सम्बद्ध वक्र के ढलान को मापता है। अस्तु, फलन $U=f(X)$

प्रथम अवकलज : $\frac{dU}{dX}$ होगा जबकि $\frac{d^2U}{dX^2}$ को द्वितीय अवकलज कहा जाएगा।

किसी फलन के अधिकतम मूल्य के लिए $\frac{d^2U}{dX^2}<0$ होना चाहिए, जबकि न्यूनतम

मूल्य वहां होगा जहां $\frac{d^2U}{dX^2}>0$ है।

Sector (सैक्टर) **क्षेत्र**

अर्थव्यवस्था का एक भाग। प्रायः अर्थव्यवस्था को कार्यानुसार (कृषि, उद्योग, व्यापार, सेवा, खनन आदि) अथवा स्वामित्व के अनुसार (सरकारी, निजी, सहकारी) अथवा संगठन के अनुसार (संगठित, असंगठित) विभाजित किया जा सकता है। इन्हीं के अनुरूप आय, व्यय या रोज़गार की व्याख्या की जा सकती है।

Secular stagnation (सैक्यूलर स्टैग्नेशन) **अनवरत जड़ता**

व्यापार चक्र में मंदी का वह चरण, जो अर्थव्यवस्था में काफी लम्बे समय तक जारी

रहता है। इसमें उत्पादन क्षमता की तुलना में सकल माँग का स्तर बहुत कम रहता है। यह प्रायः उपभोग व्यय के निम्न स्तर, ऊँची विनिमय दर, काफी अधिक आयातों आदि के कारण होता है।

Secular trend (सैक्यूलर ट्रेंड) **दीर्घकालीन प्रवृत्ति**

किसी आर्थिक चर की दीर्घकालीन प्रवृति, जो ऊर्ध्वमुखी या अधोमुखी हो सकती है। इनमें अन्तराल के साथ विपरीत मूल्यों को समायोजित करके एक सरल व स्पष्ट प्रवृत्ति का निरूपण किया जाता है।

Secured loan (सीक्योर्ड लोन) **सुरक्षित ऋण**

ऐसा ऋण, जिसकी अदायगी न होने पर ऋणदाता को यह अधिकार है कि वह ऋणी की सम्पत्ति पर आंशिक या पूर्ण रूपेण अधिकार करके अपने ऋण को ब्याज सहित वसूल कर ले। यदि ऋणी का दीवाला निकल जाए तो सुरक्षित ऋण दाताओं का हक असुरक्षित ऋण दाताओं से पूर्व बनता है।

Securites and Exchange Board of India (SEBI)

(सीक्योरिटीज़ एँड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इण्डिया) (सेबी)

भारतीय प्रतिभूति तथा एक्सचेंज बोर्ड

भारत के विभिन्न स्टॉक एक्सचेंज तथा शेयरों के निर्गम तथा क्रय विक्रय पर अंकुश रखने वाली संस्था। सेबी समय-समय पर निवेशकों के हितों की रक्षा हेतु,तथा शेयरों के क्रय-विक्रय में *दलालों द्वारा की गई मनमानी* को रोकने के लिए नियम बनाता है।

Securitization (सीक्योरीटाइजेशन) **सुरक्षा सुनिश्चित करना**

बाज़ार में न बिकने योग्य सम्पत्तियों को टुकड़ों में बांटकर बिक्री योग्य बनाना। व्यक्तिगत धरोहर को प्रायः बाज़ार में बेचना सम्भव नहीं होता, क्योंकि उनमें से किसी एक के सौदे में काफी जोखिम होती है। लेकिन उनमें से अनेक को संयुक्त रूप में प्रस्तुत करने पर जोखिम में कमी हो जाती है, तथा इससे उनके सौदे सम्भव हो जाते हैं।

Self employed (सैल्फ एँप्लांयड) **स्वयं का रोज़गार**

ऐसा व्यक्ति, जो स्वयं की फर्म में अपना श्रम प्रयुक्त करता है। वह व्यक्ति उद्यमी हो सकता है, स्वयं की पूँजी तथा श्रम को उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त करता है तथा कुछ कम महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए ही श्रमिकों की नियुक्ति करता है। परन्तु प्रायः स्व--रोज़गार वाले उपक्रम अत्यंत लघु-स्तर पर उत्पादन कर पाते हैं।

Self assessment of tax (सैल्फ एसेसमेंट ऑफ टैक्स)

स्वयं कर का निर्धारण करना

कर प्रणाली का वह रूप, जिसमें कर दाता स्वयं ही अपनी आय, खर्चों तथा सभी प्रकार की छूट आदि की प्रविष्टियों का उल्लेख करके कर का निर्धारण करता है, तथा इसका भुगतान कर देता है। कर-अधिकारी इस आकलन की जाँच करके उसे स्वीकार कर

देते हैं। किसी भी प्रकार की शंका होने पर वे कर दाता की आय तथा खर्चों की गहन जाँच करके उसके द्वारा प्रस्तुत विवरणिका की विश्वसनीयता का पता लगाते हैं।

Self correcting system (सैल्फ करेक्टिंग सिस्टम) **स्वयं दुरूस्त होने वाली व्यवस्था**

ऐसी व्यवस्था, जिसमें मूल स्थिति से विचलन होने पर विभिन्न चरों में इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती हैं कि पुनः मूल स्थिति में पहुंचा जा सकता है। उदाहरण के लिए, पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में साम्य स्थिति से विचलित होने पर क्रेताओं या विक्रेताओं या दोनों पक्षों पर इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती है कि शीघ्र ही बाज़ार में साम्य स्थिति प्राप्त हो जाती है।

Self financing (सैल्फ फाइनेसिंग) **स्व-वित्त पोषण**

किसी व्यवसाय से सम्बद्ध वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किसी प्रकार का ऋण लेने की अपेक्षा उद्यमी द्वारा स्वयं के स्रोतों से प्रारम्भिक पूँजी जुटाना। इसके पश्चात् जैसे-जैसे व्यवसाय का विस्तार होता है, वह उद्यमी व्यवसायिक लाभ का पुनर्निवेश करता जाता है।

Self fulfilling expectations (सैल्फ फुलफिलिंग एक्सपेक्टेशन्स) **स्वतः पूरी होने वाली अपेक्षाएँ**

ऐसी अपेक्षाएँ, जिनसे लोगों को वे सब कार्य करने की प्रेरणा मिलती है जिससे वे अपेक्षाएँ पूरी हो सकें। उदाहरण के लिए, सम्पत्तियों तथा टिकाऊ वस्तुओं की प्रत्याशित कीमतों के बढ़ने की सम्भावना हो तो लोग ख़रीद हेतु अग्रिम सौदे करना प्रारम्भ करेंगे, तथा बिक्री को स्थगित कर देंगे। इन क्रियाओं के फलस्वरूप माँग बढ़ेगी तथा सम्पत्तियों व टिकाऊ, वस्तुओं की कीमतें स्वतः बढ़ जाएँगी। इस प्रकार, सट्टा बाज़ार में अल्पकालीन कीमतें प्रत्याशाओं पर ही निर्भर करती हैं। यदि किसी वस्तु के अभाव की आशंका हो तो लोग वस्तु का भंडारण करेंगे, जिससे वस्तुतः उसकी कमी होगी तथा कीमत में वृद्धि हो जाएगी।

Self regulation (सैल्फ रेग्यूलेशन) **आत्म नियंत्रण**

एक ऐसी व्यवस्था, जिसमें सरकार अर्थ व्यवस्था के किसी क्षेत्र को नियंत्रित करना चाहती है, परन्तु इसके लिए नियम बनाने तथा कार्य योजना निरूपित करने का दायित्व एक ऐसी संस्था पर छोड़ देती है जो उस क्षेत्र में सक्रिय हो।

Sell (सैल) **बेचना**

(1) किसी वस्तु, सेवा या सम्पत्ति का मुद्रा के बदले विनिमय करना। इसी प्रकार किसी मुद्रा को बेचकर दूसरी मुद्रा प्राप्त करना भी बिक्री कहलाती है।

(2) किसी व्यक्ति को वस्तु ख़रीदने हेतु प्रोत्साहित करना।

Seller's market (सैलर्स मार्केट) **विक्रेता-नियंत्रित बाज़ार**

ऐसा बाज़ार जिसमें परिस्थितियां अधिकांशतः *विक्रेताओं के अनुकूल हों।* यदि विक्रेताओं

की संख्या कम है तथा उन्हें वस्तु की बिक्री करने की कोई जल्दी नहीं है, जबकि क्रेताओं पर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वस्तु को ख़रीदने का दबाव है तो वस्तु की कीमतें बढ़ेंगी तथा बाज़ार की परिस्थितियां विक्रेताओं के अनुकूल मानी जाएँगी।

Selling costs (सैलिंग कॉस्ट्स) **विपणन लागतें**

वस्तुओं की बिक्री हेतु व्यय की गई लागतें। इनमें विज्ञापन सम्बन्धी लागतें, प्रचार–प्रसार व्यय, विक्रय प्रतिनिधियों पर किया गया व्यय शामिल है। वस्तु के उत्पादन, भंडारण तथा परिवहन की लागतों में विपणन लागतों को जोड़कर ही इसकी कीमत का निर्धारण किया जाता है।

Serial correlation (सीरियल कोरीलेशन) **क्रमागत सहसम्बन्ध**

ऐसी स्थिति, जिसमें एक प्रसम्भाव्य काल-श्रेणी चर का मूल्य इससे पूर्व की अवधि के मूल्य से स्वतंत्र न हो। यदि x_t को काल श्रेणी का चर मान लें जिसकी अवधि 1,2,3 ......, t हो तथा इसका t वर्ष में प्रवृत्ति मूल्य y_t हो तो $z_t = x_t - y_t$ होगा। यदि क्रमागत सह सम्बन्ध शून्य हो तो अपेक्षित मूल्य $[E(z_t) - (z_{t-1})] = 0$ होगा। परन्तु अपेक्षित मूल्य धनात्मक या ऋणात्मक रूप भी ले सकता है, तथा यह $E(z_t)$ के मूल्य पर निर्भर करेगा।

Series (सीरीज) **श्रेणी**

संख्याओं का क्रम, जिसे किसी बिन्दु पर शुरू किया जाता है तथा निर्दिष्ट नियम के अनुसार आगे की संख्या को व्यक्त किया जाता है। मान लीजिए, हम किसी श्रेणी को a+b, a+2b, a+3b आदि रूप में व्यक्त करते हैं तो a तो इस श्रेणी का प्रारम्भिक मूल्य है तथा b को स्थिर मानते हुए इस श्रेणी की अगली संख्याओं को रैखिक रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

Service contract (सर्विस कॉन्ट्रेक्ट) **सेवा सम्बन्धी अनुबन्ध**

किसी व्यक्ति की सेवा प्राप्त करने हेतु तैयार एक अनुबन्ध। प्रायः फर्म विशिष्ट सेवाओं, प्रशिक्षिण, मशीनों के रख -रखाव आदि को सुनिश्चित करने हेतु इस प्रकार के अनुबंध तैयार करती है।

Service flows (सर्विस फ्लोज) **स्थायी प्रकृति की उपभोग वस्तुओं से प्राप्त सेवाएँ**

राष्ट्रीय आय के अनुमान हेतु इन सवाओं के वार्षिक प्रवाह को अन्तर्निहित आय के रूप में शामिल किया जाता है।

Service industry (सर्विस इन्डस्ट्री) **सेवा क्षेत्र**

अर्थ व्यवस्था का वह भाग, जो वस्तुओं के उत्पादन से सबद्ध नहीं है, अपितु या तो उत्पादन हेतु समर्थन देता है (परिवहन, भंडारण, बैंकिंग बीमा, विज्ञापन, प्रशिक्षण, मुद्रण आदि) अथवा जीवन स्तर तथा शांति व्यवस्था में सुधार हेतु या सुरक्षा हेतु सेवाएँ प्रस्तुत करता है (जैसे शिक्षा, स्वास्थ, स्वच्छता, प्रशासन, पुलिस, सेना, अभियांत्रिकी आदि) । यह प्रायः देखा जाता है कि जैसे -जैसे

आर्थिक विकास होता है वैसे-वैसे कृषि व उद्योगों की तुलना में सेवा क्षेत्र का विस्तार अधिक तीव्र गति से होता है।

Set aside (सैट एसाइड) **कृषि भूमि को निवृत्त करना**

अनेक देशों में कृषि-नीति के अन्तर्गत कुल कृषि क्षेत्र के एक भाग को निवृत्त करके कृषकों को इसके बदले क्षतिपूर्ति दी जाती है, अथवा उन्हें बाध्य किया जाता है कि यदि वे सरकारी सहायता के आकांक्षी हैं तो अपनी कृषि जोत के एक भाग में खेती करना बन्द कर दें। इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन में कमी होती है तथा सरकार समर्थन मूल्यों पर कृषि उपज ख़रीदने की बाध्यता को सीमित कर देती है।

Settlement (सैटल मेंट) **बन्दोबस्त**

(1) किसी भू–क्षेत्र में विभिन्न परिवारों को भूमि का आवंटन करना।
(2) कृषि -भूमि पर राजस्व वसूली के नियम व उपनियम बनाना।
(3) वस्तुओं, सेवाओं, प्रतिभूतियों आदि से सम्बद्ध अनुबन्धों की निर्दिष्ट तिथियों तक उनकी उपलब्धता को सुनिश्चित् करना। यदि उस तिथि तक सम्बद्ध दायित्व पूरे न हों तो दूसरा पक्ष कानूनी कार्रवाही कर सकता है।

Sex discrimination (सैक्स डिस्क्रिमिनेशन) **लिंग-सम्बन्धी भेद भाव**

पुरुषों तथा महिलाओं के बीच भेद भाव की नीति। यह भेद भाव रोज़गार, पेशेवर संगठनों की सदस्यता,पंचायतों से लेकर लोकसभा के टिकट वितरण, बीमा पेंशन, साख सुविधा तथा निर्णय लेने एवं बोलने की स्वतंत्रता तक किया जा सकता है। विश्व भर में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अधिक प्रतिकूल व्यवहार झेलना पड़ता है।

Shadow prices (शेडो प्राइसेज़)

आभास कीमतें; आर्थिक कीमतें; अवसर लागतें

प्रायः बाज़ार कीमतें वास्तविक कीमतों को प्रस्तुत नहीं करतीं, क्योंकि उनमें अनुदान **(सब्सिडी)** तथा कर शामिल होते हैं। यदि सभी प्रकार के करों तथा अनुदानों को हटा दिया जाए तो आभास कीमतें प्राप्त हो जाती है। प्रायः *पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ारों में निर्धारित कीमतों को आभास कीमतें कहा जाता है।* इसी प्रकार, अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में इनपुट्स व वस्तुओं की कीमतें भी आभास कीमतें कहलाती हैं। इन कीमतों का प्रयोग किसी परियोजना के **आर्थिक आकलन** हेतु किया जाता है, जबकि **बाज़ार कीमतों को वित्तीय आकलन** हेतु प्रयोग में लिया जाता है।

Shake out (शेक आउट) **साधनों का अन्तरण**

किसी एक क्षेत्र से साधनों को हस्तांतरित करना, चाहे यह अन्तरण एक फर्म से दूसरी फर्म को, या एक उद्योग से दूसरे उद्योग के बीच हो। ऐसा प्रायः संकट के समय ही होता है जो माँग में कमी होने पर फर्मों के उत्पादन में गिरावट के कारण होता है। इसके फलस्वरूप फर्में मज़दूरों की छंटनी कर देती हैं।

Share (शेयर) **अंश, शेयर**

किसी कम्पनी की पूँजी को छोटे छोटे अंशों में बांटना। प्रायः एक शेयर पर अंशधारी को एक मत देने का अधिकार प्राप्त होता है। कम्पनी का लाभांश प्रति शेयर की दर से वितरित किया जाता है। कम्पनी को भंग किए जाने पर शेयरधारी अपनी पूँजी के अनुपात में कम्पनी की सम्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं। शेयर दो प्रकार के होते हैं : साधारण शेयर, जिन पर धारक को मताधिकार प्राप्त होता है, तथा जो उसे कम्पनी का स्वामी (अंशतः) बनाता है; तथा प्राथमिक शेयर जिस पर केवल निश्चित् दर से ब्याज़ देय है, तथा उपरोक्त अधिकार शेयर धारक को नहीं दिए जाते।

Share cropper (शेयर क्रॉपर) **फसल में बंटाई करने वाला**

एक काश्तकार, जो भूमि जोतने के बदले भू-स्वामी को फसल का एक भाग लगान के रूप में देता है। यह प्रणाली पिछड़े हुए क्षेत्रों में व्याप्त है तथा भू–स्वामी तथा काश्तकार दोनों को फसल के साथ- साथ जोखिम में भी भागीदार बनाती है।

Share holder (शेयर होल्डर) **शेयर का धारक, अंशधारी**

कोई व्यक्ति या संस्था, जिसके पास किसी कम्पनी के शेयर मौजूद हैं।

Share issue (शेयर इश्यू) **शेयरों का निर्गम**

संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी द्वारा शेयरों की जनता को बिक्री करने की प्रक्रिया ।

Share option (शेयर ऑप्शन)

पूर्व निर्धारित मूल्य पर शेयर खरीदने का विकल्प

यह विकल्प कम्पनी के निदेशकों तथा कर्मचारियों को दिया जाता है। प्रायः इस विकल्प के अन्तर्गत बाज़ार मूल्य से कम पर शेयर दिए जाते हैं।

Share price index (शेयर प्राइस इंडेक्स) **शेयर की कीमत का सूचकांक**

विशिष्ट श्रेणी के शेयरों की कीमतों का सूचकांक । सभी स्टॉक एक्सचेंज इन सूचकांकों का नियमित रूप से प्रकाशन करते हैं। इनमें कम्पनियों की संख्या तथा उद्योगों के विस्तार के आधार पर अन्तर हो सकता है।

Share cetificate (शेयर सर्टीफिकेट) . **शेयर प्रमाण पत्र**

एक दस्तावेज, जो शेयर धारियों के नाम जारी किया जाता है ताकि शेयरों के स्वामित्व का प्रमाण उनके पास रहे।

Share capital (शेयर केपीटल) **शेयर पूँजी**

किसी संयुक्त कम्पनी में निवेशित पूँजी जिसे छोटी छोटी राशि के अंशों में निर्गमित किया जाता है । किसी निजी कम्पनी में यह पूँजी केवल एक परिवार के सदस्यों तथा निकट के सम्बन्धियों को निर्गमित की जाती है, जबकि संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी के शेयर आम जनता के लिए निर्गम किए जाते हैं

Share register (शेयर रजिस्टर) **शेयर पंजिका**

शेयरधारियों की सूची, जिसे संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी अपने कार्यालय में रखती है।

इसमें प्रत्येक शेयरधारी को निर्गमित शेयरों की संख्या तथा उनके क्रमांक अंकित रहते हैं। जब कोई शेयरधारी अपने शेयरों को पूर्ण या आंशिक रूप में बेचता है तो सम्बद्ध शेयरों को मूल आवंटी के नाम से रद्द करके नए शेयरधारी के नाम की उस पंजिका में प्रविष्टि कर दी जाती है।

Shark repellant (शार्क रेपेलैंट) **अधिग्रहण के विरुद्ध कार्रवाई**

किसी कम्पनी के **सम्भावित अधिग्रहण कर्ताओं** को हतोत्साहित करना। इसके अन्तर्गत कम्पनी के निदेशकों के साथ ऐसे अनुबन्ध कर लिए जाते हैं जिनके अनुसार उनको कार्यालय से मुक्त होने पर भारी क्षतिपूर्ति चुकाना सुनिश्चित् कर दिया जाता है।

Shell company (शैल कम्पनी) **व्यापार न करने वाली कम्पनी**

ऐसी कम्पनी जो कोई व्यापार नहीं करती, परन्तु जिस पर व्यवसाय में संलग्न कम्पनी को विश्वास करना पड़ता है। ऐसी कम्पनी क्रेडिट रेटिंग या करों से बचने के लिए हानि की अगली खतौनी का कार्य कर सकती हैं।

Sheltered monopoly (शेल्टर्ड मोनोपोली) **संरक्षित एकाधिकार**

किसी भी प्रकार के संरक्षण के आधार पर एकाधिकारी अपना वर्चस्व कायम रख सकता है। इसके अन्तर्गत बाज़ार में नई फर्मों के प्रवेश पर कानूनी पाबन्दी भी लगाई जा सकती है।

Shift in tax (शिफ्ट इन टैक्स) **कर का अन्तरण**

प्रायः किसी वस्तु या सेवा पर जब कर लगाया जाता है तो विक्रेता कर के भार को पूर्ण या आंशिक तौर पर क्रेता या उपभोक्ता पर अंतरित कर देता है। कर का कितना भाग उपभोक्ता को वहन करना है, यह उस वस्तु की माँग की लोच पर निर्भर करेगा। कर का शेष भाग विक्रेता को चुकाना होगा। माँग जितनी बेलोच है, उपभोक्ता पर कर का उतना ही भाग क्रेता या उपभोक्ता पर अंतरित हो जाएगा।

Shock (शॉक) **झटका; सदमा**

ऐसी घटना, जो अप्रत्याशित हो तथा जिसके कारण किसी आर्थिक क्रिया का प्रतिफल अपेक्षा से काफी भिन्न हो जाए। अप्रत्याशित युद्ध, भौगोलिक खोज, राजनैतिक उथल पुथल या क्रान्ति ऐसी घटनाएँ हैं जो आम जनता तथा व्यवसाय ज़गत के लोगों के लिए अप्रत्याशित होती हैं। सितम्बर, 2001 में आतंककारियों द्वारा न्यूयार्क में जिस प्रकार वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का विध्वंस किया गया, वह इसी प्रकार का झटका माना जा सकता है। अर्थशास्त्र में इस प्रकार के झटकों का पूर्वानुमान करने हेतु कोई सिद्धान्त या विधि नहीं है।

Shoe leather costs of inflation (शू-लैदर कॉस्ट ऑफ इंफ्लेशन) **मुद्रा स्फीति की लागत**

अपेक्षित मुद्रा स्फीति की वास्तविक लागतों में से एक यह है कि इससे लोगों द्वारा

मुद्रा की मात्रा अपने पास कम रखी जाती है। प्रायः लोग अपने साथ बहुत अधिक रोकड़ रखने की अपेक्षा बैंकों के अधिक चक्कर लगाना यानी "जूते घिसना" अधिक पसन्द करते हैं, क्योंकि स्वयं के पास रखी गई मुद्रा का मूल्य गिरने की आशंका काफी अधिक रहती है।

Shop (शॉप) **व्यापार का स्थान, दूकान**

ग्राहकों की सुविधा हेतु ऐसा स्थान, जहां विक्रय हेतु वस्तु या वस्तुएँ उपलब्ध हों । प्रायः किसी दूकान में खुदरा व्यापार ही किया जाता है।

short position (शॉर्ट पोज़ीशन) **स्टॉक से अधिक बिक्री करना**

भविष्य के सौदों में जब कोई व्यक्ति या फर्म वास्तविक स्टॉक की तुलना में अधिक बिक्री कर देता है, तो उसे यह विश्वास होता है कि वह अपने दायित्व के निर्वाह हेतु पर्याप्त मात्रा में वस्तु, या प्रतिभूतियां ख़रीद लेगा। यदि *माल देने का समय आने पर* अनुबन्ध में वर्णित कीमत की तुलना में बाज़ार कीमत कम है, तो वह व्यापारी बाज़ार से खरीद कर अपने दायित्व का निर्वाह कर देता है, तथा लाभ कमाता है। परन्तु उस समय यदि बाज़ार कीमत अधिक है तो सम्बद्ध व्यापारी को घाटा होगा।

Short run (शॉर्ट रन) **अल्पकाल**

ऐसी अवधि, जिसमें कुछ घटक अपरिवर्तनीय रहते हैं । उदाहरण के लिए, अल्पकाल में उपभोक्ता की रुचि, आय आदि यथावत् रहते हैं। इसी प्रकार अल्पकाल में कुछ इनपुट्स यथावत् रहते हैं, जबकि अन्य को बढ़ाना सम्भव है। अल्पकाल में उत्पादन की तकनीक भी अपरिवर्तनीय रहती है। प्रायः दीर्घकाल में सभी घटक परिवर्तनशील होते हैं।

Short run capital movements (शॉर्ट रन केपीटल मूवमैंट) **पूँजी का अल्पकालीन प्रवाह**

विभिन्न देशों के मध्य पूँजी का प्रवाह, जो उलट भी सकता है। इसका प्रायः अर्थ है "तरल सम्पत्ति" को रखना, जैसे बैंक जमाएँ या अल्पकालिक वित्तीय सम्पतियाँ । अल्पकालीन पूँजी के प्रवाह का मुख्य कारण ब्याज़ की दरों में परिवर्तन को माना जाता है।

Short-time working (शॉर्ट टाइम वर्किंग) **कार्यावधि में कमी करना**

सामान्य कार्य दिवसों या दैनिक घंटों की अपेक्षा काम की अवधि में कमी करके श्रम के प्रयोग में कटौती करना। इससे श्रमिकों का रोज़गार भी बना रहता है, तथा काम भी बन्द नहीं होता

Shut down price (शट डाउन प्राइस) **न्यूनतम कीमत का बिन्दु**

ऐसी कीमत, जिसके कम होने पर फर्म उत्पादन बन्द कर देती है।
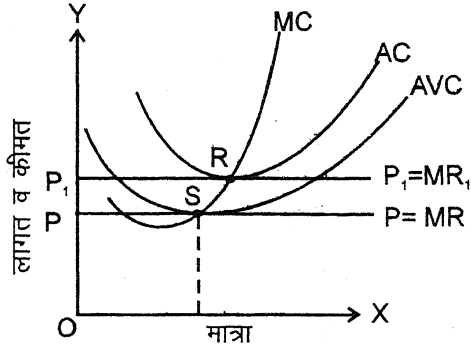
उपरोक्त चित्र में AVC, AC तथा MC क्रमशः एक प्रतियोगी फर्म के औसत परिवर्तनशील लागत वक्र, औसत लागत वक्र तथा सीमान्त लागत वक्र हैं। फर्म को सामान्य लाभ R बिन्दु पर प्राप्त होता है जहां P_1=MR_1=MC=AC है। परन्तु यदि कीमत का स्तर इससे कम हो तथा OP तक गिर जाए तो P=MR=MC के कारण वह उत्पादन तो करेगी, लेकिन औसत लागत या AC के अपेक्षाकृत अधिक होने के कारण उसे हानि होगी। *फिर भी फर्म अपनी परिवर्तनशील लागत को वसूल करने में सफल हो जाती है।* यदि कीमत OP से भी कम हो (P< OP) तो चूंकि उस फर्म की परिवर्तनशील लागत भी वसूल नहीं हो पा रही है वह उत्पादन बन्द कर देगी। इस प्रकार S बिन्दु को उत्पादन का न्यूनतम बिन्दु एवं OP को न्यूनतम कीमत माना जा सकता है जहां OP=AVC है। इससे कम कीमत पर फर्म उत्पादन को बन्द कर देगी। इसीलिए S को न्यूनतम कीमत का बिन्दु माना जाएगा।

Sickness benefit (सिकनैस बेनीफिट)

श्रमिक को उसकी बीमारी के दौरान दिया गया भुगतान

यह भुगतान अल्पकाल के लिए ही दिया जाता है, तथा नगद या सुविधाओं के रूप में दियाजा सकता है। बीमारी के दौरान किए गए भुगतान का दायित्व मालिक, बीमा कम्पनी या सरकार, किसी का भी हो सकता है।

Side-payment (साइड पेमेंट) **फर्मों की अतिरिक्त लाभ को बांटने पर सहमति**

उदाहरण के लिए, फर्मों के एक समूह में प्रत्येक के पास एक लाभप्रद प्लांट है। वे यह अनुमान करती हैं कि यदि एक प्लांट बंद करके इसका उत्पादन अन्य प्लांट्स द्वारा किया जाए तो पूरे समूह की उत्पादन लागत में कमी होगी तथा लाभ में वृद्धि हो जाएगी। इस प्रकार जिस फर्म का प्लांट बंद हुआ है उसे शेष फर्मों के बढ़े हुए लाभ में से क्षतिपूर्ति की जाती है।

Silicon Valley (सिलीकोन वैली) **सिलिकॉन वैली**

दक्षिणी केलीफोर्निया राज्य (अमरीका) का वह क्षेत्र जहां सूचना प्रौद्योगिकी तथा

कम्प्यूटर के व्यापार का बहुत बड़ा व्यवसाय केन्द्रित है।

Simple interest (सिंपल इंटरेस्ट) **सरल ब्याज़ प्रणाली**

इस प्रणाली के अन्तर्गत ब्याज़ का आकलन वार्षिक ब्याज़ दर को वर्षों से गुणा किया जाता है। कुल देय राशि की गणना इस प्रकार होगी :

$$P^* = P(1+nr)$$

इसमें P* कुल देय राशि है, P मूलधन है, n वर्ष हैं तथा r ब्याज़ की वार्षिक दर (प्रतिशत में) है। इस प्रकार सरल ब्याज़ के संदर्भ में *ब्याज़ पर ब्याज़ की गणना नहीं की जाती।*

Single currency (सिंगल करेन्सी)

दो या अधिक देशों द्वारा प्रयुक्त एक ही करेन्सी

कभी-कभी दो देश एक ही करेन्सी के उपयोग हेतु सहमत हो जाते हैं। इसके लिए इन देशों के केन्द्रीय बैंक करेन्सी की मात्रा तथा इसके जारी करने की समूची व्यवस्था पर समझौता करते हैं।

Single market (सिंगल मार्केट) **एकीकृत बाज़ार; साझा बाजार**

उदाहरण के लिए,सिंगल यूरोपीयन मार्केट एक्ट के अन्तर्गत सभी सदस्य देशों के परस्पर व्यापार में सभी वस्तुओं, श्रम तथा पूँजी के आवागमन में विद्यमान सभी अवरोधों को समाप्त कर दिया गया।

Single -peaked preferences (सिंगल पीक्ड प्रीफरेंसेज)

सर्वमान्य मत; एक मत वाली प्राथमिकताएँ

यदि सभी मतदाता एक ही विकल्प के पक्ष में अपनी प्राथमिकता व्यक्त करें, तो वही विकल्प सभी पक्षों को स्वीकार्य होगा। उदाहरण के लिए, लोकसभा में सभी सदस्य यदि किसी नीति या कार्यक्रम को सर्वसम्मति से समर्थन दें तो यह एक मत वाली प्राथमिकता कहलाएगी।

Skewness (स्क्यूनेस) **परिघात, विषमता**

समंकों के वितरण की एक विधि, जिसके द्वारा यह दर्शाया जाता है कि माध्य से अत्यधिक विचलन किस ओर हैं। एक संतुलित वितरण व्यवस्था के अन्तर्गत माध्य के दोनों ओर एक ही प्रकार के विचलन दिखाई देते हैं, जबकि धनात्मक परिघात उस समय माना जाता है जब ऊपर की ओर का विचलन नीचे की ओर वाले विचलन से अधिक हो

Sinking fund (सिंकिंग फंड)

दायित्व-अवसायन कोष, स्थिर सम्पत्ति प्रतिस्थापन कोष

ऐसा कोष, जिसमें नियमित रूप से एक राशि जमा की जाती है जिससे प्राप्त कुल राशि किसी सम्पत्ति के प्रतिस्थापन अथवा किसी दायित्व को पूरा करने हेतु पर्याप्त हो सके।

Skill (स्किल) **सामर्थ्य; कौशल**

किसी व्यक्ति या श्रमिक की अन्य व्यक्तियों या श्रमिकों की अपेक्षा श्रेष्ठ कार्य करने की योग्यता। श्रमिको को अकुशल, अर्द्ध-कुशल तथा कुशल कर्मचारियों में विभाजित करने का आधार यही है कि किस श्रमिक में अधिक ज्ञान, दक्षता एवं कौशल है।

Skimming price (स्किमिंग प्राइस) **अपेक्षाकृत ऊँची कीमत**

अधिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से कीमत को काफी अधिक बढ़ाया जा सकता है। यह नीति प्रायः उस वस्तु के विक्रेता द्वारा अपनाई जाती है जिसके उपभोक्ताओं पर कीमत वृद्धि का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता।

Slack (स्लैक) **अ-प्रयुक्त उत्पादन क्षमता**

संगठनात्मक अप्रयुक्त क्षमता तब उत्पन्न होती है जब फर्म या सरकार के पास **ज़रूरत से अधिक** कर्मचारी, उपकरण या भवन हों। प्रायः सभी आर्थिक इकाइयों के पास इस प्रकार की अप्रयुक्त क्षमता विद्यमान होती है, यानी उनके पास उपलब्ध *साधनों का इष्टतम उपयोग नही हो पाता।*

Slump (स्लंप) **मंदी**

एक दीर्घ अवधि जिसमें आर्थिक गतिविधियों का लम्बे समय तक नीचा स्तर होता है जिससे सर्वत्र बेरोज़गारी व्याप्त होती है।

Slutsky equation (स्लुट्स्की इक्वेशन) **स्लुट्स्की समीकरण**

इस समीकरण के आधार पर स्लुट्स्की ने बताया कि x या y की कीमत में परिवर्तन होने पर कुल माँग में जो परिवर्तन होता है वह प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव का सम्मिश्रण हैं।

$$\frac{dX}{dP_x} = \frac{\partial X}{\partial\left(\frac{P_x}{P_y}\right)U = const} + X\frac{\partial X}{\partial M(Px / Py = const)}$$

उपरोक्त समीकरण में X की कीमत में परिवर्तन होने पर अंशतः प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण X की माँग में परिवर्तन होता है। प्रतिस्थापन प्रभाव X तथा Y की सापेक्ष कीमतों के परिवर्तन को कहते हैं, परन्तु इसके अन्तर्गत उपभोक्ता को संतुष्टि के मूल स्तर (पुराना तटस्थता वक्र) पर ही रखा जाता है। यदि P_x/P_y में कमी होती है तो उपभोक्ता Y की मात्रा को कम करके X की मात्रा बढ़ाएगा। परन्तु स्लुट्स्की ने कहा कि कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता की मौद्रिक आय की क्रयशक्ति बढ़ जाती है, तथा इस आय प्रभाव के कारण वह X की मात्रा को और बढ़ा देता है, तथा सम्भवतः Y की भी अधिक मात्रा ख़रीदता है।

Smith, Adam (1723-1790) (एडम स्मिथ) **स्कॉटलैंड के एक अर्थशास्त्री**

जिन्होंने अठारहवीं शताब्दी में संस्थापक अर्थशास्त्र की नींव डाली। 1776 में प्रकाशित पुस्तक "एन इंक्वायरी इंटू दी नेचर एँड कॉजेस ऑफ दी वैल्थ ऑफ

नेशन्स'' में उन्होंन धन की उत्पत्ति को अर्थशास्त्र की केन्द्र विचारधारा का रूप दिया। उन्होंने श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण को दक्षता में वृद्धि का कारक बतलाया। स्मिथ ने यह भी कहा कि **स्व-हित की अदृश्य शक्ति** मानव को वस्तुओं के उत्पादन हेतु प्रेरणा देती है। स्मिथ प्रतियोगिता, पूर्ण बाज़ार तथा पूँजीवाद के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि पूर्ण प्रतियोगिता ही अर्थव्यवस्था में अधिकतम कल्याण की स्थिति को निरूपित करती है। उन्होंने कहा कि सरकार की भूमिका केवल प्रतिरक्षा, कानून–व्यवस्था तथा कुछ अनिवार्य सेवाओं की आपूर्ति तक ही सीमित रहनी चाहिए।

Social benefit (सोशल बेनिफिट) **सामाजिक लाभ**

किसी गतिविधि से प्राप्त सभी प्रकार के लाभ। इनमें फर्म या व्यक्ति को प्राप्त प्रत्यक्ष *आर्थिक लाभ के अतिरिक्त* बाहरी लाभ जो समाज के लोगों को मिलते हैं, उन्हें भी लाभों की गणना में शामिल किया जाता है।

Social cost (सोशल कॉस्ट) **सामाजिक लागत**

किसी गतिविधि से सम्बद्ध कुल लागतें। इनमें न केवल उस पर व्यय की गई निजी लागतों को, अपितु बाहरी लागतों को भी शामिल किया जाता है, जिन्हें समाज के लोग वहन करते हैं। बांध बनाने की वित्तीय लागत के अलावा विस्थापितों की पीड़ा तथा उनके पुनर्वास की लागत भी सामाजिक लागत में शामिल हैं।

Socialism (सोशलिज़्म) **समाजवाद**

इस विचारधारा के अनुसार अर्थव्यवस्था के पास विद्यमान संसाधनों का उपयोग समाज के सभी लोगों की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। समाजवाद के अन्तर्गत केन्द्रीय नियोजन की व्यवस्था होती है। इस प्रकार इस व्यवस्था में बाज़ारतंत्र तथा कीमत प्रणाली के आधार पर साधनों का आवंटन नहीं किया जाता। सभी वस्तुओं तथा साधनों की कीमतों का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है।

Social opporunity cost (सोशल ओपार्च्यूनिटी कॉस्ट) **सामाजिक अवसर लागत**

यदि साधनों की अधिक मात्रा एक वस्तु के अतिरिक्त उत्पादन हेतु प्रयुक्त की जाती है, तो दूसरी वस्तु के लिए उनकी उपलब्धता में कमी होगी, तथा इस प्रकार उस वस्तु के उत्पादन में कमी हो जाएगी। इस प्रकार, यदि X के उत्पादन में वृद्धि की जाए तो Y के उत्पादन में कमी होगी। सामाजिक अवसर लागत को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:

$-\frac{dY}{dX}$ (X के उत्पादन में वृद्धि होने पर Y के उत्पादन में की गई कमी)

Social overhead capital (सोशल ओवर हैड केपीटल)

सामाजिक पूँजी; ढांचागत पूँजी

इस प्रकार की सम्पत्ति, जिसका उपयोग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला है। सड़क, स्कूल

भवन, अस्पताल, सार्वजनिक पार्क, आदि इस प्रकार की ढांचागत पूँजी के रूप हैं जिनका किसी विशिष्ट प्रयोजन या व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति हेतु उपयोग नहीं होता।

Social products (सोशल प्रोडक्ट्स) **सामाजिक उत्पाद सार्वजनिक वस्तुएँ**

ऐसी वस्तएँ तथा सेवाएँ जो सरकार द्वारा जनहित के लिए प्रदान की जाती हैं, तथा जिनका लाभ आम व्यक्ति उठा सकता है। इनमें शिक्षा, पेय जल, स्वच्छता, भवन निर्माण, स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि शामिल हैं। प्रायः इस प्रकार की सुविधा से प्राप्त लाभ तथा इसके लिए चुकाई जाने वाली कीमत में कोई सम्बन्ध नहीं होता।

Social safety net (सोशल सेफ्टी नैट) **सामाजिक सुरक्षा कवच**

लोगों की आय को एक न्यूनतम स्तर पर बनाए रखने हेतु अल्प आय वाले व्यक्तियों को नगद या जिंस के रूप में भुगतान करने की व्यवस्था।

Social security benfits (सोशल सीक्योरिटी बेनीफिट्स)

सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी लाभ

देश के सभी नागरिकों को न्यूनतम जीवन-स्तर प्राप्त हो, इस आशय से किए जाने वाला भुगतान। सामान्य तौर पर ये लाभ शारीरिक रूप से अक्षम, वृद्ध व्यक्तियों तथा अल्पकालीन बेरोज़गारी के शिकार लोगों को दिए जाते हैं। ये भुगतान उस व्यक्ति के अतिरिक्त उसके आश्रितों–विशेष रूप से बच्चों के लिए दिए जाते हैं।

Social security contributions (सोशल सीक्योरिटी कॉंट्रीब्यूशन्स)

सामाजिक सुरक्षा हेतु योगदान

सामाजिक सुरक्षा हेतु स्थापित कोष में नियोजित व्यक्तियों अथवा उनके नियोक्ताओं द्वारा योगदान। करों की अपेक्षा इस प्रकार के योगदानों के प्रति नियोक्ताओं को कम असंतोष होता है। अधिकांश देशों में कर्मचारी तथा नियोक्ता दोनों ही को सामाजिक सुरक्षा हेतु योगदान देना होता है।

Social services (सोशल सर्विसेज) **सामाजिक सेवाएँ**

सामाजिक सुरक्षा का वह भाग, जिसमें नगद भुगतान की अपेक्षा व्यक्तिगत सम्पर्क को महत्व दिया जाता है। लोगों की न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं को नगद भुगतान करके पूरा किया जा सकता है। परन्तु कुछ लोगों को व्यक्तिगत सहायता देना भी ज़रूरी होता है। बच्चों को पोषाहार, प्राथमिक शिक्षा, व प्राथमिक स्वास्थ्य आदि भी इसी प्रकार की सामाजिक सेवाएँ हैं

Social wealfare function (सोशल वैल्फेयर फंक्शन)

सामाजिक कल्याण फलन

यह फलन इस मान्यता पर आधारित है कि सामाजिक कल्याण का माप सम्भव है। विभिन्न व्यक्तियों के कल्याण स्तरों का योग ही सामाजिक कल्याण हैं । प्रायः यह कल्याण उपभोक्ताओं की संतुष्टि स्तर, उत्पादकों द्वारा साधनों के आवंटन द्वारा किए गये उत्पादन स्तर तथा फर्मों के लाभों के स्तर पर निर्भर करता है।

ये सभी स्तर मापनीय हैं तथा इनके अधिकतम मूल्य प्राप्त होने पर सामाजिक कल्याण भी अधिकतम हो जाता है।

Socio-economic group (सोस्यो-इकोनोमिक ग्रुप) **सामाजिक-आर्थिक समूह**

किसी उपभोग वस्तु के क्रेताओं को उनके व्यवसाय, उम्र, आय, श्रम की प्रकृति, जाति के आधार पर विभाजित करना। प्रत्येक समूह में उपभोक्ताओं का व्यय तथा माँग की लोच अलग अलग हो सकती है। इसी के आधार पर बाज़ार का श्रेणी करण हो सकता है।

Soft budget constraint (सॉफ्ट बजट कॉस्ट्रेंट) **उदार बजट सीमा**

किसी सार्वजनिक इकाई द्वारा निर्धारित व्यय सीमा, जिसका उल्लंघन होने पर इसे आपत्ति -जनक नहीं माना जाता। उदाहरण के लिए, यदि किसी सार्वजनिक उपक्रम के प्रबन्धक यह मान लेते हैं कि उन्हें जो लाभ अर्जित करना है उससे कम लाभ प्राप्त होने, या उपक्रम को हानि होने, पर भी उनकी नौकरी पर कोई आंच नहीं आएगी, तो यह उदार बजट सीमा कहलाएगी। भारत में सार्वजनिक उपक्रमों के संदर्भ में यही धारणा प्रचलित रही है, तथा इनके प्रबन्धकों को दंडित करने की अपेक्षा सरकार इनके घाटे को बजटीय प्रावधानों से पूरा कर रही हैं ।

Soft currency (सॉफ्ट करेन्सी) **अपरिवर्तनीय मुद्रा**

ऐसी विदेशी मुद्रा जिसकी माँग पूर्ति की तुलना में बहुत कम है। प्रायः आर्थिक दृष्टि से दुर्बल देशों की मुद्रा या करेन्सी की आपूर्ति उसकी माँग की अपेक्षा बहुत अधिक रहती है। इन देशों को प्रतिकूल भुगतान शेष की गंभीर समस्या से जूझना पड़ता है, और इस कारण इन देशों की मुद्रा की विनिमय दर काफी नीची रहती है।

Soft landing (सॉफ्ट लैंडिंग) **सफलतापूर्ण स्थिरता लाना**

दीर्घकाल तक माँग के आधिक्य तथा मुद्रा स्फीति की समस्याओं से जूझने के बाद मूल्य स्थिरीकरण की सफलतापूर्ण नीति । इस प्रक्रिया में आगे चलकर मंदी की कोई सम्भावना नहीं होती,क्योंकि इसमें अत्यधिक कठोर मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियां नहीं अपनाई जातीं।

Soft loan (सॉफ्ट लोन) **उदार ऋण**

ऐसा ऋण, जिस पर सामान्य से काफी कम ब्याज़ लिया जाता है। इसी के साथ इसकी अदायगी काफी लम्बी अवधि में की जाती है, ब्याज तथा मूलधन की अदायगी कुछ अन्तराल के बाद की जाती है तथा कभी- कभी अपरिवर्तनीय मुद्रा के रूप में भी इसकी अदायगी की अनुमति दी जा सकती हैं। भारत जैसे विकासशील देशों को अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठन (IDA) को प्रायः इसी प्रकार के उदार ऋण दिए जाते हैं।

Soil erosin (सॉइल ईरोज़न) **मिट्टी का कटाव**

भूमि की सतह पर विद्यमान वनस्पति कवच के नष्ट होने के पश्चात् पानी (वर्षा

का पानी या बाढ़) तथा वायु के द्वारा मिट्टियों को नष्ट किया जाना। पिछड़े हुए देशों में जैसे-जैसे वन सम्पदा का क्षरण हुआ है, मिट्टी या भूमि के कटाव की समस्या ने एक गम्भीर रूप धारण कर लिया है।

Sole proprietor (सोल प्रोप्राइटर) **एकल स्वामी**

यदि किसी फर्म का स्वामित्व एक ही व्यक्ति के हाथ में हो तथा समूचे लाभ का वही स्वामी हो। स्वाभाविक है, वही एकल स्वामी व्यावसायिक हानि को भी वहन करेगा। जहां एक ओर अकेला व्यक्ति निर्णय लेने को स्वतंत्र रहता है, वहीं दूसरी ओर सकल स्वामी को असीमित दायित्व भी वहन करना पड़ता है।

Solow growth model (सोलो ग्रोथ मॉडल) **सोलो का आर्थिक विकास का मॉडल**

सोलो द्वारा प्रस्तुत मॉडल के अनुसार आर्थिक विकास, जनसंख्या की वृद्धि, तकनीकी प्रगति तथा निवेश पर निर्भर करता है। इस मॉडल में पूर्ण रोज़गार की स्थिति विद्यमान रहती है, तथा पैमाने के स्थिरमान प्रतिफल प्राप्त होते हैं। दीर्घकाल में जनसंख्या की वृद्धि तथा तकनीकी प्रगति ही विकास की दर का निर्धारण करती है; हालांकि अल्पकाल में निवेश में वृद्धि विकास की दर को बढ़ाती है। सोलो ने कहा कि जैसे जैसे पूँजी-उत्पादन अनुपात बढ़ता है, सकल राष्ट्रीय उत्पाद का उत्तरोत्तर अधिक हिस्सा निवेश हेतु प्रयुक्त किया जाता है, ताकि बढ़ती हुई श्रम शक्ति को पर्याप्त उपकरण प्राप्त होते रहें। यह मॉडल हैरोड डोमर मॉडल से भिन्न है क्योंकि उसमें पूँजी-उत्पादन का अनुपात स्थिर रहता है।

Spare capacity (स्पेयर केपेसिटी) **अप्रयुक्त मशीनें व उपकरण**

वर्तमान में जिस उपकरण की आवश्यकता नहीं है उसे अप्रयुक्त क्षमता कहा जाता है। अनेक बार माँग में आकस्मिक वृद्धि हो जाने पर इस क्षमता का उपयोग किया जा सकता है।

Special deposit (स्पेशल डिपोज़िट) **विशेष जमा विशिष्ट निक्षेप**

मौद्रिक नीति का एक अस्त्र, जिसके अनुसार बैंकों की तरल सम्पत्तियों का निर्दिष्ट भाग केन्द्रीय बैंक के पास जमा रहता है, जिसके आधार पर मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित किया जाता है। ये सामान्य रूप से जमा की गई राशि से भिन्न होते हैं।

Special drawing rights (SDR) (स्पेशल ड्रांइग राइट्स) **विशेष आहरण अधिकार**

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के सदस्य देशों की मौद्रिक सम्पत्ति, जो उनके अन्तर्राष्ट्रीय रिज़र्व की हिस्सा है। अन्य प्रकार के रिज़र्व – (जैसे स्वर्ण) की तरह से विशेष आहरण अधिकारों की कोई ज्ञात आयु नहीं होती । उनका सृजन अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ही करता है तथा इनकी प्रविष्टि मुद्राकोष द्वारा रखे जा रहे एक विशेष खाते में की जाती है।

Specialization (स्पेशलाइजेशन) **विशिष्टीकरण**

एक प्रकार का श्रम विभाजन, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति एक ही प्रकार का

कार्य करता रहता है, या फर्म एक ही क्रिया को सम्पन्न करती रहती है। एडम स्मिथ ने यह मान्यता ली थी कि एक ही क्रिया को बार बार दोहराने से व्यक्ति की दक्षता में वृद्धि होती है। इसीलिए उन्होंने कहा कि किसी फर्म को अनेक वस्तुएँ बनाने या किसी व्यक्ति को सभी कार्यों का सम्पादन न करके विशिष्टीकरण के आधार पर कार्य करना चाहिए। विशिष्टीकरण पूर्ण हो सकता है या आंशिक भी हो सकता है। सभ्यता के विकास के साथ आज सभी देशों में सुपर-विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देने लगी है।

Specific tax (स्पेसिफिक टैक्स) **विशिष्ट कर**

किसी वस्तु पर प्रति इकाई स्थिर दर से रोपित कर। यह कर उत्पादन या बिक्री की **प्रत्येक इकाई पर** लगाया जाता है न कि वस्तु की कीमत के अनुसार। इस कर की वसूली इसलिए आसान है कि वस्तु की इकाइयों की गणना उनके मूल्य की गणना की तुलना में अधिक सुविधा के साथ की जा सकती है।

Speculation (स्पेक्यूलेशन) **सट्टा**

वस्तुओं, सम्पत्तियों या करेन्सियों के मूल्य में होने वाले परिवर्तनों से लाभ उठाने के उद्देश्य से की गई आर्थिक गतिविधि। अनिश्चितता के वर्तमान दौर में अधिकांश सौदों में सट्टा निहित हो सकता है, परन्तु वस्तुतः सट्टे का उद्देश्य *अप्रत्याशित लाभ कमाना* है।

Speculative motive (स्पेक्यूलेटिव मोटिव) **सट्टा उद्देश्य**

जे. एम. कीन्स ने कहा कि लोग तीन उद्देश्यों को लेकर अपने पास मुद्रा रखना चाहते हैं : सौदा उद्देश्य, सतर्कता उद्देश्य तथा सट्टा उद्देश्य। उन्होंने आगे कहा कि प्रथम दो उद्देश्यों के अन्तर्गत ब्याज़ की दर का मुद्रा की माँग पर कोई प्रभाव नहीं होता, लेकिन प्रायः सट्टा उद्देश्य के लिए चाही गई मुद्रा की मात्रा बाज़ार में विद्यमान ब्याज़ दर से विपरीत दिशा में चलती है। यदि ब्याज़ की दर ऊँची है तो बांड्स की माँग बढ़ेगी लेकिन लोगों में मुद्रा की माँग कम हो जाएगी। सट्टे की प्रवृत्ति तब प्रारम्भ होती है जब बांड्स की कीमतें अधिक हैं—यानी ब्याज़ की दर कम है; और ऐसे समय लोग सट्टा उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपने पास मुद्रा रखना चाहेंगे। परन्तु जब बाँड्स की कीमतें कम हैं यानी ब्याज़ की दर अधिक होती है—तो लोग बॉंड्स खरीदेंगे और उनके पास सट्टा उद्देश्य से रखी गई मुद्रा की मात्रा कम हो जाएगी।

Speculator (स्पेक्यूलेटर) **सट्टेबाज**

ऐसा व्यक्ति जो अपेक्षित लाभ कमाने हेतु जोखिम लेने को तत्पर है वह इसलिए ऐसा करता है कि उसे अपने विद्यमान कीमत सम्बन्धी *सूचनाओं की विश्वसनीयता* पर भरोसा है जबकि अन्य लोगों के पास ये सूचनाएँ नहीं हैं। प्रायः सट्टेबाजों को इसलिए पसन्द नहीं किया जाता कि वे बाज़ार में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करते हैं।

Spill -over (स्पिल ओवर)

फैलाव; अर्थ व्यवस्था के विभिन्न भागों में एक प्रकार का सम्बन्ध

उदाहरण के लिए, यदि एक नई फैक्ट्री अकुशल श्रमिकों की प्रचलित मज़दूरी की दरों को बढ़ा देती है, जिससे सफाई कर्मचारियों तथा बागवानों की आय बढ़ जाती है, तो यह बाज़ार के माध्यम से सृजित फैलाव है। एक अन्य प्रकार के फैलाव के अन्तर्गत एक फर्म दूसरी फर्म के लिए बाह्य अमितव्ययताएँ पैदा कर सकती है, तथा किसी भी बाज़ार के माध्यम से इसमें सुधार नहीं हो सकता- इसके लिए केवल सरकारी हस्तक्षेप ही किया जाएगा।

Spot market (स्पॉट मार्केट) **हाज़िर बाजार, तात्कालिक क्रय विक्रय**

वस्तुओं तथा वित्तीय प्रतिभूतियों के क्रय विक्रय तथा उनकी तत्काल डिलीवरी हेतु हाज़िर बाज़ार में सौदे किए जाते हैं। इसके विपरीत, वायदा या फॉर्वर्ड बाज़ार में सौदे होने के बाद की किसी तिथि पर माल की सुपुर्दगी की जाती है।

Spot price (स्पॉट प्राइस) **तात्कालिक कीमत**

तत्काल सुपुर्दगी वाली वस्तुओं की कीमत।

Spread (स्प्रैड) **कीमतों का फैलाव**

किसी व्यापारी द्वारा उद्धृत (बोली वाली) कीमत तथा वास्तव में जिस कीमत पर वह वस्तु या प्रतिभूति बेचना या ख़रीदना चाहता है, उनके बीच का अन्तर । उदाहरण के लिए, जिस कीमत पर वह व्यापारी किसी प्रतिभूति या वस्तु को बेचना चाहता है, वह प्रायः उस कीमत से अधिक होती है जो वस्तु/प्रतिभूति की ख़रीद हेतु वह देना चाहता हैं । इनके अन्तर को ही फैलाव कहा जाता है।

Stability conditions (स्टैबिलिटी कंडीशन्स) **स्थिरता हेतु शर्तें**

किसी अस्थिरता वाली अर्थव्यवस्था में मूल (स्थिरता वाली) साम्य स्थिति तक पहुंचने हेतु प्रस्तुत आवश्यक शर्तें कभी मूल साम्य स्थिति तक न पहुंच पाने पर इन शर्तों के पूरा होने पर अस्थिरता को न्यूनतम किया जा सकता है।

Stabilization policy (स्टैबिलाइजेशन पॉलिसी)

स्थिरीकरण की नीति; माँग का प्रबन्धन

आर्थिक नीतियों द्वारा उच्चावचन रोकने हेतु प्रयुक्त करना । ये उच्चावचन मष्टिगत चरों जैसे वास्तविक आय, बेराजगारी , मुद्रा स्फीति या विनिमय दर, इनमें से किसी के भी स्तर से सम्बद्ध हो सकते हैं। किन्ही-किन्हीं वस्तुओं की कीमतों में उतार चढ़ाव वाली व्यष्टिगत स्थिति से निपटने हेतु भी स्थिरीकरण की नीति अपनाई जा सकती हैं। आर्थिक चरों में स्थिरता लाने हेतु सरकार कुछ "अन्तर्निहित स्थिरता कारक" तत्वों को अपनी नीति में प्रविष्ट कर सकती है। इस नीति के अन्तर्गत सरकार कर दरों में परिवर्तन कर सकती है, मुद्रा की मात्रा पर नियंत्रण कर सकती है अथवा विशिष्ट प्रकार की समस्याओं के लिए विशिष्ट नीति लागू कर सकती है, ताकि

कीमत स्तर,, उत्पादन, रोज़गार के स्तर, विनिमय दर आदि में होने वाले उतार चढ़ावों में कमी लाई जा सके।

Stackelberg duopoly (स्टैकलबर्ग ड्यूओपोली)

द्वयाधिकार का स्टैकलबर्ग मॉडल

ऐसा बाज़ार, जिसमें दो विक्रेता –"अ" तथा "ब" हैं तथा दोनों में से कोई एक कीमत नेतृत्व करता है जबकि दूसरा उसका अनुसरण करता है। स्टैकलबर्ग ने स्पष्ट किया कि द्वयाधिकार वाले बाज़ार में न तो दोनों विक्रेता कीमत नेतृत्व कर सकते हैं, और न ही एक दूसरे का अनुसरण कर सकते हैं– बाज़ार में स्थिरता लाने हेतु दोनों में से एक को तो नेतृत्व करना ही है।

Stages of growth (स्टेजेज ऑफ ग्रोथ) **संवृद्धि या विकास के चरण**

वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार आर्थिक विकास की प्रक्रिया एक क्रम में ही सम्पादित की जाती है। प्रारम्भिक चरण में उत्पादन की तकनीक, बचत, निवेश, आय स्तर बहुत निम्न स्तर पर होते हैं, लेकिन आर्थिक विकास के साथ- साथ इनमें एक चरण बद्ध रूप में वृद्धि होती जाती है। उदाहरण के लिए, सैंकडों वर्ष पूर्व सामन्तवाद प्रचलित था, फिर पूँजीवाद का आविर्भाव हुआ, फिर समाजवाद और पुनः स्वतंत्र बाज़ार वाली अर्थ व्यवस्था की स्थापना की गई। इसी प्रकार आखेट युग, पशु पालन, कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्रों का भी **एक क्रम में ही** आविर्भाव हुआ। रोस्टोव ने विकास के पांच चरण बतलाए हैं। परम्परागत समाज, स्वयं-स्फूर्त से पूर्व की स्थिति, स्वयं -स्फूर्त व्यवस्था, परिपक्वता की ओर कदम, तथा उच्च–स्तरीय उपभोग की स्थिति।

Stagflation (स्टैफ्लेशन)

उच्च स्तर की स्फीति एवं उच्चस्तर की बेरोज़गारी का सह-अस्तित्व

ऐसी स्थिति, जिसमें किसी देश में लगातार मुद्रा स्फीति तथा बेरोज़गारी एक साथ चलती हैं। सामान्य तौर पर मुद्रा स्फीति के दौरान बेरोज़गारी का स्तर घटता है, परन्तु कभी-कभी *कीमतें बढ़ने पर भी उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती,* और बेरोज़गारी का स्तर बढ़ता जाता है। बहुधा व्यापारी ऊँची कीमतों पर वस्तएँ खरीदते हैं, और ऐसी स्थिति में माँग के स्तर को बढ़ाने हेतु कीमतों में कमी नहीं कर पाते। इनसे उत्पादन का स्तर भी नीचा बना रहता है।

Stakeholders (स्टेक होलडर्स) **हकदार**

किसी परियोजना या नीति से जुड़े हुए लोग। इनमें उससे लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों या संस्थाओं के अतिरिक्त सरकार तथा उन सभी व्यक्तियों व संस्थाओं को भी शामिल किया जाता है जो उस परियोजना में पूँजी निवेश करते हैं तथा जिन पर उससे प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। किसी कम्पनी में शेयरधरियों के अलावा कम्पनी के निदेशकों तथा कर्मचारियों को हकदार माना जा सकता है। इसी प्रकार कम्पनी की वस्तुओं के क्रेताओं की भी कार्यकलापों में रुचि होती है।

Standardization (स्टैन्डर्डिजेशन) **प्रामाणीकरण**

(1) किसी वस्तु का निर्दिष्ट लक्षणों के अनुरूप उत्पादन करना, तथा उसे बिक्री हेतु प्रामाणिक घोषित करना।।

(2) किसी फर्म के उत्पादों की रेन्ज को सीमित करना ताकि उसका उत्पादन तथा विपणन कम लागत पर किया जा सके। उत्पादों की संख्या सीमित रह जाने पर वृहत् स्तर पर उत्पादन किया जा सकता है, जिससे पैमाने की बचतें प्राप्त होती हैं। परन्तु प्रायः कुछ ही उत्पादों को तैयार करने से फर्म की कुल बिक्री राशि पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकता है।

Standard of living (स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग) **जीवन स्तर**

लोगों की जीवन शैली के मौद्रिक तथा अ-मौद्रिक तत्व। जीवन स्तर के परोक्ष मापदंड (प्रॉक्सी) हेतु प्रति व्यक्ति आय को देखा जाता है। परन्तु इससे भी अधिक व्यापक अर्थ में उपभोग में प्रयुक्त खाद्य सामग्री, कपड़ा, मकान, आराम की वस्तुओं के अलावा शिक्षा के स्तर, कानून व्यवस्था, पर्यावरण आदि को भी जीवन स्तर की गुणवत्ता के माप हेतु देखा जाता हैं ।

Standard deduction (स्टैंडर्ड डिडक्शन) **मानक कटौती**

निश्चित् आय प्राप्त करने वालों की आय में से एक निर्दिष्ट राशि को कर–निर्धारण हेतु शामिल नहीं किया जाता। यह छूट सभी श्रेणियों की आय वाले लोगों को उपलब्ध होती है, तथा इसे घटाने के बाद शेष आय पर ही आय-कर का निर्धारण किया जाता है।

Standard rate of taxation (स्टैंडर्ड रेट ऑफ टैक्सेशन)

कर की प्रारम्भिक दर

इससे अधिक आय पर प्रगतिशील कर प्रणाली के अन्तर्गत कर की दर भी बढ़ती जाती है, जबकि आनुपातिक कर प्रणाली में उसी दर से कर वसूल किया जाता है।

Standard and poor (S&P) (स्टैन्डर्ड एन्ड पूअर)

अमरीका की एक प्रमुख क्रेडिट रेटिंग कम्पनी, जो 500 महत्वपूर्ण शेयरों का सूचकांक तैयार करती है जिनका न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज में क्रय विक्रय किया जाता है, तथा जो शेयरों के व्यापार का तीन चौथाई नियंत्रित करती हैं।

Stand- by arrangement (स्टैन्ड बाई एरेन्जमेंट)

प्रतिकूल भुगतान-शेष हेतु तैयारी

(1) विभिन्न देशों के केन्द्रीय बैंकों द्वारा की गई तैयारी, जिसके अनुरूप वे एक दूसरे के रिज़र्व कोषों का प्रयोग करके विनिमय दरों की स्थिरता को सुनिश्चित् करते हैं।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा किसी सदस्य देश के बीच की व्यवस्था, जिसके

अनुसार उस देश को निर्दिष्ट राशि की सीमा में मुद्रा कोष से ऋण लेने का अधिकार दिया जाता है।

Staple product (स्टैपल प्राडक्ट) **आधार खाद्य**

ऐसी खाद्य वस्तु, जिसके उपभोग पर आय में परिवर्तन होने से कोई परिवर्तन नहीं होता, अथवा नाम मात्र का परिवर्तन हो पाता है। प्रायः ऐसी खाद्य वस्तुओं की माँग की आय लोच बहुत कम होती है। भारत के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में मोटा चावल, ज्वार या बाजरे का उपभोग किया जाता है। वहां इन अनाजों को आधार खाद्य माना जा सकता है।

Standard error (स्टैंटर्ड एरर) **मानक त्रुटि**

किसी प्राचल के अनुमानित मूल्य की विश्वसनीयता का माप। जैसे-जैसे प्रतिदर्श का आकार बढ़ता है, मानक त्रुटि के मूल्य में कमी होती जाती है

State-owned company (स्टेट ओन्ड कम्पनी) **सरकार के स्वामित्व वाली कम्पनी**

ऐसी कम्पनी, जिसके शेयर सरकार के पास हैं। इन्हें सार्वजनिक उपक्रम भी कहा जाता है।

Statistical discrepancy (स्टैटिस्टिकल डिस्क्रीपैंसी) **सांख्यिकीय विषमता**

अलग-अलग विधियों से समंको का मूल्य ज्ञात करने पर उनमें जो अन्तर दिखाई देता है उसे सांख्यिकीय विषमता कहते हैं। यदि सांख्यिकी विशेषज्ञों को यह ज्ञात नहीं है कि किस विधि से सही समंक प्राप्त हो सकते हैं तो वे इनकी तालिका में सांख्यिकी विषमता को प्रविष्ट करा सकते हैं।

Statutory monopoly (स्टैट्यूटरी मोनोपोली) **वैधानिक एकाधिकार**

कानूनी तौर पर प्रतिद्वन्द्वियों को बाज़ार में प्रवेश करने से रोकने पर फर्म को एकाधिकार प्राप्त हो जाता है।

Sterling area (टर्लिंग एरिया) **स्टर्लिंग क्षेत्र**

पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश वाले देशों में करेन्सी को लम्बे समय तक पाउंड स्टर्लिंग से सम्बद्ध रखा गया था। ये सब स्टर्लिंग क्षेत्र वाले देश कहलाए गए।

Sticky wages (स्टिकी वेजेज) **अनम्य मज़दूरी**

बाज़ार की परिस्थितियों में परिवर्तन होन पर भी मज़दूरी की दरों में कोई परिवर्तन न होने पर उसे अनम्य मज़दूरी कहा जाता है। प्रायः श्रमिक संघ मज़दूरी की दर में किसी भी प्रकार की कटौती पसन्द नहीं करते, तथा इसका पुरजोर विरोध करते हैं। यदि मुद्रा स्फीति चल रही हो तो वे यह प्रयास करते हैं कि मौद्रिक मज़दूरी में कम से कम उतनी वृद्धि हो जो मुद्रा स्फीति से वास्तविक मज़दूरी में होने वाली कमी की क्षतिपूर्ति कर सके।

Stochastic (स्टॉकेस्टिक) **प्रसम्भाव्य**

दैव मूल्य। एक प्रसम्भाव्य प्रक्रिया वह है जिसमें आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रायः उन पर दैव घटनाओं का प्रभाव होता है।

Stock (स्टॉक) **स्टॉक**

(1) किसी समय-बिन्दु की स्थिति को दर्शाने वाला चर। इसमें तथा प्रवाह में यह अन्तर है कि प्रवाह एक अवधि में किसी चर में होने वाले परिवर्तन को दिखाता है। फर्म की सम्पत्ति जैसे मशीने, भवन, रिज़र्व आदि को स्टॉक की श्रेणी में रखा जाता है, जबकि लाभ, उत्पादन आदि को प्रवाह माना जाता है।

(2) वस्तुओं की वह मात्रा, जो फर्म के गोदाम में रखी गई है। सरकारी गोदामों में विद्यमान बफर स्टॉक भी स्टॉक ही कहलाएगा।

(3) साधारण शेयरों का पर्याय, अथवा सरकार द्वारा निर्गमित ऋण-पत्र।

Stock appreciation (स्टॉक एप्रीसिएशन)

निर्दिष्ट अवधि में किसी व्यक्ति के पास विद्यमान शेयरों के मूल्य में वृद्धि

बहुधा बाज़ार में किसी फर्म या कम्पनी के पास मौजूद शेयरों की कीमत बढ़ जाने पर भी सम्बद्ध कम्पनी उसकी बढ़ी हुई कीमत को समायोजित करके मूल कीमत तक ले आती है, जिससे उसे अधिक कर न चुकाना पड़े। राष्ट्रीय आय के अनुमान में भी स्टॉक या शेयरों की बाज़ार कीमतों (बढ़ी हुई कीमतों) को शामिल न करके उनकी कीमतों की वृद्धि को आय नहीं माना जाता।

Stock broker (स्टॉक ब्रोकर) **शेयर दलाल**

ऐसा व्यक्ति, जो अन्य व्यक्तियों के लिए शेयर या अन्य प्रकार की वित्तीय प्रतिभूतियां ख़रीदता एवं बेचता है। वह ऐसा प्रयास करता है कि शेयरों या प्रतिभूतियों की ख़रीद निम्नतम कीमतों पर करे, तथा उनकी बिक्री अधिकतम कीमत पर करे। अपने इस कार्य के बदले वह क्रेता तथा विक्रेता से दलाली लेता है। प्रतिभूतियों व शेयरों के क्रेताओं तथा विक्रेताओं को वह परामर्श भी देता है।

Stock control (स्टॉक कन्ट्रोल)

तैयार वस्तुओं व कच्चे माल के स्टॉक तथा कार्य प्रगति पर नियंत्रण रखना

इसका उद्देश्य स्टॉक को बनाए रखने की लागत को न्यूनतम करना है। इसके अतिरिक्त माँग में अचानक वृद्धि होने पर वस्तुओं व कच्चे माल की पर्याप्त उपलब्धता को सुनिश्चित् करना भी इसका एक प्रयोजन हो सकता है।

Stock dividend (स्टॉक डिविडेंड) **स्टॉक का लाभांश**

वह स्थिति जिसमें शेयर धारी उनके लाभांश को कम्पनी के नए शेयरों के रूप में प्राप्त करते हैं। कम्पनी के लिए यह व्यवस्था सार्वजनिक निर्गम की तुलना में अधिक मितव्ययता पूर्ण होती है।

Stock exchange (स्टॉक एक्सचेंज) **स्टॉक बाज़ार**

ऐसा बाज़ार, जिसमें शेयरों तथा सरकारी बॉडों का क्रय-विक्रय किया जाता है। किसी अर्थव्यवस्था में सरकार तथा उद्योगों के लिए पूँजी जुटाने का यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है। स्टॉक बाज़ार के सामान्यतया दो कार्य होते है : (अ) नए शेयरों के निर्गम की

व्यवस्था, तथा (ब) द्वितीयक बाज़ार सम्बन्धी कार्य, जिसमें पूर्व में ख़रीदे गए शेयरों की खरीद व बिक्री की जाती है। भारत में मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, कानपुर, अहमदाबाद, बंगलोर आदि स्थानों पर प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज कार्यरत हैं।

Stock exchange listing (स्टॉक एक्सचेंज लिस्टिंग) **स्टॉक एक्सचेंज में-सूचीबद्ध करना**

किसी कम्पनी को शेयरों की ख़रीद व बिक्री हेतु अधिकृत करना। परन्तु इसके लिए कम्पनी को वांछित सूचनाएँ समय-समय पर प्रस्तुत करनी पड़ती है, तथा अपने शेयरों का निश्चित् भाग जनता के लिए रिज़र्व रखना पड़ता है।

Stock market crash (स्टॉक मार्केट क्रैश) **स्टॉक बाज़ार में आकस्मिक तथा व्यापक संकट**

इसके अन्तर्गत शेयरों की कीमतों में अचानक गिरावट आ जाती है। प्रायः तेजड़ियों द्वारा शेयरों की कीमतों को काफी ऊँचाइयों पर ले जाने के बाद ऐसा संकट उपस्थित होता है।

Stock option (स्टॉक ऑप्शन) **शेयर क्रय का विकल्प**

भविष्य की किसी तिथि पर पूर्व –निर्धारित कीमत पर शेयर ख़रीदने का अधिकार। यह विकल्प प्रायः कम्पनी के निदेशकों तथा उच्च अधिकारियों को ही उनकी सेवाओं के बदले दिया जाता है। आवंटियों को ये शेयर इनकी बाज़ार कीमत से काफी कम मूल्य पर दिए जाते हैं।

Stockpile (स्टॉक पाइल) **वस्तु का भारी स्टॉक जमा होना**

गेहूँ, चावल, तेल, कपास आदि जिंसों को किसी विशेष रणनीति के तहत भारी मात्रा में जमा रखना जिनके आधार पर इन वस्तुओं की कीमतों को स्थिर रखने का प्रयास किया जाता है। संकट कालीन स्थिति में यह स्टॉक जनता के लिए काफी राहत देने वाला होता है।

Stop-go-cycle (स्टोप–गो–साइकल) **ठहरो-जाओ-चक्र**

सरकार की ऐसी नीति जिसके अन्तर्गत बारी बारी से प्रभावी माँग को कम करने तथा बढ़ाने की नीतियाँ अपनाई जाती हैं। इन नीतियों के माध्यम से कीमतों में स्थिरता लाने का प्रयास किया जाता है, तथा क्रमानुसार राजकोषीय तथा मौद्रिक नीतियों में परिवर्तन किए जाते हैं।

Store of value (स्टोर ऑफ वैल्यू) **मूल्य का संचय**

मुद्रा के प्रमुख कार्यों में एक कार्य। इसके अनुसार आम व्यक्ति अपनी बचत को मुद्रा के रूप में प्रायः इसलिए रखते हैं कि अन्य वस्तुओं की भांति न तो मुद्रा जल्दी नष्ट होती है, और न ही इसके मूल्य में भारी उतार -चढ़ाव होते हैं। इन्हीं कारणों से लोग अपनी सम्पत्ति का एक भाग मुद्रा के रूप में संचित करके रखते हैं

Straight line depreciation (स्ट्रेट लाइन डेप्रसिएशन)

समान मूल्य ह्रास व्यवस्था

किसी भी सम्पत्ति के मूल्य ह्रास को अपने लेखों में प्रविष्ट करने हेतु या तो प्रारम्भिक वर्षों में अधिक मूल्य ह्रास दर्ज किए जाएं, अथवा संपत्ति की आयु पर्यन्त एक ही राशि से सम्पत्ति का मूल्य ह्रास माना जाए। यदि कोई संयंत्र 50 लाख रु. में ख़रीदा जाए तथा इसकी आयु 10 वर्ष मानी जाए तो प्रतिवर्ष 5 लाख रु. का प्रावधान मूल्य ह्रास हेतु करना होगा।

Strategic entry deterrence (स्ट्रेटेजिक एँट्री डैटरेंस)

प्रतिद्वंद्वियों के प्रवेश को रोकने की रणनीति

किसी फर्म द्वारा अपनाई गई वह रणनीति, जिसके द्वारा वह बाज़ार में अन्य फर्मों के प्रवेश को अवरूद्ध कर देती है। वह फर्म भारी निवेश कर सकती है, बहुत कम कीमत पर दीर्घकाल तक वस्तु को बेच सकती है, या उपभोक्ताओं को अपनी वस्तु का दीर्घकाल तक उपयोग करने का आदी बना सकती है।

Strategic game (स्ट्रेटजिक गेम)

बाजार में विभिन्न प्रतिद्वन्द्वियों की पारस्परिक जवाबी रणनीति

बाज़ार में प्रत्येक फर्म अपने प्रतिद्वन्द्वियों की संभावित रणनीति एवं उससे उत्पन्न प्रतिफल का अनुमान करके अपनी जवाबी रणनीति की घोषणा करती है। प्रायः पूर्ण प्रतियोगिता अथवा एकाधिकार के अन्तर्गत जवाबी रणनीतियों की आवश्यकता नहीं होती; केवल द्वयाधिकार या अल्पाधिकार वाले बाज़ार में ही विक्रेताओं की पारस्परिक जवाबी रणनीति अपनाई जाती है।

Strategic trade policy (स्ट्रैटेजिक ट्रेड पॉलिसी)

अन्य देशों के व्यापार को प्रभावित करने वाली व्यापार नीति

ऐसी नीति अपनाने वाला देश सभी अन्य देशों द्वारा अपनाई जाने वाली व्यापार नीतियों एवं उनसे उत्पन्न होने वाले प्रभावों का अध्ययन करके ही कोई निर्णय लेता है।

Strategic trade retaliation (स्ट्रेटेजिक ट्रेड रिटैलिएशन)

बदले की भावना से अनुप्रेरित व्यापार रणनीति

किसी एक देश की नीति के फलस्वरूप दूसरा देश प्रतिशोधात्मक रणनीति अपनाता है। यदि देश "अ" आयात कर में वृद्धि करता है, या "ब" से आने वाली वस्तुओं के कोटे में कमी कर देता है, तो यह "ब" को निर्णय करना है कि वह बदले की कार्यवाही करे या नहीं।

Strategy (स्ट्रेटेजी) **रणनीति**

भविष्य में होने वाली अदृश्य घटनाओं से निपटने की कार्य योजना, जिसमें निरूपित नियमों की अनुपालना परिस्थितियों पर निर्भर करेगी। "ब" या "स" द्वारा कोई भी नीति अपनाई जाए, "अ" इस प्रकार की नीति अपनाएगा जो प्रतिद्वन्द्वियों की

प्रतिकूल चालों के बावजूद उसे स्वयं को अधिकतम लाभ दे, या न्यूनतम हानि पहुंचाए । इसे "अ" की प्रभावी रणनीति माना जाएगा।

Strike (स्ट्राइक) **श्रमिकों की हड़ताल**

श्रमिकों के एक समूह या सभी श्रमिकों द्वारा किसी आन्दोलन के अन्तर्गत काम न करना । मालिकों की दृष्टि में वही हड़ताल वैध होती है जिसका आयोजन पूर्व सूचना के आधार पर किसी मान्यता–प्राप्त श्रमिक संघ द्वारा किया गया हो।

Structural reforms (स्ट्रक्चरल रिफॉर्म्स) **संरचनात्मक सुधार**

जब किसी देश में आर्थिक नीतियों मे आधारभूत परिवर्तन हों। उदाहरण के लिए, सरकारी नीतियों में व्यापक रूप से उदारता लाना, देश की अर्थव्यवथा में खुलापन लाने हेतु आयातों पर विद्यमान अंकुश (आयात कर, मात्रात्मक प्रतिबन्ध आदि) को समाप्त करना, सरकारी उद्योगों का स्वामित्व /प्रबन्धन निजी हाथों में देना आदि ऐसे आधारभूत नीतिगत परिवर्तन हैं, जो पूर्व में विद्यमान नीतियों से सर्वथा भिन्न अर्थव्यवस्था को जन्म दे सकते हैं।

Structural transformation (स्ट्रक्चरल ट्रान्स्फॉर्मेशन्स)

संरचनात्मक रूपान्तरण, अर्थव्यवस्था में व्यापक फेर बदल

(देखें structural reforms).

Structural unemployment (स्ट्रक्चरल अन्एम्प्लायमेंट)

संरचनात्मक बेरोज़गारी

उत्पादन प्रक्रिया में परिवर्तन या किन्हीं उद्योगो में मंदी के फलस्वरूप होने वाली दीर्घकालीन बेरोज़गारी; आधारभूत बेरोज़गारी। इस बेरोज़गारी के पीछे प्रभावी माँग में आने वाली कमी भी एक कारण हो सकता है।

Structure of industry (स्ट्रक्चर ऑफ इन्डस्ट्री) **अर्थ-व्यवस्था की संरचना**

किसी अर्थव्यवस्था की उत्पादक गतिविधियों को आर्थिक क्षेत्रों के आधार पर विभाजित करना। उदाहरण के लिए, आर्थिक गतिविधियों को कृषि, उद्योग, सेवा आदि क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है; या फिर प्राथमिक,द्वितीयक एवं सेवा क्षेत्रों के रूप में राष्ट्रीय आय या रोज़गार के अनुपात प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

Subsidiarity (सब्सिडियरिटी) **प्रभावी विकेन्द्रित नीति**

इस सिद्धान्त के अनुसार किसी नीति को अधिक प्रभावी तभी बनाया जा सकता है जब इस पर लिए गए निर्णय अत्यधिक विकेन्द्रित स्तर पर लिए जाएँ। उदाहरण के लिए, प्राथमिक शिक्षा या स्वास्थ्य के विषय में राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा पंचायत **समिति स्तर** पर निर्णय लेना अधिक सार्थक होगा। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र हेतु इनपुट्स के उपयोग अथवा नई तकनीक का प्रसारण भी स्थानीय स्तर पर ही निर्धारित होने से यह नीति अधिक प्रभावी होगी।

Subsidiary firm (सब्सिडियरी फर्म) **सहायक फर्म**

ऐसी फर्म, जो किसी अन्य फर्म द्वारा नियंत्रित की जाती हो। प्रायः मुख्य कम्पनी महत्वपूर्ण निर्णय का अधिकार स्वयं रखती है, तथा शेष निर्णयों या महत्वपूर्ण *निर्णयों की क्रियान्विति* सहायक फर्म पर छोड़ देती है।

Subsidized inputs (सब्सिडाइज्ड इनपुट्स) **अनुदानित इनपुट्स**

अनेक विकासशील देशों में नवीन प्रौद्योगिकी को कमज़ोर तबके वाले उत्पादकों में लोकप्रिय बनाने हेतु खाद,बीज सिंचाई का पानी, उर्वरक, और यहां तक कि साख पर भी सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है । विशिष्ट प्रकार के औद्योगिक कच्चे माल पर भी सरकार द्वारा सब्सिडी या अनुदान दिया जाता रहा है । इन सभी अनुदानों के पीछे सरकार की मंशा यह रहती है कि देश का आर्थिक विकास द्रुत गति से हो।

Subsidy (सब्सिडी) **अनुदान**

लागत से जब किसी इनपुट या वस्तु की कीमत कम रखी जाए तो यह अन्तर सरकारी कोष से अनुदान के रूप में दिया जाता है। भारत में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को अनाज़ पर, छोटे कृषकों को उर्वरकों, सिंचाई के जल पर तथा बिजली आपूर्ति पर अनुदान दिया जाता है।

Subsistence level (सब्सिस्टेंस लेवल) **न्यूनतम उपभोग स्तर**

यह उपभोग स्तर उन परिवारों को केवल जीवित रखने हेतु पर्याप्त होता है। प्रायः न्यूनतम जीवन स्तर थोड़े ही समय के लिए चल पाता है, और अन्ततः ऐसे व्यक्तियों को सरकारी सहायता देना अपरिहार्य हो जाता है।

Subsistence wages (सब्सिस्टेंस वेजेज़) **न्यूनतम मज़दूरी**

मज़दूरी का वह स्तर, जो श्रमिको को केवल जीवित रहने योग्य आय प्रदान करता है। (देखें subsistence level)'

Substitite (सब्स्टिीट्यूट) **स्थानापन्न वस्तु या सेवा**

ऐसी वस्तु या सेवा, जिसका किसी अन्य वस्तु या सेवा के स्थान पर उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, नाश्ते के लिए इडली सांभर के स्थान पर बटर –टोस्ट का उपयोग किया जा सकता है। स्थानापन्न वस्तुओं में कुछ तो अत्यंत निकट की हो सकती हैं, जैसे स्नान के लिए अनेक साबुन, या कपड़े धोने के लिए अनेक ब्रांड के डिटर्जेंट बाजार में उपलब्ध हैं। इनके विपरीत कॉफी व चाय के बीच या पैट्रोल, व डीज़ल के बीच बहुत ही कम स्थानापन्नता होती है।

Substitution effect (सब्स्टीट्यूशन इफेक्ट) **प्रतिस्थापन प्रभाव**

दो वस्तुओं की सापेक्ष कीमतो (जैसे $\frac{P_x}{P_y}$) में परिवर्तन होने पर उन वस्तुओं के

अनुपात $\left(\frac{Y}{X}\right)$ में होने वाला परिवर्तन। मान जीजिए, $P_x=10$ तथा $P_y=6$ तथा X व Y की मात्राएँ क्रमशः 6 व 8 हैं। अब यदि $P_x=8$ हो जाए और इसके फलस्वरूप X की मात्रा बढ़कर 8 तथा Y की मात्रा 6 रह जाए तो प्रतिस्थापन प्रभाव को निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है:

$$\sigma = \frac{\Delta\left(\frac{Y}{X}\right)}{\Delta\left(\frac{P_x}{P_y}\right)} \cdot \frac{\frac{P_x}{P_y}}{\frac{Y}{X}}$$

उपरोक्त उदाहरण के अन्तर्गत $\frac{P_x}{P_y}$ में कमी होने पर $\frac{Y}{X}$ में भी कमी होती है, अर्थात् सापेक्ष कीमत में जिस दिशा का परिवर्तन होता है उसी के अनुरूप Y का उपयोग कम करके उपभोक्ता X की माँग को बढ़ाता है। इसीलिए प्रतिस्थापन प्रभाव के गुणांक को धनात्मक रूप $(\sigma > 0)$ दिया जाता है।

Sufficient condition (सफीशिएँट कंडीशन)

पर्याप्त शर्त, द्वितीय क्रम की शर्त

(देखे necessary condition) । किसी फलन (Y)का अधिकतम मूल्य वहां होगा जहां इसका द्वितीय अवकलज ऋणात्मक हो जाए $\left(\frac{d^2Y}{dX^2} < 0\right)$। इसी प्रकार न्यूनतम मूल्य के लिए द्वितीय अवकलज का मूल्य धनात्मक होना चाहिए।

Sunk costs (संक कॉस्ट्स) **सम्पत्ति का अपरिवर्तनीय उपयोग**

किसी ऐसी सम्पत्ति में किया गया निवेश, जो केवल निर्धारित प्रयोजन हेतु ही उपयोगी हो। बड़े आकार का वातानुकूलन प्लांट इसका एक उदाहरण है, जिसे न तो स्थानान्तरित किया जा सकता है और न ही किसी अन्य उपयोग में लिया जा सकता है। प्रायः अल्पकालीन उत्पादन सम्बन्धी निर्णय प्रक्रिया में ऐसे निवेश की कोई भूमिका नहीं होती।

Superannuation (सुपरएन्यूएशन)

सेवा निवृत्ति की आयु के समय कर्मचारी को किया गया भुगतान

प्रायः कर्मचारी की पगार में से उसके काम पर रहते हुए इस भुगतान हेतु नियमित रूप से निर्धारित राशि की कटौती की जाती है, जिसे सेवा निवृत्ति के समय काम में ले लिया जाता है।

Supermarket (सुपर मार्केट)

एक वृहत्-स्तरीय स्वयं-सेवा वाला खुदरा विक्रय केन्द्र

सुपर मार्केट एक एकल स्वामित्व वाला बड़ा केन्द्र हो सकता है, अथवा विभिन्न स्थानों या शहरों में श्रृंखला (चेन स्टोर) के रूप में चलाया जा सकता है।

Super-normal profit (सुपर नॉर्मल प्रॉफिट) **असामान्य लाभ**

अर्थशास्त्र में सामान्य लाभ की स्थिति वह है जिसमें कीमत तथा वस्तु की औसत लागत में समानता हो (P=AC)। तदनुसार, असामान्य लाभ वह राशि है जो किसी फर्म को वस्तु की औसत लागत से कीमत के आधिक्य के रूप में प्राप्त होती है $(\pi_A = P - AC > 0)$ । यह माना जाता है कि जब पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में एक फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त होता है (और इस कारण सभी फर्मों को असामान्य लाभ मिल रहे होते हैं) तो बाज़ार में तब तक नई फर्मों का प्रवेश होता रहेगा जब तक कि प्रत्येक फर्म सामान्य लाभ की स्थिति में नहीं पहुंच जाती।

Supply (सप्लाई) **पूर्ति, आपूर्ति**

निर्दिष्ट कीमत पर बाज़ार में बिक्री हेतु प्रस्तुत वस्तु की मात्रा।

Supply curve (सप्लाई कर्व) **पूर्ति वक्र**

ऐसा वक्र, जो विभिन्न फर्मों द्वारा विभिन्न कीमतों पर बिक्री हेतु प्रस्तुत मात्रा को प्रदर्शित करता है। सामान्यतया जैसे जैसे वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, वस्तु की पूर्ति बढ़ती जाती है।

Supply function (सप्लाई फंक्शन) **पूर्ति फलन**

किसी वस्तु की पूर्ति तथा उसे प्रभावित करने वाले घटकों का गणितीय सम्बन्ध । $S_y = f(P_y, P_{xi}, T, G)$; इस फलन में Y की पूर्ति निम्न घटकों पर निर्भर करती है: P_y या Y की कीमत, साधनों की कीमतें (P_{xi}), उत्पादन की तकनीक (T) तथा फर्म का उद्देश्य (G) ।
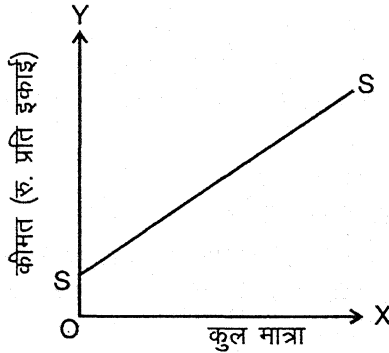
उपरोक्त चित्र में SS एक पूर्ति वक्र है जो बतलाता है कि जैसे जैसे वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, बाज़ार में वस्तु की कुल पूर्ति बढ़ती जाती है।

Supply side economics (सप्लाई साइड इकोनोमिक्स) **पूर्ति पक्ष का अर्थशास्त्र**

इस दृष्टि के अनुसार चाहे अल्पकाल हो या दीर्घकाल, अर्थव्यवस्था का विकास प्रभावी माँग की अपेक्षा पूर्ति को प्रभावित करने वाले घटकों पर अधिक निर्भर करता है। इनमें कर प्रणाली में संशोधन (जिससे नवोत्पादन तथा निदेश को प्रोत्साहन मिलता है), प्रतिबन्धात्मक व्यवस्था में सुधार, परिवहन तथा अन्य प्रकार के ढांचागत विकास, बेहतर प्रशिक्षण ,सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था में सुधार आदि 'शामिल हैं। इसके विपरीत कीन्स ने प्रभावी माँग को आर्थिक विकास का उत्प्रेरक घटक माना था।

Supply side policy (सप्लाई साइड पॉलिसी) **पूर्ति पक्ष की नीति**

पूर्ति पक्ष से सम्बद्ध घटकों में सुधार लाने वाली नीति।

(देखे supply side economics) ।

Surcharge (सरचार्ज) **अधिभार**

आय कर के अतिरिक्त कुल कर की राशि का एक अनुपात अधिभार के रूप में लिया जा सकता है। भारत में आयकर पर अधिभार का अनुपात 2 प्रतिशत है। इसी प्रकार सरकार किसी सेवा या वस्तु के मूल्य पर भी अधिभार लगा सकती है।

Surplus value (सरप्लस वैल्यू) **अतिरिक्त मूल्य**

कार्ल मार्क्स के अनुसार ,एक श्रमिक उत्पादन क्रिया में जितना मूल्य सृजन करता है, उससे यदि मज़दूरी का भुगतान कम किया जाए, तो फर्म का मालिक जो बचाता है वह अतिरिक्त मूल्य है। यह अतिरिक्त मूल्य वस्तुतः श्रमिक के शोषण का माप है जितना अतिरिक्त मूल्य फर्म अपने पास रखती है,उतना ही वह श्रमिक का शोषण कर रही होती है

Sustainable development (सस्टेनेबल डेवलपमेंट)

टिकाऊ विकास; धारित विकास

आर्थिक विकास की दर केवल वर्तमान अवधि में अधिक रहे, और भविष्य में इसके गिरने की आशंका हो तो इसे विवेकसंगत नहीं माना जाता । टिकाऊ या धारित विकास के अन्तर्गत निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है:

(1) साधनों का वर्तमान तथा भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं के अनुरूप दोहन करना।

(2) पर्यावरण की सुरक्षा करना जिससे वर्तमान तथा भावी पीढ़ी को स्वच्छ जल, वायु एवं श्रेष्ठ स्वास्थ्य का लाभ मिल सके।

(3) दीर्घकाल तक विकास की वर्तमान दर को स्थिर बनाए रखा जाए।

Swap (स्वॉप) **विनिमय, अदला बदली**

यह अदला बदली एक वस्तु से दूसरी के बीच हो सकती है। इसी प्रकार एक कम्पनी को प्रतिभूतियों के ब्याज़ में वृद्धि की आशा है, जबकि दूसरी फर्म को उसके पास विद्यमान प्रतिभूतियों के ब्याज़ में वृद्धि की सम्भावना लगती है। दोनों कम्पनियाँ अपनी अपनी प्रतिभूतियों की अदला बदली कर सकती हैं। इसी प्रकार विभिन्न मुद्राओं के बीच भी अदला बदली की जा सकती है।

Sweated labour (स्वेटेड लेबर) **शोषित श्रमिक**

ऐसे श्रमिक, जिनसे सामान्य से अधिक घंटों तक काम लिया जाए, तथा जिन्हें मजदूरी भी बहुत कम दी जाए। प्रायः विकासशील देशों में यह स्थिति अधिक व्यापक है जबकि विकसित देशों में श्रमिकों का इस प्रकार का शोषण अपवाद स्वरूप ही दिखाई देता है।

Syndicated loan (सिंटीकेटेड लोन) **बैंकों के समूह द्वारा दिया गया ऋण**

प्रमुख बैंकों के एक समूह द्वारा परस्पर विचार विमर्श के पश्चात् सामूहिक रूप से तय की गई शर्तों पर किसी एक फर्म या अनेक फर्मों को ऋण देना। इस प्रकार के ऋणों में एक विशेष बात यह है कि **प्रत्येक बैंक प्रत्येक फर्म से** ऋण की शर्तें तय करे, अथवा सभी बैंक मिलकर अलग- अलग फर्मों से विचार विमर्श करे,। इस प्रक्रिया में समय बहुत लगता है। परन्तु सामूहिक रूप से निर्धारित शर्तों पर ऋण देना तथा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित् करना अपेक्षाकृत सुविधाजनक है।

Synergy (सिनर्जी) **विविधीकरण**

अलग–अलग फर्मों के परस्पर सहयोग से प्राप्त लाभ। उदाहरण के लिए, फर्म "अ" के पास दूर दृष्टि तथा उत्तम नियोजन की विशेषज्ञता है, जबकि फर्म "ब" के पास पर्याप्त संचित रिज़र्व कोष हैं लेकिन उसके कारखानों के समक्ष वस्तु की बिक्री न हो पाने का संकट है। यदि दोनों फर्मों में सहयोग हो जाए, तो दोनों ही को इसके लाभ प्राप्त होंगे।

□□□

T

Take -off (टेक ऑफ) **आर्थिक विकास का एक चरण**

इस अवस्था में अर्थव्यवस्था प्रति व्यक्ति आय में दीर्घकाल तक एक निश्चित् दर से वृद्धि प्राप्त करने में समर्थ हो जाती है। इसके लिए उसे जितने निवेश की आवश्यकता होती है वह उस देश के लोगों, कम्पनियों तथा सरकार की बचतों से मिल जाता है।

Take over (टेक ओवर) **अधिग्रहण**

किसी कम्पनी को नए व्यक्तियों या नई कम्पनी द्वारा ख़रीद लेना। पुरानी कम्पनी के मालिकों या शेयरधारियों को नए स्वामी द्वारा नगद, नयी कम्पनीं के शेयरों या जिंस (सम्पत्ति आदि) के रूप में क्षतिपूर्ति दी जाती है।

Take over bid (टेक ओवर बिड) **अधिग्रहण का प्रस्ताव**

किसी कम्पनी के सभी शेयरों की ख़रीद हेतु एक नई कम्पनी द्वारा प्रस्ताव रखना या बोली लगाना। यह प्रस्ताव पुरानी कम्पनी को नगद रूप में, शेयरों के रूप में या दोनों रूप में भुगतान हेतु दिया जा सकता है।

Take-up rate (टेक –अप रेट)

किसी लाभ के हकदारों का उसके दावेदारों में अनुपात

प्रायः पर्याप्त सूचनाओं के अभाव में बहुत से व्यक्ति किसी *लाभ के हकदार होने पर भी अपना दावा प्रस्तुत नहीं कर पाते।* उदाहरण के लिए, किसी बांध की डूब में आने वाले सभी खेतों के स्वामी सरकार की घोषित नीति के अनुरूप क्षतिपूर्ति के हकदार हो सकते हैं, परन्तु पर्याप्त सूचनाएँ न होने के कारण उनमें से 75 प्रतिशत ही क्षतिपूर्ति हेतु दावा कर पाते हैं।

Talk down (टॉक डाउन)

सरकारी अधिकारियों द्वारा बहलाकर किसी विरोध को शांत कर देना

विनिमय दर या मुद्रा स्फीति की विपरीत दशाओं में वित्त मंत्री या केन्द्रीय बैंक के गवर्नर इस प्रकार का वक्तव्य दे सकते हैं कि स्थिति नियंत्रण में है, तथा श्रमिको, कर्मचारियों या उपभोक्ताओं को आशंकित होने की ज़रूरत नहीं है। इसका लाभ यह होता है कि सरकार की मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों को आम व्यक्ति का समर्थन मिल जाता है, और अधिकारी अपने उद्देश्यों में सफल हो जाते हैं।

Tangency (टैन्जेंसी) **स्पर्श बिन्दु**

वह स्थिति, जिसमें दो वक्र परस्पर प्रतिच्छेदन करने की अपेक्षा स्पर्श करते हैं। उदाहरण के लिए, उदासीनता वक्र को बजट रेखा इष्टतम बिन्दु पर स्पर्श करती

हैं। नीचे प्रस्ततु चित्र में इसे समझाया गया है। इसमें बजट रेखा LM उदासीनता वक्र I_2 को E बिन्दु पर स्पर्श करती है, जबकि वही रेखा I_1 को **A तथा B बिन्दुओं पर काटती है।**
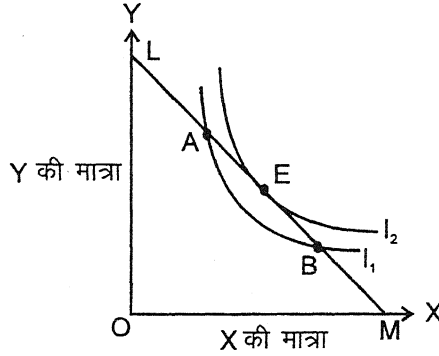
यह सरलता से समझा जा सकता है कि E पर उपभोक्ता को निर्दिष्ट आय सीमा (LM) में अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सकती है।

स्पर्श रेखा का यह भी अर्थ है कि उदासीनता वक्र का ढलान $\left(\frac{MU_x}{MU_y}\right)$ E बिन्दु पर ही बजट रेखा के ढलान $\frac{P_x}{P_y}$ के समान है, जो इष्टतम के लिए प्रथम क्रम की शर्त है।

Tangency equilibrium (टैन्जेन्सी इक्वलिब्रियम) **स्पर्शता साम्य स्थिति**

(देखें tangency)

Tangible assets (टैन्जीबल एसैट्स) **स्पर्श योग्य सम्पत्तियां, भौतिक सम्पत्तियाँ**

ऐसी भौतिक सम्पत्ति, जिसे बेचा या ख़रीदा जा सकता हो या किसी अन्य व्यक्ति को हस्तांतरित किया जा सकता है। मशीनें , भवन, वाहन, उपकरण आदि भौतिक सम्पत्ति के रूप मे हैं। लेकिन साख, प्रतिष्ठा आदि को अभौतिक सम्पत्ति माना जाता है।

Tap issue (टैप इश्यू)

किसी केन्द्रीय बैंक द्वारा सरकारी विभागों या उपक्रमों को प्रतिभूतियां बेचना

जिन सरकारी विभागों या उपक्रमों के पास पर्याप्त नगद राशि मौजूद हो उन्हें केन्द्रीय बैंक प्रतिभूतियों का पूर्व–निर्धारित कीमत पर विक्रय कर सकता है।

Target (टार्गेट) **लक्ष्य**

किसी नीति कां प्रयोजन। प्रायः सरकार या कम्पनी द्वारा निर्दिष्ट समय में निर्दिष्ट

मात्रा में उत्पादन या राजस्व की प्राप्ति का लक्ष्य निर्धरित किया जाता है। यदि उतनी मात्रा में उत्पादन हो जाए, या उतना या उससे अधिक राजस्व प्राप्त हो जाए तो लक्ष्य की प्राप्ति हो गई, ऐसा मानते हैं। यदि निर्दिष्ट अवधि से पूर्व ही लक्ष्य प्राप्त हो जाए, तो यह एक बड़ी सफलता मानी जाती है। यदि लक्ष्य की प्राप्ति न हो पाए तो नीति के क्रिया-वयन की समीक्षा की जाती है।

Targeting (टार्गेटिंग) **इंगित करना, लक्ष्य बनाना**

किसी नीति को सार्वजनिक लाभ हेतु निरूपित करने की अपेक्षा कुछ विशिष्ट वर्गों या समूहों के लिए घोषित करना। उदाहरण के लिए, सरकार ग़रीबी की रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों के लाभ हेतु कुछ कार्यक्रम घोषित करती है, या ग्रामोद्योगों के विकास हेतु कोई नीति बनाती है, तो इस प्रकार की नीति सबके लिए न होकर एक विशिष्ट वर्ग के लिए है।

Tariff (टैरिफ) **आयात कर**

(1) आयातों पर मूल्यानुसार निर्दिष्ट अनुपात में कर लगाए जाते हैं, जिनका प्रमुख उद्देश्य आयातों पर अंकुश लगाना, तथा गौण उद्देश्य राजस्व की प्राप्ति है। किन्हीं परिस्थितियों में प्रति इकाई भी आयात कर रोपित किया जाता है।
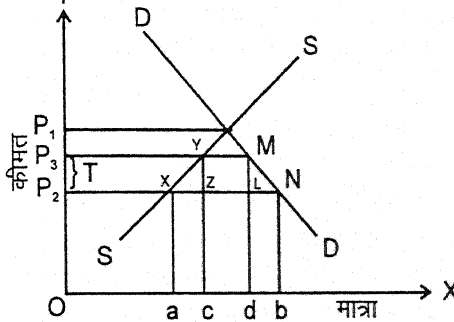
एक बन्द अर्थव्यवस्था में माँग व पूर्ति समान होने पर OP_1 एक साम्य कीमत होगी। मान लीजिए, अब अर्थव्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए खुला छोड़ दिया जाता है जहां वस्तु की कीमत अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में OP_2 है। परन्तु OP_2 कीमत पर देश में वस्तु की माँग Ob होगी जबकि घरेलू उत्पादन केवल Oa होगा। यदि सरकार T राशि के बराबर प्रति इकाई आयात कर लगा देती है तो देश में वस्तु की आयातित कीमत OP_3 हो जाएगी जहां स्वदेशी माँग घटकर Od हो जाएगी जबकि घरेलू उत्पादन बढ़कर Oc होगा।

परन्तु आयात कर से एक हानि यह होती है कि देश के संसाधनों का संरक्षित उद्योगों में अधिक प्रयोग होगा, जबकि असंरक्षित वस्तुओं में कम साधन प्रयुक्त होने से उनका उत्पादन कम हो जाएगा। अर्थव्यवस्था में उत्पादकों की बचत

में XYZ के समान कमी होगी, जबकि उपभोक्ताओं की बचत में MLN की कटौती होगी।

(2) हवाई यात्राओं का किराया।

(3) होटल के कमरे का किराया।

Tastes (टेस्ट्स) **उपभोक्ता की रुचियाँ**

अनेक बार उपभोक्ता द्वारा वस्तु की ख़रीद में उसकी कीमत, अन्य वस्तु की कीमत या आय की अपेक्षा उसकी रुचि की भी एक अहम् भूमिका देखी जाती है। जिस वस्तु के प्रति उसकी रुचि है, वह उसकी सीमान्त उपयोगिता को *अन्य वस्तुओं की तुलना में अधिक मानेगा,* तथा वस्तु की कीमत काफी अधिक होने पर भी उसे ख़रीदेगा। ऐसा माना जाता है कि रुचि पूर्णतया एक व्यक्तिगत पसन्द है, तथा इसके निर्धारण में कोई तर्क स्वीकार्य नहीं होता।

Tax (टैक्स) **कर**

एक ऐसा भुगतान, जो किसी व्यक्ति या फर्म द्वारा सरकार को अनिवार्य रूप से चुकाया जाता है। इसमें प्रत्त्यक्ष कर प्रायः आय, सम्पत्ति,, मनोरंजन या लाभ पर चुकाया जाता है, जबकि परोक्ष कर वस्तु के उत्पादन, बिक्री , आयात आदि पर रोपित किया जाता है। कुछ दशक पूर्व तक कुछ देशों में प्रति व्यक्ति कर भी लागू था। कृषकों से उनकी भूमि पर भू–राजस्व लिया जाता है, या फिर उनकी आय का एक भाग कर के रूप में लिया जाता है।

करारोपण का प्रमुख उद्देश्य केन्द्र, राज्य या स्थानीय सरकार के लिए राजस्व एकत्रित करना होता है। परन्तु कुछ कर (जैसे–आयात कर) आयात को कम करने, या घरेलू उद्योगों को संरक्षण देने हेतु भी वसूल किए जाते हैं।

Taxable income (टैक्सेबल इन्कम) **कर योग्य आय**

कुल आय का वह भाग, जिस पर कर लगाया जाता है। यदि किसी सम्पत्ति का बाज़ार मूल्य बढ़ जाए तो उस अतिरेक को पूँजीगत लाभ मान कर करारोपण किया जाता है। कर योग्य आय के अन्तर्गत तो केवल व्यक्ति या फर्म की शुद्ध आय (सकल आय–मानक कटौती–व्यवसायिक ख़र्चे) को ही शामिल किया जाता है।

Taxation (टैक्सेशन)

व्यक्तियों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर कर लगााकर राजस्व प्राप्त करना

ये कर आय, भूमि, भवन, आयात, बिक्री, उत्पादन, लाभ आदि पर रोपित किए जा सकते हैं। (देखें tax) ।

Taxation schedule (टैक्सेशन शिड्यूल) **कर व आय की सूची**

एक सूची, जो कर की राशि तथा आय के अनुपात को दर्शाती है। सामान्य तौर पर इन दोनों में धनात्मक सम्बन्ध होता है।

Tax allowance (टैक्स एलाउंस)

सकल आय में कर सम्बन्धी प्रावधानों के अन्तर्गत दी गई छूट

यह मानक कटौती या समानता के नाम पर दी जाने वाली रियायत या छूट हो सकती है। प्रायः किसी फर्म को निवेश हेतु प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से कर में छूट दी जा सकती है।

Tax avoidance (टैक्स एवोएडेन्स) **कर के भुगतान से बचना**

अपनी आय व ख़र्चों का लेखा जोखा इस प्रकार से प्रस्तुत करना जिससे कर की कम राशि चुकाना पड़े। प्रायः सरकार द्वारा जो कानूनी प्रावधानों में रियायतें दी जाती हैं ,कर दाता उनका अधिकतम लाभ उठाते हुए न्यूनतम कर चुकाने की व्यवस्था करता है। **यह कार्य ग़ैर कानूनी नहीं है**, परन्तु यदि बाद में कर दाता के लेखों में गड़बड़ पाई जाए तो उसे दंडित किया जा सकता है। इसे कर-नियोजन भी कहते हैं।

Tax base (टैक्स बेस) **कराधार**

वह सकल राशि जिस पर कर अधिकारी करारोपण कर सकते हैं। इनमें विभिन्न वर्गों की आय–जिस पर प्रत्यक्ष कर लगाने हैं तथा कुल सौदों की राशि– जिस पर परोक्ष कर लगाने हैं– शामिल की जाती हैं।

Tax-based incomes policy (टैक्स बेस्ड इन्कम्स पॉलिसी)

कर आधारित आय नीति

ऐसी नीति, जिसका उद्देश्य प्रोत्साहनों के माध्यम से कर प्रणाली को माध्यम बनाकर मुद्रा स्फीति को कम करना है। इसमें प्रभावी माँग को कम करने का प्रयास नहीं किया जाता, अपितु, उत्पादकों को यह सोचने पर विवश करना है कि कीमतों में अत्यधिक वृद्धि करके काफी ऊँची दर से कर देने की अपेक्षा कीमतों व मज़दूरी में थोड़ी सी वृद्धि करना बेहतर है।

Tax burden (टैक्स बर्डन) **कर का भार**

करों का भुगतान होने पर अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला कुल प्रभाव। इसमें करों के द्वारा एकत्रित राशि के अलावा अप्रतिभूत क्षति तथा अन्य प्रकार की परोक्ष क्षति को भी शामिल किया जाता है। यह भी ज़रूरी है कि कर सम्बन्धी लेखों को तैयार करने तथा विवरणिकाएँ प्रस्तुत करने हेतु भी करदाताओं को मुद्रा ख़र्च करनी पड़ती है। ये सब कर, भुगतान की कुल लागत या इसके कुल भार में शामिल की जाती हैं।

Tax credit (टैक्स क्रेडिट) **कर की स्रोत पर कटौती**

वितरित किए गए लाभों पर स्रोत पर ही करों की कटौती करना, ताकि कम्पनी के शेयरधारियों को कर चुकाने के बाद वाला लाभांश दिया जा सके। आय कर की यह कटौती स्रोत पर काटे गए कर के समान है, परन्तु कर अधिकारियों को कम्पनी का सकल लाभ, तथा शेयरधारियों को देय सकल लाभांश का विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक है।

Tax evasion (टैक्स इवेज़न) **कर वंचना**

कानूनी तौर पर देय आय कर, बिक्री कर या उत्पादन कर का एक भाग न चुकाना। यह गैर कानूनी तरीका है। प्राय : लोग आयकर अधिकारी के समक्ष अपनी समूची आय को नहीं प्रतिवेदित करते। बहुदा उत्पादन की समूची मात्रा या बिक्री की समूची राशि का भी कर दाता लेखों में विवरण प्रस्तुत नहीं करते। ये सब तरीके *जान बूझ कर अपनाए जाते हैं* क्योंकि करदाता सरकार को पूरा कर अदा नहीं करना चाहता। इसीलिए इसे कर वंचना कहा जाता है, तथा इसका पता चलने पर करदाता को भारी दंड भुगतना पड़ता है।

Tax haven (टैक्स हैवन) **कर दाताओं की शरण स्थली**

वह देश, जहां विदेशी निवेशकों से बहुत कम दर पर आय कर तथा निगम कर की वसूली की जाती है। इस नीति का उद्देश्य विदेशी पूँजी को आकर्षित करना है।

Tax holiday (टैक्स होलीडे) **कर मुक्त अवधि**

किसी व्यक्ति या कम्पनी को *निर्दिष्ट अवधि हेतु पूर्णतया या आंशिक रूप* से कर मुक्त करना। स्वदेशी तथा विदेशी निवेशकों को चयनित उद्योगों तथा चयनित भौगोलिक क्षेत्रों में प्रोत्साहन देने हेतु कर मुक्त अवधि की घोषणा की जाती है। परन्तु उस अवधि की समाप्ति के साथ ही इन पर सामान्य दर से कर लिए जाते हैं। कर के भुगतान में यह छूट उत्पादन, सामान की बिक्री, आय, लाभ आदि के क्षेत्रों में दी जा सकती है।

tax incidence (टैक्स इन्सीडेंस) **कर का भार**

रोपित कर का कितना भार कर दाता वहन करता है, तथा किन व्यक्तियों पर शेष भार को अन्तरित करना सम्भव है, यह ज्ञात करना। (देखें incidence of tax)

Tax - rate (टैक्स रेट) **कर की दर**

वह प्रतिशत दर, जो आय, बिक्री, लाभ, सम्पत्ति के मूल्य आदि पर कर निर्धारण हेतु लागू की जाती है। यह समानुपाती हो सकती है अथवा प्रगतिशील रूप में कर का आधार बढ़ने पर बढ़ाई भी जा सकती है।

Tax return (टैक्स रिटर्न) **कर की विवरणिका**

सभी कर दाता एक निर्धारित प्रपत्र या प्रारूप में कर सम्बन्धी सूचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, आय कर की विवरणिका में व्यक्ति की विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आय, मानक कटौती, भविष्य निधि तथा अन्य प्रकार की रियतों का विवरण, पूर्व में चुकाई गई कर की राशि तथा शेष कर जो विवरणिका के साथ चुकाया जा रहा है– इन सभी को विस्तार से दर्शाया जाता है।

Tax revenue (टैक्स रेवेन्यू) **कर राजस्व**

सभी प्रकार के (यानी प्रत्यक्ष तथा परोक्ष) करों से सरकार को प्राप्त कुल राशि। यह राजस्व कर की दरों, आय, बिक्री, उत्पादन, सम्पत्ति के मूल्य, आयात आदि सभी प्रकार के कर–आधारों पर निर्भर करता है। इनमें से किसी एक में वृद्धि होने पर कर–राजस्व में भी वृद्धि हो जाती है।

Tax wedge (टैक्स वैज) **कर एवं सम्बद्ध प्रयोग की राशियों में अन्तर**

उदाहरण के लिए, रोज़गार पर कर तथा सामाजिक सुरक्षा हेतु योगदान में अन्तर, अथवा अतिरिक्त कार्य से श्रमिक को प्राप्त आय तथा नियोक्ता द्वारा वहन की गई लागत में अन्तर का माप लिया जा सकता है।

Technical efficiency (टैक्नीकल एफीशिएन्सी) **तकनीकी दक्षता**

इसके दो अर्थ हैं- प्रथम, दिए हुए साधनों से वस्तु या वस्तुओं का **अधिकतम उत्पादन** करना, अथवा निर्दिष्ट उत्पादन की मात्रा को **न्यूनतम लागत** पर प्राप्त करना। दोनों ही विकल्पों में उत्पादन हेतु साधनों का इष्टतम संयोग प्रयुक्त करना होता है। तकनीकी दक्षता का उच्चतम (इष्टतम) स्तर वहां होता जहां निम्न शर्त पूरी होती हो :

$$\frac{MP_L}{MP_K} = \frac{w}{r}$$

उपरोक्त समीकरण में किसी भी वस्तु के उत्पादन हेतु श्रम तथा पूँजी की सीमान्त उत्पादकता का अनुपात $\left(\frac{MP_L}{MP_K}\right)$, मज़दूरी (w) तथा ब्याज़ की दर (r) के अनुपात के समान होने पर उच्चतम तकनीकी दक्षता प्राप्त होती है अधिक साधनों का प्रयोग किए जाने पर प्रत्येक साधन की सीमान्त उत्पादकता (MPxi) तथा साधन की कीमतों (Pxi) के अनुपात समान होने पर उच्चतम तकनीकी दक्षता प्राप्त होती है।

Technical progress (टैक्नीकल प्रोग्रेस) **तकनीकी प्रगति**

सम्भावित तकनीकों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त होना। यह ज्ञान-वृद्धि शोध के परिणामों पर निर्भर करती है। इसके आधार पर साधनों की मात्रा को उतना ही रखते हुए अथवा उनका मितव्ययता पूर्वक उपयोग करते हुए अधिक उत्पादन किया जा सकता है। तकनीकी प्रगति का एक अर्थ यह भी है कि लागत वही रहते हुए इन्पुट्स की गुणवत्ता में सुधार हो, तथा/अथवा निर्मित वस्तु की डिजाइन एवं गुणवत्ता में सुधार हो। कुल मिलाकर तकनीकी प्रगति का अंतिम उद्देश्य उद्यमी के लाभ में वृद्धि करना है।

Technical progress- Harrod -neutral (टैक्नीकल प्रोग्रेस- हैरड न्यूट्रल)
श्रम की दक्षता में वृद्धि वाली तकनीक

हैरड के अनुसार उपलब्ध श्रमिकों की संख्या की तुलना में तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप श्रम की दक्षता में अधिक वृद्धि होने पर *उत्पादन प्रक्रिया में श्रम की बचत होती है।*

Tachnical progress-Hicks neutral (टैक्नीकल प्रोग्रेस-हिक्स न्यूट्रल)
सभी साधनों की उत्पादकता में वृद्धि

ऐसी तकनीकी प्रगति, जिसके अन्तर्गत साधनों की निर्दिष्ट मात्रा के अन्तर्गत सभी साधनों की औसत तथा सीमान्त उत्पादकता में समान अनुपात से वृद्धि होती है।

Technical standard (टैक्नीकल स्टैंडर्ड) **तकनीकी मानक**

किसी वस्तु अथवा इसके हिस्सों की डिजाइन की स्पष्ट व्याख्या। उदाहरण के लिए, मोटर गाड़ी की गुणवत्ता के साथ साथ इसके इंजन या टायर की गुणवत्ता के मानक भी तय किए जा सकते हैं।

Technological-gap theory (टैक्नोलोजिकल गैप थ्योरी) **प्रौद्योगिक-अन्तर का सिद्धान्त**

दो अवधियों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के पैटर्न में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण। इसमें वस्तुओं के उत्पादन की प्रौद्योगिकी एवं उनकी डिजाइन में हुए परिवर्तन का उनके व्यापार पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। जर्मनी व जापान जैसे प्रौद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों द्वारा वस्तुओं की नवीनतम डिजाइनों का विकास करके उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में तेजी से प्रविष्ट किया जाता है, जो प्रायः अन्य देशों के लिए सम्भव नहीं हो पाता। धीरे धीरे इस नई प्रौद्योगिकी के विषय में अन्य देश भी जान लेते हैं, परन्तु तब तक जापान व जर्मनी का अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में वर्चस्व रहता है।

Tchnological progressiveness (टैक्नोलॉजिकल प्रोग्रेसिवनेस) **औद्योगिक प्रगतिशीलता**

बाजार में विभिन्न फर्मों के निष्पादन का वह पक्ष जिसके अनुसार वे परिष्कृत एवं नए उत्पादों का विकास करके उन्हें नए तरीकों से बेचने का प्रयत्न करती हैं। इन आधारभूत परिवर्तनों से प्रायः उत्पादन तथा विपणन की लागतों में कमी होती है, तथा प्रायः उपभोक्ताओं को कम कीमत पर वस्तुएँ उपलब्ध हो सकती हैं। परन्तु प्रौद्योगिक प्रगतिशीलता का लाभ केवल अत्यंत दीर्घकाल में ही मिल पाता है।

Technological unemployment (टैक्नोलॉलिकल अनएम्प्लॉयमेंट) **प्रौद्योगिक बेरोज़गारी**

तकनीकी प्रगति से उत्पन्न बेरोज़गारी। प्रायः यह देखा गया है कि प्रौद्योगिक परिवर्तनों के साथ साथ *मशीनें श्रम का स्थान ले लेती हैं।* इसके फलस्वरूप उत्पादन प्रक्रिया में पूँजी श्रम का अनुपात $\left(\frac{K}{L}\right)$ बढ़ता है तथा उत्पादन बढ़ने पर भी श्रम का अनुपात कम हो सकता है। विशेष रूप से तकनीकी प्रगति के साथ-साथ ऐसे श्रमिकों को कार्य मुक्त किया जा सकता है जो नई मशीनों के साथ कार्य करने में असमर्थ हैं।

Technology (टैक्नोलोजी) **प्रौद्योगिकी**

साज–सज्जा, कच्चे माल, उत्पादन की तकनीक तथा मशीनों व उपकरणों की संचालन विधि की जानकारी। इसके लिए शिक्षा, सूझ बूझ तथा आज के युग में कंप्यूटर की जानकारी होना ज़रूरी है। प्रौद्योगिकी इस अर्थ में कलात्मकता से भिन्न है जो प्रायः शिक्षा या कंप्यूटर ज्ञान से नहीं अपितु अनुभव से विकसित होती है।

Tender (टैन्डर)

(1) क्रेता द्वारा विशिष्ट वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति हेतु सम्भावित आपूर्तिकर्ताओं को आमंत्रित करना।

(2) शेयरों के निर्गम हेतु आम जनता को न्यूनतम कीमत पर शेयरों की बोली लगाने हेतु आमंत्रित करना। अंततः किस कीमत पर शेयर निर्गमित किए जाते हैं उसके लिए अलग- अलग प्रस्तावित कीमतों का औसत निकाला जाता है।

Tender issue (टैन्डर इश्यू) **ट्रेज़री बिलों का निर्गम**

केंद्रीय बैंक डिस्काउंट संस्थानों तथा विदेशी केंद्रीय बैंकों को ट्रेज़री बिलों की ख़रीद हेतु आमंत्रित करता है, तथा *उच्चतम बोली लगाने वाली इकाई* को इन्हें बेचता है। यह प्रक्रिया प्रायः बैंक ऑफ इंगलैंड द्वारा अपनाई जाती है।

Term loan (टर्म लोन) **निर्दिष्ट अवधि का ऋण**

निर्दिष्ट ब्याज़ दर पर निश्चित् अवधि के लिए बैंक द्वारा दिया गया ऋण ।

Terms of trade (टर्म्स ऑफ ट्रेड) **व्यापार की शर्तें**

किसी देश के निर्यातों की कीमतों के सूचकांकों तथा आयातित वस्तुओं की कीमतों के सूचकांकों का अनुपात। यदि यह अनुपात बढ़ता है तो इसका अर्थ यह है कि आयातों की औसत कीमतों की अपेक्षा निर्यातित वस्तुओं की औसत कीमतें बढ़ी हैं, एवं तदनुसार व्यापार की शर्तों में सुधार हुआ है। इसके विपरीत इस अनुपात में कमी होने पर व्यापार की शर्तें प्रतिकूल हुई हैं, ऐसा माना जाएगा।

Term structure of interest rates (टर्म स्ट्रक्चर ऑफ इन्टरेस्ट रेट्स)

ब्याज़ की दरों की अवधिवार संरचना

विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियों की भुगतान तिथियों तथा उन पर प्राप्त होने वाले प्रतिफलों के बीच सम्बन्ध। इसको " परिपक्वता पर प्राप्त आय" का नाम दिया जाता है, तथा उन्हीं प्रतिभूतियों के लिए इसका अनुमान किया जाता है जिनकी परिपक्वता की तिथियाँ तथा ब्याज़ की दर पूर्व निर्धारित हैं।

Test discount rate (टैस्ट डिस्काउंट रेट)

इंग्लैंड के राष्ट्रीयकृत उद्योगों की निवेश परियोजनाओं के औचित्य हेतु वांछित प्रतिफल दर।

Thatcherism (थैचरिज़्म) **थैचरवाद**

1979 से 1990 तक ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मार्गरिट थैचर द्वारा लागू गए आर्थिक सुधार। इनके अन्तर्गत ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका को कम करके प्रतिस्पर्द्धा बढ़ाने के उपाय किए गए। सरकारी उद्योगों का निजीकरण किया गया तथा मौद्रिक नीति में परिवर्तन करके मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उपाय किए गए।

Theory of consumer behaviour (थ्योरी ऑफ कन्ज़्यूमर बिहेवियर)

उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धान्त

वे सिद्धान्त जो निर्दिष्ट आय में किसी उपभोक्ता द्वारा अधिकतम संतुष्टि प्राप्ति करने से सम्बद्ध हैं। इनमें सम सीमान्त उपयोगिता नियम, तटस्थता वक्र विश्लेषण,प्रगट अधिमान, माँग की लोच, माँग का नियम आदि से सम्बन्धित सिद्धान्त शामिल हैं। (देखें demand, revealed preference, indifference curve)

Third degree price discrimination (थर्ड डिग्री प्राइस डिस्क्रीमिनेशन) **तृतीय श्रेणी का कीमत विभेद**

जब विक्रेता वस्तु के क्रेताओं का श्रेणीकरण करके प्रत्येक श्रेणी के क्रेताओं से वस्तु की **माँग की लोच के अनुसार अलग-अलग कीमतें वसूल करे,** तो इसे तृतीय श्रेणी का कीमत विभेद कहा जाता है। परन्तु इसकी एक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि कम कीमत चुकाने वाले क्रेताओं के लिए अधिक कीमत वाले बाज़ार में वस्तु को बेचना असम्भव होना चाहिए। (देखें price discrimination)

Third party insurance (थर्ड पार्टी इंश्योरेंस) **तृतीय पक्ष का बीमा**

बीमा कम्पनी तथा पॉलिसी धारक के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के दुर्घटनाग्रस्त होना पर क्षतिपूर्ति का प्रावधान।

Third world (थर्ड वर्ल्ड) **तृतीय विश्व; निर्धन तथा अल्पविकसित देश**

मूलरूप में इनमें वे देश शामिल किए गए थे जो न तो पश्चिमी गुट के विकसित देश थे और ना ही पूर्व साम्यवादी देशों (सोवियत रूस, चीन आदि) के समूह में थे।

Threshold (थ्रेशोल्ड) **देहरी, प्रवेश बिन्दु**

जिस स्तर पर मज़दूरी सम्बन्धी वार्ताओं में सूचकांकता क्रियाशील हो जाती है, वहीं से श्रमिक मज़दूरी की दर में वृद्धि पर जोर देना प्रारम्भ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि यह तय हो कि खुदरा कीमत सूचकांक में वृद्धि के अनुपात में वृद्धि तब न्यायोचित होगी जब इसमें n प्रतिशत की वृद्धि हो, तथा इसके बाद सूचकांक की वृद्धि के अनुपात में ही मज़दूरी बढ़ाई जाएगी। ऐसी स्थिति में n को मज़दूरी वृद्धि हेतु प्रवेश बिन्दु माना जाएगा।

Tied aid (टाइड एड) **बन्धन-युक्त सहायता; सशर्त सहायता**

किसी बड़े एवं विकसित देश द्वारा पिछड़े हुए देशों को सहायता हेतु यह शर्त लगाना कि वे उस सहायता राशि का उपयोग सहायता देने वाले देश से वस्तुएँ तथा सेवाएँ ख़रीदने पर ही करेंगे। इस प्रकार सहायता देने वाले देश के निर्यातकर्ता घटिया या महँगी वस्तुएँ सहायता प्राप्तकर्ता देशों को भेज देते हैं। अन्य शब्दों में, सहायता प्राप्त करने वाले देशों को *यह स्वतंत्रता नहीं दी जाती कि वे अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ या सेवाएँ प्रतियोगितापूर्ण कीमतों पर ख़रीद सकें।*

Tied loan (टाइड लोन) **बन्धनयुक्त ऋण; सशर्त ऋण**

इन ऋणों के लिए ऋण लेने वाले दाता देश अपनी शर्तों पर ऋण देता है, तथा प्रायः यह शर्त लगाता है कि ऋणी देश उस राशि को ऋण दाता देश में ही व्यय

करेगा। ऋण की अदायगी भी ऋणदाता की शर्तों के अनुसार ही किया जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत ऋण लेने वाला देश नुकसान उठाकर भी अपनी मज़बूरी के कारण ऋण लेता है। (देखें tied aid)

Tight fiscal policy (टाइट फिस्कल पॉलिसी) **कठोर राजकोषीय नीति**

ऐसी राजकोषीय नीति, जो प्रभावी माँग को सीमित करती है। इसमें करों की ऊँची दरें तथा राजकीय व्यय में कटौती शामिल हैं।

Tight monetary policy (टाइट मॉनेटरी पॉलिसी) **कठोर मौद्रिक नीति**

निषेधात्मक मौद्रिक नीति, जिसके अन्तर्गत ऋणों की ब्याज़ दर में वृद्धि की जा सकती है तथा साख पर कड़े नियंत्रण लागू किए जा सकते हैं, ताकि प्रभावी माँग को कम किया जा सके।

Time-consistency (टाइम कंसिस्टेंसी) **समय की संगति**

निर्दिष्ट समयावधि में लागू की गई नीतियों का यह लक्षण कि पुरानी अवधियों में लिए गए निर्णयों का आने वाले समय में लिए जाने वाले नीतिगण निर्णयों से कोई सम्बन्ध नहीं है। जहां निर्णय लेने वाले अधिकारियों की विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है वहां उनके समक्ष समय की संगति वाला विकल्प ही श्रेष्ठ है।

Time deposit (टाइम डिपोज़िट) **सावधि जमा**

किसी बैंक या वित्तीय संस्था द्वारा निश्चित् अवधि के लिए की गई जमा राशि, जिसे परिपक्वता से पूर्व वापस निकालने हेतु पूर्व सूचना देनी पड़ती है। समय से पूर्व पैसा निकालने पर बैंक नियमानुसार दिए जाने वाले ब्याज़ में कटौती करता है।

Time discounting (टाइम डिस्काउंटिंग)

निकट भविष्य में परिपक्व होने वाली प्रतिभूति पर जितनी राशि प्राप्त होनी है, उससे पूर्व उसे भुनाने पर उस राशि से कम राशि निर्धारित करना। इसके प्रायः निम्न कारण हो सकते हैं: विशुद्ध रूप से समय अधिभान (वर्तमान राशि को भविष्य में प्राप्य राशि से अधिक महत्व देना), भविष्य की अनिश्चितता के कारण, वर्तमान की अपेक्षा भविष्य में प्राप्त होने वाली अतिरिक्त मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता कम होने की आशंका के कारण, आदि।

Time horizon (टाइम होराइज़न) **सुदूर समय-बिन्दु**

निवेश हेतु बहुत लम्बी अवधि चुनना। उदाहरण के लिए, किसी बड़े निवेश के प्रतिफल की अवधि 50 वर्ष मान ली जाती है। इतनी लम्बी अवधि में अनेक स्थितियां बदल सकती हैं, तथा प्रतिफल प्राप्ति में अनिश्चितता उत्पन्न हो सकती है। इसीलिए विवेकशील नीति निर्माता निवेश सम्बन्धी निर्णय अत्यधिक लम्बी अवधि के लिए न लेकर सीमित अवधि (15–20 वर्ष) लेते हैं।

Time-inconsistency (टाइम इंकन्सीस्टेंसी) **समय की असंगति**

निर्दिष्ट समयावधि में लागू की गई नीतियों का यह लक्षण कि पुरानी अवधि में लिए

गए निर्णयों की आने वाले समय में लिए जाने वाले नीतिगण निर्णयों से कोई संगति नहीं है। जहां निर्णय लेने वाले अधिकारियों के प्रति विश्वसनीयता है, वहां वे समय—असंगति के आधार पर निर्णय ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, वर्तमान वर्ष की मुद्रा स्फीति को आगामी वर्ष में सरकारी व्यय में कटौती, या मुद्रा की पूर्ति में कमी का वायदा करके किया जा सकता है। जब अगला वर्ष आएगा, तो इन वायदों के अनुरूप कदम उठाए जा सकेंगे। वस्तुतः नीति निर्माता अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने हेतु ये कदम उठाना ज़रूरी समझेंगे । (देखें time consistency)

Time lag (टाइम लैग) **समय-अन्तराल**

आर्थिक मॉडलों तथा वास्तविक जगत् के संदर्भ में निर्णयों की क्रियान्विति में विलम्ब। इस विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं : जैसे उपयुक्त आंकड़ों व सूचनाओं के संकलन एवं प्रसारण का समय, नीति निर्माताओं द्वारा अतिरिक्त सूचनाएँ मंगाने के बाद ही निर्णय लेना, इस बात की जांच करना कि नीतिगत परिवर्तन स्थायी होंगे या अल्पकालिक, नीति क्रियान्विति की जवाब देही तय करने में मतैक्य न होना, आदि। वस्तुतः निर्णय लेने में विलम्ब तो होता ही है, उसे क्रियान्वित करने में भी काफी समय लग सकता है।

Time-preference (टाइम प्रीफरेंस) **समय-अधिमान**

यह धारणा आज प्राप्त होने वाली वस्तुएँ व सेवाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। इसके पीछे तीन कारण होते हैं- प्रथम, भविष्य की अनिश्चितता, ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता, तथा उतावलापन या अधीरता। जो वस्तुएँ 20 वर्ष बाद प्राप्त होनी हैं उनकी अपेक्षा व्यक्ति उनसे मात्रा में कुछ कम वस्तुओं को भी **आज** स्वीकार करना चाहेगा, क्योंकि उसे यह विश्वास नहीं है कि वह तब तक जीवित भी रहेगा। ह्रासभान सीमान्त उपयोगिता के पीछे यह धारणा है कि यदि किसी व्यक्ति को आज की अपेक्षा भविष्य में अतिरिक्त आय दी जाए तो वह चाहेगा कि आज के उपभोग का त्याग करने के बदले उसे **क्षतिपूर्ति सहित** भविष्य में उपभोग हेतु साधन दिए जाएँ। बॉम बावर्क नामक आस्ट्रियन अर्थशास्त्री ने इसी आधार पर ब्याज़ का समय अधिमान सिद्धान्त प्रतिपादित किया था।

Time-series analaysis (टाइम सीरीज़ एनालिसिस) **काल श्रेणी-विश्लेषण**

पिछले कई वर्षों से सम्बद्ध आंकड़ों का इस आशय के साथ विश्लेषण करना कि उनके आधार पर आने वाले वर्षों के विषय में भविष्यवाणी की जा सकती है। प्रायः पिछले वर्षों में निर्दिष्ट चर के मूल्यों में काफी उतार-चढ़ाव परिलक्षित हो सकते हैं। ऐसी दशा में बाह्य गणन कठिन हो सकता है। इसीलिए उपनति (trend) के आधार पर भविष्य में क्या मूल्य सम्भावित हैं इसका अनुमान लगाया जाता है।

Total domestic expenditure (टोटल डोमेस्टिक एक्सपेंडिचर)

कुल घरेलू व्यय

देश में कुल उपभोग व्यय (C), कुल सरकारी व्यय (G), तथा कुल निवेश (I) का योग (C+G+I)

Total final expenditure (टोटल फाइनेंशियल एक्सपेंडीचर)

कुल अन्तिम व्यय

देश में कुल उपभोग व्यय (C) , कुल सरकीर व्यय (G) तथा कुल निवेश (I) तथा व्यापार शेष (X-M) का योग।

Total revenue (टोटल रेवेन्यू) **कुल आगम**

किसी फर्म को वस्तु की बिक्री से प्राप्त कुल राशि। इसे वस्तु की कीमत से वस्तु की मात्रा (X) को (P_x) से गुणा करके ज्ञात किया जाता है।

Total physical product (टोटल फिज़िकल प्रोडक्ट) **कुल भौतिक उत्पादन**

पूँजी व अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए साधनों (विशेषरूप से श्रम) के उपयोग से प्राप्त किसी वस्तु की मात्रा ।

इस प्रकार भौतिक उत्पादन केवल परिवर्तनशील साधनों का कुल प्रतिफल है। नीचे चित्र में इसे प्रस्तुत किया गया है।
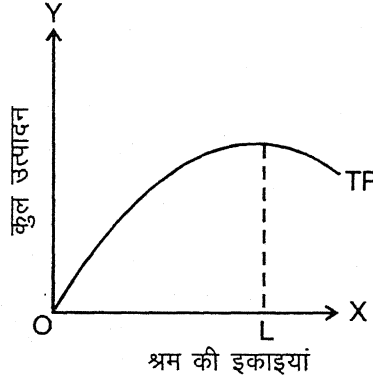
इस चित्र में श्रम की OL इकाइयां प्रयुक्त करने पर कुल भौतिक उत्पादन अधिकतम है। श्रम की इकाइयां इससे अधिक होने पर उत्पादन में कमी प्रारम्भ हो जाती है।

Total utility (टोटल यूटीलिटी) **कुल उपयोगिता**

किसी उपभोक्ता को विभिन्न वस्तुओं की सभी इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता का योग।

Tradables (ट्रेडेबल्स) **व्यापार योग्य वस्तुएँ व सेवाएँ**

ऐसी वस्तुएँ, जिन्हें बाज़ार में ख़रीदा या बेचा जा सकता है, तथा जिनकी कीमतों का निर्धारण बाज़ार में विद्यमान माँग व पूर्ति के आधार पर किया जाता है। इस दृष्टि

से उद्यमी का साहस, उसके या उसके परिजनों द्वारा किया गया श्रम आदि उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त इन्पुट्स तो हैं परन्तु उन्हें व्यापार योग्य नहीं माना जा सकता।

Trade (ट्रेड)

(1) एक प्रकार का कौशल (जैसे बढ़ई, बिजली फिटिंग करने वाला मिस्त्री आदि),

(2) किसी वस्तु के वितरण या बिक्री की प्रक्रिया, जैसे कपड़े का व्यापार, मोटर कारों का व्यापार, रेफ्रीजरेटर का व्यापार, आदि)

(3) विदेशी व्यापार, यानी विदेशों से वस्तुएँ मंगाना या देश के बाहर निर्यात करना।

Trade association (ट्रेड एसोसिएशन) **व्यापारियों का संगठन**

ये संगठन स्थानीय, राज्य स्तरीय या राष्ट्रीय स्तर पर गठित किए जा सकते हैं। फिक्की, एसोकेम आदि राष्ट्रीय स्तर के व्यापारिक संगठन हैं । इसी प्रकार राज्य स्तर पर चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स आदि गठित किए गए हैं। इन संगठनों के माध्यम से व्यापारी एवं उद्योगपति अपनी सामूहिक समस्याओं पर चर्चा करते हैं, तथा आवश्यकता पड़ने पर सरकार के उच्च–स्तर पर अपनी माँगों को प्रस्तुत करते हैं।

Trade barriers (ट्रेड बेरियर्स) **व्यापार में अवरोध**

ऐसे कानून, ऐसी संस्थाएँ या क्रियाएँ जो विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार में व्यवधान उत्पन्न करें। आयात कर, मात्रात्मक प्रतिबन्ध , क्षेत्रीय मुक्त व्यापार क्षेत्र, आदि इस प्रकार की व्यवस्थाएँ हैं, जो विभिन्न देशों के पारस्परिक व्यापार को बाधित करती हैं। इसके विपरीत एक देश के भीतर होने वाला व्यापार निर्बाध रूप से चल सकता है।

Trade creation (ट्रेड क्रिएशन)

ऐसे प्रयास जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि करें

यदि कोई एक देश या कुछ देशों के समूह व्यापार में विद्यमान व्यवधानों को दूर करने हेतु कानून बनाएँ या कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लें तो इससे व्यापार में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, आयात कर में कटौती, अभ्यंशों तथा मात्रात्मक प्रतिबंधों में उदारता, जैसी नीतियां लागू की जाएँ तो विदेशी व्यापार का विस्तार होगा
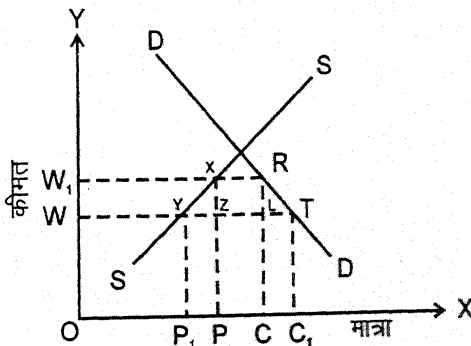
उपरोक्त चित्र में किसी देश में वस्तु की माँग व पूर्ति के वक्र क्रमशः DD तथा SS हैं। इसमें W वस्तु की अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार की कीमत है। प्रारम्भ में वह देश आयात कर लगाता है जिससे वस्तु की घरेलू बाज़ार में कीमत W_1 हो जाती है जहां वस्तु का घरेलू उत्पादन OP होता है, तथा माँग को पूरा करने हेतु PC इकाइयों का आयात किया जाता है।

अब मान लीजिए आयात कर समाप्त कर दिए जाते हैं। अब घरेलू बाज़ार में वस्तु की कीमत OW रह जाती है जहां कुल माँग OC_1 तथा घरेलू उत्पादन घटकर OP_1 होते हैं। स्पष्ट है कि अब आयातों की मात्रा P_1C_1 हो जाती है। इस प्रकार आयात कर समाप्त होने पर व्यापार में वृद्धि होती हैं। साथ ही घरेलू बाज़ार में व्यापार के इस विस्तार के कारण XYZ तो व्यापारियों को अतिरिक्त लाभ होगा जबकि उपभोक्ताओं को RST के समान अतिरिक्त उपयोगिता प्राप्त होगी।

Trade credit (ट्रेड क्रेडिट) **विलम्बित भुगतान**

ऐसा भुगतान, जिसे कोई विक्रेता वस्तु के क्रेता को कुछ समय बाद करने की छूट देता है। वस्तुतः क्रेता वस्तु पहले प्राप्त कर लेता है, तथा उसे उसका भुगतान कुछ समय पश्चात् करने की छूट मिल जाती है।

Trade cycle (ट्रेड साइकल) **व्यापार चक्र**

सकल उत्पादन तथा रोज़गार या कीमत के स्तरों में प्रतिवर्ष होने वाले उतार चढ़ाव (देखें business cycle)

Trade debt (ट्रेड डैट) **विलम्बित भुगतान**

(देखें trade credit)

Trade deficit (ट्रेड डेफिसिट) **व्यापार घाटा**

आयातों का निर्यातों पर आधिक्य। इसे व्यापार शेष की प्रतिकूल स्थिति भी कहा जाता है। (देखें balance of trade)

Trade diversion (ट्रेड डाइवर्शन) **व्यापार की दिशा मोड़ना**

जब साझा बाज़ार के सदस्य देश ग़ैर सदस्य देशों के साथ व्यापार करने की अपेक्षा आपस में व्यापार बढ़ाते हैं तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अनुसार साझा बाज़ार के ग़ैर-सदस्यों से आयात न करके परस्पर ही वे उन वस्तुओं का आयात प्रारम्भ कर देते हैं।

Trade liberalization (ट्रेड लिबरलाइलेशन) **व्यापार में उदारता की नीति**

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (विशेष रूप से आयातों) में विद्यमान प्रतिबन्धों का कम करने या पूरी तरह हटाने की प्रक्रिया। इनमें आयात करों (तटकरों) में कमी या समाप्ति, आयात अभ्यंशों की समाप्ति या उनका विस्तार, आयात हेतु परमिट सम्बन्धी प्रशासनिक दिक्कतों को दूर करना, तथा विदेशी विनिमय की सुलभता आदि शामिल हैं। गत कुछ वर्षों में भारत की आयात–निर्यात नीति को काफी उदार बना दिया गया है।

Trade integration (ट्रेड इंटीग्रेशन) **व्यापार का एकीकरण**

कुछ देशों के बीच मुक्त व्यापार की योजना बनाना। इसमें चार प्रकार की व्यवस्थाएँ हो सकती है :

(1) **मुक्त व्यापार क्षेत्र :** लेटिन अमरीकी देशों तथा उत्तरी अमरीकी देशों तथा आसियान देशों का मुक्त व्यापार क्षेत्र।

(2) **कस्टम यूनियन**

(3) **साझा बाजार :** इसमें वस्तुओं के अलावा श्रम व पूँजी का भी सदस्य देशों के बीच स्वतंत्र प्रवाह हो सकता है।

(4) **आर्थिक यूनियन**

Trade mark (ट्रेड मार्क) **व्यापार चिन्ह**

एक प्रतीक, जिसे व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपनी वस्तु की विशिष्ट पहचान हेतु प्रयोग में लेते हैं। उदाहरणार्थ – इंजन ब्रांड सरसों का तेल। इस विशिष्ट पहचान के कारण ही उपभोक्ता इस वस्तु को बाज़ार में ख़रीदते हैं।

Trade, not aid (ट्रेड,नॉट एड) **सहायता नहीं, व्यापार की माँग**

एक ऐसा नारा, जिसके अनुसार विकासशील देश *सशर्त सहायता के भार से बचने* हेतु विकसित देशों से माँग कर रहे हैं कि उन्हें अपनी वस्तुएँ अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में बेचने हेतु उदार व्यापार नीति का लाभ दिया जाए। यह देखा गया है कि विकसित देशों में उत्पादन लागत कम होने के कारण विकासशील देशों के लिए निर्यात बढ़ाना बहुत कठिन कार्य हैं। द्वितीय, विकसित देशों ने विकासशील देशों में उत्पादित प्राथमिक वस्तुओं के आयात पर संरक्षणात्मक आयात–कर लगाए हुए हैं। इसी कारण विकासशील देश यह अनुरोध कर रहे हैं कि विकसित देशों की व्यापार नीति मं सदाशयता तथा उदारता लाई जानी चाहिए।

Trade off (ट्रेड ऑफ) **दो वस्तुओं या साधनों के बीच प्रतिस्थापन**

यदि किसी देश में X के उत्पादन में वृद्धि करनी हो तो संसाधनों की निर्दिष्ट मात्रा के अन्तर्गत वहां Y के उत्पादन में कमी करनी होगी। X के उत्पादन में वृद्धि (ΔX) के बदले Y के उत्पादन में होने वाली कमी ($-\Delta Y$) दोनों वस्तुओं के मध्य प्रतिस्थापन को व्यक्त करता है।

Trade sanctions (ट्रेड सैंक्शन्स) **व्यापार पर प्रतिबन्ध**

एक देश द्वारा किन्हीं कारणों से किसी अन्य देश के साथ व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त करना, अथवा उन पर प्रतिबन्ध लगाना। ये प्रतिबन्ध विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं से सम्बद्ध हो सकते हैं अथवा सभी वस्तुओं से सम्बन्धित हो सकते हैं । फिर भी सम्पूर्ण व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाना सहज कार्य नहीं है। अमरीका प्रायः भारत सहित अनेक देशों को सुपर 301 के तहत व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने की धमकी देता रहता है।

Trade talks (ट्रेड टॉक्स) **व्यापार पर चर्चाएँ**
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सम्बन्ध में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के बीच चलने वाली वार्ताएँ। प्रायः ये वार्ताएँ द्विपक्षीय (दो देशों के बीच) या बहुपक्षीय (गॉट) हो सकती हैं।

Trade unions (ट्रेड यूनियन्स) **श्रमिक संघ**
मज़दूरों का संगठन जो पगार, सुविधाओं तथा रोज़गार की शर्तों के विषय में मालिकों के प्रतिनिधियों से वार्ता करता है। श्रमिक संघों का उद्देश्य श्रमिकों को शोषण से बचाते हुए उनके कल्याण हेतु विभिन्न गतिविधियों का संचालन करना है। इनकी माँगें पूरी न होने पर ये श्रमिक आंदोलन प्रारम्भ कर सकते हैं।

Trade war (ट्रेड वॉर) **व्यापार हेतु परस्पर आक्रमण**
ऐसी स्थिति, जिसके अंतर्गत एक देश अपने निर्यात बढ़ाने तथा/अथवा आयातों को कम करने हेतु किसी दूसरे देश को हानि पहुंचाने के लिए विविध प्रकार के तरीके अपनाता है। इनमें मात्रात्मक प्रतिबन्ध, आयात करों में वृद्धि, निर्यात संवर्द्धन हेतु सब्सिडी आदि शामिल हैं।

Trade weighted index (ट्रेड वेटेड इंडेक्स) **व्यापार भारित सूचकांक**
ऐसा सूचकांक, जिसमें किसी देश के व्यापार में अन्य देशों के भाग को भार के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। कुछ दशक पूर्व इस प्रकार के सूचकांकों को विनिमय दर के निर्धारण हेतु प्रयुक्त किया जाता था।

Trading currency (ट्रेडिंग करेन्सी)
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बद्ध सौदों हेतु लेखों में प्रयुक्त की गई करेन्सी
हालांकि क्रेता तथा विक्रेता दोनों देशों की करेन्सी इस कार्य हेतु उपयोग में ली जाती है, कुछ संदर्भों में किसी अन्य देश की करेन्सी में भी आयात व निर्यात का लेखा जोखा तैयार किया जाता है। उदाहरण के लिए, अधिकांश देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु अमरीकी डालर को सामान्यतया एक माध्यम मानते हैं।

Transaction cost economics (ट्रान्जेक्शन कॉस्ट इकोनोमिक्स)
सौदों की अन्तः तथा अन्तफर्म लागतें
इसमें प्रसंविदा सम्बन्धी लागतें, अवसर वादिता की लागतें, सीमाबद्ध विवेकशीलता तथा सूचना सम्बन्धी समस्याएँ आदि शामिल हैं।

Transaction motive (ट्रान्ज़ेक्शन मोटिव) **मुद्रा का सौदा उद्देश्य**
मौद्रिक कोषों की वह मात्रा जो उपभोक्ता तथा उत्पादक अपनी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने पास रखना चाहते हैं। यह मात्रा सकल राष्ट्रीय उत्पाद पर निर्भर करती है, परन्तु ब्याज़ की दर में होने वाले परिवर्तन का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (देखें precautionary motive, speculative motive)

Transfer earrings (ट्रान्सफर अर्निंग्स) **वैकल्पिक आय**
किसी साधन के लिए वैकलप्कि प्रयोग में प्राप्त होने वाली आय। यदि साधन की

माँग बहुत अधिक है, तो उद्यमी को वैकल्पिक प्रयोग में प्राप्य आय से अधिक भुगतान करना पड़ेगा। इस प्रकार किसी भी साधन हेतु कम से कम उतनी राशि अवश्य चुकानी पड़ेगी जो इसे किसी वैकल्पिक प्रयोग में मिल सकती है।

Transfer payments (ट्रान्सफर पेमेंट्स) **हस्तांतरण भुगतान**

ऐसी आय जो किसी भी साधन के वर्तमान प्रतिफल के रूप में न प्राप्त होकर सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा भुगतान, पेंशन आदि के रूप में मिलती है। ये भुगतान राष्ट्रीय उत्पाद की गणना में शामिल नहीं किए जाते क्योंकि ये किसी सेवा के बदले नहीं प्रदान किए जाते, और न ही प्राप्तकर्ता किसी प्रकार की उत्पादन प्रक्रिया में योगदान देते हैं।

Transfer price (ट्रान्सफर प्राइस) **हस्तांतरण कीमत**

किसी फर्म तथा इसकी सहायक कम्पनियों के मध्य आदान–प्रदान की गई वस्तुओं तथा इनपुट्स के लिए चुकाई गई कीमतें। इन कीमतों का निर्धारण इन्पुट्स तथा वस्तुओं के बाहरी बाज़ारों में प्रचलित कीमतों के आधार पर किया जाता है। इस प्रक्रिया में समूचे लाभ को मुख्य कम्पनी व इसकी सहायक फर्मों के बीच ही बांट लिया जाता है।

Transitional unemployment (ट्रान्ज़ीशनल अंएम्प्लॉयमेंट)

संक्रमणकालीन बेरोज़गारी

ऐसी बेरोज़गारी जिसका प्रारम्भ अर्थव्यवस्था की संरचना में बड़े परिवर्तनों के कारण होता है। उदाहरण के लिए, युद्ध की समाप्ति के बाद जब शांति व्यवस्था कायम होती है तब यह समस्या प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार जब अल्पविकसित देश के औद्योगीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है तब भी संक्रमणकालीन बेरोज़गारी प्रारम्भ हो जाती है। ऐसी ' स्थिति में कम कुशल या अकुशल श्रमिक बेरोज़गार होते हैं।

Transitivity (ट्रान्ज़ीटीविटी) **संक्रमकता**

संख्याओं की क्रम व्यवस्था की अपरिवर्तनयीयता। उदाहरण के लिए, तीन स्थितियां, A, B व C दी हुई हैं और उनके बीच इस प्रकार का सम्बन्ध है:

$A > B$

तथा $B > C$ हो,

तो स्पष्ट है $A > C$ ।

यानी A, B व C में सर्वाधिक प्राथमिकता A को तथा सबसे कम प्राथमिकता C को दी जाएगी।

Transmission mechanism (ट्रांसमिशन मेकेनिज़्म)

प्रसारण तंत्र विभिन्न देशों, क्षेत्रों तथा आर्थिक इकाइयों के बीच आय, कीमतों ,ब्याज दरों आदि में होने वाले परिवर्तनों की सूचनाएँ प्रसारित करना। इसमें वस्तु तथा पूँजी दोनों ही प्रकार के बाज़ारों को माध्यम बनाया जाता है। उदाहरण के लिए औद्योगिक देशों में तेज़ी या मंदी का प्रभाव विकासशील देशों पर अनेक तरीकों से अनुभव किया

जाता है : यदि बड़े देशों में तेजी है तो विकासशील देशों की वस्तुओं के उत्पादन व निर्यातों में वृद्धि होगी तथा कीमतें बढ़ेंगी परन्तु यदि औद्योगिक देशों में मंदी है तो अन्ततः विकासशील देश भी इसकी चपेट में आ जाएँगे।

Transparency (ट्रान्सपेरेन्सी) **पारदर्शिता**

सरकार की आर्थिक नीतियों एवं इनकी क्रियान्विति के तौर तरीकों में किसी प्रकार की गोपनीयता न रखना। इससे सीधी जुड़ी हुई व्यवस्था " सूचना के अधिकार " की है जिसमें कोई भी व्यक्ति सम्बद्ध अधिकारी या मंत्री से किसी सरकारी ख़र्च की मद एवं टैंडर प्रक्रिया का पूर्ण विवरण माँग सकता है। उदाहरण के लिए, एक चार लेन के 5 कि.मी. लम्बे उच्च मार्ग के लिए कितने व्यक्तियों ने कितनी राशि के टैंडर दिए, किसे उसका ठेका दिया गया और क्यों उसी का चयन हुआ, ठेकेदार ने किस प्रकार की तथा कितनी समाग्री का उपयोग किया, तथा उसे किस प्रकार तथा कब भुगतान किया, ये सारी सूचनाएँ जुटाना, एवं जनप्रतिनिधियों या सामान्य व्यक्ति के द्वारा माँगी जाने पर देना, पारदर्शिता के लिए आवश्यक हैं।

Transplant (ट्रान्सप्लांट) **प्रतिस्थापना करना**

एक ऐसी वस्तु को देश में बनाना जो अब तक आयात की जाती थी । प्रायः एक विदेशी कम्पनी स्वयं प्रतिस्थापना कर सकती है, या एक स्वदेशी फर्म विदेशी कम्पनी के सहयोग से ऐसा कर सकती है।

Transport cost (ट्रान्सपोर्ट कॉस्ट) **परिवहन लागत, माल भाड़ा**

साधनों तथा वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का व्यय–चाहे यह रेल मार्ग द्वारा हो, सड़क मार्ग द्वारा अथवा अन्य किसी विधि द्वारा। जहां परिवहन लागत काफी अधिक आती हो वहां यह अधिक उचित होगा कि बाज़ार के समीप ही उत्पादन केंद्रों की स्थापना की जाए।

Treasury Bill (ट्रेज़री बिल) **केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित प्रतिभूति**

जब अल्पकाल के लिए सरकार ऋण लेना चाहती है तो केंद्रीय बैंक इस प्रकार की प्रतिभूतियां जारी करता है। प्रारम्भ में अधिकांश प्रतिभूतियों को डिस्काउंट हाउसेज़ ख़रीदते हैं, तथा बाद में इन्हें व्यापारी बैंकों को बेच दिया जाता है। व्यापारी बैंकों की रिज़र्व सम्पत्तियों के अनुपात का एक बड़ा भाग ट्रेज़री बिलों के रूप में ही रहता है।

Treaty of Rome (ट्रीटी ऑफ रोम) **रोम की संधि**

यूरोपीयन आर्थिक समुदाय के छह संस्थापक सदस्यों द्वारा 1957 में तैयार किया गया दस्तावेज़, जिसके अन्तर्गत विदेशी व्यापार में विद्यमान प्रतिबन्धों को समाप्त करने, श्रम व पूँजी की स्वतंत्र गतिशीलता तथा कर–व्यवस्था में समरूपता लाने पर सहमति हुई थी।

Trend (ट्रैन्ड) **उपनति**

(देखें time series analysis)

Triangle of loss (ट्राएँगिल ऑफ लॉस) **हानि को मापने की एक विधि**

उत्पादन की उस मात्रा का निर्धारण करना, जहां सीमांत लागत तथा सीमान्त आगम बराबर न हों। यदि उत्पादन का स्तर साम्य स्तर से कम हो तो हानि का त्रिभुज वास्तविक तथा साम्य उत्पादन के स्तरों के बीच का वह क्षेत्र होगा जो पूर्ति वक्र के ऊपर तथा माँग वक्र के नीचे स्थित है।
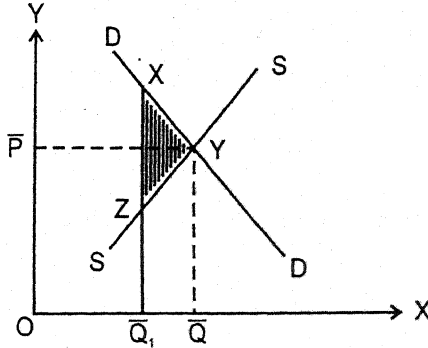
उपरोक्त चित्र में $O\bar{P}$ साम्य कीमत तथा $O\bar{Q}$ साम्य मात्रा का उत्पादन है, जिस पर बाज़ार में विद्यमान फर्में MC तथा MR=P के आधार पर अपनी अपनी साम्य उत्पादन मात्राएँ निर्धारित करती हैं। यदि उत्पादन $O\bar{Q}_1$ हो तो XYZ एक हानि का त्रिभुज होगा जो बतलाता है कि इस मात्रा पर उपभोक्ता $X\bar{Q}_1$ कीमत देने को तैयार हो सकते हैं।

Trickle down (ट्रिकल डाउन) **निम्नतम स्तर तक लाभ पहुँचाना**

विकासशील देशों में विकास कार्य प्रारम्भ करते समय यह मान्यता ली जाती है कि प्रत्येक योजना का लाभ समाज के निम्नतम वर्ग, यानी सबसे निर्धन वर्ग तक पहुँच जाएगा। परन्तु प्रायः इन देशों की सामाजिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था इस प्रकार की होती है कि योजनाओं के *लाभ ऊपर वाले तथा प्रभावशील लोगों तक ही सीमित रह जाते* हैं, तथा बहुत थोड़ा-सा अंश निर्धन लोगों (किसानों व मज़दूरों) को मिल पाता है।

True and fair view (ट्रू एन्ड फेयर व्यू) **सही व निष्पक्ष जाँच**

खातों की वह विशेषता, जिसके आधार पर अंकेक्षण करके उनका सत्यापन किया जा सकता है। खातों में ग़लत प्रविष्टि नहीं होनी चाहिए, और न ही जान बूझकर उनमें किसी प्रविष्टि को छोड़ना चाहिए। यही निष्पक्षता तथा सत्यता कहलाती है।

Trust (ट्रस्ट) **ट्रस्ट**

ऐसी व्यवस्था, जिसके अनुसार व्यक्तियों का समूह –जिन्हें ट्रस्टी कहा जाता है– अन्य व्यक्तियों (जिन्हें लाभार्थी कहते हैं) के लिए निष्पक्ष एवं सेवा की भावना से धन

ख़र्च करते हैं। *ट्रस्टी उस कोष के मालिक नहीं होते,* अपितु कानूनी तौर पर वह कोष उनके पास एक धरोहर के रूप में होता है, तथा ट्रस्ट के दस्तावेजों में वर्णित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही उसका उपयोग किया जा सकता है।

Turnkey project (टर्नकी प्रोजेक्ट) **औद्योपान्त परियोजना**

ऐसी परियोजना, जिसमें फैक्ट्री भवन के निर्माण,मशीनों व उपकरणों की स्थापना, स्थानीय लोगों के प्रशिक्षण, आदि का दायित्व एक विदेशी फर्म का होता है, जो अन्ततः इस उपक्रम को उत्पादन हेतु तैयार करके परियोजना के घरेलू संचालकों को सौंप देती है। विदेशी कम्पनी *इसके आगे कोई ज़िम्मेदारी अपने पास नहीं रखती।*

Turn over (टर्न ओवर) **किसी फर्म के सौदो का कुल मूल्य**

इसमें कुल बिक्री की राशि शामिल की जाती है। प्रायः एक वर्ष की अवधि में किए गए सौदों का कुल मूल्य इसमें शामिल किया जाता है।

Turn over tax (टर्न ओवर टैक्स) **सौदों के कुल मूल्य पर कर**

प्रायः इस कर का लाभ शीर्ष एकीकरण वाली कम्पनी को मिलता है, क्योंकि फर्म को आन्तरिक रूप से किसी मध्यवर्ती वस्तु का उत्पादन करना सस्ता पड़ता है, क्योंकि किसी बाहर वाली फर्म से वह इन्पुट ख़रीदने पर उसकी कीमत में कर की राशि भी शामिल की जाएगी, जबकि फर्म अपनी ही इकाई से वह इन्पुट ख़रीदने पर कर की बचत करने में सक्षम होगी।

Two-gap model (टू गैप मॉडल) **दो कमियों वाला मॉडल**

इस मॉडल के अनुसार विकासशील देशों के धीमे विकास के पीछे दो प्रकार की कमियां ज़िम्मेदार होती हैं- प्रथम, स्वयं स्फूर्त विकास हेतु वांछनीय निवेश तथा घरेलू बचतों का अन्तर, तथा द्वितीय, विकास के लिए आवश्यक आयातों एवं निर्यातों में अन्तर।

Two-part tariff (टू पार्ट टैरिफ) **एक प्रकार की कीमत प्रणाली**

इसके अनुसार क्रेता से एक सीमा तक वस्तु ख़रीदने पर जो कीमत ली जाती है, उसके पश्चात् ख़रीदी जाने वाली मात्रा पर कीमत में कमी कर दी जाती है। इसके पीछे तर्क यह होता है कि प्रारम्भिक कीमत के आधार पर विक्रेता अपनी आधारभूत लागतों के साथ थोड़ा सा लाभ कमाना चाहता है, परन्तु इसके बाद वह ज़्यादा बिक्री करके कम कीमत पर भी कुल लाभ में वृद्धि कर सकता है।

Two-tier board (टूटियर बोर्ड) **द्वि-स्तरीय संगठन**

किसी फर्म के प्रबन्धन की ऐसी व्यवस्था, जिसमें दो संचालक मंडल होते हैं। नीति निर्धारण का कार्य एक संचालक मंडल द्वारा किया जाता है जिसमें श्रमिकों तथा शेयरधारियों के प्रतिनिधि भी शामिल होते हैं। दूसरा संचालक मंडल फर्म के सामान्य कार्यों की देखरेख करता है, तथा यह सुनिश्चित् करता है कि सारे कार्य प्रथम संचालक मंडल द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुरूप सम्पन्न किए जाएँ।

□□□

U

Unanticipated inflation (अन्‌ऍंटीसिपेटेड इंफ्लेलशन) **अप्रत्याशित स्फीति**

ऐसी मुद्रा स्फीति, जिसकी कल्पना व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, श्रमिक संघों तथा उपभोक्ताओं ने नहीं की थी, परन्तु जिसके प्रारम्भ होने पर उन्हें आश्चर्य होता है। इस प्रकार की स्फीति को वर्तमान मूल्यों में शामिल नहीं किया जा सकता, परन्तु इसके घटित होने पर सभी वर्गों को कष्ट होता है।

Unbiased estimator (अन्बायस्ड एस्टीमेटर) **अनभिननत आकलक**

ऐसा मूल्य जिसका औसत न तो बहुत अधिक है, और नही बहुत कम है। आकलन की विधि से सदैव वास्तविक मूल्य प्राप्त नहीं होते, तथा दोनों ही ओर त्रुटि होने की समान सम्भावना रहती है।

Unbundling (अन्बडलिंग) **ग़ैर महत्वपूर्ण हिस्सों से छुटकारा**

किसी व्यवसाय के उन हिस्सों को बेचना जो महत्वपूर्ण नहीं है, ताकि फर्म केवल प्रमुख गतिविधियों में ही लिप्त रहे ऐसा माना जाता है कि अलग किए गए भाग उस स्थिति में अधिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे, जबकि फर्म से जुड़े रहने पर वे ऐसा नहीं कर पाते।

Uncertainty (अन्सर्टेन्टी) **अनिश्चित्‌ता**

वर्तमान तथ्यों अथवा भावी सम्भावनाओं के विषय में अनभिज्ञता का अहसास। मनुष्य कभी भी भावी घटनाओं की शत प्रतिशत सही भविष्यवाणी नहीं कर सकता। यह इस अर्थ में जोखिम से भिन्न है, क्योंकि जोखिम के परिणाम व्यक्ति नहीं जानता, परन्तु अनिश्चित्‌ता के विषय में वह शुरू से परिचित है। वह जानता है कि एक पांसे को फेंकने पर 1,2,3,4,5 तथा 6 में प्रत्येक के घटित होने की प्रायिकता 1/6 है परन्तु वस्तुतः क्या घटित होगा, यह अनिश्चित है।

Uncompetitive (अन्कम्पीटीटिव)

स्पर्द्धाशीलता न होना, लाभ अर्जित करने की असमर्थतता

किसी वस्तु या सेवा की कीमत यदि अन्य विक्रेताओं द्वारा माँगी गई कीमत की तुलना में काफी अधिक हो तो वह वस्तु या सेवा अलाभकारी हो जाती है। ऐसा तब ही होता है जब प्रतिद्वन्द्वियों की वस्तुएँ या सेवाएँ गुणवत्ता में बेहतर हों।

UNCTAD (अंक्टाड)

संयुक्त राष्ट्र संघ का विकास व व्यापार से सम्बद्ध एक संगठन,

इसकी स्थापना 1964 में अल्पविकसित देशों के हितों को बढ़ावा देने हेतु की गई थी अंक्टाड के माध्यम से इन देशों को व्यापार में रियायतें देने, तथा उदार शर्तों

पर वित्तीय साधन उपलब्ध कराने हेतु विकसित देशों पर दबाव डालने के प्रयास किए जाते रहे हैं।

Undated security (अन्डेटेड सीक्योरिटी) **ऐसी प्रतिभूति जिस पर भुगतान की तिथि अंकित न हो**

इस पर ऋणी केवल ब्याज़ चुकाता रहता है। जब उसकी इच्छा या सुविधा हो तब इस प्रतिभूति की मूल राशि वह चुका सकता है।

Under-capitalized (अंडर केपीटेलाइज़्ड) **पूँजी की कमी**

यदि फर्म को जितनी यूँजी की आवश्यकता हो उसके पास उससे कम पूँजी हो तो अन्ततः वह फर्म असफल हो सकती है। ऐसी फर्म अपने लेनदारों को समय पर भुगतान नहीं कर पाती, क्षमता से कम उत्पादन करती है तथा उसे अत्यंत कम लाभ प्राप्त हो पाते हैं। प्रायः बैंकों के लिए पूँजी की पर्याप्तता हेतु केन्द्रीय बैंक द्वारा दिशा निर्देश दिए जाते हैं।

Under developed country (अंडर डेवलप्ड कंट्री) **अल्पविकसित देश**

ऐसा देश जहां प्रति व्यक्ति आय कम हो, विकास की दर अत्यंत धीमी हो, बचत व निवेश के स्तर कम हों, बेरोज़गारी तथा ग़रीबी सर्वत्र व्याप्त हो तथा उत्पादन की तकनीक कई पीढ़ियों से अपरिवर्तित चली आ रही हो। अल्प विकसित देश ग़रीबी के कुचक्र में फंसा रहता हैं। (देखें developing country).

Under-funded pension scheme (अंडर फंडेड पेंशन स्कीम)

ऐसी पेंशन प्रणाली, जिसमें अपेक्षा से कम कोष हैं, तथा प्रायः दीर्घकाल में पेंशन अधिकारी पेंशन का भुगतान करने में असमर्थ हो जाते हैं।

Underlying rate of inflation (अंडरलाइंग रेट ऑफ इंफ्लेशन) **खुदरा कीमत सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर**

इस स्फीति दर में ब्याज़ के भुगतान में हुई वृद्धि को शामिल नहीं किया जाता।

Under-subscription (अंडर सब्सिक्रिप्शन) **अपर्याप्त अंशदान**

जितने शेयर निर्गमित किए जाते हैं उनसे कम के लिए आवेदन प्राप्त होना। इस प्रकार शेयर पूँजी का एक भाग निर्गमित नहीं हो पाता जिसे अन्डर राइटर्स ख़रीद लेते हैं। जब वे बाज़ार में इन शेयरों को बेचने का प्रयत्न करते हैं तो शेयरों पर अंकित मूल्य से कम पर इन्हें बेचना पड़ता है। (देखिए over subscription)

Under-valued currency (अंडर वेल्यूड करेन्सी) **अवमूल्यित करेंसी**

ऐसी मुद्रा, जिसकी विदेशी विनिमय दर कम होती है, जिससे विदेशी बाज़ारों में उस देश के निर्यात बढ़ने लगते हैं। ऐसे देश को अन्य देशों से सरलतापूर्वक ऋण भी उपलब्ध हो जाते हैं। इस प्रकार मंदी के दौरान भी ऐसा देश अपने लिए अनुकूल व्यापार –शेष प्राप्त कर लेता है।

Under writing (अंडर राइटिंग) **नए निर्गम हेतु ज़िम्मेदारी लेना**

नए शेयरों के निर्गम के समय मर्चेंट बैंकों द्वारा यह दायित्व लेना कि सभी शेयर बाज़ार में ख़रीद लिए जाएँगे। वे यह भी दायित्व लेते हैं कि यदि पर्याप्त आवेदन पत्र नहीं मिले तो वे शेष शेयरों को ख़रीद लेंगे। इस प्रकार अंडर राइटर नए शेयरों के निर्गम के विषय में प्रचलित अनिश्चितता को समाप्त कर देते हैं। प्रायः अन्डरराइटर की प्रतिष्ठा को देखकर निवेशकर्ता शेयरों की पूर्ण मात्रा ख़रीद लेते हैं।

Undistributed profits (अंडिस्ट्री ब्यूटेड प्रॉफिट्स) **अवितरित लाभ**

कम्पनी के लाभ का वह भाग जो न तो करों के रूप में सरकार को चुकाया गया हो, और न ही जिसे लाभांश के रूप में शेयरधारियों में वितरित किया गया हो। कम्पनी इस अवितरित लाभ को पुनर्निवेश कर देती है। (देखे retained profits)

UNDP (यू.एन.डी.पी) **संयुक्त राष्ट्रसंघ विकास कार्यक्रम**

इस संगठन के द्वारा प्राथमिक शिक्षा हेतु विकासशील देशों में पैसा खर्च किया जाता है। यह संगठन प्रतिवर्ष " मानव विकास रिपोर्ट " (HDR) का प्रकाशन करके विभिन्न देशों में मानव विकास सूचकांकों तथा महिला विकास सूचकांकों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Unearned income (अन्अर्न्ड इन्कम) **बिना श्रम किए प्राप्त आय**

प्रायः यह आय ब्याज़ तथा सम्पत्ति के किराए से प्राप्त होती है। इसी प्रकार साझेदारी फर्म में सुप्त साझेदार या अवयस्क साझेदार को लाभ में प्राप्त होने वाला भाग भी इसी श्रेणी में रखा जाता है। इनमें से किसी भी आय के लिए प्राप्तकर्ता श्रम नहीं करता और न ही जोखिम उठाता है।

Unemployable (अन्एँप्लायेबल) **रोज़गार के लिए अयोग्य व्यक्ति**

इस श्रेणी में भौतिक रूप से अक्षम व्यक्ति, पागल, दीवालिया या मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्तियों को शामिल किया जाता है जिन्हें रोज़गार पर नहीं रखा जा सकता, क्योंकि उत्पादन प्रक्रिया में उनका योगदान शून्य या ऋणात्मक हो सकता है।

Unemployment (अंएँप्लायमेंट) **बेरोज़गारी**

काम करने के योग्य होने तथा रोज़गार की चाह होने पर भी रोज़गार न मिलना। इसे मापने हेतु भारत में दो तरीके व्याप्त हैं। प्रथम, रोज़गार कार्यालयों में पंजीकृत व्यक्ति। द्वितीय, राष्ट्रीय सेम्पल सर्वे संगठन द्वारा दैनिक, साप्ताहिक या सामान्य दृष्टि से बेरोज़गारी को मापने हेतु किए गए सर्वेक्षण।

बेरोज़गारी को समाप्त करना प्रायः किसी भी देश में सम्भव नहीं हो पाता । लेकिन सरकार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ऐसी नीतियां बनाती हैं जिनके द्वारा रोज़गार के नए अवसरों का निजी तथा सामाजिक क्षेत्रों में सृजन होता है, तथा बेरोज़गारी की समस्या आंशिक रूप से कम हो जाती है। परन्तु कार्य करने में सक्षम होने पर भी

जो व्यक्ति काम नहीं करना चाहते उन्हें बेरोज़गार नहीं माना जाता। (देखें technological unemployment, transitional unemployment etc.)

Unemployment benefit (अंएम्प्लायमेंट बेनीफिट) **बेरोज़गारों की सहायता**

विभिन्न देशों में इस सहायता की प्रकृति में काफी फर्क पाया जाता है। कहीं पर पूर्ववर्ती रोज़गार से प्राप्त आय के आधार पर बेरोज़गारों को भत्ता मिलता है, तो कहीं पर एक निश्चित् राशि दी जाती है। अधिकांश देशों में रोज़गार पर रहते हुए कर्मचारियों से इसके लिए अंशदान लिया जाता है, और यदि उनमें से कोई भी व्यक्ति बेरोज़गार हो जाए तो वह सहायता प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है।

Unemployment rate (अंएम्प्लायमेंट रेट) **बेरोज़गारी दर**

कुल श्रमिकों में बेरोज़गारों का अनुपात। भारत में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वे संगठन (NSSO) द्वारा बेराज़गारों की संख्या दैनिक, साप्ताहिक या सामान्य दृष्टि से अनुमानित की जाती है। तदनुसार यहां बेरोज़गारी की दर को भी तीन प्रकार से अनुमानित किया जाता है।

Unexpected inflation (अन्एक्सपेक्टेड इंफ्लेशन) **अनपेक्षित मुद्रा स्फीति**

विभिन्न संस्थाओं तथा सरकार द्वारा किसी भी नीति या कार्यक्रम का निरूपण करते समय मुद्रा स्फीति की निश्चित दर की मान्यता ली जाती है। यदि वस्तुतः मुद्रा स्फीति की दर अपेक्षित दर से अधिक या कम हो तो इसे अनपेक्षित स्फीति कहा जाता है। मूल रूप में उस परियोजना या कार्यक्रम से जितने शुद्ध लाभ प्राप्त होने की आशा की गई थी, वास्तविक मुद्रा स्फीति अपेक्षित स्तर से अधिक (कम) हो तो वे शुद्ध लाभ स्वभावतः कम (अधिक) हो जाएँगे।

Unfair competition (अन्फेयर कम्पीटीशन) **अनुचित स्पर्द्धा या प्रतियोगिता**

कभी -कभी प्रतिद्वन्द्वी फर्मों में से कुछ हानि उठाकर भी काफी नीची कीमत पर वस्तु बेचने का प्रयास करती हैं। इसका उद्देश्य शेष विक्रेताओं का बाज़ार से खदेड़ कर बाहर करना है, क्योंकि वे ऐसी दशा में प्रतियोगिता करने में समर्थ नहीं होते। कभी-कभी किसी देश की सरकार अपने उद्यमियों को भारी अनुदान देकर सस्ती कीमत पर अन्य देशों में वस्तुएँ बेचने हेतु प्रोत्साहन देती है। यह भी अनुचित प्रतियोगिता का एक उदाहरण है।

Unfair dismissal (अन्फेयर डिसमिसल) **अनुचित बर्ख़ास्तगी**

किसी कर्मचारी या श्रमिक की ऐसी बर्ख़ास्तगी, जिसका प्रबन्धक के पास कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं है। प्रायः कर्मचारी के दोषपूर्ण आचरण, धोखाधड़ी, कार्य करने में अक्षमता, अयोग्यता या आपराधिक रिकार्ड उसकी बर्ख़ास्तगी के लिए उचित कारण बन सकते हैं । परन्तु यदि *व्यक्तिगत वैमनस्य* के कारण उसे बर्ख़ास्त किया जाए तो यह अनुचित है।

Un-funded pension scheme (अंफंडेड पेन्शन स्कीम) **कोष रहित पेंशन योजना**

ऐसी पेंशन योजना, जिसके लिए कोई पेंशन कोष नहीं है। ऐसे पेंशन प्राप्तकर्ताओं को उनके पूर्व नियोक्ता के द्वारा, अथवा वर्तमान नियोक्ता के द्वारा भुगतान किया जाता है। जब तक नियोक्ता की हैसियत पेंशन चुकाने की है, तब तक पेंशनरों को उसका लाभ मिलता रहता है।

Unified budget (यूनीफाइड बजट) **एकीकृत बजट**

भारत में राजस्व तथा पूँजीगत दोनों प्रकार के बजटों को मिला कर प्रस्तुत करना। पूर्व में इंगलैंड की संसद में भी एक साथ सरकारी व्यय तथा कर सम्बन्धी योजनाओं के प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाते थे, परन्तु 1993 से अब दोनों प्रकार के बजट अलग-अलग समय पर प्रस्तुत किए जाते हैं।

Unionized (यूनियनाइज़्ड) **संगठित श्रम**

श्रमिक संघों के द्वारा श्रमिकों को संगठित करना । (देखे trade union)

Unit banking (यूनिट-बैंकिंग) **इकाई बैंकिग**

ऐसा बैंक, जिसकी कोई शाखा न हो, तथा वह स्वतंत्र रूप से बैंकिंग व्यवसाय में संलग्न हो।

Unitary taxation (यूनीटरी टैक्सेशन)

अनेक देशों में व्यवसायरत फर्म पर कर लगाना

इस कर का आधार कुल लाभ में प्रत्येक देश से अर्जित लाभ का अनुपात होता है। यदि किसी बहुदेशीय फर्म से उसके प्रधान कार्यालय वाले देश में ही कर लिया जाए तो वह अपने खाते इस प्रकार तैयार करेगा कि कर में बचत हो। प्रायः बहुदेशीय फर्म एक देश में स्थित अपनी इकाई से ऊँची कीमत पर ख़रीद कर वह वस्तु किसी दूसरे देश में भिजवाती है; अथवा एक देश से दूसरे देश को कम कीमत पर निर्यात करती है।

Unit elasticity (यूनिट इलास्टीसिटी) **समानुपाती लोच**

जब किसी स्वतंत्र चर (मान लीजिए, आय या कीमत) में परिवर्तन होने पर आश्रित चर (मान लीजिए, माँग की मात्रा) में भी उसी अनुपात में परिवर्तन हो, तो इसे समानुपाती या इकाई के समान माँग की लोच (e =1) कहा जाता है।

Unit-free measure (यूनिट–फ्री मैज़र) **इकाई रहित माप**

एक शुद्ध संख्या वाला चर, जिसका कीमत या मात्रा से कोई सम्बन्ध नहीं होता। वस्तुतः इसके अन्तर्गत बाज़ार में प्रतिशत हिस्सा, लोच आदि को लिया जाता है। परन्तु विकास दर, ब्याज़ दर आदि इकाई रहित माप की गणना में नहीं आते, क्योंकि कीमतों तथा मात्राओं की इकाइयों (रुपए, टन आदि) से स्वतंत्र होने पर भी वे समय को मापने हेतु प्रयुक्त इकाइयों पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, निर्दिष्ट अवधि में 8 प्रतिशत की विकास दर...)

Unit of account (यूनिट ऑफ एकाउंट) **सौदों के लिए प्रयुक्त मौदिक इकाई**

मुद्रा के प्रमुख कार्यों में एक यह भी है कि इसी में सारे सौदों को उद्धृत किया

जाता है। इसी प्रकार लोगों की आय, तथा उत्पादकों के लाभ को भी मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है।

Unit Trust of India (यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया) **भारतीय यूनिट ट्रस्ट**

छोटे निवेशकों को यूनिट की बिक्री करके हजारों करोड़ रु की राशि एकत्रित करने तथा उन्हें लाभप्रद निवेश में लगाना।

Universal benefit (यूनिवर्सल बेनीफिट) **सबके लिए उपलब्ध लाभ**

उदाहरण के लिए, सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन, ग्रेचूटी का लाभ सभी कर्मचारियों को मिलता है। इसी प्रकार राजकीय कर्मचारियों के लिए चिकित्सा व्यय पुनर्भरण या चिकित्सा सुविधा सभी के लिए उपलब्ध होती है। परन्तु सभी को उपलब्ध लाभ की नीति एक काफी खर्चीली योजना होती है

Unlimited liability (अनलिमिटेड लाइबिलिटी) **असीमित्व दायित्व**

किसी व्यक्ति या फर्म द्वारा लिए गए ऋण या व्यापार में हुए घाटे की ऐसी जिम्मेदारी, जो उस व्यक्ति या फर्म के साझेदारों की निजी सम्पत्ति को बेचकर भी पूरी करनी होती है। एकल व्यापारी तथा साझेदारी में (अवयस्क साझेदार को छोड़कर) घाटे या ऋण की पूर्ति का दायित्व अपरिमित होता है। इसके विपरीत संयुक्त कम्पनी के शेयर धारियों का दायित्व शेयरों के मूल्य के केवल उस भाग तक सीमित है जिसका उन्होंने भुगतान नहीं किया है।

Unofficial economy (अन्‌ऑफीशियल इकोनोमी) **अवैधानिक गतिविधियाँ**

प्रायः इस प्रकार की गतिविधियां करों की चोरी के उद्देश्य से की जाती हैं। इनमें से कुछ गतिविधियों से लोगों को कर योग्य आय नहीं मिलती, और इसलिए उनसे सम्बद्ध खाते रखना ज़रूरी नहीं होता। परन्तु बहुत से खुदरा व्यापारी, ढाबे वाले, रेस्टॉरेंट के मालिक, जूस बेचने वाले, ट्रान्सपोर्ट कम्पनी वाले, या यहां तक कि पान वाले भी बहुत अधिक आय प्राप्त करते हैं तथापि न तो इसका समुचित विवरण तैयार करते हैं, और न ही कर चुकाते हैं। ये सभी अवैधानिक गतिविधियां हैं।

Unsecured loans (अनसिक्यूर्ड लोन) **असुरक्षित ऋण**

ऐसा ऋण जिसकी अदायगी न होने पर ऋण दाता के पास ऋणी की किसी भी सम्पत्ति को हस्तगत करके अपने ऋण की वसूली करने का अधिकार नहीं है। ऐसे ऋणदाताओं को ऋणी के दीवालिया होने पर *वसूली करने वाले लोगों की सूची में सबसे नीचे रखा* जाता है। प्रायः ऋणदाता केवल ऋणी के **मौखिक आश्वासन के आधार** पर यह ऋण देता है।

Unskilled work (अंस्किल्ड वर्क) **अकुशल कार्य**

ऐसा कार्य, जिसके लिए किसी प्रकार की शैक्षणिक योग्यता, प्रशिक्षण या कार्यानुभव की आवश्यकता नहीं है।

Untied aid (अंटाइड एड) **बिना शर्त सहायता**

विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों को दी गई ऐसी सहायता जिसके उपयोग

हेतु कोई शर्तें नहीं लगाई जातीं। सहायता प्राप्त करने वाला देश उसका उपयोग अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर कहीं भी कर सकता है। (देखें tied aid)

Uniweighted average (अंवेटेड एवरेज)

सरल औसत तथा भार सहित औसत

यदि किसी श्रेणी में 30 संख्याओं के मूल्य दिए गए हों तथा उनके योग को 30 से भाग दिया जाए तो सरल औसत मूल्य ज्ञात किया जा सकता है।

$$U = \left[\sum_{i=1}^{30} X_i / 30 \right]$$

यदि कुल संख्याएँ 30 से कम या ज्यादा हों तब भी यही विधि प्रयुक्त की जाएगी। (देखें weighted average) ।

Urban economics (अरबन इकोनोमिक्स)

नगरीय अर्थशास्त्र; शहरी अर्थशास्त्र

शहरी क्षेत्रों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन। इसमें पहले कस्बों व शहरों के विकास, वहां के उद्योगों व व्यापार के विकास, नगरीय प्रशासन आदि का, तथा तत्पश्चात् महानगरों की समस्याओं तथा व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

Uruguay round (यूरेग्वे राउंड) **यूरेग्वे वार्ताएँ**

गॉट के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर वार्ताओं का अंतिम दौर ये वार्ताएँ 1986 से 1994 तक चलीं, तथा इनकी परिणति के रूप में विश्व व्यापार संगठन (WTO) का गठन किया गया। पहली बार यूरग्वे दौर के अन्तर्गत कृषि पर विद्यमान संरक्षण में कुछ ढील दी गई तथा वस्त्रों एवं मल्टी फाइबर एरेंजमेंट से सम्बद्ध व्यापार के विषय में कुछ सहमति हुई। बौद्धिक सम्पदा के अधिकार पर भी काफी विस्तार से विचार -विमर्श किया गया।

U-shaped average cost curve (यू शेप्ड एवरेज कॉस्ट कर्व)

यू आकार का औसत लागत वक्र

यह वक्र बताता है कि परिवर्तनशील साधन की इकाइयाँ बढ़ाने पर प्रारम्भ में वर्द्धमान प्रतिफल के कारण औसत लागत में कमी आती है। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि प्रारम्भ में फर्म के संयंत्र की तुलना में परिवर्तनशील साधन की मात्रा बहुत कम रहती है। परन्तु जब संयंत्र के निर्दिष्ट आकार की तुलना में परिवर्तनशील साधन की मात्रा काफी बढ़ जाती है तो उत्पादन ह्रास नियम लागू होने लगता है। ऐसी स्थिति में औसत उत्पादन लागत बढ़ने लगती है। इस प्रकार पहले औसत लागत कम होती है, फिर बढ़ती है तथा कुल मिलाकर U का आकार ले लेती है।
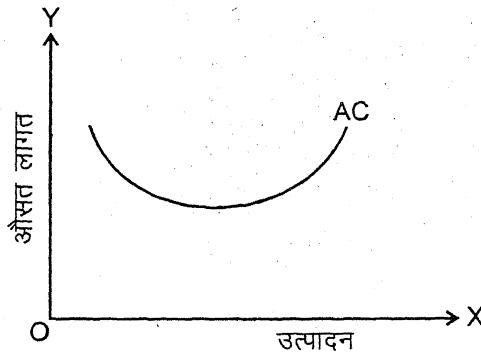
उपरोक्त चित्र में U आकार का औसत लागत वक्र प्रस्तुत किया गया है।

US Trade Representative (यू.एस.ट्रेड रिप्रेज़ेन्टेटिव)

सं.रा.अमरीका का व्यापार प्रतिनिधि

यह अमरीका की व्यापार नीति बनाने तथा अन्य देशों के साथ व्यापार सम्बन्धी बातचीत करने का कार्य करता है। यदि कोई देश अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों या द्विपक्षीय सहमति का उल्लंघन करता है तो प्रारम्भ में उसे चेतावनी देने और अन्ततः अमरीका की ओर से कड़े कदम उठाने का कार्य भी इसी प्रतिनिधि को करना होता है।

Usury (यूज़री) **सूदखोरी**

ऋणी की विवशता को देखते हुए ऋण दाता उससे काफी अधिक ब्याज़ वसूल करे या ब्याज़ के ऊपर ब्याज़ ले तो यह सूदख़ोरी कहलाती है। प्रायः अत्यंत पिछड़े हुए देशों को छोड़कर सभी देशों में सूदखोरी एक दंडनीय अपराध माना जाता है।

Utilitarianism (यूटीलिटेरियनिज़्म)

कल्याण हेतु सभी नियम एवं संस्थाओं का निर्माण

इसके पीछे यह धारणा रही है कि अधिकतम लोगों को अधिकतम क़ल्याण (उपयोगिता) की प्राप्ति हो। इस विचारधारा का प्रतिपादन जेरेमी बेन्थम ने किया था। उन्होंने कहा कि सरकार के अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण तथा निजी सम्पत्ति के अधिकार, दोनों की सीमाएँ तय करके अधिकतम लोगों को अधिकतम लाभ देने का उद्देश्य पूरा होना चाहिए।

Utility (यूटीलिटी) **उपयोगिता**

व्यक्ति को विभिन्न वस्तु की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त होने वाली संतुष्टि। उपयोगिता को फलनिक रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है

$$U=f(X,Y,Z....)$$

इस फलन में U कुल उपयोगिता है जो X,Y,Z आदि वस्तुओं की मात्राओं पर निर्भर

करती है। प्रायः उपयोगिता फलन में शामिल वस्तुओं में किसी एक या अधिक की मात्रा में वृद्धि होने पर कुल उपयोगिता में वृद्धि होती है।

Utility function (यूटीलिटी फंक्शन) **उपयोगिता फलन**

(1) उपभोक्ता को प्राप्त कुल उपयोगिता। (देखें utility)

(2) आय पर आधारित उपयागिता। जब आय का आवंटन विभिन्न वस्तुओं के लिए इष्टतम रूप में होता है तो उपभोक्ता अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करता है।

(3) कीमतों पर आधारित उपयोगिता। किसी भी वस्तु या एक से अधिक वस्तुओं की कीमत बढ़ने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय कम होती है, तथा उससे प्राप्त उपयोगिता कम हो जाती हैं

Utility maximization (यूटीलिटी मैक्सीमाइजेशन)

अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करना

इस विधि के अन्तर्गत उपभोक्ता निर्दिष्ट आय को विभिन्न वस्तुओं के बीच इस प्रकार आवंटित करता है कि कुल उपयोगिता अधिकतम हो जाए। एल्फ्रेड मार्शल ने बतलाया कि जब सभी वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता समान होती हैं तो उपभोक्ता को प्राप्त कुल उपयोगिता अधिकतम हो जाती है :

$MUx_1 = MUx_2 = MUx_3 = \dots\dots\dots = MUx_n$

यहां MU सीमान्त उपयोगिता है, x_1 से लेकर x_n तक वस्तुओं की मात्रा के प्रतीक हैं।

□□□

V

Vacancy rate (वेकेन्सी रेट) **उपलब्ध रोज़गारों की दर**

नियोक्ता तथा सरकार रोज़गार कार्यालयों तथा रोज़गार केन्द्रों पर रिक्त स्थानों का विवरण भेजते हैं। रोज़गारों की दर की तुलना बेरोज़गारी दर से करने पर यह ज्ञात हो सकता है कि रिक्त स्थानों की पूर्ति होने के बाद भी बेरोज़गार कितने शेष रहेंगे।

Value (वैल्यू) **मूल्य**

(1) सकल घरेलू उत्पाद का मूल्य, जो दो अवधियों के बीच वस्तुओं की मात्रा, कीमतों या दोनों में वृद्धि के कारण बढ़ता है।

(2) कीमत का पर्याय। प्रायः व्यवहार में किसी वस्तु की कीमत को भी मूल्य के रूप में व्यक्त कर दिया जाता है।

(3) प्रशंसा या किसी व्यक्ति की हैसियत को मापने का तरीका।

(4) किसी चर या प्राचल का आकार।

Value added (वैल्यू एडेड) **मूल्य का सृजन**

किसी वस्तु की बिक्री से प्राप्त आगम में से अन्य फर्मों से ख़रीदे गए इन्पुट्स का मूल्य घटा कर प्राप्त मूल्य। जो शेष रहा है वह श्रमिकों व कर्मचारियों की पगार तथा उद्यमियों का लाभ है। **यही मूल्य का सृजन है** जिसे राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल किया जाता है।

Value added tax ,(VAT) (वैल्यू ऐडेड टैक्स)

सृजित मूल्य का वह अनुपात जिसे कर के रूप में वसूल किया जाता है

यह एक परोक्ष कर है जो वस्तुओं तथा सेवाओं पर रोपित किया जाता है। उपभोक्ता ख़रीद मूल्य के अतिरिक्त इस कर का भी भुगतान करता है। विक्रेता सरकार को यह राशि चुकाने से पूर्व ख़रीदी गई इन्पुट्स पर पूर्व में चुकाए गए कर (VAT) को घटा लेता है। ऐसी सम्भावना है कि 2002 से भारत के सभी राज्य बिक्री कर की अपेक्षा वैट (VAT) प्रणाली ही लागू कर देंगे।

Value judgement (वैल्यू जजमेंट)

किसी भी नीति या कार्यक्रम पर व्यक्त विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत राय, जिसके पीछे कोई अनुभव या ठोस तर्क नहीं होता। यह एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण माना जाता है।

Value subtracting industry (वेल्यू सब्ट्रेक्टिंग इन्डस्ट्री)

आगम से ऊँची लागत वाला उद्योग

ऐसा उद्योग, जहां ख़रीदे गए इन्पुट्स की लागत की तुलना में उत्पादित वस्तु का मूल्य कम होता है। इस स्थिति के दो वैकल्पिक कारण हो सकते हैं। प्रथम, उस उद्योग को

बहुत अधिक अनुदान मिल रहे हों, या उसी फर्म की सहायक इकाइयों द्वारा उनके लाभ का एक बड़ा अंश फर्म के इनपुट्स हेतु व्यय किया जा रहा हो। एक वैकल्पिक कारण यह हो सकता है कि इनपुट्स तथा उत्पादन की कीमतें बाज़ार में प्रचलित मूल्यों से भिन्न हों। उदाहरण के लिए पूर्व-समाजवादी देशों तथा अनेक विकासशील देशों में आगम से ऊँची लागतों की समस्या को देखते हुए सरकार बिजली, सिंचाई, उर्वरकों तथा अनेक सरकारी उद्योगों के लिए अनुदान देती रही हैं।

Variable (वेरिएबल) **चर**

वह संख्या, मात्रा, या राशि जो परिवर्तनशील हो। इन चरों में कीमतें, ब्याज़ दरें, आय के स्तर, उत्पादकता, वस्तुओं या साधनों की मात्रा आदि शामिल किए जा सकते हैं। इनमें बहिर्जात चर वे हैं जो बाहरी घटकों पर निर्भर करते हैं, तथा सम्बद्ध मॉडल में उन्हें दिया हुआ मान लेते हैं। इसके विपरीत अन्तर्जात चर वे हैं जो परस्पर निर्भर होने के कारण परिवर्तित होते रहते हैं।

Variable cost (वेरिएबल कॉस्ट) **परिवर्तनशील लागत**

कुल लागत का वह भाग जो उत्पादन के साथ साथ बढ़ता है। स्थिर लागतों का उत्पादन की मात्रा से कोई सम्बन्ध नहीं होता, परन्तु जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है फर्म को परिवर्तनशील साधन की मात्रा बढ़ानी होती है।

परिवर्तनशील लागत प्रारम्भ में उत्पादन की तुलना में धीमी गति से बढ़ती है क्योंकि फर्म को वर्द्धमान प्रतिफल प्राप्त होते हैं । परन्तु एक सीमा के पश्चात् उत्पादन ह्रास नियम लागू हो जाता है और इसलिए परिवर्तनशील लागत में अपेक्षाकृत अधिक तेज़ी से वृद्धि होती है। नीचे चित्र में कुल परिवर्तनशील लागत वक्र (TVC) तथा औसत परिवर्तनशील लागत वक्र (AVC) दिए गए हैं।
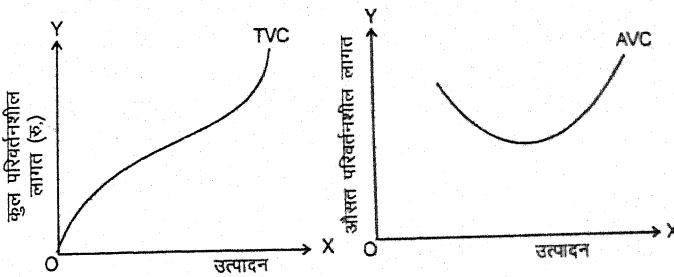
Variable factor proportions (वेरिएबल फैक्टर प्रॉपोर्शन्स)

साधनों के परिवर्तनशील अनुपात

विभिन्न साधनों के अनुपातों मे परिवर्तनशीलता। इसे दो प्रकार से देखा जा सकता है। प्रथम, एक साधन को स्थिर तथा दूसरे को परिवर्तनशील मानने पर जैसे-जैसे

पविर्तनशील साधन की मात्रा बढ़ती है, दोनों साधनों के अनुपात बदलते जाते हैं। इसी के आधार पर यह देखा जाता है कि फर्म उत्पादन वृद्धि नियम के अंतर्गत कार्य कर रही है, या उत्पादन ह्रास नियम के अन्तर्गत । इसे परिवर्तनीय अनुपातों का नियम भी कहते हैं।

द्वितीय विधि में दोनों साधनों (L,K) को परस्पर स्थापन्न मानते हैं। तदुनसार यदि दोनों की कीमतों के अनुपात (P_L/P_K) में परिवर्तन हो तो दोनों साधनों की मात्राओं के अनुपात $\left(\frac{K}{L}\right)$ में भी परिवर्तन हो जाएगा, क्योंकि सापेक्ष रूप से मँहगे साधन की मात्रा में कमी करके, फर्म अपेक्षाकृत सस्ते साधन का अधिक प्रयोग करेगी।

Variety (वेरायटी) **किस्म, भिन्नता**

(1) ऐसी वस्तु, जो गुणवत्ता, ब्रांड, पैकिंग, रंग आदि में अन्य वस्तुओं से अलग हो।

(2) एक ही वस्तु के अनेक ब्रांड, पैकिंग, रंग, ट्रेडमार्क आदि होने पर, उपभोक्ता को उनमें से किसी एक का चुनाव करना होता है।

Veblen, Thorstein Bunde (1857-1929) (थार्स्टीन बंडे वेब्लन) **एक अमरीकी अर्थशास्त्री**

जिसने अपनी पुस्तक "दी थ्योरी ऑफ दी लीज़र क्लास" (1899) में बड़े निगमों के निरंकुश विकास के परिणामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बड़ी कम्पनियों के प्रबन्धक अधिक चतुर एवं चालाक होते हैं, तथा प्रायः कम्पनी के विस्तार के साथ-साथ आम जनता के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव होता रहता है।

वैब्लन ने व्यर्थ के उपभोग व्यय की कड़ी आलोचना की। उन्होंने यह भी कहा कि नई प्रौद्योगिकी के कारण उत्पादकता में वृद्धि होती है, परन्तु अन्ततः इससे मंदी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। शायद इसी कारण प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच विवाद उत्पन्न हो जाता है।

Veblen effect (वैब्लन इफेक्ट) **वैब्लन प्रभाव**

उपभोग का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार उपभोक्ताओं का एक वर्ग वस्तु की कीमत बढ़ने पर इसकी कम मात्रा ख़रीदता है। तदनुसार ऐसी वस्तु का माँग वक्र इस वर्ग के उपभोक्ताओं के लिए धनात्मक ढलानयुक्त होता है। वस्तुतः इस प्रकार की वस्तुओं में अत्यन्त मूल्यवान हीरे, आभूषण या पुरातत्व महत्व की चीज़ें रहती हैं।

Velocity of circulation (वैलोसिटी ऑफ सर्कूलेशन) **चलन वेग**

मुद्रा की एक इकाई का कितनी बार चलन हो सकता है, इसका माप। यदि अर्थव्यवस्था में मुद्रा की कुल मात्रा 10,000 करोड़ रु हो तथा *सभी प्रकार के सौदों का मूल्य* 100000 करोड़ रु हो, तो चलन वेग 10 माना जाएगा। करेन्सी की कुल मात्रा को चलन वेग से गुणा करने पर मौद्रिक सौदों की कुल राशि ज्ञात की जा सकती है। इसी प्रकार साख मुद्रा (चैक, हुंडी आदि) का भी चलन वेग ज्ञात किया जा सकता हैं ।

Venture capital (वेन्चर केपीटल) **नए व्यवसाय में निवेश**

कभी- कभी ऐसे नए तथा छोटे उपक्रमों में लोग या वित्तीय संस्थाएँ पूँजी निवेश करने को तैयार हो सकते हैं जहाँ काफी अधिक जोखिम होती है। वित्तीय संस्थाएँ तथा व्यक्ति प्रायः परम्परागत ढंग से सोचते हैं तथा इस प्रकार का जोखिम युक्त निवेश नहीं करना चाहते।

Vertical equity (वर्टीकल ईक्विटी) **शीर्ष समानता**

करारोपण जैसी आर्थिक नीतियों में आय के पुनर्वितरण के लक्ष्य का समाहित करना। प्रायः कम आय वाले व्यक्तियों को कर की परिधि से बाहर रखकर **प्रगतिशील दर** से आय कर रोपित किया जा सकता है, ताकि आर्थिक विषमताएँ कम हो सकें । यह क्षैतिज समानता की नीति से भिन्न है जिसके अन्तर्गत समान आय वाले व्यक्तियों से समान राशि कर के रूप में ली जाती है। (देखें progressive taxation)

Vertical integration (वर्टीकल इंटीग्रेशन) **शीर्ष एकीकरण**

यदि एक फर्म का उसके उत्पाद हेतु आवश्यक कच्चे माल बनाने वाली, परिवहन व ढुलाई करने वाली तथा उन सभी फर्मों से एकीकरण हो जाए जिनकी सेवाएँ यह प्राप्त करती है, तो *सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया एकीकृत हो जाएगी।* इसके फलस्वरूप फर्म की उत्पादन तथा वितरण लागतें कम होंगी, तथा इसका बाज़ार में एक विशालकाय फर्म के रूप में वर्चस्व स्थापित हो जाएगा । अन्य शब्दों में, एक बड़ी फर्म के रूप में इस फर्म की तकनीकी तथा आर्थिक दक्षता में वृद्धि हो जाएगी।

Vertical merger (वर्टीकल मर्जर) **शीर्ष विलय**

दो फर्मो का विलय जिनमें से एक फर्म दूसरी फर्म को काफी अधिक सामान (कच्चे माल आदि) की आपूर्ति करती है। यदि प्रकाशक की फर्म में एक पुस्तकों की बड़ी दूकान का विलय हो जाए, तो इसे शीर्ष विलय कहा जाएगा।

Visible trade (विज़िबल ट्रेड) **दृश्य व्यापार**

देखी जाने वाली वस्तुओं तथा कच्चे माल का आयात तथा निर्यात। ये अदृश्य व्यापार से भिन्न हैं जिनमें बैंकिंग, बीमा, पर्यटन, परिवहन, विशेषज्ञों की सेवाएं आदि को शामिल किया जाता है। इनको देश के अदृश्य व्यापार में शामिल करके भुगतान शेष की चालू प्रविष्टियों में रखा जाता है।

Volatility (वोलेटीलिटी) **उच्चावचन की प्रवृत्ति**

जिन प्रदेशों में सूखा सम्भाव्यता काफी अधिक रहती है, वहां वर्षा की मात्रा तथा भौगोलिक दृष्टि से अत्यधिक परिवर्तनशीलता के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में भी भारी उच्चावचन होते रहते हैं। इसी प्रकार जहां औद्योगिक वस्तुओं की कीमतों तथा मज़दूरी में आम तौर पर उच्चावचन बहुत कम होते हैं, वहीं शेयर बाज़ार एवं प्राथमिक बाज़ारों में वस्तु की कीमतों में उच्चावचन की सम्भाव्यता बहुत अधिक होती है।

Volume index (वॉल्यूम इंडैक्स) **मात्रा सूचकांक**

किसी अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण या आंशिक भाग में उत्पादन तथा उपभोग की वास्तविक मात्राओं का सूचकांक। इनमें चयनित वस्तुओं के उत्पादन या उपभोग की मात्राओं में निर्दिष्ट अवधि में हुए परिवर्तन को मापा जाता है। लैस्पायर तथा पास्चे ने इनके लिए निम्न सूत्र दिए हैं :

लैस्पायर सूचकांक : $\frac{\sum P_1Q_0}{\sum P_0Q_0} \times 100$

पास्चे सूचकांक : $\frac{\sum P_1Q_1}{\sum P_0Q_1} \times 100$

उपरोक्त में Q_0 किसी आधार वर्ष में वस्तुओं की मात्रा, Q_1 वर्तमान वर्ष में वस्तुओं की मात्रा, P_0 आधार वर्ष में वस्तुओं की कीमत तथा P_1 वर्तमान वर्ष में वस्तुओं कीमतों को दर्शाते हैं।

Voluntary group (वोलन्टरी ग्रुप) **स्वैच्छिक समूह**

छोटे छोटे खुदरा व्यापारियों का समूह, जो स्वेच्छा से किसी ऐसी फर्म के साथ समझौता करता है जो उनके छोटे- छोटे आर्डर्स की पूर्ति करने का दायित्व लेती है, तथा जिसके बदले वह समूह बिक्री संवर्द्धन का कार्य करता है।

Voluntary unemployment (वोलन्टरी अंएम्प्लायमेंट) **स्वैच्छिक बेरोज़गारी**

जो बेरोज़गार व्यक्ति **जानबूझकर** रोज़गार उपलब्ध होने पर भी काम न करना चाहें, वे स्वैच्छिक बेरोज़गारों की श्रेणी में आते हैं। वे या तो कहीं कार्य हेतु आवेदन नहीं करते, अथवा जानबूझ कर ऐसी शर्तें अपने आवेदन पत्र में रखते हैं जो किसी भी रूप में सम्भावित नियोक्ताओं को स्वीकृत नहीं हो सकतीं।

Voting share (वोटिंग शेयर)

किसी कम्पनी के शेयर जिन पर धारकों को मताधिकार प्राप्त होता है

इनमें केवल साधारण शेयर ही शामिल किए जा सकते हैं।

Vouher (वाउचर) **एक प्रमाण पत्र**

प्रायः फर्म जब किसी भी प्रकार का भुगतान करती है तो उसके प्रमाण -स्वरूप रसीद प्राप्त कर लेती है, जिसे वाउचर कहा जाता है। इन प्रमाण पत्रों की लेखाकारों को आवश्यकता होती है जिन्हें अंकेक्षक जांचना चाहते हैं। आयकर अधिकारी भी कर निर्धारण के समय समस्त भुगतानों की सत्यता की जांच हेतु इन वाउचरों की जांच कर सकते हैं।

□□□

W

Wage (वेज) **मज़दूरी**

किसी श्रमिक को उसके काम के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार। जब कभी श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया या किसी भी आर्थिक गतिविधि में अपना योगदान देता है तो निर्धारित दर पर उसे पुरस्कार या पारिश्रमिक मिलता है। प्रायः मज़दूरी का भुगतान प्रति घंटे, प्रति दिन या प्रति सप्ताह के आधार पर किया जाता है।

Wage differenial (वेज डिफ्रेंशियल) **मजदूरी की दरों में अन्तर**

अलग- अलग प्रकार के श्रम के लिए *अलग अलग मज़दूरी दी जाती हैं*। मज़दूरी की दरों के अन्तर हेतु निम्न घटक ज़िम्मेदार हो सकते हैं:

(1) श्रम की माँग व पूर्ति की लोच में अन्तर,

(2) श्रम की शिक्षा तथा कौशल में अन्तर,

(3) प्रशिक्षण में अंतर,

(4) उद्योगों की विकास दरों में अन्तर

(5) यंत्रो या मशीनों के उपयोग में अन्तर,

(6) श्रम की गतिशीलता में अन्तर, तथा

(7) श्रमिकों में संगठन की प्रकृति एवं उनका प्रभाव।

इन्हीं कारणों से एक महिला स्कूल टीचर तथा गायिका के पारिश्रमिक में अन्तर हो सकता है, अथवा एक मिस्त्री या बेलदार की मज़दूरी में अन्तर हो सकता है। जिस श्रेणी के श्रम की आपूर्ति बढ़ाना सरल न हो उसकी पारिश्रमिक की दर अपेक्षाकृत काफी होती है।

Wage flexibility (वेज फ्लैक्सिबिलिटी) **मज़दूरी में लचीलापन**

श्रम की माँग, या पूर्ति अथवा दोनों में परिवर्तन होने पर साम्य स्थिति को बनाए रखने हेतु मज़दूरी की दर में परिवर्तन होता है। यदि माँग में पूर्ति की अपेक्षा वृद्धि अधिक हो तो मज़दूरी की दर बढ़ जाती है, जबकि माँग में अपेक्षाकृत कम वृद्धि हो तो मज़दूरी की दर कम होती है। परन्तु यह सब श्रम के प्रतियोगी बाज़ार में ही सम्भव है। यदि श्रमिक संघों का दबाव हो या सरकार न्यूनतम मज़दूरी के कानून लागू कर दे तो एक सीमा के बाद मज़दूरी कम नहीं हो पाएगी, यानी ऊपर की ओर ही इसमें लचीलापन रह जाएगा।

Wage-price spiral (वेज प्राइज स्पाइरल) **मज़दूरी-जनित कीमत वृद्धि**

प्रायः यह देखा जाता है कि मज़दूरी की दरों में वृद्धि होने पर लागतों में वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप कीमतों में भी वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार मज़दूरी –जनित

स्फीति की पृष्ठभूमि में मज़दूरी की वृद्धि एक महत्वपूर्ण कारण बन जाता है।

Wage freeze (वेज फ़्रीज़) **मज़दूरी पर प्रत्यक्ष अंकुश**

सरकार की वह नीति जिसके तहत मज़दूरी की वृद्धि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है ताकि कीमतों का बढ़ना भी रुक जाए। यह एक **सीधे हस्तक्षेप की नीति** है जबकि राजकोषीय तथा मौद्रिक नीतियों का प्रभाव कीमतों तथा आय (मज़दूरी) पर परोक्ष रूप से होता है।

Wage rate (वेज रेट) **मजदूरी की दर**

किसी श्रमिक को उसके कार्य के बदले प्रति घंटा , प्रति दिन या प्रति सप्ताह दिया जाने वाला पारिश्रमिक। प्रायः इसमें पूर्व–घोषित छुट्टियों का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता, और न ही श्रमिक द्वारा छुट्टी लेने पर उसे कोई भुगतान देय होता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र के अनुसार यदि श्रम का प्रयोग करने वाली फर्म एक ही हो तो मज़दूरी की दर का निर्धारण उसी के द्वारा किया जाएगा। यदि श्रमिक संघ बहुत शक्तिशाली हों तो मज़दूरी की दर का निर्धारण उनकी शर्तों के अनुरूप होता है। परन्तु अधिकांश स्थितियों में श्रम की माँग व पूर्ति की शक्तियां मज़दूरी की दर निर्धारित करती हैं।
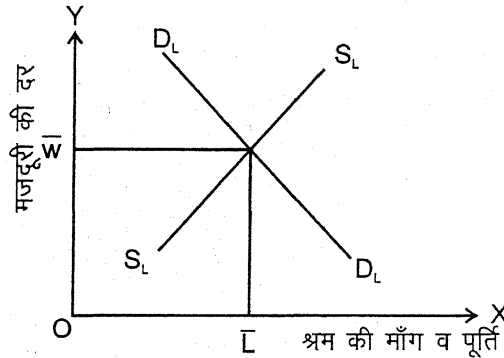
उपरोक्त चित्र में $O\overline{W}$ साम्य मज़दूरी की दर है जिसका निर्धारण श्रम की माँग (D_LD_L) तथा पूर्ति (S_LS_L) वक्रों के प्रतिच्छेदन से होता है। श्रम की मॉग श्रमिकों की सीमान्त उत्पादकता के आधार पर निरूपित होती है।

Wage restraint (वेज रेस्ट्रेन्ट) **मजदूरी पर संयम**

देश की अर्थव्यवस्था जब निराशाजनक स्थिति में हो तो प्रायः श्रमिक संघ यह निर्णय लेते हैं कि वे कुछ समय तक मज़दूरी में वृद्धि हेतु दबाव नहीं डालेंगे। उनका यह संयम अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में किसी सीमा तक सहायता करता है।

Wage rigidity (वेज रिजिडिटी) **मज़दूरी में अनम्यता**

मज़दूरी की दरों में वह प्रवृत्ति, जिसके अनुसार अल्पकाल में बाज़ार में श्रम की पूर्ति

तथा माँग का साम्य न होने पर भी मज़दूरी में समायोजन नहीं होता। इसका कारण यह है कि नियोक्ताओं द्वारा योग्य श्रमिकों को तलाशने तथा श्रमिकों को उपयुक्त रोज़गार का चुनाव करने में समय लगता है। ऐसी स्थिति में बाज़ार में प्रचलित क्या मज़दूरी दी जा रही है, प्रायः इसके विषय में किसी को पता नहीं चलता। मज़दूर मज़दूरी में कटौती का विरोध करते हैं, जबकि नियोक्ता जानते हैं कि एक बार मज़दूरी बढ़ादी जाए तो फिर कम नहीं की जा सकेगी। फलस्वरूप, जो भी श्रमिक संघों के साथ समझौते में तय हो गया है उसमें कोई भी पक्ष दखल नहीं देना चाहेगा, तथा वही मज़दूरी दर बाजार में काफी समय तक बनी रहती है।

Wage resistance (वेज रेज़िस्टैंस) **मजदूरी में कटौती का विरोध**

प्रायः श्रमिक संघ मज़दूरी की दर में किसी भी प्रकार की कटौती का पुरजौर विरोध करते हैं। यदि मुद्रा स्फीति की दर की तुलना में मालिकों द्वारा बढ़ाई जाने वाली मज़दूरी कम हो तो **वास्तविक मज़दूरी में कटौती होने** पर वे इसका विरोध करेंगे। यदि मालिक या प्रबन्धक मौद्रिक मज़दूरी में कटौती करना चाहें तो इसका भी विरोध किया जाएगा।

Wage stickiness (वेज स्टिकीनेस) **मजदूरी में धीमी गति से परिवर्तन**

श्रम के बाज़ार में अत्यधिक पूर्ति की स्थिति होने पर भी मज़दूरी की दर में *धीमी गति से कमी होती* है। ऐसी स्थिति में श्रम की माँग इसकी पूर्ति की तुलना में बहुत कम होने के कारण विवशतापूर्ण बेरोज़गारी बढ़ जाती है।

Wall street (वॉल स्ट्रीट)

न्यूयार्क के मैनहट्टन क्षेत्र में स्थित प्रमुख वित्तीय क्षेत्र

संयुक्त राज्य अमरीका में वित्तीय सौदों का यह एक दर्पण है।

Walras's Law (वाल्रसस लॉ) **वाल्रा का नियम**

यह कथन कि यदि किसी अर्थव्यवस्था में यदि n बाज़ार हैं तथा n-1 बाजारों में माँग तथा पूर्ति में समानता है तो n^{th} बाज़ार में भी यह उपयुक्त होता है कि IS–LM मॉडल में एक बाज़ार को छोड़ने पर भी साम्य विश्लेषण पर कोई प्रभाव नहीं होगा। इसी प्रकार यदि वस्तुओं तथा मुद्रा की पूर्ति एवं माँग में समानता है तो बाँड बाज़ार में भी माँग तथा पूर्ति में समानता होगी।

Wants (वांट्स) **आवश्यकताएँ**

वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए इच्छा। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु ही कार्य करता है। परन्तु आवश्यकताएँ अनन्त होती हैं, तथा एक आवश्यकता की पूर्ति होने के बाद वही आवश्कता पुनः पैदा हो सकती है। इन सभी की पूर्ति व्यक्ति अपने सीमित साधनों के अनुसार नहीं कर सकता, और इसीलिए वह आवश्यकताओं को उनकी तीव्रता क्रम में संजोता है, और आय (साधनों) का उसी आधार पर आवंटन करता है।

आवश्यकता तथा माँग में अन्तर है। आवश्यकता तो *इच्छा की प्रतीक* है, परन्तु यह माँग का रूप तभी ले सकती है जब उसकी पूर्ति हेतु व्यक्ति के पास *साधन हों, तथा इन साधनों को आवश्यकता की पूर्ति हेतु वह ख़र्च करने को तैयार हो।*

Warranted growth rate (वारंटेड ग्रोथ रेट) **वांछित संवृद्धि दर**

वांछित विकास दर। हैरड-डोमर मॉडल के अनुसार धारित विकास के लिए यही विकास दर वांछित है। यदि राष्ट्रीय आय को Y माना जाए, निवेश को I माना जाए तथा बचत को S माना जाए, तो बचत को आय का एक निश्चित अनुपात sY माना जा सकता है। निवेश को त्वरक मॉडल के अनुरूप निम्न रूप में व्यक्त कर सकते है :

$$I = v\left(\frac{dY}{dt}\right)$$

जिसमें t समय का द्योतक है। प्रत्याशित बचत तथा निवेश की साम्य स्थिति के लिए निम्न शर्त पूरी होनी चाहिए

$$S = I \;\; ; sY = v\left(\frac{dY}{dt}\right)$$

इसका अर्थ यह हुआ कि Y' की वृद्धि दर (वांछित विकास दर) या w निम्न प्रकार व्यक्त की जा सकती है

$$w = (1/Y)(dY/dt) = sY$$

इसी दर पर साम्य विकास दर (जहां S=I हो) ज्ञात की जा सकती है।

Warranty (वारंटी) **गांरटी**

वस्तुओं व सेवाओं की आपूर्ति करने वाले व्यक्ति या फर्म द्वारा वस्तु की गुणवत्ता के विषय में दी गई गारंटी। गारंटी देने वाला व्यक्ति उस वस्तु या सेवा की कीमत के बराबर क्षतिपूर्ति देने का वायदा करता है यदि वह वस्तु दोषपूर्ण सिद्ध हो जाए।

Wasting asset (वेस्टिंग एसेट) **एक प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा**

यह सम्पदा समय बीतने के साथ कम होती है। उदाहरण के लिए, कोयला, लौह धातु, खनिल तेज आदि के भंडार सीमित हैं, तथा इनके खनन के साथ- साथ उन भंडारों की आयु भी कम होती है।

Ways and Means Advance (वेज़ एन्ड मीन्स एडवांस)

सरकारी घाटे की पूर्ति हेतु केंद्रीय बैंक द्वारा सहायता

जब इंगलैंड में सरकारी व्यय अधिक होने पर सरकार को आवश्यकता पड़ती है तो वह बैंक ऑफ इंगलैंड से ऋण लेती है। भारत में भी केन्द्र व राज्य सरकारों को रिज़र्व बैंक ऑफ इन्डिया इस प्रकार के ऋण प्रदान करके इनकी सहायता करता है।

Weakening of currency (वीकनिंग ऑफ करेन्सी)

किसी करेन्सी का मूल्य कम होना

अन्य मुद्राओं की तुलना में जब किसी मुद्रा की विनिमय दर कम होना प्रारम्भ हो जाए तो इसे करेन्सी का कमज़ोर होना कहते हैं।

Wealth (वैल्थ) **धन; सम्पदा**

किसी व्यक्ति की विशुद्ध सम्पत्तियों का कुल मूल्य । धन को अनेक रूप में रखा जा सकता है : मुद्रा,कम्पनियों के शेयर, ऋणपत्र, भूमि, भवन, बौद्धिक सम्पदा (पेटेंट आदि) पुरातत्व महत्व की पेटिंग, सोना, जवाहरात आदि। इसमें से उस व्यक्ति द्वारा लिए गए ऋणों (देनदारियों) को घटाने पर विशुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य प्राप्त होता है, जिसे धन कहा जा सकता है।

Wealth effect (वैल्थ इफैक्ट) **धन का प्रभाव**

किसी व्यक्ति के पास विद्यमान धन का उसकी बचतों या तरलता पर प्रभाव। यह मान्यता ली जाती है कि अधिक धनवान व्यक्ति अपनी आय का अधिक भाग व्यय करता है, तथा बचत कम करता है। अन्य शब्दों में धन, तथा बचत के अनुपात में प्रतिकूल सम्बन्ध होता है

Wealth tax (वैल्थ टैक्स) **धन या सम्पदा कर**

ऐसा कर, जो किसी व्यक्ति की निजी सम्पदा के मूल्य पर लगाया जाता है। इस कर की राशि को जुटाने हेतु व्यक्ति की सम्पदा का नियमित रूप से मूल्यांकन करना ज़रूरी है। इसमें समस्या तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति की सम्पत्ति को बेचने या नई सम्पत्ति को ख़रीदने की प्रवृति सामान्य हो, या जब सम्पदा के मूल्यों में बहुधा परिवर्तन होते हों। इसी प्रकार जेवरों, बहुमूल्य रत्नों या बेनामी सम्पत्ति का पता लगाना प्रायः कठिन होता है। इन्हीं कारणों से सम्पदा-कर की वसूली संग्रह बहुधा एक दुष्कर कार्य होता है।

Wear and tear (वीयर एन्ड टीयर) **मशीनों व उपकरणों की सामान्य घिसावट**

अनवरत प्रयोग के कारण यंत्रों को जो सामान्य क्षति होती है उसे सामान्य घिसावट कहते हैं। एक कार को लगातार चलाने से या किसी मशीन का अनवरत प्रयोग करने से ऐसा होना स्वाभाविक है।

Weighted average (वेटेड एवरेज) **भारित औसत**

किसी श्रेणी में प्रदर्शित संख्याओं को उनके महत्व के अनुरूप भार देकर औसत निकालना। उदाहरण के लिए किसी श्रेणी में n संख्याएँ हों $(x_1, x_2, x_3 \ldots\ldots x_n)$ तथा सभी संख्याओं के भार $w_1, w_2, w_3, \ldots\ldots$ के रूप में हों तो भारित औसत निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकेगा

$$\overline{X}_i = \left[\left(\sum_{i=1}^{n} x_i \cdot w_i \right) \Big/ \sum_{i=1}^{n} w_i \right]$$

प्रायः सरल औसत की तुलना में भारित औसत को अधिक उपयुक्त माना जाता है क्योंकि सरल औसत में सभी संख्याओं को समान रूप से महत्वपूर्ण मान लिया जाता हैं।

Weighted index numbers (वेटेड इन्डेक्स नम्बर्स) **भारित सूचकांक**

सूचकांक तैयार करते समय यदि सभी वस्तुओं को समान महत्व दिया जाए तो इससे प्रायः एक भ्रामक निष्कर्ष प्राप्त हो सकता है। मान लीजिए, गेहूँ की कीमत में 20 प्रतिशत वृद्धि हुई है तथा मक्खन की कीमत में 100 प्रतिशत वृद्धि हुई हो तो सरल औसत वृद्धि यानी 60 प्रतिशत वृद्धि आंकी जाएगी । वस्तुतः उपभोक्ता के बजट में गेहूँ का महत्व शायद मक्खन से दस गुना हो सकता है। इसी लिए दो निर्दिष्ट वर्षों के बीच कीमत वृद्धि का भार युक्त या भारित सूचकांक निकाला जाना अधिक उचित है। निम्न तालिका में 1990 तथा 2000 के बीच विभिन्न वस्तुओं के मूल्य सूचकांक,सरल औसत सूचकांक तथा भारित सूचकांक दिए गए हैं:

क्रमांक	वस्तुएँ	सूचकांक (R)	भार (W)	R X W
1	भोजन	300	50	15,000
2	वस्त्र	350	10	3500
3	ईंधन	100	5	500
4	किराया	100	15	1500
5	अन्य	150	20	3000
	योग	1000	100	23500

सरल सूचकांक : $\frac{1000}{5} = 200$ (यानी, 1990 व 2000 के बीच कीमत स्तर–दो गुना हो गया)

भारित सूचकांक : $\frac{23,500}{100} = 235$ (यानी, 1990 व 2000 के बीच कीमत स्तर में 135 प्रतिशत वृद्धि हुई)

Welfare (वैलफेयर) **हित; कल्याण**

उपभोक्ता, उत्पादक, साधन के स्वामी अलग अलग रूप में अपने हित को परिभाषित करते हैं। जहां उपभोक्ता को सीमित आय में अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, उत्पादक को अधिकतम लाभ में अपना हित या कल्याण दिखाई देता है। साधनों के स्वामी अधिकतम पुरस्कार या आय प्राप्ति को अपना लक्ष्य मानते हैं। प्रत्येक आर्थिक इकाई अपने आर्थिक कल्याण को अधिकतम करने का प्रयत्न करती है। जहां

बाज़ार में अपूर्णता आती है वहां किसी एक व्यक्ति या समूह का आर्थिक कल्याण कम होकर वह किसी अन्य व्यक्ति या फर्म या समूह को मिल जाता है। ऐसी स्थिति में सरकार या विभिन्न प्रकार के संगठन हस्तक्षेप करके सम्पूर्ण आर्थिक कल्याण के न्यायपूर्ण वितरण को सुनिश्चित् करने का प्रयास करते हैं।

Welfare criterion (वैलफेयर क्राइटेरियन)

यह निर्णय करना कि अर्थव्यवस्था में कोई बदलाव लाया जाए या नहीं

परेटो ने कहा था कि कोई भी परिवर्तन तभी वांछनीय है जब उस परिवर्तन के फलस्वरूप *बिना किसी व्यक्ति के कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव डाले हुए* किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के कल्याण में वृद्धि हो जाए। इससे समाज के सकल कल्याण में वृद्धि होगी । इसी प्रकार यदि एक वस्तु के उत्पादन में कमी किए बिना साधनों के परिवर्तित उपयोग से दूसरी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि की जाए तो इससे भी समाज का कल्याण बढ़ जाएगा।

यदि एक व्यक्ति या समूह के कल्याण में वृद्धि से दूसरे व्यक्ति या समूह के कल्याण में कमी आती है तो पहली श्रेणी के व्यक्ति या समूह (लाभान्वित व्यक्ति) का यह दायित्व बनता है कि दूसरे समूह (क्षति उठाने वाला व्यक्ति) को क्षतिपूर्ति दे। यदि क्षतिपूर्ति के भुगतान के बाद भी लाभान्वित व्यक्ति का कल्याण पूर्वापेक्षा अधिक हो तो समाज का कल्याण बढ़ा हुआ माना जाएगा ।

Welfare economics (वैल्फेयर इकोनोमिक्स) **कल्याण अर्थशास्त्र**

अर्थशास्त्र का वह भाग, जिसमें आर्थिक क्रियाओं का कल्याण से सम्बन्ध देखा जाता है। यह मान्यता ली जाती है कि यदि सभी उपभोक्ता, सभी उत्पादक तथा सभी साधनों के स्वामी उपलब्ध साधनों का इष्टतम रूप में आवंटन करें त। समाज को अधिकतम कल्याण की प्राप्ति हो जाएगी । यह **परेटो इष्टतम स्थिति मानी जाती है**। परन्तु किसी एक बाज़ार में अपूर्णता हो और फिर भी शेष आर्थिक इकाइयां अपने साधनों का यथासम्भव इष्टतम आवंटन करें तो इसे द्वितीय श्रेष्ठ (Second Best) की स्थिति मानते हैं। कल्याण अर्थशास्त्र उन सभी सिद्धान्तों तथा नियमों की व्याख्या करता है, जिनके आधार पर दी हुई परिस्थितियों में सभी का आर्थिक कल्याण अधिकतम हो सकता है।

परन्तु इसके लिए पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति सभी बाज़ारों में विद्यमान होनी चाहिए। उसी स्थिति में व्यक्तिगत लाभ, व्यक्तिगत लागत, सामाजिक लाभ तथा सामाजिक लागत में समानता स्थापित हो सकती है। यदि इनमें से किसी भी एक में विषमता उत्पन्न हो जाए तो सामाजिक कल्याण अधिकतम नहीं हो पाएगा।

(देखिए Pareto criteria)

Welfare state (वैलफेयर स्टेट) **कल्याणकारी राज्य**

ऐसा राज्य, जिसमें सरकार का उद्देश्य सभी लोगों को न्यूनतम जीवन स्तर प्रदान

करने का हो। इनमें भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ सुविधाएँ आदि शामिल हैं। इसमें केवल जनहित एवं समानता का उद्देश्य निहित नहीं होता, अपितु *न्यूनतम स्तर की दक्षता* प्राप्त करना भी ज़रूरी है।

White paper (व्हाइट पेपर) **श्वेत पत्र**

प्रजातांत्रिक सरकार द्वारा प्रकाशित एक दस्तावेज, जो किसी कानून को पारित करने से पूर्व जारी किया जा सकता है। परन्तु श्वेत पत्र तथा अन्ततः लागू किए हुए कानून में अन्तर हो सकता है क्योंकि श्वेत पत्र पर अनेक सुझाव विभिन्न पक्षों से प्राप्त हो सकते हैं।

Whole sale banking (होलसेल बैंकिंग) **विशिष्ट बैंकिंग व्यवस्था**

इसमें वित्तीय संस्थाओं द्वारा विशालकाय व्यावसायिक प्रतिष्ठानों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ ही बड़े पैमाने पर व्यवसाय किया जाता है। (देखिए **retail** banking)

Wholesale prices (होलसेल प्राइसेज) **थोक कीमतें**

बड़े पैमाने पर व्यापार करने वाले प्रायः सीधे उपभोक्ताओं को वस्तुएँ न बेचकर खुदरा व्यापारियों को बेचते हैं। जिन कीमतों पर खुदरा व्यापारियों को वस्तुएँ बेची जाती हैं उन्हें थोक कीमतें कहा जाता है। यही स्थिति इन्पुट्स के थोक व्यापार में भी हो सकती है। प्रायः मुद्रा स्फीति को मापने हेतु थोक कीमतों को ही प्रयुक्त करते हैं, जबकि खुदरा कीमतों को जीवन निर्वाह लागत सूचकांक तैयार करने हेतु प्रयोग में लेते हैं।

Whole saling (होल सेलिंग) **थोक व्यापार**

वस्तुओं की बड़े स्तर पर बिक्री करना। खुदरा व्यापारियों की तुलना में थोक व्यापारी काफी बड़े पैमाने पर व्यापार करता है, हालांकि उसका *लाभ मार्जिन खुदरा व्यापारियों की तुलना में कम होता है।* बहुधा वस्तुओं के निर्माता बाज़ार में सीधे प्रवेश न करके थोक व्यापारियों के माध्यम से इन्हें खुदरा व्यापारियों तक पहुंचाते हैं।

Williamson's trade off model (विलियम्सन्स ट्रेड ऑफ मॉडल)
प्रस्तावित विलय के हानि -लाभ का विलियम्सन मॉडल

किन्हीं दो फर्मों के विलय से बाज़ार में उपभोक्ताओं को होने वाली क्षति तथा विक्रेताओं को सम्भावित लाभों की तुलना।

Winding up (वाइंडिंग अप) **किसी व्यवसाय को बन्द करना**

ऐसा करने के पूर्व उस फर्म के प्रबन्धक अपने कर्ज़ों का भुगतान करते हैं। किसी कम्पनी का व्यवसाय बन्द करने की स्थिति में ऋणों के निपटारे के पश्चात् शेयरधारियों के मध्य शेष सम्पत्ति का वितरण कर दिया जाता है। किसी व्यवसाय को बन्द करने की नौबत प्रायः तब आती है जब इसके मालिक ऐसा चाहें, या फर्म अपने दायित्वों का भुगतान करने में असफल हो जाए।

Winner's curse (विनर्स कर्स) **विजेता का अभिशाप**

किसी ठेके को प्राप्त करने वाले की यह आशंका कि उसे हानि होगी। प्रायः टेन्डर प्रस्तुत करने पर न्यूनतम लागत वाले संस्थान को ठेका दिया जाता है, तथा उसे हानि उस स्थिति में होती है जब न्यूनतम लागत वाली फर्म ने अपने *खर्चों को कम आंकते हुए* टंडर दिया हो।

Withholding tax (विद होल्डिंग टैक्स)

मज़दूरी या लाभांश की सभी प्राप्तियों पर एक मानक दर से रोपित कर

जो पाने वाले के कर दायित्व से भिन्न होता है। प्रत्येक कर दाता फिर अपनी विवरणिका आय कर अधिकारियों को प्रस्तुत करता है, तथा यदि उसकी आय कम है तो रोकी गई कर राशि में से उसे रिफंड प्राप्त हो जाता है। यदि उसका कर दायित्व उस राशि से अधिक है तो वह शेष राशि और जमा करता है।

With-profit life insurance (विद प्रॉफिट लाइफ इन्श्योरेंस) **लाभ सहित जीवन बीमा**

वह जीवन बीमा पॉलिसी जिसमें पालिसी धारी को उसके द्वारा जमा कराए गए प्रीमियम के निवेश से बीमा कम्पनी को होने वाले लाभ में से एक हिस्सा दिया जाता है। इस दृष्टि से जितने मूल्य का जीवन बीमा किया जाता है, *पालिसीधारी या उसके वारिस को उससे काफी अधिक राशि मिल जाती है।*

Work (वर्क) **कार्य**

किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन हेतु किया गया कार्य। यह भी सम्भव है कि एक ही वस्तु के उत्पादन को अनेक क्रियाओं में विभाजित कर दिया गया हो। यह श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण कहलाता है। इसमें मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार के कार्य शामिल हैं।

Worker controlled firm (वर्कर कन्ट्रोल्ड फर्म)

श्रमिकों के स्वामित्व एवं प्रबन्ध वाली फर्म

यदि किसी फर्म को उसके श्रमिक मिलकर सहकारी रूप से *संचालित करें तथा वे ही इसके लाभ प्राप्त करने वाले हों,* तो यह श्रमिकों द्वारा नियंत्रित फर्म कहलाती है। फर्म की पूँजी की व्यवस्था भी श्रमिकों द्वारा ही की जाती है। ऐसी फर्म में प्रबन्धकों (या मालिकों) तथा कामगारों के बीच कोई तनाव उत्पन्न नहीं होता।

Workable competition (वर्केबल कम्पीटीशन) **काम चलाऊ प्रतियोगिता**

बाज़ार के निष्पादन तथा आचरण के विषय में वे व्यवस्थाएँ जो बाज़ार के "स्वीकारने योग्य" या काम चलाऊ निष्पादन को सुनिश्चित् करती हैं। इनमें मुख्य उद्देश्य यह रहता है कि प्रतियोगिता पूर्ण व्यवस्था को यथासंभव लागू किया जा सके। बाज़ार की संरचना, आचरण तथा निष्पादन के लिए इसके अन्तर्गत कुछ मानक तय किए जाते हैं।

संरचना से सम्बद्ध मानक

(1) विक्रेताओं की पर्याप्त संख्या, जिनमें से किसी का भी वर्चस्व नहीं है।

(2) नई फर्मों के प्रवेश पर कोई कृत्रिम रोक नहीं है।
(3) गुणवत्ता में थोड़ा बहुत अंतर, जो कीमतों में दिखाई देता है।

आचरण -सम्बन्धी मानक

(1) प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं में सक्रिय स्पर्द्धा, जिसके कारण उनमें मतैक्य या गठबन्धन नहीं हो पाता।
(2) प्रतिद्वन्द्वी विक्रेताओं पर दबाव डालने या उन पर भारी क्षति थोपने का प्रयास न करना।
(3) वस्तु की भिन्नता के विषय में उपभोक्ताओं की पसन्द का ध्यान रखना।

निष्पादन के मानक

(1) उत्पादन व वितरण की लागत को न्यूनतम करना।
(2) कीमतों व वितरण लागतों में अधिक अन्तर नहीं रखना तथा **न्यायोचित लाभ** अर्जित करना।
(3) विज्ञापन पर अधिक व्यय नहीं करना।
(4) नए उत्पाद तथा नई प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन देना।

Worker participation (वर्कर पार्टीसिपेशन) **श्रमिकों की निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता**

यह अलग- अलग फर्मों में अलग- अलग हो सकती है। एक छोर पर वह स्थिति है जिसमें श्रमिक सहकारिता के आधार पर फर्म को चलाते हैं। दूसरी स्थिति वह हो सकती है जिसमें श्रमिक *संचालक मंडल मे अपना प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं।* इनके विपरीत ऐसी भी स्थिति होती है जिसमें श्रमिकों के साथ केवल अनौपचारिक विचार विमर्श किया जाता है, तथा निर्णय प्रक्रिया में उनकी राय का कोई महत्त्व नहीं होता।

Work fare (वर्क फेयर) **बेरोज़गारों को आंशिक सहायता**

जिस कार्य को बेरोज़गार लोग कर सकते हैं, *अंशकालीन या अस्थायी रूप* में उनसे वह कार्य लेना। यह नीति बेरोज़गारों तथा समाज, दोनों ही लिए लाभादायक है क्योंकि श्रमिकों को आत्मसम्मान खोए बिना आय मिलती है, तथा आगे चल रोज़गार मिलने की सम्भावना बढ़ जाती है। दूसरी ओर इस तरीके से बेरोज़गारी भत्ते के भुगतान में काफी कमी हो जाती है। परन्तु यदि यह अनिवार्य रूप से लागू की गई नीति हो तो इससे हानि भी हो सकती है।

Working capital (वर्किंग केपीटल) **कार्यशील पूँजी**

किसी व्यावसायिक फर्म की पूँजी का वह भाग, जो भूमि, भवन या स्थिर उपकरणों (संयत्र, उपकरण आदि) से सम्बद्ध नहीं है। इनमें कच्चे माल की ख़रीद श्रम व प्रबन्ध के भुगतान, ढुलाई व परिवहन, किराया, ब्याज़ आदि का भुगतान करने हेतु तरल रूप में रखी जाने वाली पूँजी शामिल है।

Working conditions (वर्किंग कन्डीशन्स) **कार्य करने की दशा; काम की शर्तें**

वे दशाएँ, जिनमें कर्मचारियों तथा श्रमिकों को काम करना होता है। इनमें लंच का

अवकाश, फैक्ट्री की हालत, स्वच्छता व तापमान, सुरक्षा, वाहन की व्यवस्था अन्य सुविधाएँ आदि को शामिल किया जाता है। प्रबन्धकों का व्यवहार, पदोन्नति के अवसर, पारिश्रमिक के भुगतान की व्यवस्था भी इसी के अंतर्गत लिए जाते हैं।

Working practices (वर्किंग प्रेक्टिसेज़) **श्रमिकों की कार्य पद्धतियाँ**

किसी उपक्रम में श्रम किस प्रकार अपना कार्य करते हैं, इसके लिए पूर्व निर्धारित लिखित प्रक्रिया को औपचारिक रूप दे सकते हैं; अथवा ये पद्धतियाँ परम्परा के अनुसार लागू की जा सकती हैं। इनके अनुसार किसे **क्या कार्य** करना है, **किसके आदेश से** करना है तथा कार्य करने की **सामान्य प्रणाली क्या** है, इसे निर्धारित किया जाता है।

Works counsil (वर्क्स काउंसिल) **संयुक्त परिषद्**

एक ऐसी परिषद्, जिसमें प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के प्रतिनिधि परस्पर हितों के प्रश्न पर विचार-विमर्श करते हैं। इनमें *मज़दूरी वाले मसले पर चर्चा नहीं होती*, तथा काम की स्थितियों व दशाओं में किस प्रकार सुधार किया जाए, उन्हीं मुद्दों पर विचार- विमर्श किया जाता है।

Work study (वर्क स्टडी)

श्रमिकों की दक्षता में सुधार हेतु कार्य प्रणाली का अध्ययन करना

कार्य के पुनर्गठन द्वारा किस प्रकार *समय या साधनों की बचत हो सकती* है। इसका विश्लेषण भी इसमें शामिल होता है।

World Trade Organization (WTO) (वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन)

विश्व व्यापार संगठन

प्रथम जनवरी, 1994 से प्रारम्भ किया गया एक संगठन जो *अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के विस्तार तथा उसकी निगरानी* हेतु कार्य कर रहा है। इस पर हस्ताक्षर करने वाले देशों को आयातों पर विद्यमान **करों को न्यूनतम** करना होता है तथा **मात्रात्मक प्रतिबन्ध हटाने पड़ते हैं।** बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के विषय में भी इस संगठन ने समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले देशों के लिए एक आचार संहिता लागू की है।

Write off (राइट ऑफ) **विलोप करना**

कम्पनी के खातों से किसी सम्पत्ति के मूल्य को *पूरी तरह हटा देना*। प्रायः किसी कर्ज़दार से जब ऋण की वसूली असम्भव हो जाए तो उस राशि को विलोप करने का निर्णय ले लिया जाता है। इसके फलस्वरूप तलपट में कम्पनी की सम्पत्ति उस सीमा तक कम हो जाती है।

Wrongful dismissal (रॉंगफुल डिसमिसल)

किसी कर्मचारी की ग़लत बर्खास्तगी

रोज़गार हेतु तैयार किए गए सहमति पत्र की शर्तों के विपरीत किसी कर्मचारी की बर्खास्तगी करना वैधानिक दृष्टि से भी गलत माना जाता है। □□□

X-efficiency (एक्स एफीशिएँसी) **एक्स दक्षता**

सकल दक्षता का वह भाग, जिसमें निर्दिष्ट साधनों से तकनीकी दृष्टि से सम्भव अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके। अन्य शब्दों में, *न्यूनतम इन्पुट्स के प्रयोग द्वारा निर्दिष्ट उत्पादन प्राप्त करना* ही एक्स दक्षता कहलाती है। इस प्रकार इसके अन्तर्गत उत्त्पादन प्रक्रिया में इष्टतम साधन प्रयोग को सुनिश्चित किया जाता है।

X-inefficiency (एक्स इंएफीशिएंसी) **एक्स अदक्षता**

किसी फर्म द्वारा निर्दिष्ट साधनों से उस *अधिकतम उत्पादन को प्राप्त न कर पाना* जो तकनीकी दृष्टि से संभव है। अन्य शब्दों में, **एक्स अ-दक्षता न्यूनतम उत्पादन लागत तथा वास्तविक उत्पादन लागत का अन्तर** है। परम्परागत सिद्धान्त के अनुसार फर्म उपलब्ध साधनों का इष्टतम उपयोग करके न्यूनतम लागत पर वस्तु की आपूर्ति करती है। परन्तु संगठनात्मक कठिनाइयों (आवश्यकता से अधिक कर्मचारी या श्रमिकों की भर्ती) या समन्वय के अभाव में, अथवा अफसरशाही के चलते, प्रायः न्यूनतम लागत पर वस्तु की आपूर्ति नहीं हो पाती। लागत का यही अन्तर एक्स इंएफीशिएंसी है।
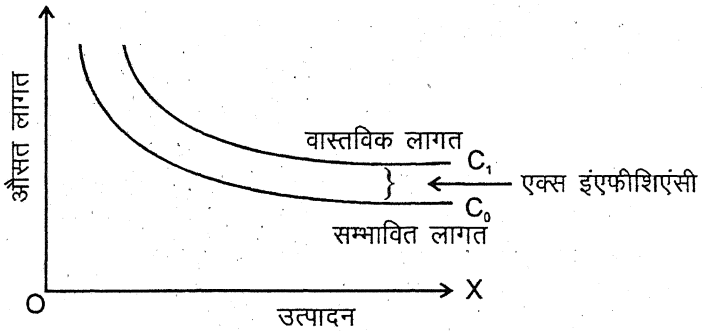
उपरोक्त चित्र में C_0 तथा C_1 दो औसत लागत वक्र प्रस्तुत किए गए हैं – एक वह जो साधनों के इष्टतम प्रयोग से सम्भव है (C_0) जबकि दूसरा जो **प्रशासनिक व संगठनात्मक अपूर्णताओं के कारण प्राप्त** होता है (C_1)। इनका शीर्ष अंतर ही एक्स इंएफीशिएंसी है।

□□□

Yield (यील्ड) **प्रतिफल, उपज**

1. किसी वित्तीय प्रतिभूति पर धारक को मौदिक रूप में प्राप्त होने वाली स्थिर आय। वस्तुतः यह स्थिर ब्याज़ दर के रूप में प्रतिभूति धारक को प्राप्त होने वाला प्रतिफल है। प्रतिभूति के अंकित मूल्य से ब्याज़ में भाग देने पर यह प्रतिफल ज्ञात किया जा सकता है। जैसे 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष आदि।
2. प्रतिफल की चालू दर इसकी सामान्य दर से भिन्न है। चालू दर ज्ञात करने हेतु प्रतिभूति की बाज़ार कीमत (अंकित कीमत नहीं) का भाग ब्याज़ की राशि में दिया जाता है।
3. औसत (प्रति हैक्टर) कृषि उत्पादन या उपज।

Yield curve (यील्ड कर्व) **प्रतिफल वक्र**

एक चित्र, जो विभिन्न परिपक्वता वाली प्रतिभूतियों तथा उनसे सम्बद्ध प्रतिफलों का सम्बन्ध दर्शाता है। ऐसी मान्यता ली जाती है कि लम्बी अवधि की परिपक्वता वाली प्रतिभूतियों के प्रतिफल की दरें कम हो सकती हैं। परन्तु दीर्घकाल में प्रतिभूतियों के बाज़ार मूल्यों में यदि उतार चढ़ाव आते हैं तो प्रतिफल की चालू दरें भी तदनुसार बदलती रहती हैं।

प्रतिफल की चालू दर को ज्ञात करने हेतु हम ब्याज़ में प्रतिभूति की बाज़ार कीमत से भाग देते हैं। स्वाभाविक है, यदि बाज़ार कीमत बढ़ती है तो प्रतिफल की चालू दर कम हो जाती है।

Yield gap (यील्ड गैप) **प्रतिफल का अन्तर**

शेयरों के औसत लाभांश, तथा दीर्घकालीन सरकारी प्रतिभूतियों के औसत प्रतिफल की दरों का अन्तर। जब कीमतों में स्थिरता रहती है तो शेयरों के लाभांश की दरें इसलिए प्रतिभूतियों की दरों से अधिक रहनी चाहिए ताकि निवेशकर्ताओं को **सापेक्ष जोखिम की क्षतिपूर्ति मिल सके।** मुद्रा स्फीति के दौरान शेयरों से पूँजीगत लाभ प्राप्त होने की सम्भावना रहती है, जिससे शेयरधारियों को कीमत वृद्धि की क्षतिपूर्ति हो जाती है, परन्तु सरकारी प्रतिभूतियों के संदर्भ में ऐसा नहीं होता और इस कारण प्रतिफलों का अंतर अधिक हो सकता है।

Z

Zero- base budgeting (ज़ीरो बेस बजटिंग) **शून्य-आधार बजट निर्माण**

इस व्यवस्था के अन्तर्गत सरकार या किसी भी संगठन को बजट के सिद्धान्तों से प्रारम्भ करते हुए संगठन या सरकारी नीतियों के *उद्देश्यों की व्याख्या करना चाहिए* तथा यह स्पष्ट करना चाहिए कि किस प्रकार प्रस्तावित बजट उन उद्देश्यों की पूर्ति का एक माध्यम हो सकेगा। सामान्यतः **प्रचलित व्यवस्था में** गत वर्ष के राजस्व, अन्य प्राप्तियों, राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय के अनुमान एवं वास्तविक राशियों से प्रारम्भ करके आने वाले वर्ष से सम्बद्ध प्रस्तावों तथा अनुमानों का विवरण दिया जाता है। प्रायः गत वर्ष के आय व्यय की राशियों में नाम मात्र का परिवर्तन करके आगामी वर्ष के प्रस्तावों तथा अनुमानों को निरूपित कर दिया जाता है। परन्तु शून्य-आधार बजट में *जनता की आकांक्षाओं, सरकारी नीतियों, विगत खर्चों तथा आय, प्रस्तावित ख़र्चों की वांछनीयता तथा उनकी पूर्ति हेतु बजट में प्रस्तावित करों आदि के बीच सामंजस्य रखा जाता है।* यह एक काफी पेचीदा तथा दुष्कर कार्य है, और इसीलिए प्रायः वित्त मंत्री या अधिकारी शून्य–आधार वाला बजट प्रस्तुत नहीं कर पाते।

Zero growth (ज़ीरो ग्रोथ) **शून्य प्रगति; शून्य विकास**

ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें गतिविधियों का विस्तार अवरूद्ध हो चुका है। इसका कारण यह होता है कि देश के एक भौगोलिक क्षेत्र में अत्यधिक पिछड़ापन होने के कारण जड़ता उत्पन्न हो जाती है। दूसरी ओर प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के भंडार समाप्त होने के कारण उन्नत व विकसित अर्थव्यवस्था में भी आगे के लिए विकास की सम्भावना शून्य हो जाती है। ऐसी दशा में विकसित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत सरकार तथा विभिन्न संगठन **यथास्थिति बनाए रखने हेतु कार्य करते हैं।** यही कारण है कि विकास की दर **अत्यंत विकसित तथा अत्यंत पिछड़ी हुई दोनों ही प्रकार की हुई अर्थव्यवस्थाओं में** लगभग शून्य हो जाती है।

Zero sum game (जीरो सम गेम) **शून्य योग का खेल**

बाज़ार में अल्पाधिकार होने पर विभिन्न विक्रेताओं द्वारा इस प्रकार की रणनीतियां अपनाई जाती हैं कि कुछ विक्रेताओं को प्राप्त होने वाले *लाभ अन्य विक्रेताओं को होने वाली हानि के समान हो जाते हैं।* यानी सकल लाभ व सकल हानि समान हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए, बाज़ार में कुल बिक्री 100 प्रतिशत होती है, यदि बाज़ार में विद्यमान तीन विक्रेताओं का हिस्सा 40 प्रतिशत से बढ़कर 70 प्रतिशत हो जाए तो

शेष विक्रेताओं का हिस्सा 60 प्रतिशत से घटकर 30 प्रतिशत रह जाएगा। परन्तु लाभ उठाने वालों तथा हानि उठाने वालों का कुल हिस्सा यथावत् यानी 100 प्रतिशत ही रहेगा।

Zoning (जोनिंग) **क्षेत्रानुसार विभाजन**

ऐसी व्यवस्था, जिसमें विभिन्न गतिविधियों के क्षेत्रों का निर्धारण कर दिया जाता है। कुछ गतिविधियों, जैसे ट्रेफिक बढ़ जाने से ख़तरनाक बाह्यताओं का जन्म होता है— जैसे शोर, बदबू, धूल आदि। क्षेत्रानुसार विभाजन से इनको किन्हीं क्षेत्रों तक सीमित कर देते हैं। उदाहरण के लिए, ट्रेफिक को आवासीय, व्यावसायिक या सुविधा-क्षेत्रों से दूर करके, इन बाह्यताओं को न्यूनतम कर दिया जाता है।

□□□